



## श्रीवास्तुकपुजा.

ॐ गुरुभ्योनमः

श्री शांतीजीनेश्वर समग्रिये ॥ पंचमा चक्री जेह ॥ ती  
कर सोलमा नमुं ॥ शांतीकरण गुण गेह ॥ १ ॥ श्रीस्नात्र  
जा जली ॥ करु स्तवना सार ॥ वास्तुक पुजा घरत  
॥ ॥ कस्तां हरख अपारं ॥ २ ॥ प्रथम घर प्रवेशमां ॥  
जा भणवो उदार ॥ अवर वास्तुक दुर करो ॥ जे मी  
या उपचार ॥ ३ ॥ पुजा पुजादीक प्रते ॥ जल कलसा  
खकारा ॥ पांच नरीनवराविए ॥ श्रीजीन अगे धारा ॥ ४ ॥  
जल फुल नैवेद तेम ॥ वास दीप धुप जेह ॥ प्रजु आ  
जल ते धोइए ॥ शांती होए संत तेह ॥ ५ ॥

अथः ढाल १ ली श्री श्रीरहित पद ध्याइए ॥ ए देसी ॥  
शांतीजीनेश्वर पुजता ॥ होवे शांती अपाररे ॥ वास्तुक  
पर मांहे कीजीए ॥ ए पुजा मनुहाररे ॥ शांतीजीनेश्वर  
होईए ॥ १ ॥ वास्तुक दोय प्रकारनुं ॥ द्रव्य भाव ते जा  
गोरे ॥ द्रव्य वास्तुक दोय भेदथी ॥ शुच अशुच कहा  
गोरे ॥ शांती ० २ ॥ होमादीक घरमां करे ॥ ब्राह्मण भौ  
जन जासरे ॥ कोला प्रमुख वीदारतो ॥ मनुष घात होय  
तासरे ॥ शांती ० ३ ॥ श्रीफल प्रमुख होमता ॥ पंचेंद्री  
ठरावी तासरे ॥ ए अपमंगलीक जाणीए ॥ जीहां जीव

हंसांनी रासरे ॥शाती० ४॥ एह अशुभ वास्तुक कह  
 होवे पापनी रासरे ॥ आ नव परनव दु ख लहे ॥  
 न करीए वासरे ॥शाती० ५॥ मगलीकभणी कीजी  
 वास्तुक घरनुं जेहरे ॥ सरव मगलमे मगल कह्यु  
 जीन नाम छे एहरे ॥शाती० ६॥ घर मधे पयसावी  
 श्रीजीन तीव सुखकाररे ॥ ण्ठ त्रण रची उपरे ॥  
 पना कीजे मनुहाररे ॥शाती० ७॥ श्री शातीजीन  
 करवी जगती उदाररे ॥ पच पंच वस्तु मीलावीए  
 आगल धरो मनुहाररे ॥ शाती० ८ ॥ पंच सनाथी  
 कीजीए ॥ कलस पंच ते जरीएरे ॥ प्रतेके प्रतेके ते  
 रो ॥ एम शाती गुण वरीएरे ॥शाती० ९॥ अपमंगली  
 होवे नही ॥ माहामगलीक ते कहीएरे ॥ मुनी हुकम  
 शातीजी ॥ रीद्धि सीद्धि सर्व लहीएरे ॥ शाती० १०  
 काव्य श्री परम पुरपाय ॥ परमेश्वराय ॥  
 जरा मृत्यु नीवारणाय ॥ श्रीमतेजीनेद्राय ॥ जलनी  
 अजास्वाहा  
 अथ बीजी पुजा ॥ दुहा ॥ श्रीजीन थापन  
 हां करे ॥ चमर छत्र संयुक्त ॥ ते आगल पुजा करे  
 जेम कह्यु छे सुत ॥१॥ पुजा करता प्रभुतणी ॥ रिद्धि  
 सिद्धि घर होय ॥ पुत्र परीवार वाधे घणो ॥ वास्तुक  
 कीजे सोया ॥२॥ ढाल २ जी ॥ जेम जेम ए गिरि जे

२॥ तेम तेम पाप पलाय सलुणा ए देशी॥ स्नोत्र  
 १ प्रभु तणुरे ॥ पुजा रचो मनुहार सलुणा ॥ आं  
 रचो नव नव पेरेरे ॥ दीपक झाक झमाल सलुणा ॥  
 शिंतांतीजीन पुजीएरे ॥ तेम तेम मंगलीक थायसलुणा ॥  
 आंकणो ॥ १ ॥ गर्ज थकां मरगी हरेरे ॥ हेवो गुण छे  
 तास सलुणा ॥ सर्व उपद्रव हरे सहीरे ॥ याधी व्याधी  
 ही तास सलुणा ॥ श्री शांती ० २ ॥ द्रव्य वास्तुक पुजा  
 शिरे ॥ पुजा भणावो एह सलुणा ॥ जथा शक्ती तुमे  
 आवरोरे ॥ स्वामीवछल गुण गेह सलुणा ॥ श्री शांती ३ ॥  
 एम वास्तुक पुजा करोरे ॥ तजी अवर पक्ष सलुणा ॥  
 अन्य मती कह्युं नवी करोरे ॥ समजा ज्ञान दक्ष सलु  
 णा ॥ श्री शांती ० ४ ॥ द्रव्य वास्तुक एम जाखीयुरे ॥ मा  
 हामंगलीकनुं घर सलुणा ॥ एणी वीधी वास्तुक कीजी  
 एरे ॥ होवे वछीत सर सलुणा ॥ श्री शांती ० ५ ॥ हवे भाव  
 वास्तुक दाखवुरे ॥ आगमने अनुसार सलुणा ॥ समजी  
 खेजो प्राणीआरे ॥ ज्ञानी वचन सुखकार सलुणा ॥ श्री  
 शांती ० ६ ॥ जाव वास्तुक जे करेरे ॥ तेह लहे भव पार  
 सलुणा ॥ संक्षेपे ते वरणवुरे ॥ ते सुणजो अधीकार स  
 लुणा ॥ श्री शांती ० ७ ॥ जाव वास्तुक श्री शांतीजीरे ॥  
 करी पाम्या सीव वास सलुणा ॥ मुनी हुंकम वास्तुक  
 करेरे ॥ अक्षय पद उलास सलुणा ॥ श्री शांती ० ८ ॥



## श्रीवास्तुकपुजा

काव्य प्रथम प्रमाणे ॥ पुजा बीजी सपूर्ण ॥

पुजा त्रिजी ॥ दुहा ॥ वास्तुक पुजा भावथी ॥ ५

ते सारा ॥ ते अधिकार ते दूरणवु ॥ समजी लेजो विचार ॥

ढाल ३जी ॥ धनधन ते जग प्राणी आ मन मोहन मे

ए देखी ॥ वास वसो स्वभावमा मन मोहन मेरे ॥ तज

तुमे पर दुरा ॥ मन मोहन मेरे ॥ काल अनादी अनंतनी

मन मोहन मेरे ॥ मोहदशामा पुरा ॥ मन मोहन मेरे ॥ १

तेहथी भवभ्रमण कर्यु ॥ मन ० ॥ चौगती ससारा ॥ मन ० ॥ उ

ख चोरासी योनी विशे ॥ मन ० ॥ नाव्यो दु खनो पार

म ० २ ॥ असं व्यवहार नीगोदमे ॥ मन ० ॥ काल अनादी

संत ॥ मन ० ॥ पुनरपी पुनरपी उपन्यो ॥ मन ० ॥ जोग

तो दु ख अनत ॥ मन ० ३ ॥ कोइक कर्म विवर थकी ॥

मन ० ॥ अकाम निर्जरा जाण ॥ मन ० ॥ व्यवहार रासीम

आवियो ॥ मन ० ॥ थाचरादी वखाण ॥ मन ० ४ ॥ वे ती चो

द्रीमा जम्यो ॥ मन ० ॥ तेम असंज्ञी विचार ॥ मन ० ॥ उ

लचर थलचर खेचरा ॥ मन ० ॥ उरपरीभुज परीधार ॥

मन ० ५ ॥ संज्ञी पचेद्रीने विपे ॥ मन ० ॥ तरंक त्रीजच धा

॥ मन ० ॥ देव मनुप पण तेम थयो ॥ मन ० ॥ पण नही व

स्तु उदार ॥ मन ० ६ ॥ जेह जेह वारतु जाहा कर्यु ॥ मन ०

ते ते पाप उपचार ॥ मन ० ॥ जीवहसाथी सुख नहीं ॥

मन ० ॥ समजो सवी ससारा ॥ मन ० ७ ॥ ते कारण होम य

## श्रीवास्तुकपुजा.

तजो ॥मन०॥ तजो ब्रह्मज्ञोज मुल ॥मन०॥ बीजे अंगे  
 ज्ञाखीयुं ॥मन०॥ सातसी नरकनुं सुल ॥मन०८॥ वास्तु  
 करो तुमे ज्ञानमां ॥मन०॥ स्व. स्वभाव धार ॥मन०॥  
 जन्म मरण जेहथी टले ॥मन०॥ पामे सुख उदार ॥म  
 न०९॥ श्री शांती बीव पधरावीने ॥मन०॥ वास्तुक करो  
 उदार ॥मन०॥ मुनी हुकमे. ए वास्तुथी ॥मन०॥ होवे मंग  
 लमाल ॥मन०॥ पुजा त्रीजी संपूर्ण काव्य प्रथम प्रमाणे ॥  
 पुजा चौथी ॥ दुहा ॥ एम नव नव हुं. नम्यो ॥ अ  
 शुध वास्तुक कीध ॥ हवे सुध वास्तुक आदरुं ॥ सदगु  
 रु वचनथी लीध ॥१॥ ढाल ४ थी ॥ ए गिरीवर, दर  
 सन जेह ॥ ए देशी ॥ सदगुरु मलीआरे ज्यारे ॥ पा  
 म्यो वंछीत हुं त्यारे ॥ उपदेश सुण्यो जब जास ॥ पा  
 म्यो हुं ज्ञान उलास ॥ सदगुरु मलीआरे ज्यारे ॥ पा  
 म्यो वंछीत हुं त्यारे ॥१॥ ए आंकणी ॥ जाण्यो जब शत्रु  
 जेह ॥ राग द्वेष मोह तेह ॥ अंतरमांथी ते खसीयुं ॥  
 तन वेरागे मन ते वसीयुं ॥सद० २॥ समकीत तव ते  
 पाम्यो ॥ मिथ्यात्व ते दुरे वाम्यो ॥ गुणठाणुं चौथुं ते  
 सार ॥ बीज चंद्रसम उदार ॥सद० ३॥ सुमती तव घ  
 रमां आवी ॥ कुमती तव दुरेरे जावी ॥ तव दीपक थयो  
 घरमांही ॥ दीठी वस्तु पोतानी त्यांही ॥सद० ४॥ ज्ञा  
 नादीक गुण ते दीठा ॥ मुज मन लागे ते मीठा ॥ अ

बरती नारी ते देखी॥ताकीदयी दूर उवेखी॥सद० ५॥  
 सुधर्म बुद्धी तव आवे ॥ चोकडी दोय दूरे जावे ॥ पा  
 पनो खजानो खुट्यो ॥ मोहनो परीवल लुट्यो॥सद०  
 ६॥ प्रदेश असंख्यनी रचना॥ निर्मल करवा थइ जय  
 ना॥सजम श्री वेगे आवी ॥ कारक समेत ते लावी ॥  
 सद० ७॥ गुणठाणुं सातमु तेह ॥ फरसतां हूवो गुण  
 गेह ॥ छठे सातमे रमता ॥ हीचोलाकारे करता ॥सद०  
 ८॥ प्रमत्त अप्रमत्त जाण ॥ सिद्धांतमांही बखाण॥ एम  
 वास्तुक ज्यारे कीधी ॥ सदगुरु वचनथी लीधी ॥सद०  
 ९॥ अपमंगलीक सरवे नाठां ॥ करमदल पण घाठा॥  
 सरव मंगलिक माही एह ॥ दसवीकालक नाखे तेह  
 ॥सद० १०॥ ए वास्तुक पुजा कीजे ॥ मनवछीत फल  
 तो लीजे॥मुनी हूकम वास्तुक कीधुं॥ मनवछीत कारज  
 सीधुं॥सद० ११॥काव्य प्रथम प्रमाणे पुजा चौथी संपूर्ण  
 पुजा पाचमी ॥दुहा॥ वास्तुकपुजा स्वग्रहे ॥ कर  
 ता नवनीध थोय ॥ पर वास्तुक दूरे करो ॥ सहेज श्मि  
 वपुरजाय ॥१॥ ढाल ५ मी ॥ सोना रुपाके सोगटे  
 साही खेलत बाजी ॥ए देशी ॥ वास्तुकपुजा घरतणी॥  
 स्वस्वरूपमा लीजे ॥ असख परदेशछे आतमा॥ तिहा  
 कने कीजे ॥ स्वघर तो तेने कह्यु ॥ खेत्रथी जाण ॥ द्र  
 व्यथी चेतन नाखीयो ॥ एम चीत्तमा आण ॥गा० १ ॥

कालथी अग्ररुलधु कह्यो ॥ तुमे समजोनाइ ॥ छठाँए  
वहीआ तांहां कने ॥ एम चीत्तमे लाइ ॥ नावथकी ते  
जाणीए ॥ ज्ञानादिक गुण ॥ संदगुरु हेते नाखीआ ॥ ए  
म वास्तुक सुण ॥ गा० २ ॥ वास्तुक पुजा तुमे करो ॥  
श्री सांतनुं नाम ॥ संतपणुं तुमे पांमशो ॥ भाख्यु शास्त्र  
ते तामा॥वास बसो तुमे ते विपे ॥ जे गुणनुं गेह ॥ अठ्ठा  
बाध सुख तीहां कने ॥ पांमशो तुमे तेह ॥ ३ ॥ अवेदी अ  
छेदी सदा ॥ अभेदी कहीए ॥ अखेदी ए आत्मा ॥ एम स  
मजी लहिए ॥ असख्य प्रदेश ते देखता निर्मल ते ना  
से ॥ सीद्धतणा ए साधरमी ॥ अक्षय सुख वासे ॥ ४ ॥ सं  
नावे तीहांकने ॥ नही रागने द्वेष ॥ ए नाव चित्तमे धरो ॥ पे  
हेरो अक्षय वेश ॥ बाहाज्य द्रष्टि मत दियो ॥ दियो अंत  
रमांही ॥ तव पियो सुमता सुधा ॥ संतरस ज्यांही ॥ ५ ॥  
सरव जीव ते सारीखा ॥ सत्ता ए देखो ॥ राग द्वेष की  
नसे कसो ॥ कोण परायो पेखो ॥ ज्ञानादिक गुण अनंतनो ॥  
स्वामी ते कहीए ॥ आतम सीद्ध ते सारीखा ॥ जेद तेहमां  
ना लहिए ॥ ६ ॥ विभाव सर्व दूरे करो ॥ दूखदाइ जा  
णी ॥ स्वभावमांही खेलीए ॥ शुद्ध नाव चीत्त आणी ॥  
ज्ञान दरसन चरण ते ॥ आत्मने कहीए ॥ अनेद ज्ञान ते  
आदरो ॥ केवळतिहां लहिए ॥ ७ ॥ जथा खाएक जाणीए ॥  
चारित्र तेह ॥ ते गुण तिहां प्रगटे ॥ अनंत विरज एह ॥

वरंती नारी ते देखी॥ताकीदथी दूर उवेखी॥सद० ५॥  
 सुधर्म बुद्धी तव श्रावे ॥ चोकड़ी दोय दूरे जावे ॥ पा  
 पनो खजानो खुट्यो ॥ मोहनो परीवल लुट्यो ॥सद०  
 ६॥ प्रदेश असख्यनी रचना ॥ निर्मल करवा थइ जच  
 ना ॥ सजम श्री वेगे आवी ॥ कारक समेत ते लावी ॥  
 सद० ७ ॥ गुणठाणु सातमु तेह ॥ फरसता हूवो गुण  
 गेह ॥ छठे सातमे रमता ॥ हीचोलाकारे करता ॥सद०  
 ८॥ प्रमत्त अप्रमत्त जाण ॥ सिद्धातमांही वखाण ॥ एम  
 वास्तुक ज्यारे कीधी ॥ सदगुरु वचनथी लीधी ॥सद०  
 ९॥ अपमंगलीक सरवे नाठा ॥ करमदल पण घाठा ॥  
 सरव मंगलिक मांही एह ॥ दसवीकालक नाखे तेह  
 ॥सद० १०॥ ए वास्तुक पुजा कीजे ॥ मनवछीत फल  
 तो लीजे ॥ मुनी हूकम वास्तुक कीधु ॥ मनवछीत कारज  
 सीधु ॥सद० ११॥ काव्य प्रथम प्रमाणे पुजा चौथी संपूर्ण  
 पुजा पाचमी ॥ दुहा ॥ वास्तुकपुजा स्वग्रहे ॥ कर  
 ता नवनीध थोय ॥ पर वास्तुक दूरे करो ॥ सहेज श्मी  
 वपुर जाय ॥ १॥ ढाल ५ मी ॥ सोना रुपाके सोगटे  
 सांही खेलत बाजी ॥ ए देशी ॥ वास्तुकपुजा घरतणी ॥  
 स्वस्वरुपमा लीजे ॥ असख परदेशछे आतमा ॥ तिहा  
 कने कीजे ॥ स्वघर तो तेने कह्यु ॥ खेत्रथी जाण ॥ द्र  
 व्यथी चेतन नाखीयो ॥ एम चीत्तमा आण ॥ गा० १ ॥

## श्रीवास्तुकपुजा.

कालथी अगुरुलघु कह्यो ॥ तुमे समजोनाइ ॥ छठांण  
 वहीआ ताहां कने ॥ एम चीत्तमे लाइ ॥ जावथकी ते  
 जाणीए ॥ ज्ञानादीक गुण ॥ संदगुरु हेते जाखीआ ॥ ए  
 म वास्तुक सुण ॥ गा० २ ॥ वास्तुक पुजा तुमे करो ॥  
 श्री सांतनुं नामा ॥ संतपणुं तुमे पांमशो ॥ भारूयु शास्त्रे  
 ते तामा ॥ वास वसो तुमे ते विपे ॥ जे गुणनुं गेह ॥ अज्या  
 बाध सुख तीहां कने ॥ पांमशो तुमे तेह ॥ ३ ॥ अवेदी अ  
 छेदी सदा ॥ अभेदी कहीए ॥ अखेदी ए आत्मा ॥ एम स  
 मजी लहिए ॥ असरूय प्रदेश ते देखता निर्मल ते जा  
 से ॥ सीद्धतणा ए साधरमी ॥ अक्षय सुख वासे ॥ ४ ॥ सं  
 जावे तीहां कने ॥ नही रागने द्वेष ॥ ए जाव चीत्तमे धरो ॥ पे  
 हेरो अक्षय वेश ॥ बाहाज्य द्रष्टि मत दियो ॥ दियो अंत  
 रमांही ॥ तव प्रियो सुमता सुधा ॥ संतरस ज्यांही ॥ ५ ॥  
 सरव जीव ते सारीखा ॥ सत्ता ए देखो ॥ राग द्वेष की  
 नसे करो ॥ कोण परायो पेखो ॥ ज्ञानादिक गुण अनंतनो ॥  
 स्वामी ते कहीए ॥ आतम सीद्ध ते सारीखा ॥ जेद तेहमां  
 ना लहिए ॥ ६ ॥ विभाव सर्व दूरे करो ॥ दूखदाइ जा  
 णी ॥ स्वभावमांही खेलीए ॥ शुद्ध जाव चीत्त आणी ॥  
 ज्ञान दरसन चरण ते ॥ आत्मने कहीए ॥ अजेद ज्ञान ते  
 आदरो ॥ केवलतिहां लहिए ॥ ७ ॥ जथा खाएक जाणीए ॥  
 चारित्र तेह ॥ ते गुण तिहां प्रगटे ॥ अनंत विरज एह ॥

सलेशीकरण तिहा करो॥ प्रकृती वोतेर टाली॥ प्रकृती.  
तेरने टालतो॥ निजगुण अनुआली॥ आवधन छेदी स  
रवथी॥ शिवपथे चालो॥ दीय जाग श्रवगाहना॥ ते वास  
मा मांजो॥ एक समे थीती तेहनी॥ शीवपुर ते पोचो॥  
वास्तुक पुजा तिहा करो॥ अक्षय पद राचो॥ ९॥ एम वा  
स्तुक जे फरे॥ पछे वासमा वशीए॥ ते सुख पामे शास्व  
ता शीवरमणी रशीये ॥ मुनी हुकम वास्तुकतणो॥ एम  
करे उमैद ॥ जीनवाणी रुदीए धरी॥ टाली मननो खेद  
॥ १० ॥ काव्य प्रथम प्रमाणे पुजा पांचमी संपूर्ण ॥

॥ कलस ॥ गायो गायो रे श्री सांतीजीनेश्वर गायो॥ सं  
तस्वरुप देखी अनोपमा॥ वास्तुकपुजा मेलायोरे॥ श्रीशांती  
जीनेश्वर गायो॥ १ ॥ एम समजी जे वास्तुक करशे॥ तस  
जव दुख ते जायो ॥ शांतीजीनेश्वर शांतीकारण ॥  
वास्तुक पुजाए गायोरे ॥ श्री शा० २ ॥ सवत ओगणी  
स सतावीस वरसे॥ फागणमास कहायो॥ सुद चौथने  
गुरुवारि ॥ ए पुजा रचायोरे ॥ श्री शा० ३ ॥ अद्वावाब सु  
श्रावक ॥ नेमाज्ञाती कहायो ॥ मोदी गौरधरे पुजा र  
चावी ॥ बहू द्रव्य खरचायोरे ॥ श्री शा० ४ ॥ गोधरपु  
रे श्री शांतीजीनेश्वर ॥ परसाद सुंदर सोहायो ॥ स  
घ आग्रहथी रचना कीधी ॥ मुनी हुकम सुख पायोरे  
॥ श्री शा० ५ ॥ इति श्री वास्तुक पुजा संपूर्ण.

# श्रीसम्यक्द्वार.

श्रीगुरुभ्योनमः

॥ दुहा ॥ श्रीसंखेश्वरसाहेबा॥ प्रणमिपासजिणंद॥ तेह त  
 णेपसायथी॥ करुं शुद्धप्रबंध ॥१॥ सदगुरुनेचरणेनमी॥  
 समरीसरश्वतिसारा॥ ग्रथरचुं व्यवहारमां॥ नामेसम्यक्द्वार  
 र ॥२॥ नव्यजीवनाहितजणी॥ करुं ग्रथरसाला॥ त्रणतल  
 ओलखावसु॥ संक्षेपेसुखसार ॥३॥ मूढमतिसमझेनहि॥  
 तेमांनहिकोयदोष॥ कुगुरुआदिकजरमावियो॥ करेकर्मको  
 पोष॥४॥ सुलजबोधिजीवहशे॥ तेसदहशेएहा॥ तेहसुखले  
 शेतरता॥ टालिकर्मनेहेह ॥५॥ संप्रतिजेहनुं फुलछे॥ देवलो  
 कनरलोकधार॥ अनुक्रमेफलतेलहे॥ परमपरमोक्षसार  
 ॥६॥ करुवालाकोधमय॥ सोरठनापामोझार॥ वालजीवने  
 कारणे॥ समझतांनहिवार ॥७॥

अत्रनापालिरूपते ॥ हवेइहांसमकितनेवास्तेत्रणतल  
 ओलखावेछेपरंतुव्यवहारनिओलखाणविनासमकितनि  
 मालमपडेनहिं तेवास्तेप्रथमव्यवहारनिओलखाणकरा  
 वेछे तेश्रीजिनमार्गनेविपेतोस्यादवादमतछे इहांतोव्यव  
 हारनोपूठथायछे त्यारेवादिएतर्ककरीजे श्रीजिनराजनो  
 मार्गतोएकातछेनहि तुमेतोएकातेव्यवहारनेपोपोछे श्री  
 सुगडगमधेतोकहूछेजे॥ एकातेहोइमिच्छाओ इतिवचना



त्तातेनुकेमतेनोउत्तरजेतेप्रश्नकर्युं तेस्वरूपणनिश्चेतोप्रणा  
मनीधाराएछेवाइयथकितोव्यवहारजोयामात्रावेछे श्रीम  
हाविरस्वामीनेकेवलज्ञानउपन्युत्यारेतोएकलाहतात्यार  
पठी इंद्रादिकसुरमलीनेसमोवसरणादिकनिरचनाकरी  
त्येरिइंद्रभूतिप्रमुखेजाण्युंकोइकइद्रंजालीयोआव्योछेएवु  
जाणीनेवादकरवामथो जगवानेएहनासंदेहकाढ्याएणे  
चारित्रलीधूं तेसर्वव्यवहारहतोतोवनिआव्यु एकलाहो  
ततोकुणजाणता तथावलिजेसाधुतथाआवकनो प्रावर्तन  
सर्वव्यवहारमेदिसेछेकिमजेसाधू जेसाधुनामानीपेतवस्त्र  
पात्रराखेछे अनेसूधपरंपरागतआचारेवर्तेंछे तेहनेसाधु  
करीनेवादेतो समकितनिर्मलथाय जेतेहसाधुकरीजाणि  
नेसाधूनेव्यवहारेवादेछेजिमश्रीप्रश्नचदराजरूपिकाउस  
मकरीनेउच्चारह्याहतादूर्ध्वानध्याताथक श्रेणिकराजाए  
तेहसाधूजाणिनेव्यवहारेवाद्याछे साधुकरीनेवाद्यापणमि  
थ्यात्वकिधूनथि तेवास्तेजिनसासननेविपेचतुरविधसंघ  
निजकिबहूमानकरवू तेव्यवहारनेजोइनेकरवूजोव्यवहा  
रनेमानेनहितोतिर्यनोउछेदथाया॥

यदुक्तं॥श्रीआवशकनिर्युक्ति॥चौमत्तसमयंचजा॥व्यव  
हारनयाणूसारणिसवा॥तंजहा॥सामायरजो॥सूझईसवो  
वीसुधमणो॥१॥सविवहारोविवलि॥जिनशुद्धपीगोहिया॥  
सुवविहिए॥कोवईनसवाणू॥ वंदइयकयाइछउमत्त॥२॥

निधयव्यवहारनो॥वणियसिहसासणं॥जीणीदाणं॥गंय  
रपरीवाओ॥मीथसंकादउजेयया॥३॥ जईजीणमईयंपव  
जहतो॥ माववहारनयमयमुयहां॥विवहारपरीवाए॥तिल्लु  
छेओजउवस॥४॥हवेचारगाथानोअर्थकाहिएछिये॥छउम  
थसमयके० छदमस्थनोफाला॥यंपुन्यजाके० जिहांसुधीछे  
एटलेजिहांसुधि छदमस्थपणुंछे केवलज्ञानउपन्यूनथि  
त्यांसुधि॥व्यवहारनियाणूंसारणीसूवाके०॥सरवेकिरीया  
जेव्यवहारनयअनूंसारणीकहिछे श्रीतीर्थकरदेवे ततहस  
मीयरतोके०॥तेआचरतोथको अगीकारकरतोथको जि  
वसिद्धिहके०॥सिधितथाए कर्मरहितथाए सबोविके०॥स  
र्वजव्यजीव विसूधमणोके०॥जेभव्यजिवकपटपणेरहित  
व्यवहारनयनिकिरीयाकरतोथकोकर्मरहितथाएएप्रथम  
गाथानोअर्थ॥१॥ एगंयामांहेविसूधमणोंएपदैकरीतेनि  
श्रेपणकह्यो हवेविजीगाथामांहेनिश्वेथकिव्यवहारवलि  
पुछेतेदेखाडेछे॥सव्यवहारोवीवलिकें०॥समेक्यविवहार  
तेजेउनोउक्त सूधव्यवहारछेतेवलिपुछे तेसामाटेजे सम  
सुधंग्रीगहिअंसूपवहिएज्यंके०॥ एतएशुधंआधाकर्मादि  
दोपदूष्टआहारामिदकगहियंके०॥पहवोसूरावहीर्थके०॥  
स्तुर्तनिविधिकरीने एटलेछदमस्थ पोतानाजाणपणा  
थि सूधमांनजाणिनेवोहरे अनेनिश्वेथकितोकेवलआधा  
कर्मादिकसहितआहारछे तोहिपणकाई नसपणोके०॥

नेकोईजतिप्रमाणकरेपणनिषेधनकरे सर्वग्यके॥केवल  
ज्ञानिपणआधाकरमादिक आहारछदमस्तेसूधमानजां  
णीनेआप्योहोयते आहारकेवलपणसूनकरे वदिइकया  
धनउमत्छके॥ कदाचित्कोईदने चउमत्छवंदियके॥  
छंदमस्तप्रतेवदिकेवली एंटलेसिष्यनेकेवलज्ञानउपन्युछे  
अनेगुरुतेछदमस्तछे तोहिपणजिहासुधिकेवलज्ञानउ  
न्युजाण्यनयित्यासूधिसिष्यनोव्यवहारवदणादिकनोहो  
यतेजालवे एगायामाहेनिश्चेथंकीव्यवहारनयवलवानदे  
खाड्यो एविजीगाथानोअर्थकह्यो॥२॥हवेत्रीजीगाथामा  
हेनिश्चेनयव्यवहारनयसहितजिनसासनतोहिपणएकन  
यत्यागकरेतोमिथ्यात्वथाय तेकहेछे नयिव्यवहारनउवां  
णियमेहसासण जिणदाणंके॥निश्चेव्यवहारसहितछे इ  
हके॥इहलोकनेविपे जिणदाणंके॥ जिनेद्रनूसासनछे  
तेनिश्चेव्यवहारसहितछे॥एगयरपरीइओके॥एकत्वनय  
नोपरीत्यागकरेएट्ठेनिश्चेनयतथाव्यवहारनयएवेहुमये  
थीएकनयनेमानेतेहतोमीत्छ माकादियोजेयेके॥तेहनेमि  
थ्यात्वथाये संस्यादिकउपजे तेपणइहांमिथ्यात्वजछे ए  
त्रीजीगाथानोअर्थकह्यो॥३॥हवेचोथिगाथानोअर्थकहियेछि  
ये जोव्यवहारनयनेतजेतोतिर्थनोउछेदथाये॥जीणइजण  
मयपवजहके॥जोजिनमतनेविपेपवजयके॥परवरजाअ  
गीकारकरवि व्यवहारनयमयमुईहिके॥तोव्यवहारनयना

मतनेमुकसोमां व्यवहारपरीचाओके० जोव्यवहारनयनो  
परीत्यागकरसे अनेमांसोनहितो तच्छछेओजउवसं  
के०॥तिर्थनोउछेदथांएओवसकें०।तेनिश्रेकरीनेजांएजो  
एचोथीगाथानोअर्थकह्यो॥४॥ एविरीतेव्यवहारछेतेवली  
पछे वास्तेव्यवहारनेविसेपेकरीनेदेपाडयोछेअनेनिश्रेछे  
तेतोकेवलगम्यछेव्यवहारछेतेप्रतक्षदीठामांआवेछेवास्ते  
व्यवहारनोउपदेशविशेषदेतांकोईदोपणनहि।इतिउत्तर  
पूर्ण ॥ इतिश्रीसम्यक्द्वारग्रंथोमुनिश्रीहूकमचंद्रजी विर  
चित्तेप्रथमोध्यायसमाप्तः-

हवे व्यवहार जे धणी आदरे तेधणिप्रथममिथ्या  
तनोत्यागकरे ॥ शामाटेजे मिथ्यात्वथकि समकित होय  
नहि मिथ्यात्वगये समकितथाय हवेइहां मिथ्यात्वनो  
सरुपसंक्षेपथकि देखाडेछे ॥ मिथ्यातना पांचभेदछे ॥  
यदूक्तं ॥ अभिगहीया॥१॥ मणजिगहीया॥२॥अनी  
निवेसिय ॥३॥ संसय ॥४॥ मणजेग ॥५॥ पण मित्छ  
बाइ१२॥आविराइ॥मण१॥ करण॥५॥ नियमूछजियवही  
॥६॥ एगाथा ॥५१॥ चौथाकर्मग्रथनी तेहनोअर्थ अजिग  
हिअके०॥ अभिगृहितमिथ्यात्व ॥१॥ जेजीवकूगुरुकूदे  
वकुधर्मनेसत्यकरीनेग्रह्या तेमूकेनहि तेहलोहवांणीयानो  
दृष्टांत एअजिग्रहीतमिथ्यात्वनोपेहेलोनेदा॥१॥अनजिग्र  
हीयके०॥अनजिग्रहीतमिथ्यात्वजेकरे सर्वदेवासर्वगुरुस

त्यछे तथाखराखोटादेवगुरुनिखवरनथि तेहनेतेमिथ्या-  
 त एविजोनेदमिथ्यातनो॥२॥ अजिनिवेसियके०॥ अजि  
 निवेसीकमिथ्यातकहिये अभिनिवेसीके०॥ खोटाहठक  
 दाग्रहंकाहिये तेजीवएकवारअजाणताजूठवोलेपछेतेहने  
 थांपवानेकाजे घणाउपायंकरे पछेजाणिनेखोटिजूक्तिए  
 करीजेजूठवोले तेअभिनिवेसिमिथ्यातकहिए तथापूर्व  
 श्रीमहाविरश्वामिनासासननेविपे जम्मालीप्रमुखनिनव  
 नेअजिनिविसमिथ्यातकहिए प्रथमतोअजाणताजूठवो  
 ल्या पछेतोजाणीनेकदाग्रहनेवसेकरीनेपोतानूवचनराख  
 वानेकाजेजूठवोल्यातेनेअभिनिविसीमिथ्यातकहिएइहां  
 आचोविसिमध्येदूडाअवसरपणीनेजोरेकरीनेदसतोअउ  
 राथयाछे वर्तमानघणाजीववहूलकर्मकृष्णपक्षादिसेछे  
 मूकलपक्षीलथूकर्म जीवथोडादिसेछे देहथिइहाएकपू  
 व्रजप्रवर्तनमाहेमोक्षेजावहोय तेशुकपक्षीजीवकहिए  
 जैकृष्णपक्षीजिवहोय तेहनेमतकदाग्रहघणोहोय तथा  
 शुकपक्षीजीवहोय तेमध्येपणजारेकर्मिजिवहोय तेहजेम  
 तकदाग्रहघणोहोय हठवादघणोहोय जैश्रीमहाविरश्वा-  
 मिनासासनमध्ये सातनिनवथया तेश्रीठाणगसूत्रना ७  
 मेठाणेकिधूउ तेअलावोलखिएछे ॥ समणभगवउ महा  
 विर सतथमी सतपवयणनर्पनता तजहा जहावहूरी  
 या॥१॥ जीवपयसिया॥२॥ अवतवा॥३॥ समछइया॥४॥ दो

करीया॥५॥तेरासीया॥६॥अवठियाए॥७॥ एएसणसत्त  
नंपवयण निहूगाणं सत्तधम्माअरीयाहोत्थ तजहाजमा  
लीजमाला॥१॥सीतंगूतोअसाढे॥३॥आसीमिति॥४॥गंगे  
या॥५॥छलूए॥६॥गूठामाहेले॥७॥एसिणंसत्तन पवयण  
नीनगाणं सत्तउमत्तिनगरेहोथा॥सावथी॥१॥उसभरं॥२॥  
सियविया॥३॥महिला॥४॥ उलगातिरं ॥५॥ पुरमसरजी  
॥६॥दसपूरनिनगाउपतिनगराइ॥हवेएहनोअर्थलिखीए  
छीये श्रीमहाविरस्वामिनेकेवलज्ञानउपन्यापछिचउदव  
रसथयापछीबहूमतमतिजंमालीनांमानीनवथयो॥ बहूर  
तके०॥बहूसमयेकारजपूरुंथाएवहूके०॥घणासमयकरीने  
कारजपूरुथायछे तेकिमनजहा कूंभारमाटिलाविनेपांणी  
सूंभेजविनेपछेघडोकरे तेघडोज्यारेपूरुघडे तारेघडोक  
हिएएटलेघणेसमयेकार्यपूरुंथायतेहनेविपे॥ रतके०॥ अ  
सकबहूसूसमीये॥सूरतआसक्त॥इतिबहूरतअनसमया॥प  
ढलोमात्तमव्यधपदहलोपसमासएह्वंनामे काढयोजमा  
लिनांमानिनवथयो श्रीमहाविरस्वामिजीतोकरेमाणेक  
रेजेकारजकरवामांडंथूतेकारजकरंनहि॥एवचनउथापी  
नेपोतानो मतपरुपवालाग्यो श्रीसावथी नगरीमांहिथ  
यो इतिप्रथमनिहवथयो॥१॥विजोनिनवजिवपरदेशिक  
मनिके०॥चरमप्रदेशीजीविनिप्ररुपणानोकरुनारोतिपगू  
त्तनांमा॥श्रीजगवतश्रीमहाविरस्वांमिनेकेवलज्ञानउप

न्यापछि सोलेवरसेथयोनिनवा॥२॥ श्रीमहाविरस्वामिछ  
ताउत्सूत्रनिपरुपणाकरताहूवा श्रीमहाविरस्वामितो  
असस्यातपरदेशलोकाकास परदेशसमापतसपूर्णनेजी  
वकहेछे तेतोछेलापरदेशमाजीवमानेछे इतिद्वितीयनिन  
वा॥२॥ हवेत्रिजोनिनवआसाढजूतिआचार्यतेनासिष्य श्री  
श्रवक्तनामामतपरुपकथयो तेकैम श्रीमहावीरस्वामिनि  
रवाणथयापछिवसेनेचउदेवरसेथयो२१४॥ श्रीआचार्यपा  
सेधणासिष्यजोगवहेछे श्रीसिद्धातनाजोगवे प्रकारेछे  
एकअगाढ विजोअनागाढ हवेतेअगाढजोगहोयतेमध्ये  
धीकारणेनिकलेतो तेजोगफरीवेहवोपडे तेजोगअगाढ  
कहिए तेजोगमाहेकारणेनिकलेतो, जेटलोअधुरोहोय  
तेटलो जोगवहिनेपूर्णकरे तेजोगअनागाढ कहिए ॥  
तेसिष्ये अगाढजोग वेहवामाढयो तेहिजदिवसे कोई  
कर्मनेउदयेकरीने आचारजकालकरीने सुधर्मदेवलोके  
नलनिगुलमन्निमाने उपन्या ॥ पछे श्रवप्रिज्ञाने करीने  
जोयु तारेष्टलामालामध्ये कोईजोगपुरोकरावे एहवो  
आचारजदिठोनहि तारेसाधुनिअनुकपाएकरीने तेहिज  
पोतानासरीरमध्येआविने देवतानिशक्तिएकरीनेकोईजा  
णेनहि तेहिजरात्रेउठिनेरुत्तिकालगृहणलेइने जोगक्रि  
याउदेस समउदेस अनुग्यानीतकरावे अनेसाधुनाव्यव  
हारआचारनेप्रवर्त्तेछे॥गाथा॥आलियविहारसमिमूयो॥हू

लोगूतोवियोसमणद्धमे॥पढमपईमणूरपेविरीयामोपाईंवा  
 याओ॥१॥इत्यादिकव्यवहारप्रवर्तताथकाजोगशिष्यनेसं  
 पूर्णकराव्यो पछेतेदेवतासांधूखंमाविनेठेकाएगयो तेवा  
 रतेहिज शिष्यनेशंकापांडि जेवालिएमकोईकेकालंकयो  
 होय अनेबीजोपणपोतानाशरीरमांहीपेठाहोय कोइदेव  
 ताआविने तोकूणजाणेजेसाधूछेकेदेवताछे एवंविचारी  
 कोइकोइनेवादेनहि कोइजोवादिऐतोआपणनेदोपणला  
 गे तेजोदेवताहोयतो अव्रत्तिअपच्छपाणीहोयतेहनेसाधू  
 करीवादिऐतोमिथ्यात्वथाय अनेमृपावादपणलागे' एट  
 लावास्तेकोईसाधूमांहोमांहिवादेनहि श्रीअपाढाचार्यना  
 शिष्यअवत्कव्यनांमामत्तनिपरुपणाकरताथकाविचरे ह  
 वेतेकालेगीतार्थ बहुश्रुतमहापूरुपहता तेहनेघणीचरचा  
 करी जेएकाएदेवताहोए अनेसाधूनोवेपधरीतेसाधूनेआ  
 चारेमुलगूणपंच महाव्रतना ७ आचारपालतो हाय ते  
 नेसाधूकरीनेवादेतोमिथ्यात्वनथायअनेमृपावादपणनला  
 गे जेजिनसासननेविपेतोवाइयथिव्यवहारबलिष्ठछेइत्या  
 दिकबीजोपणघणीकजूक्तिएकरीसमजाव्योपणसमजेंन  
 हि तारेतेअपाढाचार्यनाशिष्यने संघवहारकर्या, तोएक  
 दाग्रहमुकेनहि एवाअवसरेश्रीराजगृहिनगरीमांहे श्री  
 बलनद्रराजाराज्यकरेछे सूर्यवंशिनेजैनधर्मिछे तिहांते  
 शिष्यआव्या त्यारे तेनेप्रतिबोधवानेकाजेराजाएपकडी



मंगाव्यातेनेमारवामांढ्यातारेतेसाधुकेवालाग्याहेराजन  
 तुंश्रावकथइनेअमनेकेममारहेतारेकेवालाग्याजेकुणजाणे  
 जेतमेसाधुछो केचोरछो केदेवताछो अमेषण श्रावकछूके  
 देवताछूतेकुणजाणे तारेतेप्रतिबोधपाम्या पछेधिवरसा  
 धुनेपगेलाग्यापोतानोमतंकटाग्रहमूष्यो आलोइने पछे  
 शुधययाएततीय अवतव्यनांमांश्रीश्रापाढाचार्यनाशि  
 प्यनोअधिकारपूर्णम् ॥ इतितृतीयनिनव ॥ ३ ॥

हवे चोयानिन्हवनो अधिकारकहेछे ते श्रीमथु  
 रानंगरीने विपेययो श्रीमत् महावीरस्वामिना निर्वा  
 णपछी वसेनेविसवर्षे श्रीआर्यमहागीरीना शिष्य को  
 डननामा तेनाशिष्य अश्वमित्रनामा एकज विद्यानुं  
 परवाद दसमू पूरवनिपूणनामा वस्तु जणताथका एवो  
 आलावो आठ्यो जेपडिपुन्यसमयनोराग्यासवे ॥ २ ॥  
 विलिजस्सतिएवंजाववमाणाअति॥एवंअतिताए ॥समये  
 सुवित्वव्या॥एहनोअर्थ॥पडिपुन्यके०॥वर्तमानकालहोय  
 एटलवर्तमानकालसमयनाजेनारकिछेतेविजेसमे॥बुछेद  
 के०॥विनाशथाएछे एटलेप्रथमसमयवसपटजेनारकिह  
 तो तैदिजनारकिविजासमयनेविपेविजेसमेविसिपुथाय  
 तेनेतेममजणपडिनहीं मिथ्यात्वनाउदयथाकिगुरुआदिके  
 धणीपरिसमजाव्योतोएसमजेनहि तारेसंधवाहरकाढ्यो  
 तेनामतमाहीजे जीवपापकरेछे तेनाशुपामेछे जेजीवपून्प

तरेछेतेपणनाशपामेछेसमयेरतेअश्वमित्रविहारकरतोश्री  
 राजग्रहीनगरीएंआव्यो तिहांपडरस्याविद्वांसंतकछे  
 नेदरबारनोचाकरछे मांडविनोदांणीछे एहनेप्रतिबोधवा  
 नेकाजे पकडीने मारवालाग्यो तारेतेने कहेवालाग्यो  
 जेहूसाधूछु तमोश्रावकछो तोमूनेकेममारोछो त्यारेदां  
 णिवोल्याजेसाधूहततेतोनाशपाम्याहवेंतमनेकोणजाणे  
 छे जेसाधूछोकेचोरछो तारेतेप्रतिबोधपांम्यो गुरुनेआवि  
 नेपगेलाग्योखमाविनेशुद्धथयो एचोथोनिनवकह्यो ॥४॥  
 हवेपांचमोनिनवकहियेछे द्विक्रियावादिगंगनामाआचार्य  
 श्रीमहाविरस्वांमिना निर्वाणथकिवसेनेअठ्याविसवरसे  
 श्रीआचार्यमहागिरिनाशिष्य श्रीधनुंपूरपत्यतेहनाशिष्य  
 गंगनामाएकदाउठनदि तीरेपूर्वतटे श्रीधनगुप्तआचार्य  
 चोमासुरह्याछे पश्चिमंतटनेविषे गंगनामाशिष्यचोमारुं  
 रह्याछे तिहांथकिशर्दरुतुयेश्रीगुरुनेवांदवाआवतांमार्गने  
 विषेनदिउतरतां माथेटालहतितेउपरैतडकोघणोलांग्यो  
 अनेपगेनदिनूपांणीटाढुघणुलाग्यु तेमांमिथ्यात्वनोउद  
 यथयो तारेमनमांहेचितववालाग्यो जेएकसमेश्रीसिद्धां  
 तमांहेवेहूकिरियानो उपयोगनिषेधकह्योछेतेखरुंछे जे  
 हुसाक्षात्एककालेवेहूकीरीयानो उपयोगअनुंजवूछुं आ  
 तोनठवेदनाअनुंजवूछुं पछीगुरुआगलचेष्टांकरी तारेगु  
 रुकेहेवालाग्या जेएकसमये एकजक्रियानो उपयोग

होय एकसमेदोमुपेखातोहोय नेबोलतोहोय पगेहिडतो  
होयएटलेक्रियातोएकसमेधणीकरतोथकोपएएकजक्रि  
यानोउपयोगहोय समयनोकांलसुक्ष्मछे एमघणुकह्युं  
पणमान्पुनहि तारेगुरुयेसंधवाहरकाढ्यो पछेतेगंगाशि  
ध्वंश्रीराजगृहिनगरीएआव्योतिहामातप्रस्तरप्रभावना  
नुदेहेरुछे तिहामणिनागनामेजसनुदेहरुछे तेपासेखोटे  
परुपणाकरतोदेखीनेतेजसकेहेवालाग्यो श्रीवर्द्धमानस्वां  
मीयेएकसमेएकजक्रियानोउपयोगकह्योछेरेपापीष्टदुष्टतुं  
एकसमेवोक्रियानोउपयोगकेमकेहेछेएवाधणाकंकठणवच  
नेकरीनेकह्यु तेसांचलिनेमनमांचयपामतोथकोगुरुपासे  
आव्योमिथ्यात्वमूक्यगुरुनेखमाव्या इतिपाचमोनिनवक  
ह्यो॥५॥हवेछठोनिनवत्रिरासिकनोअधिकारकहेछे श्रीव  
र्द्धमानस्वामिनानिर्वाणथकि पाचसेतेचुमालीसवर्षेअनि  
जकानगरीनेविपे बलश्रीनामाराजाराज्यकरेछे तिहाजो  
हपटसालनामापरीत्राजक लोहपटवाध्युछे हस्तनेविपे  
जबुवृक्षनुंडालुरासेछे लोकपूछेतारेएमकहे जेमारापेटमा  
विद्यारहितेणैकरीनेफाटेछे वास्तेलोहपटवाध्युं नेकोइ.  
प्रतीवादिजबुहिपमाहिदिठोनहि तेहजणाववानेकाजेजबु  
वृक्षनुंडालुंछेतेलेइनेफरुछु तिहातंकालेश्रीगुप्ताचार्यवि  
चरेछे तेहनाशिष्यरोहगुप्तनामागामतरेछे तिहांथकीगु  
॥ १ ॥ आवतावाटे राजाचरचानेकाजेपडहोवजडाघ

छे कोइएपडितहोयतेएपरीव्राजकनेसाथेचरचाकरे तिहां  
 रोहूगुप्तशिष्येज्ञाल्यो पछेगुरुपासेआव्यो गुरुयेकह्युजे  
 एसारुक्युंनहि आपणेवांढकरंवानुंशुंकामछे नलुहवेतो  
 सारुंथायतेमकरो पछेगुरुएज्ञानेकरीनेजाण्युंजेतेहपासे  
 नकुलनीविद्या॥१॥ सरपनिविद्या॥२॥ उदरनिविद्या  
 ॥३॥ मृगनिविद्या॥४॥ सुयरनिविद्या॥५॥ कागनिविद्या  
 ॥६॥ पंखिनीविद्या॥७॥ एसातविद्याछे एविद्यानेघातनी  
 करनारी बीजीसातविद्यांगुरुएआपी मोरविद्या॥१॥ न  
 कुलनीविद्या॥२॥ बलाडीनीविद्या॥३॥ वाघनीविद्या॥४॥  
 सिंहनीविद्या॥५॥ गुढनीविद्या॥६॥ बाजपंखीनीविद्या॥७॥  
 एसातगुरुएआपी ॥ वलिआठमो पोतानोओघोमंत्रनि  
 गुरुए आप्यो बीजाउपद्रव्य निवारवानेकाजे हवेजेरो  
 हगुप्तहता तेगुरुनेकंहिने राजसजामांहिआव्या त्यारे  
 पटसालकपरीव्राजके जाण्युंजे एजैनिछे एहप्रतेजोसं  
 स्कृतभाषाबोलीशुंतोतेबोलशेनहि तेवास्तेजैननाघरनी  
 वादलहिनेवादकरुं जेउथापिसकेनहि हवेपटसालवो  
 ल्यो जेसंसारमधे वेपदार्थनिरासिछे एकपून्य॥१॥ अथ  
 वापाप॥२॥ रात्रिदिवस॥४॥ आकास॥५॥ धरती॥६॥  
 जीवा॥१॥ अजीवा॥२॥ इत्यादिकबबेनिराशिछे त्यारेरोहगु  
 प्तबोलीयो जेसंसारमध्येरासित्रणनीछे कालत्रणछे अती  
 ता॥१॥ अनागता॥२॥ वर्तमाना॥३॥ स्वर्ग॥१॥ मृत्यु॥२॥

पाताला॥३॥ जीवा॥१॥ अजीवा॥२॥ नोजीवा॥३॥ इत्यादि  
 करासीत्रणनीछे त्यारेपटसालकहे जेनोजीवतेशुंकहीए  
 त्यारेरोहगुप्तकहे॥जेनोजीवक०॥ गरोलीनीपूछडीटुटी  
 पढ्यापछीहालेछे एजीवपणनकहिये अजीवपणनकही  
 ए एनोजीवकहीए पछेसातविद्यामुकी तेउपरतेणेपण  
 सातविद्यामुकी विद्याधातीनेझीत्यो पछेतेनीपासेएकप  
 दवीविद्याहती तेमुकीनेविद्यानेप्रसादे जयपताकाकरी  
 ने गाजंतेवाजते श्रीगुरुपासंआव्या सघलीवातकही  
 गुरुएपूछ्यु हेवल्हसारुकर्युजे वादनेजीत्यो पणजीवअ  
 जीवनेनोजिवकह्यो तेउतसूत्रनाप्युं तेहजइनेराजसभा  
 माहिखमावो पछेअहकारनेविशे आत्माआंअग्निनिबोशि  
 मिथ्यात्वनेवसेकरीनेगुरुए किधुतेमान्युनहि पछे राजस  
 आमांगुरुसाथेवादकरताहार्यो पणमानेनहि तारेगुरुए  
 कुनिआवडनेहाटेथकि नोजीव मगाव्यो पणआव्योनहि  
 पछे गुरुएमघवाहरकाढ्यो एणैवैशकमतपरुप्यो इति  
 श्रीरमशिकनामाछठोनिनवकह्यो ॥६॥ हवेसातमोनिनच  
 गोष्ठमालिनामा तेहनोअधिकारकहेछे श्रीमहाविरस्वा  
 मिनान्निर्माणथकि पांचसंनेचोरासीवर्षे श्रीमालवदेशने  
 विपे दशपूरकहेतासंप्रतिहमणा मदोसरनेविपेथयो॥ ते  
 केम ॥ श्रीआर्यरक्षितआचार्य देशोउणादशपूरवधर शु  
 तकेवलि जुगप्रधानछे सोमदेवब्राह्मणनोपूत्ररुद्रसोमा

मातजेहनिषरमश्राविकाहोति तेमातापूत्रप्रते कहेहेपूत्र  
 माहूरोजोपुत्रहोयतो दृष्टिवादपूर्वज्ञाणिने आवेतो हूराजी  
 थाउ एवचनेकरीने. तेतलीपूत्रआचार्यपासेदिक्षालिधी  
 श्रीवेरस्वामि. पासेदेशेउणा दशपूर्वज्ञण्या तेश्रीआर्य  
 रक्षितनाच्यारशिष्यमुख्यछेएकदूरवलिकापुफमित्रजुगप्र  
 धान॥१॥ विजाआश्रावधयमांनामासाधु ॥२॥ त्रिजाश्री  
 फालुरक्षितं ॥३॥ चोथाश्रीगोष्टमालि ॥४॥ फालुरक्षित  
 श्रीआर्यरक्षितानालघूनाईछे अनेगोष्टमालीमामोछे सि  
 दूरवलिकापुफ मित्रनामासाधूनवपूर्वसूधिज्ञण्या दसमु  
 पूर्वभणे पणविसरीजाय. तारेश्रीआर्यरक्षिते जाण्युहवे  
 आजथाकिदिवशेदिवशे घटति२बुधियशे तेवास्तेश्रीआ  
 चारंगादिकसिधांतनाजेअनुजोगके० ॥ वाख्यान टिका  
 निर्युक्तियादिकजे सिधांतथकिजुदिकरीने. पुस्तकपदेले  
 खि एटले जेटिकानिर्युक्तियादिकतेआचारंगादिकथकि  
 वेहेलांलिख्यांछेआचारंगादिकतो नवसेनेएसिवपेंलख्या  
 दिसेछे जेनिगम॥१॥संग्रे॥२॥व्यवहारा॥३॥रजूसूत्र॥४॥  
 शब्द॥५॥संजीरुढा॥६॥ एवंभूता॥७॥ एसातनुवाख्यान  
 सूत्रमाहे विस्तारेहतुंतेसूत्रमाहेगोपव्यु अनेनिर्युक्तियां  
 दिकनेविपेविस्तारीने. किधां. तेसाक्षत्रणप्रकारे कहिछे  
 तेएकप्रणीता॥१॥ अतिप्रणीत ॥२॥ प्रणीता. ॥३॥ प्रणीत  
 तेजेनिखेपासमजे नहिअगीतारथा॥१॥ अतिपरणीततेए

कनेसाजलिने एकातद्वारे स्यादवादतुरत जाणेसमजे  
 नहि जाणजेहूसमजणोछु तेनेलोकमाहेदाधारंगोकहेछे  
 तेनेपरणीतिशिष्यकहिण॥१॥हवैजेपरणीता शिष्यतेनिश्चे  
 व्यवहारउत्सर्ग अपवादमार्गसर्वसमजे॥३॥ पणवुधि  
 नाथीडापणामाटे कलिकांलेविस्तारीनेवास्यानकरीशके  
 नहि तेवास्तेसिधातमाहेगोपव्यापछे आर्यरक्षिते दूब  
 लिकापूफामित्रने जोग्यउत्तमजुगप्रधानजाणिने आचा  
 रजपदविधापिनेस्वर्गेपधारया पछेगोठमालीसाभलिखे  
 दघणीपाम्योथको श्रीदसपूरनगरीनेविपे श्रीदूबलिका  
 पूफामित्रथकिजूदेउपाश्रयेआविनेउतरेतिहांश्रीवृधनामा  
 साधूनेपासे करमपरवादनामा आठमंपूर्वसाजल्युछे ते  
 नेविपेकह्युछेजे आत्मानेविपेकर्म रह्याछे जिमदूधमाहे  
 पाणीनाखीए तेपाणीनेदूधएकमेकथायछे बलिलोहने  
 अग्नीमाहेतपावीए तारेलोडुलालचोलमयथैजायछे ते  
 मआत्मानेकर्मएकमेकप्रणमेछे तेगोठमालिकहेवालाग्यो  
 जेआत्मानेविपेकर्मछे तेकचूकनेन्याएरह्या जिमपूरुपजा  
 मोपेरे तेमएहवेआकारे कर्मरह्याछे तेवदासाधूएकह्युजे  
 एहवुसाजल्युछे बलिप्रत्यास्यानपरवादनवमुपूवसाजल  
 ताथकापचखाणनोअधिकारआव्यो जेसाधूदिक्षालेतारे॥  
 करेमीभत्तेससायं सावजजोगपचखामी ॥ जावजीवाए॥  
 तेवीह॥तीविहेण॥मुणेण॥वायाए॥काएण॥नकरेमी॥ इति

पाठ ॥ इहां जावजीवा ॥ एपद केहवोनहि ॥ एपद केहतां ॥ सा  
 धूनेदोपलागेछे ॥ जेजीवुत्यासुधी ॥ सावज्यजोगनुपछखांण  
 साधूनेछे ॥ मुवामछीपंछखांणमोकलुं ॥ तारेआसंसाकेहतां ॥  
 वंछानोदोपलागेछे ॥ जेपरजवेजाइश ॥ तारेभोगविशतेवा  
 स्तेजावजीवएवा पदेकेहवोनहि ॥ एवुसांभलिने श्रीदुध  
 साधूएमान्युनहि पछेआविनेश्रीदुवलिकाजिनेकहुं जेगो  
 ष्ठमालीएविपरुपणाकरेछे करमआसरीतथापचखाणआ  
 सरी तेसांजालिनेदुवलिकापुफमित्रे कहुं जे गोष्ठमालि  
 उत्सूत्रनीपरुपणाकरेछे तेखोटुबोलेछे तारेसंघनेसंदे  
 हपड्यो श्रीदुवलीकाचार्यकहेछेएखरुके गोष्ठमालिक  
 हेछेएखरुछे तारेसंघेसासनदेवीनेसमरीने श्रीश्रीमंधर  
 स्वामिपासेमोकली तेदेवित्याजईने श्रीमंधरस्वामिनेपू  
 छ्युत्यारेश्रीमंधरस्वामिएकहयुं जेएगोष्ठमाली सातमोनि  
 नवछेतेउत्सूत्रजाखेछे श्रीदुवलिकापुफमित्रतो जुगप्रधा  
 नछेसत्यवादिछे एवचनसाभलिने सासनदेवीएइहांआ  
 वीनेकहयुपण जारेकरमीजीवहता तेकहुंपणमान्युनहि  
 जेएदेवीखोटुबोलेछे श्रीमंधरस्वामीपासे जइशकेनहि  
 अवधकमतपरुपक गोष्ठमालीसातमोनीनवसमाप्ता ॥७॥  
 एसातनीनवकह्या तेमध्येबीजोनीनव तीक्ष्णगूढनामा च  
 रमप्रदेशेजीवमानतो ॥१॥ त्रीजोनीनव आपाडाचार्यनो  
 शीष्य साधूछेकेदेवताछे एअवक्तव्यमत ॥२॥ चोथोनी



नवश्वमीत्रनामा वर्तमानकालना नारकीदेवताउछेद-  
 पामेछे तेसमुछेदिकक्रिया॥३॥वादिगगनामानीनवपांच  
 मो एकसमेवेक्रियावादि॥४॥एच्यारेनीनवपाछावलापेहे  
 लोनीनवजमाली बहूसतवादीघणोसमे कारजपूरुंथाय  
 ॥१॥ हवेछठोनीनवरोहगुप्तनामा त्रीयराशीकमतवादी  
 ॥२॥ सातमोनीनवगोष्ठमाली अवधककरमवादी॥३॥ए  
 त्रणनीनववलानहि आठमोनीनवढीगवरथयो सरवव  
 स्तवादी तेआवशागनिरयुक्तिमध्येकह्युछे अनेवेतोश्रीम  
 हावीरस्वामीथकी छसेनेनववरसेसेसमलयकीतेतोप्रसि  
 द्धछे अनेवेतो श्रीमहावीरस्वामीथकांज निकल्याछे  
 श्रीमहावीरस्वामी पछीथया कालानुजावेकरीने त्यार  
 पछी मतीकेवाणा ते प्रवचनप्रक्षामांहे दसमति कहीने  
 बोलाव्याछे अनेश्रीआवसगनिरयुक्ति मध्येतो निन  
 वकहीनेबोलाव्याछे जदपिनिनवनेमतीतेएकजछे पण  
 निनवपदतेभारेछे अनेमतिपदहलवोछे जेआगमधरकेव  
 लज्ञानी तथाचटदपूरवधरादिकअतिशेग्यानी आगम  
 वालाहोयतेजाणे जेउत्सूत्रजाणीनेबोलेछे तेहनेनिनव  
 कहीए अनेजेमूरखपणार्थीतथायथाछदापणार्थकि पोता  
 नीमतिकल्पनायेकरीने उत्सूत्रपरुपणाकरे तेहनेवस्तु  
 गतनिनवकहिए जेसाक्षातसिद्धांतमध्ये अक्षरदेखे अने  
 मानेनहि अनेवलजितमरजादाविना अनेसूधश्रीगण

धरनीपरंपराविना नवीजपोतानीमति परुपणाये करीने  
परुपे जेजाणीनेपरुपेते निनवकहिए पणआजनागीता  
रथते पापथकिडरताथकाजाणेछेजे अमने तेवुज्ञाननथि  
जेउतसूत्रबोले जेजाणीने बोलेछेंके अजाणेबोलेछेपण  
मतकदाग्रहमुकतानथि तारेमतीकहि बोलाव्या अने  
प्रवचनपरीक्षा धरमपरीक्षाछे नमबुजावुंएअभिनीवेशि  
कमिथ्यात्व कहिए ॥ एत्रिजोभेदमिथ्यात्वनो कह्यो ॥३॥

हवेचोथोनेद मिथ्यात्वनोकहीएछे एसंसेके ॥ मिथ्यात्व  
कहिए तेकेमजेवासीरोटली खीचडी वाशीशीरो लावसि  
ठोठडी कालपोतानीसूखडीलेवुं केरीकिरां इत्यादिकनो  
बोलोलुंणपाड्यापछि त्रणदिवशउपरांतरहेतो वेरंद्री  
जीवअसंख्यातउपजेनेमरे तेहमानेनहि तेतोजीवअप  
वेशनारुपमिथ्यात्वथाए अनेवलीएमजाणेजे एमांजीव  
हशेकेनहिहोय एवोसंदेहहोयतेनेसंसइकमिथ्यात्वथाए  
वलीउनुंपाणीकरयापछी शीयालेच्यारपोहरपछि हुना  
लेपांचपोहरथकिकाचुपाणी थाए अनेवली काचुदाहि  
काचीछासकाचुंदूधतेसंघातेविदलभले ॥ विदलंतेमगचो  
लाक्षालरअडदचण्या इत्यादिककठोलजेटलुधानहोयते  
विदलकहिए तेकाचीछासादिकमां भलतांअसंख्यातवेरं  
द्रिजीवउपजेछे तेपणमानेनहि अथवासंदेहराखे तेने  
पुर्ववतमिथ्यातलागे एअधिकारश्रीप्रवचनचुलणी तथा

प्रवचनसारोद्वारादिकग्रथोनेविपेछे हवे कोईक कहेजे.  
 अमेतो ग्रथमानतानयि काएसिद्वांतमाहिहोयतोकहोते  
 हनेकहिए जेसिद्वांतमाहेवणेठेकाणेश्वक्षरदिसेछे पणजे  
 हनेमिध्यात्वनोउदयहोय तेसिद्वातनेमानेनहि तोएपण  
 नश्यजीवनाउपगारनेअर्थे सिद्वातनाअक्षर देखाडीयेछे  
 जेअसजीवनी आठखाणश्रीदशवैकालिकसूत्रमध्येकही  
 छे यदुकइडया॥१॥पोइया॥२॥उटाउवा॥३॥रासिया  
 ॥४॥ससमि॥५॥समुछमा॥६॥अजिया॥७॥वारया॥८॥  
 हवेएइडियाइहजडजापक्षाताहकोकालादि एटलेएजीव  
 इडुजणेछेपछिसंपूरणशरीरपापप्रमुखउपजेछे तेहजग  
 भंपचेद्रीजीव तेपखीतथागरोलिजेजीवने इंडजकहिए ए  
 प्रथमखाण ॥१॥ पोताजायते ॥ इतिपोताजाके० ॥  
 जेगर्जजणेंतारे ॥ पोता कहेता०॥ चामडीनी चादर  
 पछेडीकहिए तेसहीतगर्भजणे तेने पोताजाकहिए हा  
 थिप्रमुपएविजीखाण॥२॥ जराउइयाके०॥ जराउवेष्टि  
 ताजायते इतिजराउजामनुप तथागायत्रेंसजाणवि ए  
 त्रीजीखाण॥३॥ रसीयाइतिरसजायंतेंजंतैरज्यएहनोअर्थ  
 रसियाके०॥ पाणीकहीए तेहयकीजेउपन्यु एटलेपाणी  
 एराध्युं घानजेटलुंहोय तथापाणीनोभाग जेहमारह्यो  
 होय तेसुखडीनीलीहोयसीराजावसीतथापूरी तेमाहेपा  
 णीनोनागरहे तेवासीथाय बीजेडीनेवेरद्रीजीव असं

स्थिताउपजे तथाउपनकालेतो दालप्रमुखतेहीजदीने  
 वीणसेसुखडीतथारांध्युधानज्यारेविणसे वरण गंध रस  
 फरसबदलाए त्यारेजीवउपज्यानुंसदहवुं त्यारेइहांकोइ  
 ककहेजेजे धीपणखोरुंदीसेछे तेमध्येतमेजीवसदहोछो  
 तेनेउत्तरदेवो जेघृतकाचूंतावणुंनहोय तरततावीमूक्युहो  
 य पछीएकवेदीनमेवीणसे तेघृतमध्येजीवक्यारेकंसदही  
 ए तेघृतअल्पजाणवूं तिहांजघृतउण्णकर्युं अग्नीनेजोगे  
 पछीतेघृतखोरुंदीसेतोएजीवनसदहीए तेहिजपुदंगलनो  
 स्वजावछे।भगवतीमां। पुदंगलतिविहापनंता तंजह।।पयो  
 गसा।।१।।विशेसा।।२।।मीश्रसा।।३।।इत्यादिकापयोगसाके०  
 जीवप्रयोगके०।।वेपारजीवनिमतनोजीवनेवेपारेकरिनेपू  
 दगलनागंधादिकफरेतेप्रयोगसापुदगलकहीए जिमउ  
 दारीकादिकव्यवहारंतेनीपरे।।६।।हवेविशेसाके०।स्वजावे  
 जेपुदगलनागंधरसादिकफरेतेपणविशेसापुदगलकहीए  
 पणतेमध्येजीवसदहतानथीतेघृतपाकीतावणीनूंछे तेघणे  
 दिवसेखोरुंथायछे एविश्रसापुदगलसंजवेछे परंपराए  
 पणएहवूंसांजल्यूंछे नगवतीप्रमुखसीदांतमांहे अक्षरप  
 णदीसेछे एबीजोनेदा।।२।।हवेमीश्रसाके०।। जीवतेवेपारे  
 पूदगलनेस्वजावे वरणगंधादिकफरे तेमीश्रसापुदगल  
 कहीए जेममूवंकलेवरफूलेछे मोटुंवधेछे तेममीश्रसापू  
 दगलकहीए एत्रीजोभेदपरीपूर्णम्।।३।। रसियाएहपद

नीटीकामाहेकहयुजे आलनालदधितिमनादिपू खाटवि-  
 त्तम्याकृतपोत्यतसूक्ष्मभितिति आलनालके०॥ कांजीक  
 हीए मारुआडमध्ये कांजीतेअडदनांवडा अनेकाचूदधि  
 जेलुकरेयेयकेएवेविदलकहीए तेमध्येवेरद्रीजीवपडे तेके  
 वामेडे पेटमाहेसगवगीया एहवेआकारेअत्यंतसूक्ष्मजी-  
 व असंस्थाताउपजे इतिरसचौथीखाण॥४॥ ससेइमां  
 सरवेदाजाता सखेदजामकणउकादय सखेदके०॥ परसे  
 वोसरीरनापरवापरसगे माकणतथाजुलीख तेरद्रीजीव  
 उपजे ससइमां एहपाचमीखाण॥५॥ समुछिमासमूछिना  
 जाता इतिसमूछिनजा सलजपीपालीकामक्षिकासालू  
 रदय समूछिमके०॥ पोतानीमेलेमाटीमांही तथाकादव  
 माहेउपजे तेसमूछिमकहीए सलजके०॥ दीवामाहीपतं  
 नीयापडेछे तेहनेकहीए पिपलिकाके०॥ कीडीप्रमुख  
 मंखीकाके०॥ माखीप्रमुख सालुरके०॥ डेडकाप्रमुख त-  
 थासमूछिममनुष्यपचद्रि तेहचौदठेकाणेउपजेछे तेथ्रीपं  
 नवणासूत्रनेचोयेउपागेतेहनाप्रथमपदनेविपेकहयुछे॥तं  
 जहा॥आलापकश्रायसौ॥कतमणुसाहूविहापनंता॥तजहा  
 समुछिममणुसाया॥गजवकतियमणुसाया॥सेकंतसमूछिम  
 मणुसा॥कहाणंनतेसमूछिममणुसा॥ समूछितिगोयमाअ  
 नोमणुसा॥खितेपणयालियाए॥जोयणसतसहतेजु॥अढा  
 देसुदोसमूदेसू॥पनरसकमजोमीसु॥तिसाएअकमजोमी

सु॥पनतंअतरदिवसु॥गभवकंतियसू॥ मणूसाणचेवा॥उ  
 चरेसुवा॥१॥ पासवणसुवा॥२॥ खेलेसुवा॥३॥ सि  
 घाणसुवा॥४॥ वंतेसूवा॥५॥ पितेसुवा॥६॥ पुसएसु  
 वा॥७॥ सोणियेसुवा॥८॥ शुकेसुवा॥९॥ शुकपुगलपरी  
 साडेसुवा॥१०॥विगयकलेवरसुवा॥११॥ थिपुरीससंजोएसु  
 वा॥१२॥नगरनिधमणेसुवा॥१३॥सेवेसुचेवा॥ अशुचेएसुधां  
 णेसुवा॥१४॥इच्छणंसमुच्छिममणुसासमुछंति॥ अंगुलसअ  
 संखिजइजागमेताए॥ऊगहणाय॥असणीमिछदधि॥सवा  
 हिपजताहिअपजतगायतो॥मुहूताउयाचेवकालकरंति॥से  
 तसमुच्छिममणुसा॥इतितद्वति॥अप्रतिमनुष्यानभिधिगुराह  
 सेकितमित्यादि॥अत्रापिसमुच्छिममनुष्यममनुष्यविसये॥प्र  
 वचनबहुमानंतं॥सिष्याणांसाक्षातदगवते॥तदमुक्तमिति॥  
 बहूमानोत्यादनार्थं॥मतर्गातमालापकोपद्वतिकहिणंभंतो  
 इत्यादिसुगमनवरसवे॥सुचेवअसूईधांणसुवी॥अन्यायपि  
 यांनकानिचिन्मनूष्य ॥ ससगावसादमुचिन्नूतिनिस्थांना  
 नितोप॥सवेवितिउक्ता॥समुच्छिममनुष्या॥हवेजेचौदठेका  
 णो॥ समुच्छिममनुष्यउपजेछे॥ तेहश्रीपनवणासुत्रनेपाठ  
 तेनोअर्थलखिएछे॥सेकतंकं०॥ अथकंकं० ॥ शुतकंकं०॥  
 तेहमनुष्यबेहूप्रकारेछे एकगर्भजमनुष्य॥१॥ विजोस  
 मुच्छिममनुष्य॥२॥ सेकतं समुच्छिममनुसाके०॥ अथस  
 मुच्छिममनुष्यनुं स्वरूपपूछेछे॥केहेणंजत्ते ॥ समुच्छिममनू

प्यकेहणंभत्तेके०॥हेभगवान्कुणकुणठेकाणेतमेकह्युछे॥ते  
 तूसाभळ॥अंतोमणूसपितेके०॥मनूप्यक्षेत्रनेअंतके०॥म  
 ध्यपीस्तालिसलाखजोजनप्रमाणे मनूप्यक्षेत्रछे अढीद्वि  
 पके०॥१॥ जवूद्विपा॥२॥ धातकिखड०॥ आधोपुखरद्विप  
 तेअढीद्विपमाहेबसमुद्र एकलवणसमुद्र॥१॥ विजोका  
 लोदाधि॥२॥ पनरसकमजोमीसुक०॥ पांचजरत॥ पांच  
 एवर्त॥पाचमहाविदेह॥जवूद्विपमध्येत्रणखेत्रछेधातकिखं  
 डमध्येछक्षेत्रछेपुखरार्धमध्येपणछछे एवपंजरतिसएअक  
 मजोमिएशुके०॥त्रिसअक्रमभोमीजुगलियानाक्षेत्रजाण  
 वा तेकयाजवूद्विपमध्येदक्षणादिसेएकहेमत विजोहरिव  
 पे त्रिजोदेवकरु उत्तरदिसेएत्रणनांनामउत्तरकरु॥१॥अ  
 णंकवास॥२॥ रमणीकवास॥३॥ एवछक्षेत्रजवूद्विपमध्ये  
 धातकिखडेवार पुखराअर्धवार एताएछनामजाणवा ए  
 वत्रिसखेत्रजुगलीयानाजाणवा छपनअतरद्विवेसुके०॥  
 छपनअंतरद्विपतेकिया जवूधिपनेविपेलघूहेमवंत पर्वतथं  
 किलवणसमुद्रमध्ये पुरवनीदिसेवेढाढायोनिकलिछे.एक  
 दाढउपरसातक्षेत्रएवपूर्ववेढाढायोना॥१४॥क्षेत्र एमपश्चि  
 मदिसे वेढाढाना॥१४॥ क्षेत्रछे, एवहेमतनीदाढाऊपरअ  
 श्राविसक्षेत्रयया इणिपेरेउत्तरदिसे सखरीपर्वतनीचारदा  
 दातेउपरअश्राविसक्षेत्रजाणवा एवछपनअतरद्विपजाण  
 ना गनीयके०॥ मोटामकतियेमणूसाणचैवके०॥ निश्चेक

रीनेजाणवा. एटलेत्रिजं चपंचद्रिनां छाणतथासुत्रादिकने  
 विपे. समूर्छिममनुष्यउपजेनहिं एटलेगायनामूत्रनोचोवि  
 सपोरनोकोलकह्योछै त्यारपछिवेरंद्रियादिकजीवउपजेप  
 णसमूर्छिममनुष्यउपजेनहिं एमनिश्चेजाणवुं हवेगंर्जज  
 मनुष्यसंबाधिचउदस्थानकदेखांडेछे उचारसुवाके०॥ मनु  
 ष्यसंबाधिविष्टानेविपेसमूर्छिममनुष्यउपजे॥वाके०॥विजेप  
 णथानकेजाणवानेकाजे॥वाशब्दजाणवो॥१॥पासवणेसूवा  
 के०॥लघुनित्यनेविपे॥२॥वतसूवाके०॥ वमननेविपे॥३॥  
 पतेसूवाके०॥ मुखेकरीनेपीतनाखेछेतेनेविपे॥४॥पूयेसूवां  
 के०॥परुकहिएजेलोहीपाचतेनेविपे॥५॥श्रोणियेसुवाके०॥  
 मनुष्यसंबाधिरुधिरनेविपे॥६॥शुकसूवाके०॥ जेमनुष्यने  
 तिर्यंचनेविपे॥७॥ शुकपूगलेपरीसाडेसूवाके०॥तिर्यचना  
 पुदगलनेविपेके०॥छांटाकहिए परीसाडेसूवाके०॥ जुदा  
 जुदापड्यातेनेविपे॥८॥विगीयेकलेवरसूवाके०॥ मनुष्य  
 नेविगीयेके०॥ जीवगयापछिकलेवरमुवूतेसरीरने विपे  
 ॥ ९॥ थिपूरीससियोयेसूवाके०॥ स्त्रिपुरुषनंसंजोगने  
 विपे॥१०॥बलखानेविपे॥११॥शलेखमनेविपे॥१२॥नग  
 रनिधमणेसूवाके०॥ नगरनिखालनेविपेजेमनुष्यसंबाधि  
 लघुनित्यवाडिनित्यएठवांणि प्रमुखवहेतुरहे तेहनेविपे  
 समूर्छिमउपजे ॥१३॥ सवेसुचेवअशुयेमुधाणेसुवाके०॥  
 सर्वसघलामनुष्यसंबाधीअशुचीथानकनेविपे एटलेमनु



प्यनुयुं क तथापरशंवो तथाएठ्ठांणी अथवाअनपाणिज  
 मताएठ्ठमुक्ते अथवामुखेमुहपतिघाणिवांधिराखे तेह  
 मूहपतिथूकेकरीने भोजीजाए तेहनेविषे समूछिममनु  
 प्यअसंख्यातउपजे इत्यादिकसमूछिमउपजवानाथान  
 कधेणांठे तेसतगुरुसेवनाथकि मालमपडे एचौदस्थान  
 कियाजीव ॥१४॥ अंगुलसअसखिजेनागमतिये ऊगा  
 हणायेके॥एकआंगुलनोअसख्यातमोनागमात्र ऊगह  
 णायेके॥शरीरनूपरमाण एटंलेएपढेकरीने असख्यात  
 जीवंकहिए असनियेके॥असनिया मिछुदधियेके॥  
 मिथ्यात्विनहोए अप्रजातोअंतोमूहताये केहता अतर  
 मूहतेनूआउखंपूरुकरीनेकालकरे जेयअपचेयथाए पूर्व  
 नीपरेनवाऊपजे केटलाएक थानकनेविषे जिवसदहता  
 नथि तेहनेजिवे शुयजीवसनारुपमिथ्यात्वथाए कोइक  
 जिवसदेहकरे जेएहमध्ये ऊपजताहशेकेनहि उपज्यान्  
 सशय सशयकके॥तेहनेसशइकमिथ्यात्वकहिए एहस  
 मूछिममनुप्यनीखाण॥६॥नभेदाजन्मयेपतिइतिउभेद  
 जापतगखजारीउपरेप्रवादिय उभेदके॥ भोमिफोडीने  
 बाहिरनिकले एटलेवेरंद्रिआदिकप्रसजीवउपजेछे भोमि  
 डिनेबाहिरप्रगटथाए तेहउभेदजानेदकहिए जिमस्  
 तावमध्येजिवउपजे पडेबाहिरनिकलेछे तेपतगख  
 उपरप्लपादिकजिव विशेषजिवनानामजाणव

जद्यपि एहसमूर्छिमनिजातछे तो एचोमिफोडिने बाहर  
निकले एनेदग्गहिनेजुदोनेदकरयो जेमरसजापणनेद  
जूदोकिधोछेतेमएपणभेदजाणवां एउनेदजजीवनी सात  
मीखाण ॥ ७ ॥ उत्पादाइतिउत्पादजाउत्पादेनवाइतिउ  
त्पातिकादेवानारकिश्च 'उत्पात'के ० ॥ देवतानेउपजवानि  
समानुनाम उत्पातसजाकहिए त्यादेवताआविने अंतर  
मूहूर्तमावत्रिसवर्पनोजुवान' पुरुषउठीवेसे उत्पातसजा  
मध्ये सज्यामांउपजे एटलावास्ते देवतानिउत्पातयोनि  
कहिये नारकिपणकुभिपाकमध्येआविने अंतरमूहूर्तमा  
प्रगट थाए 'तेवास्तेनारकिपणउत्पातयोनि कहिए ए  
आठमिउत्पातजाजीवनीखाण॥८॥ अड्या॥१॥ पोयाए  
॥२॥ एहवेहूखाणगर्भजपचेद्रियत्रिजंचनीजाणवि॥ २ ॥  
जरागूजाएहगर्भजमनुष्य तिर्जचनिखाणजाणवि॥ ३ ॥  
रुसीयाइतिवासीवदलबोल्यादिकनेविपे पाणीनासंसर्ग  
नेविपेथकिवेरंद्रियाजिवनीखाण॥ ४ ॥ संसेइमा॥ १ ॥ उ  
भीया॥२॥ इतिवेहुविगलींद्रिनीखाण॥ ५ ॥ समूर्छिमएह  
वेरंद्रितेरंद्रियचउरंद्रिपंचद्रि असनीयासमूर्छिम मनुष्य  
तिर्जचनिखाण॥ ६ ॥ उथाइयाएहदेवतानारकिनिखाण  
॥८॥ एहआठखाणत्रसजीवनिजाणवि रसियाएहनेचोथि  
खाणनेविपे जेठेकाणेजेजीवरह्योछे तेठेकाणेजिवमानता  
नथितेहनेविपेजिवसनारुपमिथ्यातथाए जेहनेसशयछे

तेहनेसशइकमिथ्यात्वकहिए एहमशइक मिथ्यात्वरुप  
 चोयोनेद॥४॥ अथअणभोगरुपमिथ्यात्वनोपाचमोभेद  
 कहिएछे जेअणभोगतेसमझएविद्याप्रवर्तवु तेजीवजी  
 वादिकनुस्वरुपजाणेनहि समझेपणनहि सज्ञापणनहि  
 एरुद्रियादिकंपंचद्रियपर्यंतनेअणभोगीकमिथ्यात्वकहिए  
 एउपांचमोचेद॥५॥ एटलेपांचमिथ्यात्वकह्या बारअवरत  
 के॥चारअवरति॥१२॥ तेकेइवेमणा॥१॥करण॥१५॥  
 नीयमछंजीववहोइके॥एकमननिअवरत॥१॥पाचइद्रिछ  
 अवरत॥६॥उकायजाणवि॥इतिगाथानोअर्थसमाप्तः॥  
 ॥ इतिमुनिश्रीहूकमचदजि विरचिते द्वीतियोध्याय  
 परीपूर्णम् ॥ २ ॥

एवुमिथ्यात्वजाणिटालिनेसमंकितनिप्राप्तियाएते  
 समंकितना ३ चेदछे उपसम ॥१॥ क्षयउपसम ॥२॥  
 क्षायक ॥३॥ तेमदेप्रथमजेजिवसमंकितपामेतेउपसमस  
 कितपामे तेनुस्वरुपदेखाडेछे अनादिकालनोजिवमि  
 थ्यात्वहूतो तेकाललब्धपामिनेमार्गानुसारीथाए तिहां  
 अणकर्णकरे जथाप्रवर्तिकर्ण॥१॥अपूर्वकर्ण ॥२॥ अनी  
 वर्तिकर्ण ॥३॥ प्रथमथकिजथाप्रवर्तिकर्णकरे तेनिविधि  
 कहिएछे ॥ ज्ञानावणी ॥१॥ दर्शनावणी॥२॥वेदनि॥३॥  
 अतराय ॥ ४ ॥ एच्यारकर्मनित्रिसकोडाकोडीसागरोप  
 मानिस्थितिछे तेमदेथि २९ उगणत्रिसकोडाकोडि

कपल्योपमनोअसंख्यातमोभागअधिक एटलिस्थितिख  
 पावे तथामोहानेकर्मनिसितेरकोडाकोडीसागरोपमनि  
 स्थितिछे तेमद्वेथिउगणोत्तेरकोडाकोडीसागरोपम तथा  
 पल्योपमनोअसंख्यातमो भागअधिकएटलाखपावे त  
 थानामकर्म ॥६॥ गोत्रकर्म ॥७॥ एवेकर्मनिविसकोडाको  
 डिसागरोपमनिस्थितिछेतेमद्वेथकिओगणीसकोडाकोडि  
 सागरोपम तथापल्योपमनोअसंख्यातमोभागअधिक  
 एटलिस्थितिखपावे सेपथाकतिएककोडाकोडीसागरो  
 पममध्येथी एकपल्योपमनोअसंख्यातमोभागओछीएट  
 लिस्थिति आयूवर्जिनेसातेकर्मनिराखे एहवाजउदासि  
 प्रणाम संसारथिउदवेगतापामे संसारनेअनित्यजाण  
 तोथको संसारथिमहाभयभ्रांतथातोथकोएमप्रणामनि  
 धारायेचढतोथको एकअतरमूहूर्तमाहे सातेकर्मनिउत्त-  
 कृष्टिस्थितिजिमपूर्वेकहितिमखपावे तेनेजथाप्रवर्तिकर्ण  
 कहिए तेजथाप्रवर्तिज्ञानविनाघणाजिवकरेछे एकजीव  
 अनतिवारकरे अभव्यपणकरे माटेएकरणकिधांकांडसी  
 धिथईनहिहवेएकएँरहेतोअंतरमूहूर्तरहेचढेतोअपूर्वकर्णे  
 जाए पडेतोपाछोठेकांणेआवे मार्गनेदृष्टांते जेमत्रणपूर्ण  
 जेलाथइनेमार्गेचाल्याजायछे आगेजातांमहाअटविमां  
 पोहोतात्यांभयघणोजाण्यो त्यारेएकजणोपाछोवल्हो ए  
 कजणोत्यांउजोरहोतेनेचोरेपकड्यो एकजणोहिमतकरी

नेआगलगयोतेवछितपूरेगयो तेसूखपांम्यो एदृष्टात्तेउ  
 पनयजोदियेछे त्रणजिवससारीसंसाररुपअटविमाभम  
 तायथाप्रवर्तिकर्णस्थानकपोत्या तेमध्येथिएकाजिवपाछो  
 वल्यो तेहनेरागद्वेपचोरैपकड्यो विजोजिवत्यारह्योतेमि  
 थ्यात्वकर्मनेउदयेकरीने उत्सूत्रपरुपवालाग्यो अग्निनि  
 वेसिक मिथ्यात्वनाजोगयी कुदेवकुगुरुकुधर्मने अग्नी  
 कारकरीनेरह्यो मनथकिखोटुजाणेपणकढाग्रहनालिधो  
 तेमेलेनहि हवेत्रीजोजीवअपूर्वकर्णकरीने समकितपांमे  
 सुखिथाए इतिउपनयसपू०॥ इतिप्रथमकर्णपूर्ण ॥ १ ॥  
 हवेविजोअपूर्वकर्णनोस्वरुपदेखाडेछे ॥ अपूर्वके०॥ पूर्वे  
 एवाभावकोइकालेआव्यानथि विपेशनिर्मलभावेहोय  
 स्यामाटेजेजेजीवने समकितपामवूहोय तेजिवनेएवाजा  
 वहीयतेप्रथमयथाप्रवर्तिकर्णथकि अपूर्वकर्णसुधिजाता  
 रस्तामाअसंस्यातियोकटियोछेपरतुकमपेडीटिकामधेत्रि  
 सगवेखिछे तेकटियूके०॥ पावडिर्यूकहिए तेटलाअधवी  
 सायनाठेकाणांछे इहाविचारघणोछे परतुआग्रथनेक्विसे  
 विग्रहार्नयनोपूटताविशेपछे माटेइहांवातवर्णविनयीवि  
 पेशजोविहोयतो श्रीकमपेडीनीटिकाथकिजोजो हवेजे  
 यथाप्रवर्तिकर्णनेविपेजेसातकर्मनिस्थितिएककोडाकोड  
 सागरोपम तेमयेएकपल्योपमनोअसंस्यातमोजागओ  
 छिरहिहति तेमधेथकिएकमूहुर्तखपावे तारेअपूर्वकर्णथा

य तारेअपूर्वनामविर्यउदेरे पछेइहांथकिऽपूर्वनामामोघ  
रलेइनेअगाडिगंठीउपरजाए. तिहाजईनेगाठीनेविदारे.  
गंठिभेदतिहाअनिवृत्ती कर्णथाएं. तिहापूर्वेरहेलाकर्मते  
मांथकि एकमूहूर्तस्थितिखपावे तिहाअनंतानुबंधि चो  
कडीतथामिथ्यात्वमोहनी एपांधप्रकृतिउदीयेआविरुद्धे  
विपाकेतथापरदेसे अतरमूहूर्तमात्रपंचप्रकृतिउपसमावे  
तेमाटेएहनेउपसमसमकितकहिये तेउपरद्रष्टांतदेखा  
डेछे जेमकोइखारीजोमिनांदावानलनिपरेके० ॥ जेम  
कोईकदावानलबलतो २ आवे एमकरतांआगेखारीजो  
मिआवितेखारीजोमिनेविपे त्रखलाप्रमुखकाईछेनहि जे  
तेनेवाले तेमइहाखारीभोमसमानसमकितजोमिकहिये  
अनेदावानलसमान मिथ्यात्वकहिये तेजेमदावानलनी  
अग्नीखारीजोमीएआवतारोकांणी॥आपसुंआपउपसमी  
तेमइहांमिथ्यात्वपणसमकितभोमिकायेप्रवेशकरीसकेन  
हितेपणआपसूआपउपसमे एदृष्टांतजाणवो॥१॥एमजीव  
उपसमसमकितपाने तेउपसमसमकितमाहे शुभप्रणा  
मेमिथ्यात्वमोहनीनां त्रणपूजकरे एकसूधपूजा॥१॥बीजो  
अर्धसूधपूजा॥२॥ त्रीजोअशुधपूजा॥३॥उपसमसमकितने  
अंते शुधपूजनोउदयथायतो क्षयोपसमसम्यक्तकहीएअ  
र्धसूधपूजनोउदयथायतो मीश्रगूणठाणूत्रीजूजाणवु अ  
शुधपूजनोउदयथायतो मिथ्यात्वकहीए जेमकोद्रवधां

ननात्रणपूजकरीए एकछोतराकाढीनेपूजकरे बीजोपूज  
 खाडीनेएमनोएममूम्यो त्रिजोपूजअशुधके०॥ कोद्वराव  
 एखांडया अमजलनोदृष्टात एकजलानिरमलकर्यु बीजुं  
 थोडुनिरमल त्रिजुंदूर्गधव्यापी एदृष्टातेशुधजलते सम  
 कीतमोहनी अर्धशुधतेमीश्रमोहनी अशुधतेमिथ्यात्वमो  
 हनीजाणवी हवेउपसमसमकीतआदि देइने समकीत  
 नाघणाजेदछे पणउपसमअधिकारसमाप्त॥१॥ हवेक्षयो  
 पसमकहेछे तेक्षयोपसमविचित्रप्रकारनुंछे तेकर्मनाक्षयो  
 पसमनाघणाजेदछे ज्ञानावर्णिकर्म॥२॥ दर्शनावर्णि॥२॥  
 मोहनी॥३॥ अतराय॥४॥ एच्यारकर्मनोक्षयोपसमथाय  
 छं पणइहामोहनीकर्मनोअधिकारछे जेदर्शनमोहनीकर्म  
 नाक्षयोपसमथकी जीवसमकीतपामे तेमाटेविचित्रपणुछे  
 बहुविधजनागमेके०॥ जिननाआगमसिद्धातनेविपे बहु  
 विधके०॥ घणाभेदकीधाछे एटलेचोथागुणठाणानु सम  
 कीतजुदू अनेपाचमागुणठाणानूपण समकीतजुदू तथा  
 छंठासातमागुणठाणानू समकीतजुदूजाणवू जदपिसम  
 कीतनी रुचीजोतातोएकजनेदछे तोहेपणकर्ममोक्षउप.  
 समाहिजेदेकरीने समकीतनाघणाजेदथायछे तेकिया ए  
 कप्रकारेसमकीतते श्रीअरीहंतभगवाननावचनपररुची  
 जेअरीहंतभगवतेकह्युं तेसत्यछं एवंएकाश्रितते तत्वरु  
 चीकहीए एचोथागुणठाणाथीमाडीने सग्रहनयनेमते ए

कप्रकारेसमकीतकहीए हवेकेटलेप्रकारे समकीतकही  
 एतेकहेछे एकद्रव्यसमकीत॥१॥ वीजुंभावसमकीत॥२॥  
 जेद्रव्यसमकीत जेजीवादिनवपदार्थने सम्यक्प्रकारेजा  
 णीजाणीनेसदहे तेद्रव्यसमकीतकहीए ॥यदूक्तं॥ जीवा  
 इनवपयथे ॥ जोजाणेइतसहोईसमतं॥ भावेणसदहंतो ॥  
 आयाणमाणेविसमतं॥१॥ जीवाटिकनवतलनेजाणे तेने  
 समकीतकहीए भावेणके०॥ जावेकरीनेसदहतोथकोजे  
 जीव आयाणमाणेके०॥ नवतलनेनयनिक्षेपेकरीनेतजाण  
 तो पणसमकीतछे एगाथाऽर्थः ॥ जेभावसमकीतते न  
 वतलनाजेद नयनिक्षेपेकरीने सम्यक्प्रकारेजाणीनेसद  
 हे॥ तेभावसमकीतकहीए॥२॥ बलिनिश्च्यवहारेकरीने  
 बेप्रकारेसमकीतजाणवूं तेजीवनूंज्ञान॥१॥दर्शन॥२॥ चा  
 रित्र॥३॥तेमांगूभूपरीणामतेनिश्च्यसमकीतकहीएइत्यादि  
 कसमकीतकेबलिगम्यजाणवूं छदमस्थजाणीशकेनहीअ  
 रुपीपणामाटेहवेवव्वहारसमकितते संवेगादिकनाआचा  
 रेकरीअोलखायतेवव्वहारसमकितकहियेतेनुस्वरुपआ  
 गलकहिशु ॥२॥ बलीनिसर्गनेउपदेश एवेप्रकारेजाणवूं  
 तेहनीसर्गके०॥ स्वभावकहिये गुरुनाउपदेश बिनाजे  
 जीवपोतानीमेलेउपदेशपामे॥तेनिसर्गसमकितकहिये ते  
 उपर मार्गनो दृष्टांतजाणवो जेमकोइक मारगभूल्यो  
 होय तेपोतानीमेलेजमार्गजाणे बिजोपूरुपकोइनाकीधा



थिमार्गजाणेतेमइहागुरुनाउपदेशविनासमकितपामेतेने  
 निसर्गसमकितकहिये विजोगुरुना उपदेशेसमकितपा  
 मे तेनेउपदेशसमकितकहिये' वलित्रणप्रकारेसमाकित  
 कह्युछेएककारकसमकित ॥१॥ विजुरोचकसमकित॥२॥  
 त्रिजुदिपकसमकित॥३॥'कारकसमकितसिद्धातमाहिजा  
 वकह्योछे तेजावनेअनुंसारेक्रियाकरे जेमसर्वप्राण॥१॥  
 सर्वभूत॥२॥सर्वजीवा॥३॥सर्वसत्वनहणे॥एटलेछकायनाजी  
 वनेहणेनाहिहणावेनाहिहणतानेजलोजाणेनाहि॥मनवचन  
 कायायेकरीने एहवानवकोटिनापछखाणपालनारसाधूने  
 कारकसमकितहोयाजसुमतिपासाहितमुणातिइतिवचनात्  
 ॥१॥ हवेविजुरोचकसमकितते जिवादिपदार्थजाणीनेनि  
 रापराधनिरपेक्षपणेसंकल्पीने त्रसादिक जिवनेहणेन  
 हि जथाजोगचोये पाचमेगुणठाणेरोचकसमकितकहियेए  
 विजुंसमकित॥२॥ हवे त्रिजुंदीपकसमकित पोतेमिथ्या  
 दृष्टिकोपरजीवनेजीवादिपदार्थनूस्वरूप सिद्धातनेअनु  
 सारेसमझावे समकितादिगुणपमाडे तेहनाप्रतिदोष्या  
 मोक्षपणजाय तेवारेवादिबोल्हो जेनेदिपकसमकितते  
 नेशोगुणथाय तेनो उत्तरदेछे जेदिपकसमकितनोपणए  
 टलोगुणछे जेउत्कृष्टिपुन्यप्रकृतिवाधेतोनवग्रेवीकसुधि  
 नीवावेगामाटेजेउत्सुत्रनिपरुपणानकरेपोतेमिथ्यादृष्टि  
 पणपरनेमिथ्यात्तपमाडेनाहि अनेनवनिनवादिक

पूर्वे एवि क्रियात्रनुष्ठानआकरुं करेतोपणकुलविषियोदेव  
 ताथाय एउत्सुत्रनिपरुपणाकरीनेपोतानाआत्माने तथा  
 परनाआत्माने दूरगंतियेधाले एउत्सूत्रनी परुपणानो  
 करनारो महापापीजाणवो तेनीअपेक्षाये दिपकसंमकि  
 तवालोघणोजरुडोजाणवो पोतमिथ्यात्वथको परनेमि  
 थ्यात्वपमाडेनाहि एतेजगुणेकरीनेनवग्रेविकेजाय ॥ न्य  
 दुक्त ॥ जइलगमीच्छदिठि ॥ गेविजाजावजंतीमो ॥ कोस  
 पयमविअसदहंतो ॥ सूत्रतंमिछिदिधिआ ॥ १ ॥ जद्यपिद्वाद  
 शांगीसदहे ॥ एकपदमात्रनसदहेतोसुत्रमांमिथ्यादंष्टि  
 कह्यो ॥ साधुमूलगुणेशुधहोयएटलेसाधुनीक्रियाशुद्धपा  
 ले पणजोउत्सूत्रनिपरुपणानकरे तोनवग्रेविकेजाय ते  
 श्रीनगवतिसूत्रमांकहुंछेप्रथमसतकेविजेउदेसे ॥ तंजहा ॥  
 अहंजंतो ॥ अहंजयभवियदवदेवाणं ॥ १ ॥ अविराहियसं जमा  
 ण ॥ २ ॥ विराहियसंजमाणं ॥ ३ ॥ अविराहीयसंजमासजमाणं  
 ॥ ४ ॥ विराहियसंजमासंजमाणं ॥ ५ ॥ असणीणं ॥ ६ ॥ धतावसा  
 ण ॥ ७ ॥ कंदप्पीयाण ॥ ८ ॥ चरगपरीवायगाण ॥ ९ ॥ किलविसि  
 याणं ॥ १० ॥ तिरीछीयाणं ॥ ११ ॥ आजिबीयाणं ॥ १२ ॥ अची  
 योगीयाणं ॥ १३ ॥ सलिगाणदंसणवावणगाण ॥ १४ ॥ एएं  
 सिणदेवलोणेसु ॥ उववजमाणं ॥ कसकहिउववाएगोय  
 मा ॥ असंजणयभवियदवदेवाणं ॥ जुहणेणं ॥ नवणवासिसू  
 वोकोसेणं ॥ उवरीमगेविजेयेसू ॥ अविराहियसजमाणंजे

दूणेण॥सुहमेकप्पेउकोसेण॥सवधसिद्धेविमाणे॥ विराहि  
 यसंजमाणजह०॥भवन०॥उकोसेणसोहमेकप्पे॥उकोसे  
 णअचुएकप्पे॥विराहियसजमांसजंमाण॥ जहण०॥ भव  
 णवासिसुउकोसेण ॥ जाइसीयेसुअसणाणं ॥ जहणभव  
 णे०॥उकोसेणवाणवंतरेसुयवसेसासवे॥जह०॥भवणवा  
 सिसुउकोसेण॥वोत्थिमितावसाण॥जोइसीयेसुदपूयाणं॥  
 सोहमेकप्पे॥चरगपरीवायंगाण ॥ वेलेलोएकप्पेकिबि  
 सियाएण॥ लंतएकप्पे ॥ तेरीछियाण ॥ सहसारेकप्पे॥  
 अजियाणं॥अचुएकप्पे ॥ अनीयोगीयाण॥अचुएकप्पे॥  
 सलिंगिणंदसणवावणगाण ॥ उवरीमगे॥विजयेसु॥१॥  
 एहनोअर्थकहेछेलेशमात्र ॥ असंजयके०॥ चारीत्रप्रमाण  
 कहितद्रव्यलिंगधारी॥नवियके०॥ देवगतिगमीनयोग्य  
 द्रव्यदेवजैजीवमनुष्यनिगतिमाहिथकि कालकरीने दे  
 वताथाए॥तेहनेद्रव्यदेवकहिए॥एटलेकोइभव्यजीवचक्र  
 वर्तिप्रमुखनि पूजासतकारबहूमानसाधूनेकरता देखिने  
 तेबहूमानादिकनेकाजे॥मिथ्यादृष्टिचारीत्रलेई सपूर्णस  
 माचारीनेअनुसारेक्रियापाले तेउत्कृष्टोनवग्रेविकसूद्धि  
 जाए यणउत्सूत्रनिपरुपणानकरेतोजाए एश्लोकनोना  
 वार्थजाणवो॥१॥अविराहियसजमाणके०॥ अखडचारी  
 त्रनापालनारसावू जघन्यसुधमंदेवलोकेजाए उत्कृष्टो  
 सर्वार्थसिधेजाये॥२॥विराहिके०॥ विराधकचारीत्रनोध

णीजघन्यजघनपति उत्कृष्टोसौधर्मदेवे॥ ३ ॥ अविराहि  
 यसंज्ञमासंज्ञमाणके॥ अखंडआवकनात्रतपालिने जघ  
 न्यसौधर्मदेवे उत्कृष्टोअचूक ॥ एकप्पेके॥ वारमुंदेव  
 लोक॥ ४ ॥ विराहियके॥ आवकत्रतधारीनेजघन्यजघ  
 नपति॥ उत्कृष्टोजोतपी॥ ५ ॥ असणिके॥ असनियोपंच  
 द्रियकोइकअकांमनिर्जराएकरीने जघन्यभुवनपति॥ उत्  
 कृष्टोव्यंतर॥ ६ ॥ धतावसाणके॥ भुमीएपड्यांपांढडाना  
 खानारतपश्विजघन्यभुवनपति॥ उत्कृष्टोजोतपी ॥ ७ ॥  
 कंदपियारणके॥ कंदर्पके॥ परहास्येतेहनेकरीनेनिंजै॥  
 तेकंदर्पिककहिए ॥ एटलेजेव्यवहारथकिचारीत्रपाले ॥  
 पणपरनिहास्यमशकरीविपेशेकरे तेजघन्यभवनपति उ  
 त्कृष्टोसौधर्मदेव॥ ८ ॥ चरगपरीवयगाणके॥ चरकत्रिदंडी  
 परीव्राजंकके॥ कपिलशिष्याजघन्यभुवनपतिउत्कृष्टोब्रह्म  
 देवलोकपांचमुतेत्रसजिवनिदयाविपेशेपालेछे॥ ९ ॥ कविसि  
 याणके॥ किल्विपंपापउत्सूत्ररुपंजेपांतकुलविधिका॥ एटले  
 विवहारथकिचारित्रवंतज्ञानादिकना आवणवादनोबोल  
 नारो ॥ यदूक्त॥ नाणसकेवलिणं॥ धम्मायरीयंससंघसा  
 हूण॥ मायेअवणवाए॥ किथिसीयंजावणंकुणइ॥ १० ॥ जेजं  
 घन्यभुवनपतिउत्कृष्टुलंतकदेवलोक ॥ १० ॥ निरीच्छि  
 याणके॥ त्रिजंघगायर्जेसप्रमुखे देसविरलिआदेदेइने  
 अकांमनिर्जरानाधणिजघन्यभुवनपति उत्कृष्टोसहसा

रआठमूदेवलोक॥११॥ अजिवियाणंके० ॥ पाखडीवेप  
 धारीणं॥ गोसालासिप्याणांमित्यने॥ कोइकगमेसालीप्यने  
 पणआजिवकारेछे तथापाखडीवेपधारीने आजीवकाक  
 हिये तेजघन्यभुवनपति उत्कृष्टच्युतबारमुदेवलोक॥  
 ॥ १२ ॥ अजीयोगीयाणके० ॥ अजीयोगकहिए  
 ॥ विद्यामत्रादीक ॥ यदूक्त ॥ दूविहापलुयजियो  
 गे ॥ दवेजावेयहोइनायवो ॥ दवमिहोइजोगा ॥  
 विजामंतप्यभावमिति ॥ १ ॥ जोगचर्णादितंत्रविद्यामं  
 त्र ॥ विद्याअक्षरानुयोग ॥ एटलेंविवहारथकिचारीत्रपा  
 ले पणमत्रजंत्रादिकेप्रवर्ते तेअभीयोगीकाकहिये तेजघ  
 न्यभुवनपति॥ उत्कृष्टेवारमुदेवलोक॥ १३॥ सलिगीणदसण  
 वावगाणके० ॥ सलिगीणके० ॥ साधुनोवेपधरनारा॥ दस  
 णवावणगाणके० ॥ दर्शनसम्यक्तव्यापत्रभ्रष्टं ॥ जेखांते  
 दर्शनव्यापनासम्यक्तरहितातेजघन्यभुवनपति ॥ उत्कृ  
 ष्टनवग्रेविकजाय॥ १४॥ एटलेंदिपकसम्यक्तनोएहगुण ॥  
 जेइद्रियजघन्यसुखपामे उत्सूत्रनिरुपणानकरे तेमाटे  
 एहदिपकसम्यक्तनोगुणछे एत्रिजुसम्यक्त॥ ३॥ एटलेक्ष  
 यउपसमनाअनेकभेदकह्याहवेक्षायकसमाकितनाजेदकहे  
 छेएटलेअनुतानवधियोक्रोध॥ १॥ माना॥ २॥ माया ॥ ३॥  
 लोभ॥ ४॥ मिथ्यात्वमोहनि ॥ ५॥ समकितमोहनि ॥ ६॥  
 मिश्रमोहनी॥ ७॥ एसातेप्रकारतिक्षयकरीनेक्षपकश्रेणिमां

डे त्वारेक्षायकशमकितकहिये आगलकेदिकसातप्रकृति  
 खपावे पेहेलांआवपुवांध्युंहोय पछिसातप्रकृतिखपावेते  
 नेखंडश्रेणिक्षायककहिये एटलेउंपशमतेसातप्रकृतिउप  
 समावेतेनेउपसमकहिए ॥१॥ अनेक्षयोपशमतेजेसमकि  
 तमोहनीरुपपूजनोउदयथायसमकितपामेतैक्षयोपसमस  
 मकितकहिए॥२॥ सातप्रकृतिखपावेतेनेक्षायकसमकित  
 कहिए॥३॥एत्रणसमकितकह्यां वलिच्यारनेदेसमकित  
 कहिए त्वारेसास्वादनसमकितमेलवीए तेजेमकीइकपु  
 रुपखिरखांडनुंभोजनकरीतुरतवमेतेधणिनेशोसवादंआ  
 वे तेमजिवपणउपसमसमकितथकि पडेतोबीजेगुणठांणे  
 आवे तेहनेसास्वादनसमकितकहिए तेहनोकालउत्कृ  
 ष्टोपटआविलीनो जघन्यएकसमयनोजाणवो॥४॥ वली  
 समकितपाचभेदेकहिये त्वारेवेदकसमकितमेलवीये तेवै  
 दसमकितजेसमकितमोहनिक्षयकरवानोएकसमयवाकी  
 रहेअने क्षायक समकित पांमवानो पैलोसमय तेवेदक  
 समकितजाणवु ॥५॥ हवेएसमकित रहेवानि स्थीति  
 नोकालकहेछे उपसमसमकितनोअंतर्मुहूर्तकाल॥१॥सा  
 स्वादननोछआवलीकाल॥२॥ वेदकनोएकसमयनोकाल  
 ॥३॥ क्षयोपसमनो छसठसागरोपम झाझेरानोकाल॥४॥  
 क्षायकसमकीतनो एकसागरोपम झाझेरानोकाल॥५॥  
 हवेसंसारनेविपे परिव्रह्मणकरतां एकजीवने एवाजेसम

कीतनाभेद तेकेटलीकवारआवे ॥उपशमा॥१॥ तथासा  
 स्वादन॥२॥ एवेसमकीत उत्कृष्टआवेतो पांचवारआवे  
 क्षायक॥१॥ तथावेदक॥२॥ एवेसंसारमाएकवारआवे ह  
 वेएहनोविरहकालकहेछे॥उपशम ॥१॥ ॥सास्वादन॥२॥  
 क्षायोपसमा॥३॥एत्रणनोविरहकाल उत्कृष्टोअर्धपूदगल  
 मरावर्तनहोय जघन्यथीअंतरमूर्हतजाणवू क्षायकतथाव  
 ढक॥२॥ एवेसमकीतनो विरहकालहोयनहि शामाटेजे  
 वेदकसमकीतनीरहेवानीस्थितीएकसमानीछेअनेसंसार  
 माजसता एकजीवएकवार वेदकसमकीतपामे बीजीवार  
 पामेनहीत्यारेकेनीसाथेविरहकालमेलवीएमाटेएहनेवि  
 रहकालहोयनहि तथाक्षायकसमकीत आढ्यापछीजाय  
 नहि अनेआढ्याविना विरहकालथायनहि एटलामाटेवे  
 दकतथाक्षायक एवेनेविरहकालहोयनहि एटलेसमकीत  
 ना स्वरुपनाजेदकीधा पणहेजव्यप्राणी जेनेजेवाप्रकार  
 नोक्षयोपसमहोयअटलेजेवोक्षयोपसमतेभेदधिरजरापी  
 ने अगीकारकरवो हेजव्यप्राणियो पोतानीबुद्धि निरमल  
 राखी शुद्धउपियोगेकरीने समकीतनीरुचि आचारप्रमा  
 णेपालवी हवेजेसमकीतछे तेबीजाजीवने ओलरूयामाके  
 मआवे तेनुस्वरुपकहेछे नेलींगलक्षण इत्यादिकजीया  
 यकी मालमपडेतेकहेछे सदहणाचार॥४॥ लींग॥३॥ वि  
 नय०॥१०॥शुद्धी॥३॥ दोषा॥५॥ प्रजाविका॥८॥भूषण॥५॥

लक्षणा॥५॥ जलना॥६॥ आगारा॥६॥ जावेना॥६॥ स्थान  
 क॥६॥ एवसडसंठबोल समकीतना॥हवेएनोऽर्थ संक्षेपे  
 देखाडेछे प्रथमच्यारसदहणांकहेछे जीवादिकनवप  
 दार्थनु जथारथपणे नयनिक्षेपादिकेकरीनेअर्थ सम्यक्प्र  
 कारेधारवूं एवीजिवनेशुचप्रणति तेप्रथमसदहणांकहे  
 ॥ १ ॥हवेज्ञान क्रियाशुधवितरागजापितकरवानीखप  
 विशेषेराखे कदापिकोईकालनेयोगे तथाशरीरनायोग  
 यकिकोईदोषणलागे तेनींआलोववानी खपकरें तेवा  
 साधूनीचक्तिवहूमानकरवूं तेवीजीसदहणा ॥२॥ उसन्ना  
 ॥ १॥पासथा॥२॥कुशिलिया॥३॥कुलिंगीया॥४॥सेसदा  
 ॥५॥एपांत्तनीसगतीतजवि॥एनुरूपरुपआगलकहीशुएत्रि  
 जीसदहणा॥३॥कुदर्शनीयोगी सन्याशिप्रमुखनीसंगति  
 तजवि एचोथिसदहणा॥४॥

हवेसमकितना त्रण्यलिगकहेछे जेसिद्धांतादिकजि  
 नागम तेसांजलवानोअजिलाख एप्रथमलिग ॥ १ ॥  
 स्त्रीचरतारनासुख देवतादिकनामुख तेनीरीतीएधर्मसां  
 भलवानोराग एवीजोलिंग ॥२॥ देवगुरुनोविनयवियाव  
 चावहूमानता ॥आलसमुकिनेविशेपेकरे एत्रिजोलिंग  
 ॥३॥ जेमघुघेकरीने अग्नीनुं उनमानथाय॥तेमएहत्रण  
 लिगेकरीनेअरुपिसमकितनुमानथाय॥

हवेदशप्रकारेविनयकहेछे॥यदुक्तं॥अरिहंतसिद्धचेइया॥



३॥ सुएया ॥ ४॥ धम्मेया ॥ ५॥ साहू ॥ ६॥ वगोया ॥ आवरीया ॥ ७॥  
उवझाया ॥ ८॥ पवयणा ॥ ९॥ दसणा ॥ १०॥ विणउ ॥ १॥ अरीहंत  
तेवर्तमानकाले विचरतालेवेएटलेमातानिकुक्षे आविने  
अवतरया त्याधिकिमोक्षजशे त्यासुधिवर्तमानकाले वि  
चरताकहिए एअधिकार जगवतिभूत्रना वारमासतक  
नानवमाउदेसे पचदेवनेअधिकारेकह्योछे तंजथा ॥ सेके  
णठेएनंते ॥ एवंवुचतिदेवाधिदेवागोयमाजेइमा ॥ अरीहता  
भगवता ॥ ऊपणणाणदसणधराजिवसरवेदेशि ॥ सेकेणठे  
एजीवदेवाधिदेवा एमाकह्यु जेहेजगवतदेवाधिदेव ते  
केनेकहिए त्यारेजगवतेकह्यु जेअरीहतभगवंतनेदेवाधि  
देवकहिए एटले अरीहतनेदेवाधिदेवएकजकहिए जेम  
पुणोसोने पचोतेर तेएकजकहिए तेमअहिपण जाण  
वुं हवेदेवाधिदेवनिस्थितीपूछेछे ॥ तंजथा ॥ भविद्यदवदे  
वाणा ॥ केवितियकालधीतिपन्नता ॥ गोयमा ॥ जहणेण ॥  
अंतोमूहताउकोसेण ॥ तिणिपलियोवमाईणरे ॥ देवाणा ॥  
पुछागोयमा ॥ जहणेण ॥ संतवामसताए ॥ उकोसेण ॥  
चउरासितिपुवसयसहसाइ ॥ मदेवाणा ॥ पुछागोयमा ॥ जह  
॥ मूहते को जे पु ॥ उकोसेदेवाये  
पुछागोयमाजहणेण ॥  
सितिपुवसयसहसाइ ॥ नावदेवाणा  
दसविगसहसाए ॥ उकोसेणते

यदवतिके०॥ जेमनुष्य ॥ तथातिर्जैचपंचंद्रिय ॥ एवेगति  
मांहियकि॥ जेदेवताथनारहोय तेनेद्रव्यदेवकहिए तेनि  
स्थितिजघन्य अंतरमूहूर्त उतकृष्टितिनपल्योपमनी  
स्थिति एटलेमनुष्यतिर्जैचनु तिनपल्योपमनु आवखुं  
त्यांसुद्धिद्रव्यदेवकहिए नरदेवतेचक्रवर्ति कहिए तेआ-  
वखापर्यंतनरदेवकहिए धर्मदेवतेसाधुकहिए तेजघन्य  
अंतरमूहूर्तऊतकृष्टो देशेउणुपर्वकोडनिस्थिति ज्यांथ  
किचारीत्रलिधुं त्यांथकिधर्मदेवकहिए देवाधिदेवअरी  
हंतजगवतकहिए तेहनिस्थितिजघन्य ७२ वर्षनि उत  
कृष्टिचोरासिलाखपूर्वनि स्थिति एटलेआवखा पर्यंत  
अरीहंतजगवंतकहिए त्यांसुधिपुजनिककहिए॥ एटलेको  
इककेछेजे अरीहंतभगवंतनेकेवलज्ञान उपजे तथाचा  
रीत्रलिधुंत्यारपछि पूजनिक कहिए॥ तेजुठुं ॥ जेदिवशे  
मातानीकुक्षेत्रवतस्याउपन्या त्यांथकिपूजनिकअरीहंत  
जगवंतविचरता कहिए बलिकोइवादीबोल्हो जेअरीहत  
जगवंत गृहस्थावस्तानेविपे होय त्यारेसाधुनिग्रंथपंच  
महाव्रतनापालनारा वादेनमस्कारकरे के नकरे एवादि  
नुवचन एनोउत्तर ॥ जेवांदवूनमस्कारकरवो तेनाप्रकां  
रवे एकद्रव्यथकि विजोनावथकि एवेप्रकारछे जेद्रव्यथ  
कीवांदवु तेपंचांगिप्रणाम तथाद्वादशवर्त्यादिकवांदवुं॥ १॥  
जेनावथकिवांदवूं तेमननाशूनप्रणामेकरीने तथानमोअ

रीहताणइत्यादिकनोकारगणवेकरीनेवाढवूतेभाववदनक  
 हिए तेज्यासुधिअरीहतभगवंतगृस्थावस्तामाहोयत्यांसु  
 घिसाधुनगवतनेवांदि जेमगुरुशिष्यने नमोलोएसवसाहू  
 ण इत्यादिकपदगणवेकरीने जगवत्तनेवादेछे पणखमा  
 अमणद्वादशवर्त्यादिकवदणेकरीने द्रव्यवदनथिनथिवां  
 दनातथातेमजव्यवहारजाणवोनमोछरीहताण एहपदे  
 अतितअनागतवर्तमानकालनासर्वे श्रीहत्तजगवंतने स  
 दासाधुवादेछे पणजेदिवसेमातानिकुक्षेत्राधिनेश्रीहत्त  
 जगवतअवतरया त्याथकिचवनकल्याणकादिकेकरीनेपू  
 जनिकविशेषप्रकारे चौसठइद्रमलिनेपूजेछे तेकारणमा  
 टेमातानीकुक्षेत्रावतरया एटलेमनुष्यपणामाटे श्रीअरी  
 हंतजगवंतविचरताकहिए त्याथिजयाजोगेविनयकरवो  
 घंटे मोक्षनेऽर्थे ॥१॥ सिद्धकहेता॥ आठकर्मनेक्षयकरीने  
 मोक्षेपोहोच्या॥ तेसिद्धकहिए ॥२॥ चेइय॥ श्रीअरीहत  
 भगवतनिप्रतिमा ॥३॥ श्रूतकहेता॥ समायकादिकसिद्धा  
 ता॥ तेहनोविनयकरवो ॥४॥ धर्मके० ॥ चारीत्रधर्मक्षांता  
 दिकजाणवू ॥५॥ तेधर्मनोअधि०॥२॥ साधुवर्गपचमहा  
 व्रतनापालनार॥६॥ आचार्यछात्रिसगुणेविराजमान॥७॥  
 उपाध्यायपचविसगुणेकरीनेसहित ॥८॥ प्रवचनके०॥  
 संघकहिए ॥९॥ दसणके०॥ सम्यक्तकहिए ॥१०॥ एद  
 शनोविनयकरवो॥ तेविनयपचप्रकारेजाणवो॥१॥

बहुमान ॥२॥ गुणस्तुति ॥३॥ श्रवणवादनोनाश ॥४॥  
 आशातनापरीहार ॥५॥ भक्तितेवाह्यद्रव्येकरीने ॥ तेध  
 नखरचवेकरीने ॥ पतिके ॥ सेवाकरेतेभक्तिरुपविनयक  
 हिए ॥ जेमउदायनादिके ॥ श्रीश्रीहंतभगवंतनीवधाम  
 णिनासाडिवारलाखसोमइयानुष्ठानआप्युतेभक्ति ॥ ॥  
 बहुमानतेहृदयनेविपेधणोप्रेम ॥ तेबहुमानकहिए ॥२॥  
 गुणस्तुतितेछतागुणनुप्रगटकरवूं ॥ जेमश्रीश्रीहंतनाजे  
 गुणहता ॥ पणश्रीश्रीहंतनु कयां ठेकाणु होए ॥ तेथी  
 श्रीश्रीहंतभगवंतनिप्रतिमा तथादेहरांकराविनेश्रीहं  
 तभगवंतनोगुणप्रगटकरवो ॥ श्रीश्रीहंतनिप्रतिमादेखि  
 नेविजादेवनिमूर्तिझाखिदीसेछे ॥ वलिसाधूमहापुरुषएक  
 लाजताहोए त्यारेकोइकजाणेजेएमहापुरुषछे अनेघणा  
 कजीवतोजाणेंनहि घणाश्रावकंश्रावीकासाथेहोय त्यारि  
 जाणेजेकोइकमोटापुरुषछे एमअनेकप्रकारेगुणीनागुण  
 प्रगटकरवाएगुणस्तुतिरुपविनयजाणवोसहि ॥३॥ कोइ  
 श्रावणवादेबोलतोहोयतोतेनुनिवारणकरवूं तेअवर्णवा  
 दनोनाशरुपविनय ॥४॥ असातनातेतांबूलमैथुनादिकवर्ज  
 वूं तेअसातनापरीहाररुपविनयकहिए ॥५॥ एश्रीहंता  
 दिकदशनोपांचप्रकारेविनयकरवो ॥१०॥

हवेशुद्धिके ॥ सम्यक्तनित्रण्यशुद्धि ॥ एकमननीशुद्धि  
 ११॥ बीजीवचननिसुद्धि ॥२॥ त्रिजकायानीशुद्धि

जेजिनतथाजिननासिद्धातादिक विनाविजुसर्वेजुठुंएवम  
नमांचितववू तेमनशुद्धि ॥ १ ॥ जेश्रीतिर्यकरनिजक्तिवि  
नयेथाए ॥ विजानिभक्तिएशुथाएएवममुखेकहेवूनेवचनशु  
द्धि ॥ २ ॥ जोछेयोनेयोशरीरदूखयामे तोपणविजाटे  
यनेननमेतेकायशुद्धि ॥ ३ ॥

पंचगयदोसके०सम्यक्कनांपांचशंकादिकदूपणटालवां  
०अभावके०आठप्रजावकपुरुपाजिनसासननादिपावना  
रजाणवा॥५॥यदुक्तं॥पावयणी॥१॥धम्मकहि॥२॥वाई॥३॥ने  
मितिउ॥४॥तवसीया॥५॥विद्या॥६॥सिद्धोया॥७॥कइ॥८॥  
अठेवप्रभावग्गमणीय॥१॥प्रवचनिके०॥वर्तमानकालेजे  
सिद्धातदिकनो यथार्थऽर्थजाणवो॥ तेप्रवचनीप्रथमप्र  
जावक॥१॥ धर्मकथानदिपेणनिपरे॥ विजोप्रजावक॥२॥  
वादकरीनेजथार्थपणेजीनसासनथाये॥ तेवादित्रीजोप्र  
जावक॥३॥ जीनसासननेनिमितेनिमित्तकहे॥ तेभद्रवाहू  
निपरेनिमित्तकचोथोप्रभावक ॥ ४ ॥ क्षमासहिततपश्चोप  
चमोप्रजावक॥५॥ विद्याके०॥मत्रनेजोगेजिनसासनने  
दिपावे जेमवेरस्वामीछठाविद्यापुरुषप्रजावक॥६॥ सि.  
द्धके०॥ अंजनादिकप्रयोगेकरिने॥ जिनसासनदिपावे ॥  
कालकाचार्यनिपरे तेसिद्धपुरुषप्रभावकसातमा॥७॥ क  
इके०॥ कविश्वरजेनवनवाकाव्यकरीराजादिकरीझवे ध  
र्मदिपावेतेआठमाकविप्रभावक ॥८॥ एआठप्रजावकजा

एवाएमतिर्थजात्राकल्याणमहोत्वच्छ दिक्षामहोत्सवप्रमु  
खकरीनेजिनसासनादिपावे तेपणप्रज्ञावककहिए

चूपणके०॥सम्यक्तनां पांचचूपणंजाणवांतेवंदनपचखाण  
प्रमुखजैनक्रियाविपेडाह्यापणुं॥ तथाकुशलपणुं॥तेप्रथम  
चूपण॥१॥ बहूश्रुतगीतार्यादिकनुंसेववूतेतीर्थसेवारूपवि-  
जुभूपण॥२॥ जेगुरुदेवनिभक्तिकरेतेजाकिरुपत्रिजुभूपण-  
॥३॥ जेदेवतादिकनोचलाव्यीचलेनाहि एअचलरूपचो  
थुंभूपण ॥४॥ तेथकिघणाजिवधर्मनिअनुमोदनाकरे ते  
प्रज्ञावनारूपपांचमुचूपण ॥५॥

लक्षणके० ॥ सम्यक्तनां पांच लक्षण जेणेकरीस  
म्यक्तओलखाय तेलक्षणकहिए जेमअग्नीनुं लक्षण  
न्यायशास्त्रने मतेउष्णरूपर्गत्वं ॥ अग्नीत्व धुम्रलिंगत्वं  
अग्नीनुं लक्षणते उष्णरूपर्ग जाणवो नेअग्निनुल्लोंग  
ते धुम्रजाणवो तेमसम्यक्तनुं लक्षण तेसमसंवेगादि  
कपंचजाणवाने कहेछे उपशमजे पोताना वेरीउपर  
पणप्रतिकुलपणुं चितवेनाहि तेउपशमएवंलक्षणकहिए  
कोइकवादिकेहेछे श्रीजगवती सुत्रना सातमासतके ॥  
नवमाउदेसानेविपेवारुणनामावर्णांगनटु॥ श्रीचेडामहा  
राजनासेवकेकुणिकनिलडाइमधे॥ आशुरुतेजावमीसी  
मीसीमांणिके०॥कोपकरीनेवेरीनेहण्योदिसेछे॥सम्यक्द  
ष्टिआवकवारव्रतधारी छठनेपारणेकरतापण

## श्रीसम्यक्द्वार.

लक्षणतो जणातुं नथी जो अतरग उपशम होत तो पंचंद्रिय  
 मनुष्यने हणतानहि तेने सिद्धांतिक उत्तर देछे जे ते कह्युं  
 ते साचूं पण साजल जो वारुणं नामावरणागनटुआने अं  
 तरग उपशमन होत तो एक अवतारी पणे सौधर्म देवलो  
 के उपजतानहि जे पंचंद्रियनो घात कर्यो ते तो अनुता  
 नवद्वि क्रोधादिक पणे नथि कर्यो जो अनुतानवद्वि क्रो  
 धादिक पणे कर्यो होत तो 'एका अवतारी पणे सौधर्म  
 देवलोके उपजनानहि एह काले करीने निश्चय अर्थ  
 तरगे उपसमरूप लक्षण छे जद्यपि सम्यक् दृष्टि तथा  
 मिथ्या द्रष्टी एवे जणा सरखी क्रिया करे तो पण सम्यक् त  
 द्रष्टी शुभ फल पामे मिथ्या द्रष्टी अशुभ फल पामे जु  
 अने एठे काणे वरुणागनटुओ मनुष्यनो घात करीने ए  
 कावतारी सौधर्म देवलोके पहोतो अने तेहनो वयरी मनु  
 ष्यनो घात करी नरकादिकने विपे पहोतो इहा परिणामनो  
 भेद जाणवो जेवो २ परिणाम होय तेवो २ कर्मनो वध पडे  
 एसम्यक्नु ज अतरग उपशमरूप लक्षण जाणवु ॥ १ ॥ हेवेवी  
 जु लक्षण संवेगरूप ॥ सवेण ० ॥ मोक्षनो अजिलाप इच्छा  
 कही ए। संवेग तनाम किंसा अभिलाप ॥ मिति वचनात् ॥  
 वलि श्री उतराध्ययन सूत्रना ओगण त्रीसमा अध्ययनने  
 विषे प्रथम एह पुछ्यु ॥ सवेगेण जते ॥ जीवे किं जण ईय इ  
 सवेगेण ॥ अणुतर ॥ धम्मस ॥ धजणा यई अणुतरा ए ध

म्मसधाये ॥ सवेगहवामागच्छ ॥ इयनंताणं ॥ वधिकोह  
मानमायालोभे ॥ पवेईनवत्वकम्मनबंधई ॥ तपवइपंच  
णमित्छत विसेहिकाउणंदंसणाराहरो ॥ नवेदंसणविसु  
द्धाए ॥ अत्थेगइएतिणेवभवगाहणेण सिद्धईवुद्धई दं  
सणसोहिएअं विसुद्धाए तचपुणो ॥ नवगहणंनार्इकम्मे  
॥१॥ सवेगेणंके० ॥ संवेगमोक्षाभिलापरुप ॥ सम्यक्कतनुं  
लक्षणते अंगीकारकरीनेजीवशुं ॥ किंजणइके० ॥ सोगु  
णप्रगटकरे ॥ एप्रश्न ॥ एनोउत्तरदेछे ॥ संवेगेणंअणुत्तरं  
॥ धम्मसद्वंजणअइके० ॥ जेनीउपमानहोय ॥ अणुत्तरंए  
हविधर्मके० ॥ श्रुतधर्मतथाचारीत्रधर्मनेविपे श्रधातेधर्म  
करवानेविपे अत्यंतअभिलापउपजावे अणुतराएह ध  
म्मसधाए संवेगहवामांगच्छइके० ॥ उत्कृष्टि सुतचारीत्र  
धर्मनासंवेगहवके० ॥ सिध्रआगच्छतीके० ॥ उत्कृष्टोसंवे  
गमोक्षाभिलापप्रतेपामे त्यारेउत्कृष्टिदर्शननि आरा  
धनाकरे देवगुरुनीभक्तिअत्यंतकरे जेश्रीअरीहंतजगवं  
तनी वधामणीलाव्यो तेनेसाढिवारलाखसोनइयाआ  
प्या श्रीअरीहंतजीननेवणदिठेएटलुं धनखंच्युं तेश्री  
अरीहंतजिननेदिठेतोकेटलुकधन खच्युंहशे जेसकोइक  
देशमुलकजमाडे तेमध्येशाकमांहि १०१ एकसोनेएक  
रुपीयानांमरचांनुं खरचथाय तोत्यांसुखडीनोशोसुमार  
रह्यो तेमत्यांसाढिवारलाखसोनइया वधामणीआपीतो



बीजावनखरच्यानिसिवातकहेवी. श्रीउदायन प्रमुखेतो  
 श्रीअरीहंतजगवतनीदेशना साजलीने तत्कालचारीत्र  
 लीपु श्रीश्रेणीकश्रीकृष्णवासूदेव प्रमुख पोतानाजोग  
 कर्मनेउदये चारीत्रलेइनशक्या तोपणसंवेगगुण वधे  
 धके चारीत्रना बहुमानसाएकरीने जेकोईचारीत्रले तेनी  
 घणीपेरे साम्यकरे इत्यादिकगुणआवेधके अनुतान  
 वधिक्रोधमानमायालोचनोक्षयकरे नवचकमनबंधिके०।  
 पापानुबंधिकर्मनवा नबाधे तपचइयंछणमित्छ तविसो  
 हिकाउण दसणाराहएजवतिके०॥ सवेगप्रतयउसवे  
 गनीमितिउ ॥ मिथ्यात्वनिशुद्धिकरीने दर्शननोआरा  
 धकथाए ॥ दसण सोहिएयणवसुथाई ॥ अछगइ  
 एतेणैव ॥ जवगाहणेण ॥ सीइइइबुइइइके० ॥ दर्शननी  
 शुद्धिकरीनेविशुधाएके०॥ अत्यतनिर्मलपणे केटलाकते  
 हजजवनेविषे सिद्धबुद्धयइनेमोक्षेजाया॥ दसणसोहिएय  
 ण॥ विशुधाएचपुणोनयमहणनाइकमइए॥ दरशनशुद्धि  
 करीने त्रिजोभवउलघेनहि ॥ १॥ एहसम्यक्तनुंसवेगारुप  
 बिजुलक्षणजाणवू ॥ २ ॥ त्रिजुलक्षणसम्यक्तनुनिरवेदप  
 णु निर्वेदतेससारनेवधिखानारुपजाणे नीवेएणजतेजि  
 वेकिंजणजईनीवेएणंदिवमाणु ॥ सतेरीत्छिएसुकामेभोगे  
 सुनिवेयमागछइसव्वविस ॥ एसुविरजई ॥ सवविमए॥  
 सुविरजमाणे ॥ आरंजपरीचायकरेइ ॥ आरजपरिचाय

करेमाणे ॥ ससारमगाबुद्धुदइसिद्धेमगोपडीवनैपन्नवई॥  
जिवन्तेनिर्वेदगुणतेदेवादिकजोगनोत्यागकरीने संसार  
मार्गनाडदेवधकरीने सिद्धमार्गनेअंगीकारकरे एहसम्य  
क्तनुलक्षणत्रिजुनिर्वेद ॥३॥ सम्यक्तनुंचोथुंलक्षण अनुक  
पाद्रव्यथाकि आत्मानिपरनिमच्चारभेदथाय तेकेम॥  
आत्मानिद्रव्यअनुकंपा ॥ १ ॥ पोतानाआत्मानिभावअनु-  
कंपा ॥२॥ परआत्मानिद्रव्यअनुकंपा॥३॥परआत्मानि  
भावअनुकंपा ॥ ४ ॥ पोतानाआत्मानिक्रोधादिकेकरीने वि  
षयादिकनेप्रयोगेकरीने आपघातेमरे तेद्रव्यअनुकंपापो  
तानाआत्मानिनीनकरी॥एणपोतानाआत्मानिद्रव्यहिंसाकरी  
वस्तुगतेतोक्रोधेकरीनेमरे तेणेपोतानाआत्मानिद्रव्यअ  
नेभावअनुकंपानकरी केवल पोतानाआत्मानिद्रव्यभा  
वभेदेहंसाकरी॥जेकोइकजीवव्रतपचखांणराखवानेकाजे  
आपघातकरीने मरेतो व्यवहारनयनेमत्ते द्रव्यहंसापो  
तानाआत्मानिकहि निश्चेनयेतोपोतानाआत्मानिद्रव्य  
भावे अनुकंपाजकरी वलीजेकोइलोकविरुद्धकामकरे ए  
लोकनेविषे अपजसनिद्यादिक तथाताडनादिकपणपामे  
तेणेपोतानी द्रव्यअनुकंपानकरी जेअपामिने लोक  
विरुधादिककामनकरे तेणेपोतानीद्रव्यअनुकंपाकरी ए  
द्रव्यअनुकंपानोप्रथमभेद ॥ १ ॥ पोतानिभावअनुकंपाते  
देवगुरुधर्मनिपरीक्षाकरीने साचोधर्मअंगीकारकरे खो

दोधर्मछाडे जेमशुकदेवपरीव्राजक शुदर्शनादिकनिपेरे  
 वलिपोतानावृत्तपचखाण श्रीअरिहंतजगवत्तनिश्चाज्ञाए  
 पाले तथाकटपडेपणमुंकेनहिं तेनेपोतानाजावअनुकंपा  
 कहिये एविजोभेद २ हवेपरजिवनीद्रव्यअनुकंपाकहे  
 छे जेछकायनाजिवना बाह्यप्राणउगारवा तेद्रव्यअनुकं  
 पाकहीये॥३॥ जेसाधुमहापुरुषछे तेतोपोतानाआत्मास  
 रीखा छकायनाजिवनेजाणछे तेनेउपगारवानिघणी  
 जखपकरेछे तेनेद्रव्यपरदयाकहिये तथाभावपरदयाते  
 जेपरजिवने समकितादिकधर्मपमाडिने मोक्षेपोचाडुं एवा  
 जेअधविसाय तेनेभावअनुकंपाकहिये॥४॥ एचोथुअनुकंपा  
 लक्षणजाणवु॥४॥ हवेआस्तालक्षणपाचमुजेवर्तमानकाले  
 पचागीजाव सम्यक्प्रकारेसदहे जेअरीहतभगवतेजाव  
 प्रकाडयो तेसर्वप्रमाणछे एवमनघचनकायायेकरीनेसदह  
 वूतेहनेअनुसारेप्रवर्तवू एहपाचमुलक्षण॥५॥ एटलेस  
 मांकेतनापाचलक्षणकह्या तथालिगपणपूर्वकह्याछे सि  
 द्धातनुसानलवू अतिशेरागेतेनेलिगकहिए एलिगलक्ष  
 णनोजेदजाणवो ॥

छरिहाजयणाके० ॥ अरीहतभगवतनी प्रतिमा मि  
 थ्यात्वीएगृही होय तेने वदनादिकनकरवु एजतनाक  
 हिए तेहनाछप्रकारछे तेकिया॥वदना॥१॥ नमण ॥ २ ॥  
 दान ॥३॥ अनुप्रदान ॥४॥ आलाप ॥५॥ संलाप ॥६॥ ए

नामेछजतनाजाणवि वंदनते वे हाथजोडवा तेवंदनक  
हिए ते न करवुं ॥ १ ॥ नमणतेअन्यतिर्थादिकने ॥ धर्म  
बुद्धिदेखिनेमस्तकनतेमाववुं ॥ तेनमण ॥ २ ॥ दानतेनक्ति  
एकरीनेदानदेवूनही ॥ ३ ॥ वार२अन्यतीर्थादिकने धर्म  
बुद्धिसुपात्रजाणीनेदानदेवुं तेअनुप्रदानकहिएते नकरवुं  
॥ ४ ॥ अनुकपादिकनेहेतुयेदानदेवुनिषेधनथि ॥ ४ ॥ मि  
थ्यादृष्टिनेकारणविनाअणबोलावेबोलाववुं तेएकवारबो  
लाववुं तेआलापकहिए ॥ ५ ॥ वार२बोलाववुतेसलापक  
हिए ॥ ६ ॥ एछजतनाकहि ॥

हवेछआगारकहिएछे जेजेसम्यक्तमांहेछआगारे  
करीने सम्यक्तजागे नहि - बाह्य मिथ्यात्वकरतांथकां  
भागेनहिते ॥ रायानियोगेण ॥ १ ॥ गणानियोगेण  
॥ २ ॥ बलानियोगेण ॥ ३ ॥ देवाभियोगेण ॥ ४ ॥ गुरु  
नीगहेण ॥ ५ ॥ वीतीकंतारेण ॥ ६ ॥ राजानगरधणि ॥ ७ ॥  
गणतेनात्यप्रमुखलोकसमुह ॥ २ ॥ चोरादिकनोहठतेबल  
॥ ३ ॥ मिथ्यादृष्टिदेव इत्यादिकनोअजिजोगेके ॥ तेने  
प्रयोगेकरीनेमिथ्यात्वनोआचारकरेतोसम्यक्तभागेनहि  
मिथ्यादृष्टिमातापिताकुलाचार्यनेनिगहेके ॥ परसन्नवेक  
रीनेव्रतिके ॥ अजीवकाकंतारअटविरोगादिक ॥ दूखेपि  
डाणोथकोमिथ्यात्वशेवे ॥ गाथा ॥ ॥ आगमतू ॥ इतिआख्यो  
मिथ्यामिति विज्ञेदक ॥ १४ ॥ अनाचारसेवेपणमनथकि

नसेवे एछआगारेसम्यक्तजागेनहि नगरनेरखोपाकाजे  
कोटसरिखाआगारछजाणवा ॥६॥

हवेसम्यक्तनिष्ठभावनाकेछे मूलभूत ॥ १ ॥ द्वा  
रभूत ॥ २ ॥ प्रतिष्ठाभूत ॥ ३ ॥ निधिभूत ॥ ४ ॥  
आहारभूत ॥ ५ ॥ भाषभूत ॥ ६ ॥ चारीत्ररूपधर्म  
स्याके ॥ चारीत्रधर्मरूपपृष्ठनुमूलतेसम्यक्तछे ॥ १ ॥  
धर्मरूपनगरनुवारणासरिखुसम्यक्तजाणवू ॥ २ ॥ धर्मरु  
पमदिरनुपायासरिसूतेसम्यक्तजाणवूतेप्रतिष्ठाभूततृती  
य ॥ ३ ॥ जेमचक्रयार्त्तिनानिधानमाहे सर्वेजातनारत्नछूटां  
होय तेसर्वे रत्ननिजातनिधानमाहेसमाय तेममूलगुण  
उत्तरगुणरूपछुटारत्नसरिखागुण तेसम्यक्ततेनिधिस  
रीखुमननेविपेजाववू ॥ ४ ॥ जेमसर्ववस्तुनो आधारप्र  
थविहोए तेमसर्वगुणनो आधारएकसम्यक्तछे आधा  
रभूत ॥ ५ ॥ जेमअमृतादिकरसनोआधारतेकलसादिक  
जाजनहोय तेशुतशिलादिकनोरसतेसम्यक्तमा रहेएम  
एछजावनाएकरीनेनित्येसम्यक्तनिभावनाभावे ॥ ६ ॥

हवेआत्मानास्थानकरहेछे प्रथमस्थानकजेआत्मा  
छे शरिरयकिभिन्नअसस्यातप्रदेशिज्ञानदर्शनचारीत्रवि  
र्यमय ॥ आकारअनाकाररूपउपयोगमयएवोआत्मा  
प्रतेशरीरजिन एवाअनताआत्मा व्यक्तिजेदेताजिए सि  
द्धससारीरूपएकजआत्मातेकारणमाटे श्रीठाणगे ॥ एगे

आया॥इतिवचनप्रमाणात्प्रथमस्थानक॥१॥ विजुंस्थान  
कनित्यके०॥ आत्मानित्यछे॥ द्रव्यार्थिकनये ॥ अतित  
अनागत ॥ वर्तमानकालेअविनासीछे पर्यायार्थिकनये  
तोदेवतामनुष्यादिकपर्यायनो अनित्यपणेअनित्यछे वि  
जुंस्थानक॥२॥ त्रिजुंस्थानकएआत्माकर्ताछेस्वकृतकर्म  
णाके० ॥ पोतानासुखदूखरूपकर्मनोकर्ता एआत्माछे-  
॥३॥ तथापोतानाकरचाकर्मनोचोक्ताछेके० ॥ भोग  
वनारोपणएजआत्माछे ॥ ४॥ पांचमुस्थानकमुक्तिछे ते  
आठकर्मरहितथायजिवत्यारेमुक्तिकहिए॥५॥ बहूस्थानतें  
मुक्तिनुसारतेज्ञानदर्शनचारित्रछे तेने आधारेआठकर्म  
क्षयकरीनेमोक्षजाय॥६॥ एछस्थानकमूक्तिनांजाणवां.  
हवेसमकितनापांचअतिचारकहेछेसंखाके०॥ संशयतेवेप्र  
कारे एकदेशशंका॥१॥ विजिसर्वशंका॥२॥ जेदेशशंकाते  
श्रीश्ररीहंतभगवंतनिप्रतिमा मोक्षनुसाधनछेकेनथि ए  
देशशंका॥सर्वशंकाते श्रीवित्तरागनोधर्मखरोहशेकेखोटो  
हशे एसर्वशंका ॥१॥ कंक्षाके० ॥ परमतनोश्रमिलाप  
कंक्षाकहिए वितिगच्छाके० ॥ एकरुंछुंतेआंगलफलह  
शेकेनहिहोय अथवासाधुनुंमलिनगात्रदेखिने वृगंछा  
करवि तेचिकच्छाकहिए अन्यसशाके०॥ मिथ्यात्विनिप्र  
संशाकरविनहि ॥४॥ संस्तवके०॥ मिथ्यात्विनोपरीचय  
करवोनहि ॥५॥ एपंचअतिचारसहितसम्यक्कजाणवूं ॥

हवे समकितनी दशरुचीकेहेछे ॥ त्यांपहेलीनिसर्गरु  
 चिकेहेछे निश्चयव्यवहारनयेकरी जिवअर्जावनवतत्वजा  
 णी आश्रवत्यागेसवरलहे वितरागेकह्याजेजाव॥६॥ द्र  
 व्यतेद्रव्यक्षेत्रकालनाभावशुजाणे नामादिच्यारनिक्षेपा  
 जाणेसदहे आपणिवुद्धिशुसदहे वितरागनिजापाभावत  
 हतछे एवीसदहणा तेनिसर्गरुचिकहिये ॥१॥ हवेउपदे  
 शरुचिकहेछे जेएहिजनवतंतलछद्रव्यगुरुउपदेसशुजाणी  
 नेसदहे तेउपदेशरुचिकहिए॥२॥ हवेआज्ञारुचिकहेछे रा  
 गद्वेपमोह जेनागयाहोय अज्ञानमिट्युहोयअनेजेअ  
 रीहतदेवे आज्ञाकहितेमानेनेसदहे तेआज्ञारुचिकहिए  
 ॥३॥ हवेसूत्ररुचिकहेछे जेसूत्रनानामनदिसूत्रार्थिलखी  
 एछेअहवात्तसमासउ॥ दुविहपन्नतं॥ तजहा॥ आवसय  
 च॥ आवसय॥ वयरीतच॥ आवसय॥ वयरीतदुविह॥  
 आवसय॥ वइरीत॥ आवस्सय॥ वयरितं॥ दूविहपन्नतं  
 तजहाकालीय॥ उकालीया॥ सेउकालिया॥ अणेगावह॥  
 पणतत॥ दसवेयालिय॥ कप्पिआ॥ १॥ कप्पी  
 यं॥२॥ चूलकप्पसुय॥३॥ महाकप्पसूय॥४॥ उवाइ  
 य॥५॥ रायप्पसेणिय॥६॥ जिवाजिगमो॥७॥ प  
 न्नवणा॥८॥ महापन्नवणा॥९॥ पमायपमाय॥१०॥ नंदि  
 ॥११॥ अनुयोगद्वाराइ॥१२॥ देविदत्तओ॥१३॥ तदुलवे  
 यालीया॥१४॥ चदाविजया॥१५॥ सुयमति॥१६॥ पोरसि

मंडलं॥१७॥मंडलप्वेसो॥१८॥विद्याचरणविणल्लीओ  
॥१९॥गणिविद्या॥२०॥ज्ञाणविभक्ति॥२१॥मरणविज्जती  
आयवीसोहि॥२३॥वियरायसुर्या॥२४॥सलेहणासुर्यं  
॥२५॥व्यवहारकप्पो॥२६॥चरणविसोहि॥२७॥आ  
उरपचखाणं॥२८॥महापचखाणं॥२९॥एवमाइशेकि  
तकालिआ॥तंजहा॥उत्तरझयणाइं॥१॥दस्याकल्पो॥२॥  
व्यवहारो॥३॥नीसिहं॥४॥महानीसिहं॥५॥इसिभा  
सियाइं॥६॥जबुद्विषपन्नति॥७॥दिवसागरपन्नति॥८॥  
पुरपन्नतीचदपन्नती॥९॥खुडीयावीमाणपवीज्जती॥१०॥मह  
डीयाविमाणपवीभत्ती॥११॥अंगचूलिया॥१२॥वंगचूलिया  
॥१३॥व्यवहारचूलिया॥१४॥अरणोववाए॥१५॥वरणोववा  
॥१६॥गरुलोववाए॥१७॥धरणोववाए॥१८॥वैसमणो  
ववाए॥१९॥वेलंधरोववाए॥२०॥देविंदोववाए॥२१॥  
ठाणसूए॥२२॥समुठाणसूए॥२३॥नागपरीयावालिआ  
॥२४॥नीरयावलीओ॥२५॥कप्पियाओ॥२६॥कप्पंव  
सियाओ॥२७॥पुप्फियाओ॥२८॥पुप्फिचूलियाओ॥२९॥  
येहिदेसाओ॥३०॥एवमाइतल्लअंगपवीवं दुवालसवीहं  
जहा आयारो॥१॥सुयगडो॥२॥ठाण॥३॥समवाओ  
४॥विवाहपन्नती॥५॥नायाधम्मकहाओ॥६॥उपासक  
शाओ॥७॥अंतगडदशाओ॥८॥अणुतरोववाईदशाओ  
९॥वीवागसूय॥१०॥नाव ११॥दीठावाओ



उच्चाईतथाठाणगमध्ये चारसूत्रनानामठे. तथाजोगवि  
 धिमध्ये आठनामवधतानाजोगछे नदीसूत्रेपणएवमाई  
 एपाठयीउपदेशमाला प्रमुखसवीतीर्यकर विराजमान  
 थकाजेथया जेवसूदेवहूडप्रमुख तेसर्वमानवायोग्या॥ ह  
 मणावर्तमानकाले॥४५॥आग्यमछे तेनानामकहेछे अगी  
 यारअग ॥आचारग॥ १ ॥सूयगडांग॥ २ ॥ठाणंग॥३॥  
 सम्मवायाग॥४॥जगवती॥ ५ ॥ज्ञातार्धर्मकथा॥६॥ उपा  
 सकदशा॥ ७ ॥ अतगददशा ॥ ८ ॥ अनुतरोववाइदशा  
 ॥९॥प्रप्नव्याकरण ॥ १० ॥ विपाकसूत्रा॥ ११ ॥ एअगी  
 यारअगजाणवा बारमोअगदृष्टिवाद जेमाहेचौदपूर्वहतां  
 पणतेविछेदगयाछे बारउपागनानाम उववाई॥१॥ राय  
 ॥५॥चदपन्नति॥ ६ ॥सूरपन्नति॥ ७ ॥कप्पिया॥ ८ ॥क  
 प्पवढसिया॥ ९ ॥पुफिया॥ १० ॥पुफचुलीया॥११॥वन्नि  
 दशाओ ॥ १२ ॥ एउपागजाणवा अथछेदनानामक  
 हेछे व्यवहार॥१॥वृहत्कल्पा॥ २ ॥दससुतस्कधा॥ ३॥ नि  
 शीथ॥४॥महानिशील्ला॥ ५ ॥जितकल्पा॥ ६ ॥अथदसप  
 यनानानाम चौसरणा॥१॥संधारावयनो॥२॥तडुलवेयाली  
 या॥३॥चदाविजया॥ ४ ॥ गणविजया॥५॥देविदल्लुओ॥६॥  
 विरकओ॥ ७॥ गछाचार ॥८॥योतीकरडा॥९॥ च्यारमूल  
 सूत्रनांताम आवस्यका॥ १ ॥दशवैकालिका॥ २ ॥उत्तराध्य

यना॥३॥ओघनीर्युक्ति॥४॥वेचुलीकासुत्रनंदि॥१॥अनुजोग  
द्वार॥२॥एआगमसर्वनाजोगछेअनेबीजानाजोगनीविधि  
नयीदिस्तीजेएवाजोगमध्येआव्याछेतेमाटेआग्यमसूत्रनि  
र्युक्तिजाण्यचुरणीटिकाएपंचांगीनांवचनमानेआगमसुणवा  
भणवानिइछाहोयतेसूत्ररुचिजाणवि॥४॥इहांश्रीजगवति  
नंदिसूत्रमधेगाथाछे जेसूतथोखंजोपढिमोबियोनिजुति-  
मिसीओ॥तइयोयनीखसेसो॥एसविहिहोईअणुउगो॥१॥  
तथाअनुयोगमध्ये नियुक्तोअनुगमकह्योछे॥ समवायां  
गे॥ सनियूताए॥ इत्यादिकघणीसीखछे॥ तेमाटेपंचांगी  
नीअद्वाराखे तेनेआराधनाछे॥ तेमाटेपंचांगीनिअद्वारा  
खवी हवेबिजरुचिकहेछे ॥ जेजिवगुरुमुखे ॥ एक  
पदनो अर्थसुणी अनेकपदसदहे ते बिजरुचिजाणवी  
॥ ५ ॥ हवेअजीगमरुचिकहेछे जेजीवगुरुमुखे सुत्र  
सिद्धांतअर्थशुंजाणेअनेअर्थशुविचारसुणवानी नणवानि  
जेनेघणीचाहनाहोय तेअभिगमरुचिजाणवी॥६॥ हवे  
विस्ताररुचिकहेछे छद्रव्यजाणेछद्रव्यनागुणपर्यायचारें  
प्रमाण॥ सर्वनयजाणे॥ एनयप्रमाणशुंछद्रव्यसदहे ॥  
तेविस्ताररुचिजाणवी॥७॥हवेक्रियारुचिकहेछे दर्शनज्ञा  
नचारीत्र तपविनयसुमतिगुप्ति ब्रह्मक्रीयासहित आ  
त्मधर्मशुंजेनेरुचिघणीहोय तेक्रियारुचिजाणवी॥८॥ हवे  
संक्षेपरुचिकहे अर्थमांज्ञानमांथोडोकहे घणीजाणेकुम

तमानपडे जिनमतमाप्रतितमाने तेसक्षेपरुचिजाणवी  
 ॥९॥ हवेधर्मरुचिकहेठे जेपचास्त्रिकायनोस्वरुपजाणे  
 श्रुतज्ञाननेस्वजावेअतरगसत्तासदहेतेधर्मरुचिजाणवी ॥  
 १०॥ एदसरुचिकहि इत्यादिकसमकितनाघणाबोलछे  
 माटेसडसठबोलोनियमरह्योनहिवर्णासमकितनावोलवी  
 जाछेआगलकेटलाएककेवाशे॥इतिश्रीसमकितद्वारग्रथो  
 मुनिश्रीहूकमचंदजिविरचितेतृतीयोध्यायपरीपूर्णम्॥३॥

एटलेत्रिजाअधिकारमां समकितनुस्वरुपदेखाड्यु  
 हवैचोथाअधिकारदेवतत्वओलखावेछे शामाटेजेशुद्धदे  
 व॥१॥ शुद्धगुरु॥२॥ शुद्धधर्म॥३॥ एत्रणतत्त्वनीसदहणा  
 होय तेनेसमकितकाहिए माटेप्रथमदेवतत्वओलखावेछे  
 देवतेअरीहतनेकाहिए एटलेअरीहतके०॥ आठकर्मरुप  
 शत्रुनेहण्यातेअरीहतकहियेत्यारेशिष्यप्रश्नकर्युं जेअरी  
 नामशत्रुनेहणेतेनेअरीहतकोछो त्यारे राजाप्रमुखघणा  
 लोकशत्रुनेहणेछेतेनेअरीहतकहीएएवुप्रश्नकर्युहेशिष्य  
 प्रश्नतेमलुंकर्यु परतुतारीसरतस्वजातिविजातिमापुगी  
 नहि शामाटेजेतेशत्रुनेहणेछे तेकाडशत्रुनथोकेमजेशत्रुतो  
 विजातीहोय पणस्वजातिहोयनहि माटेएतोमूर्खछे जेस्व  
 जातिनोघातकरेछे अरीहनप्रमात्माएविजातीनोघातक  
 र्योछेत्यारेफारिशिष्यवलिवोल्याहेस्वामीस्वजातिविजा  
 तिनीवेहेचणकरीपणअमेस्वजातिविजातिजाणतानथीम

टेअमाराउपरकृपाकरीस्वजातिविजातिनुंस्वरूपओलखा  
 वोत्तारेगुरुओलखावेछे जोक्षिप्यस्वजातिके॥जेपोतानि  
 जातिके॥ जेनेविपेसरखागुणछे सरखालक्षणछेसरखो  
 स्वभावछेतेनेस्वजातिकहिए अनेविजातिके॥ द्रव्यपण  
 बीजो गुणलक्षणस्वभावपणबीजो तेनेविजातिकहिए  
 इहांस्वजातीविजातीनीचोअंगीलगावीनेदेखाडेछे स्वजा  
 तीनेहणेतेपहेलोभांगो॥१॥ 'स्वजातीविजातीनेहणे॥२॥  
 विजातीस्वजातीनेहणे॥ ३॥ अनेविजातीविजातीनेहणे॥  
 ४॥ एनोअर्थः॥हवेस्वजातीस्वजातीनेहणेके॥जेममोटोम  
 छनानामछनेगले तेमछेमछजोतांतो ॥ स्वजातीछे पण  
 शायकिहणेछे जेक्षुधावेदनिछे जेपुदगलनाघरनीछे तेवि  
 जातिनेऽर्थेस्वजातिनेहणेछे तेकेमजेकोइराजाविजाराजा  
 नुराज्यलेवाजाय त्याहांतेराजानेहणे तेदेशनालोभे  
 राजानेहणेछे तोजूओएप्रतक्षमूर्खछे शामाटेजेदेश  
 छेतेपुदगलनाभोगमाआवेछे अनेकर्मपोतानेभोगवचांप  
 डे अनिदेशतोविजातिछे अनेराजास्वजातिछे तेविजातिने  
 ऽर्थेस्वजातिनोघातकरेछेतेस्वजातिनावेनेदछेएकद्रव्यस्व  
 जाति एकजावस्वजाति तेद्रव्यस्वजातिके॥ राजानेह  
 प्यातेद्रव्यस्वजातिकहिए अनेराजानिघातकरचाथीला  
 ग्यांजेकर्म तेथकिपोतानोआत्मासंसारनेविपेपरीब्रह्मण  
 करशे तेमाटेएनेजावस्वजातिनोहण्योकहिए एपेहेलोचा

ગો ॥૧॥ હવેસ્વજાતિવિજાતિનેહણે તેનોડર્યકહેછે સ્વજા  
 તિકે ॥ પોતાનોઆત્માઅનંતગૂણેકરીનેસહિતછે એજેટ  
 લાજીવહેતેસર્વેસ્વજાતિહેશામાટેશ્રીઠત્તરાધ્યયનમાંકહ્યું  
 છે જેછલક્ષણસર્વજિવમાલાધે તેકિયા જ્ઞાન ॥૧॥ દર્શ  
 ન ॥૨॥ ચરીત્ર ॥૩॥ વિર્ય ॥૪॥ સુખ ॥૫॥ ઉપીયો  
 ય ॥૬॥ એછલક્ષણહોએ તેનેજીવકહિએ એટલેસગ્રહનધેસ  
 તાગવેપતા સર્વજિવસરલાહે તેઠાણંગમાંકહ્યુંછે એરોઆ  
 યાજીવા એટલેસર્વજિવનેએકજગવેરૂયો માટેસર્વજીવસ  
 રલાહેમાટેસર્વજીવસ્વજાતિજાણવાહવેસ્વજાતિહેતેવિજા  
 તિનેહણે તેવિજાતિકિયો તેનૂસ્વરૂપદેલાહેછેએટલેવિજા  
 તિકે ॥ વિજીજાતહે તેનેવિજાતિકહિએ તેપુદ્ગલાસ્તિ  
 ૧૫ ॥૧॥ ધર્માસ્તિકાય ॥૨॥ અધર્માસ્તિકાય ॥૩॥ આ  
 કાસ્તિકાય ॥૪॥ નેકાલ ॥૫॥ આપાચમાં પુદ્ગલવ  
 ર્જિત્તચાર તેતોહણાતાનથિ અનેપુદગલવિશેષણ વિશ્રસ  
 ટિકપુદગલનેહણવાનુકામજરૂરનથિ એકમિશ્રસાપુદગ  
 લનેહણવાનેનાઆઠનેદહે તેકહેછે ઉદારિકવર્ગણા ॥૧॥  
 કૃત્યવર્ગણા ॥૨॥ આહારકવર્ગણા ॥૩॥ તેજસવર્ગણ  
 ॥૪॥ જાપાવર્ગણા ॥૫॥ ડસ્વાસવર્ગણા ॥૬॥ મનોવ  
 ણા ॥૭॥ કાર્મણવર્ગણા ॥૮॥ આઠવર્ગણાનાનામજાણવ  
 વેપરમાણુંજેલાયાએ ત્યારે દ્વણુકસ્વધયાએ ત્રણપરમા  
 મેલાયાએ ત્યારેતણુકસ્વધયાએ એમઅસંસ્કયાતે પર

गुंए असंख्यात्तखंधथाय अनंतापरमाणुंये. अनताणुंखंध  
 थायएसर्वजिवनेगृहेवायोग्यनथि अनेअभव्यथकिअनंत  
 गुणाअधिकपरमाणुंजैलाथाय त्वारे एकउदारिकनिवर्ग  
 णालेवायोग्यथाय॥ एटलेएकएकथिअनंतगुणिअधिक॥  
 एकथकि विजीविजीथकित्रिजीएमअनुक्रमेसातमाथकि  
 आठमिवर्गणाकर्मणनामेवर्गणाअनंतगुणीअधिकमल्या  
 थीजिवनेगृहेवाजोगथाय उदारीक ॥१॥ वैक्रय ॥२॥  
 आहारक ॥ ३ ॥ तेजस ॥ ४ ॥ एचारवर्गणावांदरछे  
 एमांपांचवर्ण ॥५॥ वेगंध२॥ पांचरस ॥१॥ आठफर  
 स ॥८॥ एविसगुणछे जापा॥१॥ स्वास॥२॥ मन॥३॥  
 कर्मण ॥४॥ एच्यारवर्गणासुक्ष्मछे एनेविपेसोलगुणछे  
 केमकेफरसनाएनेच्यारहोयएटलामाटे तथाएकपरमा  
 णुमापांचगुणहोय॥वर्णा॥ १ ॥ एकगंध॥ २ ॥ एकरस  
 ॥ ३ ॥ बेफरस ॥ ४ ॥ एपुदगलना अनेकविचारछे ॥  
 एमानो गुणआत्मामानथि एपुदगलमांजछे एटले  
 आत्माथकीनिनगुणठरचाछे माटे एने विजातीकहिए  
 एटलेवर्गणानोघात आत्माकरे एस्वजातीविजातीघात  
 विजोनांगो॥ २ ॥ हवेत्रीजोभांगोवीजातीस्वजातीघात  
 नामे विजातीके०॥जेपूदगलकहेताजेकर्मदलतेआत्मानो  
 घातकरेछे तेनोविवरोकहेछे जेआत्मानाआठगुणछे जे  
 अनतुज्ञान॥१॥अनतुदर्शन॥२॥ अनंतोअव्यावाध॥ ३ ॥

अनतुचारीत्र ॥ ४ ॥ अटल अवगाहना ॥ ५ ॥ अरुपा गुण  
 ॥ ६ ॥ अगुरुलघू ॥ ७ ॥ अनतुविषय ॥ ८ ॥ अष्टांग गुण हण्य ॥ अटले  
 विजातीये स्वजातीने हण्यो एत्रिजो ज्ञागो ॥ ९ ॥ हवेचो यो  
 ज्ञागो विजाती विजातीने हणे एटले जे मको इक पध्यर प्रमू  
 ख भितादिक उपर छे उपर थकी स्वप्न विरडी पड्यो निचे मा  
 र्तिना वासण प्रमूख पड्यो हता तेनी घात थई एटले पध्यर  
 पण पूढ गलछे माटी ना ज्ञा जे न पण पूढ गलछे एटले विजा  
 ती विजातीने हण्यो एचो यो ज्ञागो ॥ ४ ॥ एचो जगी कही  
 हवे एच्यार जग माहेथी जे विजो भागो छे ते ज्ञागो होयते  
 अरीहत प्रमात्मा कहिए इहां विचार घणो छे पण ग्रथ गौर  
 वथाय माटे लर्यो नथि हवे एवा जे अरीहत देव जे अठारे  
 दोष ऐकरी रहीत तेने जेने श्वर देव कहिए तथा जिन चैत्या  
 एके ॥ श्रीजिन राजराग द्वे परहीत ते जिन कहिए तत्स  
 वधि चैत्यानिके ॥ प्रतिमा श्रीवितराग देवनी प्रतिमाने चै  
 त्य कहिए तयानी ग्रंथाके ॥ बाह्य अभ्यंतर गाठरहीत सा  
 धू कहिए तेनी थापनाने निग्रथ कहिए थापनाचार्यने पण नि  
 ग्रथ कहिए तथा समायकादिक आगम तथा आदिशब्द थ  
 की सध साधर्मिकादिक नी भक्ति बहु मान करवु इपूरे ॥  
 एह जे कहा अरह चैत्यादिक जेने विपे शका कक्षादिक  
 रहित आठ आचार ते सम्यक् तनुं साधन जाणवुं जे जिन  
 भद्रिकादिक गुण सहित अरीहत जगवतनी प्रतिमाना दर्श

पूजायकीसम्यक्तपामे तथासाधूनादर्शनादिकथकितथा  
तिर्थजात्रा श्रीतीर्थकरभगवंतना पंचकल्याणकभूमि त  
थाश्रीसिद्धाचलगीरीनारप्रमुखमाहातीर्थनीजात्रा तथा  
साधर्मिकनीजकितदिक्षामहोछवादिक उपधानमालारो  
पणादिकजिननामहोछवदेखिने सम्यक्तपामे जेपास्या  
होयतेगुणनेवधारे सम्यक्तनिर्मलकरीने चारीत्रपांमीने  
यावत्मुक्तिपदपर्यंतसाधनथायं निसकितके०॥ देशशं  
का॥१॥सर्वशंका॥२॥देशशंकां तेवितरागनामार्गनेविपे  
जेजिवादीककहेतां०॥पदार्थकह्यातेमध्ये एकदेशतेपाणी  
नेविदुएअसंण्यातादिजीवकह्या तथावासिधाननेविपे सं  
ण्याताबेरेन्द्रियकह्या तेशंकानहिहोयतथाजैनामार्गनामत  
नेविपे शकातेसर्वशंकारहित निशंकितवेदाद्योके०॥प्रथ  
मआचार॥१॥निकांक्षितके०॥ जेअन्यतिथीतेयोगीकाप  
दीनाधर्मनो अभिलाषतेरहित तेबीजोआचार॥ २ ॥  
दर्शनस्याके० ॥ धर्मनाफलनोसंदेह तथा साधूनिदुगं  
छानियाकरेतेरहित ॥ एत्रिजोआचार ॥ ३ ॥ अमुढ  
प्रष्टित्वकुतिर्थिकनामंत्रचमत्कारदेखीने ॥ तथा स्व  
दर्शननेविपे नयनिक्षेपादिक ॥ उत्सुर्गापवादादिकअंगा  
धअर्थदेखीमुझायनहि एअमुढदृष्टिचोथोआचार॥४॥ ए  
चारआचारअतरंगजाणवां जोनिशकितादिकबाह्यक्रिया  
करे तोअनुमानजणाया॥५॥ हवेच्यारआचारबाह्यवृत्ति



करे ॥ ते कहें छे ॥ जे गुणी तीर्थकरादिक तथा साधु साधविप्र  
मुखचतुर्विधसंघने गुण कहिए तेनि प्रसंशा करवी जे तीर्थ  
कर भगवतनि प्रतमाभराविते गुण प्रसंशा कहिए जे श्री ती  
र्थकर देव देशांतरने विपे होय तेनी प्रतिमा थापिने ते गुण प्रगट  
करवाते ज्याहां सुदिपोताना आत्मानां सम्यक्तादिक गुण वृद्धि  
पामे यावत चारित्र गुण अंगीकार करे छे त्यांहां सुधि द्रव्य स्त  
वनी मुख्यता छे पछी चारित्र गुण आराधवे करीने विनय वयाव  
चादिके करीने गुण निप्रसंशा करे एह प्रवृत्ति रूप पांचमो आ  
चार प्रधान छे ॥ ५ ॥ जे ज्ञान दर्शन चारित्र नां गुण साध  
तो होय तेने साज्यादिक करवे करीने स्थिर करे श्री कृष्ण वासु  
देव श्रेणीक प्रमुखे चारित्र नीसहाय करी ए विउदघोषणा  
करावी साज्जी छे ए प्रवृत्ति रूप छठो आचार ॥ ६ ॥ बाछल्य  
ताके ॥ नक्तिरूप जाणवी बाह्य पति २ श्री तीर्थकर जगवं  
तनि तथा साधर्मनि यथास्थित पूजा सेवादिक करविते वाछं  
ल्यतारूप सातमो आचार ॥ ७ ॥ जिन सासन निउनतिकरे घ  
णाजिव जिन सासन नि अनुमोदना करे तथा अमारना पड  
हच जडा विने जेमदि पावे ते साधु होय ते उत्कृष्टीत पस्यात  
था देशनादिक निकलाये करीने अष्टमहाप्रज्ञावक कह्या ते  
नीपेरे जिन सासन दिपावे ए प्रभावक नाम आठमो आचार ॥  
८ ॥ समकितना ए आचार कह्या अष्टो आठ सख्याये सम्य  
क्तेने निर्मल के ॥ उजलूकरवाने हे ते एक ह्या ए आचार

रश्रीउतराध्ययननाश्रठविसमामोक्षमार्गाध्ययननेविषे॥  
 यदुक्तं॥ निसंकियनिकंखिय निवितिगल्छा अमूंणआठ॥  
 १॥ एएकात्रिसमीगांथा उववुहके०॥ गुणवंतनीप्रसंशा  
 करवी बिजोऽर्थतोलख्योछे आवकनेजिनपूजाके०॥ श्री  
 वित्तरागनीपूजानेविषे तथासमाथकनेविषे तथापोषधेपो  
 सानेविषे एआठआचारयथायोग्येके०॥ ज्यांहांजेवूंघटे  
 त्यांहांतेवूंजोडवूं तथामनवचनेकायानायोगेकरीने श्रीवि  
 त्तरागनिपूजादिकनेविषेजोडंवा आदिशब्दथकिप्रणाति  
 पातविरमणादिकवारव्रननेविषे॥सकलके०॥ सर्वेआचार  
 जोडवाजिनपूजायांसम्यक्तनेविषे तथाचारव्रतनेविषेपण  
 यथायोग्येजोडवूं एकवित्तरागनिपूजानेविषे निशंकिता  
 दिकआठआचारजोडवातेकेमः ॥ श्रीवित्तरागदेवमां॥  
 अनेश्रीवित्तरागनिप्रतमामां कशोअंतरजेदनथि ए  
 वुंझंकादिकरहितपणुहोय तेपूरुपश्रीवित्तरागदेवनिप्रत  
 मानिपूजाकरेअर्हीशिष्येप्रश्नकरयूं जेवित्तरागतोअनंतगु  
 णनाधर्णाछे चोत्रिसअतिशयेकरीनेविसाजमान पांत्रिसं  
 वाणिगुणनाधर्णिछे केवलज्ञानभास्कर इत्यादिकअने  
 कगुणैकरीनेसहितछे श्रीवित्तरागनिप्रतिमामांतो ते  
 मांनोएकेगुणदिसतोनथि तोतमेकह्युंजे श्रीवित्तरा  
 गनिप्रतिमाने श्रीवित्तरागमांहिकशो अंतरजेदनथि  
 तोइहाशंकामनमांऊपजेते इहांशिष्यनेउत्तरदेछे जेहे

शिष्यतेसाचूंकहयुं तेजलुप्रश्नपूछयुं अभिप्रायजाप्या  
 विनाशकाउपजे तेमाटेतुएवात्तना श्रीप्रायमांसम  
 ज्योनहि जेश्रमेकह्युजेकशोश्रत्तरभेदनथि तेश्रन्निप्राय  
 सांनल॥ जेचोत्रिसअतिशयादिगुणतो ॥ भावनिक्षेपामां  
 होय तेजगुणप्रतिमामाहोयतो भावनिक्षेपोजकेहे  
 त प्रतिमाकहेतनहि कशोश्रत्तरभेदनथिएजेकहयुं तेजे  
 कोईनव्याजिवभाद्रिकसम्यक्तदृष्टिदेववृत्ती तथासाधुनिग्र  
 थहोय जेकह्युतेजेपोतानेघटमाउचित ॥ मन ॥ वचन ॥  
 कायानिशक्ति बालविर्य॥१॥ बालपंडितविर्य ॥२॥ पंडि  
 तविर्यरुपशक्तितयातेविपुन्यप्रकृतिने श्रनुसारे विद्यमा  
 ने श्रीश्रीरीहतनगवंतनिप्रतिमानि शेवाचकितविनयबहू  
 ॥ नकरे पुन्यानुबधिपुन्यप्रकृतिवांधेतेविजमहानिर्जराए  
 करीने उत्कृष्टपदेवर्तैतोजिव सिद्धिपामे त्याश्रीवितरा  
 गनिप्रतिमामां कशोश्रत्तर भेदनथि एश्रन्निप्रायव  
 चनकहयुछे बलिजेसरखोगुणने सरखापणुनहि एवूजो  
 एकातेकईतोमिध्यालथाय तेतोपूर्वश्रीसुगढांगनिसाखे  
 कह्युंजछे तोइहाकशुकहेवानुकामरहयुंनथि बलिजोतमे  
 कह्यु जेश्रतिसयादिकगुणमाहेलोएकेगुणदिसतो नथि ते  
 वगरसमज्योबोल्यो श्रीतिर्थकरभगवतनिप्रतिमामांतो  
 नेर्विकारनेत्रप्रमुखसंस्थानादिकेशैलेसिमोक्षजावानिश्र  
 रथा तेनिमूद्रापरमउपसमरसनोश्राकार श्रीतिर्थकरभ

गवंतनाशरीरनुसरखापणु तेहप्रतिमादेखिनेसाक्षात्तग  
वंतनेसंजारवानिशक्ति विषयकखायत्यागनापरीणामक  
राववानिकारणता तथाजातिस्मरणप्रमुखेकवलज्ञानपर्य  
ततेउपजाववानिकारणताइत्यादिकअनेकगुणश्रीवितरा  
गनिप्रतिमामाहेसाक्षात्दिशेछेतोकेमकहेवायजेगुणनधि  
॥यदूक्तं॥प्रसमरसनिमग्न॥दृष्टीयुग्मप्रसना॥वदनकमलकं  
कामनिसंगशून्यंकरयुग्मपिधत्ये सस्त्रसंबंधिवंध्यतदासि  
जगतिदेवो वितरागस्त्वमेव॥१॥प्रसमके०॥ उपसमरस  
नेविपेनिमग्नके० ॥ व्यापिरह्यांएहवां हेवितरागतारां  
नेत्ररुडां वलिप्रसनके० ॥ निर्विकारीतारुं मुखाकम  
ल ताहरो अंकके०॥ खोलोप्रेमदानेसंगरहितछे वलि  
तारुंहाथजोडूं शस्त्रसंबंधेशून्यछे तत्तेहेतुमाटे तारि  
निर्विकारीप्रतिमाआकारने हेतुएकरी लंके० ॥ तुंवित  
रागद्वेपरहितछुं तेकारणमाटेश्रीवितरागनिप्रतिमाअने  
कगुणेकरीनेसहितछे जेसम्यग्दृष्टिजिवंहोय तेने तथा  
योडाजवमांमोक्षेजवु होय तेने अज्ञेदबुद्धि श्रीतिर्थक  
एनियाय तेआहार्यारूपकहिए एप्रथमआचारनिसंकित  
ने ॥ १ ॥ बिजोनिकक्षितपरमतजिलापरहितपूजामां इ  
यादिकआचार जिनपूजादिकबारव्रतमांजोडवाश्रदान  
॥०॥श्रावकनेप्रथमके०॥मनुष्यप्रधानकारणतेजिननिपू  
राछेते द्रव्यभावस्तवात्मिकंके०॥द्रव्यस्तवजावरुपपूजा

कहिएद्रव्यस्तवतेद्रव्यधनादिकेसंपदाएकरीने स्तवके०  
 श्रीवितरागनाछतागुणप्रगटकरवा तेद्रव्यस्तवगृहस्थने  
 दानपूजादी दिक्षामहोछवादीकसर्वद्रव्यस्तवकहिएश्रुत  
 अध्यवसायेकरीने क्रियाअनुष्ठानकरे तेजावस्तवकहिए  
 वलोतेपूजाकेबीछे नवविधधनधान्यपितवस्तु इत्यादि  
 कतेणकरीने आर्तिके॥आर्तध्यान॥रौद्रकके॥रौद्रध्यान  
 हंसानुबधी॥ १ ॥मोसानुबधी॥ २ ॥चोरानुबधी॥ ३ ॥परी  
 गृहरक्षानुबधी ॥४॥ इत्यादिकरौद्रध्यानरूपेजे याधीम  
 ननीपीडा तेरुपवाह्यअभ्यंतररुपरोगतके० ॥ हरतिते  
 दूतएटलेपरीहरवु आर्तध्यानरौद्रध्यान रोगनीटाजण  
 हारीपूजाछे॥ २५ ॥जेपजमिवके०॥ जेम रोगने भेखज  
 के०॥बहुविधउपधनिपेरे सतरभेदिपूजातथा अष्टप्रका  
 रीपूजा सदिष्टाके० ॥प्रकाशिविधिवत्के० ॥ विधिसहि  
 तदशत्रिकादिकेकरीने प्रकाशिपरमेश्वरे अंततेतीर्थकरे  
 पूजाप्रकाशिछेआभरणोपमात्के० ॥अलकारनिउपमाछे  
 वलीविप्रिसहितपूजाकरवीतेमादशत्रिकनानामक  
 हेछे॥तिन्निनिसीहि॥तिन्नितिन्नियपयाहिणा ॥२॥ तिन्निचे  
 वयपणामा॥३॥तीविहापूयायतहा॥४॥अवयतियजावणंचे  
 वा॥५॥तिदिसिनिरखणविरड॥६॥तिविहंभुमिपमज्जणचे  
 वा॥७॥वन्नाइतिआ॥८॥मुहातीयचा॥९॥ तिविहचपणीहाणं  
 ॥१०॥ पूजायात्रानेविपे पेहेलीनिसिहिके०॥ देहराने

बारणे घरनोवेपारत्यागकरीनेपेसे बीजीनिसिहिदेहरा  
 नोवेपारकाजादिकनुकाढवुं तेनोनिपेध त्रिजीनीसीहीपू  
 जानाव्यापारनोत्यागचैत्यवंदननी वेलाए ॥१॥ अंजली  
 बंदोके०॥ हाथजोडवा॥१॥ अर्धअंगनमाववु॥२॥ पंचांगी  
 प्रणामप्रणामत्रिक॥३॥ अणप्रदक्षणाप्रभुनेजमणेपासेथी  
 ॥२॥ पुष्पादिकनेअंगपूजा ॥१॥ निवेदनेअंगपूजा ॥२॥  
 चैत्यवंदनादिकभावपूजा ॥३॥ चोथोत्रिक ॥४॥ पींडस्थते  
 छदमस्थावस्था॥१॥ पदस्थतेकेवलीअवस्था॥२॥ रुपाति  
 ततेसिद्धावस्था ॥३॥ छदमस्थावस्थानात्रणजेद॥ वाल  
 अवस्था॥१॥ राज्यअवस्था॥२॥ सामान्यचारीत्रअवस्था  
 चवनकल्याणकमातानिकुक्षेत्रवतरे ॥ १ ॥ विजुंजन्मक  
 ल्याणक॥२॥ त्रिजुंदिक्षाकल्याणक ॥३॥ चोथुंकेवलकल्या  
 णक॥४॥ पांचमुनिर्वाणकल्याणक ॥५॥ जेदिवशेमातानी  
 कुक्षे स्वर्गादिकथकिचविनेअवतरया तेजदिवशथकीवि  
 शिष्टपूजनीकथया त्यांहांत्रणज्ञानसहितअवतरे ॥ त्यारे  
 चोसठइंद्रमलीने अठाइमहोछवनंदिसरद्विपेजइने पूजा  
 करे जन्मकल्याणकेतोविशिष्टपूजानी व्यवहारप्रवर्ते चो  
 सठइंद्रमलीनेमेरुपर्वते एकक्रोडअनेसाठलाखकक्षसें ते  
 बारजोजननेविस्तारे एकजोजननुंनालवु अढीसेंवारअ  
 जीशेककरे इत्यादिककारणथकिविशिष्टपूजनिकथया वा  
 ह्यथकितोलीकिकप्रवर्ते अत्यंत निर्लेपचारीत्रनीप्रवृत्ति

होय त्रिभुवनमाकोइतिर्थकरसरीखोनहोय ॥ जेलोगत  
 माणं ॥ इत्यादिकस्तुतिलायकएहजपूरुपहोय एहपूर्णे  
 तमनागुणकोणवर्णविशके तेकारणमाटेससारमांपूजनि  
 कडे ॥ जेनिशेवानक्तिजन्माभिपेकादिके इंद्रादिककरे  
 छे पोतानाआत्मानेउधरवानेवास्तेजाणवुं तेजभावना  
 ए सम्यग्दृष्टिजीवश्रीतिर्थकरजगवंतनी प्रतिमानोश्रजि  
 पेककरतावाल्यावस्थानावे घरेणुपेहेरावता राज्याव  
 स्थानावे घरेणुउतारताचारीत्रावस्थाभावेछत्रचामरादि  
 कअष्टमहाप्रतिहार्यनीअपेक्षाएकैवल्यावस्थाभावेपर्यंका  
 सनकाउत्सर्गमुद्रानिअपेक्षाए सिद्धावस्थानावे एपांचमु  
 त्रिक ॥५॥ श्रीतिर्थकरजगवंतनेदेहेरे जात्राएजायत्यारे  
 उचुनिचुंछिछूजोवूनहीं अथवापूठेजिमणीडाभि दिशे  
 जोवुनहि एकजवितरागउपरदृष्टिथाय त्रिदशानिरखण  
 विरतिरुपछठुत्रिक ॥ ६ ॥ प्रजुनेखमासणदेतात्रणवार  
 जोमिपूजवि ॥ एसातमुत्रिक ॥ ७ ॥ देववांदतांसूत्रनाश्रक्ष  
 रनुआलवन ॥ १ ॥ श्रयांलवन ॥ २ ॥ वितरागनीप्रतिमा  
 लवन ॥ ३ ॥ वर्णादियालवन ॥ ४ ॥ एआठमुत्रिक ॥ ८ ॥  
 चैत्यवदनकरतायोगमुद्रा ॥ ९ ॥ उच्चारहिनेदेववांदतांजि  
 नमुद्रा ॥ १ ॥ जयविरायअर्धकेहेता ॥ निलाहेदेशेहाथकरीने  
 मुक्तासुक्तिमुद्रा ॥ एनवमुत्रिक ॥ ९ ॥ जावंतीचइयाइ ॥ १ ॥  
 जावतिकेविसाहू ॥ २ ॥ जयविराय ॥ ३ ॥ एत्रणनेप्रणीधान

कहिए एकाग्रहचित्ते प्रार्थना करे प्राणिधान एदशमुत्रिका १०।  
 वलीवार अधिकारे देववां दवाते कहें छे ॥ नमं ॥ १ ॥  
 जे अइय ॥ २ ॥ श्रीहं ॥ ३ ॥ लोगं ॥ ४ ॥ सव्व ॥ ५ ॥ पुखर  
 ॥ ६ ॥ तमं ॥ ७ ॥ सिद्धा ॥ ८ ॥ जो देवा ॥ ९ ॥ उज्जिज ॥ १० ॥ चतारि  
 ॥ ११ ॥ वयावचग अधिकार ॥ १२ ॥ नमो थुणं ॥ इति  
 प्रथम अधिकारे जावनि पेषो वाद्यो ॥ १ ॥ जे अइया सिद्धा  
 विजे ॥ २ ॥ श्रीहंत चैयाणं त्रिजे एक जीननी स्थापना ॥ ३ ॥  
 लोग्गस्स उज्जोय गरे चोथो नाम जीन ॥ ४ ॥ सव्व लो ए श्रीहं  
 त चैयाणं ॥ पंचमे त्रिभुवन न चैत्य वां द्या ॥ ५ ॥ पुखवर दीवढे ॥  
 छठे विहेर मान जिन वां द्या ॥ ६ ॥ तमति मीर पडल सातमे  
 सूज्ञान ने वां द्या ॥ ७ ॥ सिद्धाण बुद्धाण आठमे सिद्धनी स्तुति  
 ॥ ८ ॥ जो देवाण विदेवो ॥ नवमे तिर्यह्विप महावीर स्तुति ॥ ९ ॥  
 उज्जित स्तुति दशमे ॥ १० ॥ चतारी अठदश दोय वं दिया ॥  
 श्रीअष्टापदन देव वां द्या अग्यार मे ॥ ११ ॥ वयावचगराणं ॥ स  
 म्यक्कट्टि देवताने स्मरण वार मे अधिकारे ॥ १२ ॥ एवार अधि  
 कारे देव वां द्या ॥ श्रीहंत भगवत नी प्रतिमाना ध्यानुं आलं  
 वन राखवुं ॥ एवार अधिकार ॥ परंपरागत चाल्या आवे  
 छे जे म श्री आचार ग सिद्धांत परंपरागत चाल्या आवे छे ते म  
 न जाणवुं श्री हरि नद्र सुरि श्वर कृत नमो थुणा निटिका ललि  
 त विस्तार नामे ते मध्ये नव अधिकार कह्या छे जे अइया जि  
 न चैत्यानि प्रथा समा एकाम गमा दया सिद्धा ए विजो अधि



कारा॥२॥ उजतसियलसिहरे ॥१०॥ चतारीअठदशदोय  
वंटिया ॥११॥ एअणपरंपरागतजाणवि एटलेएद्वारअ  
धिकारकह्या

वली श्रीतिर्थकरभगवंतनेदेहेरे चोरासीआसा  
तनाटालवि तेग्रथातरथकीजाणवुं हवेमुलगजारिदश  
आसातनाटालवि तेकहेंछे॥तजथा॥तबोल॥१॥पांणा॥२॥  
जोयणा॥३॥वाहणा॥४॥मेदूणा॥५॥श्रुसुयणा॥६॥निद्वुवणं॥७॥  
मुत्रु ॥८॥ चार ॥९॥ जुय ॥१०॥वज्जेजिणनाहजगइए  
॥६१॥ तबोल पानसोपारी देहेरामध्ये खावुनहि  
॥१॥ पाणीनपीवुं ॥२॥ भोजननकरवुं ॥३॥ पगर  
खांपेरीनेदेहेरामध्येनजवू ॥४॥ देहेरामध्येमैथुननसेववु  
॥५॥ देहेरामाहेसूवुनहिं ॥६॥ देहेरामांहेथुंकवू नहि ॥७॥  
देहेरामाहेलघुनितकरवू नहिं ॥८॥ देहेरामाहेबडिनितकर  
वू नहिं ॥९॥ देहेरामांहेजुगटूप्रमुखरमवू नहि ॥१०॥ एदस  
जगनाथनीनित्येआशातनावर्जवी ॥१॥ इत्यादिकपूजानि  
विधिकहिछे तेग्रथातरथकीजाणवि.

वलिइहाशिष्यबोल्हो श्रीतिर्थकरभगवंतनी प्रत  
माकेवेआकारेछे ॥ १ ॥ केनिप्रतमाप्रतिष्ठीतवादवि पृ  
जविघटित ॥ २ ॥ प्रतमानुंपरीमाणकेटलुंहोय ॥ ३ ॥  
प्रतिमानाभरावनार देहेरानाकरनारकोणअधिकारीह  
य एचारप्रश्न ॥ ४ ॥ हवेएचारनोउत्तरंकहेछे प्रतिम

बहुआकारेहोयएकपद्मासन ॥ १ ॥ विजिकाउसगमुद्रा  
 ॥२॥ एवेहुआकारेजिनानेप्रतिमाहोय एजआकारेश्रीती  
 र्थकरजगवंत सैलेसिंकरणेरुनीनेसकलजोगरुंधिकरुनीने  
 मोक्षपधार्या एजस्वरुपनेध्यानमांहेध्यावानेकाजे भव्य  
 जिवजिनप्रतिमाजरावे एसम्यक्दृष्टिनीकणिंछे वलिशि  
 प्येपूछुजेद्विगंबरनेगछेतो जिनप्रतिमालिगसहितनग्न  
 रावेछे॥१॥ स्वेतंवरगछेतोवज्रकछछोटोकदोरोआकाररुप  
 प्रतिमाजरावेछेतकेम तेनोउत्तरजेनग्नरुपप्रतिमाकरेछेतने  
 पूछिए जेतीर्थकरचारीत्रिलेइनेनग्नपणेविचरता तेनेनग्नप  
 णेलोकदेखताजोनग्नपणेदेखेतो श्रीतिर्थकरअतिशयरहि  
 तथाय जोनग्नरहितपणेलोकदेखेतोसातिसयतिर्थकरजा  
 णवा जेवूरुपलोकदेखे तेविजप्रतिमाजराववीघटेछे ज्या  
 रेसाक्षात्तिर्थकरभगवंतहता त्यारेतोअपेरलोकेनग्नदि  
 ठानहोता तेहवेतोघरघरनेविषे नग्नपणेप्रतिमाजराववा  
 मांडवी अनेलोकोनेदेखाढवूरुप तेश्रीतिर्थकरनिस्तुतिरु  
 पज्ञासनुनथी श्रीतिर्थकरनिफजेतिरुपतथाहांशिसरिखु  
 जासेछे वलीकोइककहेवालाग्योजेप्रतिमामांहेसपूर्णअव  
 यवोजोइए तेनेकहिएजेएकलिगनुचिन्हकर्युएटलेसपूर्ण  
 आव्यानहि विजाघणाअवयवओछारेहेछेतेतोतिर्थकरज  
 गवंतनिप्रतिमाकेहेवायछे तेथापनानिखेपोछे॥चतुर्थोमूढ  
 दृष्टित्वां गुणप्रसंसनवरंयत्स्थीरीणंपष्टो॥वाचल्यनक्तिरुप

ता तेमाहेश्रवयवश्चावेनहि जेकोइआत्माअर्थिडाह्यो  
 होयतेविचारीजो जेइहामतनुकामनथिजेप्रतिमावज्जकछो  
 टासहितदेखेछे तेतोमांहाशिलवतनुचिन्हमहाप्रगटादिसे  
 छे तेकारणमाटेजेवज्जकछोटासहितजेप्रतिमा तेतोतिर्थक  
 रनिस्तुतिरुपभासेजोकोइडाह्योहोयतेइहांपणविचारीजो  
 जो एतोप्रवचनपरिक्षानैअनुसारेकह्युतत्वतोकेवलिंगम्य  
 जाणवुएप्रश्नोउत्तर॥१॥विजुप्रश्नजेकेनिप्रतिष्ठितवांदेवी  
 पूजवीघटे तेनोउत्तरजेकोइजतिवेपधारीप्रतिमाचरावे दे  
 हेरुंकरावेप्रतिष्ठाकरावे पोतानुद्रव्यखरचिनेकरावे तेप्र  
 तिमावांदविघटेनहि जेजतिनेविपेद्रव्यस्तवसर्वथानिपे  
 घछे श्रीमहानिशिथसूत्रमांहेविस्तारीनेकह्युंछे तेमा  
 टेनिपेधजयपिशीतिर्थकरनिप्रतिमा पूजनिकछे तोयप  
 एवेपजारीनिकरावी सप्तमस्त्वयमाचारो एमप्रभाव  
 नामय आचारथकिताअष्टौ सम्यक्तसेवनिर्मलाप्रतिमा  
 निपूजादिकनिश्रंज्ञा श्रीतिर्थकरजगवतआपेतोविजाप  
 णसाधुजाणेजेसाधुनेपणद्रव्यस्तवनोजोगछे तेसाधूपणं  
 मुनीनेभ्रष्टथाय तेमाटेनिपेधकरयोछे गृहस्थनेसम्यक्तनु  
 कारणछे विजुस्वहस्तेप्रतिष्ठाकरीहोय तेप्रतिमानीत्रण  
 नोकारगणीनिधापीनेपूजादिकघटे तेकोइ ठेकाणेकरयु  
 सभवेछे जेढिगवरनीभराविप्रतिमा पणश्रीरुपभदेवादि  
 कतिर्थकरनीयापनाछे तेकारणोसाधर्मिपणुंछे एमसर्वथा

पणोनिपेधकरेतो श्रीतिर्थकरजगवंतनी आसातनाथाय  
 एकवेपधारीनिजरावी प्रतिमाजेहोय तेतोसर्वथावांदवि  
 पूजवीनिपेधछे श्रीतिर्थकरजगवंतनी प्रतिमापूजनीक  
 अन्यदर्शनीएगृहिहोय तेप्रतिमापण श्रीउपाशकदशां  
 गादिकनेविपेनिपेधकहिछे बीजासर्वतिर्थकरजगवंतनी  
 प्रतिमापूजनीककहिए वलीकोडकहेजेश्रावकनीप्रतिष्ठा  
 करीकहिछे तेतोत्रणनोकारगणीनेपूजेवांदे तेपणप्रतिष्ठा  
 कहिए कोडककारणेविशेषपणुंकरेछे तोपणइवरकालनी  
 कहेवाय गुरुनेजोगेयावत्कालिकप्रतिष्ठाकरावे ॥ यंदु  
 क्तं ॥ जंकिचिनामतिथं संगेपयालेमाणशेलोए ॥ जाइं  
 जिनविंवाई॥ताइंसव्वाइंवदांमि॥१॥इत्यादिककह्याथकी  
 जाणवुं॥ एविजोप्रश्नउत्तर ॥२॥ त्रिजुप्रश्नतेप्रतिमाके  
 टलेप्रमाणेहोय॥तेनोउत्तर॥ एकआंगुलर्थकिमांडिनेपांच  
 सेंधनुपप्रमाणे॥प्रतिमाभरावे जेवीपोतानशक्तिहोयतेवि  
 जरावे इहांपोतानीकारणशक्तिजाणवो एत्रिजुप्रश्न॥३॥  
 हवेचोथुंप्रश्न॥तेकोणअधिकारीपूजवानेसारसंजालकरवा  
 नेतेगृहस्तअधिकारीद्रव्यस्तवनाअधिकारीजाणवाएंचो  
 थोप्रश्न॥४॥वलीशिष्येप्रश्नकरथुं श्रीतिर्थकरजगवंतनी  
 प्रतिमावांदवीपूजवीयोग्या॥तेवेजआकारेप्रतिमाबोधना  
 देवनीदिशेछे एकजनोइनेफेरेकरीनेसर्वफेरजाणवो नाम  
 नोभेंश्रधानांजीनपूजायां समायकेचपोषधे जोजनिंया

जथाजोग्यमाचारासकलाश्रपिदछे जेतेसोगतादिकनामे  
 साततिथंकरकहेछे बिजोपणलिंगादिकनो भेदघणोछेते  
 माटेपूजवाजोग्यनहीजोसाक्षाततिथंकरजगवंतनीप्रतिमा  
 होय अनेअनदर्शनीयेगृहिहोयतोवादवी पूजवीनिपेधछे  
 एतोसाक्षातअनदर्शनीनीप्रतिमाछे जेदजाणवानेकाजेज  
 नोईकरीछे जेमहिंदूमसंलमाननेश्रोत्रखावानेकाजेडावा  
 जमणाजमिवंधकरावेछे तेमइहापण जेदजाणवानेकाजे  
 जनोइजाणवी तेमाटेजेननेबोधनीप्रतिमामानवीनहि.

श्रीतिथंकरजगवंतने देहेरेजात्रादिकजायत्यांपच  
 अजिगमनसाचवे ॥ यदुक्त ॥ सचितद्रव्यभूषण स  
 चितपणुझाणमणोगतं ॥ एकसाडिउतरासनं ॥ अजली  
 सिरीभिजिणदिठे॥१॥जेसचितवस्तुफूलफलादिकपोताने  
 जोगववानेहोय तेनोत्यागकरवो जेसचितवस्तुनेअभय  
 दानदेवानुंहोयतयाप्रभुनीभाकिनेकाजेलाव्याहोय तेनेत  
 जवुनहिएप्रथमअभीगमन॥१॥अचितवस्तुआजर्णादिक  
 सारवस्त्रादिकनेतजवुनहि॥एबिजोअभिगमन॥२॥मण  
 गतंके०॥मननुंएकाग्रतापणुकरे॥एत्रिजोअभिगमन॥३॥  
 एगसाडिके०॥एकपटनिपछेडीनुउत्तरासनकरे एचोपोअ  
 भिगमन॥४॥अजलिके०॥बेहुहाथजोडिनेमाथेचडावे  
 प्रभुजनेनराजूनेदिठथेके एपांचमीअभीगमन॥५॥एपांच

गमनकहेछे एकखंडगतंतरवार॥१॥ छत्र ॥२॥ वाहनके० ॥  
 पगडिपावडी ॥३॥ सनडके० ॥ माथानोमुगट ॥४॥ चां  
 मर॥५॥ एपंचचिन्हरांजानांमुकिनेप्रज्जुपासेआवे एअभि  
 गमन॥६॥ साधुतथाश्रावकनेदिनप्रतेउत्कृष्टसातवारचै  
 त्यवंदनकरवूंसम्यक्तनिर्मलनेकाजे तथापडिकमणे ॥१॥  
 चैइय ॥२॥ भोयण ॥३॥ चरीम ॥४॥ पडिकमण॥५॥ सु  
 यण ॥६॥ पडिबोहेचैइयवंदण साहूणसत्तवाराहोइअहो  
 रत्त ॥१॥ प्रजातकालेविसाललोचनरुपचैत्यवंदनकरवूं  
 एप्रथम ॥१॥ चैइयके० ॥ श्रीतिर्थकरभगवंतनेदेहरेजइ  
 नेनित्येचैत्यवंदनकरवूं तेजोगवाईनहोयतोइशानखुणेश्री  
 श्रीमंधरस्वामिनेसनमुखेचैत्यवंदनकरवूं ॥२॥ जोयणके०  
 पचखाणपारतिवेलाएचैत्यवंदनकरीने सझायकरीनेपच  
 खाणपालवूं पछेआहारलेवो ॥३॥ चरीमके० ॥ आहा  
 रलेइनेपछेचैत्यवंदनकरीनेपाणीपीवूं ॥४॥ पडिकमणके०  
 संध्यायेपडिकमणुंकर्ती तथानमोस्तुवर्द्धमानाय एवेहुनुंए  
 कपडिकमणानुंचैत्यवंदनगणवूं ॥५॥ सुयणके० ॥ पोरसी  
 रात्रीनिवेलाए चउकसायकेहेवो एछठुंचैत्यवंदन ॥६॥ प  
 डिबोहेके० ॥ पाछलीरात्रीएजागीनेकुसुमिणनोकाउत्स  
 र्गकरीनेचैत्यवंदनजगचितामणिनुंकरवूं ॥७॥ एहचैत्ववं  
 दन साहूणके० ॥ जतिनेसाधुनेअहोरात्रीमांहेकरवूं जेस  
 म्यक्दृष्टिजिवश्रावकजघन्यत्रणकालेपूजाकरेत्रणकालेचै

त्यवदनकरे एकवारपडिकमणुकरेतेपंचाचारचैत्यवदनक  
 रे जेबेटकपडिकमणुकरे तेनेसातवारचैत्यवदनथास्रएगृ  
 हस्थितिनिविधि जेदेहरेचैत्यवदनकरवू तेपूरुपहोय तेप्रभु  
 जिनेजमणिदिसेजर्मणिबाजुयेरहिनेचैत्यवदनकरे - स्त्री  
 होयतेढाविबाजुएरहिनेचैत्यवदनकरे श्रीतिर्यंकरजगवंत  
 नोमंहामोटोप्रसादहोयतोपोतानासाठहाथवेगलारहिने  
 चैत्यवदनकरेजेसाठहाथथकिश्रोछोनवहाथथकिअधिकते  
 सर्वमध्यम अवग्रहमाहिजाणवू नानुदेहरुतथाघरनुदेह  
 रुहोय त्याउतुकृष्णएकहाथ॥१॥ वेगलाजघन्यश्रद्धहा  
 थवेगलारहिनेचैत्यवदनकरेजेखजमीवसदिठा विधिवत्प  
 रमेश्वरे प्राज्ञोपधोपवासादेरासरणोपमात्युरएमअनेक  
 विधिसहितश्रीदेवाधिदेवनिपूजाश्रावकनेकहिछे तजथा  
 वरपुष्प॥१॥ गंध॥२॥ अरकय॥३॥ पडवो॥४॥  
 फूल॥५॥ धुव॥६॥ निरपतेहै॥७॥ नेवजबीहाणेहिय  
 जिणपुयाअठहाभणिया॥१॥ वरकउत्तमजातिनाफूल  
 जाइजुइप्रमुखनाफूल॥१॥ गंधके॥ वरासकपूरप्रमुख॥२॥  
 अश्वयके॥ अक्षतचोखा॥३॥ पडवोके॥ दिवो॥४॥ फलक  
 के॥ नालिएरप्रमुख॥५॥ अगरप्रमुखनोधूपा॥६॥ निरप  
 तिहके॥ जलनाजरचाकलसेकरीनेपूजाकरे॥७॥ नेव  
 जविहाणेहियके॥ नैवेद्यसुखडीप्रमुखेपूजाकरे॥८॥ जि  
 णपूजाअठहिजणीया एअष्टप्रकारीपूजा जीनके॥ श्री

वितरागनीपूजाआठप्रकारे ज्ञानावर्णादिककर्मनेक्षयकर  
 वानेकाजेआवकएविजावनाकरे एमसत्तरजेदेसंजमआ  
 राधवानेऽर्थे सत्तरजेदिपूजाकरे॥ तंजथा॥ नवणं॥१॥ वि  
 लेपणं॥२॥ चखुजुअलंचा॥३॥ पूफारोहणं॥४॥ मालारोह  
 णं॥५॥ वण्यारोहणं॥६॥ चूणारोहणं॥७॥ जिणपूगवाणं  
 पूरस्ताधजप्रगटनमित्याध्याहार्य॥८॥ आहारणारोहणं॥  
 ९॥ पूप्फगेह॥१०॥ पूप्फपगरो॥११॥ आर्तिमंगलपडवो॥  
 दिवो॥१२॥ धुवरकेवानेवज्फलविहाणं॥ ढोवण्य॥१४॥  
 गीयं॥१५॥ नटां॥१६॥ वजा॥१७॥ पुयाभयाइमेसेना॥२३॥ प्रथमपू  
 जानवणकजलेकरीनेअनीपेककरवो॥१॥ विलेवणअगमि  
 के॥ अंगनेविपेकेसरचंदनेपूजाकरे एविजोनेद॥२॥ चखू  
 जुअलंके॥ त्रिजीपूजाचक्षुनितथाअंगलूणा॥३॥ त्रिजोभेद॥३॥  
 चोथोवासपूजा॥४॥ पूफारोहणंके॥ वर्णकहणंके॥ छूटां  
 फुलनिआरोहणंके॥ चढाववंपूजवू॥५॥ मालारोहणंके॥  
 फुलनीमालानीपूजा॥६॥ वणियारोहणंके॥ वर्णके॥  
 पंचवर्णआंगीनीपूजा॥७॥ चूणारोहणंके॥ वरासादिकनि  
 पूजा॥८॥ जिणपूगवाणं॥ श्रीतीर्थकरजगवंतनेआगलद्व  
 जनिपूजानवमि॥९॥ आहारणीरोहणंके॥ आजर्णनीपू  
 जामूगटप्रमुखनुचढाववू॥३०॥ पूप्फगेहेके॥ फुलनुंघरा॥  
 ११॥ पूप्फपगरोहके॥ फुलनोप्रकारसमूहजेमश्रीतीर्थक  
 रनासमोवसरणनेविपे॥ देवतापंचवर्णफुलनोवरसातवर



सावेतेमजइहांपंचवर्णफुलनावर्पातनिपूजा॥१२॥आर्त्तिम  
 गलपइवोके०॥आर्त्तिउतारविमगलप्रदिपमंगलदिवो॥  
 तथामगलके०॥अष्टमगलीकनिरवस्तिके०॥१॥दर्पण  
 ॥२॥कुंभा॥३॥चद्रासन॥४॥नंदावर्त्त॥५॥श्रीवछ॥६॥व  
 र्द्धमान॥७॥मठयूग्म॥८॥एतेरमिपूजा॥९२॥धुवरकेवा  
 नेवजफलविहाणढोयएव्यके०॥अगरप्रमुखनोधूपनैवेद्यं  
 सुखडीप्रमुखनुचढाववांफलनालियेरप्रमुखनुचढाववूं।ए  
 चौदमीपूजा॥१४॥गितके०॥स्तवना॥१५॥नटके०॥नाट  
 कपूजा॥१६॥वजके०॥वाजित्रपूजा॥१७॥पूयाजेयाइजे  
 सत्तर॥एसत्तरभेदिपूजाकरवी तसत्तरजेदसजमपालवा  
 निनावनाकरवी इत्यादिकअनेकप्रकारेसम्यग्दृष्टिश्चाव  
 कनुसम्यक्तनिर्मलकरेएआवकनेभेखजसरखीश्रीवितरा  
 गनिपूजाकरवी एसम्यक्तनुंलक्षणव्यवहारनयनीअपेक्षा  
 येजाणवू साधुनेश्रीतीर्थकरदेवनिआज्ञाएनित्येदर्शनकर  
 वूचैत्यवंदनकरवू श्रद्धानाप्रथमपूजाजेखज मिवसदिठा  
 एंखेएबिरीतेदेवतत्वनिपरीक्षाकरीनेदेवतत्वसदहे॥इति  
 प्रथमतत्त्वा॥१॥इतिश्रीसम्यक्तद्वारग्रंथोमुनिश्रीहूकमचद  
 जीविरचितेचतुर्थोऽध्यायपरीपूर्णम्॥४॥  
 हवेगुरुतत्वओलखावेछे गुरुके०॥साधुतेसाधुछठे  
 तथासातमेगुणठाणेहोय निश्चेतथाव्यवहारथकिहोय ते  
 नेसाधुकरिसदहवू एछठेतथासातमेगुणठाणेहोय तेसाधु

नेनुस्वरुपदेखाडेछे हवेछठुंगुणठाणुप्रमतनामा तथासात  
 गुणठाणु अप्रमतनामे एवेनुस्वरुपजेगुं देखाडेछे जे  
 प्रत्याखाननिचोकडीनीउदयटल्यो सर्वविरतिप्रगटि स  
 मसाधनमाटेपुदगलिकलेवे अवलंबिपणेग्रहे पणपुद  
 लनेजोगीपणेपुदगलीकग्रहेनहीं स्वरुपरमणिआत्मध  
 थिरतारुप - सर्वविज्ञावपरं अग्राहकतारुप एवोचारी  
 धर्मप्रगट्योछे तेसाधुउछरंगअपवादमार्गे पंचमहात्र  
 पाले त्यांद्रव्यजायपंचमहात्रतसहित पांचसुमति तिन  
 सि दशयतिधर्मेनेपात्रथकानिरासीसएकआत्मद्रव्यना  
 सिया एकआत्मानिर्मलकरवाना उद्यमिथकाविचरे ते  
 यमहात्रतपाले त्यापेहेलुमहात्रत सवाओपाणाएवा  
 ओविरमण व्यवहारेछकायनाजिवनाद्रव्यप्राणा॥१०॥ह  
 र्हीहणावेनहीहणतांअनुमोदेनहीमनवचनकायाएकरी  
 निग्रंथअनोनिश्चयथीज्ञानदर्शनचारीत्रसुखप्रमुखजाव  
 णपोतानापरना कर्मआवर्णपणेहणेनहिहणावेनहिहण  
 मुखअनुमोदेनहि तथाविजेमहात्रतेसवाओमुसावाया  
 विरमणा॥द्रव्यतेक्रोधे॥माने॥ भये॥लोभेसूक्ष्मवादर॥  
 किकतथालोकोत्तर जुठुपोतेबोलेनहि बोलावेनहि बो  
 अनुमोदेनहि मनवचनकायाएकरीनेजावथिसर्वद्रव्य  
 यि नयनिक्षेपायथार्थजाणपणो सत्यजापणरुपज्ञान  
 शक्तिसाधेज्ञानसत्यपणेपालेतथावितरांगनाआगमेप्र

## श्रीसम्यक्द्वार

माणे ऽर्थजावेछे तेनिसझायकरेततथापोताना ज्ञानदर्श  
नचारीत्रनिर्मलथाय तेभापावोले हवेत्रिजामहाव्रतसबा  
ओअदत्तादाणाओविरमणं जेद्रव्यतत्रणतुठमात्रपणअण  
दिधोलेवेनहि लेवरावेनहिं लेताप्रतेअनुमोदेनहिं जेले  
वेतेसर्वनेकहीकरीनेलेवे एटलेमनवचनकाएकरीनेलोकि  
कचोरीजेसमारनिवार्जिवस्तचोरीलेवेनहिं अनेलोकोत्तर  
चोरीजेतिर्थकरआणामे जेमलेवानुकह्युतेलेवे तेचोरीकरी  
नेभावधिआत्मानिग्राहकताशक्ति तेंस्वरुपगृहणकार्यनो  
कर्ताछे तेप्रभावसाहकताकरीरह्योछेएनिवारीस्वरुपग्राह  
कतापणेप्रणामावे तेअदत्तादानविरमणव्रततथयू तेअदत्ता  
दाननाच्यारजेदछे तिर्थकरअदत्तजेतिर्थकरनिआणामांन  
लेवोकह्यो तेसर्वप्रभावतेलेवाछे विजोगुरुअदत्तजेगुरुप  
रपराविनांसुत्रनाऽर्थकहेवा त्रिजोस्वामिअदत्त जेवस्तुनो  
जेधणिहोवे तेनीअणदिधिजेवस्तुलेवि चोथुअदत्ततेको  
ईजिवएमकहेतोनथी जेमाहाराप्राणहणो अनेपोतानि  
इद्रिनास्वादमाटेपरजिवनाप्राणहणेतेजिवअदत्त तथाप्र  
शस्तकामकरताकोइजिवनाप्राणघातथाय तेध्रीभगवते  
हिंशामागणानथिविनयतयावियावचमागण्युंछेएद्रव्यजा  
वअदत्तादानत्रिविधिपणेतजे॥२॥चोथोमहाव्रतसबाओमि  
हुणाओविरमणजेद्रव्यथि पांचईद्रियना॥२॥त्रेविसविष  
यसेवेनहिसेवरावेनहिं .मनवचनकायाएकरीने विषयनि

वांछानकरे नकरावेकताने अनुमोदेनहि नेजावथिजे आ  
 त्मद्रव्य आत्मगुणनो जोगीछे तेपरजावनो जोगग्रहे तेजा  
 वमैथुनते सर्वपरजावजीगिपणे जोगवेनहिते आत्मनिकक  
 मकरवामाटेपरभावसाधनपणे गृहेपण अजोगी अंग्राहकप  
 णे अरमणिकमाने जे आत्मानि भुलछे एम आत्मानंदतोथ  
 कोजे माहरो आत्मा चिदानंदनो जोगीतेपरजाव अनंतजी  
 वे अनंतिवारते लेइ भोगव्यो तेमुने गृहवो भोगववो घटेनहि  
 ए अनंतजीवे अनंतवारभोगविने छांडयो ए एठुचलुं जलते  
 हने हूं नजोगवं एम सर्वपरजावजोगिपणेतजी स्वभावभो  
 कापणेरहेवु तेद्रव्यमैथुन ते कर्णिरुपतथारुपिपंध मि  
 ल्याजीवने आणंदउपजे हवेक्षेत्रथीमैथुनतेत्रणलोकनेवि  
 षे इंद्रिनास्वादनिइछा नेकालथीमैथुन दिवसतथारात्री  
 जावथी मैथुनरागथीतथाद्वेपथी सरवथिशेववोनहिं ते  
 नीवाडनवेपालविपेहेलीवाडे जेस्थानकेस्त्रिपशुपंडकरहेते  
 स्थानके ब्रह्मचार्येसुवुंनहिं बिजीवाडेस्त्रीसाथेहासितथा  
 कामकृथाकरवीनहिं ॥२॥ त्रिजीवाडे जेपीठपाटलेस्त्रीवेठी  
 होय तेपाटलेवेघडीलगीब्रह्मचारीपूरुपनेवेसवुंनहिंस्त्रिने  
 तिनप्रहरलगीवेसवुंनहिं ॥३॥ चोथीवाडेस्त्रिनारुपनीजरंजो  
 डिनेजोइरहेवुंनहिं ॥४॥ पांचमीवाडेज्यांस्त्रीजरथारकांम  
 भोगभोगवताहोयत्यांनेतनेआतरेब्रह्मचार्यनेरातरहेवुंनहिं  
 तेशब्दकानेपडवादेवानहिं ॥५॥ छठीवाडेगृहस्थपणेजेजो

गन्धोगव्यातेसभारवानहिं॥६॥ सातमिवाडेसारोआहार  
 जेथकीकामदोपेतेआहारकरवोनहिं॥७॥ आठमीवाडेअ  
 तिमात्रायेआहारकरवोनहिं॥८॥ नवमीवाडेशरीरशणगार  
 लुगडानोतथाघरेणानोकरवोनहिं 'नानउगटणानकरवा  
 एकलीस्त्रीसाथेमार्गमाचालवूनहिं' तथानानूंचालकवा  
 लिकाथीएकसज्याएसुवूनहिं सातवर्षपछी॥१॥ हवेपांच  
 मुमहाव्रतसव्वाओपरीगहाओविरमणाजेद्रव्यथीपरीग्रह  
 सूक्ष्मवाढरराखेनहिं॥ राखेनहिं॥ राखेतेनेअनुमोदेनहिं  
 जेसेजमपालवामाटे सुखेसझायथायतेमाटेउपगरणचउ  
 द॥१४॥ राखेकारणेअधिकोजोइए तोगृहस्थनायकावा  
 वरे एथीवरकल्पिनोव्यवहारछे नेजिनकल्पकोईउपग  
 णनराखे अपवादेदशउपगणराखे बारकस्वायउदयत  
 ल्या तेनेछठेगुणठाणेसाधूकहिए पणप्रमादसेवे॥ निद्र  
 ॥१॥ विकथा॥२॥ आहार॥३॥ अल्पविषय॥१॥ अनादिव  
 ॥२॥ एअल्पसेवे॥ अनाभोगजाणे॥ भोगीपणेसेवेनहिं॥  
 छठागुणठाणानीस्थिति॥६॥ जघन्यएकसमय उत्कृष्ट  
 अंतरमूहूर्त एगुणठाणेतिनचारीत्रछे समायक छेदोपस्  
 पनीया॥ पराहारविशुद्धएतीनचारीत्रछे तेनोस्वरूप परम  
 त्यागेस्वरूप एकत्वतेचारीत्रकहिए तेमध्येजेतजवायोग  
 जावतजेतेद्वेपविनाअनेरत्नत्रयीजेआत्माधर्म तेगृहेस्व  
 र्ममाटे पणलोकिकादिकइष्टतारागविना एवोसमप

एतस्मात्समायककहिए तथाजेसमायकमध्येसंजना तिब्रो  
 दयेजेआकरेअतिचारे अथवा१२ कखायनेउदयेसंजमप  
 रीणामफरसे तेपूर्वपर्यायेछेदिने अभिनवपर्यायनिर्मल  
 पर्यायनोअंगीकारकरवो तेछेदोपस्थापनिकहिए तेभरत  
 ॥ तथा ॥ ५॥ एवरत ॥ ५॥ मध्ये प्रथम चर्मतिर्थकरना  
 साधुजीनेहोय ॥ अथवातिर्थकरअथवा गणधरंजी  
 नाशिष्य नवपूर्वधिउपरांत श्रुतवंत ॥ मध्यमवयना ॥  
 प्रथमसंघयणी अठारमासंनोउग्रतपतपता अप्रमादिनि  
 दारहितनवजणागच्छथकीवाहेरनीकलीनेतपकरेतेपरीहा  
 रविगूढचारीत्रकहिये दसमेगुणठाणे शुद्ध्यानीसूक्ष्म  
 लोचनोउदयछे तेसूक्ष्मसंपरायचारीत्रकहिए तथासर्वथा  
 कखायनोउदयनथितेयथारूयातचारीत्रकहियेतेमधे ११ मे  
 गुणठाणे उपसंतयथारूयातछे ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ मेगुणठा  
 णेक्षायकयथारूयातछे हवेसांतमुअप्रमतगुणठाणु लि  
 खीएछेछठेगुणठाणेजेनावसाधुजीनाकह्यातेसर्वेहोय पण  
 पांचप्रमादनहोय तेमाटेअप्रमादिकएछठेगुणठाणेवर्ततो  
 साधुजिनसासननेकामेलब्धीफोरवेपणसातमेगुणठाणेव  
 र्ततोसाधुलब्धीनफोरवे एहनिस्थितिजघन्यएकसमे उत  
 कष्टेअंतरमूहूर्तनिछे छठेतथासातमेगुणठाणेमलिनेदेशे  
 उणापूर्वकोडिरहे श्रीजगवतिसूत्रे एवेगुणठाणानिदेशेउ  
 णिपूर्वकोडिस्थितिजुदि२कहिछेतेव्यवहारनयछे समयंत

यावेसमयवचेगुणठाणूपलटे तेगवेरूयोनयितेमाटेअंतर  
 मूहूर्तनिस्थितिकहि छठेसातमेगुणठाणे समायकतथाछे  
 दोपस्थापन तथापरीहंरविशुद्धचारीत्रछेतथासातमेगुण  
 ठाणेसाधुजोलब्धीफोरवेनहि अनेछठागुणठाणानासाधु  
 जिनसामननेकाजेजलब्धीफोरवेतेनुसाधुपणुजायनहि अने  
 उसस्थादिकपाचप्रकारसेवेतोसाधुपणुजाए केमतोकेश्री  
 आचारगादिकमध्येकह्युछे जेहेसाधुतुं पासस्थादिकनोसं  
 गकरीशनहि एनिसाथेश्रेष्ठाचारपणकरवोनहि तथासंस  
 र्गकरवोनहि तथातेनिसाथेगोचरीतथाविहारपणकरवोन  
 हि एटलेसर्वथाप्रकारे एनिसंगतकरवीनहि तथासंबोधशि  
 त्रिमवेआवशकनिर्युक्तीमधे उक्तच॥उसथा ॥१॥ पासथा  
 ॥२॥कुसेलिया॥३॥कुलिगीया॥४॥सेसदा॥५॥ जिनमार्गे  
 अवंदणिजा॥१॥ एटलेएगाथामधेजिनसासननेविपेवादवा  
 पूजवायोग्यनहि तथाश्रीउपदेशमालानेविपेकह्युछेजेएह  
 नेवादितोसमकितनोनाशथाय मिथ्यात्वलागे एटलेउस  
 थादिकपांचप्रकारनाहोयतेहनेसाधुकरीनेसदहवूजहित  
 थावादवापूजवानहित्यारेशिष्येप्रश्नकरयुं जेस्वामिश्रम  
 नेउमस्थादिकपाचजेदजेकह्यातेअमेजाणतानथि तेओल  
 खावोतेओलखावेछेहवेप्रथमउसस्थानोजेदकहेछेजेश्रीति  
 र्थकरदेवे नवकल्पिवीहारकह्योछे तेआठमासनाआठवि  
 हार चतुर्मासानोएकविहार एटलेत्रीसरात्रउपर एकत्रि

समिरात्ररहेतेनेउसथ्योकहिए तेवारेवलशिष्यबोल्योहे  
 स्वामितमेतोत्रिसउपर एकत्रिसमिरातरहेतेनेउसत्छो  
 कहिबोलाबोछो त्यासैकदापिकोइंग्लानतथा थीवरहोय  
 तेवारे तेहथकि विहारकेमकरीनेथाय तेनोउत्तरदेछे हे  
 शिष्यश्रीअरीहंतप्रमात्मासर्वज्ञहतातेनिपरुपणामां को  
 इवातनोसदेहरहेनहिं सर्वनोमार्गदेखाड्योछे एटलेजे  
 ग्लानतथाथिवरहोयनेविहारकरवानिसक्तिहोयनहीजद  
 पि एकनगरमधेनवउपासराहोय तेमासे २ उपासरेउ  
 पासरेफरे॥एटलेपेहेलोउपासरेउतर्याहोयत्याहांमास॥१॥  
 मासकल्पपरहेउपरांतरहेनहि विजेमासकल्पेविजेउपाश्रे  
 रहे एमअनुक्रमे आठमासकल्प आठमाउपाश्रेकरे  
 अनेनवमोकल्पचारमासनोनवमेउपाश्रेकरे ॥ एमनवक  
 ल्पीविहारसदायेकरे पणकल्पलोपेनहिं तथाएटलीश  
 क्रिजोनहोयजेगाममध्येफरवुंतेपणथायनहिंतोएकउपाश्रे  
 नानवजागकल्पे एकेकेकल्पेएकेकोजागजोगवे एमनव  
 भागवकल्पेकरीनेजोगवे जेमअरणकाआचारजनोअ  
 धिकार संथारापयन्नामध्येकह्योछे तेमइहांजाणवूं एटले  
 कल्पलोपेनहि जेकल्पलोपेतेनेउसथ्योकहिए ॥एषेहेलो  
 भेद॥१॥हवेबीजोपासस्थानोनेददेखाडेछे॥पासथ्योके०॥  
 जेआचारेढीलो॥जेपांचसुमतित्रणगुपति इत्यादिकअने  
 कप्रकारनोआचारछेतेथकीढीलोचालेतेनेपासथ्योकहिए



॥केम॥श्रीज्ञातासूत्रमध्ये विजास्कंधनेविपे श्रीपार्श्वना  
 थजीनीचेलीयोविपे हाथप्रादकुक्षादिकपखाल्या त्थकी  
 पासथिकहेवाणीअनेचारीत्रविराधीनेभुवनपतिआदीग  
 तिनेविपेगइ कालिदेविप्रमुखइद्राणीयोथइ तथाश्रीमहा  
 निशियमध्येनागिलनेसोमिलनाभावमित्रछे एकदिनबे  
 मित्रेविचारकर्यजेससारमहाअनित्यछे माटेआपणेचा  
 रीत्रअगीकारकरीनेआपणाआत्मानुकल्याणकरीए एवं  
 विचारीनेवेजणाघरथकिनिकल्या साधूनिघणीखपकरेप  
 णसास्रप्रमाणेसाधूकोइहइएवेसेनाहि एमकरतांएकसा  
 धूनोसंघाडोमल्योतेसाधूकेवाछे ॥ निराखंबी॥निरपरीगृ  
 हि॥विपकखायेकरीनेरहित महासुमतानासमुद्र इत्या  
 दिकगूणेकरीनेसहित ॥ तेनीसगतेकेटलाएकदिनरहिने  
 तेनोआचारविचारसर्वजोयोतेवारेसोमिलरहिनेनागिल  
 प्रत्येकहेछे जेहेभाईआसाधूठीरुछे आपणेएनीपासेचा  
 रीत्रलइये तेवारेनागिलबोल्हो जेएसाधुवादवापूजवाज  
 ग्यतथी तोएनिपासेचारीत्रकेमलेइये ॥ तेवारेसोमलबो  
 ल्यो जेएवासाधूनीअंथछे एनेविपेएवडोवधोदोषणकेम  
 काढोछोतेवारेनागिलबोल्हो॥जेएनापचेमहाव्रतभागेल  
 छेजेयेहेलुव्रतहरीकायनासगटाधिभाग्युतेनुंकहचुंत्योरन  
 पाडी॥२॥ त्रिजुडकयढायकिराखनीचपटीलिधी॥३॥ चं  
 थूगृहस्त्रिनाघरनोखालमध्येजोयु॥४॥ पांचमेवेमुहपतिर

खेछे॥५॥ एबिरीतेवृत्तपांचनाग्यांछे तेवारेसोमलेमां-युंन  
 हि चारीत्रएसाधूपासेलीधूं अनेनागीलनेसाधूनीजोम.  
 वाइमलीनहि अनेकालपोतानों नजिकआव्योजाणीने  
 एकांतेजइनेसंथारोकस्थोतेकालतेसमयनेविपे जगवत  
 श्रीमहाविरस्वामि <sup>नमः श्रीगुरुभ्यो नमः</sup> गामाणुंगामविहारकरतांत्यांनजीकव  
 नछेतेनेविषेसमासस्था तेवारेजगवंतसाधूनेकहेछे हेसाधु  
 इहांवननेविपेनागिलनामाश्रावकेसंथारोकस्थोछे एनेचा  
 रीत्रलेवुंहंतुपणसाधूनीजोगवाइमलीनहि नेकालनजीक  
 आव्योजाणीनेसंथारोकस्थोछे माटेतमेजइनेनिजमणाक  
 रावोपछिसाधूयेजइनेनिजमणाकरावितेश्रावककालकरीने  
 देवलोकेंगयोतोहवेडाह्याहोयतोविचारीजोजो जेएवांसा  
 धुनिग्रथहता तेनेसूक्ष्मदोपणमाटेनिपेध्याअनेश्रावकनो  
 संथारोजगवंतेगणतिमांआण्योमाटेएवुंविचारीनेपासस्था  
 नोंसंगकरवोनहि एबिजोनेद. ॥२॥ हवेत्रिजोकुसेलियो  
 कुसेलियोके०॥ सिलनामजेआचारकुके०॥ माठोहि  
 णाचारी तेनेकुसिलकहिए एटलेभगवंतेपरुप्यो जेआ  
 चार तेथकीवीप्रीततेनेहिणाचारीकहिएएटलेजगवानेजे  
 साधुनोआचारपरुप्योछे जेसाधुगृहस्थिनि संगतिकरेन  
 हिं तथामंत्रजंत्रजोतिष्यवैद्यकादिककरेनहिं करतेनेपा  
 पश्रमणकरीनेबोलाव्याछे गृहस्थियादिकनि संगतव  
 जितोविजुतेशुंकहेवूं एटलेजगवंतेतोनापाडिछेनेपोतेएवां

कामकरेजायछे तेनेकुसेलियोकहिए एत्रिजोनेद ॥३॥  
 हवेचोयोनेदकुलीर्गाफनोकहेछे एटलेकुलिगीयातेके०॥  
 भगवंतनोपरुप्योजेलिंगतेथकिविप्रीत तेनेकुलिगीयाक  
 हिए एटलेजगवतेजेपरुप्युं जेनरगेजानधोयेजा एवोपा  
 ठछे अनेजेमिणगलिप्रमुखेजेकपडारंगेछे तथामुखेमुहप  
 तिबांधेछे तेमहाविटपदिशेछे अनेजानवरकरतापणअव  
 लीरीतदीसेछे जेघोडातिर्जचपचेद्रिछे तेनेखातांतोबरोच  
 डेछेनेपछिउतरेछे अनेजेदुर्बूदिछेतेनेखातांउतरेछे पछिच  
 देछे एविश्रवालिचालछे तेनेकुलिगीयाकहिएतेवारेवादि  
 बोल्योजेएतोतमेद्वेपेकरीनेबोलोछोअनेएतोमुखेमुहपति  
 बांधेछे तेवायुकायानहणाय तेवास्तेवाधिराखेछे तेनोउ  
 त्तरजेतमेद्वेपयकिकोछोपणसाधुनेरागद्वेपहोयनहींजद्य  
 आजसरागसंजमछे वितरागसंजमछेनहि अनेसरागर  
 जमछे तेनेविषेप्रशस्थरागद्वेपथाय तेआवकनेतोअप्र  
 स्थरागद्वेप्रनिआलवणकिविछे पणप्रशस्थनिआलव  
 किधीनयी एवंआवकोनाप्रतिक्रमणमधेदिसेछे अनेस  
 तेअप्रमादिगुणस्थानकनेविषेतोरागद्वेपकरेनहीं अने  
 मादिमुणठाणप्रशस्थरागद्वेपकरेतेइरीयावइ पडिकमे  
 वारणयवानूछे तेअजगवतीमध्येजोजोनेइहांतोजथा  
 रुपणाकरवि तेमांकाइरागद्वेपनुकारणनथिजेमश्रीज्ञ  
 जिमध्यनागिलात्राहणीनि अपहेरणा उदघोपणाव

बितेमां इरीयावईनिआलवणआविनहितो इहांतोएक  
साधुनेकढवुतुंबडुंबोहराविनेमारयोहतो तेनोपणएटलो  
फजेतोकरयो तोआतोदूर्बद्धिपणें संख्याताजिवने धर्मथ  
किभ्रष्टकरीनेमिथ्यात्वनेविपेपमाडेछेंतेअनंताजवभ्रमएक  
रशे तेमाटेजेवुंस्वरुपहोयएवुंवर्णविणतो विजालोककोड  
कुमत्तमांपडेनहिं नेपड्याहोयतेपणसुलजबोधिहोयं ते  
सतसांभलीने पाछावले माटेजथारथपरुपणाकर्ती को  
इदोपणछेनहि जेदूर्लज बोधिहसे तेनेतोरगद्वेपजभा  
सशे हवेजेउघाडा मुखेबोलतां वायुकायाजिव हणायते  
कहेछे. शामाटेजेवायु कायाजीवने आठफरसछे अनेभा  
पावर्गणाना फरसच्यारछे माटेकांइच्यार फरसीयाथी  
आठफरसीयो हणायनहिं किलामणाउपजेपण हणाय  
नहिं त्यारेवादिबोल्यो जेजगवतीमांकह्युंछेजेउघाडेमोढे  
बोलेतेनेसावद्यभापाकहिएतेनोउत्तरजेअमेकयांकहीयेछे  
जेउघाडेमोढेबोलवुंपणहणावानुंकोछोतेखोटुंछेतथाजेमुहप  
तिवांधिराखेछेतेकियासूत्रमांकहयुंछेश्रीआचारंगजीमधे  
तोकह्युंछेजेहेसाधुवगासुआवेतथाछिकआवेतोमोढाआडो  
हाथदेजेतेलेखेपणमुहपतिवांधविसंभवतिनथीतथाश्रीविपा  
कसूत्रमधेश्रीपूज्यगौतमस्वामिमहाराजमृगालोढोनेजो  
वानेगयात्यांमृगावतीराणीएकह्युंजेमुखेचोपडोवांधोतेवा  
रेजोमुखेमुहपतिवांधिहोततोशावास्तेकहेत त्यारेवादिबो

ल्यो दूर्गधआवेतेवास्तेनाकेदेवावास्तेकहभुं त्यारेतेनोड  
 तरदेछे जेविपाकजिमधेतोनाकबोलतुंनथीमुखजत्रोलेछे  
 तमेखोटिजुक्तिशावास्तेकरोछो कोइकहेशेजेफलाणानुंमु  
 खतोगोलछेमोढुतेहोठनेकहिए तेकपालमुधीकहिए तोहो  
 ठनोआकारजोइएतोलाबोहोय पणगोलहोयनहि ज्यारे  
 कपालसुधीले त्यारेमोढुगोलवने॥ तेमाटेमुखेचोपडानुं  
 कहु त्यारेनाकजेगुआव्यु॥ तथापरंपरापणएमजडीसे  
 छेजेमूहपतिमुखआडिदेतेवारेनाकउपरचढावेएवंआजदि  
 नसुधिदिसेछेतो खोटीकल्पना शावास्तेकरोछो॥ वली  
 जे साधुनुलिगछे तेजुदुछे॥ तेदेखाडिएछे॥ एटलेजेआ  
 घोबत्रोसआगुलनोराखे॥ तेमधेचोवीसआगलनीडांडी॥  
 दशआगलनीदशीअनेअष्टमंगलआलेख्यो॥ एवोबना  
 तनोपाटो तेथकिगुथी दशीतेप्रमाणेवस्त्रनोखंडते श्रीनि  
 शिथनिभाष्यमद्वेकहुछे तेउपरकावलियू॥ तेउपरदोरो॥  
 दोरानात्रणआटावाधवा एवोबत्रिसआगुलनोआघोअने  
 मुखप्रमाणेमूहपतिपोतानी एकैवतछआगुलप्रमाणेचोखं  
 णेसरखी एविमूहपतितथाडिचणप्रमाणेचोलपटो तेउप  
 रसूतरनोकदोरो॥ तेउपरकपडो जेवोदातारेदीधोहोयते  
 वो जेतेनेरंगवोनहिं तथाथोवोपणनहिंतेनाउपरढाभेखने  
 कांबलि नेडाजेहाथेढडो तथाढाबाहाथेझोलिराखवि  
 त्यादिकमानुपेतजोलिंग तेसाधुनुकहिएतेथकिविप्रीततेव

लिगीया कहिए ते कुलिंगीया जाणीने एथ किखेटे रेहवूंकदा  
 पिकुलींगीयाने साधुजाणी आहार पाणी आपेतो एकांत पा  
 पकर्म बांधे एवं श्रीजगवतिना आठमास तक कह चुछे एअ  
 धिकार चोथो समाप्त ॥४॥ हवे पांचमो से सदा देखा देछे एटले  
 से सदा के ॥ जहां जे वोतां हांते वोथाय के ॥ साधु मलेतां हा  
 साधु जे वोथाय ने पासथा दीक मलेतां हाते वोथाय तथा आ  
 हा छंदो के ॥ स्वइच्छा चारी जे भगवान निआज्ञा प्रमाणे नचा  
 ले के मजे भगवत के हयु जे साधुनिमित्त तथा साधविनिमित्त क  
 री विहित के ॥ उपाश्रेय तथा आहार तथा वस्त्र पात्र अथवा  
 उपदेशीने जे कह्युं होय ते साधु ने खपलागे नहि एवि जे भगवं  
 त निआज्ञा लोपिने पोतानी इछा एचाले पोतानी इछा एउ  
 पाश्रेय प्रमुख कराविने भोगवे ॥ ते स्वइच्छा चारी जाणी एइ  
 त्यादिक अनेक जे दडाह्य होय ते समजे एपांचमो जेद ॥५॥  
 एउसत्थादिक पांच जे दजे कहा ते वांदा पूजवा योग्य नहि  
 तारे अजाण रहिने बोल्यो जेरी जसाधु कयांथ किलाविये अ  
 मने तो धर्मशास्त्र नासंभलावनारा एजछे ॥ तेनो उत्तर ॥ ए  
 नुसंजलावेलुं शास्त्र पण खपलागे नहि अने उसत्थादिकने  
 वांदा तां पूजतां मोक्ष पण मले नहि जेमको इक बालकनी मा  
 तामरी गइ अगर परदेश गइ ने बालकने ही जडाने सुं पें ते  
 ही जडाने धावण आवे ते बालक जीवतोरहे कदापि नहि पण  
 बालक निमाता मले तो जीवतोरहे केदुधादिक पायतो जि

तोरहे तेमइहांउपनयमेलवेछे जेवालकप्राय ससारी  
 व अनेमातातेमइहांसुद्धसाधु त्यांहीजडोतेमइहांउस  
 दिकसाधु ॥ जेमदुध ॥ तेमइहाधर्म ॥ जेवालकनेही  
 नेधवरावेजीवतुरहेनहि तेमइहांउसत्छादिकपासेध  
 जालयाथकिमुक्तिमलेनहि बलिजोतमेकहयुंजे साधु  
 जोगवाइक्याथकिअमनेमले ॥ तेनोउत्तर ॥ साधुनीजो  
 इचोथेआरेपणघणिदुर्लभहति तेपासस्थानाअधिका  
 धेनागिलनाअधिकारमांकहिछे त्याहांथकिजाणजो  
 पोतढाकालेपणसाधुनि जोगवाइघणीमुश्कलहति  
 श्रुसाधुपणतढाकालेघणादिसेछे तेमाटेरत्नसाटेकां  
 खेडेबाधे तेनादामवटेनहींलोकोमामूर्खकेहेवाय वा  
 तोसाधुनीगुरुनिजोगवाइमलेतोवादवूपूजवू निरु  
 नेघेरबेठाशास्त्रसिद्धातनू वाचवूनणवू धर्मध्याननूक  
 जश्रेयछे माटेसांखनणवूअने उसत्छादिकपाचना  
 दुरकरिनेसूसाधुनिसदहणाराखवि तेसूसाधुनूंस्व  
 यमपणकहयुछे बलिसंक्षेपमात्रदेखाडेछेएकविध  
 त्यागीके ॥ एकविधअव्रत ॥ तेनूलक्षणतेजअग्रा  
 तेनोत्यागकह्योछे द्विविधबधण रागअनेरुनेहनूल  
 ॥ द्वेपतेअप्रतिनूलक्षण ॥ तेवेबंधणथकिवेगलां  
 विधडडेण ॥ एटलेमनथकिढंडायनहि ॥ वचनथकि  
 नहीं ॥ कायायकिढंडायनहि ॥ त्रिविधगूत्तेणंके ॥

मन ॥१॥ वचन ॥२॥ काया ॥ ३ ॥ एत्रणनेशुभमाठा  
 वेपारथाकिगोपवेछे तेमसलेणंके०॥ जेमतिरादिकनोधा  
 तछातिनेविपेसाले तेमजअनाचारहइएसाले तेनेसल्या  
 कहिये तेसल्यनात्रणप्रकार एकमायाके०॥ कपटरूपी  
 योसल्य ॥१॥ नियांणसलेके० ॥ परजवनिइछावंचारुप  
 ॥२॥ अनेमिथ्यात्वसल्यअज्ञानपणे॥३॥ तेहंगारवेणंके०॥  
 गारवके० ॥ अभिमान ॥ एटलैरिद्विपामिने ॥ रिद्विनो  
 गारवकरवो ॥ एरिद्विगारव ॥१॥ रसगारवपटविधर  
 सनूपामिनेअभिमानकरवोएरसगारव॥२॥ शातागारव  
 मनवचनकायायेशातापामे ॥ तेमसंथारोसज्यासत्कार  
 सन्मानपामीनेशातानोगारवकरे॥ तेनेशातागर्वकहीए ॥  
 ॥३॥ एटलेत्रण्येगर्वथकिविरम्याछे ॥ तेहंविराणंके० ॥  
 ताननिविराधनाके०॥ जेज्ञानीवेअक्षरववताभण्योहोय  
 निआशातनाकरे॥ तथाकोइअणतोहोयतेनेउवेखे॥ तथा  
 पोधिपानूतेनीआशातनाकरीहोय ॥ तेनेज्ञानविराधना  
 कहिये ॥१॥ तथादर्शनविराधनाके०॥ साधूसाधवीआ  
 कथाविका ॥ तथाजिनपडीमानाआवर्णवादादिकप्रका  
 तेदर्शनविराधनाकहीए॥२॥ तथाचारीत्रविराधनाके०॥  
 चारीत्रलेइनेपालेनहि अथवांचारीत्रियानेअशातनाक  
 एनेचारीत्रविराधनाकहीए ॥३॥ एत्रणथकिसदायवेग  
 रहे॥ चउकसाएणंके०॥ जेचारकखायचारीत्रनीघातकरे



वावालाछे अनेसाधुकेवाछे॥ एथकिसावचेतरहे एनाछला  
 माआवेनहि एटलेतप्तप्रणामरहेतेनेक्रोधकहिए॥१॥ अ  
 हकारीनेमानकहिए॥२॥ कपटिनेमायाकहिए॥३॥ मोर  
 छातेलोभकहिए॥४॥ पचहक्रियाएहके०॥ जेव्यापारए  
 नापाचप्रकारजाणवा कायाथकिजेक्रियालागेजेअचत्या  
 दिक तेकायक्रिया॥१॥ दूप्रणिहितकायकि॥२॥ उप्रतका  
 यकि॥३॥ मिथ्यादृष्टितथाअन्नतसमोरदृष्टनि॥१॥ प्रमत  
 सजतिनेविजीक्रियालागेअनेअप्रमतसजतिनेत्रिजीक्रिया  
 लागे हवेविजीक्रियाकहेछे जेअधिक्रमणसहस्रजंत्रतत्रा  
 दिकथाकिलगे एअधिक्रमणकिक्रिया॥१॥अनेपाउसिया  
 के०॥ जिवउपरतथाअजिवउपर, द्वेपनाजेप्रणामतथा  
 मछर्ता तेपाउसियाक्रियाकहिए॥३॥ परितावणीयाएके०  
 आपणेतथापरनेताडनातर्जनादिककरीनेदूखउपजावे॥ते  
 परितावणक्रिया॥४॥पणातिपातकिक्रियाके०॥आपणोतथा  
 परनोघातकरवो एटलेस्वर्गादिकपामवानिमित्ये पर्वता  
 दिकथाकिपडिने आपणाआत्मानिघातकरवि तथाक्रोधा  
 दिकेकरीनेपरजीवनेहणवा तेप्रणातिपातकिक्रिया॥५॥  
 एपांचक्रियाथकिबीहीतोरहे जेरखेमुनेक्रियालागे छहजि  
 वनिकायाणांके०॥ छकायजिवनीरक्षाकरे सातभयमन  
 माधारेनहि तेनानामकहेछेआलोकजयमनुष्यादिकथाकि  
 ॥१॥ परलोकजयसिंहादिकथाकि॥२॥ आनदजयधनलो

आदिकथि ॥३॥ अकस्मात्भयअंधकारादिक ॥४॥ आ  
 जीवकान्तयदूर्भक्षादिका॥५॥ मणंजयमरवानो॥६॥ अपि  
 तभयउपजवानो॥७॥ बलिसाधुहोयतेआठमदकरेनहि॥  
 तेकिया॥ जातिमदा॥१॥ कुलमदा॥२॥रूपमद ॥३॥ श्रुतम  
 दा॥४॥ बलमदा॥५॥ तपमदा॥६॥ लाजमदा॥७॥ इश्वरम  
 दा॥८॥ बलिनवविधब्रह्मचर्यनोअधिकारआगे पंचमहाव्र  
 तनाअधिकारमांकहोछे तथाबलिदशविधयतिधर्मकहेछे  
 खतिक्रोधादिकरहित॥१॥ मार्दवमाननोत्याग॥२॥ आर्ज  
 वमायानोत्याग॥३॥ मूक्तिनालोभनोत्याग॥४॥ तपतेवार  
 भेदे॥५॥ संजमतेआश्रवनोरोध ॥६॥ सत्यतेमृपानोत्या  
 ग॥७॥ सौच्यतेनिर्लेपपणु ॥८॥ अकंचनतेधननोत्याग॥  
 ९॥ ब्रह्मचर्यतेदृढसजम ॥१०॥ नित्येआराधे॥ अग्यार  
 श्रावकनिप्रतिमाजाणे तथावारसाधुनिप्रतिमातेनांनाम  
 कहेछे ॥ पेहेलीएकमासनि॥१॥वेमासनि॥२॥त्रणमासनि  
 ॥३॥ चारमासनि॥४॥ पांचमासनि ॥५॥ छमासनि॥६॥  
 सातमासनी॥७॥ सातअहोरात्रिनि॥८॥ बलिसातअहो  
 रात्रिनि॥९॥सातअहोरात्रीनि ॥१०॥ एकअहोरात्रिनि॥  
 ११॥ एकरात्रिनि ॥१२॥ इतिसाधुनीवारप्रतिमा हवेपे  
 हेलिप्रतिमावहेत्यारेएकदांतिआहारनिएकदांतिपाणीनी  
 एमसातमीप्रतिमाए सातदांतिआहारनीने सातदांति  
 पाणीनीजहे आठमीपडीमाउतानसेन अथवापासाभरक

रे उपसर्गसहे ॥८॥ नवमेलुकट वाकापडेलाकाठनिपं  
 ॥९॥ दशमेगोदोहिआसन अथवाविरासनकरे ॥१०॥ अग्या  
 रेछठभक्तकरीपलवन्नोजुअहोरात्रिलगेकरी काउसगकरे  
 ॥११॥ बारमिअठमजककरीएकरात्रिलगे मेपोन्मेपअ  
 होरात्रिनेत्ररहे ॥१२॥ एसंक्षेपथकीलखावलीविशेपेजोवु  
 होयतो दशासूतस्कधथकीजाएवि साधूहोयतेसतरजेदे  
 सजमनापालकहोय प्रथविकायसजम ॥१॥ अपकायसं  
 जम ॥२॥ तेउकायसजम ॥३॥ वाउकायसंजम ॥४॥ वनरूप  
 तिकायसजम ॥५॥ बेरद्विसंजम ॥६॥ तेरंद्विसजम ॥७॥  
 चउरंद्विसजम ॥८॥ पचद्विसजम ॥९॥ अजीवसंजम ॥१०॥  
 पेहासजम ॥११॥ उवेहासजम ॥१२॥ पमजणासंजम  
 ॥१३॥ पारीठावणीयासजम ॥१४॥ मनसजम ॥१५॥ वच  
 नसजम ॥१६॥ कायसजम ॥१७॥ एसतरभेदेछे वलीविश  
 असमाधिरुथानकसेवेनहि ॥ तेकहीएछे ॥ उतावलोचालेन  
 हि ॥१॥ अप्रमार्जितठामेवेसेनहि ॥२॥ दुप्रमार्जितठामेवेसे  
 नहि ॥३॥ धधसालादिकनेविपेरहेनहि ॥४॥ अधिक  
 आसनादिकनेविपेरहेनहि ॥५॥ गुरुनोपराभवकरेनहि  
 ॥६॥ स्थावरउपघातकरेनहि ॥७॥ नूतउपघातकरेनहि  
 ॥८॥ खिणमात्रमाहेकोपेनहि ॥९॥ कदापिकोपेतोघणो  
 कालराखेनहि ॥१०॥ पुठेअवर्णवादबोलेनहि ॥११॥  
 नुठोआलआपेनहि ॥१२॥ समीयाअधिकर्णउदेरेनहि

॥१३॥अकालेसज्याकरेनहि॥१४॥रजसवर्चाहाथपेगरा  
 खेनहि॥१५॥पोहोररात्रिपछेताणीनेबोलेनहि॥१६॥माहो  
 माहेकलहकरावेनहिं ॥ १७॥ माहोमाहेभेदपडावेनहिं  
 ॥१८॥आथमतालगेजमेनहिं॥१९॥दोपटालिआहार  
 लेवे॥२०॥मुनिराजएविरीतेविचरेनिर्दोपपणे एथकिवी  
 प्रितविचरेतेनेअसमाधिस्थानसेव्युंकहिए हवेसबलक  
 र्म२१तेकहेछे॥हस्तकर्मकरे॥१॥मिथुनसेवे॥२॥रात्रिभो  
 जनकरे॥३॥आधाकर्मिका॥४॥राजपिंडले ॥५॥क्रितले  
 ॥६॥प्रामितउछीनो॥७॥अभ्याहत ॥८॥आछेद्यले॥९॥  
 पछखाणभांजे ॥१०॥गणथकिविजेगछेजाय॥११॥मास  
 माहेबेलेप॥१२॥मासमाहेमातृस्थान॥१३॥आकुदिहिं  
 साकरे॥१४॥आकुदिमृखाभांखे॥१५॥आकुदिचोरीकरे  
 ॥१६॥आकुदिकदमूलखाय॥१७॥फुलफलबहूविजखाय  
 ॥१८॥वर्शमाहेगदलेप॥१९॥वर्शमाहेमातृस्थान ॥२०॥  
 सचितसघटसहितहस्तजाजनआहारले॥२१॥हवेबावो  
 सपरीसहकहेछेखुहानूख॥१॥पिवासातरसा॥२॥सितता  
 दनुंसेहवुं॥३॥उश्रतापनुंसेहवुं ॥४॥दंसमछरा॥५॥अचेल  
 ॥६॥अरति॥७॥स्त्री॥८॥चरीयाविहार ॥९॥निसीहीया  
 ॥१०॥सज्जा॥११॥आक्रोश॥१२॥वध१३॥याचना॥१४॥  
 अलाभ॥१५॥रोग ॥१६॥वृणस्पर्श॥१७॥मला॥१८॥स  
 त्कार॥१९॥प्रज्ञा॥२०॥अज्ञान॥२१॥सम्यक्ती॥२२॥अथ

सुगडगाध्यायनसूतस्कंध ॥१६॥ पुढरीकाध्यायनआहार  
 परीक्षा ॥ क्रियास्थानप्रत्यास्यानाक्रिया ॥ अनाचारसुतआ  
 द्रकुमारनालंदीयाध्ययन ॥ धिसुतस्कंधे ॥ ७ ॥ एवंसु  
 गडगनाध्यायन ॥२३॥ देव ॥२४॥ तिर्थकरा ॥ अथवाप  
 क्षातरेभूवनपति ॥ १० ॥ अंतर ८ ज्योतपी ५ वैमानिक १ एव  
 ॥२४॥ ५ ॥ हास्यत्यागआलोचिवोले ॥ ४ ॥ लोभत्याग ॥ क्रोधेत्या  
 ॥ २ ॥ व्रतजावनाएव ॥ १० ॥ धणिकह्या अवग्रहमागवो  
 ॥ १ ॥ तृणादिकनोअवग्रहमागे ॥ ९ ॥ अवग्रहनीमर्यादाकरी  
 रहे ॥ ३ ॥ गुरुनोअवग्रहमागिभातपाणिजोगवो ॥ ४ ॥ साहमि  
 कनाअवग्रहमागिरहे ॥ ५ ॥ एव ॥ १ ॥ पनरेअतिसरसआहा  
 रनले ॥ १ ॥ विजुखानकरे ॥ २ ॥ स्त्रिसहतवस्तीनरहे ॥ ३ ॥ एक  
 लिस्त्रीकनेस्थानकेनरहे ॥ ४ ॥ स्त्रीनाअगोपागनजोवा ॥ ५ ॥  
 एचारव्रतभावना ॥ ५ ॥ एवविस एचोथोव्रतभावना एवं  
 ॥ २ ॥ ० ॥ रुडोपाडवोशब्दसाजलिरागद्वेपनकरे ॥ १ ॥ एंवरुप  
 ॥ २ ॥ गध ॥ ३ ॥ रस ॥ ४ ॥ स्पर्शआश्रीरागद्वेपनकरे  
 ॥ ५ ॥ एपाचमेव्रतभाविना ॥ ५ ॥ एंवमलि ॥ २ ५ ॥ जावना दश  
 सुतस्कंध दशकालकल्पनाछे ॥ १ ० ॥ क्षहकाल ॥ ५ ॥ व्यवहा  
 रसूत्रदशकाल ॥ १ ० ॥ एंवत्रिहूसूत्र ॥ २ ६ ॥ कालजाणवाअथ  
 अणगारगुण ॥ २ ॥ आकहेछे ॥ व्रत ॥ ६ ॥ पांचइद्रिजितवि ॥ १ १ ॥  
 भावशूद्ध ॥ १ २ ॥ पडिलेहणाविशुद्धे ॥ १ ३ ॥ क्षमा ॥ १ ४ ॥ वैरा  
 ग्य ॥ १ ५ ॥ अकुसलमनवचनकायानोरुंधवो ॥ १ ॥ छकायनि

रक्षा॥२४॥संजमयोगयुक्त ॥२५॥ शितादिकवेदनासहन  
 ॥२६॥मरणांतउपसर्गसहन॥२७॥ इत्यादिकसाधुनाश्र  
 नंतगुणछे श्रीउत्तराध्ययनथकिजो नो एटले एवागुणेकरी  
 नेसहितहोय तेने गुरुकहिनेसदहे॥कदापिआकालतोदूष  
 मछे माटे एवागुरुनिजोगवइमलविघणीमुश्कलछे पण  
 कदापिआजनेकालेपणमुलगुणेकरीनेसहितजोइएएटले  
 शुद्धलिंगआगलेकह्योतेप्रमाणेहोय अनेपंचमहाव्रतमूल  
 गुणेकरीनेसहितहोय॥अनेउत्तरगुणेशामान्याविसेप्रेहोय  
 तेनुंकांइजोवानोविचारनहि सामाटे श्रीनगवतीजीमधेक  
 हयुंछेजेपांचमेआरेवकुशचारीत्रीयाहोशे।एटलेवकुशचारी  
 त्रके०॥ चारीत्रछेतेनिरमलछे पणउत्तरगुणमांदोपणला  
 गे एटलेदोपरुपपडिजेनात तेथकिचारीत्ररुपवस्त्रकावरुं  
 थयूं एनेवकुशचारीत्रकहिं एटलामाटेआकालेमूलगुणे  
 उत्तरगुणेकरीनेसहित एवूचारीत्रसंजवेनहितेमाटेमूलगु  
 णेकरीसहितहोय वलिबेतालिसदोपरहीतआहारलेतेने  
 साधुकरिसदहवा॥तेवेतालिसदोपदेखाडेछे॥एनिगाथा६  
 कहेछे॥आहाकम्मु॥१॥ द्वेसिया॥२॥पुइकम्मेय॥३॥मिस  
 जाएअ॥४॥ ठवणा॥५॥पाहूडीयाए॥६॥पाओबर॥७॥  
 किया॥८॥पांमीच्चे॥९॥ परीअट्टिये॥१०॥अजिहडु ॥११॥  
 भिन्ने॥१२॥मालोहडे॥१३॥अछिज्जो॥१४॥अणसिठे  
 ॥१५॥अझोयर॥१६॥सोलसपिंडूगमेदोसा॥२॥धाइ॥१॥

दुई ॥ २ ॥ निमित्त ॥ ३ ॥ आजीव ॥ ४ ॥ वणिमगे ॥ ५ ॥ तिगी  
 छाया ॥ ६ ॥ कोहे ॥ ७ ॥ माणे ॥ ८ ॥ माघा ॥ ९ ॥ लोनेय ॥ १० ॥  
 हवतिदशएणा ॥ ३ ॥ पुर्व्वपत्तासंथवा ॥ ११ ॥ विज्ञा ॥ २२ ॥ संते  
 या ॥ २३ ॥ वुन्न ॥ २४ ॥ जोगेय ॥ २५ ॥ उप्पायणाया ॥ २६ ॥ दोसा  
 सोलसयेमूलकम्मेया ॥ २७ ॥ साकिथ ॥ २८ ॥ मखिया ॥ २९ ॥ निखि  
 त ॥ ३० ॥ पिहीय ॥ ३१ ॥ साहरीया ॥ ३२ ॥ दायगु ॥ ३३ ॥ मिस्से ॥ ३४ ॥ अ  
 परीणया ॥ ३५ ॥ लित ॥ ३६ ॥ छडिआ ॥ ३७ ॥ एसणदोसादसहवति  
 ॥ ३८ ॥ संजोअणा ॥ ३९ ॥ पमाणे ॥ ४० ॥ इगाले ॥ ४१ ॥ ध्रुम ॥ ४२ ॥  
 कारणे ॥ ४३ ॥ पढमावसहि बहिरतरेवा सहेउढवसंजोगा  
 ॥ ४४ ॥ एनोअर्थ सोलउड्गमदोषलीखीएछिए आधाक  
 र्मतेअतिथीनेअर्थे मूलथकीछकायनोआरनकरीनिपायु  
 आहारादिकतेआधाकर्मिदोषकहिए ॥ ४५ ॥ उदेशिकतेमा  
 गणहारआवशेएमजाणीतेअर्थेकिधुंते ॥ उदेशिकदोषकहि  
 ए ॥ ४६ ॥ पूतिकर्मतेआधाकर्मनेकारणसहितकिधु तेपूतिक  
 र्मकहिए ॥ ४७ ॥ मिश्रजातितेकोइजतिनेअर्थे कोइपोताने  
 अर्थेकिधुतेमिश्रजातिदोषकहिए ॥ ४८ ॥ स्थापनातेसाधु  
 नेअर्थेइछाराखेतेस्थापनादोषकहिए ॥ ४९ ॥ प्राहुआतेसुख  
 ढीके ॥ ५० ॥ जमणवार आधिपाछिकरे तेप्राभृतदोषकहिए  
 ॥ ५१ ॥ प्राडु करणतेसाधुनिमिते अधारेकाइछानुप्रगटकर  
 वाने छिदरादिकेकरीप्रकाशकरे तेनेप्राडु करणदोषकहि  
 ए ॥ ५२ ॥ करणनेसाधुनीमितेवेचातुळेइआपे तेकरणदोषक

हिए॥८॥ प्रामित्यते उच्छिनुं साधुने अर्थे लेइ आपे ते प्रामित्य दो  
प कहिए॥९॥ परावर्तते न खर सखर वस्तु कांइ पालटी साधुने  
आपी एते परावर्त दोप कहिए॥१०॥ अभ्याहत ते अनेरां आं  
म पाडि घर थकिसां मुं आणी आपे ते अभ्याहत दोप कहिए  
॥११॥ उद्धिन ते साधुनी मितक माडत थाता लु उघाडी आपे  
ते उद्धिन दोप कहिए॥१२॥ मालापहत ते उचुं निचुं त्रिं छुं  
ते थकी लेइ ने देते मालापहत दोप कहिए॥१३॥ आछे दते कु  
मारादिक नुं खूचा वी लेइ साधुने दिए ते आछे द दोप कहिए  
॥१४॥ अनिसृष्ट वेहूं त्रिहूं निवस्तु साधारण मां हे एक दिए  
ते अनिसृष्ट दोप कहिए॥१५॥ अथ्यवपुरक ते मूल आधण थ  
कि अधिकुं नांखे अमारे साधुजी आवनार छे ते निमित ते अथ्य  
वपुरक॥१६॥ एता दोपा गृहस्थ करता हवे उत्पादन दोप  
साधु करताना के हे छे॥१७॥ एशो ले दोप आहारना ते उत्पा  
दन दोप कहिए साधु थकि उपजे धात्रि ते गृहस्थ ना बालक  
रमाडी आपर्जिदां न ले ते धात्रि दोप कहिए॥१८॥ दूति ते  
गामादिसंदेशा क ह्यादां न ले ते दूति दोप॥१९॥ निमित ते ज  
ति अति त अनागत कहिदां न ले ते निमित दोप कहिए॥२०॥  
आजिवका ते जातिकुलादिक कहिदां न ले ते॥ आजिवका  
दोप कहिए॥२१॥ वनिपक के०॥ आहार निमित ब्राह्मणादिक  
ने धेर हूं पण ब्राह्मणादिक नो भक्त छुं एवो थई ले॥ ते वनिपक  
दोप कहिए॥२२॥ चिकित्सा ते वैद्यक कहि ले ते चिकित्सा दोपक



हिए ॥६॥ क्रोधपिंडतेविद्यावतनृपमत्रादिकवलेदानले  
 तेक्रोधपिंडदोपकहिए ॥७॥ मानपिंडतेगृहस्थनेअहकार  
 चढाविटांनले तेमानपिंडदोपकहिए ॥८॥ मायापिंडतेमा  
 यायेअनेकरूपकरीदानले तेमायापिंडदोपकहिए ॥९॥  
 लोभपिंडतेसरसआहारनेअर्थे सईधईफरईकेसरीयामो  
 ढकनेअर्थे तेलोभपिंडदोपकहिए ॥१०॥ पूर्वपछासंस्त  
 वतेपहेलुं तथापछिगृहस्थनीनीस्तुतिकरेतोपूर्वपछासंस्तव  
 दोपकहिए ॥११॥ विद्यापिंडतेदेवतानुआराधनकरेकरावे  
 आहारादिकनेअर्थेविद्यापिंडदोप ॥ एविदेविअदृष्टातता  
 होय ॥१२॥ मत्रपिंडतेअदृष्टातकरणादिमंत्रसाधेसधावे  
 आहारादिकनेअर्थेमत्रपिंडदोपकहिए ॥१३॥ चूर्णपिंडते  
 आखनुंअजनादिकआपिदानलेनेचूर्णपिंडदोपकहिए ॥१४॥  
 योगपिंडतेशोभाग्यदोजाग्यादिककरीदानलिए तेयोग  
 पिंडदोपकहिए ॥१५॥ मूलकर्मतेगर्जउत्पातादिककरेकरा  
 वेअनेदानलिएतेमूलकर्मकहिए ॥१६॥ एउत्पादनदोपक  
 हिए ॥ साधुथकिनिपजे ॥ एसोलदोप एववात्रिस ॥३२॥ दो  
 पसर्वमलिजाणवा हवेएखणादोपलिखीएछिए सकितते  
 आचाकर्मादिकदोपतणिशकाए गृहणकरेतेसकितदोपक  
 हिए ॥१॥ मखितदोपतेसचितअचितकरीखरडचोले तेम  
 खीतदोपकहिए ॥२॥ निक्षिप्तसचितपूढविकायादिकउपर  
 मेलेलीवस्तुसाधुलेतेनेनिक्षिप्तदोपकहिए ॥३॥ पिहितदोप

तेसचितेकरीढांकि अचितवस्तुलिएदिए तेपिहितदोषक  
हिए॥४॥ संहृततेमोटाभाजनथीनानाभाजने अथवाअसु  
जतेलिएदिए तेसंहृतदोषकाहिए॥५॥ दायकतेखंडणपि  
सणादिकछकायनिविराधनाकरतां तथावालधवरावति  
उठी अथवागर्जवतिस्त्रीलिएदिएतेदायकदोषकाहिए॥६॥  
उन्मिअतेसचितफलादिकअचितखांडादिक एकठांनेलि  
लिएदिए तेउन्मिअदोषकाहिए॥७॥ अपरीणततेकांड  
ककाचुकांडकपाकुदानलिएदिए तेअपरीणतकाहिए॥८॥  
लिततेसचितेअथवामिश्रवस्तुभिनेहाथेतथालेपवालांलि  
एदिए तेलितदोष॥९॥ छर्दिततेद्वातादिकछांडेपडेलिये  
दिये तेछर्दितदोषकाहिये॥१०॥ ओखणादोषदशहोयसा  
धुयितथाग्रहस्थिथीलागे ॥ हवेपाचदोषमालानाकेहेछेस  
जोजनातेखीरखांडघृतस्वादनेअर्थे एकठामेलिपोशाला  
मांहिअथवाबाहिरतेसंजोजननादोषकाहिए अप्रमाणते  
प्रमाणजेटलीले तेटलाथीअधिकले तेअप्रमाणदोषक  
हिए॥११॥ इंगालतेमनमांहेदातारनेप्रशस्तरागे जिम  
तोकरे तेइंगालदोषचारीत्रवालीलाहालाकरे॥१२॥ धुम्रते  
सामान्यअन्नमाटेदातारनेनदतोद्वेषेजिमतोकरे तेधुम्रदो  
षकाहिए॥१३॥ कारणनेक्षुधावेदनिअहिआसनकेतां॥कारणे  
आहारकरे॥१४॥ अथवाआचार्यादिकनुंवैयावचकरवानेका  
रणेआहाकरे॥१५॥ अथवाइर्यासुमतिपालवानेकारणेआ

हारकरे ॥३॥ अथवासजमपालवानेअर्थेआहारकरे ॥४॥  
 अथवाधर्मध्यानधारवानेकारणेआहारकरे ॥५॥ अछकार  
 एविनाआहारकरेतेसांकर्णदेपकहिए उपाश्रेयवारणे अ  
 थवामाहीरसवधारवाहेतु एवेएकठांकरवां तेसजनाजा  
 एवा ॥६॥ इत्यादिकएखणादोपनेटाले मूलगुणेकरीनेस  
 हितहोयतेनेसाधुकरिनेसहहेतेविजोतलकह्यो ॥ इतिश्री  
 सम्यक्तद्वारग्रंथोमुनिश्रीहूकमचदजी विरचितेपंचमोध्या  
 यपरीपूर्णम् ॥५॥

पचमाध्यायमागुरुतलओलखाव्यो हवेछठाअ  
 ध्यायमांधर्मतलओलखावेछे धर्मतलकेवोछे अतितकाले  
 पणधर्मतलनेआराधीनेमुक्तिरुपणीलक्ष्मीनेवरया वर्तमा  
 नकालेपणधर्मतलने आराधीनेघणा जीवमुक्तिरुपणील  
 क्ष्मीनेवरेछे अनागतकालेवरशेलेमाटेहेनव्यजीवोप्रथम  
 जेसदगुरुदेखाडयातेवागुरुनिशेवाउपासनाकरो ॥ पाछिते  
 नीपासेथीधर्मतलसाजलो शामाटेसदगुरुविनाबिजागु  
 रुधर्मतलनेयथार्थओलखाववासमर्थनथी तेमाटेजेसदगु  
 रुहोय अनेवहूश्रुतहोयतेनुंवहूमानभक्तिकरवी अनेधर्म  
 तेनीपासेथीसांभलीनेओलखवो सदहीनेआराधवो आ  
 राध्याथकिमुक्तिरुपणीलक्ष्मीमले तेमाटेहेनव्यजीवोव  
 र्मतलनीखपविशेपेकरीनेकरजो तेधर्मनावेजेद एकअण  
 गारधर्म ॥१॥ विजोआगारधर्म ॥२॥ अणगारके ० ॥ साधूनी

धर्मतोपांचमाधिकारमांकहोछे अनेआगारके०॥ श्रा  
वकनोधर्मतेकहेछे तेआवकनेदेशविरतिकहीए देशके०॥  
थोडुछेव्रततेनेदेशविरतिकहीए तेनाबारनेदछे तेनिश्चे  
नेव्यवहारथकीओलंखावेछेतेप्रथमंप्रणातीपातव्रत॥१॥  
प्रणातिपातके०॥जिवनीहंसानकरवि तेजीविनानेददेखा  
डेछे हवेजिवके०॥चेतानालंक्षणेजिवात् एटलेचेतनाल  
क्षणछेतेनेजीवकहिए तेजीवनवेभेदा॥त्रसा॥१॥थावर॥२॥  
तेथावरनापांचभेदा॥पृथ्विकाय॥१॥अप्पकाय ॥२॥ तेउ  
काय॥३॥वाउकाय॥४॥वनस्पतिकाय॥५॥हवेतेप्रथवीका  
यनाच्यारनेद सूक्ष्मपृथ्विकायप्रजातो ॥१॥ अप्रजा  
तो॥२॥हवेसूक्ष्मके०॥जेनीकायात्रतिसेनानीछेएटलेचर्म  
दृष्टियेगोचरआवेनहीं एतेकेवलीगम्यछे तेनाप्राणप्रजा  
प्ति तथाशरीरबादरमांकहिशुं हवेसूक्ष्मपृथ्विकायनेत्र  
णलेश्याहोय॥क्रण्ण॥१॥निल॥२॥कापोत ॥३॥ एप्रमा  
णसूक्ष्मपृथ्विकायअप्रजाप्ताजाणवा ॥ तेचौदराजलोक  
व्यापिछे हवेबादरपृथ्विकायनावेभेदा॥एकप्रजाप्ती ॥१॥  
बिजोअप्रजाप्ती॥२॥हवेप्रजाप्तीतथाप्राण एनीओलखा  
णबतावेछे॥फरसेद्रि॥१॥रसेंद्रि॥२॥घ्राणेंद्रि॥३॥ चक्षु  
इंद्रि॥४॥ श्रोतेंद्रि॥५॥मनबल॥६॥वचनबल॥७॥ कायब  
ल॥८॥श्वासोश्वास॥९॥आवरखू॥१०॥तथाप्रजाप्तीछो॥आ  
हारप्रजाप्ति॥१॥शरीरप्रजाप्ति॥२॥इंद्रिप्रजाप्ति॥३॥ श्वा

सोश्वासप्रजाप्ति॥४॥नासाप्रजाप्ति॥५॥मनप्रजाप्ति ॥६॥  
 एछप्रजाप्ति हवेष्टथिकायनाजीवने एदशप्राणमाहेला  
 चारप्राणहोयतेकहेछे फरसेद्रि॥१॥कायवल ॥२॥ श्वासो  
 श्वासा॥३॥आवसू॥४॥एच्यारप्राणहोयतथाछप्रजाप्तिमा  
 हेलाच्यारप्रजाप्तिहोयतेकहेछे आहारप्रजाप्ति॥१॥शरी  
 रप्रजाप्ति॥२॥इद्रिप्रजाप्ति॥३॥श्वासोश्वासप्रजाप्ति ॥४॥  
 एच्यारमाहेथीत्रिजेजेइद्रिप्रजाप्तिबांधे तेनेकर्णप्रजाप्ति  
 कहिए एटलेकोइजीवकरणअप्रजाप्तोमरेनहीं करणप्र  
 जाप्तिबांध्यापछीमरे अनेजेजीवअप्रजाप्तोमरे तेलब्धअ  
 प्रजाप्तोमरे एटलेष्टथिकायनाजीवच्यारप्रजाप्तिथकीउ  
 णीहोय त्यांसुधीअप्रजाप्तोकहिए अनेच्यारप्रजाप्तिपूरी  
 बांधेएनेप्रजाप्तोकहिये ॥ हवेवाटरष्टथिकायनेच्यारले  
 इयाहोय कृष्ण॥ १ ॥नीला॥ २ ॥कापोत॥ ३ ॥तेजो॥४॥  
 तथाष्टथिकायनेत्रणशरीरहोय ॥ उदारीका॥ १ ॥तेजस  
 ॥ २ ॥ कारमण ॥ ३ ॥ तथाष्टथिकायनीअवगा  
 हनाआंगुलने असख्यातमेत्तागेहोय ॥ तथाष्ट  
 थिकायनु आवसु ॥ जघन्य अतर्महूर्त ॥ उत्कृष्ट २२  
 हजारवर्षनु ॥ हवेअप्पकायनापणच्यारजेद सर्वष्टथि  
 कायनिपरे एटलोविशेष उत्कृष्टुआवसु ७ हजारवर्षनु  
 होय ॥२॥ हवेतेरकायष्टथिकायवत एटलोविशेषजेले  
 इयात्रणहोय कश्चा॥ १ ॥नीला॥२॥कापोत ॥३॥ तथाआउ

खुंउत्कृष्टं त्रणश्च होरा त्रिनुहोय ॥३॥ हवेवाउकायपणष्ट  
 थिवकायनीपरे एटलोविशेषशरीरच्यारहोयउदारीक ॥२॥  
 बैक्रिया ॥२॥ तेजस ॥३॥ नैकारमणा ॥४॥ तथा लेश्याते उकाय  
 वत् नेत्रानखूउत्कृष्टं त्रण ३ हजारवर्षनुं ॥४॥ हवेवनस्पती  
 कायनावेनेदप्रत्येकनेसाधारण ॥ प्रत्येकनावेनेदप्रजाप्तोने  
 अप्रजाप्तोप्रत्येकवनस्पतीष्टिवकायवत् एटलोविशेषत्रा  
 उखुउत्कृष्टं ॥२०॥ हजारवर्षनुंसाधारणवनस्पतीनाच्यार  
 भेदसूक्ष्मनेवादरा ॥ सूक्ष्मनिगोदकहिए तेनोविचारलेशमा  
 त्रवतावेछे एटलेचौदराजलोकछे ते लोकके ॥ आकाशते  
 आकाश एक आंगुलने असंख्यातमेनागे आकाशना असं  
 ख्यात प्रदेशछे ते एकके आकाश प्रदेशे एकको गोले छे ते एकेक  
 गोलामां असंख्यातिनिगोदोछे एकेकनिगोदमे अनंताजीवछे  
 तेकेटला ॥ अतीतकालनागयासमयतथा अनागतकालना  
 जेटलासमयतेथकि अनंतगुणा एकनिगोदमेजीवछे हवेतेनी  
 गोदियाजीवनुं आवखुं ॥ एकश्वासोश्वासजुवानपूर्यनिरोगो  
 कायानोधणी एकसासउंचोलेइनेनीचोमूके एटलामांसाडा  
 सत्तरजवकरे एटलेसत्तरवारजन्मीनेमरे अठारमिवारनो  
 जन्मे वलिविजे प्रकारे आउखुं वसेनेछपनआवलिनोपुल  
 कजवजाणवो तेमांहोमांहेनडाजिडसूंदुखजोगविनेमरे  
 छे तेदूखनिवेदनाकेटलिकछे सातमिनकेते त्रिससागरो  
 पमनुं आउखुंछे तेते त्रिससागरोपमना जेटलासमय एटलि

वारसातमिनर्केउपजे तेत्रिससागरोपमनुंदूखएकठुंकरी  
 येएथकिअनतगुणी वेदनाएकसमयेनिगोदियोजिवजोग  
 वेछेतेसूक्ष्मनीगोदनेअव्यवहारराशिकहियेअव्यवहाररा  
 शिके०॥जेजिवबादरमानथिआव्योत्यांसुधीअव्यवहाररा  
 शिनोजाणवोजेजिवबादरराशिमांएकवारआव्योतेनेव्यव  
 हारराशियोकहिए तेवारेशिष्यवोल्हो हेस्वामिव्यवहार  
 राशितथाअव्यवहारराशिनुशुकारणछे तेनोउत्तरजेव्यव  
 हारराशिमाआवेलोजिव तेफरीसूक्ष्मनिगोदमाजायतो  
 जंघन्यथकिअतरमुहूर्तरहे उत्कृष्टोरहेतो अट्टिपुदगल  
 परावर्त्तरहे तेउपरातरहेनहि ॥ अनेअव्यवहारराशि  
 मांजेजिवसूक्ष्मनिगोदमांथिनिकल्यानथि तेजिवअनता  
 पूदगलपरावर्त्तनवहिजशे ॥ तोयपणनिकलशेनहि ते  
 माटेव्यवहारराशिनेअव्यवहारराशिजुदिकहेविपडे हवे  
 जेटलाजिव इहाथकिमोक्षेजाय एटलाजिवअव्यवहार  
 राशिमाथि व्यवहारराशिमाआवे पणव्यवहारराशिघ  
 टेवधेनाहैं हवेसूक्ष्मनिगोदनाप्रजाप्ता तथाअप्रजाप्ता  
 तथाबादरनिगोदकंदमूलादिकतेनाप्रजाप्ता अनेअप्रजा  
 प्ता सर्वपृथ्विकायवत् एटलोविशेष ॥ लेश्यात्रणहोय  
 अनेबादरनिगोदनूआउखुप्रतेकवनस्पतिवत् अनेबादर  
 निगोदनिअवगाहनाएकशरीरेअनंताजिवहोयएटलेवन  
 स्पतिनुस्वरूपकह्युं एटलेपाचथावरनाबाविशनेदकरीदे

खाड्या॥१॥ असनाचारजेद॥ वेरंद्रि॥१॥ तेरंद्रि॥२॥ चउरं  
 द्रि॥३॥ पंचद्रि॥४॥ हवेवेरंद्रिनावेजेद॥ प्रजाप्तो॥१॥ अ  
 प्रजाप्तो॥२॥ अलशियाप्रमुखजिवतेनेप्राणहोय॥ फरसे  
 द्रि॥१॥ रसेद्रि॥२॥ वचनबला॥३॥ कायबला॥४॥ श्वासोश्वा  
 सा॥५॥ आउखुद्ध एछप्राणंतथाप्रजाप्तिपांचहोय॥ आहार  
 शरीरइंद्रो॥ स्वासोस्वासअनेजापाप्रजाप्ति ॥६॥ तथाले  
 श्यात्रणहोय॥ कृश्रा॥१॥ नीला॥२॥ कापोत्ता॥३॥ तथाशरी  
 रत्रणहोय उटारिक॥१॥ तेजंसा॥२॥ कारमणा॥३॥ अवगा  
 हनाबारजोजन आउखुजघन्यअतरमूहूर्त उत्कृष्टवारव  
 र्पेत् ॥१॥ हवेतेरंद्रिनुकिडिमकोडिप्रमुखवेरंद्रिवतएटलो  
 विशेषजेसातप्राण एकप्राणेंद्रिवधे तथाअवगाहनात्राणग  
 उनि आउखुउत्कृष्टागणपचासादिवशनुं॥२॥ तथाचउ  
 रंद्रिवेरिद्रिवत् एटलोविशेषजेप्राणआठहोय प्राणेंद्रिने  
 वक्षूइंद्रिवधे तथाअवगाहनाच्यारगउनि तथाआउखुछ  
 नासनु॥३॥ एत्रणनेविगलेंद्रिकहिण एत्रणनाप्रजाप्ताअ  
 प्रजाप्ताथइनेछभेदथाय हवेपंचद्रिनाच्यारभेदनाराकि॥१  
 वता॥२॥ तिर्यंचा॥३॥ मनुष्या॥४॥ तेनारकिनांनामा॥ घं  
 ना॥१॥ वंसा॥२॥ सिला॥३॥ अंजणाय॥४॥ रिठा॥५॥  
 गघा॥६॥ माघवति॥७॥ एसातनोप्रजाप्तोअप्रजाप्तोथइ  
 तेचउदभेदथाय हवेदेवतांनाच्यारजेदजनपति॥१॥ व्यं  
 र॥२॥ जोतषि॥३॥ वैमानिका॥४॥ दसभवनपति पनर



परमाधामि सोलव्यतर दसतिर्यंचनूक दशजोतपि ते  
 पांचचर पांचथर॥ वैमानिकमेवारदेवलोकात्रणकुलविधि  
 या नवलोकांतिक नवत्रैवेक पांचश्रनुतरविमान एसर्व  
 मलिनेच्यारनिकायनादेवनानवाणुजेदथया तेनवाणुप्र  
 जाप्तानेनवाणुअप्रजाप्ता सर्वथइनेएकसोनेअठाणुजेदथ  
 याएदेवतातथानारकिनोचावार्थजिवाभिगमथकिजाणवो  
 हवेतीर्यंचनापांचजेदजलचर॥१॥ थलचर॥२॥ खेचर॥३॥  
 उरपरि॥४॥ भुजपरि॥५॥ एपाचगर्जजपाचसमुच्छिमएदस  
 नांप्रजाप्तानेश्रप्रजाप्ताथइनेविसजेदथयाहवेमनूप्यनापां  
 चजर्तना पाचएवर्तना पाचमहाविदेहना एपनरकर्मजो  
 मिनापनरजेद हवेश्रकर्मजोमिनात्रिसजेदालिखीएछे पां  
 चहेमंतक्षेत्रना पाचहरीवर्षक्षेत्रना पाचदेवकरुक्षेत्रना  
 पांचउत्तरकरुक्षेत्रना पांचरमणीकवास पाचश्ररणकवास  
 एत्रिसअकर्मभोमिनामनुष्य छपनअंतरद्विपनामनुष्य प  
 नरकरमजोमि त्रिसअकर्मजोमिछपनअंतरद्विपएएकसो  
 नेएकक्षेत्रनाप्रजाप्तानेश्रप्रजाप्ताएवसेनेवेजेदएकअसनी  
 याके०॥ चउदस्थानकेउपजे एअप्रजाप्ताजमरे एत्रणसेने  
 त्रणजेद वसेनेसाठपूर्वकह्यातेमळीजीवनीत्रणगतिनाए  
 पांचसेनेत्रेसठा॥५६३॥ सहूमेदजीवनामनुष्यनेतीर्यंचनो  
 विचारपनवणाथकिविशेषजाणवो इहातोयथगोरवथाय  
 तेमाटेनाममात्रलिख्याछे एजिवनुस्वरुपअजिवनेश्रोल

स्याविनाजिवनुंस्वरुपवरावरजाणेनहिमाटिश्रजिवनुंस्वरु  
 पसंक्षेपथकिद्वेखाडिएछिए हवेअजिवनावेजेदएकरुपिए  
 कअरुपितेअरुपिअजीवनाच्यारजेद धर्मास्तिकाय॥१॥  
 अधर्मास्तिकाय॥२॥आकाशास्तिकाय॥३॥काल॥४॥धर्मा  
 स्तिकायखंधतेचउदराजलोकप्रमाण॥१॥देशतेकल्पनामा  
 त्र॥२॥धर्मास्तिकायनोप्रदेश॥३॥अधर्मास्तिकायखंध॥१॥  
 देश॥२॥प्रदेश॥३॥आकाशास्तिकायखंध॥१॥लोकालोक  
 प्रमाण॥२॥देश॥२॥प्रदेश॥३॥लोकाकाशप्रमाण॥कालनोए  
 कसमय॥१॥ एनोखधदेशहोयनहिंशामाटेजेएकसमयथि  
 बिजोसमयमलतोन्थी माटेकालनोएकजजेद॥एदशभेद  
 थया॥१०॥धर्मास्तिकायद्रव्यथकीनित्यछे॥१॥ धर्मास्ति  
 कायक्षेत्रथकीचउदराजलोकप्रमाणे ॥२॥ धर्मास्तिकाय  
 कालथकीअनादिअनत॥३॥धर्मास्तिकायजावथकी॥४॥  
 वर्ण गंध रस फरसनथि॥४॥धर्मास्तिकायगुणथकी॥ च  
 लणसहायगुण॥५॥अधर्मास्तिकाय॥१॥द्रव्यथी॥२॥ खे  
 त्रथी॥३॥कालथीभावथीपूर्ववत्॥४॥ गुणथकीथिरसहाय  
 गुण॥५॥आकाशास्तिकायद्रव्यथकी॥१॥क्षेत्रथकीलोका  
 लोकप्रमाण॥२॥कालथकी॥३॥जावथकी ॥४॥ गुणथकी  
 आवगाहनागुण॥५॥ कालद्रव्यथकी॥१॥क्षेत्रथीकालथी  
 ॥२॥भावथी॥३॥गुणथकी ॥४॥ नवापुराणावर्तनागुण  
 ॥५॥एअरुपिअजीवनार०भेदथया दश१० जेदपेहे

ह्याछे तेमली ३० भेदथाय हवेरुपिअजिवनापांचसे  
 नेत्रीशनेदकहेछे वर्णपाच॥५॥काला॥१॥निलो॥२॥पी  
 लो॥३॥रातो॥४॥घोलो॥५॥गध॥२॥सुभिगध॥१॥दु  
 निगध॥२॥रसा॥५॥खाटो॥१॥खारो॥२॥तिखो॥३॥  
 तमतमो॥४॥मिठो॥५॥फरस॥८॥खरखलो॥१॥सुवालो  
 ॥२॥टाढो॥३॥उनो॥४॥जारो॥५॥हलुओ॥६॥लुखो॥७॥  
 चोपडयो॥८॥संस्थान॥५॥एपचविशभेदाएकवर्णम॥२०॥  
 जेदलाधे॥वेगध॥२॥पाचरस॥५॥आठफरस॥८॥पाच  
 संस्थानाएविश॥२०॥एपांचवर्णना॥१००॥जेद॥एमपांचर  
 सनापणशो॥१००॥जेद॥पाचसंस्थाननापण॥१००॥जे  
 द आठगध॥८॥वेफरस॥एदशनावसेनेत्रिश॥२३०॥भेद  
 थया एमरुपीअजीवनापाचसेनेत्रीशनेदथया॥५३०॥  
 अरुपीअजीवना॥३०॥जेदमाहेभेगाकरीये एटलेअजीव  
 द्रव्यनापांचसेनेसाठजेद॥५६०॥थयाएनोविस्तारजोवो  
 होयतोश्रीपनवणाजीमध्येछे एविरातेजीवअजीवनुस्वरु  
 पजाणीते पछिआवकनात्रतलेतेनेथावरजीवनापछखाण  
 तोछेनहिं अनेत्रसजीवनाअपराधिनीजयणाछे विणअप  
 राधिरह्यातेमाआरजेजयणा अणारभिरह्यातेमासउउप  
 ग्रहितनिजयणा ॥ एटलेअणापराधिअणारभेअनेअण  
 उपग्रहित ॥ एवाजिवनेहणवाना आवकने पचखाणछे॥  
 तेपणछकोटीनापचखाणछे ॥ एटलो॥मन ॥ १ ॥वचन

॥२॥ काया ॥३॥ थकीअनुमोदवानिजयपणाछे। माटे  
 श्रावकनुव्रतछेकथोडु तेमाटे देशचिरातिकहिए तेपेहेलुं  
 व्रततेप्रणातिपात जेपरजीवनेआपणा सरिखाजाणी  
 सर्वजीवने रखवालेतेदया॥ एव्यंवहारप्रणातिपातवि-  
 रमणजाणवो हवेनिश्चेदयाकहेछे जेआपणोजीवकर्मवशे  
 दूखीथायछे तेआपणाजीवनेकर्मथीछोडाववो आत्मगुण  
 रखवालवागुणविचारवोतेचारभ्रकारेबंधहेतुपणाथीनिवा-  
 रे स्वरूपगुणनोप्रगटपणोकरवो प्रगटययोगुणतेरांखवो  
 एमआत्मस्वरूपनेविपे विश्रामतेतलानुभवतेचारीत्रकहि  
 ए तेनिश्चेदया एटलेज्ञानथीमिथ्यात्वनेखपावे आपणा  
 जीवनेनिर्मलकरेछे तेनिश्चेदया तेजिवप्रणातिपातथकि  
 विरम्योछे तेप्रणातिपातकह्यो हवेमृखावादकहेछे कुडो  
 वचनबोलवो तेव्यवहांमृखावादविरमणकहिये हवेनि-  
 श्चेकहेछे जेपरवस्तुपूढगलादिकनेआपणीकहेवि तेमृखा-  
 वचनछेअनेजीवनेअजीवकहे अनेअजीवनेजीवकहेइत्या-  
 दिकअज्ञान तंभावमृखावादमेछेअथवासिदांतनोअर्थखो  
 टोकहे तेमृखावादमेछे एमृखावादजेणेछांड्यो तेनिश्चेमृ-  
 खावादथिविरम्यो एटलेविजाअदत्तादानादिकजोनांजे  
 तोचारीत्रभाजे पणज्ञानदर्सनचारीत्र अनेनिश्चे जेणेमृ-  
 खावादभांज्यो तेणेसमकितज्ञानचारीत्रभांज्यां तथाआ-  
 गममांएमकह्योछेजेएकसाधुएचोथोव्रतभांज्यो अनेएक

साधुएविजोमखावादजांज्यो एटलेइहाजेणेचोथोव्रतभां  
 ज्यो तेआलोवणालिपेशुदयाए पणजेसिद्धातादिकना  
 मखाउपदेशदेवेते आलोवणालिधेपणशुद्धहोवेनहिं॥हवे  
 अदत्तादानकहेछे जेपारकीधनवस्तुछुपाविनेचोरीनेठगी  
 नेलीयेतेचोरीछे एटलेअणदिठिपारकिवस्तुलेवेतेअदत्ता  
 दानव्यवहारनयथाजाणवो निश्चेनयअदत्तादानकहेछे ते  
 पाचइंद्रिनात्रेविसविषयनेआठकर्मनिवर्गणा इत्यादिक  
 परवस्तुतेआत्मानेअग्राहछेपरछे तेलेवानिवांछाकरे ते  
 निश्चेनयअदत्तादानकहिए तथाकोइककहेछेजे विषयनि  
 अनेकर्मनिवांछाकरेछे तेवांछाकोणकरेछे तेनोउत्तरजेपू  
 न्यनेमेलुलेवाजोग्यकहेछे तेजिवकरमनिवांछाकरेछे तेपु  
 न्यनावेतालिसजेदछे तेचारकर्मनिशुचप्रकृतिछे एटले  
 जेव्यवहारअदत्तादाननहिलेवो पणअत्तरंगपुन्यादिकनि  
 वांछाछे तेनेनिश्चेअदत्तादानलागेछे हवेमैथुनाविरमणव्र  
 तकहेछे तिहाजेकोइपूरुपपरस्त्रीनोपरीहारकरे तेमैथु  
 नव्यवहारकह्यो तथास्त्रिपूरुपनोपरीहारकरे ते

हिये इहासाधुनेस्त्रिनोसर्वथा  
 रणिस्त्रिमोकलिछेअनेपरस्त्री  
 हवेनिश्चेकहेछे जेविषयानि  
 तृष्णाएपरभावअनेवरणादिक  
 अनोअभोगिपणो आत्मानास्व

गकरे अने ज्ञानवंत जिवने ध्यावे ते हमार मे परभाव मां वसेन  
हि ते निश्चे देशावगाशिक जाणवो हवे पोसहक हे छे जेच्या  
रपहोर अथवा आठपहोर सुर्गसमता परीणामे निरारंजसा  
वद्यछोडि शिझाय ध्यानमे प्रवर्ते ते व्यवहार पोसहक हए  
अने आपणा जीवने ज्ञान ध्यान शुपोपिने पुष्टकरे ते निश्चे  
पोसहक हिये जिवने आपणे स्वगुणे करी पोपिये ते पोषहक  
हिये हवे अतिथि संविभाग व्रत के छे जे पोसहने पारणे अ  
थवा सदा साधुने जिन धर्मि श्रावके आपण शक्तिसारुद्रान दे  
वो ते व्यवहार अतिथि संविभाग कहिए अने जिवने अथ  
वासिष्यने ज्ञान जणवो जणाववो संजलाववो सांजलवो ते  
निश्चे अतिथि संविभाग कहिए एवार व्रत कहां:—हवे एवा  
जेवार व्रत धारी श्रावक छे ते करणि शिकरे ते देखे छे श्रा  
वक पाछली चार घडिरात लेइ उठे त्रण मनोरथने विचारे ते  
नानाम आश्रवथ किके दहाडे मूकाइ श॥१॥ सर्व विरति चारी  
त्रके दहाडे अंगीकार करि शु॥२॥ समाधिसंथारो के दिन आ  
वशे॥३॥ एवा त्रण मनोरथ श्रावक विचारे एनो विस्तार मनो  
रथ जावनाथ कि जाणवो तेवार पछि श्रावक प्रतिक्रमण करे  
तेवार पछि उठिने श्रीजीन मंदिर दरशन करवाने जाथ ते पू  
र्वे कह्युं छे तेमज पंच अभिगमन तथाद सत्रिक साचवतोथ  
कोदर्सन करे जो कदापि छिति जोगवई ये प्रमादने वशे दर्शन क  
रवान जायतो एक छठनि आलोवण आवे तथामन मांशंका

श्वेतयेकर्मनोक्ताकर्तृकर्मछे एवात्मा अनादिनोपरभावनो गी  
 थयो द्वारेपरजावग्राहकथयोप्रभावरक्षकथयो एतलेश्रा  
 त्मानिज्ञायकता ॥ १ ॥ ग्राहकता ॥ २ ॥ भोग्यता ॥ ३ ॥ रक्षकता  
 ॥ ४ ॥ विगडेकर्तापणोविगड्योतेथीपरभावकर्ताथयोतेणपर  
 भावरगीपणेश्राठकर्मनोफर्तापयीछेपणसत्तायेतोस्वभावनो  
 कर्ताछे पणउपगरणअवराणाथीस्वकार्यकरीसकतो नथी  
 विजावनेकरेछे नेअज्ञानपणोजिवनोउपयोगनल्योउपण  
 न्यारोछे अनेजिवतोआपणाज्ञानादिगुणनोकर्ता नोकाछे  
 एवापरीणामतेस्वरूपानुजाइरुप तेनिश्वेभोगोपभोगव्र  
 तजाणवो ॥ हवेअनर्थदंडविरमणव्रतकहेछे अनर्थकामेजि  
 वनेपापआरभेलगावयोतेअनर्थदंडत्यांहांजे पारकेवास्तेआ  
 ज्ञाप्रमुखदेवितेव्यवहारअनर्थदंड अनेजेशुभअशुभकर्म  
 मिथ्यात्वआविरति कखायजोगशुं कर्मबंधायछेतेजिवआप  
 णाकरीजाणें एनिश्वेअनर्थदंडजाणवो हवेसमायककहेछे  
 जेमनवचनकायानाआरभयिंटाळे निरारंजपणोवतवि ते  
 व्यवहारसमायकजाणवो अनेजेजीवज्ञानदर्शनचारीत्रगु  
 णविचारे तेसर्वजिवसत्त्वगुणेएकसमानजाणी सर्वसम  
 तापरीणामतेनिश्वेसमतारुपसमायककहिए हवेदेशाव  
 गाशिकव्रतकहेछे जेमनवचनकायानाजोगएकठाकरीए  
 कथानकेवेसी धर्मध्यानकरवो तेव्यवहारदेसावगासिक  
 १. अनेश्रुतज्ञानशुद्धद्रव्यश्रोलखिने पांचद्रव्यत्या

गकरे अनेज्ञानवतजिवनेध्यावितेहमारमेपरभावमांवसेन  
हि तेनिश्चेदेशावगाशिकजाणवो हवेपोसहकहेछे जेच्या  
रपहोरअथवाआठपहोरसुधीसमतापरीणामेनिरारंजसा  
वद्यछोडि शिझायध्यानमेप्रवर्ते तेव्यवहारपोसहकहए  
अनेश्रापणाजीवने ज्ञानध्यानशुपोपिनेपुष्टकरे तेनिश्चे  
पोसहकहिये जिवनेश्रापणेस्वगुणेकरीपोषियेतेपोपहंक  
हिये हवेअतिथिसंविभागव्रतकहेछे जेपोसहनेपारणेअ  
थवासदासाधुनेजिनधर्मिश्चांवकेआपणिशक्तिसारुदानुदे  
वो तेव्यवहारअतिथिसंविजागकहिए अनेजिवनेअथ  
वासिष्यनेज्ञानजणवोजणाववो संजलाववोसांजलवोते  
निश्चेअतिथिसंविजागकहिए एबारव्रतकह्यां—हवेएवा  
जेबारव्रतधारीश्चावकछे तेकरणिशिकरे तेदेखाडेछे आ  
वकपाछलीचारघडिरांतलेइठे त्रणमनोरथनेविचारे ते  
नांनामआश्रवथकिकेदहाडेमूकाइश॥१॥सर्वविरतिचारी  
त्रकेदहाडेअगीकारकरिशुं॥२॥समाधिसंधारोकेदिनआ  
वशो॥३॥एवात्रणमनोरथश्चावकविचारेएनोविस्तारमनो  
रथजावनाथकिजाणवो तेवारपछिश्चावकप्रतिक्रमणकरे  
तेवारपछिउठिने श्रीजीनमंदिरदरशनकरवानेजाय तेपू  
र्वेकहयुंछे तेमजपंचअभिगमन तथादसत्रिकसाचवतोय  
कोदर्सनकरेजोकदपिछतिजोगवईयेप्रमादनेवशेदर्शनक  
रवानजायतो एकछठनिआलोवणआवे तथामनमांशंका



राखिनेनजायतोपाचउपवासनिआलोवणआवे एवूपंच  
महाकल्पभाष्यमध्येकह्युछे तेमाटेजिनराजनांदर्सनअव  
श्यमेवकरवां दर्सनकर्यापछिगुरुनेवादे वांदिने नम  
स्कारकरेपछिधर्मदेशनासांचलेपछि सांचलिलेजिनमंदि  
रेजीनपूजाकरवाजाय तेपूजानिविधि आंधविधियांकिजा  
णजो त्याहासाजनाप्रतिक्रमणकरे इत्यादिकश्रावकनि  
विधि साध्येदिनकरथकिजीज्यो तथाश्रावकहोयतेपर्वति  
थियेपोसासमायकंतपइत्यादिककरे तथाश्रावकहोयतेसा  
तेक्षेत्रेधनवावरतेसातक्षेत्रनांनामकहेछे साधु ॥१॥ साध  
वि॥२॥ श्रावक॥३॥ श्राविका॥४॥ देहंरु ॥५॥ जिनपडि  
माने॥६॥ ज्ञान॥७॥ एसातक्षेत्रनोऽर्थसंक्षेपथकिदेखाडेछे  
हवेसाधुसाधविऐवेनिएकरीतछे मांटेजेगोकहेछे साधुने  
श्रावकहोयतेसातपिंडआपे अण्णके०॥ आहार॥२॥ पा  
णके०॥ पाणि॥२॥ खादमके०॥ मेवाप्रमुख ॥३॥ स्वादम  
के०॥ मुखवासा॥४॥ लेनके०॥ वस्ति॥५॥ सेनके०॥ सिज्या  
पाटपाटलाप्रमुखा॥६॥ वत्तके०॥ वस्त्रपात्रप्रमुख ॥७॥  
एसातपिंडसाधुसाधविनेदेवानिमित्तधनवावरें तथाश्राव  
कश्राविकाऐवेक्षेत्रनाकाजेपणधनवावरें शिरितेतकहेछे  
जेश्रावकहोयतेशयकाढे स्वामिवत्तलकरे तथास्वामि  
भइनीजकिवहुमानकरे त्यारेवादिबोल्याजेसंघकाढ्याथ  
० एतोइशानांकामछे एनोउत्तर जेतकिधुंसंघ

काढेशुंथायतेसंघ काढयाथकि अनंताकर्मनि निकाश्रित  
गांठितोढे शामाटेजेतिर्येजइनेवांदवानांमोटांफलकिधांछे  
केमकेश्रीजगवतिजीमातिर्येकरनिवदणाअधिकारेत्याहांज  
इनेवांदवानोमहालाजकीधोछे॥तेवारेवादिबोल्याजेएतो  
शास्वतातिर्येकरहता आतोप्रतिसाछेतेनुंकेम एनोउत्तर  
जेप्रतिमानेजीनपडीमाकहिनेबोलाविछे॥ तेवारेतमेकेहे  
शोजेएतोजिनपडिमाकहिछे पणजिनवरतोकह्यानथी ए  
मानेएमांतोफरकघणो तेनोउत्तर जेजगाएधुपनांअधि  
कारचाल्यो तेजगाएएवोपाठछे ॥दाहंधुवंजिनवराणां॥ए  
वोपाठज्ञाताप्रमुखघणासूत्रमांछेएटलेइहांजिनपडिमाने  
जिनवरकहिनेबोलाव्याएटलेएपाठजोतांजिनवरमानेजि  
नपडिमामाफरककांइदिसतोतथी माटेतिर्येजइनेवांदवा  
नुंघणुंफलछे तथातमेकह्युंजेहंशानाकांमछे ॥ तेनोउत्तरां  
जेगाढांगडेराइत्यादिकजोडवां॥जोडाववां॥तेकारणथकि  
तमेहंशामांगणोछो तेएमछेनहिं ॥ शामाटेजेश्रीदसासुत  
स्कंधमां श्रेणीकराजाभगवांननेवांदवागयातेसमेवेसवा  
नेवास्तेरथमगाव्योछे ॥ तेरथनेधर्मरथकहिनेबोलाव्यो  
तेरथज्यांचालेत्याहाहंशाजथाय केमजेत्यांकह्युंछेके बल  
धनेआरघोचतादोडावताथकागयातेजगाएहंशाकेमनथा  
ए पणइहांतोधर्मरथकह्योछे॥ तथागाममध्येथीउकरडाक  
ढाव्या पाणीछंटाव्यांतथावउरंगीशोनासजीनेगया तेले

खेतोमहाआरंभनुकामदिशेछे पणभगवतेतोकाइपापक  
 हयुछेनहिं भगवतेतोएनुफलमोक्षनुंकहयुछेतेमाटेधर्मका  
 मनेअर्थनिकल्या तेकामनेविपेजेटलुकामथाय तेटलुध  
 र्मखातामागणाय एमजोनगणीएतोसाधुनोविहारगोच  
 रीअटकीजायतेमाटेडाह्याहोयतेविचारीजोअर्थो तथाति  
 र्थेजइनेवाटवुतेनुकारणकेहेछेजेठेफाणोतिर्थकरादिमोक्षपो  
 हतातेजआपणेपूजनिकछे शामाटेजेश्रीभगवतीजीमांड  
 दायनराजानेअधिकारेकहयुछे ॥ धनतेनगरी॥धनतेगाम  
 आगलइत्यादिकनेधनकहिबोलाव्याछेशामाटेजेश्रीजग  
 वानविचरताहोयतेमाटे॥ एटलेज्यातिर्थकराविचरताहोय  
 तेनगरीयादिकनेपणधनकेहेवाणु तोतेनगरीनेविपेतोको  
 इजीवसज्जनबोधिहशे कोइदूलन्नबोधिहशे अथवापापि  
 कोइकहशे कोइकधर्मिहशेअथवागामनीमाहेलीकोर को  
 इपणशुधअशुधकोइकवस्तुहशे तपणसर्वेनेधनकह्युं तो  
 जेजगाएतिर्थकरनुंनिर्वाणकल्याणकथयुं तोतेजगाएफर  
 सनाकल्याणककेमनथाय वदणनमणकर्ताकर्मनिर्जरे डा  
 ह्याहोयतेविचारीजोअर्थो माटेसंघतिर्थजात्रानिमित्थाव  
 कनेधनवावरवु ॥ तेनोविपेशअर्थसेत्रुजामाहात्मथकीजा  
 णजो तथास्वामिवछलनोमितेधनवावर ॥ एटलेस्वामि  
 के०॥सर्वाधर्मनाश्रनेजमवुजमाटवुंकरे॥शामाटेजेश्रीज  
 गवतीजीमांसखजीपुष्कलीजीनेअधिकारे यणस्वामिव

छलनोअधिकारदिशेछे तथास्वांमिजईनीजक्तिवहूमान  
 करवुंएतोपणपाठश्रीभगवतीजीमांसनंतकुमारइंद्रनेअधि  
 कारेजोज्योअग्यारमांतथाधारमांशतकमांश्रावकश्रावक  
 नेवंदणनमस्कारकरे ॥ एवोपाठछे ॥ तेमाटेश्रावकहोयते  
 श्रावकश्राविकानाविषेवावरे हवेवलीश्रावकपांचमाक्षेत्रे  
 देहरुंकरावे तथाछठेक्षेत्रेजिनपडिमानुंभराववुं ॥ तथादे  
 हरानुंरंगाववुं ॥ तथाआंगीरचांचवी ॥ तथाअठाइमहोछव  
 करावे तेवारेवाढिबोल्हो ॥ जेदेहरुंकरावेप्रतिमाभरावे  
 गुंथाय ॥ तेनोउत्तर ॥ जेदेहरुंकराववुं ॥ प्रतिमाभराववि ॥ एका  
 मश्रावकनेअयेदिशेछेशामाटेजेदेहरु ॥ तथाजिनप्रतिमा  
 आजपांचमाश्रारामांश्राधारभूतछे केमकेकेवलिनतोआ  
 जविरहकालछेशुधआलंबनतोआजएछेतथाश्रीअनुयोग  
 द्वारमांपणकह्युंछे जेभाषानिक्षेपोनामथापनाद्रव्य विना  
 थायनाहिं तथाअचारनिक्षेपामां एकेनिक्षेपोउथापे ॥ तेने  
 मिथ्यात्विकहिंए ॥ तेवास्तेथापनानिक्षेपोअवश्यमानवो ॥  
 यदूक्तं ॥ नामजणजणजण ॥ ठवणजण ॥ जणपडिमाओ ॥  
 दवजणजणजिवा ॥ जावजणजणसमोसणहुथा ॥ १ ॥  
 एगांथामांपणथापनानिक्षेपामांतोजिनपडिमाजकहीछे ॥  
 अथवाअनुजोगद्वारमध्ये श्रावशंकनेअधिकारदशप्रकार  
 नीथापनाकहिंछे तेतोसदबोधअनेअसदबोधकहिंछे त  
 थाएतोगुरुनीथापनाछे आतोतिर्थकरनिथापनाअनेवली

सदबोधछे तो एनेकरावतांनफोकेमनहोय ॥ डाहाहोयए  
 विचारीजोज्यो तथादेहरानोकरावतारोतथाप्रतिमानोज  
 रावनारो बारमेदेवल्लोकेउपजे एनुश्रीमहानिशियजिमां  
 कह्युछेतेमाटेआवकहोयतेदेहराकरावे प्रतिमाभरावेआं  
 गीरचावे अठाइमहोछवादिक्करे ॥ एवामारगेधनवावरे  
 हवेसातमुखेत्रजेज्ञान तेमारगेपणधनवावरे एटलेज्ञान  
 लखावे तथाज्ञानभणतोहोय तेनेसाज्यआपे तथाज्ञानि  
 नाबहुमानकरावेशामाटेजेश्रुतज्ञानछेतेमोटुछे जदपिकेव  
 लज्ञानमोटुछेपणस्वअनुजायीछेअनेश्रुतज्ञानछेतेस्वपरप  
 रकाशेदिसेछे माटेज्ञानिनाबहुमानकरवां केमजेश्रीनि  
 सुत्रमांज्ञानिनेसूर्यनीचंद्रमानीकल्पवृक्षनीसंभुरमणसमु  
 द्रनिइत्यादिकघणीउपमाआंछे॥माटेज्ञानिनुबहुमानविशे  
 पेकरवु ज्ञानभणतोहोयतेनीपणसाज्यकरवि॥ शामाटेजे  
 ज्ञाननाभणनारापासेपइशोहोयनहिअनेव्याकरणादिक  
 जणवानेपइशोपणजोइयेपुस्तकपानुंपणजोइयेमाटेएवात  
 निसाज्यगृहस्थिआपेतारेभणाय त्यावादिएतर्ककरी जे  
 साधुतोसाज्यवछेनाहिं तमेकहोछोसाज्यआपेतोजसाधुभ  
 णे तेनुकेम तेनोउत्तरदेछे जेसाधुहोयतेसाज्यनवंचेपणते  
 दहाडेतोसूत्रपाठउपाध्यायजीभणावता अनेअर्थआचा  
 र्यआपताअनेमारुंतारुहतुनहिं ॥ जेजतुंतेनेजणावता ॥  
 आजतेमानाआचार्यउपाध्याय कियातमारीसरतेआवेछे

जेतेनिपासेजइनेजणे अथवाज्ञानआशरीसाज्यवंचेतोदो  
पणजणातुंनथि शामाटेजेपोतानेशरीरेसुखवंचेतोनथी ए  
तोआत्माहेतेज्ञानजणे. नैज्ञानकांजेसाज्यवंचेते तथा  
श्रीपंचमहाकल्पनाप्यमध्येपणकह्युंछे जेज्ञाननोसाधुअ  
भ्यासंकरतोहोयतेठामनेविपे कदापिआहारनेविपेआधा  
कर्मादिदोपलागतोहोयतोज्ञानअभ्यासकरवानेसाधुरहेके  
नरहे त्यांकह्युंछेजेज्ञाननोअभ्यासकरतांकदापिआधाक  
र्मादिदोपलागैतेनोविचारकरेनहि पणज्ञाननोअभ्यासक  
रवोशामाटेजेज्ञाननहोयतोदोपअदोपकोणजाणेमाटेज्ञा  
नमोटोपदार्थछे तेमाटेज्ञानने वास्तेसाज्यवंचतांदोपण  
जणातुनथी तथाजोशरीरादिकनेअर्थेसाज्यवंचेतोदोपण  
लागे जोयामांतोहेवुंआवेछे पछिकेवलीगम्य तथाजेगृह  
स्थिआवकहोय तेसुत्रसिद्धातादिकलखिराखे शामाटेजे  
साधुसाधविआव्यागयानेवांचवाजणवानेखपलागे तथा  
गाममांपणविजाआवकोने भणवागणवांखपलागे एसा  
तमुक्षेत्र एमआवकहोयते सातेक्षेत्रेधनवावरे वलि  
एनेअनुसारेविजापणउचितथानकजोइनेवावरे एमआव  
कनुंस्वरूपकह्युं तेआवकत्रणप्रकारनाछे॥ जघन्या॥१॥ मं  
ध्यमा॥२॥उत्कृष्ट॥३॥तेजघन्यआवककेनेकहिएकेप्रजाते  
नोकारसिरात्रेदूविहारअनेबाविसअक्षनोत्यागकरेतेने  
जघन्यआवककहिए॥१॥अनेबारव्रतआवकनांअंगीकार

करचाहोय तेनेमध्यमश्रावककहिए॥२॥ अनेबारव्रतउच  
रचाहोयअनेअग्यारपाडैमावहिहोय तेनेउत्कृष्टोश्रावक  
कहिए॥३॥ एविरिंतेश्रावकनोधर्मतथासाधुनोसर्वविरातिप  
चमहाव्रतधर्म एवुंश्रीवितरागप्रमात्माएपरुप्यु जेधर्मते  
नेधर्मकरीसदहे तेनेधर्मतलसदह्योकहिए एटलेधर्मतल  
के॥साधुश्रावकनुजेधर्मतथाखटद्रव्यनवतलनयनखेपाप  
क्षप्रमाण स्यादचाटखटकारकादिकसर्वसदहजो हेभव्य  
जीवोसमजमाआवेतोसमजवु कदापिसमझमानआवेतो  
एमधारवुं जेमारीबुद्धिश्रोछीछे अनेकेवजोनुज्ञानअनतूछे  
तेयिमारीसमजमाआवतुनथी पणजेआगममांजावपरु  
प्या तेसर्वतेहेतछे एवोविचारराखवो पणपोतानिमतिक  
ल्पनाथी कशोनवोमार्गथापशोमां एविरिंतेहेभव्यजीवो  
धर्मतलनेसदहजो ॥ इतिधर्मतलतृतीय. ॥

॥ इतिश्रीसम्यक्द्वारग्रयोमुनीश्रीहूकमचंदजीविरचिते  
पटमोअध्यायपूर्ण ॥६॥

एछठाअधिकारनेविपेधर्मतलओलखाव्यो हवेसा  
तमेअधिकारे एतलनासदहणानुंफलदेखाडेछे हेभव्यजी  
वोआर्यक्षेत्र मनुष्यजव देवगुरुनिजोगवाडतेपामविघणी  
दुर्लजछे अनंतापूण्यनिराशिनाथोकडावध्यात्यारेतमेपा  
म्याछो पामिनेजोपरमादकरशोतो फरीनेच्यारगति  
परीब्रह्मणकरशो फरीथिआजोगवाईमल

विधणीदूर्लभछे तुंजेआसंसाररुपमोहजालमांगुंथाणोछुं  
 अनेपूत्रकलत्रधनधान्यादिकमाहरुंमाहरुंकरेछेतेतारीभूल  
 छेतेकोइतारुंछेनहि केमजेमोहजालनेविपेगुंथायाथकि  
 नर्कतिजंचनांदूखभोगववांपडे तेनर्कनूस्वरुपलेशमात्रक  
 हेछे तेनर्कनाक्षेत्रनोफरसकेवोछेतेकहेछे जेवितरवारनि  
 धार जेविवराछिनीअणी जेविकटारीनीधार जेविनालो  
 डनीअणी जेविअस्त्रानिधारजेवोनगरनोदाहजेवोगामनो  
 दाहएवोतोउष्णफरसछे वलिजीहांगोखरुघणांतिखीअ  
 णिनांपथरायेलांपडयांछे तथाडाजतिखिअणिनाउगेला  
 नुवंनछेवलिज्यांहावेतरणीनामानदियोछेज्यांहांअसिपत्र  
 वृक्षनांवनछेज्यांहांघणाकुंजीपाकछेतेकुंजीपाकनोखरख  
 रोफरसपूर्वैकहोतेवोजछेवलीजेविपोपमाघनिमहाहिमा  
 जलटाढ जेमहिमालाक्षेत्रनीटाढज्यांहामाणसनामाणस  
 क्षिजीजायछेतोढारोनूनेझाडनूंशुकहेवूएवाक्षेत्रफरसनदि  
 कथीतेटाढअनंतगुणीवधतीछे एकुभीपाकतेउपरथीचोखू  
 णीछेअनेमांहेथकिकुडानाआकारेछे तेकुंभीपाकनेविपेना  
 रकिआविउपजेतेप्रथमसमयेनारकिनीआंगुलनेअसंख्या  
 तमेजागेअवगाहनाहोयपछिएकअंतरमूहूर्तमांजेटलीना  
 रकिनाशरीरनिअवगाहनाहोयएटलीवांधे तेवारेकुंजीपा  
 कपेटेथकिपहोलीअद्वोउर्द्धसंकिर्णएनोफरसमहा तिखोने  
 वलिटाढोतेथकिथइजेवेदनातेथीमहारीवपोकारेअनेमुखथी



कहजेमुनेइहांथकिकाढोकाढोनेवारैनर्कक्षेत्रनेविपेरह्याजेप  
 रमाधामि तेपनरजातनाछे तेनानामकहेछे अंवा॥१॥अं व  
 रिखा॥२॥इयाम॥३॥सवल॥४॥रुद्र॥५॥ महारुद्र॥६॥  
 काला॥७॥महाकाला॥८॥असिपत्रा॥९॥धनुष्य॥१०॥कुंभ  
 ॥११॥वालुक॥१२॥वेत्रंणी॥१३॥खरस्वर॥१४॥महाघोष  
 ॥१५॥ एवाजेपनरजातनापरमाधामितेत्यांपासेहोयतेदो  
 डिनेआवेतेआविनेनारकिनेकहेजेमाहलिकोरतोहजीतने  
 सुखछेअनेवाहेरतोमहादूखछेअनेकुभीपाकनुमोढुंसांकडूंचे  
 माटेतनेतोडितोडिनेकाढवोपडशे त्यारेतुंनापाडिशपणअ  
 मेतनेछोडिशुनहि वास्तेनुपेहेलाजमाहिरहेपणतेनारकि  
 महादूखेपिडयोथकोदिनवचनकहिनेबोलेजेहूंमहादूखिछु  
 महाराथीनरकनुदूखजोगवातुनथीमाटेमनेकाइकरतांडहा  
 थकिकाढोहुंनानहिपाडूतेवारपरमाधामिसाणशिथीतोडि  
 तोडिनेकाढेत्यारेमहारीवपोकारेनेकहेजेमुनेरेहेवाद्योपण  
 तेकाइछोडेनाहिइत्यादिक वलीवाहेरनिकल्यापछिपणम  
 हाछेदनभेदनताडनातर्जनादिकवेदनाघणिजोगवे ज्ञानि  
 विनाआपणथकिहिजायनाहि तेनोविशेषअधिकारश्रीजी  
 वाजीगमंतथापन्नवणाप्रमुखसूत्रथकिजाणजो एवानरका  
 दिकनामहादूखजोगवांपडे तेवास्तेहेभव्यजीवोमोहजा  
 लनेविपेमुझावूंनाहि जेमोहनेविपेमुझाय तेनेएवांदूखभी  
 गववापडे ॥ जेमब्रह्मदत्रचक्रवर्तिमोहने विपेमुझाणो

अनेसाधुनोउपदेशनमान्यो त्यारेमरीनेसातमी नकेंग  
 यो तेमहेनव्यजिवो एवंजाणीने जोगवाइमलेथकेप्रमा  
 दकरशोनहिं धर्मसाधनकरजो जेथकिदेवलोकनांसुख  
 जोगवो परंपराएमोक्षनांसुखपणजोगवशो वलिजेपुत्र  
 कलत्रधनधान्यादिकमाहारुमाहारुंकरोछो तेकांइछेनाहिं  
 तेतोसर्वस्वार्थनासगांछे तेनुंस्वरुपदेखाडेछे जेमश्रेणि  
 कराजाकुणीकनोअंगुठो छमासेसुधिमुखमधेरारुयो अ  
 नेलोहिपरुचुझ्या शामाटेजेमारोपुत्ररखेमरीजशे केरखे  
 दुखीथशे एमजेमोहनावशथकिएविरीतेपुत्रनेवास्तेपोते  
 दुखजोगव्युं तोतेजपुत्रे पोताने काष्ठार्पिजरमांधाल्यो  
 अनेनेत्यप्रत्येपांचसेहेकोरडामरावे अनेजीविथिपणगया  
 तोजोयंपुत्रनुसगपण एकराज्यनेवास्तेपितानुंमृत्युकर्धुं  
 अनेमहादूखदिधु तोहेभव्यजीवोसंसारनेविपेपुत्रनुंसग  
 पणअनीत्यछे एसर्वस्वार्थनुसगुछे तथाकलत्रके० ॥ जे  
 स्त्रीतेनेतो माहारीकरीजाणेछे तेतोससारने विपेमहादू  
 खदाइछे केमकेस्त्रिनामोहनामारथाथका नंदिखेणेनि  
 याणुंकरधु तोअंतेनर्कमलि तोजुवोस्त्रिनोमोहरारुयोतो  
 परजवेमहानर्कमलि अनेआजवनेविपे पणस्त्रिसुखदे  
 नहिं जेमजसोधरने स्त्रिएझेरदेइनेमारयो तेनोअधि  
 कारसमरादित्यचरीत्रथकिजोजो तथापरदेशी राजाप्र  
 मुखघणाजिवोस्त्रिएमारयाछे माटेहेनव्योस्त्रियोकोइनी

सगीयोनथी एतोस्वार्थनिसर्गीछे एवुखोटुसगपणतेनेवि  
 पेतमेकेममुझाइरह्याछो एस्त्रितोआभवपणदुखदाई अ  
 नेपरजवपणदुखदाइछे स्त्रिभासगपणमापणराचवुनहिं  
 तथाजेसंसारनेविपेमाताछे तेपणस्वार्थनिसर्गीछे जेमत्र  
 ह्मदत्तनेचुलणीराणीएमारवानो उपायकरथो जुवोसगो  
 दिंकरोछे पणकाइदयाआविनहि तथाचेलणाराणीए कु  
 णीकनेजनम्योतेजवखतेउंकरडेनखाव्योतो जुवोमातानां  
 सगपणपण ससारनेविपेएवाछे इत्यादिअनेकटप्तांतछे  
 तेंग्रथोधकिजाणजो बलिसंसारनेविपेजेसगपणछेतसग  
 पणनोकांइनियमनथीजेएनुएसजगपणरेहेशेजेपूत्रहोयते  
 पूत्रपणेएवोकाइनियमनथी जेपूत्रहोयतेपीतापणैथाय अ  
 नेपूत्रहोयतेस्त्रिपणैथायकेमजेशुकराजानामातापीतातेओ  
 पाछलेजवपोतानीस्त्रिओहती तेनीकथाश्राद्धविधिमांछे  
 तथाश्रीअशकुमारनोर्जीव तथाश्रीऋषभदेवस्वामीनोर्जी  
 व केटलाएकभवनेविपे स्त्रीभरतारनूसगपणथयु केट  
 लाएकभवनेविपेमित्रपणुथयू आभवनोविपेदाढोनेपडपोत  
 रोयथा तथाजसोधरपोतानापूत्रनोपूत्रथयो तथाजसोध  
 रानेमाताहतीतेआजवनेविपेस्त्रीथइइत्यादिकविचारतास  
 गपणनोनियमरहेतोनथीतथासिद्धातमापणकहयुछेजेएक  
 एकजीवनेमाहोमाहे अनंतांसगपणथयां एवुजेखोटुसग  
 पणतेनेविपेकोणराचे केमजेकियोजविआपणोसगोछेअने

कियोजीवसगोनथी एटलुंविचारिनेजोइएतो सर्वेजी  
वसाथे आपणांअनंतांसगपणथयां माटेएमांमातापि  
ताकोनेकहीए तथाभ्रातकलत्रपुत्र कोनेकहीए जेसर्व  
जीवसाथे अनंतांसगपणथयां माटेएवासगपणनेविपे  
राचीरहेवुनहि एवासगपणकरतां, अनंतोकालगयो पण  
कांडआत्मानु कल्याणथयुनहि जेदहाडेसंसारथकी वैरा  
ग्यपामीने धर्मकरणिकरशो तेदिनआत्मानुकल्याणथशे  
बलिकायानुस्वरुपदेखाडेछे हेजव्यजविो तमेशरीरनाव  
र्णगंधफरस देखिनेघणुंलोचाइरह्याछो जेरखेमारी  
कायामुकाये रखेदूखपामे रखेविगडे एवंविचारोछोतेस  
र्वखोटुछे शामाटेजे हेदेवाणुप्रिय तमनेकायानास्वरुपनी  
खबरनथी एकायातोपुदगलदलछे एकायानेविपेतोरुधि  
रछे तथामसछे तथानेजछे तथानसजालछे विर्यछे पेसि  
छे लघुनित्यछे बढिनित्यछे एवाशरीरनेविपेतमे शुंराचि  
रह्याछो एशरीरनेपूर्वेएटलुं पालोपोसोसाचवो पणअंते  
काडरेहेवानुंनथी शामाटेजेपुदगलनो स्वजावतो सडण  
पडणविदंसणछे तेमाटेएनेविपेमुर्छा शावास्तेलाववीपडे  
तुंतारास्वरुपनी गवेखणाकरेतोठीक माटेएहवीकायाउ  
पर मुर्छाराखवीनही केमकेकायाछे एतोअसास्वती  
छे अथीरछे एनोतोधर्मजं मलवाविखरवानोछे एटलेसं  
जोगेमले अनेविजोगेजाय एवाशरीरउपर ममताराख

वीनही हवेआवखानु अनित्यपणुदखाडेछे हेभव्यजीवो  
 ससारनेविपे जेआवखुंछे एतोअनित्यछे अतेतुमेतोतृप्णा  
 घणीलावीराखोछो अनेजीवत्वंनी घडीनीवखरछेनहि  
 केमके आवखुतोअथीर जेमडाजबिंदूके० ॥ जेमडा  
 भनीअणीउपर पाणीनोविदू केटलीवारठरे तेमआ  
 वखुपण अथीरजाणवुं तथाजेमहाथीनो कानचपलछे  
 तेमआवखुपण अथीरछे तथाजेमपाणीनोपरपोटो जे  
 मसंध्यानोरग इत्यादिकअनेकद्रष्टातेकरीनेआवखुतोअ  
 नित्यछेएवुआवखूअनित्यछेतेनेविपेतु माहारुंमाहारुकरी  
 माचीरह्योछुं अतिशयतृप्णानोवायोथको अनेकआरंज  
 करेछे अनेकालतोअचानक आवीपुगशे पछिबांध्यांजेक  
 र्मते हारेआवशे अनेधनधान्यादिकमेलव्युं तेतोइहारहे  
 शे अनेएनोतोभोगदारी कोइकथशे अनेनरकादिक दू  
 खतोतारेभोगववापडशे जेमसभोमनामाचक्रवर्तिछखंड  
 नोतोभोगदारीहतो पणअतिशयतृप्णानोवायोथकोसमु  
 द्रमध्येबुडीमिआ एराजपाटरिद्वितोइहारहि अनेपो  
 तानेमरीनरकेजवुपड्युं तेमहेभव्यजीवो एवुआवखुं  
 अथिरजाणीनिमोहममतानिवारीनेधर्मसाधनकरो तेधर्म  
 साधवानुंमूलतेसमकितछेतेप्रथमकह्युंछेअनेदेवतत्व॥१॥  
 गुरुतत्व॥२॥धर्मतत्व॥३॥एत्रणतत्वनेसहहेतेनेसमकिती  
 कहिएएटलेसमकितआव्युएसमकितनुंफलशु समकितनु

फलव्रति व्रतिके०॥जेसर्वविरतिदेशविरतितेनेव्रतिकहिए  
 व्रतिनुफलतेसंवर॥ संवरके०॥आवतांकर्मनुरुंधवू॥ तेहने  
 संवरकहिए ॥ तेसंवरेनुफलतेतप ॥ तेतपनाबारजेद  
 अणसणके०॥ नोकारसिथीमांडिनेछमासिपर्यंत तेअ  
 णसणतपकहिये॥१॥अणीदरीके०॥ पुरुषनेवत्रीसकव  
 लनुप्रमाणछे स्त्रीनेअठ्याविसकवलनु प्रमाणछे ते  
 मांथकिवेतथाच्यारकवलचुरख्याउठे तेनेअणोदरतिपक  
 हिये॥२॥ अनेवृत्तिसंक्षेपके०॥ आगेवृत्तिहोयतेमांसको  
 चाविके०॥ सांकडीकरवी तेनेवृत्तिसंक्षेपकहिये॥३॥ स  
 चाहोके०॥पटरसमाधि ॥१॥२॥४॥ त्यागकरवा॥४॥काय  
 फलेशके०॥ उश्नकालेतापनीआतापनालेवि सितकाले  
 सितनीआतापनालेवि ॥ ५॥ सलिनताके०॥ अंगउपांग  
 नुंसंकोचवू॥६॥एपटविधवाह्यतप॥६॥एथकिकायावलवा  
 नि॥लोकमातपसिजणाय॥अनेकर्मवलवानिजजना॥हवे  
 पटविधअभ्यंतरतपकहेछे॥प्रायश्चितके०॥लाग्यांजेपापते  
 नेवारंवारतेसंभालिनेआलोवे॥१॥ अनेअरीहंतादिकनो  
 विनयबहूमानकरवू॥२॥वियावचपुलकप्रमुखदसनोत्था  
 बहूविधिके०॥घणानो॥३॥सझायजेअणवुजणाववूतेनेस  
 झायकहिये ॥४॥

ध्याननुस्वरूपलखीएछीए ॥ ध्यानके०॥ धर्मध्यां  
 न॥ हवेच्यारध्यानकहिएछीए ॥ त्याच्यारजेदध्यानत्रा

छे॥ आर्तध्याना॥१॥ रुद्रध्याना॥२॥ धर्मध्याना॥३॥ शुद्ध  
 ध्याना॥४॥ पेहेलावेध्यानअशुभछे एपरीहरवा अने२शु  
 द्धध्यान एआदरवां एकध्यानविपेअंतरमूहूर्त चितनोउप  
 योग तन्मयएकाग्रपणेथिररहेवो तेध्यानकहिए अनेके  
 बलिनेध्यानेनोरोकवोतेजध्यानकहिए ॥यदूक्त॥ अतोमू  
 हुतोमिता॥चितावस्थाणमेगवच्छु॥मिच्छोमच्छाणक्षाणं॥जो  
 गनिरोहोजिणाणंतु॥१॥ हवेआर्तध्यानकहेछेमनमाकांइ  
 कपीडाए आर्तथायजेआहाटंदोहटप्रणाम तेआर्तध्यान  
 कहिये॥१॥तेआरतध्याननापायाच्यारछे॥ पेहेलोइष्टवि  
 योग॥इष्टके०॥षलभभाइमित्रसज्जनमातापितास्त्रिपुत्रध  
 नप्रमुखनोवियोग एकत्वआर्तनुकरवु तेइष्टविजोगआर्त  
 ध्यानकहिये॥१॥विजोअनिष्टसजोगके०॥ अणगमतिव  
 स्तुनुआविनेमलवुतेनिचिंता आक्वेवारेटलेएवोजेएकत्वप  
 रीणाम तेअनिष्टसजोग॥२॥त्रिजोरोगचिताआर्तध्यान  
 के०॥शरीरमारोगउपन्यातेनिचिताकरे तेरोगचिताआर्त  
 ध्यान ॥३॥ चौथोअग्रशोचआर्तध्यानते आवताकालनि  
 चिंताकरवि जेआवताकालमाश्रामकरिशुकेआमकरिशुए  
 अग्रशोचआर्तध्यानकहिए ॥४॥ हवेरुद्रध्यानकहेछे रुद्र  
 ध्याननापायाच्यारपेहेलोहिसानुबधिरुद्रध्यानके०॥ जिव  
 हिसाकरतोकरावतो अथवासग्रामसबंधिवातकरतोसाभ  
 लतो तेनीअनुमोदनाकरतो तेपेहेलुध्यान॥१॥विजुमृपा

नुबंधिरुद्रध्यान ॥ जेसृपाबोलिनेराजीथावा॥तेविजोपायो  
॥२॥त्रिजुंचोरानुबंधिरुद्रध्यानके०॥चौरीठगाइकरवाना  
प्रणाम॥ एत्रिजोनेदा॥३॥ चोथोपरीग्रहरक्षणानुबंधिरुद्र  
ध्यानके०॥ नवविधपरीग्रहवधारवानाप्रणाम ॥ अथवा  
होयतेनेरखवालवानाप्रणाम॥ एचोथोपायो ॥४॥ ए  
रुद्रध्यानतोपेहेलोपायो छठागूणठाणासुधिछे ॥ एआ  
र्तरुद्रध्यानवे अंशुनमाठीगतीनाकर्णहारछेतेछोडवा.

हवेधर्मध्यानकहेछे धर्मतेव्यवहारक्रियारूपकारणते  
धर्म तथाश्रुतज्ञानतथाचारीत्र एउपादानपणेतेसाधन  
धर्म तथारत्नत्रयीनेदपणेतेउपादानशुद्धव्यवहार एटलेउ  
तसर्गमार्गानुजायीपणेतेअपवादधर्मतथाअनेदरत्नत्रयी  
तेसाधन एटलेशुद्धजिअनेनयेउतसर्गधर्मनुकारण धम्मो  
वल्छोसंहांवो जेवस्तुनोसत्तागंतशुद्धपरीणामिक स्वगुण  
प्रवृत्तिकर्तादिक अनंतानंदरूपसिद्धावस्थारह्यो तेएवं  
भूत उतसर्गउपादानशुद्धधर्मनुभासनरमण एकाग्रतापणे  
चित्तनतन्मयनोउपयोगएकेलनोचितवृणोतेधर्मध्यानकाहि  
ये तेधर्मध्याननापायाचारछे आज्ञाविचय॥१॥अपायवि  
चय॥२॥विपार्कविचय॥३॥ संस्थानविचय॥४॥त्याहांपेहे  
लोआज्ञाविचयकहेछे जेवितरागदेवनिआज्ञातेहेतकरी  
माने एटलेनगवंतेद्रव्यछनुस्वरूप तथासिद्धनूस्वरूपनि  
गोदनुस्वरूप स्यादवादनिअनेव्यवहारसहहे तेनेविपेभास



તરમણકરે તે આજ્ઞાવિચયધર્મધ્યાનનકહિએ ॥૧॥ હવે  
 વિજોઅપાયવિચયધર્મધ્યાનકહેછે જેજીવમાંઅશુદ્ધપણુર  
 હયુછે જેઅજ્ઞાનરાગદ્વેષકંઠાયઆશ્રવેમાહારાનહિ હુંએ  
 થીન્યારોછુ અનંતજ્ઞાનદર્શનચારીત્રવિર્યમાંશુદ્ધવૃદ્ધઅવના  
 શિછુ અજઅનાદિઅનત અક્ષય અક્ષર અતક્ષર અચલ  
 અકલ અમલ અગમ અનમિ અરૂપી અકર્મા અવં  
 ધક અનુદય અનુદિરક અજોગી અમોગી અરોગી અમે  
 દિ અવેદિ અછેદિ અસ્વેદિ અકલાયી અસલાયી અલેશિ  
 અશરીરી અનાસીય અણાહારી અવ્યાવાધ અનઅર્વગા  
 હિ અગુરુલઘુ પરીણામિ અણેદ્રિ અપ્રાણિ અજોતિ અસં  
 સારી અમર અપર અપરપર અવ્યાપિ અનાશ્રિત અકંપ  
 અવિરુદ્ધ અનાશ્રવ અલસ અશોકી અસંગી અલોક લો  
 કાલોકજ્ઞાયક શુદ્ધચિદાનંદમાહરોજીવિછે એવોજેએકાગ્ર  
 તારુપધ્યાનતે અપાયવિચયધર્મધ્યાનજાણવો ॥૨॥ હવેવિ  
 પાકવિચયધર્મધ્યાનકહેછે જેએવોજીવછે તોયપણકર્મવ  
 શેદૂલિછે જેજ્ઞાનંગુણ જ્ઞાનાવર્ણિકર્મેદવાવ્યોછે એટલેઆ  
 ઠકર્મેજીવના આઠગુણદવાવ્યોછે એટલેસંસારજમતાં જે  
 સુખદુઃખઉપજેસર્વકર્મનાકિધાછે એટલેઈહાકર્મસ્વરુપ  
 તુવિચારિતું ॥ તેવિપાકવિચયધર્મધ્યાનકહિએ ॥૩॥ હવે  
 ત્રીયોપાયોસરુપાનવિચયધર્મધ્યાનકહેછે ॥ ત્યાંહાંચૌદરા  
 જલોકછે તેમાંઉર્ધ્વઅદોત્રિછોલોક તેઉર્ધ્વલોકમાવિમા

निकदेवतावसेछे तेउपरसिद्धक्षेत्रछे एमलोकनुमानछे ए  
 लोकछे ते संस्थानछे - आपणोजिविसर्वलोकससारमांभम  
 तो जन्ममरणकरीफरस्योछे - एवं जेलोकस्वरूप तथालो  
 कने विषे पंचास्तिकायनु अवस्थानततेनो विचार ते संस्थान  
 विषयधर्मध्यान कहिए ॥४॥ - एधर्मध्याननाचारपायाक  
 ह्या - ॥४॥ ते ध्यानसातमागुणठाणा सुधीछे हवेशुद्ध्या  
 तक्रहेछेशुद्धके ॥ निर्मलसुद्वमरआलंबनविना आत्मा  
 नास्वरूपने तन्मयपणेधारे ॥ तेशुद्धध्याननापायाचारछे  
 प्रथक्तववितर्क सप्रविचार ॥१॥ एकत्ववितर्क अप्रवि  
 चार ॥२॥ सूक्ष्मक्रिया अप्रतिपाति ॥३॥ उछिनक्रियानिवृ  
 ति ॥४॥ तिहांपेहेलो प्रथक्तववितर्क सप्रविचारजीवथीअजी  
 वजुदाकरवास्वजावविजावजूदा प्रथकपणेवेचवास्वरूपने  
 विषेपण द्रव्यतथापर्यायनो प्रथकपणे ध्यानकरवो पर्या  
 यतेगुणमांसक्रमावेगुणते प्रजायमांसक्रमणकरे एवीरीते  
 स्त्रधर्मने विषेधर्मांतरनेदते प्रथक्तवकही एतेह नोवितर्कजे  
 श्रुतज्ञाने स्थितउपयोगने सप्रविचार तेसविकल्पउ  
 प्रयोग एकचितव्यापछी जीजोर्षितववो तेविचारकहीए  
 निर्मलविकल्प सहितपोतानीसत्तानेध्यावे - एप्रथक्तवि  
 तर्कसप्रविचार एप्रथमशुद्धध्याननापायुं एपायोआठमा  
 गुणठाणाधीमांडीते अगियास्मासुधीछे ॥१॥ एकत्ववि  
 तर्कअप्रविचारकहेछे जेजीवआपणा गुणपर्यायनी एक

ताकरीध्यावे जीवनागुणपर्याय अनेजीवतेएकजछे अने  
 माहारोजीवसिद्धस्वरूपएकजछे एहवुंध्यानतेएकत्वपणे  
 स्वरूपतन्मयपणे आत्मधर्मअनंतानो एकत्वपणेध्यान प  
 णवितर्कपणेकेहेता श्रुतज्ञानावलंबीपणे अप्रविचारके  
 हेतां विकल्परहित दर्शनज्ञाननोसमयांतरे कारणतां  
 विनाएरत्नत्रयीनो एकसमयीकारण कार्यतापणे जेध्या  
 नविर्यउपयोगनीएकाग्रता एएकत्ववितर्कअप्रविचारजा  
 एवो एपायोवारमेगुणठाणेध्यावे एवेपायामांश्रुतज्ञाना  
 वलंबीपणोछे । पणअवधिमनपर्यवज्ञाननाउपयोगेवर्ततो  
 जीवकोइध्यानकरीसकेनाहि एवेज्ञानपरानुजायीछेतेमाटे  
 एध्यानधीघनघातिचारकर्मखपावेनिर्मलकेवलज्ञानपामे  
 पछितेरमेगुणठाणेध्यानअनरीकांपणेवर्तछे पछितेरमाने  
 अंतरेअनेवउदमेगुणठाणेएवेपायाध्यावे त्याहांत्रिजोसूक्ष्म  
 क्रियाअप्रतिपातिकहेछेतेसूक्ष्ममनवचनकायानाजोगरुधे  
 शैलेशीकरणकरीअजोगीथायतेजेअप्रतिपातिनिर्मलविर्य  
 अचलतारूपप्रणामतेसूक्ष्मक्रिया अप्रतिपातिध्यानजाण  
 वुं इहासत्तायेपचाशीप्रकृतिहति तेमाहेवहोतरखपावे हवे  
 चोथोलछिनक्रियानिर्वात्तिकहेछे जेजोगनोरुधकिधापछिते  
 रप्रकृतिखपावेनेअकर्मथायसर्वकर्मथारहितथाय॥तेसमु  
 छिन्नक्रियानिर्वृत्तीशुद्धध्यानकहिये॥एध्यानचारेकह्या॥१॥  
 एनेध्यानकहिए॥५॥काउत्सर्गके०॥ आत्माथकिकायाने

श्रीसराववि तेनेकाउत्सर्गकहिए॥६॥ एषटविधअभ्यंतर  
तप तेथकिकायापणवलवानिजजना तथालोकतपसिजा  
पणानिपणभजना पणकर्मवलवानि—एहबोजेवाइयअ  
भ्यंतरथईनेवारजेदेजेतपतेतपनुंफलतेनिर्जरा ॥ नीर्जरा  
के॥आत्मानेसर्वकर्मथिमुकीनेलोकनेअतेसिद्धक्षेत्रनेविपे  
सिद्धपणेजइनेवसवुं एनेमोक्षकहिये तेमाटेहेचव्यजीवो  
जुओअनुक्रमेसमकितनुफलमोक्षथायएवुंश्रीनगवतीजी  
मांपणकहयुंछे माटेसर्धाशुद्धराखेजो सर्धाहशेतोसर्वका  
मवनिआवशे ॥ इतिश्रीसम्यक्द्वारग्रथोमुनिश्वर  
श्रीहूकमचंदजीविरचितेसप्तमोऽध्यायपरीपूर्ण ॥ ७ ॥

दुहा ॥ सप्तद्वारेकरिवर्णव्यो ॥ पुरणहूओप्रमाण  
तेअनुक्रमेवर्णवू ॥ सुणजोचतुरसुणजांण ॥१॥ प्रथमव्य  
वहारपूष्टिकरयो ॥ विजोमिथ्यानिखेद ॥ त्रिजुंसम्यक्व  
र्णव्यं ॥ जिहांकह्योवहूजेद॥२॥ देवतत्वचोथोकह्यो॥जि  
हांजिनपडिमाविचार ॥ तत्वकह्योगुरुपांचमो ॥ छठोध  
र्मतेधर ॥३॥ सातमोसाधारणकह्यो॥वहूउपदेशविचार  
एमसप्तद्वारेकरी॥ रच्योग्रंथनिरधार ॥४॥ ग्रंथसंखेपकेहे  
वाभणी ॥ हतोएहविचार ॥ कारणजोगेअधिकथयो॥ ते  
हकहूअधिकार ॥५॥ उत्तमविजयशिष्यए॥जसविजयगु  
णजाण॥तेहतणाआग्रहथकि॥ विशेषकह्योविनांण ॥६॥  
शशिग्रहखगवांणमां(१९०५)॥ ज्येष्ठत्रिजशुक्लपक्षावार

भृगुयेवर्णव्यो॥ वजाणागामप्रत्यक्ष॥ ७॥ स्वयंबुधतेवर्ण  
 व्यो ॥ मुनिहूकमजसनाम॥ भविकजीवनाहितभणि॥ प  
 ठताश्रविचलठाम ॥ ८॥ जवलगेरविसशिरहो॥ तवलगे  
 रहोएग्रथ ॥ नार्मेसम्यक्द्वारते ॥ पसंरोपूहविसथ ॥ ९॥

इति श्रीसम्यक्द्वारग्रंथौ मुनिश्री  
 हूकमचंदजकृतसमाप्तः

श्रीज्ञानविलासः

श्रीबीतरागदेवनमः ॥ श्रीगुरुभ्यान्नमः ॥

॥ अथ श्रीज्ञानविलासग्रन्थं लिख्यते ॥

॥ दुहा ॥ प्रणमुप्रासजिणंदने ॥ जेहछेसुखदा  
तार ॥ वंछीतपुरणदूखहरण ॥ चवदुवारहजार ॥ १ ॥  
समरुसरस्वतिनगवती ॥ जिनवरकठेजेह ॥ पसरती  
नव्यजीवने ॥ अत्रणसुखदाईतेह ॥ २ ॥ तेहेतणीक  
प्राथकी ॥ करुकबितासार ॥ वचेनरसांतेहसांठवुं ॥ ओ  
तालेजोविचार ॥ ३ ॥ धर्मअर्थिजेहजीवडा ॥ तेहनेसुखदा  
ईहोये ॥ मुजंपणअनुचवएहछे ॥ आत्मज्ञानेजोय ॥ ४ ॥  
तेकारणरेचनाकरुं ॥ तालवोधसुखकार ॥ भेदघणाइहां  
वर्णवुं ॥ खटद्रव्यविचार ॥ ५ ॥ ढाल ॥ केपुरहोवेअतिउ  
जलारे ॥ एदेशी ॥ राजग्रहीउद्यानसार ॥ समोसरचजिन  
राया ॥ चोत्रीसअतिसयदिपतारे ॥ विरजितेश्वररायसो ॥ चो  
गीजिन ॥ वंदोजवियणएह ॥ जेहथीनवनोछेहसोनागी  
जिन ॥ वंदोभवियणएह ॥ १ ॥ साधुमाहेसिरोमणीरे ॥ ल  
वधीतणोमंडार ॥ सजाविसरजितततीहार ॥ पुछेप्रश्नसार  
॥ सो ॥ २ ॥ विनयसहितगौतमतीहार ॥ पुछेद्रव्यविचा  
रा ॥ विरजिणंदतवउपदेशेरे ॥ सांभलगौतमउदार ॥ सो ॥

३॥ द्रव्यकहिजेजेहनेरे ॥ नविचदलेत्रणकाल॥वस्तुताजे  
हमारहिरे॥एहजद्रव्यआचार॥सो०४॥ तेहद्रव्यसंक्षेपथी  
रे॥दोयभेदकहेवाय॥रुपीश्ररुपीजाणीयेरे॥तेहनाजेदखट  
थाय ॥सो०५॥ उपजेविणसेतेसहीरे ॥ थिरताभाववखा  
ण॥संक्षेपेएमसमजियेरे॥ द्रव्यपणुतेजाण॥सो०६॥खटभे  
दहवेवर्णवुरे ॥ तेसुणजोधरिकान॥ मुनिहुकमजाणेद्रव्य  
जेरे ॥ तेहलहेवहुमान॥सी०७॥ढालपहेलीसपुर्ण ॥

॥दुहा॥ त्रणतलनासोधथी ॥ व्यवहारसमकितजोय ॥  
तेथिमुक्तिजहेनहि ॥ कारणमुक्तिनुहोया॥१॥ द्रव्यश्रन्या  
संकरवायकी ॥ निश्रेशमकितजाण॥ उतराध्येनजाखियु  
तेहभविमनआण॥२॥ तेकारणजव्यप्राणिया॥ केरोद्रव्य  
श्रभ्यास ॥ आभवपरजवसुखघणु ॥ पामोमुक्तिनिवा  
स ॥३॥ढाल ॥२॥ नदिजुमनाकेतीरउडेदोयपंखियांएदे  
शी॥जाखेविरजिणदसुणोभव्यप्राणिया ॥ द्रव्यसमज्या  
विणजेहरह्याभवरणिया ॥ तेकारणतुमेएहसमजोचितध  
री॥द्रव्यतणोविचारअनुजवखरोकरी ॥१॥ प्रथमधर्म  
द्रव्यविजोश्रधर्मकह्यो ॥ त्रिजोआकाशजाणचोथोकांल  
लह्यो ॥ पुदगलेद्रव्यतेजाणपाचमोभाखियो॥ छठोजिव  
तेजाणज्ञानियेदाखियो॥२॥ भाख्यांद्रव्यएछोय तमेचित  
मांधेरो॥ तेहमाश्रस्तिकायेपांचएकदूरेकरो॥ तेहतणोवि  
चार आगेकेहेशुंसही ॥ कालतणोश्रभाव जाणोचितमांव

हीं॥ ३॥ गुणलक्षणते पक्षप्रमाणतेजापशुं॥ नयनखेपां  
 संजुत कहिनेदाखशुं॥ कारककेहेशुं खटसैतंजंगीसही॥  
 चउभगीतेसजोण॥ अनेकजेदेग्रही॥ ४॥ प्रत्येकेप्रत्येके  
 तेहा आगेतेभाखशुं॥ तेहमांअनुभवसार आत्मनोदाखशुं  
 ॥ मुनीहूकमजाखेएहं अनुभवनिष्करो॥ तजिपरमादने  
 दूर शिवरमणीवरो॥ ५॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 दुहा॥ धर्मद्रव्यहवेवर्णवुं॥ जेहधुरेकेहेवाय॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 एजोकानदेई॥ भेदअनेकलेवाय॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 बंगाली॥ ॥ धर्मद्रव्यभाख्योछेजेह॥ गुणचारेकरेरीशोनेते  
 ह॥ जविसांजलो॥ परजायअरेकह्यातेसार॥ अनुक  
 मेजाखुंविचार॥ जवि॥ ॥ ॥ गुणअमूर्तिपेहेलोजेहे॥ तस  
 विचारभाखुंगुणगेह॥ जवि॥ ॥ ॥ चरणपांचदिशेनेहितास॥  
 तेविनाकेशिमूर्तिनिआश॥ जवि॥ ॥ ॥ गंधरसफरसनहि  
 जेह॥ संस्थानजाविदिशेनहितेह॥ जवि॥ ॥ ॥ वर्णविनाजवि  
 रुमिहोय॥ संस्थानविनामूर्तिनविकोय॥ जवि॥ ॥ ॥ अथ  
 अगुणथयोएसिध॥ त्रिजातणितुमेजांणोरींदा॥ जवि॥ ॥ ॥ न  
 हिचेतनातेअचेतनजोय॥ ज्ञानादिकरिदीनहिसोय॥ ज  
 वि॥ ॥ ॥ अक्रियेगुणतिजोजांण॥ व्यवहारनयेतेहवखाण  
 ॥ जवि॥ ॥ कोइकहेकिरियांतेनिपेदा॥ तोक्यमसाज्यकरेछेउ  
 मेदा॥ जवि॥ ॥ ॥ तेहनेकहिप्रेसांजलवर्ण॥ साज्यतणोतु  
 सुणजेसेण॥ भवि॥ ॥ ॥ साज्यतेस्वजाविकहोया॥ जलत



एतेलहुवणजोया॥नवि०६॥ स्वभाविककिरियानविकि  
 ध॥ किरियातोविभाविकलिद्व॥नवि०॥ चोथोगुणकरेचा  
 लतासाहाय॥ जडचेतननेएहिजन्याया॥नवि०७॥ मीन  
 ज्युंचालेजंलमाहे॥ पणनविचालेवेलुआहे॥नवि०॥ मीन  
 पेरेजडचेतनजाण॥ जलपेरेधर्मास्तीमान॥भवि०८॥  
 एगुणचारेस्वजाविकजाण॥ संखेपेएभाष्युमान॥भवि०॥  
 हवेकहूपरजायच्यार॥ पेहेलोखधस्वरूपउदार॥भवि०  
 ९॥ लोकाकाशप्रमाणेजेह॥ खंधएकभास्योछेतेह॥भवि०  
 उरंधअंधोत्रिछादिकजेह॥ कल्पीतदेशकहावेतेह॥ न  
 वि०१०॥ लोकाकाशनाजेपरदेश॥ प्रदेशेप्रदेशेतेहनोप्रदे  
 श॥भवि०॥ प्रदेशंकेफरसछेसात॥ आपआपणिलोवि  
 जात॥भवि०११॥ अगुरुलघुचोथोपरजाय॥ विस्तारपं  
 न्नवणएथाया॥भवि०॥ हानिवृद्धिगवेखीजेह॥ अगुरुलघु  
 जोरुयेछेतेह॥ नवि०१२॥ सुमतिग्रथेभास्युतेह॥ तेह  
 माहेनविकाइसदेह॥नवि०॥ गुणपरजायएजास्यासार॥  
 मुनिहुकंसेकह्योविचार॥नवि०१३॥ ढालत्रिजिसपूर्ण॥  
 ॥दुहा॥ धर्मद्रव्यएवर्णव्यो॥ हवेश्रधर्मास्तिकाय॥ आ  
 क्काशकालद्रव्यनो॥ केहेवामनउछाय॥१॥ ढालचोथी॥चे  
 तनचेतोरेचेतनाएदेशी॥ अधर्मद्रव्यअरुपिछे॥ अचेतन  
 केहेवायरो॥ किरियापणतेहमानही॥ गुणत्रणएथायरे॥ अ  
 धर्मद्रव्यश्ररुपीछे॥२॥ चोथोगुणहवेजाणजो॥ थिरता

भावेसाररे॥जिवपुद्गलनेतोदिए॥ विसांसोमनोहाररे॥अ०  
 २॥ वाटेवेहेतापंथिया॥ ग्रिष्मकालेजेहरे॥ देखिवृक्ष  
 उन्नारहे॥ तेमजडचेतननेएहरे॥अ० ३॥ परजायच्यार  
 पुर्वपेरे॥ इहांतेपणकेहेवारे॥ आकाशद्रव्यहवेसांचलो॥  
 गुणत्रणेएमलेवारे॥अ० ४॥ चोथोगुणहिवेतेहनो॥ अव  
 गाहनातेआपेरे॥ जिवादिजेद्रव्यछे॥ आकाशउदरमांथा  
 पेरे॥अ० ५॥ नितमांहिज्यमंखीलनि॥ मारगआपेसारं  
 रे॥ एमईहांमनजावजो॥ चोथोगुणउदाररे॥अ० ६॥ लो  
 कालोकप्रमाणए॥ खंधजेहनोसाररे॥ लोकाकाशतेदेश  
 छे॥ प्रदेशअनंताधाररे॥अ० ७॥ अगुरुलघुपुर्वपेरे॥  
 हवेकहुकालविचाररे॥ गुणत्रणेपुर्वपेरे॥ चोथोवरतनासा  
 ररे॥अ० ८॥ नविवस्तुपुराणीकरे॥ एहिजकालंस्वभावे  
 रे॥ गयोकालअनंतजे॥ प्रथमप्रजायचितलावरे॥अ० ९॥  
 अनागतअनंतछे॥ वरतमानसमयएकरे॥ अगुरुलघुचो  
 थोलह्यो॥ एहिवचनविवेकरे॥अ० १०॥ अरुपिएवरण  
 व्या॥द्रव्यच्यारेउदाररे॥ हवेरुपिद्रव्यवर्णवु॥ तेसुणजो  
 अधिकाररे॥अ० ११॥ आगेआगेज्ञाननो॥ ब्रह्मविचारक  
 हायरे॥ मुनिहूकमकहेद्रव्यथी॥ शुक्लर्ध्यानतेथायरे॥अ०  
 १२॥ ढालचौथीसंपूर्ण॥ पुद्गलद्रव्यहवेवरणवु॥ जेहरूपीकेहेवाये॥सर  
 वजगतनेआवरे॥ कहुअधिकारबनाय॥१॥ ढाले ५ मी

देखोगतिदंडवनिरे ॥ ऐंदेशी ॥ पुद्गलद्रव्यहवेवर्णधुरे ॥ जे  
 हरुप्रकृतिहेवाय ॥ जेदघणातसजाखियारेता ॥ सास्त्रमाहिसे  
 हाय ॥ सोजागिजनसाजलोरे ॥ पुद्गलतणोस्वभावअनुस  
 वचितधरोरे ॥ १॥ रक्तादिकतिहावर्णछेरे ॥ मधुरादिवलि  
 रस ॥ सुरजिदुरभिगधछेरे ॥ सीतादिकफरसासो ॥ २॥  
 परिमडलादिकजाणियेरे ॥ सस्यांतपाचिजांस ॥ मुर्तिपणु  
 तेथीथयुरे ॥ रुपिप्रणोनोविलासासो ॥ ३॥ जोगत्रणतेमु  
 द्रलछेरे ॥ प्राणप्रजातिधार ॥ लेश्यापणपुद्गलकहिरे ॥ सं  
 हासोजनिहारसासो ॥ ४॥ तंततामनतावचनतारे ॥ जड  
 ताजिडसंकेता ॥ सव्येणसस्थानजाणियेरे ॥ तेसविपुद्गलखेत  
 ॥ सो ॥ ५॥ इंद्रिअणेद्रिमणकहिरे ॥ शुभाशुभतेजांण ॥ कि  
 रियासर्वपुद्गलदशारे ॥ पुण्यपापवखाण ॥ सो ॥ ६॥ वर्ग  
 णाआठेजिवनेरे ॥ ब्रलगिछेवलिसोया ॥ तेपणपुद्गलजाणि  
 येरे ॥ करेगतागतजोय ॥ सो ॥ ७॥ जिवविनापणअवरछेरे  
 अजिवखंधअनेक ॥ द्विपरदेशीयाजहिरे ॥ अनतप्रदेशी  
 छेक ॥ सो ॥ ८॥ इत्यादिकेवहूनैठथारे ॥ पुद्गलतणुपरिमा  
 ण ॥ सखेमेइहांवर्णन्युरे ॥ ग्रंथेवोहोलुवखाण ॥ सो ॥ ९॥ गुण  
 च्यारेहवेजाखियेरे ॥ पुद्गलतणाप्रसिंध ॥ मुर्तिगुणमेहेलो  
 कह्योरे ॥ सस्यांततणिएरिद ॥ सो ॥ १०॥ अचेतनविजो  
 कह्योरे ॥ त्रिजोकिरियाजाण ॥ प्रणामिकपणुछेसहिरे ॥ ते  
 हंथिकिरियावखाण ॥ सो ॥ ११॥ गुणचोथोहवेवर्णधुरे ॥

सङ्ख्ये प्रदं एविदंशः ॥ मलणविखरणस्वंभावछेरे ॥ पडण  
गलेण आर्कशः ॥ सो ० १२ ॥ परजायच्यारे तेहनारे ॥ सांभ  
लजोधरिचिता ॥ खधपरजायमेहे लोकहोरे ॥ अनेकछे अति  
त्या ॥ सो ० १३ ॥ देशजेकांडकल्पवारे ॥ खंधखंधप्रत्येजाण  
जेहचतारिग्रहिएरे ॥ तेहनोदेशवखाण ॥ सो ० १४ ॥ प्रदे  
शतेहनजाणिएरे ॥ द्विपरदेशीथीजोय ॥ अततप्रदेशीलं  
होरे ॥ प्रदेशकेहणिसोय ॥ सो ० १५ ॥ चोथोपरमाणुकहोरे ॥  
छुंटाजेताहोय ॥ तेताइहांग्रहणकरोरे ॥ चोथोपरजायमो  
य ॥ १६ ॥ सो ० १६ ॥ अगुरुलघुसहितभास्ववारे ॥ एच्यारेपर  
जाय ॥ शिष्यकहेस्वामीसुणोरे ॥ शक्रासोहोदिथाय ॥ सो ०  
१७ ॥ पूर्वद्रव्यमांजुदोकहोरे ॥ अगुरुलघुपरजाय ॥ आ  
मांपरजायगण्योनहिरे ॥ चारमांहिसमाय ॥ सो ० १८ ॥ ते  
कारणमुजजाखिएरे ॥ कृपाकरीतेदेव ॥ गुरुकहेतुमेसांभ  
लोरे ॥ मोहदशादुरेखेव ॥ सो ० १९ ॥ हानिवृद्धीतेहमांजहि  
रे ॥ पूर्वद्रव्यमांजाण ॥ अपेक्षितद्रव्यथिरे ॥ करिएछिएते  
मान ॥ सो ० २० ॥ तेकारणजुदोलहोरे ॥ तेहमांजविस  
माय ॥ हानिवृद्धीहमांसहिरे ॥ गुणपरजायमांथाय ॥ सो ०  
२१ ॥ तेकारणजेगोलहोरे ॥ समजोशिष्यसुजाण ॥ मुनि  
हूकेमपुद्रलंशारे ॥ तेजतांकोडकल्याण ॥ सो ० २२ ॥  
दालंप्राप्तमिसंपूर्ण ॥ अजिवपांचेवरणव्या ॥ जंडताजेहकेहेवाय छेठाद्र

व्यहवेवर्णवु जेहछेचेतनराय ॥१॥ विणआतमजेहजेहक  
 था निष्फलजाणोतेह आत्मकथाअनुभवसही आपेशि  
 वपुरगेह॥२॥ तेकारणआतमकथा नाखुछुअभिराम मुझ  
 मनउलटछेधणो पांमवावछीतठाम॥३॥ तेकारणओता  
 तुमे माचलोथईसावधान तनमनवचनएकाग्रहे गुरुवच  
 नेंधरिकान॥४॥ ओतावक्तागुणलहे पामेवछीतधाम आ  
 त्मद्रव्यचरचांधकी शुक्लध्याननुठाम॥५॥ ढालं ६ ठी॥  
 देशीमोतीडानी॥ छठोद्रव्यजिवतेभारुयो चेतनालक्षणे  
 करिनेदारुयो साहेबाआतमसुखकारी मोहनाज्ञानिगुण  
 धारी जिवनासमजोने॥एआंकणी॥अवेदिअछेदिभारुयो  
 अजोगिअजोगिदारुयो ॥ सा०१ ॥ अवर्णअगंधिकहिए  
 अरसअंफरशीलहिएअक्रोधिअमानिजाण अमाइअलो  
 निवखाण॥सा०२॥अरागिअद्वेपीजेह अकंचनिदिठोगु  
 एगेह अमोहिअद्रोहिकहिये अलेशीगुणताहरेचहिये ॥  
 सा०३॥ प्राणएकेदिसेनहिताहरे परजासीएकेनहिधारे  
 अमूर्तिअरूपिकहिये अक्षयपदगुणताहरेलहिये॥सा०४॥  
 अचलअविनाशीतुहिस्वामि आद्यअतनुहिअनामी अयो  
 निअजन्मीकहिये अशरीरीआतमलहिये॥सा०५॥ अ  
 जंरामरपदताहरेसोहे तेदेखिअविनामनमोहे इत्यादिक  
 तुजगुणअनंत एकजिभेकेमजाखेसंत॥सा०६॥ तोपण  
 संखेपेइहांजाखु वालजिवनेहेतकरिदाखु तेमाहिमुख्य

गुणचार तेहकहूसुणोअधिकार ॥सा०७॥ प्रथमगुणज्ञा  
नजजाणो अनंतुलोकालोकप्रमाणो सुरजपेरेकरेउद्योत  
जेहनिभाखिअनंतिजोत ॥सा०८॥ त्रिजोगुणतेदर्शन  
भाख्यो सांमान्यउपयोगकहिनेदाख्यो समयअंतरउप  
योगकहावे विशेषज्ञानगुणतेथावे ॥सा०९॥ तीजोगुण  
चारित्रकहिये ज्ञानदर्शनमांहिरहिये थिरताचावअनंतो  
जेह तेगुणजाख्योचारित्रएह ॥सा०१०॥ विरजअनंतु  
सोहियेसार गुणओथोकह्योमनुहार इहांचरचावोहोली  
जणाय तेतोआगलकेहेवाय ॥सा०११॥ अव्यावाधपेहेलो  
परजाय बाधापिडातिहांतकेहेवाय रोगसोगतिहांतवि  
होय होयेतोविजावेजोय ॥सा०१२॥ अमूर्तिपरजायवि  
जोलहिये संस्थानतणोअजावकहिये वर्णादिदिशेनहि  
तास तिहांरुपिनिकेविआस ॥सा०१३॥ अणअवगा  
हत्रिजोकेहेवाय शिष्यकहेकेमहेवुथाय शिष्यनेपणअवगा  
हनाभाखी तुमेतोइहांतेनविदाखी ॥सा०१४॥ कहेगुरुसां  
नजतुंजाई अवगाहनविचारचितलाई जेहअवगाहनसी  
दनेकहिये तेतोपुद्रलजावथीलहिये ॥सा०१५॥ कहेशि  
ष्यतिहांपुद्रलनांहि केममनायकहोनेसांहि सांभलशिष्य  
तुंवातएह अवगाहननेदकहूछुतेह ॥सा०१६॥ जिवअ  
नंताछेसंसार अवगाहनअसरूपतेधार जेहजिवरेहेतोहि  
गोदमांहि तवअवगाहनाछोटीतांहि ॥सा०१७॥ पाख्यो

रूपपचंद्रीनुजारे तव अवगाहनामोटीधारि एमभवन्नवकं  
 रतातेजाणो अवगाहनाफरतितेवखाणो ॥सा०१८॥ व  
 लिअवगाहनासिद्धनेजेह सोपणएकजावनहितेह जघन्य  
 आंगुलवत्रिशायिलहिये उतकष्टेधनुपत्रणसेकहिये ॥सा०  
 १९॥ धनुपतेत्रीशउपरजाणो आंगुलवत्रिसंप्रमाणो अ  
 वगाहनामध्यजावेजेह असरूपभेदकह्याछेतेह ॥सा०२०॥  
 जेहछंडधुंससारमाहि शरिरप्रमाणेलहियेताहि जागएक  
 पोंलोरनोछंडी दोयभागअवगाहनमडी ॥सा०२१॥ पुं  
 दंगलथिअवगाहनसिद्ध पणस्वजाविकनविकिध स्वजा  
 विकअवगाहनकहिये तोसरवेनिएकजलहिये ॥सा०२२॥  
 एकभेदतोदीसेनहि तेथीअणअवगाहनसाहि ॥अंगुरुलघु  
 चोयोपरजाय एचारेपरजायथाय ॥सा०२३॥ गुणव्यारे  
 द्रव्यनादाख्या परजायचारेसांथेजाख्या खटद्रव्यनते  
 जाणो सक्षेपेइहांवखाणो ॥सा०२४॥ जिवस्वरूपएभा  
 स्युसार जेहथकीलहियेनवपार मुनिहूकर्महवेआगेकेहे  
 से साधरमिकपणुउल्लासे ॥सा०२५॥ ढालछठीसंपूर्ण ॥  
 ॥हुहा ॥खटद्रव्यएवणव्या वर्णव्योगुणपरजाय हेवसा  
 धरमिकपणुकहू अन्योन्यसोहाय ॥३॥ ढालसातमी ॥  
 तिरथनिआशातनोनविकरिये ॥एदेशि ॥ सांधरमिकपणु  
 द्रव्यनुएमभास्यु सास्त्रेकाहिनेदास्यु समजुएचितमारा  
 स्यु तमेसमजोएम सांधरमिकपणुद्रव्यनुएमजास्यु ॥३॥

अगुरुलघुपरजायएतुमेजाणो सरस्वोसहूद्रव्यमांआणो  
 अरुपिगुणवखाणो पांचद्रव्यमांएह ॥सा० २॥ एगुणन  
 थिपुद्रलविपेएमजाणो अचेतनपाचनेमानो जीवमांएनवि  
 कहाणो एमजाणोवात ॥सा० ३॥ किरियागुणछेदोयमां  
 एमजाणो जिवपुद्रलमाहिंवखाणो व्यवहारनयेपरमाणो  
 नहिचारमांसोय ॥सा० ४॥ चलणगुणधर्मास्तिमांएमजहि  
 ये विजापांचमांनविकहिये अंधर्मथिरगुणवहिये नहि  
 पांचमांसोय ॥सा० ५॥ अवगाहनागुणआकाशमांतुमेंधा  
 रो तेपांचमांनविविचारो वर्तनागुणकालमांसारो नहि  
 पांचमांकीय ॥सा० ६॥ मलणविखरणगुणपुद्रलमांएभाख्यो  
 मुर्तिपणेपणदाख्यो जेहनिग्रथेदिसेसाख्यो पांचद्रव्यमां  
 नांहि ॥सा० ७॥ ज्ञानादिकगुणचारछेजेकहिये तेतोजीव  
 जमांहिलहिये विजेद्रव्येनवीकहिये तेतोचेतनसार ॥सा०  
 ८॥ अमुर्तिअचेतनअकिरिये परजायच्यारेभरिये त्रणेंद्रव्य  
 अनुसरीये प्रथमनाजाण ॥सा० ९॥ त्रणगुणेकरिकालद्रव्य  
 छेसरस्वो जिवपरजायजुदानरस्वो सरवेनेगारह्यापरस्वो  
 लोकाकाशमांही ॥सा० १०॥ मुलगुणएकएकनोनविमलतो  
 अन्योन्यनविमलतो निजस्वभावनेधरतो एहवोद्रव्य  
 स्वभाव ॥सा० ११॥ साधर्मिछद्रव्यनुकहिजाख्यु मुनिहूक  
 मेदाख्यु समजुयेचित्तमांराख्यु जेहनेवलभज्ञान ॥सा०  
 १२॥ ढालसातमीसंपूर्ण ॥



॥दुहा॥ साधरमिकपणुभाखीयु द्रव्यछेयनुजांण हवे  
गुणद्रव्यनावर्णवु श्रोतासुणोएकतांन ॥१॥ ढाल ८ मी  
एतिरथतारु ॥ एदेशि ॥ निश्चेनयनेमतेजाखु छद्रव्यप्र  
णामिकढाखुरे एगुंणछेवारु वेहेवारनयेचारनेभाख्या  
जिवपुद्गलकहिनेदारुधारे एगुंणछेवारु ॥१॥ पांचद्रव्य  
आजिवकहावे एकचेतनातेजिवथावेरे ॥ ए० ॥ छयेद्रव्यमां  
पुद्गलरूपी विजापांचेअरुपिरे ॥ ए० २॥ छयेद्रव्यस्व  
प्रदेशिभाख्या निश्चेनयेएदारुधारे ॥ ए० ॥ व्यवहारनयेपा  
चजलहिये कालअप्रदेशिकहियेरे ॥ ए० ३॥ धर्मअधर्म  
असंख्यप्रदेशि आकाशअनतप्रदेशिरे ॥ ए० ॥ असंख्यप्रदे  
शीजिवकहावे पुद्गलपरमाणुआवेरे ॥ ए० ४॥ अनंत  
प्रदेशिखंधकहावे एहवाखंधअनताहोवेरे ॥ ए० ॥ तेपण  
सर्वेद्रव्यमागणवा स्वप्रदेशीभणवार ॥ ए० ५॥ धर्मअ  
धर्मआकाशकेहेवे एकएकद्रव्यतेहोवेरे ॥ ए० ॥ पुद्  
गलकालनेजिवकहिये तेहनाद्रव्यअनेकलहियेरे ॥ ए०  
६॥ आकाशसर्वेद्रव्यनुजाजन तेमाहिवसेपांचमाहाज  
नरे ॥ ए० ॥ एकखेत्रनेपाचछेखेत्री एकठावसेछेमित्रिरे ॥  
ए० ७॥ निश्चेनयेकरिनेजांणो छयेद्रव्यसक्रियमांणो  
रे ॥ ए० ॥ व्यवहारनयेचारअक्रिय जिवपुद्गलजाण्या  
सक्रियरे ॥ ए० ८॥ निश्चयनयेकरिनेजोता छयद्रव्यनि  
त्यहोतारे ॥ ए० ॥ अथवाछयअनित्यकहिये एमनिश्चयनय

थिलहियेरे ॥ ए० ९ ॥ व्यवहारनयेकारिएमभाखुं चार  
द्रव्यनित्यदाखुरे ॥ ए० ॥ जीवपुद्गलान्नित्यकहावे एमन  
यभेदसोहावेरे ॥ ए० १० ॥ सर्वद्रव्यनुसारतेजाणो कारण  
एकजिववखांणोरे ॥ ए० ॥ पांचद्रव्यमांकारणनहि तेथीअ  
कारणीकह्यासहिरे ॥ ए० ११ ॥ कर्त्तापणुएकजिवमाजा  
स्यु तेतोनिश्चयनयेदाख्युरे ॥ ए० ॥ जिवपुद्गलदोहिकर  
ता व्यवहारनयेमनधरतारे ॥ ए० १२ ॥ सर्वव्यापिकआका  
शजाणो पांचद्रव्यलोकप्रमाणोरे ॥ ए० ॥ एछद्रव्यए  
कठारेहेवे आपआपणीसत्तायेहोवेरे ॥ ए० १३ ॥ एगुणतो  
विचारवासरखा वहुश्रुतपासेपरखारे ॥ ए० ॥ मुनिद्वकम  
कहेवहुश्रुतशेवो जेथीपामोज्ञानगुणमेवोरे ॥ ए० १४ ॥ ढाल  
आठमिसंपूर्ण.

॥ दुहा ॥ स्यादवादहवेनाखीये जिनसासननोमर्म पक्ष  
आठइहांवर्णवु जेहथिजायदूकर्म ॥ १ ढाल ९ मी ॥ धन  
धनसंप्रतिसाचोराजा ॥ एदेशि ॥ द्रव्यसर्वमांपक्षभाख्या  
नित्यादिकजेहआठरे तेहस्वरुपसमजेकोइविरला जेहनि  
दुरमतिनाठरे स्यादवादजिनवांणिवखाणि श्रोतासमजो  
सुजाणरे ॥ एआंकणि ॥ नित्यानित्यपक्षतेभाखुं खटद्रव्य  
मांसाररे प्रथमधर्मद्रव्यतेकहिये जेहनागुणछेचाररे ॥  
स्या० २ ॥ खंधपरजायपेहेलोकहिये तेसविनित्यकहायरे  
छेकत्रणेअनित्यभाख्या धर्मविचारएमथांयरे ॥ स्या० ३ ॥

अधर्मद्रव्यनागुणचारण वल्लिएकपरजायरे वाकित्रणे  
 अनित्यजाख्या परजायएमसोहायरे ॥ स्या० ४॥ पुर्वप्र  
 माणेआकाशद्रव्यने कालमानित्यगुणचाररे परजायचार  
 अनित्यकहिये पुद्गलनित्यगुणचाररे ॥ स्या० ५॥ परजाय  
 चारअनित्यभाख्या जिवनाजेहगुणचाररे अणपरजायस  
 हितनित्यकहिये अगुरुलघुअनित्यविचाररे ॥ स्या० ६॥ एक  
 अनेकपक्षहवेजाखु खटद्रव्यमासोयरे धर्माधर्मद्रव्यनोखंध  
 जेह एकएकतिहाहोयरे ॥ स्या० ७॥ लोकप्रमाणेखधतेभा  
 ख्यो गुणपरजायप्रदेशअनेकरे लोकालोकप्रमाणेजाणो  
 आकाशखधछेएकरे ॥ स्या० ८॥ गुणअनंतपरजायअन  
 ता प्रदेशअनंताजाणरे कालद्रव्यमावर्तनालक्षण एक  
 जछेगुणखाणरे ॥ स्या० ९॥ गुणपरजायनेसमयजेहवल्लि  
 तेतोअनेककहायरे अतितअनागतकालनासमय तेतोअ  
 नंताथायरे ॥ स्या० १०॥ तेमाहिर्वर्तमानकालनो समय  
 एकजहोयरे पुद्गलद्रव्यनुएकपणजेह नामथकिजेहजोय  
 रे ॥ स्या० ११॥ पुद्गलपरमाणुअनंता अनंतखंधकहायरे  
 तेमाहिपुद्गलपणुएह एकजनियमथायरे ॥ स्या० १२॥ गु  
 णपरजायअनंताजाख्या एकपरमाणुमाहिरे स्यादवाद  
 मंजरीवेजो जो विशेषविचारछेतांहिरे ॥ स्या० १३॥ जीव  
 अनताछेजगमाहि असख्यप्रदेशिसतरे प्रत्येकेप्रत्येकेजि  
 वनाजाणो गुणपणछेअनंतरे ॥ स्या० १४॥ परजायअनं

तावलिजाणो एवाबोलअनेकरे जिवपणुतेमांहिजोतां दिसे  
छेकांईएकरे॥स्या० १५॥ एवांवचनसुणीनेबोल्पोशिष्यविन  
यकरितांहिरे स्वामीतुमेजिवसरखोनाख्यो दिशेजुदो  
आंहिरे॥स्या० १६॥ एकजिवतोसिद्धपोहोचो पांम्योसुख  
अनतरे एकजिवकर्मनेवशपडीयो नाव्योदूःखनोअंत  
रे॥स्या० १७॥ एमजोतातेएकननासे जुदादिसेसर्वे  
अममनमांशकाएमोटि केमनाखोएकजद्रव्यरे॥स्या० १८  
कृपाकरिगुरुउत्तरनाखे समझोचित्तमोझाररे जिवसर्व  
कर्मखपावी पांमेछेनवनोपाररे ॥स्या० १८॥ निश्चयनये  
करिनेजोतां जिवसर्वेसिद्धथायरे सत्ताजोताएकजदिशे ते  
थिएककेहेवायरे ॥ स्या० २०॥ शिष्यकहेजोसत्ताएकछे  
तोअनविसिद्धथायरे पणअभविकोईमुक्षेनजावे तोकेम  
एककेहेवायरे ॥ स्या० २१ ॥ शिष्यसंदेहनिवारवाकाजे  
कहिशुंतासस्वरुपरे मुनिहूकमकहेद्रव्यस्वभावनु आगे  
कहिशुरुपरे ॥ स्या० २२॥ ढालनवमीसंपूर्ण ॥

॥दुहा॥एकानेकस्वरुपमा आव्योजिवविचार नव्यअ  
नव्यनोभाखशु स्वभावतेएकाकार ॥१॥  
ढाल १० मी ॥ नवितुमेवंदोरेसुरीश्वरगछराया ॥एदेशी॥  
भवितुमेसमजोरेजिवस्वरुपएसाचु भव्यअभव्यएकजक  
हिये मतकोइजाणोकाचु भवितुमेसमजोरेजिवस्वरुपएसा  
चु॥१॥ जेहजिवनिगोदमांवशिया तेमंलिसिद्धनाजांणो

तेसविएकस्वजावजकहिये जेदत्रणेवखाणो ॥ जवि० २॥  
 जव्यअभव्यनेजवाभवि तेहतणोविचार कारणजोग्यसा  
 मग्रीपामी पलटेभव्यनिरधार ॥ ज० ३॥ सामग्रीअजा  
 वेकरिने भव्याभव्यतेजाणो पामिसांमग्रीजेहनविपलटे ते  
 अजव्यकहाणो ॥ भ० ४॥ जिवसरवअसंख्यप्रदेशि लो  
 काशप्रमाणो ओछोअधिकोएकनहोवे एमस्वरुपतेजाणो ॥  
 भवि० ५॥ ज्ञानादिकगुणचारेजाणो जिवसरवमासरखा  
 लक्षणस्वभावएमजकहिये ज्ञानिवचनेपरखा ॥ भवि० ६॥  
 कांइसीद्वमाकाइससारि तेहस्वरुपहवेजाखु आपआप  
 णिविर्यशक्ति फोरवाविणतेदाखु ॥ भवि० ७ ॥ पदअरि  
 हतपाम्याजेहनर कर्मशत्रुहणिने शिष्यकहेइहांशंका  
 मोटि कर्मपणानेभणीने ॥ भवि० ८॥ अरिएहवोशब्दश  
 त्रुनो हणतोअरिहतकहिये त्रिजचादिकपणजाणो वेहेर  
 पोतानुलहिये ॥ जवि० ९ ॥ राजाराकपणतेसर्वे वेहेर  
 पोतानुसजारे आपआपणाशत्रुहणेछे अरिहंतपदतेधा  
 रे ॥ जवि० १० ॥ एमजोतासर्वेतेदिसे अरिहतपदतेसा  
 चो तेहशब्दमाकर्मनदिशे केमखोटुइहाराचो ॥ भवि० ॥  
 ११॥ कृपाकरिहवेगुरुजिबोल्या सांभलशिष्यसुजाण ते  
 कहातेसरवेमुढ करेस्वजातिनिहाण भवि० १२ स्वजाति  
 निघातकरचाथी अरिहंतपदनविथाय विजातिनोघातक  
 रचाथी अरिहंतपदकेहेवाय ॥ भवि० १३ ॥ शिष्यकहेअ

मेनविजाणु स्वजातिविजातिविचार कृपाकरिनेअमनेस  
मजावो जेमजाणुजेढमनोहार ॥ भवि० १४ ॥ कृपाकरि  
गुरुजिहवेवोल्या सांभलभेदउदार मुनिदूकमकहेआग  
लकहिशु स्वजातिविजातिविचार ॥ नवि० १५ ॥ ढालद  
शमिसंपूर्ण ॥

॥ दुहा ॥ नव्यअभव्यस्वरुपमां आविचरचासार अ  
रिहंतपदनेकारणे स्वजातिविजातिविचार ॥ १ ॥

ढाल ११ मी ॥ सिद्धाचलसिखरेदिवोरे आदेश्वरअलवे  
लोछे ॥ एदेगी ॥ स्वजातिराखिथयानाथरे अरिहंतपद  
तुमेपूजोने ए आंकणी विजातिनेदेखाड्योहाथरे अ०  
स्वजातिविजातिजोगेरे अ० चौभंगिउठिरंगेरे ॥ अ० १ ॥  
स्वजातिविजातिलाहिशुरे अ० प्रथमतसस्वरुपकहिशुरे  
अ० पछीचउजगिजाखिशुरे अ० तसभेदविवरिनेदाखि  
शुरे ॥ अ० २ ॥ सरखेवइभवेजेतारे अ० स्वजातिकहिये  
तेतारे अ० ज्ञानादिकगुणेजरियारे अ० जीवसर्वेतेवरि  
यारे ॥ अ० ३ ॥ लक्षणस्वभावतेसरखारे अ० तेस्वजाति  
नरखारे अ० तेहथिविपरितजेहदेखोरे अ० विजातिपद  
तुमेपेखोरे ॥ अ० ४ ॥ जिवेजिवस्वजातिजाणोरे अ० पांचद्र  
व्यविजातिमानोरे अ० तेहनिचउजगिजाखुरे अ० नामा  
दिककहिनेदाखुरे ॥ अ० ५ ॥ आपआपणिजातमांवेहेररे  
अ० हाणिनेकरताकेहेररे अ० तेप्रथमजंगतेजाणोरे अ०

स्वजातिस्वजातिवखाणोरे ॥अ०६॥ जेहपुढलद्रव्यनेह  
 एतारे अ० स्वजातिरखोपुकरतारे अ० भगवीजोतेहिजा  
 णोरे अ० स्वजातिविजातिमानोरे ॥अ०७॥ पुढलथिजि  
 वहणाधरे अ० जगतमांएमजणायरे अ० विजातिस्वजा  
 तिजाणोरे अ० जगत्रिजोएहिमानोरे ॥अ०८॥ जडजड  
 प्रतेहणतारे अ० माहोमाहेक्षयकर्तारे अ० विजातिविजा  
 तिमानोरे अ० जगचोथोएवखाणोरे ॥अ०९॥ जंगचार  
 माहितुमेजाणोरे अ० जंगत्रणेतुमेनवखाणोरे अ० भंग ए  
 कजअरिहतकहियेरे अ० विजोनागोतिहालहियेरे ॥अ०  
 ॥१०॥ नामचारेइहानाख्यारे अ० सक्षेपेकहिनेदाख्या  
 रे अ० आगेविस्तारेकहिशुरे अ० नेदघणाइहांलहिशुरे  
 ॥ अ०११॥ भावार्थजेरुदयेधरशेरे अ० श्रोतातेसमकि  
 तवरशेरे अ० मुनिहुकमज्ञानएसाचोरे अ० प्रत्यक्षहिरोजा  
 चोरे ॥अ०१२॥ ढालअगिश्रारमिसपूर्ण ॥

॥ दुहा ॥ स्वजातिविजातिवर्णव्या वर्णव्यावलिचउजं  
 ग वरणवकरुचउजगनो रुदयधरिवहूरंग ॥१॥  
 ढाल १२ मी ॥ कोयलपरबतधुधलोरेलाल ॥ एदेशि ॥  
 स्वजातिस्वजातिवरणवुरेलालपेहेलोभांगोजेहनविहाणि  
 येरे हणताकर्मवधहोयखरोरेलाल दुरगतिजावेतेहन  
 विहाणियेरे स्वजातिस्वजातिवर्णवुरेलाल ॥१॥ वाघमंजा  
 रीदिपडारेलाल पन्नगादिकबहुजाति ॥ नवि० ॥ सारगमु

सादिहणरेलाल मंडकादिबहूजात ॥नवि स्व० २॥ विजा  
तिजाणेअज्ञानियारेलाल ज्ञानिजाणेस्वजात नवि० ज्ञा  
निवचनथीओलखारेलाल जिवेजिवछेजात ॥नवि स्व०  
३॥ जिवेजिवनेहणरेलाल क्षुधावेदनिनेकाज नवि० स्व  
जातिस्वजातिशंहणरेलाल तेजमेचउदराज ॥नवि स्व०  
४॥क्षुधावेदनिपुद्गलदशारेलाल तेतोविजातिहोय नवि०  
तेकारणजिवनेहणरेलाल तेस्वजातिजोय॥नवि स्व० ५॥  
धनरमणिनिलालचेरेलाल प्रथविप्रमुखजाण नवि० रा  
ज्यलेवावलिअन्यतणुरेलाल तेहथिएअनाण॥नवि स्व०  
६ ॥ अथवावेहेरपुर्वतणुरेलाल पुत्रपितानुसंभार नवि०  
अथवाअनागतकालनुरेलाल अगमबुद्धिविचार ॥ नवि  
स्व० ७॥तेकारणजिवनेहणरेलाल तेसुणोविचार नवि०  
धनतोछेजडदशारेलाल तेविजातिधार ॥नवि स्व० ८॥  
कृत्यअकृत्यनविगणरेलाल रमणिरसविरुद्ध नवि० वि  
पयरसपुद्गलदशारेलाल साचिएहिजबुद्धा॥नवि स्व० ९॥  
प्रथविपणविजातछेरेलाल राज्यमिश्रजांगोमान नवि०  
प्रथविधनादिविजातछेरेलाल मनुष्यादिस्वजातिजाण॥न  
वि स्व० १०॥राजारजादिस्वजातछेरेलाल देशविजाति  
होय नवि० विजातीनेकारणरेलाल स्वजातिनेहणसोय  
॥नवि स्व० ११॥ देशधनरमणिसाहिरेलाल जोगविजा  
तितेजाण नवि०जिवनाभोगमांतेनाहिरेलाल पुद्गलजोग



इहांमांन ॥नवि स्व० १२॥ ज्ञानादिजेगुणछेरेलाल तेह  
 नोजोगीजिव नवि० पुद्गलजोगजिवनविलहेरेलाल एम  
 समजोसदिव ॥नवि स्व० १३॥ इत्यादिकारणथकिरेला  
 ल किधोजिवसहार नवि० शत्रुनेमित्रगण्योरेलाल तेमुर  
 खसिरदार ॥नवि स्व० १४॥ विजातिभोगनेकारणेरेला  
 ल-किधिस्वजातिनिहांण नवि० स्वजातितेमित्रदशारे  
 लाल विजातितेशत्रुजाण ॥नवि स्व० १५॥ तेहनेअरिह  
 तक्यमकहियेरेलाल तेतोमित्रिहत नवि० मुरखमांहे  
 शिरोमणिरेलाल जेणेहण्याछेजत ॥नवि स्व० १६॥  
 स्वजातिस्वजातिनेहणेरेलाल एपेहेलोनांगोकिध नवि०  
 अरिहतपणुतेहमानहिरेलाल पापतणिएरिद्धा ॥नवि स्व०  
 १७॥ स्वजातिविजातिनाखशुरेलाल जेअरिहतकेहेबाय  
 नवि० मुनिदूकमविजेनागेरेलाल शेवताशिवपुरजाय ॥  
 नवि स्व० १८॥ ढालवारमीसपूर्ण॥

॥ दुहा ॥ स्वजातिस्वजातिवरणव्यो हवेकहूबिजोअग  
 स्वजातिविजातिजाणजो रुदयधरिवहूरग ॥१॥ भावति  
 र्थकरजेहुवा हुवावलिकेवलजेह तेसविएअंगशेवता पां  
 म्यावळितगेह॥२॥तेहतणेचरणेनमी जाखुतेवृत्तात मुजम  
 नमाईच्छाघणी पामवाभवनोअत॥३॥निद्राविकथापरिह  
 रो परिहरोदुध्यान मननेणएकतानकरी ओतासुणोसाव  
 धान॥४॥ आगेएहमारसघणो ज्ञानतणोविशाल अरिहं

तपदजेहथिलहे अविचलसुखरशाल ॥५॥

ढाल १३ मी॥ करजोडीकहेकामनिललनां ॥ एदेशि॥ अ  
रिहंतपदनिजशक्तियेललनां लालाहोहणिविजातिथाय  
एपदवारुरेललनां ॥ एआंकणि ॥ स्वजातिविजातिभाख  
शुललनां लालाहोभांगोविजोकेहेवाय एपदवारुरेलल०  
पुद्गलसविविजातिछेललनां लालाहोतेहनानांगाआठ ॥  
एपद०॥ वर्गणातेसविजाणियेललनां लालाहोसुणोतेह  
नोठाठ ॥ एपद० २॥ उदारिकवर्गणापेहेलिकहिललनां  
लालाहोविजिवैक्रीयजाण ॥ एपद० ॥ आहारकवर्गणा  
त्रिजिकहिललनां लालाहोचोधितेजसवखाण॥ एपद० ३॥  
जापावर्गणापांचमिललनां लालाहोउसासछठिकेहेवा  
य ॥ एपद० ॥ मनोवर्गणासातमिललनां लालाहो  
आठमिकारमणथाय ॥ एपद०॥ वर्गणाआठेतेसहिललनां  
लालाहोहवेनाखुतसमान ॥ एपद० ॥ छुटाजेतांपरमाणु  
आललनां लालाहोतेनविवर्गणाजाण ॥ एपद० ४ ॥ दो  
येपरमाणुनेलामलेललनां लालाहोद्वीपरदेशिकेहेवाय ॥  
एपद०॥ द्वणुकखंधतसनामछेललनां लालाहोएमअनुक्र  
मेथाय ॥ एपद० ६ ॥ त्रणप्रदेशिजेहूवेललनां लालाहो  
तणुकखंधकेहेवाय ॥ एपद० ॥ एमएकएकवधुतेथकेलल  
नां लालाहोआठलगेतेकेहेवाय ॥ एपद० ७॥ आपआ  
पणानांमथिललनां लालाहोसंज्ञातिहठराय ॥ एपद० ॥

थकीरे दूधविनाघृतनहोय तेकारणतृणमारह्युरे घृतस  
 दातेजोय॥प्रा०११॥श्रीघशक्तीथीजेमतृणमारै, घृतरह्य  
 छेसार तेमनिगोदादिकजाणीयेरे ॥ जिवपदार्थउदार  
 ॥प्रा०१२॥एकसुखिएकदूखिदिशेरे एकराजाएकराकए  
 कवेसेएकउपाडतारे एकआगलदोडेआक ॥प्रा०१३॥ते  
 मविपुर्वेनवकरारे शुभाशुनतेजोय पचभुतमाकरणिन  
 हिरे तेहविचारीजोय॥प्रा०१४॥शुभाशुननेटालिनेरे निज  
 स्वरुपथयोजेह शक्तितेव्यक्तितईरे मुक्तीजाणोतेह॥प्रा०  
 १५॥तेहिजदेवजापियारे तसआणाधारेजेह तेहनेगुरुज  
 णीयेरे निग्रथपढेतेह॥प्रा०१६॥भास्युतेहनुधर्मकहारे  
 तत्वत्रणेएह व्यवहारथकीएदाखियारे निश्चयआंतमजेह  
 ॥प्रा०१७॥कर्ताएसृष्टीतणारे दिशेनहिइहांकोय सासि  
 याजावछेसहिरे आगमबुद्धीतेहोय ॥प्रा०१८॥कर्तापुद्ग  
 लधर्मनोरे पुद्गलकर्ताजाण जिवधर्मनोजिवछेरे निश्च  
 यज्ञानतेआण॥प्रा०१९॥कर्ताधर्मवादीकहारे कर्तावीणके  
 मथाय जेजेपदारयनीपन्यारे कर्ताएनीपाय॥प्रा०२०॥त  
 सउत्तरआगेसहीरे भाखीशुसुखकार मुनीहूकमतेसुणता  
 रे मोहदशानीवार॥प्रा०२१॥ढालपदरमीसपूर्ण ॥  
 ॥दुहा॥ नास्तिकवादपुरोधयो हवेसुणोइश्वरमत कर्ता  
 मानेतेसहि ज्ञाननसमजोसत॥१॥ तिखोथडतवबोलियो

॥२॥ बालभापातमेभाखता बालज्ञानीसोय अमेगिरवाण  
भापाकहिये ज्ञानिसाचाजोय ॥३॥ रोसकरिनविवोलि  
ये रोसेसमजनहोय समताराखिसुणतु अज्ञानभावतेजो  
य ॥४॥ ॥ढालसोलमी॥ ताहरामेहेलउपरवरसेमेह  
झवुकेविजलिहोलालझवुकेविजलि ॥एदेगि॥ नारुयुतु  
मेएमअमेज्ञानिसहिहोलाल अमेज्ञानिसहि पणविचारि  
जुओतुमेकाईचितयईहोलाल ॥तुमे॥ कर्तापणुदाखोछो॥  
तुमेकाईअन्यतेहोलाल॥तुमे॥ तोतुमेरह्याअताण विचारो  
मननेहोला॥वि०१॥ ज्ञानअनाणतसहाथरह्युतेजाणियेहो  
ला॥२०॥ तोतुमेज्ञानिकेमकहोतेमाणियेहोलाल ॥क०॥  
कर्तासृष्टीनोजेह ईश्वरतुमेभाखियोहोला॥ई०॥ तोपुन्य  
पापफलकेम ईहातुमेदाखियोहोला॥ईहां०२॥ शुभाशु  
भजेकरणिपोतानिजोगवेहोला॥पोता०॥ ईश्वरकर्तापणुं  
ईहानविजोगवेहोला॥ईहा०॥ ईश्वरकर्तापणुंहोवेतोक  
रणिसहिहोला॥तो०॥ फलनविआपेकोईविचारोचि  
तग्रहिहोलाल ॥वि०३॥ सुखदुखदेवुतेसविकर्ताथिरह्यु  
होला॥क०॥ तोकर्णिनुशुकामकष्टफोगटथयुहोला॥  
क०॥ रागद्वेशनहिहोयईश्वरतेनेकहियेहोलाल ॥ई०॥ स  
जाविहोयजेहपरमपदतेलहियेहोला॥प०४॥ एक  
नेआपेसुखबीजानंदुखघणुहोला॥विजा०॥ एविकर  
णिनहोयईश्वरनिसास्त्रेभणुहोला॥ई०॥ तेथिकर्तानहि

थकीरे दूधबिनाघृतनहोय ते कारणतृणमारह्युरे घृतस  
 दातेजोय॥प्रा०११॥ओघशक्तीथीजेमतृणमारै, घृतरह्यु  
 छेमार तेमनिगोदादिकजाणायेरे ॥ जिवपदार्थउदार  
 ॥प्रा०१२॥एकसुखि एकदूखिदिशेरे एकराजा एकरांक ए  
 कवेसे एकउपाडतोरे एकआगलदोडेआक ॥प्रा०१३॥ ते  
 सविपुर्वचवकयारे शुजाशुजतेजोय पचभुतमाकरणिन  
 हिरे तेहविचारीजोय॥प्रा०१४॥शुभाशुजनेटालिनेरे निज  
 स्वरुपथयोजेह शक्तितेव्याक्तिथईरे मुक्तीजाणोतेह॥प्रा०  
 १५॥ तेहिजदेवजापियारे तसआणाधारेजेह तेहनेगुरुजा  
 णीयेरे निग्रथपढेतेह॥प्रा०१६॥ भास्युतेहनुधर्मकहोरे  
 तलत्रणेएह व्यवहारथकीएदाखियारे निश्चयआतमजेह  
 ॥प्रा०१७॥कर्ताएसृष्टीतणोरे दिशेनहिइहांकोय मासि  
 याजावछेसहिरे आगमबुद्धीतेहोय ॥प्रा०१८॥ कर्तापुद्ग  
 लधर्मनोरे पुद्गलकर्ताजाण जिवधर्मनोजिवछेरे निश्च  
 यज्ञानतेआण॥प्रा०१९॥कर्ताधर्मवादीकहरे कर्तावीणके  
 मथाय जेजेपटारयनीपन्यारे कर्ताएनीपाय॥प्रा०२०॥त  
 सउत्तरआगेसहीरे भाखीशुसुखकार मुनोहूकमतेसुणता  
 रे मोहदशानीवार॥प्रा०२१॥ढालपदरमीसपूर्ण ॥

॥दुहा॥ नास्तिकवादपुरोथयो हवेसुणोइश्वरमत कर्ता  
 मानेतेसहि ज्ञाननसमजोसता॥२॥ तिखोथइतवबोलियो  
 अमेकेमअनाण वेदादिकबहुशास्त्रनाचौदविद्यागुणजाण

॥२॥ बालभाषातमेभाखता बालज्ञानीसोय अमेगिरवाण  
भाषाकहिये ज्ञानिसाचाजोय ॥३॥ रोसकरिनविबोलि  
ये रोसेसमजनहोय संमताराखिसुणतु अज्ञानभावतेजो  
य ॥४॥ ॥ढालसोलमी॥ ताहरामेहेलउपरवरसेमेह  
झवुकेविजलिहोलालझवुकेविजलि ॥एदेशि॥ नाख्युतु  
मेएमअमेज्ञानिसहिहोलाल अमेज्ञानिसहि पणविचारि  
जुओतुमेकाईचितथईहोलाल ॥तुमे॥ कर्तापणुदाखोछो॥  
तुमेकाईअन्यतेहोलाल॥तुमे॥ तोतुमेरह्याअनाण विचारो  
मननेहोलाल॥वि०१॥ ज्ञानअनांणतसहाथरह्युतेजाणियेहो  
लाल॥र०॥ तोतुमेज्ञानिकेमकहोतेमाणियेहोलाल ॥क०॥  
कर्तासृष्टीनोजेह ईश्वरतुमेभाखियोहोलाल॥ई०॥ तोपुन्य  
पापफलकेम ईहांतुमेदाखियोहोलाल॥ईहां०२॥ शुभाशु  
भजेकरणिपोतानिजोगवेहोलाल॥पोता०॥ ईश्वरकर्तापणुं  
ईहांनविजोगवेहोलाल॥ईहा०॥ ईश्वरकर्तापणुंहोवेतोक  
रणिसहिहोलाल ॥तो०॥ फलनविआपेकोईविचारोचि  
तग्रहिहोलाल ॥वि०३॥ सुखदुखदेवुतेसविकर्ताथिरह्यु  
होलाल ॥क०॥ तोकर्णिनुशुंकामकठफोगटथयुहोलाल॥  
क०॥ रागद्वेगनहिहोयईश्वरतेनेकहियेहोलाल ॥ई०॥ सं  
जाविहोयजेहपरमपदतेलहियेहोलाल ॥प०४॥ एक  
नेआपेसुखबीजानंदुखघणुंहोलाल ॥विजा०॥ एविकर  
णिनहोयईश्वरनिसास्त्रेभणुंहोलाल ॥ई०॥ तेथिकर्तानहि

तुमेजाणोसहिहोलाल ॥तुमे०॥ बलिविचारोजेहपदास्थ  
 छेसहिहोलाल ॥प० ५॥ जिवादिकछेजेहकहेकोणेकरचा  
 होलाल ॥क०॥ कर्तायाशेतासतोपूर्वेनविठरचाहोलाल ॥  
 पू०॥ कृत्रिमजिवस्वरूपकेनाशथाशेखरोहोलाल ॥ना०॥  
 ईश्वरसमरणतेहसविफोगटठरचोहोलाल ॥सवि० ६॥  
 श्रुष्टिनोहतितवईहाजाखोशुहतुहोलाल भा० सप्तपदा  
 र्थनवद्रव्यकहेन्यायकछतुहोलाल क० तेनविहूतुतोइहा  
 लाव्याकिहाथकीहोलाल ला० अवरनथानककोईकेला  
 व्यातिहाथकिहोलाल ॥ला० ७॥ कृत्रिमवस्तुजेहतेहवि  
 णसेसहिहोलाल ते० घटपटादिजेहपदार्थनासेवहिहोला  
 ल प० पृथ्वीतमादिकजेहपदार्थश्रक्षयमहिहोलाल प०॥  
 माटेकर्तानहिकोईतुमेसमजोवहिहोलाल ॥तु० ८॥ क  
 र्तार्थसर्वनोईश्वरतोएहनोजोईयेहोलाल ए० परंपराए  
 मजोतांयागनलहियेहोलाल था० तेथिकर्तानहिजगतमा  
 कोईछेहोलाल ज० स्वभाविकपदार्थश्रुष्टिएहछेहोलाल  
 ॥श्रु० ९॥ करणिजेहविपोतेकरशेतेहवुहोलाल क० पाम  
 शेफलइहातेहएमतेध्याववुहोलाल एम० थाशेकरणिथि  
 रहिततवपदआणोहोलाल त० लेशेनिरविकल्पएमशा  
 स्त्रेमणोहोलाल ॥ए० १०॥ मुक्तिकाहियेतेहस्वरूपनेसहिहो  
 लाल स्व० तत्रवाल्पोतिहावेदातवादिवहिहोलाल वे०॥  
 मुनिहूकमकहेतेहस्वरूपआगेजाखशुहोलाल स्व० वेदा

तनोविवादकहिनेदाखशुहोलाल ॥ क० ११ ॥ ढालसो  
लमी संपुर्ण ॥

॥ दुहा ॥ तवहसिवोल्होसहि वेदांतवादीजेह अमेजा  
र्युतेसत्यछे एमांनहिसदेह ॥ १ ॥ कर्ताकोइदीसेनहि वस्तु  
स्वजाविकएह सर्वजगतमांएकछे ब्रह्मस्वरूपीतेह ॥ २ ॥  
क्रियाकष्टफोगटकरे तिरथजात्रातेम नक्तीजुक्तीतेजाणि  
ये फोगटव्रतनेनेमा ॥ ३ ॥ पथराषाणिपुजतां पामिकेमभव  
पार आत्मदमनजेकरे सुखकेमपामेधार ॥ ४ ॥ एकजब्रह्म  
मांरमे जेछेचिदानंद मुक्तिदातातेहछे पामियेनेथीआणंद  
॥ ५ ॥ बलतुसद्गुरुएमकहे सांजलनाईवात एकांतवचनन  
बोलिये तेथिधर्मनीधाता ॥ ६ ॥ धर्मवस्तुचाहोसहि तोसम  
जोस्यादवाद मतवादनेछोडियो समजोज्ञानउलाढ ॥ ७ ॥  
॥ ढाल १७मी ॥ तुमहममेरेएकठा मनमोहनमेरे ॥ एदे  
शी ॥ ब्रह्मज्ञानिसांजलो म० धर्मस्वरूपउदार म० सर्व  
जगतमाब्रह्मकह्यो म० एतुममतविचार ॥ म० १ ॥ एवचने  
जडपणलह्यो म० समजोतासविचार म० नजमांहिवहू  
जातछे म० पदार्थसातउदारा ॥ म० २ ॥ द्रव्यनवतेजाणीये  
म० तेनविब्रह्मकेहेवाय म० ब्रह्मएकछेआत्मा म० चि  
दातंदसुखदाय ॥ म० ३ ॥ तेसवितुमेब्रह्मकह्यो म० मिथ्याव  
चनतेथाय म० भेदवेहेचीजुदाकरो म० आत्मएकलेवाय  
॥ म० ४ ॥ मनादिजेतत्वछे म० तेतोजडकेहेवाय म० तेआ



तुमेजाणोसहिहोलाल ॥तुमे०॥ वलिविचारोजेहपदास्थ  
 छेसहिहोलाल ॥प० ५॥ जिवादिकछेजेहकहोकोएकरया  
 होलाल ॥क०॥ कर्त्तायागेतासतोपूर्वेनविठरयाहोलाल ॥  
 पू०॥ कृत्रिमजिवस्वरुपकेनाशयाशेखरोहोलाल ॥ना०॥  
 ईश्वरसमरणतेहसविफोगटठरचोहोलाल ॥सवि० ६॥  
 श्रुष्टिनोहितितवईहानाखोगुहनुहोलाल भा० सप्तपदा  
 र्थनवद्रव्यकहेन्यायकछतुहोलाल क० तेनविहूतुतोइहा  
 लाव्याकिहाथकीहोलाल ला० अवरनथानककाईकेला  
 व्यातिहाथकिहोलाल ॥ला० ७॥ कृत्रिमवस्तुजेहतेहवि  
 णसेसहिहोलाल ते० घटपटादिजेहपदार्थनासेवहिहोला  
 ल प० पृथ्वीनभादिकजेहपदार्थश्रक्षयसहिहोलाल प०॥  
 माटेकर्त्तानहिकोईतुमेसमजोवहिहोलाल ॥तु० ८॥ क  
 र्त्तासर्वनोईश्वरताएहनोजोईयेहोलाल ए० परंपराए  
 मजोतायागनलहियेहोलाल था० तेथिकर्त्तानहिजगतमा  
 कोईछेहोलाल ज० स्वभाविकपदार्थश्रुष्टिएहछेहोलाल  
 ॥श्रु० ९॥ करणिजेहविपोतेकरशेतेहवुहोलाल क० पाम  
 शेफलइहातेहएमतेध्याववुहोलाल एम० थाशेकरणिथि  
 रहितवपदआपणोहोलाल त० लेशेनिरविकल्पएमशा  
 स्त्रेमणोहोलाल ॥ए० १०॥ मुक्तिकाहियेतेहस्वरुपनेसहिहो  
 लाल स्व० तववाल्पोतिहावेदातवादिवहिहोलाल वे०॥  
 मुनिहूकमकहेतेहस्वरुपआगेनाखशुहोलाल स्व० वेदां

तनोविवादकहिनेदाखशुहोलाल ॥क० ११॥ ढालसो  
लमी सपूर्ण ॥

॥दुहा॥ तवहसिवोल्होसहि वेदांतवादीजेह अमेचा  
स्युतेसत्यछे एमांनहिसदेहा॥१॥कर्ताकोइदीसेनंहि वस्तु  
स्वभाविकएह सर्वजगतमांएकछे ब्रह्मस्वरूपीतेह॥२॥  
क्रियाकष्टफोगटकरे तिरथजात्रातेम नक्कीजुक्तीतेजाणि  
ये फोगटव्रतनेनेमा॥३॥पथरापाणिपुजतां पामेकेमभवं  
पार आत्मदमनजेकरे सुखकेमपामेधार ॥४॥ एकजब्रह्म  
मांरमे जेछेचिदानंद मुक्तिदातातेहछे पामियेनेथीआणंद  
॥५॥वलतुसद्गुरुएमकहे सांजलनाईवात एकांतवचनन  
बोलिये तेथिधर्मनीधाता॥६॥धर्मवस्तुचाहोसहि तोसम  
जोस्यादवाद मतवादनेछोडियो समजोज्ञानउलादा॥७॥

॥ढाल१७मी॥ तुमहममेरेएकठा मनमोहनमेरे ॥ एदे  
शी॥ ब्रह्मज्ञानिसाजलो म० धर्मस्वरूपउदार म० सर्व  
जगतमांब्रह्मकह्यो म० एतुममतविचार॥म०१॥एवचने  
जडपणलह्यो म० समजोतासविचार म० ननमांहिवहू  
जातछे म०, पदार्थसातउदार॥म०२॥द्रव्यनवतेजाणीये  
म० तेनविब्रह्मकेहेवाय म० ब्रह्मएकछेआत्मा म० चि  
दानंदसुखदाया॥म०३॥तेसवितुमेब्रह्मकह्यो म० मिथ्यावि  
चनतेथाय म० भेदवैहेचीजुदाकरो म० आत्मएकलेवाय  
॥म०४॥मनादिजेतत्वछे म० तेतोजडकेहेवाय म० तेआ

स्मनाक्रयमकहो म० सजोगेमेलापथाया॥म०५॥ अरुपिजे  
 आत्मा म० त्याविनाचनहोय म० ज्ञानानंदितेकह्यो म०  
 अमुर्तिपदजोय॥म०६॥ मुक्तीपणतुमेकहो म० लोकमाहि  
 समाय म० सर्वज्ञगुणथयोनहि म० विभावदज्ञानविजा  
 या॥म०७॥ विभावदज्ञाजिहारहि म० त्यामुक्तिनविहोय  
 म० मनशुमुक्तिमानिलहो म० अयगजजेमजोय॥म०८॥  
 मुक्तिस्थानकजाणोनहि म० तोमुक्तीक्यांथीथाय म०  
 आत्मद्रव्यसमजेनहि म० नहिगुणपर्जाया॥म०९॥ नयाय  
 कशास्त्रधि म० जोजोतासविचार म० द्रव्यगुणतिहांकह्या  
 म० नवचोविशधार॥म०१०॥ इत्यादिकबहूवातछे म० ब  
 हूश्रुतपासेधार म० क्रियाप्रमुखउत्थापता म० नविकरो  
 मनशुविचार॥म०११॥ जोजनपणनावेएकथि म० कारण  
 विनानुविधाय म० अग्निपाणीप्रमुखमळे म० तवरोटिनि  
 पाय॥म०१२॥ तेमइहापणधारिये म० तपक्रियासुखकार  
 म० कारणथीकारजहोवे म० एश्रद्धामनोहार॥म०१३॥  
 केहेस्योआत्मानुक्रमछे म० क्रियाकामनकोयं म० अग्नि  
 विनारोटिनाहि म० क्रियाविनामुक्तिजोय ॥म०१४॥ मु  
 क्तिस्थानकजाणोनहि म० तोकिहाजावुथाय म० लोक  
 माहेसमावता म० गतागतिकेहेवाय ॥म०१५॥ स्थूलब्रह्म  
 छणवाथकी म० किचित्तत्वावेहाय म० स्वरूपजथारथजा  
 णिये म० करियेज्ञानिनोसाथ ॥म०१६॥ निश्चयथकी

ब्रह्म ध्याइये म० वेहेवारे क्रिया सार॥ म० नित्या  
 दिक बहू जेदछे म० ते समजो विचार॥ म० १७॥  
 जथाजोग्यजेजाणवु म० तेहिजसत्यनांण म० स्यादवाद  
 तेजाणिये म० तिहानविरहेअनांण॥ म० १८॥ अथवा  
 ब्रह्मब्रह्मकरे म० तेथिकारजनहोय म० सुरुयोपुरुषधा  
 वतो म० चीत्तमाघेवरजोय॥ म० १९॥ मुखथकिपणभा  
 खतो म० जमश्युधेवरथाय म० तेहथिमुखजागेनहि म०  
 जोजनथिमुखजाय॥ म० २०॥ तेमब्रह्मस्वरूपभजे म०  
 क्रियाविनानविथाय म० अथवातुच्छजोजनकरे म० ते  
 थिकौवतनआय॥ म० २१॥ मनशुश्रेष्ठमानेसाहि म०  
 प्राक्रमनआवेताम म० तेमएकवेदांतथाकि म० नकरवि  
 मुक्तिनिआश॥ म० २२॥ जत्तिक्रियावेहूमिले म० त्रिजु  
 अध्यात्मसार म० त्रणमलेकारजहोवे म० एहिजशुद्ध  
 विचार॥ म० २३॥ नयायकतवबोलियो म० अमंघरद्रव्य  
 स्वरूप म० प्रत्यक्षपरोक्षनेजाणता म० एअमज्ञानअनुप  
 ॥ म० २४॥ तसउत्तरवलिआगले म० केहेशेसदगुरुसा  
 र म० मुनिहूकमज्ञानेरमे म० पामेपदमनोहार॥ म० ॥  
 २५॥ ढालसतरमिसंपूर्ण॥  
 ॥ दुहा॥ नयायकतवबोलियो साचिछेमुजवाग्य न्याय  
 मारगछेखरो एसमजुनोलागा॥ १॥ न्यायविनास्वरूपनहि  
 बांधेकोईजाणतेकारणन्यायजवडो एहिजमोटुंज्ञाना॥ २॥

अनुमानउपमानवालि एमअनेकविचार, एसविन्यायनां  
 रह्या विजामतमानविधार ॥३॥ पदार्थजाणुअमे छणना  
 मुझघरमाहि प्रत्यक्षज्ञानअमेकह्यु मोहोटाएविणनाहि ॥  
 ४॥ बलतुसदगुरुएमकहे तुझमतछेअनाण, द्रव्यस्वरूप  
 छणेघणो पणतुजनाव्युनाण ॥५॥ तेस्वरूपजाखुहवे  
 सांजलजोधरीकान रागद्वेशनेदूरकरि रुदियेआणोसान  
 ॥६॥ ढाल १८ मी ॥ एकदिनगगाकेविचेसुणसाथबहो  
 रा ॥ एदेशि ॥ कहेसदगुरुसांजलो तुमेज्ञानिवाता द्रव्यस्व  
 रूपनेछणता होतवचननिघाता ॥ १ ॥ पदार्थतमेजाखिया  
 सानतेजाणो भाखुतासविचारए तुमेचित्तमाआणो द्रव्य  
 गुणनेकर्मए सामान्यविशेषतेधारो, समवायनेअभावजे  
 सप्तपदार्थविचारो ॥३॥ द्रव्यकह्यानवजातना प्रथविपा  
 णिअमितेह वायुआकाशकालदाशिजे आत्ममनगुणगेह  
 ॥४॥ गुणचोविसहवेजाखिये तेमुणजोसुखकार, रुपरस  
 गंधफरसए सख्याप्रमाणधार ॥ ५ ॥ प्रथकत्वसयोगवि  
 भागए, प्रत्वाप्रत्वगुणसार गुरुत्वद्रव्यत्वस्नेहए शब्दबु  
 द्धिनिरधार ॥६॥ सुखदुखइच्छाद्वेपए प्रयत्नधर्मअधर्म  
 जेह संस्कारतेमजाणिये एचोविसगुणनेह ॥७॥ कर्मपां  
 चतेजाणिये, उतपेक्षणपेक्षणसार आकुचनपरसारण, ग  
 मनानिएहविचार ॥८॥ परमअपरमद्विविध सामान्यक  
 हिजे नित्यद्रव्यएकविशेषछे समवायसत्वएकलिजे ॥९॥

आवचारप्रकारनो प्रागजावप्रदंशाजावो अत्वंतिकां  
 अन्य एअभावसुणावो ॥१०॥ सातपदारथतुमेकह्या  
 अबहूछेविचार द्रव्यविनागुणक्यारहे जुदोकेमपरका  
 ११ ॥ कर्मद्रव्यविणकोणेकरु सामान्यविपेशकिहांल  
 १२ ॥ समवायपणुजुदूनहि एमविचारग्रहिजे ॥१२॥ जि  
 स्तुनोनाशछे तिहांअभावलहिये तेनेपदारथकेमंक  
 सुधुमनसदाहिये ॥ १३ ॥ ईत्यादिकवद्विचारथी अ  
 नेजाख्या पुनरपिकारणसाभलो तुमेशास्त्रेदाख्या  
 १४ ॥ प्रत्यक्षअनुमानउपमानथि विवादजकरवो इंद्रि  
 त्यक्षज्ञाननो हठवाटजधरवो ॥१५॥ इद्रिथकिप्रत्यक्ष  
 ज्ञानजकहोछो तेतोअनुमानजाणिये उपमानवहोछो  
 १६ ॥ मननिवाततोनविलहे तेमदुरनिकहिये भुतनवि  
 र्तमाननी तेज्ञानिकेमकहिये ॥१७॥ मत्रादिकसाधन  
 देवसाधजेहोवे मनचितविवातजे उत्तरतेकेहेवे ॥१८॥  
 वालोकिकमालह्यो नगवततेजाणे मननितननितेह  
 मचित्तमेआणे ॥१९॥ इद्रियेप्रत्यक्षथि ज्ञानिकेमक  
 २० ॥ बालगोपालनेहोवे विंगपशुंलहिये ॥ २० ॥ तेथिअ  
 निकह्या शास्त्रेएतमने भुतनविष्यवर्तमाननि वातजा  
 हींमनमे ॥२१॥ जेजाणेनुतभविष्यना वर्तमाननाभाव  
 अरुपिपदार्थ तेज्ञानिंध्याव ॥२२॥ द्रव्यगुणपरजायए  
 रुपजेनाखे सत्यासतपक्षेकरिजेवरणविदाखे ॥२३॥ आ

स्तिनास्तिप्रमुखलाहि सत्तातेप्रकासे रथादवादएमजाख  
ता तिहादुरमतिनासे॥२४॥ इत्यादिकबहुजाणने ज्ञानि  
कहिजे तेथिउपराठाजेरह्या तेअज्ञानिवहिजे॥२५॥ ज्ञान  
अज्ञानतेमसाहि एमनिरणेकरिजे अज्ञानिदुरेतजो ज्ञानि  
संगवरिजे॥२६॥ सेवाकिजेज्ञानिनि ज्ञानआपेलहिजे मु  
निहूकमज्ञानिप्रते परमानदवहिजे ॥२७॥ ढाल  
अढारमिसपूर्ण ॥

॥दुहा॥ वादिसर्वआपआपण धरमस्वरुपजणावे जै  
नितसउत्तरकरि सुधुतेमनावे ॥१॥ तर्कवादबहुविधथि  
खटदर्शननाहोय बहुविधवादतेथीकरि जिनदर्शनथाप्यु  
जोया॥२॥ दर्शनशक्तिनिजआत्मनि निश्चेथिवरता देव  
गुरुधर्मआपछे एमस्वरुपधरता॥३॥ सातप्रकृतिनाशथि  
दर्शनएमलहिये अगियारप्रकृतिनाशथि आधधर्मकहि  
ये॥४॥ प्रकृतिपदरनाक्षयथकि मुनिगुणधारो मोहनिक  
र्मनानाशथि वितरागसुखकारो॥५॥ कर्मचारदुरेथए अ  
रिहतपदकहिये एविधसिखसमजिकरि विजोभगलहिये  
॥६॥ त्रिजोभंगहवेजाखशु विजातिस्वजातिजेह अज्ञानप्र  
माददुरेकरि सांचलजोगुणगेह॥७॥ ॥ढाल॥ १९॥ मी॥  
अजितजिनेश्वरचरणानिसेवा ॥एदेशि॥ त्रिजोभगहवेसां  
चलोए विजातिस्वजातिदोखु गुणघातिआत्मतणोए ते  
न चितर ३ ॥१॥ नवितुमेजाणिरेएहनेदुरकरिजे

॥ एआं कणि॥ गुणअनंताआत्मतणाए तेहमांआठछेमुख्य  
 जाखुतेतुमेसानलोए तजवाथिलेशेसुखा॥नवि०२॥ज्ञान  
 दर्शननेअव्याबाध चोथुचारित्रजाणो अटलअवगाहनअ  
 रुपिगुण अगुरुलघुचीत्तआणो॥भवी०३॥लब्धीपांचेवल्लि  
 जेदाखी दानलाभनेजोग उपजोगविरजअनंतु आठमोगु  
 णतेजोग॥भवि०४॥ एआठेगुणआठेकरमे, छायाछेतेभाखु  
 नामलहिनेतेकहुछु आगममाहिजेदाखु॥नवि०५॥ज्ञाना  
 वरणिकमेज्ञानना, गुणअनंताढांका, दर्शनावरणिकरमे  
 दाव्या दर्शनगुणथयारांका॥भ०६॥अव्याबाधगुणत्रिजो  
 आत्मनो, वेदनिकरमेढांकाणो, थिरतागुणचोथोआत्मनो  
 चारित्रगुणछेराणो॥नवि०७॥मोहनिकरमेतेगुणहणियो  
 तेथिअसंजतिजाख्यो समकितगुणपणतेणेहणियो, तेथि  
 मिथ्यातिदाख्यो॥भवि०८॥अटलअवगाहनगुणपांचमो  
 आयकरंमथिढांकाणो, अरुपिगुणछठोआत्मनो नामकरम  
 थिजाणो॥नवि०९॥ अगुरुलघुगुणसातमोकहिये गोत्रक  
 रमथितेह, लब्धीगुणअत्रायकरमेए, एमआठेगुणजेह॥भ  
 वि०१०॥ गुणआठेस्वभाविकहिये, आत्मस्वजाविरहिया  
 तेहगुणनेहणताजाणो पुद्गलवर्गणाकहिया॥भवि०११॥पु  
 द्गलतेविजातिथइने हणतोस्वजातिनेजेह तेथिविजाति  
 स्वजातिजागो त्रिजो जाख्योतेह॥नवि०१२॥चोथोनांगो  
 विजातिविजाति हणतानेकहिजे भोमिजाजनकोइपड्युं



छे उर्ध्वथिनाललहिजे ॥भवि०१३॥ एचडभगमाहिजेवि  
 जो स्वजातिविजातिजाणो तेभगशेवेजेजेचेतन तेअरिहं  
 तकहाणो॥भवि०१४॥तेअरिशब्देअनुविजाति हणताअ  
 रिहंतकहिये त्रिजचादिकहणवाथि अरिहतपदनविल  
 हिये॥भ०१५॥ प्रथमत्रिजोनेवलिचोथो एभंगदूरेकिजे  
 हरखधरिविजोचगहणता अरिहतपदतेलिजे ॥ भवि०  
 १६॥ कारणमलेपलटणस्वभावे भव्यहोयतेपलटे लहि  
 सामग्रीगुरुआदिककेरी काललवधतेवरटे ॥भवि०१७॥  
 पलटणस्वभावथिसिद्धपणुए जठथजिवनेआख्यु ज्यारेत्या  
 रेकारणपामिने आत्मगुणतेराख्युं॥भवि०१८॥ जवस्थि  
 तिपरिपाकथयाथि पाचेकारणमलशे निमित्तकारणशुद्धगु  
 रुमलवाथि मोक्षसुखतेवरशे॥भवि०१९॥नेकारणगुरुशुद्ध  
 जोइने तेहनिशेवाकिजे ज्ञानगुणश्रद्धासहितजरियो मु  
 ख्यगुणएहलिजे ॥भवि०२०॥ कारणवेजिनवरेभाख्या  
 मुक्तिकेराजाणो उपादाननिमित्ततेलहिये उपादानआत्म  
 गुणराणो॥भवि०२१॥ निमित्तकारणवहूविधआख्यु तेह  
 मामुख्यतेजाणो सदगुरुविणतरेनहिकोई पुष्टआलंबन  
 चित्तआणो॥भवि०२२॥कारणजेदएमसमजीने शुद्धशुद्ध  
 अहिजे मुनिहूकमएकारणमलतां सेहेजेशिवपदलिजे॥  
 भवि०२३॥ढालओगणिसमिसपूर्ण॥  
 ॥दुहा॥कारणसामग्रीमले पलटेनहिनिरधार तेअज

व्यस्वभावछे एनाख्योविचार ॥ १ ॥ तेकारणएअन्नवि  
जिवनमोक्षेजाय सत्तास्वरूपजो जोइये तोसरखागुणकेहे  
वाय ॥ २ ॥ प्रत्येकेप्रत्येकेजिवना गुणअनंताजाण गुण  
स्वभावनेजोवतां एकजपणुं चित्तां ॥ ३ ॥ कोइसुखीको  
इदूखी पणतेनोवेदकएक एमएकमांअनेकछे अनेकमांए  
कछेक ॥ ४ ॥ ज्ञाननंदर्शनादिक गुणअनंताजेह तेमांहेएक  
पणुलहो चेतनरायगुणगेह ॥ ५ ॥ अगुरुलघुपरमुखजे पर  
जायकहियेअनत तेमांहिपणएकछे चेतनमाहागुणवंत ॥  
६ ॥ चेतनएकमाहिरह्या गुणपरजायअनंत गुणपरजाय  
मांएकछे चेतनपणुंतेसतः ॥ ७ ॥ एकअनेकपक्षवर्णव्योहवेक  
हुसत्यासत जावधस्तिनेसांभलो श्रोतागुणलहत ॥ ८ ॥  
॥ ढाल ॥ २० मी ॥ नरखीनरखीतुजविंवन ॥ एदेसी ॥ स  
त्यअसत्यपक्षजे जाप्याशास्त्रेसार ज्ञानीतेखरा ॥ एआंक  
णि ॥ समजेतेनरधन्यछे भाखुतासविचार ॥ ज्ञानि० १ ॥  
द्रव्यखटआपआपणा स्वद्रव्यखेत्रसार ज्ञानि० कालजा  
वतेमजांणिये चारेथिसत्यउदार ॥ ज्ञानि० २ ॥ द्रव्यद्रव्यप्र  
तेकहू विवरितासविचार ज्ञानि० द्रव्यखेत्रकालभावए  
प्रत्येकेप्रत्येकेधार ॥ ज्ञानि० ३ ॥ प्रथमधर्मद्रव्यकह्यो ते  
हमांजाखुएचार ज्ञानि० स्वद्रव्यनोमुलगुणएहछे चल  
एसाहेसत्यउदार ॥ ज्ञानि० ४ ॥ खेत्रअसंख्यप्रदेशाथि सत्य  
धर्मास्तीकाय ज्ञानि० अगुरुलघुस्वकालछे स्वधर्मसत्य

थाय ॥ज्ञानि० ५॥ स्वस्वभावप्रापणा गुणपरजायेअनं  
 त ज्ञानि० धर्मद्रव्यमांएचारकह्या सत्यधर्मएसंतं ॥ज्ञानि  
 ६॥ अधर्मास्तीआकाशास्ती कालपुद्गलजिव ज्ञानि० एपा  
 चेअपरसहि धर्मद्रव्येअसत्यइवा॥ज्ञानि० ७॥ अधर्मास्ति  
 कायद्रव्यमां स्वद्रव्येथिरसहायगुण ज्ञानि० असस्यप्रदे  
 शेस्वखेत्रछे हवेभाखुकालगुण॥ज्ञानि० ८॥ अगुरुलघुपर  
 जायजे स्वकालकेहेवाय ज्ञानि० गुणपरजायअनतजे स्व  
 स्वभावतेथाय ॥ज्ञानि० ९॥ धर्मअकाशकालजे पुद्गलने  
 वलिजिव ज्ञानि० एपाचेतेमानहि असत्यअधर्मसदिव॥  
 ज्ञानि० १०॥ आकाशास्तिकायद्रव्यजे अवकाशगुणस्वद्र  
 व्यज्ञानि० अनतप्रदेशस्वखेत्रछे अवकाशआपेसर्व ॥ज्ञा  
 नि० ११॥ अगुरुलघुपरजायजे स्वकालसत्यतेथाय ज्ञा  
 नि० अनतगुणपरजायजे स्वस्वभावेसत्यकेहेवाय॥ज्ञानि०  
 १२॥ धर्मअधर्मकालजे जीवपुद्गलवलितेम ज्ञानि० एपांचे  
 असत्यजाखिया आकाशद्रव्यमांएमा॥ज्ञानि० १३॥ काल  
 व्यहवेज्ञाखशु स्वद्रव्यवर्तनासार ज्ञानि० खेत्रसमयएक  
 छे तेद्रव्यउपचारा॥ज्ञानि० १४॥ स्वकालअगुरुलघुकह्यो  
 स्वस्वभावहवेथाय ज्ञानि० गुणपरजायधिभाखिये एचारे  
 वा ॥नि० १५॥ धर्मअधर्मआकाशए पुद्गलजि  
 वअसत्य ज्ञानि० द्रव्यादिकमलेनहि कालभावनेखेता॥ज्ञा  
 नि० १६॥ पुद्गलद्रव्यजेपाचमो स्वगुणभाखुतास ज्ञानि०

पडणगलणस्वभावछे स्वगुणएसत्यजास ॥ज्ञानि० १७॥  
 स्वखेत्रपरमाणुकह्यो. एकएवाअनंतः ज्ञानि०. अगुरुल  
 घुपरजायछे प्रदेशेप्रदेशेसंत ॥ ज्ञानि० १८॥ स्वस्व  
 नावजेआपणो गुणपरजायकेहेवाय ज्ञानि० एचारेसत्य  
 जाणिये स्वद्रव्येतेथाय ॥ज्ञानी० १९॥ धर्मअधर्मआकाश  
 जे जिवनेकालकेहेवाय ज्ञानी०. एपांचेएमांनहि तेथिअ  
 सत्यएथाय ॥ज्ञानी० २०॥ जिवास्तिकायस्वरूपजे भाखु  
 तासविचार ज्ञानी०. एकएवाद्रव्यअनंतए प्रत्येकेप्रत्येके  
 धार ॥ज्ञानी० २१॥ जिवास्तीस्वद्रव्यनो गुणज्ञानादिक  
 सार ज्ञानी०. चेतनालक्षणजाणिये स्वद्रव्यसत्यविचार ॥  
 ज्ञानी० २२॥ असंख्यप्रदेशिजिवछे स्वखेत्रएहंविचार  
 ज्ञानी०. स्वकालेहांनिवृद्धिकहि तेअगुरुलघुधारा ॥ज्ञानी  
 २३॥ गुणपर्यायअनंतछे तेहिजस्वस्वभाव ज्ञानी० छद  
 मस्तपूर्णजाणेनहि जाणेकेवालेभाव ॥ज्ञानि० २४॥ स्व  
 द्रव्यखेत्रकालधी नावमलीथयाचार ज्ञानि०. स्वस्वद्रव्येए  
 सत्यछे एमआगममांविचार ॥ज्ञानि० २५॥ धर्माधर्मआ  
 कास्ति कालपुद्गलजेह ज्ञानि०. एपाचेनाजाणिये जिवमां  
 असत्यएह ॥ज्ञानि० ॥ द्रव्यखेत्रकालनावजे स्वस्वद्रव्येस  
 त्य ज्ञानि०. परद्रव्येअसत्यछे पांचेनाअरत ज्ञानि० २७॥  
 द्रव्यखेत्रकालभावए प्रत्येकेप्रत्येकेचिन्न ज्ञानि०. एकनो  
 बिजामालाधेनहि जदाजदाछेचिन्न ॥ज्ञानि २८॥ तेथिए

स्वद्रव्यादिके चारे सत्यके हे वाय ज्ञानि० अपरद्रव्यना  
 व्यादिक तेह मां असत्य ते थाय ॥ ज्ञानि० २९ ॥ गुण पर्जाय  
 त तेद्रव्यछे खेत्र आधार ते थाय ज्ञानि० उत्पात वयनिवर्तन  
 तेहि जकाल के हे वाय ॥ ज्ञानि० ३० ॥ विशेष गुण परणति  
 पर्जाय विशेष प्रमुख ज्ञानि० तेहने स्वप्नावकीजिये एस  
 व्याहोय सुख ॥ ज्ञानि० ३१ ॥ इम छद्रव्य ते जाणिये आप  
 पणा गुणोसार ज्ञानि० सत्य गुण तेह थिक ह्यो एजिन वचन  
 चार ॥ ज्ञानि० ३२ ॥ परद्रव्यादिक चार जे तेह मां असत्य  
 थाय ज्ञानि० सत्यासत्य पक्ष ए बहु श्रुत थि सम जाय ॥ ज्ञानि०  
 ३३ ॥ तेमटे ज्ञानि गुरु शेवो धरि बहु मान ज्ञानि० मुनि  
 कम गुरु सेवता पामेव छित स्थान ॥ ज्ञानि० ३४ ॥ दा  
 विसमिस पूर्ण ॥

॥ दुहा ॥ व्यक्त व अव्यक्त व वर्णवु जेना जेद अनत एह  
 सम जाय को से हे जे थाये सत ॥ १ ॥ दाल २ १ मी ॥ मुर्ति हो प्रभु  
 आजित जिणंदा ए देशि व्यक्त व हो जिन व्यक्त वेन अव्यक्त  
 स हो जिन प्रक्ष तेह वेमाखि शुजि व्यक्त व हो जिन व्यक्त व के हे  
 जेह वचन हो जिन वचन गोचर दाखि शुजि ॥ १ ॥ अव्यक्त व  
 जिन अव्यक्त व के हे ता जेह ॥ वचन हो जिन वचन मा आवेन  
 जी एम हो जिन एम एस केत खट हो जिन खट द्रव्य मां जा  
 सहि जि ॥ २ ॥ द्रव्य हो जिन द्रव्य द्रव्य प्रते सार गुण हो जि  
 गुण अनंता जाखिया जि ॥ पर जाय हो जिन पर जाय अनंत

ताम्र एमहोजिन एमप्रत्येकेटाखियाजि॥३॥ वचनगुंहोजि  
 नवचनगुंकेहेवाजोग॥ नहिहोजिन नहितेअव्यक्तवकेद्या  
 जे तेहिहोजिन तेहिजाखुविचार समजुहोजिन समजुविचार  
 रेलह्याजि॥४॥ केवलीहोजिन केवलज्ञानिजेह भगवंतदे  
 जिन भगवंतदेठाभावसाविजि तेहनेहोजिन तेहनेअनंत  
 नजाग व्यक्तवहोजिन व्यक्तवचनेहवाजि॥५॥ तेहनेअनंत  
 जेन तेहनेअनंतमेभाग गणधरेहोजिन गणधरेनुनामोय  
 गोजि तेहथिहोजिन तेहथिअसंख्यातमेभाग ठनहोजि  
 तहमणां आगमइहारह्याजि॥६॥ तेहथीहोजिन तेहथी  
 यमांसार खटमांहोजिन खटमां प्रत्येकेदुष्टद्वाराकाजि  
 जेन गुणअनंताजेह पर्जायहोजिन पर्जायअनंतकाजि  
 मी॥७॥ तेमांहोजिन तेमां दीशोद्विपक्ष अक्षरतेजोअक्षर  
 तिवअव्यक्तवजाणीयेजी एमहोजिन तेहनेअनंतका  
 अहोजिन जाख्याएचित्तआणीयेदीशोद्विपक्षकाजि  
 तसमजोएहविचार ॥ पामेहोजिन तेहनेअनंतकायने  
 त्यादहोजिन स्यादवादकेहेवाय अक्षरतेजोअक्षर  
 तेथकरेजी॥८॥ माटेहोजिन माटेअक्षरतेजोअक्षर  
 तेहनेसदेहहोवेनहिजी जयाद्विपक्षकाजि  
 होजिन जाणेतवस्तुमहिजी ॥९॥ तेहनेअनंतकाजि  
 अज्ञान हानीहोजिन हानीअक्षरतेजोअक्षर  
 मानेठेकाणरेना ॥ एमहोजिन तेहनेअनंतका

॥११॥ एमहोजिन एमभाखेछेजेह तेहनोहोजिन तेहनोमत  
 दूरेरुजो सुधुहोजिन सुधुवचन प्रमाण एमहोजिन एम  
 स्यादवादवरोजी ॥१२॥ जाणोहोजिन जाणोवहुं श्रुतजेह  
 तेहनेहोजिन तेहतणेचरणेरहोजि मुनिहोजिन मुनिहुकम  
 शुद्धज्ञान स्यादहोजिन स्यादवादगुणैगहगहोजि ॥ १३ ॥  
 ढाल २१ मी सपूर्ण ॥

॥दुहा॥ पक्षआठेवर्णव्या भाखू एतसनाम तित्यं अनि  
 त्यतेजाणीये एकअनेकतेताम ॥१॥ सत्यअसत्यतेजाखि  
 या व्यक्तवअव्यक्तवविचार पक्षआठेतेजाणिये स्याद  
 वादसूखकार ॥२॥ एजाणीसुखीयाथया आगेअनंतासत  
 वलीएजेजाणो तेलेजेनवअत ॥३॥ मूरखएसमजेनहि  
 जेहनिबुद्धिजड अल्पशास्त्रिसमजेनहि जेहनेकर्मनोभ  
 ड ॥४॥ अल्पबुद्धिपणजेहनी सदहणाराखेतास अल्प  
 कालेतेशिवलहे ॥ करीकरमनोनास ॥ ५ ॥ अल्प  
 ससारीजेहोवे होवेंशुक्लपक्ष एसदहणातेग्रहे जेहनिबु  
 द्धिछेदक्ष ॥६॥ बोहोलससारीजीविडा क्रश्रपक्षिजेह ते  
 हनेश्रद्धाहोवेनही अथवाअनविह ॥७॥ वाचेनणेशास्त्र  
 सही उपदेशदियेसुखकार पणहदियेश्रद्धानही एअज्ञा  
 नआचार ॥८॥ तेकारणस्यादवादमा समजवाकरोखप ज्ञा  
 निगुरुसेवाकरी आलसकरोअल्प ॥९॥ ढाल २२ मी ॥ आ  
 जसफलदिनउग्योहोश्रीसमेतशिखरगेरीजेटिया एदेशी

आजप्राणितुमेधारोहोस्वस्वभाववस्तुस्वरूपनो कांश्चि  
 जीयोसद्गुरुजोगपुन्यउदयएमोटीहोपंचंद्रिपणुंपाम्योस  
 ही मानवजनमसंजोग॥१॥आजप्राणितुमेधारोहो॥स्व  
 भावहवेजेभाखुहोनाख्याजेश्रीजीनवरे सामान्यनेविशेष  
 प्रकार तेहनाचेदएकविसहोनांमांदिकलहिनेकहू तमेसु  
 एजोतासविचार॥आज०२॥ आस्तिने१ नास्तिहो२ नो  
 यस्वभावएजाणिये ३ अनित्य ४ एकस्वभाव ५ अने  
 त्वस्वभावहो ६ जेदस्वभाव ७ अजेदए ८ जव्यस्वभावते  
 ताव९॥आज०३॥अभव्यस्वभावहो१० परमस्वभावअ  
 गियारमो११ एसामान्यस्वभाव हवेकांश्चिदूहोविशेष  
 वभावजेकह्या एसमजवानोदाव॥आज०४॥चेतनस्वभा  
 हो१अचेतनएहस्वभावछे२ त्रिजोमूर्तिस्वभाव३अमूर्ति  
 वभावहो४एकप्रदेशस्वभावजाणिये५अनेकप्रदेशस्वभा  
 ६॥आज०५॥शुद्धस्वभावहो७ विभावस्वभावतेआठमो८  
 शुद्धस्वभावतेधार९उपचरित२ होस्वभावदसमोजाणी  
 १०विशेषस्वभावविचार॥आज०६॥ सामान्यस्वभाव  
 स्वरूपसक्षेपेतेदाखव सामान्यउपयोगिजेह दर्शनगुण  
 होदेखीयेसर्वद्रव्यमां सामान्यकह्योगुणगेहाआज०७॥  
 शेषस्वभावहोसक्षेपस्वरूपतेहनुंकहू नहिसर्वद्रव्यमांही  
 ईद्रव्यमांतेछेहोकोईद्रव्यमांछेनहि ज्ञानउपीयोगेजा  
 तांही ॥ आज० ८॥ सामान्यमाहेथीहोपचस्वभाव



खाणशु पूरवग्रथअनुमान कोईकेहेशेतुमेहोसर्वनोअर्थ  
 नवीकह्यो तेहनुशुअनुमान ॥आज ९॥ विजाग्रथमाहोस  
 र्वस्वभावअभेदाखीया तेथीईहाजाख्यानांहि पंचस्वभा  
 वहोतेहवेइहावर्णवु जेवाजाख्याज्ञानीताहि ॥आज ०१०॥  
 भेदस्वभावहोस्वकारजकरे गुणपर्जायपरवर्तनजास  
 अभेदस्वभावहोस्वस्थानपणेरहे मुलस्वरूपएखास ॥  
 आज ०११॥ पलटणस्वभावहोअनव्यस्वभावकह्यो ल  
 हिंसुगुरुसंयोग धर्मआराधेहोकाललब्धेसही लहेनि  
 जगुणजोग ॥आज ०१२॥ अनव्यस्वभावहोचोथोहवेए  
 दाखीये अपलटणएहस्वभाव कालसांमग्रोपांमीहोसुगु  
 रुसजोगने नपलटेअनव्यस्वभाव ॥आज ०१३॥ द्रव्य  
 द्रव्यनाहोसर्वधर्मतेप्रते विशेषधर्मअनुजोय जेजेप्रण  
 मेहोतेतेप्रमेयस्वभावछे एपंचस्वभावतेहोय ॥आज ०॥  
 १४॥ सर्ववस्तुमाहोपंचस्वभावतेजाणिये द्रव्यनोमुलस्व  
 भाव मुनीहूकमहोसदगुरुसेवनथीलहे जेहनोमोहअभा  
 व ॥आज ०१५॥ ढालवावीसमीसपूर्ण ॥

॥दुहा॥स्वभावपाचेएकह्या खटद्रव्यमांसार तेमाटेसा  
 मान्यकह्या समजील्योविचार ॥१॥ हवेचउन्नगीवर्णवु ख  
 टद्रव्यमाजेह नित्यअनित्यजेपक्षथी प्रगटथइतेह॥२॥ च  
 उन्नगीवहूविधछे भाखशुतासविचार सजथईश्रोतासाभ  
 लो तजीआलपंपाल ॥३॥ आलसनिद्रादूरकरो तजोवि

कथाविचार मोहद्रष्टिदूरेकरी सावधानसुखकार ॥४॥ ए  
 मांज्ञानअगाधछे थईजावोसावचेत मनवचकायाथिरक  
 री श्रवणकरोचितहेत ॥५॥ ढाल २३ मी ॥ देशिचंदरी  
 यानी॥ हवेचउजंगीवर्णवुरे लहीआगमअनुमान जेहमां  
 भेदछेघणारे तेसमजवानुतान त्रुटक० तेहसमजवानुता  
 नतेजाणो अनादिअनंतजगचीतमांआणो पेहेलोभंगतेह  
 कहीजे विजोअनादिसंतलहीजे ॥ १ ॥ सुणोचवीज  
 नएह ॥एआंकणी ॥ सादिसतहवेजाणीयेरे त्रिजोभंगए  
 खास सादीअनंतचोथोकह्योरे एचउभंगीउलास त्रुटक०  
 एचउभंगीउलासेदाखी खटद्रव्यमाहेतेभाखी परथमजी  
 वद्रव्यमांकहीशु ज्ञानादिकगुणसाथेलहीशु ॥सुणो० २॥  
 जिवमांज्ञानादिकगुणारे अनादिअनंतछेतेह नित्यस्वभावे  
 जाणीयेरे एप्रथमगुणगेह त्रु० एप्रथमगुणगेहतेसाचो  
 जेयोहीरोदीसेजाचो विजोगुणहवेजाखजेह जीवकरमस  
 बधछेतेह ॥सुणो० ३॥ जीवकरमसबधछेरे कालअनादि  
 नोतास.ज्यारेत्यारेछुटशेरे मोक्षपुरीनीआश त्रु०मोक्षपुरी  
 नीआशतेजाणो तेहथीसंतपदकहांणो अनादिसंतएवी  
 जोभग एजंगेमुजलाग्योरंग ॥सु०४॥ देवमनुपत्रीजंचत  
 णारे नवतेसादीसंत जन्मादीकतेआदछेरे नाशथयेथा  
 यअंत त्रु० नाशथयेथायअंततेजेह सादीसंतत्रीजोगुण  
 गेह जंगनाख्योएजगनाथ जेहचलावेछेशिवसाथा॥ सुणो

५॥ जेजीवमोक्षेगयारे कर्मखपावीथयासीद्व फरीपाछाआ  
वेनहिरे पाम्याअनंतीरीद्व त्रु० पाम्याअनंतीरीद्वतेसार मु  
क्तीदीनतेआद्यविचार फरीनावेतेश्रंतकहीजे सांदीअनंत  
भंगचोथोलहीजे ॥सुणो ६॥ जीवमाहेचउजंगीकहीरे ह  
वेकहुधर्मास्तीकाय गुणच्यारेखधपजवारे अनादीअन  
तथाय त्रुटक० अनादीअनतथायतेजाणो बीजोअगईहां  
नकहाणो त्रणपर्जायईहांतेलहीये सादीसंतभगएकही  
ये ॥सुणो० ७॥ देशप्रदेशअगुरुलघुरे सादीसतसंजुक  
आदित्ततेहनोहोवेरे तेथीत्रीजोभगयुक्त त्रुटक० तेथीत्री  
जोअगयुक्ततेजाणो चोथोअंगसीद्वजीवथीवखाणो धर्मप्र  
देशतेसगेजेह सादीअनतअगकहीयेतेह ॥सु० ८॥ एमअ  
धर्मास्तीकायमारे चउजंगीकेहेवाय आकास्तीकायमात्रा  
खशुरे गुणच्यारेतेवाय त्रु० गुणच्यारेतेथायतेजाणो ख  
धअनादीअनतवखाणो बीजोअगएहमानही एहवातक  
हुछुसही ॥सुणो० ९॥ सादीसतहवेनाखशुरे नागोत्रीजो  
सार देशप्रदेशअगुरुलघुरे आदित्तएहवीचार त्रुटक  
आदित्तएहवीचारतेसार अभवीजीवसाथेतेधार चोथो  
अंगएमतेसही अपेक्षीतपणाथीलही ॥सु० १०॥ काल  
द्रव्यमागुणच्यारछेरे अनादीअनत पर्जायमाअतितकाल  
छेरे तेहीअनादीसत त्रु० तेहीअनादीसततेजाणो वर्तमा  
नकालसादीसतआणो अनागतकालतेचोथोकहीये सा

दीअनंतभगतेलहीये ॥ सु० ११ ॥ कालनुस्वरूपउपचारथी  
 रे नहीवस्तुस्वरूप वीवाहपनत्तीयेभाखीयुरे जोजोतेहअ  
 नुप त्रु० जोजोतेहअनुपतेसही एमवलीवहूग्रथेवही ह  
 वेजाखुपुद्गलजेह चउभगीयेलहीयेतेह ॥ सु० १२ ॥ पुद्ग  
 लद्रव्यहवेजांणजोरे च्यारगुणेकरीसार तेहअनादीअनंत  
 तछेरे प्रथमभंगनिहाल त्रु० प्रथमजंगनीहालतेसा  
 रो बीजोभगइहांनवीधारो पर्जायिच्यारेभाख्याजेह खं  
 धदेशप्रदेशतेह ॥ सु० १३ ॥ परमाणुतेजाणीयेरे तेमअ  
 गुरुलघुपरजाय सादीसंततेजाणीयेरे त्रिजोन्नंगतेथाय  
 त्रु० त्रिजोभंगथायतेजांण कोइकेहेशेपरमाणुकेमआंण  
 तेहनेकहीयेसांजलजाइ मलवावीखरवानीशक्तीछेतांही  
 सुणो० १४ ॥ वर्णगधरसंफरसनोरे परावरतनछेधर्म खंध  
 मलेनेवीखरेरे एपुद्गलनोमर्म त्रु० एपुद्गलनोमर्मतेजाणो  
 चोथोभंगएहमानवीआंणो अपेक्षीतपणेतेकहीये बीजो  
 चोथोन्नंगतेलहीये ॥ सुणो० १५ ॥ कर्मतजीमोक्षेगयारे एह  
 अनादीसत तेजीववीणतेपुद्गलारे भांगोसादीअनंत त्रुट  
 क० भांगोसादीअनततेजांणो मुनीहूकसांमान्यवखांणो  
 वीशेपपणेतेआगेकहीशु जेदघणातीहांकणेलहीशु ॥ सु  
 णो० १६ ॥ ढालत्रेवीसमीसंपूर्ण ॥  
 ॥ दुहा ॥ जीवद्रव्यमांजाखशं चउजंगीएह द्रव्यखेत्रका  
 लजावथी जेछेगुणगेहा ॥ १ ॥ जीवद्रव्यमांगुणच्यारअना

दीअनत जीवनेकर्मसजोगए तेअनादीसत॥२॥कर्मकोई  
 कालेछुटशे तेकारणजाणो नरकत्रिजचादीनव सादीसंत  
 वखाणे॥३॥जीवनेमोधपणुप्रगटे करीकर्मनोनाश तेदीन  
 भगचोथोहोवे सादीअनंतखास॥४॥ हवेचउजगीद्रव्यथी  
 खेत्रकालनेभाव तेसाथेअमेढाखशु समजील्योसुखलाव  
 ॥५॥ढाल२४मी॥मेंढीरगलाग्यो॥एदेउी॥जीवद्रव्यमांजा  
 णीयेरे द्रव्यखेत्रकालभाव श्रुतशुरंगलाग्योरे रंगलाग्योरे  
 चोलमजिठ श्रु० ॥एआकणी॥ ज्ञानादीकगुणजीवनारे द्र  
 व्यथकीचीतलाव श्रु०१॥अनादीअनंतएथयोरे स्वखेत्रजी  
 वप्रदेश श्रु० असरूयाताजाणीयेरेउदवर्तनापणेखास श्रु०  
 ॥२॥सादीसतजांगोजाणीयेरे जगत्रीजोकेहेवाय श्रु० अथ  
 वाअवगाहनथकीरे छतीपणुतीहाथाय श्रु०३॥एमजोताए  
 जाणीयेरेअनादीअनतभग श्रु०स्वकालअगुरुलघुरे तेगु  
 णथीजोतारग श्रु०४॥एपणअनादीअनतछेरे अथवाबीजेप्र  
 कार श्रु०अगुरुलघुगुणजाणीयेरे उपजचोवीणसवोसार  
 श्रु०५॥तेजोतांसादीसतछेरे अथवाअवरप्रकार श्रु०स्व  
 नावगुणपर्जायजेरे अनादीअनतवीचार श्रु०६॥ अगुरु  
 लघुपर्जायजेरे सादीसतकेहेवाय श्रु० हवेकदूअजीवद्र  
 व्यमारे सुणतातेसुखथाय श्रु०७॥ धर्मास्तीकायद्रव्य  
 रे द्रव्यथीस्वद्रव्यजाण श्रु०चलणसहायगुणजेरे अना  
 दीअनंतप्रमाण श्रु०८॥स्वखेत्रथीजाणीयेरे असरूयात

प्रदेशं श्रु० लोकप्रमाणेतेहछेरे जाणोआगमरेहेश श्रु०  
 ॥१॥अवगाहनपणेजाणीयेरे सादीसंतकेहेवाय श्रु० स्व  
 कालेकरीतेकहोरे अनादीअनंतथाय श्रु०॥१०॥अगुरुल  
 घुगुणजाणीयेरे अनादीअनंतछेएह श्रु०उत्पातवयतेजाणी  
 येरे सादीसंतछेतेह श्रु०॥११॥स्वजावगुणचारछेरे अगु  
 रलघुतेमजाण श्रु० अनादीअनंततेजाखीयेरे सुधुएमची  
 तआण श्रु०॥१२॥खंधदेशप्रदेशएरे तेमअवगाहनमानं  
 श्रु०सादीसतएजाणीयेरे धर्मद्रव्यनुज्ञान श्रु०॥१३॥एम  
 अधर्मास्तीजाणीयेरे सरखाजावसोहाय श्रु० हवेआका  
 स्तीकायमारि स्वद्रव्येगुणकेहेवाय श्रु०॥१४॥द्रव्यधीद्रव्य  
 नेअवगाहनारे अनादीअनंतकेहेवाय सु० हवेस्वखेत्रभा  
 खुशुरे अनंतप्रदेशीथाय श्रु०॥१५॥लोकालोकप्रमाणछे  
 रे अनादीअनंतएह श्रु० अवगाहनापणेजाणीयेरे सादी  
 सतभास्योतेह श्रु०॥१६॥स्वकालनेअगुरुलघुरे गुणएअ  
 नादीअनंत श्रु० उपजेवीणसेतेमसहिरे तेकारणसादी  
 संत श्रु०॥१७॥स्वभावथीगुणचारएरे तेमवलीएकजखंध  
 श्रु०अगुरुलघुतेमजाणीयेरे अनादीअनंतसध श्रु०॥१८॥  
 देशप्रदेशजाणीयेरे तेछेसादीसंत श्रु० तेआकाशदोयभे  
 दथीरे भाखुतेसुणजोखंत श्रु०॥१९॥लोकाकाशतेएकछेरे  
 लोकाकाशनोखंध श्रु० तेतोसादीसतछेरे हवेवीजोभाखु  
 खंध ॥श्रु० २०॥अलोकाकाशतेजाणीयेरे खंधअलोकनो

॥२१॥ मादीअनतभांगेकह्योरे आगमवचनछेतेह  
 ॥२१॥ कालद्रव्यहवेनाखशुरे द्रव्यथीद्रव्यछेएक श्रु०  
 वापुरानावर्तनारे गुणछेतेहनोनेक॥श्रु० २२॥ ने  
 दिअनंतछेरे स्वक्षेत्रसमयविचार श्रु० २३॥ स्वका  
 घेरे वर्तमानसमयएकधार ॥श्रु० २३॥ स्वका  
 संतछेरे वर्तमानसादीसंत श्रु० २४॥ स्वका  
 रे जेछेसादीअनंत ॥श्रु० २४॥ स्वका  
 व्यथीद्रव्यपणुंएह श्रु० पुरणगलणधर्मछेरे  
 जेह॥श्रु० २५॥ क्षेत्रप्रमाणुंतेहनोरे सादीसंतकेहेवाय  
 कालपीगुणअगुरुलघुरे अनादीअनततैथाय श्रु० २६॥  
 उपजवोनेविणसवारे तेसादीसतक्रहाय श्रु० २७॥  
 एव्यारछेरे अनादीअनंतथाय श्रु० २७॥  
 जेवारे चारेसादीसंत श्रु० मुनीहुकमहवेआगलेरे  
 जेनेदीनरखित श्रु० २८॥ ढाल २४मीसपूर्ण॥  
 ॥२९॥ द्रव्यक्षेत्रकालजावनी साथेचोचंगीएह  
 ॥२९॥ अनादीप्रमुखतेह ॥२९॥  
 ॥३०॥ अन्योन्यसंबंध चोचंगीतिहांजोडशु  
 पारि ॥३०॥

नही मूरख कहिये सोय ॥५॥ ते कारण परमाद तजी करो श्रू  
त अभ्यास ज्ञानी गुरु ने गोतीने समकित सहित गुण जास  
॥६॥ ॥ ढाल २५ मी ॥ क्युं जाणु क्युं वनी आवही ए देशी ॥  
हवे प्रथम इहां जो डीये आकाश द्रव्य थी सार हो भवीक ॥ अ  
लोक आकाश मां नही अवर पच द्रव्य विचार हो भवीक ॥१॥  
हवे प्रथम इहां जो डीए ॥ लोका काश मां जाखिये खट द्रव्य नो  
वास हो भवीक ॥ प्रत्येके प्रत्येके चंउ जंगी लागे ते भाखू तास  
हो भवीक ॥ ह० २॥ धर्म अधर्म द्रव्य जे संबंध अनादि अनंत हो  
भवीक ॥ लोका काश प्रदेश मां प्रदेशे प्रदेशे संत हो भवीक ॥ ह०  
३॥ धर्म अधर्म द्रव्य ना प्रदेश रह्या छे तास हो भवीक ॥ ते पण  
कदापी बीछडे नही तेणे अनादि अनंत जास हो भवीक ॥ ह०  
४॥ आकाश खेत्र जे लोक छे तीहां सर्वे जीव कहाय हो भवीक  
ते तो अनादि अनंत छे ॥ ए तो पेहे लोकां गोथाय हो भवीक ॥ ह०  
५॥ अथ वास सारी जीव जे ह द्रव्य कर्म सही त जे ह हो भवीक ॥ ते  
मवली लोक प्रदेश थी सादी संत संबंध ते ह हो भवीक ॥ ह०  
६॥ लोका काश संबंध ने पुद्गल अनादि अनंत हो भवीक ॥ आ  
काश प्रदेशे जे रह्या पुद्गल द्रव्य गुण वंत हो भवीक ॥ ह० ७॥  
शी परदेशी प्रमुख सही खंध सरवे ए जाण हो भवीक ॥ ते म प्र  
माणु संबंध ए सादी सत चीत आण हो भवीक ॥ ह० ८॥ आ  
काश द्रव्य जे म जाखीयो ते म धर्मा स्ती काय हो भवीक ॥ ते नो  
संबंध पण ए म छे ए म अधर्मा स्ती काय हो भवीक ॥ ह० ९॥



एसवैसरखेभाविकह्या । संबंधद्रव्यनाजासहोन्नवीक सर  
 खेभावेवीचारिने गुणग्रहणकरजोतासहोभवीक ॥ह० १॥  
 १०॥ हवेभाखुर्जाचद्रव्यने पुद्गलसाथेसंबंधजेहहोभवीक  
 अभवीजीवनेजाणीये अनादीअनंततेहहोभवीक ॥ह० ११॥  
 जेअन्नवीजीवडा नवीपामेपटनीरवाणहोभवीक तेथीकर्म  
 क्षयतेहनेनही सदापुद्गलसगजाणहोभवीक ॥ह० १२॥  
 हवेजेनव्यजीवछे नाखुलतासवीचारहोभवीक लाग्याक  
 र्मतेछुटशे तेथीअनादीसतधारहोभवीक ॥ह० १३॥ हवे  
 नीश्वेनयेकरी नाखुद्रव्यविचारहोन्नवीक खटद्रव्यस्वभावे  
 प्रणमे तेणेप्रणामीकिसुखकारहोन्नवीक ॥ह० १४॥ तेथी  
 परणामीकपणुसदा सास्वतोएछेजावहोभवीक तेथी  
 अनादीअनंतछे एमसुधुचीतलावहोन्नवीक ह० १५॥ ह  
 वेजीवपुद्गलवीशे वेहुमलतांसवधथायहोभवीक तेथीपर  
 णामीकपणुकहुं परपरणामीककेहेवायहोभवीक ॥ह० १६॥  
 परपरणामीकपणुजाणीये अन्नव्यजीववीचारहोभवीक अ  
 नादीअनंतएहछे हवेकहुभव्यजीवनोमारहोभवीक ॥ह०  
 १७॥ अनादीसतएहछे कारणनाखुतासहोभवीक जीवपु  
 द्गलमलवांतणो आदिनहिछेजासहोभविक ॥ह० १८॥ को  
 ईकालेतेंछुटशे तेथीएहसंतकेहेवायहोभवीक जीवपुद्गलमा  
 जाणीये एमभगतेथायहोभवीक ॥ह० १९॥ पुद्गलपरमा  
 णुपणे सत्ताअनादीअनंतहोभवीक जेमलवोनेवीखरवो तेतो

भास्योसादीसंतहोभवीक ॥ह० २०॥ एमचउभंगीवर्णवी  
 खटद्रव्यमांसारहोभवीक मुनीहूकमआगेजलु कहिशुनय  
 नोविचारहोभवीक ॥हवे० २१॥ ढाल २५ मी संपूर्ण॥  
 ॥दुहा॥ चउभगीएवर्णवी खटद्रव्यमांसार ओतालेजो  
 समंजीने जीवपुद्रलविचार॥१॥ जीवपुद्रलमलवाथकी स  
 क्रीयकेहेवाय तेहपुद्रलरहीतथयो तवअक्रीयथाय ॥ २॥  
 तेमाटेएपुद्रल सदासक्रीयजाणं तेविचारआगेभास्वशुं न  
 पपदमांचित्तआण॥३॥ नयतणोविचारवहू जाणवुदुरधर  
 नेह कर्मक्षयउपसमजेहने तेसमजेगुणगेह ॥४॥ सदगुरु  
 मगेतेलहे विनयकरीवहूमान अल्पबोधथीविस्तरे तेल  
 बंदुसमान॥५॥ अवनतीतनेआवेनही नयतणुएज्ञान आवे  
 पिणजाणीये अवलुछेतसज्ञान॥६॥ ब्रहामेहजपेरेजाणीये  
 लदायकनहितास पदपदसंकटतेलहे खोटीपडेजसभा  
 ॥७॥ भद्रवाहूतणीपरे फलदायकहोयसार तेकारणवि  
 यकरो जेननुमुलउदार ॥८॥ हवेश्रोतासावधानथई सां  
 लजोएकचित्त मनवचनकायाथीरकरी ज्ञानीनीएरीता१।  
 ॥ल२६मी॥ देशीएकवीसानी॥ एकअनेकपक्षथीरे निश्चे  
 त्वहारज्ञानेकरी॥ नयोजाखेरे निश्चेव्यवहारतेचीतधरी  
 द्विव्यमांरे अनेकस्वजावरह्याखरा तेएकवचनथीरेनवी  
 येकह्यापरा॥ ब्रुटक॥ तेणेमांहोमांहिसंखेप एमकहिनेजा  
 ये मुलनयनाजेदवेछे तेकहीनेदाखीये एकनयद्रव्यार्थ

क बीजीपरजायनयकही श्रंन्योश्रन्यवीचारजुदा भाख  
 गुहवेतेसही ॥ १॥ द्रव्यार्थकनोरे चेदहवेइहांभाखशु द्र  
 व्यपणार्थीरे तेतोकहीनेदाखशुं परजायार्थकरे परजायग्र  
 हणथीकहू उत्पातनेरेवयपरजायतीहांग्रहू॥त्रुटक॥परजाय  
 श्रणलेवेकरी द्रव्यतीहातेलीजीये सत्तानेग्रहेवाथकोद्रव्यार्थ  
 कतेकीजीये तेद्रव्यार्थकनयतणो भेदभाखुछुहवे दशनेदते  
 जाणीये सत्यभापणतेकहे॥२॥नीत्यद्रव्यार्थकरे प्रथमभेद  
 एभांखीयो अगुरुलघुगुणरे खेत्रश्रपेक्षावीणदाखीयो ए  
 कद्रव्यार्थकरे मुलगुणनेग्रहे पिंडपणेरे उत्पातवयतेनवीलहे  
 ॥त्रुटक॥ ज्ञानादीकगुणसरवे जीवसरवनेसरखा तेमपुद्र  
 लादीकद्रव्यमाहेगुणसरवेनरखा तेकारणएएमजाणी ए  
 कद्रव्यार्थिकनये हवेत्रीजोभेदभाखु साखेजेमतेकहे ॥३॥  
 सत्यद्रव्यार्थिकरे स्वद्रव्यग्रहेसही जेमसत्यलक्षणरे द्र  
 व्यमांहिभारूपावहीव्यक्तवछेरेद्रव्यार्थिकचोथोभेदएवचन  
 थीरे केहेवानोनखेदए॥त्रुटक॥ केहेवानोनखेदएही द्रव्यगु  
 णपरजायते सर्वद्रव्यसहीतभाखीये वचनेग्रहेवाजोगए  
 अशुद्धद्रव्यार्थिकए भेदपाचमोभाखीये कर्मउपाधीसही  
 तलेता क्रोधादीकएदाखीये॥४॥ उत्पातनयेरे॥वयसापेक्ष  
 तेजाणीये अशुद्धद्रव्यार्थकरे छठोनेदचीतआणीये कोई  
 द्रव्यरे नामलहीनेभाखीये तेमाहीरे उपजवुवीणसबुदाखी  
 ये॥त्रुटक॥प्रथमद्रव्यार्थिकनये मुलसत्ताएकजाणीये सर्व

सत्तासरखेभावे तेथीचीतणमआणीये॥ शुद्धद्रव्यार्थकग्रही  
जीवसर्वनादाखीये आठप्रदेशनीर्मलाछेतेथीअशुद्धएजा  
खीये ॥५॥ द्रव्यार्थकरे सत्ताभेदएनवमो स्वद्रव्यरेजीव  
तेअसंख्यनो प्रदेशअसंख्यरे तेसर्वेसरखाकह्या तेकारणरे  
सत्ताद्रव्यार्थकएलह्या॥ त्रुटक ॥ द्रव्यार्थकभेदएहि परम  
भावग्राहिककह्यो ॥ गुणगुणीस्वभावतेहि सर्वनोतेएकक  
ह्यो ज्ञानरुपजेमआत्माए सर्वद्रव्यतेमभाखीये द्रव्यार्थ  
कदशभेद एमकहिनेदाखीये॥६॥ परजायार्थकरे नयस्वरु  
पतेभाखीये परजायनयनारे खटभेदतेदाखीये तेहमांहिरें  
द्रव्यपरजायएमकह्यो भव्यपणोरेसिद्धपणोतेएमलह्यो  
त्रुटकाव्यंजनपरजायद्रव्यना स्वस्वपरदेशमारहे गुणपर्जा  
पएकथीयेअनेकतापणुलहे जैनधर्मेएमभाख्यु द्रव्यधर्म  
तेआपणो चलणसहायगुणतेथी जिवपुद्गलमांथापणो॥७॥  
गुणव्यंजनरे परजायएचोथोकह्यो एकगुणनारे जेदघणा  
हांलहो स्वजावपरजायरे अगुरुलघुतेजाणीये एपांच  
शेरे परजायतेहवखांणीये॥ त्रुटक ० ॥ पर्जायतेहवखांणी  
जेसर्वद्रव्यमांजाखीया एपांचिपर्जायजाणो ज्ञानीवचने  
जाखीया छठोपर्जायजाणीये बीजावनामेतेकह्यो जीव  
द्रुलमांहीलाधेश्रवरमांहीतेनवीलह्यो॥८॥ इहांजीवमारे  
रनरकादीगतीकही नानाप्रकारनारे जवकरतांतिलही  
हवीभावरे परजायतेहनेजाखीये कर्मपरजायरेतेमकही

नेदाखीये॥त्रुटक०॥तेमकहीनेभाखीयेए हवेपुद्गलमांकदू  
 द्वीपरदेशथीमांडीनेएअनतपरदेशीलदू खंधतणुतेमलवु  
 कहीये बीजावपर्जायतेजाणीये परावर्तनसमयसमये ते  
 हचोतएमआणीये ॥९॥ पाठंतरेरेछपरजायतेजाखशु शा  
 स्त्रमारकेह्याछेतेदाखशु अनादीरे नीत्यपरजायपेहेलोक  
 ह्यो मेरुपरमुखरे श्रोतातुमेसमाजिलह्यो॥त्रुटक०॥श्रोता  
 तुमेसमजजोने सादीनीत्यपरजायए सिद्धमाहीएहलाधे  
 एमवीजोनेदथायए अनीत्यपरजायएते॥समयेसमयेभाखी  
 ये छद्रव्यमाहीतेहलाधे उपजेविणसेदाखीये॥१०॥अशु  
 दरेअनीत्यपर्जायचोथोकह्यो जन्ममरणथीरे एपरजायस  
 त्यथयो हवेउपाधीरेपरजायपाचमोनाखीये कर्मसंबध  
 थीरे शुभाशुभथीदाखीये॥त्रुटक०॥शुभाशुभथीदाखीयेए  
 परजायशुद्धछठोसही मुलपरजायसर्वद्रव्यना एकसरखा  
 तेकहि पलटेनहितेमुलपरजाय स्वभावपरजायजाणीये  
 पलटेतेहीकर्मपरजाय मुनीहुकमचीतआणीये ॥ ११ ॥  
 ढाल २६ मी सपूर्ण ॥

॥दुहा॥ परजायनयएवरणवी ॥खटभेदउदार खटखट  
 दोयप्रकारना जाख्योतासविचार ॥ १ ॥ तेमद्रव्यार्थकव  
 णव्यो दसभेदथीजाण आगममावीस्तारधणो इहासक्षेप  
 प्रमाण ॥२॥हवेसातेनयवरणवु तेसुणजोअधिकार नाम  
 प्रथमइहांदाखशु आगेजेदविचार॥३॥ निगमनयपेहेलो

कह्यो बीजोसग्रहजाण त्रीजोव्यवहारजाणीये बह्वीद्व  
 चीत्तआण॥४॥रजुसुत्रचोथोकह्यो शब्दनयसुखकार संजी  
 रुढछठोकह्यो एवंभुतनीरधारो॥५॥नामकह्याएसातनां हवे  
 कहुतासविचार भेदघणाइहांदाखशुखटद्रव्यमांसार॥६॥  
 ॥ढाल २७मी॥ जीरेमाहारेजांघोकुंवरजाम ए देशी॥  
 जीरेमाहारेहवेकहूनयविचार प्रत्येकेप्रत्येकेजाखियेजी  
 रेजी जीरेमाहारेसातेनयनीमांहे प्रथमनीगमनयदाखिये  
 जीरेजी॥१॥ जीरेमाहारेनीगमकेहेतांजेह नहीछेतसए  
 कंगमोजीरेजी जीरेमाहारेअनेकविधतेगणाय जीहांती  
 हांतिएमसमोजीरेजी॥२॥ जीरेमाहारेअंशगुणथीतेह उ  
 पन्योतेहनेग्रहेजीरेजी जीरेमाहारेवस्तुपणुंमानेतेह एम  
 नीगमनयलहेजीरेजी॥३॥ जीरेमाहारेअत्रजाखूंद्रष्टांत  
 तेहतुमेचीतमांधरोजीरेजी जीरेमाहारेजेमकोइमनुप्य म  
 नेमांहेविचारकरचोजीरेजी॥४॥ जीरेमाहारेपालीलेवा  
 काज तेवनमांहीसंचरयोजीरेजी जीरेमाहारेकाष्टलेवाने  
 हंत पंथमाहीवहेखरोजीरेजी॥५॥ जीरेमाहारेपंथेमालि  
 पोएक सामोमाणसजाणियेजीरेजी जीरेमाहारेतेणेपुछी  
 वात कीहांजावोछोएमनाणियेजीरेजी॥६॥ जीरेमाहा  
 पुछ्यानोउत्तर तेणेसमेकांइतेकहेजीरेजी जीरेमाहारेपा  
 लीवाकाजवनमांहेजावुंवहेजीरेजी॥७॥ जीरेमाहारेकरचो  
 हांरेविचार मोहोटीएकमनमांखरोजीरेजी जीरेमाहारे

पालीवनमारेकाम वणघडेतेवचनठरचोजीरेजी॥८॥ जीरे  
 माहारेकाष्टपणकाप्युनांही दीठावीणएवचनकह्युंजीरे  
 जी जीरेमाहारेतोमनचितवीवात तेनेतेवस्तुलह्युंजीरेजी  
 ॥९॥ जीरेमाहारेतेमजजोवस्वरूप श्रंशथकीतेग्रहणकरी  
 जीरेजी जीरेमाहारेमानेसिद्धसमान अथवातेसिद्धजापे  
 खरीजीरेजी॥१०॥ जीरेमाहारेतेनीगमनारेजेद कद्यात्र  
 एतेजाणियेजीरेजी जीरेमाहारेअतितआरोपणएह वर्त  
 मानकालंचितआणियेजीरेजी ॥११॥ जीरेमाहारेएप्रथ  
 मभेद बीजोभाखुछुहवेजीरेजी जीरेमाहारेअनागतआरो  
 पणजेह वर्तमानमांहेतेठवेजीरेजी॥१२॥ जीरेमाहारेवर्त  
 माननीगम जेदत्रणएजाणियेजीरेजी जीरेमाहारेतेहत्  
 णारेविचार जाखुतेचितआणियेजीरेजी॥१३॥ जीरेमाहा  
 रेअतितनीगमजेह आरोपणविधिकहूजीरेजी जीरेमा  
 हारेअवीरनुनिर्वाण आजदीवालीएमलहूजीरेजी॥१४॥  
 जीरेमाहारेअतितकालनीवात वर्तमानमांएलहीजीरेजी  
 जीरेमाहारेअतितनीगम प्रथमजेदतेएमकहीजीरेजी  
 ॥१५॥ जीरेमाहारेअनागतनीगम जेदतासएमभाखुंजी  
 रेजी जीरेमाहारेपद्मनाजिनवर दीक्षाज्ञानतेदाखुंजी  
 रेजी॥१६॥ जीरेमाहारेसतोककालनीवात वर्तमानतेक  
 हीजीरेजी जीरेमाहारेनीगमनयएमथाय त्रणेभेदेतेलह  
 जीरेजी॥१७॥ जीरेमाहारेहवेकहूसंग्रहनय सत्ताग्राहे

सहीजिरेजी जीरेमाहारेकारणसमजोतास एकनामैसर  
 वेग्रहीजिरेजी॥१८॥ जीरेमाहारेद्रव्यकहियेएक एमकेहे  
 तांगुणपरजायसहीजिरेजी जीरेमाहारेसर्वपरिवारसमेत  
 तेनयग्रहेछेवहीजिरेजी॥१९॥ जीरेमाहारेइहांभाखुंएकद्र  
 ष्ठांत तेतमेसुणजोचितदइजीरेजी जीरेमाहारेकारणजा  
 खुतास मनुष्यकोइपरभातलहीजिरेजी॥२०॥ जीरेमाहा  
 रेबेठोघरनेबहार दातणवेलातेसहिजीरेजी जीरेमाहारे  
 आपणाचाकरपास दातणमागेतेवहिजीरेजी ॥२१॥ जी  
 रेमाहारेतवतेनोकरजाण जलरुमालसाथेसहिजीरेजी  
 जीरेमाहारेदांतघसणनेकाज तेआवेदातणलहिजीरेजी  
 ॥२२॥ जीरेमारेमाग्युहुतुतवएक पणसर्वेसंग्रह्यकीजीरे  
 जी जीरेमारेतेमद्रव्यमांएह गुणपरजायआवेनकीजीरे  
 जी ॥२३॥ जीरेमारेसग्रहनयनातेह जेददोयतेदाखीया  
 जीरेजी जीरेमारेसामान्यसंग्रहजेह द्रव्यकहीनेभाखीया  
 जीरेजी॥२४॥ जीरेमारेजीवनेअजीव भेदजुदातेनवीथया  
 जीरेजी जीरेमारेजेदवीजोहवेजास विशेषसंग्रहकह्याजीरे  
 जी॥२५॥ जीरेमारेविशेषताएमथाय जीवद्रव्यतेकह्याजी  
 जी जीरेमारेअजीवद्रव्यदूरतेह एमसंग्रहनयेलह्याजी  
 जी ॥२६॥ जीरेमारेएसग्रहनयजाण हवेव्यवहारनय  
 नाखशुंजीरेजी जीरेमारेमुनीहुकमकहेएम शास्त्रथीएदा  
 वशुंजीरेजी॥२७॥ ढालसतावीसमीसपूर्ण॥



॥दुहा॥हवेव्यवहारनयवर्णवु जेहनाभेदअनेक तेसांभ  
 लजोचितधरी भाखुछुकइछेक ॥ढाल २८ मी॥ सुतसी  
 द्वारथनुपनारे ॥एदेशि ॥ नयव्यवहारहवेतुणारे जेहना  
 दोयप्रकार एककल्पव्यवहारछेरे बीजोज्ञानाचाररे॥१  
 वियणसाजलो एहअनुभवउठाररे अमृतरसखरो॥एआ  
 कणी॥ कल्पव्यवहारजेजाणियेरे जिनआज्ञायेविहार ते  
 थीवाहेरकष्टजेरे फोगटएनिरधाररे॥भवि० २॥ वेहेवारके  
 हेतांबाह्यजेरे स्वरूपदेखीनेरेजेद वेहेचेतेव्यवहारछेरेजे  
 माबोहोलोखेदरे ॥ भवि० ३ ॥ दिसतागुणनेमानतारे  
 अतरस्थानप्रमाण बाहेरदृष्टीनयछेरे अतरदृष्टीनवखां  
 णरे ॥ज०॥ जेकारणनीगमसग्रहरे ज्ञानरूपध्यानतेनाही  
 तेहपरणामवीनाअशथीरे अथवासत्ताग्राहीछेताहरे ॥  
 जवि० ५ ॥ तेमइहाकारणमुख्यतारे मनुपपणुएरेसार  
 जीवनिश्रवस्थातीहाकनेरे अनेकजातविचाररे ॥ जवि०  
 ६ ॥ नीगमसग्रहनयथकीरे जीवसत्ताएकरूप व्यवहारन  
 यथीअनेकछेरे भाखुभेदअनुपरे ॥जवि० ७॥ दोयभेदती  
 हाजिवनारे ससारिनेरोसिद्ध सिद्धनाजेदपणअनेकछेरे  
 पन्नबणाएरिद्ध ॥जवि० ८ ॥ ससारीदोयजेदथिरे अजो  
 गीसजोगीरेजाण सजोगीदोयजातनारे केवलछिदम  
 स्थवखाणरे ॥जवि० ९॥ छदमस्यदोयभेदेकह्यारे स्वीण  
 मोहिउपसतमोहि उपसतमोहदोयजातनारे सुक्ष्मकखा

इसोइरे ॥ नवि० १० ॥ बीजोवादरकखाइछेरे तेहनापण  
 भेददोय एकअवेदिजाणियेरे श्रेणिप्रतिपनसोयरे ॥ न  
 वि० ११ ॥ श्रेणिप्रतिपनदोयजातनारे आठमेगुणठाणे  
 जाण श्रेणिरहितविजाकह्यारे तेहनादोयभेदवखाणरे ॥  
 नवि० १२ ॥ अप्रमादिपरमादिजाणियेरे प्रमादिनादोय  
 भेद सर्वविरतिदेशविरतिऐरे दोयभेदनाखुडमेदरे ॥ न  
 वि० १३ ॥ विरतिप्रणामिअविरतिरे दोयभेदेअविरतिरेजा  
 ण एकअविरतिसमकितिरे विजोमिथ्यात्वीअनांणरे ॥ भ  
 वि० १४ ॥ मिथ्यात्विदोयभेदथिरे एकनव्यविजोअभव्य  
 यथिभेदपेहेलोकह्यारे अग्रंथिभेदइव्यरे ॥ भवि० १५ ॥  
 जेजिवजेहवोदेखियेरे तेहवोभाखियेतेह एमतव्यवहार  
 नपनारे अतरउपयोगनएहरे ॥ भवि० १६ ॥ एमजपुद्ग  
 लद्रव्यमारे भेदघणाकेहेवाय इहासंखेपेदाखशुरे व्यवहा  
 रनयेतेथायरे ॥ भवि० १७ ॥ पुद्गलद्रव्यदोजातनारे परमांणु  
 बिजोरेखंध खंधनाभेदपणदोयछेरे एकजिवसाथेसंधरे ॥  
 भवि० १८ ॥ विजोजिवरहितकह्यारे तेहनाभेदअनेक जिव  
 सहितखंधनारे भेददोयकह्यानेकरो ॥ भवि० १९ ॥ एकसुद्धम  
 वादरविजोरे इहांवर्गणानोविचार तेपुर्वेभाखीगयारे अ  
 रिहतपदेतेधाररो ॥ भवि० २० ॥ एमअनेकभेदजाणियेरे व्य  
 वहारेवेहेचाय खटभेदइहांदाखशुरे तेसुंणजोसुखदायरे ॥  
 भवि० २१ ॥ सुद्धव्यवहारपेहेलोकह्यारे सुंणजोतासविचार

ज्ञानदर्शनचारित्र्यरे निश्चयनयथि एकधाररे। भवि २२। एक  
 रुपछेतेसहिरे तेहनाकरवारेभेद शिष्यादिकसमजाववारे  
 एव्यवहारउमेदरे ॥ नवि० २३॥ अशुद्धव्यवहारबीजोक  
 ह्योरे अज्ञानिकेहेवोरेजिव रागद्वेषलागिरह्यारे एहअशु  
 द्धनहिशिवरे ॥ नवि० २४॥ त्रिजोशुभव्यवहारछेरे पुन्य  
 करणिछेरेजास तपनेमनेकष्टजेरे व्यग्रहारचारित्र्यतासरे  
 ॥ नवि० २५॥ अशुभव्यवहारचोथोकह्योरे अशुभकर्म  
 करेजेह पापकर्मथिपाछोनहिरे जिवहशानोनेहरे ॥ न  
 वि० ॥ २६॥ पांचमोउपचरितजाणियेरे वस्तुधर्मनहिजा  
 स उपचारथापितेहनेरे वस्तुकरिमानियेतासरे ॥ भवि०  
 ॥ २७॥ अणउपचरितव्यवहारछेरे शरिरादिकपरजाण  
 शरिरजिवजुडापणुरे प्रणामिकभावेएकठाणरे ॥ भवि०  
 ॥ २८॥ एमव्यवहारनयजाणियेरे बहुश्रुतचरणथिसार  
 मुनिहूकमगुरुज्ञानथिरे होवेभवनोपाररे ॥ भवि० २९॥  
 ॥ ढालअठाविशमिसपूर्ण॥

॥ दुहा ॥ चोथीनयहवेभाखीये रजुसूत्रगुणजास अती  
 तअनागतकालनी अपेक्षानकरेतास ॥ १॥ वर्तमानकाल  
 ग्रहे वस्तुनोजेगुण जेजेगुणप्रणमे तेतेमानेसुण ॥ २॥ प्र  
 णामग्राहीजाणिये एनयनोविचार द्रष्टातएकइहाडाखशु  
 समजील्योसुखकार ॥ ३॥ ग्रहस्थावासेजेवसे अंतरंगसा  
 धुपरमाण तेनेसांधुमानेते एनयनुएकाम ॥ ४॥ परणाम

चपलछेतेहना विपयादिकसंजोग अजीलाखीतेसर्व  
नो टल्योनहिकोइरोग ॥ ५ ॥ अविरतीएजीवछे तेहेने  
मानेसाध इत्यादिकविचारबहु समकितिमनबाध ॥ ६ ॥  
दोयजेदरजुसूत्रना सूक्ष्मबादरजाण सूक्ष्मइहांवखाणिये  
प्रथमभेदचित्तआण ॥ ७ ॥ वस्तुसर्वसदायते वर्तमानकाले  
जेह समयमांत्रतेग्रहे देखाडुगुणतेह ॥ ८ ॥ अतितकाले  
जीवए हूतोअज्ञानीजाण अनागतकालेतेवली अज्ञानथा  
शेचित्तआण ॥ ९ ॥ वर्तमानकालेज्ञानिछे ज्ञानिजाखेतास  
भूतजविष्यकालनी अपेक्षानहिजास ॥ १० ॥ एकजवर्त  
मानकालनो समयग्रहेएक देखेतेवोजाखतो सूक्ष्मरजु  
सूत्रनेक ॥ ११ ॥ बादरथुलपरणामने ग्रहेतेरजुसूत्र एम  
जीनतेजाणिये रजुसूत्रनयहुत ॥ १२ ॥ ढाल २९ मी ॥  
क्रांटाकरधरेआविया ॥ एदोशि ॥ शब्दनयहवेभाखिशु जे  
हनागुणअनेकरे केहेतांपारआवेनहि समकीतगुणनीटे  
करे शब्दनयहवेभाखिशु ॥ १३ ॥ वस्तुसर्वगुणेभरी अथवा  
निर्गुणजेहरे नामलाहिवोलाविये भाषावर्गणाथीतेहरे  
॥ शब्द ० २ ॥ वचनगोचरजेहोवे तेशब्दनयजाणोरे अरुपि  
द्रव्यवचनशु ग्रहोनजायेताणोरे ॥ शब्द ० ३ ॥ पणवचनशु  
जाखिये तेथीशब्दनयथायरे शब्दनाअर्थजेहवां वस्तुमां  
गुणतेपायरे ॥ शब्द ० ४ ॥ घंटपटजेमतेशब्दथी तेवोअर्थती  
हाहोयरे तेकारणएनयनो विपयतेवोजोयरे ॥ शब्द ० ५ ॥

अथवाव्याकर्णादिक विनक्तीसमासरे तेप्रतेअव्ययधा  
 तुसही तेसवीशब्दमांखासरो॥शब्द०६॥ नामादिकनखेपा  
 सही एनयमाकेहेवायरे तेसवीआगेजाखशु नखेपअधि  
 कारेथायरे ॥शब्द० ७॥ छठीनयहवेभाखिये संभोरुढसु  
 खकाररे गुणघणावस्तुतणा प्रगटेतेहविचाररे ॥शब्द०॥  
 ८॥ अल्पगुणबाकीरह्या प्रगटशेतेखासरे तेहनेवस्तुमा  
 नतो एअजिप्रायछेजासरे ॥शब्द० ९॥ नामादिकवाचक  
 अर्थ प्रगटरुपधर्मजेहरे तेपरजायनेवस्तुकहि बोलावेछे  
 एहरे ॥शब्द० १०॥ अर्थपर्जायप्रगट्याविना पर्जायपणु  
 नमानेरे प्रगटपर्जायनेमानता एककरीनिजाणरे ॥शब्द०  
 ११॥ जेमजीवचेतना आत्मशब्दएहरे नामार्थधर्मप्रगटहू  
 वा तेमांगणेगुणगेहरे॥श० १२॥ एमपदार्थतणो एकअर्थकरे  
 तेहरे एछठीनयजाणिये अशओछीछेएहरे॥श० १३॥ तेर  
 मागुणठाणेइहा केवलिभगवंतजाणोरे सिद्धकहितेबोलता  
 नेदकोइचितनआणोरे॥श० १४॥ देशउंणानेपूर्णकहे एविन  
 यछेजासरे एवभुतहवेभाखशु सातमीनयछेखासरे श० १५  
 गुणेजेसपूर्ण वस्तुजेदेखायरे क्रियाकरेतेआपणि तेवस्तुठ  
 रायरे॥श० १६॥ वस्तुनावचनपर्जायजे तथावस्तुधर्मजेह  
 रे सर्वप्रगटपरवर्तता तेहनेवस्तुकहेतेहरे॥श० १७॥ जेजिव  
 कर्मक्षयकरि, मोक्षेपोहोतासाररे तेहनेसिद्धकहेसहि, एव  
 भुतेएहविचाररे॥श० १८॥ इहांद्रष्टातएकभाखीये तेसमज

जोसाररे कुंजशब्दतसकिजिये सुणोतासविचाररे॥श०  
१९॥स्त्रिमस्तकथापियो जलभरीयोसुखकाररे जलधार  
एक्रियाकरे आवतोकुंजतेधाररे॥श०२०॥एमसपूर्णमान  
तो एवभुततेजाणोरे एमसातेनयभाखीया तुद्वाचित्तमा  
आणोरे॥श०२१॥पुनर्पिसातेनय द्रष्टांतेकरिजाखुरे मुनि  
हूकमआगेसहि अनुजोगद्वारधिदाखुरे॥श०२२॥ढाल  
ओगणत्रिसमिसपूर्ण॥

॥दुहा॥जेमकोइपुरुषप्रते पुछेअवरतेसोय कंहोभाइंतुमे  
कीहांवसो वलतुकहेतेजोय॥१॥लोकमांहेहूवसु निगम  
अशुद्धतेएह वलतुपुछेलोकए त्रणनेदछेतेह॥२॥उर्धने  
त्रिछोकह्यो अधोलोकतेमजाण तेहेमांतुमेकिहांरहो ते  
भाखोसुवीनाण॥३॥त्रिछालोकेहुंरहू शुद्धनिगमएवाक्यं  
वलतुपुछेत्रिछाविपे॥द्विपअसरूपसाक्य॥४॥तैमसमुद्रअ  
सरूपछे वसोकोणद्विपमांहे तेवारेवलतुकहे जंबुद्विपेताही  
॥५॥शुद्धातरनीगमतण जाणोतमेविचार हवेवलतुतेणेपु  
छियु तेभाखुउदार॥६॥जंबुद्विपमाखेत्रघणा कोणाखेत्रेतुम  
वास तवअतिशुद्धबोलियो नरतखेत्रेखास॥७॥वलतुपुछेभर  
तना खंडछकेहेवाय तेमांहेतमेकिहावसो तवजाखेसुखदाय  
॥८॥मध्यखंडेअमोवसु दक्षणादिशामाजेह तवतेपुछेदेशबहू  
कोणदेशमांकेह॥९॥तवकहेमगवदेशमां तवपुछेतेगाम तव  
कहेराजग्रहिविपे पाडोघरतेठांम ॥१०॥ इत्यादिकबहूपू

छियु तिहालगेनीगमकेहेवाय हवेअवरनयवर्णवु तेसुण  
जोसुखदाय॥११॥ ढाल ३० सी॥ रामचद्रकेवागमाआंवांमो  
रीरहोरी एदेशी॥ पुछेनरवलोतेह धरमाजीवघणोरी वल  
तुबोलेतेह सग्रहनयनणोरी॥१॥ नयनयप्रतेसार उत्तरप्र  
त्युत्तरकहोरी समजिलेजोविचार सक्षेपेतेहवहोरी॥२॥ त  
वउत्तरदेतेह आसनमाहेरहोरी वलतुपुछेतेह तमेकिहां  
वसोरी॥३॥ हवेबोल्पोव्यपहार शरिरमाहेवसोरी रजुसुत्र  
नाखेएम निजउपयोगरसोरी ॥४॥ शब्दनग्रबोल्पोताम  
स्वभावमाहेरहोरि परनावकिधोत्याग श्रद्धाशुद्धग्रहोरि॥  
५॥ नयसन्निरुद्धतांम कहेनिजगुणमावसोरि ज्ञानादिकगु  
णमाहे एवभुतकहोरि॥६॥ भाख्योजेमद्रष्टांत सर्ववस्तुमा  
हेकहोरि पुछेकोइकएम एकप्रदेशलहोरि ॥७॥ खेत्रकरि  
अगिकार कहोखेत्रएकोणतणोरि निगमभाखेएम पटद्र  
व्यपणोरि ॥८॥ कारणसुणजोतास आकाशप्रदेशल  
हेरि एकेपटद्रव्यहोय तवसग्रहकहेरि ॥९॥ अप्रदेशी  
छेकाल तेतिहानविमलेरी सर्वलोकमाहेजाण एकसमय  
लहेरि॥१०॥ तेथिजुदोनहिआकाश कालविनापंचग्रहोरी  
तवबोलेव्यवहार मुख्यद्रव्यलहोरी॥११॥ रजुसुत्रनाखे  
एम उपयोगजासदियोरी तवतेद्रव्यकहाय दृजोनाहि  
कहोरी॥१२॥ बोलेशब्दनयसार नामजासलहोरि तेद्रव्य  
नोप्रदेश वलतिसभिरुद्धकहोरि ॥१३॥ एकआकाशप्रदेश

तेमध्येप्रदेशरहोरी नाखुतासविचार प्रदेशधर्मनोएकक  
 होरी ॥ १४ ॥ अधर्मद्रव्यनोएक जिवनाअसंख्यरहेरी  
 पुद्गलअनंतप्रदेश परमाणुछुटापणकहेरी ॥ १५ ॥ भाखेए  
 वंचुतताम प्रदेशतेनोकहेरी गुणक्रियासहितजास तेस  
 मयेरेलहेरी ॥ १६ ॥ एमएसातेनय खेत्रप्रदेशेकहेरी दाखु  
 जिवमांहवेतेह सातेनयवहेरी ॥ १७ ॥ भाखेनिगमनयताम  
 गुणपरजायधरेरी तेहनेजिवकहेवाय शरिरसहितवरेरी  
 ॥ १८ ॥ तेनयजोताएम पुद्गलद्रव्यग्रहेरी धर्मास्तीकाया  
 दिकएम जिवमांहिलहेरी ॥ १९ ॥ सग्रहनयतवबोल अ  
 संख्यप्रदेशकहेरी जिवतेहकहेवाय ॥ आकाशविणसर्व  
 ग्रहेरी ॥ २० ॥ बोलेतवव्यवहार ॥ नयतेहकहेरी वि  
 पयलहिकरेकांम ॥ विचारेतेजिवसहेरी ॥ २१ ॥ ते  
 धिधर्मास्तीकाय ॥ अधर्मआकाशटलोरी ॥ अवरपुद्ग  
 लपणजाय पणइंद्रिमांनवरोरी ॥ २२ ॥ कारणवीपेएजेह  
 जीवथीजुदाकहेरी पणइहांजेलाधार तेजिवसांहेंगहेरी  
 ॥ २३ ॥ रजुसुत्रभाखेजेह उपयोगीतेजिवकहेरी मिथ्या  
 त्विनेपणहोय तेथिमिथ्यात्वग्रहेरी ॥ २४ ॥ इंद्रियादिविष  
 यतास मनसुद्धाटलोरि ज्ञानअज्ञानएकजाव तेथिमिथ्या  
 त्वमलोरि ॥ २५ ॥ शब्दनयविचार तेवारेबोल्योखरोरि ना  
 मथापनाद्रव्य जावसाथेचारवरोरि ॥ २६ ॥ तेहनयनिर्मा  
 हे गुणनिरगुणलहोरि जेदजुदोनविथाय तवसंनिरुद्धक



होरि॥२७॥ ज्ञानादिकगुणजेह तेहनेजिवकहेरि तेनयने  
 अनुसार साधनासर्वग्रहेरि ॥२८॥ मतिश्रुतज्ञान इत्या  
 दिकसर्वग्रहेरि साधकअवस्थाएह तेजिवमांहेलहेरि  
 ॥२९॥ तेवारेएवभूत नयबोल्होवहेरि जिवकहियेछियेता  
 स अनंतज्ञानग्रहेरि ॥३०॥ दर्शनचारित्रअनंत सत्ताशुद्ध  
 मात्रकहेरि एनयेजिवजाण सिद्धगुणग्रहेरी ॥३१॥ जिव  
 स्वरूपएसार सातेनयेकहोरी मुनिदूकमसुखकार सम  
 जागुणलहोरी॥३२॥ ढाल ३० मिसपूर्ण॥

॥दुहा॥ धर्मधर्मसविजगकरे अनेधर्मनजाणेजास ए  
 कातवादेखेचता लहिमिथ्यात्वनिवास॥१॥ अथवामतपक्ष  
 मापड्या नविजाणेतमर्म आपमतखेच्याकरे नविजाणे  
 तेधर्म॥२॥ धर्मजाणवाकारणे जाखुतासविचार नयसाते  
 भगवंतेकहि तेसमजोसुखकार ॥३॥ सातेनयेतेहोवे धर्म  
 नाजुदाजेद तेसमजवाकारणे टालीमननोखेद॥४॥ एका  
 तपक्षनेआपमत वलीकुगुरुनोसग आलसप्रमादतेमतजी  
 करोसुगुरुगुरंग ॥५॥ हवेसातेनयेकरी भाखुंधर्मसुखका  
 र मनवचकायाथीरकरी साजलोतासविचार ॥६॥

॥ढाल ३१ मी॥ हमलीलालरगावूवरनांमोलियां॥ ए  
 देशी हवेसातेनयेधर्ममाभलो जेजाख्युछेचीतरागरे तेह  
 तूमेचीतमाधरो तेसमजवानोछेलांगरे॥१॥ हवेसातेनयेध  
 र्मसांभलो ए आंकणी॥ प्रथमनीगमनयकहे धर्मसर्वमांसा

ररे, धर्मइच्छेछेसर्वेते तेकारणधर्मविचाररे ॥हवे० २॥ अश  
रुपधर्मजे अथवानामधर्मवलीजेहरे तेनयेतेग्रहणकर्युं  
हवेसंग्रहभाखेगुणगेहरे ॥हवे० ३॥ जेहवडैरेआदर्युं तेह  
धर्मसुखकाररे अनाचारतेणेत्यागियो पणमिथ्यात्वरह्यो  
धाररे ॥हवे० ४॥ कुलाचारनेधर्मकहे तेयीअज्ञानपणुके  
हेवायरे व्यवहारनयतवबोलियो जेसुखनूकारणथायरे  
॥हवे० ५॥ हवेतेहनेधर्मतेदाखवे पुण्यकारणने तेहरे  
पुण्यनेधर्ममानतो आश्रवग्रहेछेएहरे ॥ हवे० ६ ॥  
रजुसुत्रतवबोलियो उपयोगसहिततेधर्मरे वेरागसहि  
तपरणामने धर्मनाखिजेतेएमरे ॥ हवे० ७॥ जथाप्रवृ  
त्तीकर्णना परणामप्रमुखतेलिधारे सर्वेतेधर्ममांगणे ते  
तोमिथ्यात्वनावमापणकीधारे ॥हवे० ८॥ तवबोल्कीशब्द  
सही धर्मतेसमकितकहीयेरे धर्मनुमुलसमकितकह्यु ते  
मार्गसुबोल्हियेरे ॥हवे० ९॥ तवसभीरुढउचरे जेहजिव  
अजिवरे नवतलखटद्रव्यते तेओलखियेसदीवरे ॥हवे०  
१०॥ जिवसत्तानेध्याइये करीअजिवनोत्यागरे ज्ञानदर्श  
नचारित्रजे शुद्धानिश्चयनयनोरागरे ॥हवे० ११॥ बधताव  
धतापरणामजे क्षपकश्रेणीआरोहरे कर्मक्षयनेकारणे ए  
साधनधर्मसोहेरे ॥हवे० १२॥ मुलस्वभावजेजिवनो धर्म  
स्वभावपणतेहरे समिरुढधर्मछे तुमेसमजिल्योगुणगे  
हरे ॥हवे० १३॥ हवेएवभुतनयथि धर्मतेशुद्धकेहेवायरे सं

पुर्णनयमानतो तेवातचित्तसोहायरे ॥ हवे० १४ ॥ कार  
 जजेचेतनतणु मुक्तिरूपसुखकाररे मिद्वखेत्रमांहरिहे ते  
 हिजधर्मविचाररे ॥ हवे० १५ ॥ एसातेनयेकरि नास्युध  
 र्मस्वरूपरे समकितमिध्यात्वजोदने तुमेग्रहणकरजोअनु  
 परे ॥ हवे० १६ ॥ नयच्यारेमिध्यातमा मलतिकहिजिनरा  
 जरे तेउपदेशदूरेकरि मनथिकरोतेताजरे ॥ हवे० १७ ॥  
 पाचमीनयथिचितधरो त्रणेनयसुखकाररे समकितसहि  
 ततेजाणिये धर्मखरोतेविचाररे ॥ हवे० १८ ॥ एमजाणिच  
 उत्पाणीये त्रणआदरियेउदाररे आत्मअर्थीजिवने उप  
 देशनास्योमनुहाररे ॥ हवे० १९ ॥ हवेसिद्धस्वरूपने नयसा  
 तेकरुवखाणरे प्रथमनयेजिवसवी सिद्धपणेतेजाणरे ॥  
 हवे० २० ॥ रुचिकप्रदेशआठजिवना निर्मलसिद्धसमान  
 रे तेथिसर्वेजिवसिधछे हवेसंग्रहनयविज्ञानरे ॥ हवे० २१ ॥  
 सत्तासर्वेजिवनि सिद्धसमानछेएहरे तेणेपरजायनयेकरि  
 कर्मअवस्थाटालिजेहरे ॥ हवे० २२ ॥ द्रव्यार्थनयेग्रहि अ  
 वस्थाभाखीएहरे तवत्रीजोनबबोलियो विद्याप्रमुखसिद्ध  
 गुणगेहरे ॥ हवे० २३ ॥ रजुसुत्रनयउचरे ओलखिसत्ता  
 साररे सिद्धसमानआत्मनी उपयोगध्यानविचाररे ॥ ह  
 वे० २४ ॥ तेहसमेतेजिवने सिद्धकहियेछेसुखकाररे एणे  
 समकितसिद्धसमगणु हवेपंचमीनयमनुहाररे ॥ हवे० २५ ॥  
 शुद्धध्यानशुद्धतिहा प्रणामजेहनाहोयरे नामसहितनखे



मो॥१॥ प्रत्यक्षप्रमाणपेहेलुकह्युरे बीजुपरोक्षतेधार॥ज्ञा  
 न० प्रत्यक्षप्रमाणतेजाखशुरे प्रथमअर्थविचार ॥ज्ञान०  
 २॥ जेजेचेतनआपणेरे उपयोगथीसुखकार ज्ञान०  
 वेद्रव्यनेजाणतोरे गुणप्रजायउदार ॥ज्ञान० ३॥ कर्मख  
 पाविकेवालिथयारे तेज्ञानप्रत्यक्ष ज्ञान० खटद्रव्यतेजा  
 णतारे रुपिअरुपिदक्ष ॥ ज्ञान० ४॥ मुर्तिअमुर्तितेहनेरे  
 जाणपणामासार ज्ञान० सर्वप्रतक्षतेजाणियेरे एखंपक  
 रोउदार ॥ज्ञान० ५॥ देशप्रत्यक्षहवेजाखशुरे जेहनाजे  
 दछेदोय ज्ञान० मनपर्जवज्ञानजेरे अवधीबीजुजोय ॥ज्ञा  
 न० ६॥ अढीढीपनिमाहिऐरे सन्नीपंचंद्रीजेह ज्ञान० ते  
 हजीवतणातिहारे मनोजावजाणेएह ॥ज्ञान० ७॥ रुपि  
 द्रव्यनेजेलहेरे पुद्गलजेहकेहेवाय ज्ञान० परमाणुतेजा  
 तारे तेथीदेशप्रत्यक्षथाय ॥ज्ञान० ८॥ छदमस्थजेजावछे  
 रे तिहामतीश्रुतज्ञान ज्ञान० परोक्षप्रमाणतेहनेकहीये  
 सर्वथकिऐजाण ॥ज्ञान० ९॥ मतिश्रुतज्ञानथीरे जेजेज  
 णेजाव ज्ञान० तेहपरोक्षप्रमाणनारे त्रणनेदकहाव ॥ज्ञा  
 न० १०॥ आगमप्रमाणप्रथमकह्युरे बीजुअनुमानजा  
 ज्ञान० बीजुओपमाजाणियेरे कहूप्रथमनुवखाण  
 ज्ञान० ११॥ आगमकहेताशास्त्रजेरे तेमाजाख्योविचा  
 ज्ञान० तेहस्वरुपआपणेरे जाणीयेसर्वउदार ॥ज्ञान  
 १२॥ देवलोकनेनरकनीरे मनुपत्रीजंचतेसार ज्ञान० न

गोदस्वरूपतेजाणियेरे द्वीपसमुद्रउदार ॥ ज्ञान० १३॥  
 खटद्रव्यतेजाणियेरे जडचेतनवीभाग ज्ञान० रुपिअरु  
 पितेसविरे सिद्धांतथीजाण्यानोलाग ज्ञान० १४॥ अनु  
 मानप्रमाणजेरे देखीकोईसेनाण ॥ज्ञान० देखीधुमाडो  
 कोईघरथकिरे वहीतेचित्तआण ॥ज्ञान० १५॥ आपमा  
 नप्रमाणजेरे द्रष्टातथीथायतेह ज्ञान० मुखगोलछेसहीरे ई  
 दुपुंनमसमजेह ॥ज्ञान० १६॥ एमपरोक्षप्रमाणनारे अ  
 वरजेदअनेक ज्ञान० शास्त्रथीतुमेजाणजोरे एहवचनवि  
 वेक ॥ज्ञान० १७॥ प्रमाणतेनयभाखीयेरे नयनखेपाहो  
 य ज्ञान० माटेआगेनिक्षेपातणोरे कहीशुविचारजोय ॥  
 ज्ञान० १८॥ मूनीदूकमगुणतेसहीरे निक्षेपचउविचार  
 ज्ञान० तेशीवलायकजाणियेरे जेहनेअनुभवउदार ॥ ज्ञा  
 न० १९॥ ढाल ३२ मी सपूर्ण ॥

॥तुहा॥ हवेनखेपावर्णवुं शब्दथकीकेहेवाय तेकारणश  
 ब्दनयमां चारनखेपाथाय॥१॥ निगमसग्रहादिकनय प्रत्ये  
 केप्रत्येकेजाण चारचारनखेपंछे एहसमुचीतआण ॥२॥  
 अथवाअनुजोगद्वारमां नखेपतणुनहिमान अनेकनखेपा  
 वर्णवे समजुनेएज्ञान ॥३॥ विशेषशक्तिज्ञाननी तेहनेदा  
 खुएह जेहनीशक्तिकमहोवे चउनखेपगुणगेह॥४॥ चतुः  
 नखेपवीणवस्तुनहि एशाखेविचार तेकारणनखेपातुमे  
 धारोशुद्धविचार॥५॥ ढालतेत्रीसमी ॥ सहीमोरीचालोसु

गुरुजीनेवदीये ॥ एदेशी ॥ भवीतुमेनखेपारेवीधीसाचलो  
 जेहनाजेदअनेकहो ज्ञानितुमे ० तेहमाचारमुख्यकह्या ते  
 सुणजेविवेकहो ॥ ज्ञानितुमे ० १ भवीतुमेनखेपाविधिसांच  
 लो ॥ नामनखेपनेथापना त्रीजोद्रव्यकेहेवायहो ॥ ज्ञा ० ॥ भा  
 वनखेपोचोथोलह्यो एंचारनखेपाथायहो ॥ ज्ञा ० २ नवी ० ॥  
 गाथा ॥ पर्यायाणजीधेया ॥ ठियमणल्लेत्तथया ॥ निरविखं  
 जायथीयचनाम ॥ जावदव्वचयेण ॥ १ ॥ तथाथापनालक्षणा ॥  
 जंपुणतयथसुन्नतय ॥ भिप्पाएणतारिसागारं ॥ कीरद्रवनि  
 रागार ॥ इत्तरमीयरचठाणा ॥ २ ॥ द्रव्यलक्षणा ॥ दव्वएदू  
 वएदोव ॥ पवोविगारोगुणाण ॥ सदावोदवंनवजावस्स ॥  
 भुयजावचजजोगा ॥ ३ ॥ अथवायच्चकारणद्वद्रव्यं ॥ भु  
 तस्सजावीनोवा ॥ भावस्सहिकारणतूपलोकेतद्रव्यं ॥  
 ईत्यादिजावलक्षण ॥ हरीनद्रपुज्येभावोविवक्षीत ॥ क्रि  
 यानुभुतियुक्तो ॥ हिवेसामाख्यात ॥ सर्वज्ञेरिद्धाहीवहिता  
 ददिक्रियानुजावात् ॥

स्वस्वद्रव्यथी नखेपाचारतेथायहो ॥ ज्ञा ० ॥ अवरपक्षर्मा  
 हीनवीलहो नीजवस्तुमांकेहेवायहो ॥ ज्ञा ० ३ ॥ कोईभाखे  
 उपचारथी नखेपाएजाणहो ॥ ज्ञा ० ॥ तेहनेकीजीये एतु  
 हवेकहूतासवीनाणहो ॥ ज्ञा ० ४ ॥ परद्रव्यमाजीथापीये न  
 खेपातेजाणहो ॥ ज्ञा ० ॥ तेउपचारथकीहोवे भीनस्वरूपची  
 तआणहो ॥ ज्ञा ० ५ ॥ पणतेनीजस्वजावमां नामादिकएचा

रहो॥ज्ञा०॥स्वस्वरूपमांदाखता नहीईहांउपचारहो॥ज्ञा०  
 ६॥श्रीजीननद्रगणीजाखीयो तेहनेएहविचारहो॥ज्ञा०॥  
 शंखाकखांतेथीदुरकरो धारोसुद्धमनुहारहो॥ज्ञा० ७॥  
 ॥उक्तचा॥ईहाजावाच्चीयवत्छनयत्छसुनेहीकिंघसेसेहिं ॥  
 नामदयोविभावजंतेविह्वल्लुपजांया ॥ इतिथयस्मात्ते  
 पिनामादयो ॥ वस्तुनापर्यायाधर्मास्तबाधविशेषेइंद्रवस्तु  
 न्युच्चरीतेनामादयोपीजावविशेषएव ॥  
 पुनर्पिकह्युछे भावनीखेपानेश्रंते तदेवजिन्नवस्तुपु॥विशे  
 पतश्चित्यमांना॥नामादिनाप्रधानेतर॥ जावोदंशितसामा  
 न्यत॥पुनःश्चित्यमांनानांसर्ववस्तुपु॥प्रत्येकांचतुर्णामप्य  
 मीपा॥सद्भावप्राप्यते॥एवेतिदर्शयन्नह॥ अहवावत्छनिहा  
 णंनामंठवणाया॥जोतयागारो॥ कारणयासेदंवं॥कज्जाव  
 न्नंभंज्यंतोवो॥गाथा॥१॥  
 ॥एतश्चनेकशाल्त्रकरी पुरवाचारजएहहो ॥ज्ञा०॥तेहनां  
 वचनतेएमछे धारोतुमेगुणगेहहो ॥ज्ञा० ८॥ एकवस्तुमां  
 रेजांणीये नखेपाचारतेहहो ॥ज्ञा०॥ तेथीनीजनीजद्रव्य  
 मां नखेपाभाखोएहहो ॥ज्ञा० ९॥ एकद्रव्येथीज्जिनिभाख  
 तां नखेपानोहोयनाशहो ॥ ज्ञा० ॥ भीनंजीननखेपारहे  
 जुटेजुटेद्रव्येवासहो ॥ज्ञा० १०॥ तेकारणएकद्रव्यमां न  
 खेपामांनजोचारहो ॥ज्ञा०॥ नयश्चथवानखेपजे एकद्रव्ये  
 चीतधारहो ॥ज्ञा० ११॥ भीनद्रव्येमानवाथकी लागेत्त



समिध्यातहो ॥ज्ञा०॥ पुर्वग्रथमांतोएमछे  
तहो ॥ ज्ञा० १२ ॥

॥उक्तचपुज्ये॥ एववयतीनया भिछ नानि  
प्परओ इतीवचनात् ॥

पुनरपीवीजेप्रकारथी स्व. जाय स्यात्  
तेथीपरमारेनवीमले नयनखेपनीरासहो ॥ज्ञा०१३॥

कारणसरधाकरो स्ववस्तुनाछेपरजायहो ॥ज्ञा०॥ नामा  
दिकंतेजाणिये तेथीपरमानकेहेवायहो ॥ज्ञा०१४॥

॥ उक्तंच ॥ जेनामाइभेअसद्वय ॥ पु १५ ॥

नियया ॥ जंवयअथीलोए ॥ चउपज्जायनयसव्वं ॥ १ ॥

स्वस्वरूपमाजाणीये नामादिकएचारहो ॥ज्ञा० ॥

ल्पनानवीकरो सुद्धअर्थएधारहो ॥ज्ञा०१५॥ एहनखेप

नोजाणीये वीस्तारजेछेताहीहो ॥ज्ञा०॥ अवरग्रंथेसखे

छे जोजोमनउछांहीहो ॥ज्ञा०१६॥ अथ

ज्यए श्रीजीननद्रगणीधारहो ॥ज्ञा०॥ तेपुज्यनावचन

हछे ग्रंथेरच्योमंनुहारहो ॥ज्ञा०१७॥ विशेष्यावशकते

णीये तेमाजोजोएजावहो ॥ज्ञा०॥ मुनीदूकमसुखसंप

लेवानोछेएदावहो ॥ज्ञा०१८॥ ढाल ३३ मी सपुर्ण ॥

॥दुहा॥ स्वद्रव्येएवर्णव्या नखेपातेचार स्वपरजाय

जाणीये उत्तमएआचार ॥ १ ॥ अजिन्नधर्मछेएहन ते

स्पुंसुखकार निन्नद्रव्येहवेभाखशु नखंपातणीवीचार

॥ निम्नभिन्नद्रव्येमली नखेप्रातेथाय तेहीजभिन्नधर्मछे  
 पचारेकेहेवाय ॥ ३॥ तेहतणोवीस्तारकरी देखाडीशुंएह  
 प्रनुजवीतैरसलहे समजीगुणनोगेहा ॥ ४॥ रहश्यसवीतए  
 ना समजेज्ञानीसार मुखअर्थपामेनही तेममतपक्षी  
 ॥ ५॥ तेकारणओतातुमे तजीमतपक्षदूर एहअर्थतु  
 धारजो ज्ञानरसजरपुर ॥ ६॥ ढाल ३४ मी ॥  
 जेहोकुंवरबैठोगोखडे ॥ एदगी ॥ जीहोनिम्नद्रव्यमांजाणी  
 जीहोनिम्नधर्मतेह जीहोनखेपाचारलहो, जीहोअथवा  
 नेकहोयजेह ॥ १॥ जवीकजिनसमजोनखेपवीचार ॥ ए  
 कणी ॥ जिहोनामनखेपपेहेलोकहू, जिहोसुणजोता  
 वीचार ॥ जिहोवस्तुगुणआकारथी, जिहोनामधरेउ  
 र ॥ भ० २॥ जिहोद्रष्टांतथीतेजाणीये, जिहोजेमको  
 तठैरभंग, जिहोकटकोएकतासग्रही जिहोजीवकहे  
 रंग ॥ भवी० ३॥ जिहोअथवावीजेद्रष्टांतथी जिहो  
 वानिजिविरेजेह जिहोतेहेनेपणाकिजिये जिहोनामन  
 तेह ॥ न० ४॥ जिहोकोईकहेतेमांजिवनाहि जिहोतेकेम  
 योरेजाय जिहोउत्तरतेहेनेदिजिये जिहोसमजील्योसु  
 णय ॥ भ० ५॥ जिहोकृश्वरंगेदोरही जिहोकृश्वपक्षे  
 जिहोअहिबुद्धियेतेहेनेहणे जिहोअहिपापतसलेख  
 ० ६॥ जिहोजेमएपातकलागियु जिहोनामनखेपथि  
 जिहोतेमसर्वमाजाणिये ॥ जिहोनामनखेपसुखकार

॥भ०७॥ जिहोनाम तपवासिद्धये जिहोइत्यादिक बहुबोल  
 जिहोनाम सत्यतेजाखियु जिहोसुत्रमाहितेखोल ॥न  
 जिहोथापनानखेपोजाखशु ॥ जिहोकिणहिमाकिणहिनी  
 आकार जिहोदेखिनेतेहनेकहे जिहोतेहिवस्तुमुखकार  
 ॥न०९॥ जिहोकाष्टपापाणनीसहि ॥ जिहोमूर्तिबहुप्रकार  
 जिहोहेज्ञेपरमुखजाणिये ॥ जिहोआकारथिबोलविचार  
 ॥न०१०॥ जिहोअथवाचित्रामणसहि ॥ जिहोआकारथि  
 नामंठराय ॥ जिहोतेमप्रतिमाजिनराजनि जिहोअरीहंत  
 सिद्धनिकेहेवाय ॥न०११॥ जिहोहवेद्रव्यनखेपना जिहो  
 भाखुकाइविचार जिहोजेहद्रव्यमानामहोवे जिहोथाप  
 नाआकारधार ॥न०१२॥ जिहोगुणअनेलक्षणहोवे जि  
 होआत्मउपयोगनाहि जिहोतेहनेद्रव्यतेजाणिये जिहोन  
 खेपोत्रिजोज्याही ॥न०१३॥ जिहोअज्ञानिजेजिवछे जिहो  
 निजउपयोगविणतेह जिहोतेहनेद्रव्यतेजाखियो जिहो  
 अनुजोगद्वारेएह ॥भ०१४॥ जिहोपदअक्षरनेमातरा जिहो  
 सुत्रसिद्धातरेवांच जिहोपुछेअथवाअर्थकरे जिहोजिन्नउप  
 योगेताच ॥न०१५॥ जिहोगुरुमुखतेसद्धहे जिहोसत्ताओ  
 लखेरेनाहि जिहोतेथिद्रव्यनखेपछे ॥ जिहोपुन्यब्रधनेते  
 ज्याहि ॥न०१६॥ जिहोमुक्षकारणनविजाखियु जिहोजो  
 जोसुत्रविचार जिहोकष्टक्रियातेबहुकरे जिहोतपकरेरेउ  
 दार ॥न०१७॥ जिहोजिवअजिवसत्तातणु ॥ जिहोओल

खाणजेहनेनाहि जिहोभगवतिसुत्रेतेभाखिया जिहोअव  
रतिअपचखाणितांहि ॥भ० १८॥ जिहोबाह्यक्रियादिक  
करी जिहोसाधुपणुमानेजेह ॥ जिहोलोकमांपणकेवरावता  
जिहोसाधुपणुगुणगेह ॥न० १९॥ जिहोतेहमृपावादीना  
खीया जिहोउत्तराध्येनमोक्षार जिहोज्ञानिनेमुनिकह्या जि  
होकष्टादिकथिअज्ञानिधार ॥न० २०॥

॥उक्तंच॥ नमुणीरत्नवासेणं ॥ इतिवचनात् ॥ नाणेण  
यमुणीहोइ ॥ इतिवचनात् ॥

जिहोकोइगणताणुजोगथि ॥ जिहोकोइककल्पविचार  
जिहोचरणसित्रिकरणसीत्रीना ॥ जिहोकोइकथानुजोग  
धार ॥भ० २१॥ जिहोएमअनेकप्रकारथी जिहोजाणीदेउप  
देश ॥ जिहोनाखेअमेज्ञानिछिये ॥ जिहोपणअज्ञाननिवेश  
॥भ० २२॥ जिहोद्रव्यगुणपरजायने जिहोजाणेजेमुखकार  
जिहोज्ञानितेहनेनाखीया जिहोउत्तराध्येनमोक्षार ॥भ० २३॥

॥उक्तंच॥ श्रीउत्तराध्येनमोक्षमार्गअध्ययनमां ॥ एयंपंच  
विहणानां ॥ दवाणयगुणाणय ॥ पञ्जवांणयसव्वेसिनाणं  
सव्वेसि ॥ नांणानांणीहिदसियं ॥ १॥

जीहोनवतत्तश्रोलंख्यांयकी जीहोश्रद्धाजोथिरयाय जी  
होसमकीततो कहियेतेहने जीहोनेहितोमिथ्यात्तीकेहेवाय  
न० २४॥ जीहोसमकीतवीणज्ञाननहि जीहोज्ञानवीना  
चर्णनहोय जीहोतेकारणश्रधाशुद्धधरो जीहोदेखीउत्त

राध्येनसोय ॥२५॥

॥उक्तच॥नाणदसणनणा॥नाणेणविनानहुंतीचरणगुणा॥

जीहोआक्रालेवहूआढवरी जीहोकिरियाकष्टदेखाड जी  
होज्ञानहिणतेनरा जीहोतेहनोसंगदूरछाड न० २६॥

जीहोवाहाजकरणीतोअनवी जीहोकरेछेनीधार जीहोते  
उपरराचवुनहि जीहोतेतोठगधार ॥न० २७॥ जीहोआ

त्मस्वरुपओलरुयाविना जीहोसामायकादिकवत जी  
होपच्छखाणपडीकमणाजाणिये जीहोद्रव्यनखेपेसत ॥

न० २४॥ जीहोपुन्याश्रवतेजाणिये जीहोसंवरतिहांनहि  
लेश जीहोआत्मसामायकनाखिउ जीहोभगवतिसूत्रेवि

शेषा॥न० २९॥ जीहोजीवस्वरुपजाण्याविना जीहोतपसं  
जमधारेजेह जीहोपुन्यप्रकृतीबाधेसहि जीहोदेवलोकन

वतेह न० ३०॥

॥उक्तच॥ जगवती॥ आयापलुमांमाईया॥-पुवतकेणदे  
वादेवलोयेउवजंती॥ पुवसजमेणदेवादेवलोयेउवजती॥

नोचेवणआयभाववत्तवयाए॥

जीहोज्ञानहिणजेनरा जीहोकीयालोपरितेह जीहोम  
छनीलाजेसिद्धातते जीहोचणेवाचेछेजेह॥ न० ३१॥ जी

होव्रतपच्छखाणपालतो जीहोद्रव्यनखेपेतेह जीहोअनु  
जोगद्वारमा जीहोसूत्रेनाख्युछेएह॥ न० ३२॥

॥ उक्तच ॥ ईमेसमणगुणमुक्कयोगी॥छकायनिरणुक्कपा

हयईवदूदामा॥गयाइवनिरंकुसा॥घठामठातुप्पोठा॥पंडु  
रयांउरणजिणां॥आणाएसछंदा॥विहरिउणउभओका  
लां॥आवस्सगस्सउवछंतितां॥लोगुतरियंदव्वावसयां॥  
॥जीहोजोतीपजुवेवैदककरे॥जीहोपापश्रमणकह्यातेह॥  
जीहोआचारजउवज्ञायते॥जीहोखोटारुपियासमएह॥भ०  
३३॥ जीहोघणाभवतेजटकशे॥ जीहोअवंदनीककह्याते  
ह॥जीहोअनाथीअध्येनथीजाणजो॥जीहोउत्तराध्येनेएह  
॥भवी० ३४॥ जीहोसुत्रअर्थजेजेकरे॥ जीहोगुरुगमजोयो  
रेनांही॥जीहोनयनखेपजाण्याविना॥ जीहोपरमाणसत  
भगीतांही॥भवी० ३५॥ जीहोनिश्चेथीनिजआत्मनु जी  
होओलखाणथईरेनही जीहोनीर्युक्तिप्रमूखजाण्याविना  
जीहोउपदेशदेवेतांही॥भवी० ३६॥जीहोआपेतेसंसारमां  
जीहोडुब्याछेनिरधार जीहोतेहनीपासेजेवेसतां जीहो  
सांजलेशास्त्रविचार ॥ भवी० ३७॥ जीहोतेहनेसाथेजेइ  
ने जीहोडुबेछेकांइतेह जीहोदसमेअंगेतेमकह्यु जीहोअ  
नुंजोगद्वारेएह ॥भवी० ३८॥जीहोतेमभगवतीअंगमां जी  
होसुतअथोपरमुक्ष जीहोएमअनेकशास्त्रथकी जीहोजोई  
लेजोतुमेदक्ष॥भवी०॥ जीहोएवोलजेजाण्याविना जीहो  
मरखावादिकह्यातेह जीहोतेकारणवहुश्रुतनी जीहोशेवा  
करोगुणगेह॥भवी० ४०॥ जीहोतेकारणउपदेशजे जीहो  
सुणजोतुमेनवीजन जीहोवहुश्रुतपासेरंगथी जीहोछोडी

द्योसंगअन्या॥जवी०४१॥जीहोबहुश्रुतनेसोलउपमा जी  
 होउत्तराध्येनमोझार जीहोमेरुप्रमुखतिहांकही जीहोबहु  
 श्रुतमोटोधार॥ जवी०४२॥जीहोद्रव्यनपेपोएजाखीयो  
 जीहोनारुपात्रणवलीएह जीहोभावनखेपोहवेदाखशु  
 होसामलजोगुणगेह॥मवी०४३॥ जीहोमुनीहूकमएभो  
 खीयो जीहोबहुशास्त्रअनुसार जीहोनावधरीजेआदरे  
 जीहोतेलहेभवनोपार॥जवी०४४॥

॥दुहा॥नामथापनाद्रव्यए त्रणेनिक्षेपाजाण जावविना  
 श्रुदछे कहाश्रीजीनजाण॥१॥तेकारणतुमेनावए नि  
 क्षेपोसुखकार आदरोजवीवहुमानथी जेहथीभवनोपार  
 ॥२॥लक्षणगुणेसहीतजे नामआकारजसदेख वस्तुतेभाव  
 निक्षेपछे अनुजोगद्वारेपेख॥३॥ दानशीयलतेतपए किरी  
 याज्ञानतेजाण जावविनानीफलसही तेकारणनावची  
 तत्राण ॥ ४ ॥ केटलाकएमनावेसही द्रढकरीमनपरी  
 णाम तेहनेनावजजाणीये एवुभाखेछेताम ॥५॥ एप  
 णवचनअसत्यछे सुणोतासविचार सुखअर्थीजेजीवडाम  
 नथीरकरेनिरधार ॥६॥ मत्रजत्रजापादीके मिथ्यात्वी  
 पणतेह मनथीरतेहराखता नवीगणीयेनावएह ॥७॥  
 सूत्रसाखवीतरागनी आज्ञायेंसुखकार ॥ हेजेउपादीये  
 एमअनेकविचार ॥ ८ ॥ अजीवआश्रवबधए तेहनेक  
 रोरेत्याग जीवस्वगुणसवरसही नीर्जरामोक्षेराग॥९॥

एउपादेयजाणिये एमजनावकेहेवाय तेविनासर्वद्रव्य  
 छे समज्यातेसुखथाय ॥१०॥ रुपिद्रव्यतेगुणछे अरु  
 पिगुणतेभाव मनवचकायलेस्यादिक तेद्रव्यनिक्षेपेचित्त  
 जाव ॥११॥ ज्ञानदर्शनचारित्र्ये विजध्यानप्रमुख जीव  
 गुणसर्वस्वभावछे एभावनिक्षेपेसुख ॥१२॥ नामथापना  
 व्यंशं भावसहितएचार भाख्यावद्विचारथी समजीले  
 तौउदार ॥१३॥ ढाल ३५मी॥ वीनवुपारसपदा॥टलीयो  
 तौजमदा॥एढोशि॥ द्रव्यखटमांहि निक्षेपाचारतांहि वर्णवु  
 सुखकाररे तुमेलालसुरंगा निक्षेपातणोविचाररे तुमे  
 तालसुरंगा ॥एआंकणी॥ प्रत्येकेप्रत्येकेतेह द्रव्यद्रव्ये  
 हि जाखुकईतासविचाररे तुमेलालसुरंगा निक्षेपातणो  
 चाररे तुमेलालसुरंगा॥१॥ जीवद्रव्यविपे निक्षेपाचार  
 से जाखुकईतासस्वरुपर तु० न० जीवएवुनामधार अ  
 कथांनकउदार जाखुद्रष्टातअनुपर ॥तु० न० २॥ मांचा  
 वाणमांहि जीवकहेछेताहि तेनांमनखेपोथायरे तु० न०  
 वेतणीरेएक मुर्तिथापियेढेक तेथापनाकेहेवायरे ॥ तु०  
 ० ३॥ द्रव्यनखेपोभाखु उपयोगरहितदाखु तेजीवद्रव्य  
 हेवायरे तु० न० एकंद्रीथीलहि पवंद्रीपरजंतकही द्र  
 नखेपोतेथायरे ॥तु० न० ४॥ उपयोगसहितजारे चेत  
 चगुणधारे परभावदूरेजायरे तु० न० सेहेजस्वभावखे  
 निजगुणज्ञाननेले तेजावनखेपोकेहेवायरे ॥तु० न०



५॥ धर्मास्तीकायजाणो द्रव्यमांहितेआणो नखेपाकहि  
येतेचाररे तु० न० धर्मकहिनेभाखे नामलहिकोईदाखे ते  
नामनखेपोधाररे तु० न० ६॥ वस्तुकोईथापिएह धर्मद्र  
व्यनामतेह तेथापनानखंपोजाणरे तु० न० जीविपुद्गलने  
जेह चालतांसाजडेनाहितेह तेसमेद्रव्यचित्तआणरे ॥ तु०  
न० ७॥ साज्यकरेछेज्यारे द्रव्यचालेछेत्यारे तेजावनखे  
पोकेहेवायरे तु० न० हवेअधर्मास्तीजेह द्रव्यजाखुछुतेह  
नखेपोतेचित्तलायरे ॥ तु० न० ८॥ कोईकनामलहि अथ  
र्मद्रव्यकहि तेनामनखेपोजाणरे तु० न० मुर्तिप्रमुखकोई  
वस्तुथापियेसोई तेअधर्मयापनाआणरे ॥ तु० न० ९॥ द्र  
व्यनखेपजेह थीरसाह्यनाहितेह जीविपुद्गलनेधाररे तु०  
न० थीरजावकरेसाज जीविपुद्गलनेकाज तेजावनखेपोउ  
दाररे ॥ तु० न० १०॥ आकाशएवनाम भाखेकोईद्रव्यने  
ताम तेनामनखेपोधाररे तु० न० कोईद्रव्यथापि आका  
शएवनामआपी तेबीजोनिक्षेपोउदाररे ॥ तु० न० ११॥  
आकाशद्रव्येएह द्रव्यनिक्षेपोतेह अणअवगाहनकेहेवा  
यरे तु० न० अवगाहनाआपेज्यारे द्रव्यप्रतेतेत्यारे भा  
वनिक्षेपोथायरे ॥ तु० न० १२॥ कालएवनामकोई बोला  
वेद्रव्यजोई निक्षेपोपेहेलोकेहेवायरे तु० न० कोईद्रव्य  
देखी थापनाकालनीलेखी थापनानिक्षेपोतेथायरे ॥ तु०  
न० १३॥ वर्तनानहिज्यारे द्रव्यनिक्षेपोत्यारे उपचारीका

लकेहेवायरे तु० न० वर्तनावर्तेज्यारे जावनिक्षेपोत्यारे  
 कालद्रव्यमांथायरे ॥ तु० न० १४ ॥ पुद्गलद्रव्येजेह निक्षे  
 पाचारतेहं जाखुछुतासविचार तु० न० पुद्गलनामएव  
 कोईद्रव्यमांकेहेवु नामनिक्षेपोतेधाररे ॥ तु० न० १५ ॥ व  
 तुकोईदेखी थापनापुद्गललेखी थापनानिक्षेपोतेजाण  
 ॥ तु० न० ॥ मलणविखरणगुन ज्यारेतेहोवेसुन त्रिजोनि  
 नेपोचित्तआणरे ॥ तु० न० १६ ॥ मलणादिकज्यारेगुणव  
 छित्यारे भावनिक्षेपोधाररे ॥ तु० न० ॥ खटद्रव्यएह  
 यारेनिक्षेपतेह लेजोएमविचाररे ॥ तु० न० १७ ॥ साधु  
 इमांहि नखेपाचारताहि भाखुछुतासविचाररे तु० न०  
 धुएवनाम जाखेकोईद्रव्यनुताम मुर्तिसाधुनिसुखकाररे  
 तु० न० १८ ॥ थापनानखेपोदाखो हवेतेद्रव्यजाखो विण  
 पयोगेकेहेवायरे तु० न० पंचमाहाव्रतपाले क्रियाकष्ट  
 रे दोपटालिगोचरीजायरे ॥ तु० न० १९ ॥ ज्ञानध्यानजे  
 मोक्षकारणतेह तेउपयोगनविहोयरे तु० न० उपयोग  
 नाकरतो आश्रवभाववरतो एद्रव्यनक्षेपोसोयरे ॥ तु०  
 २० ॥ जावसाधुतेजाखु गुणकहिनेदाखु चोथोनक्षेपो  
 णरे तु० न० सवरकरणीकरतो भावमोक्षनोवरतो अं  
 गतीउदाररे ॥ तु० न० २१ ॥ संवरभावएक जुदोनहिने  
 आश्रववेहेवारएककेहेवायरे तु० न० मुनीदुकमजाखे  
 तरभावज्ञानराखे लाहिमुक्तिसुखदायरे ॥ तु० न० ॥

२२॥ ढाल ३५ मीसपूर्ण ॥

॥दुहा॥ अरीहतादिकपदविषे भाखुनखेपासार प्रत्ये  
केप्रत्येकेवर्णवु तेसुणजोअधिकार॥१॥ पणतेसर्वीनखेपए  
जिन्नपदेकेहेवाय कारजएथीनविहोवे समजील्योसुख  
दाय ॥२॥ अजिन्ननखेपोआदरो जेथीकारजसिंध पुर्वा  
चारजजाखिया आत्मतणीएरीद्व॥३॥ विशेष्यावशकअथ  
मा तेमवलिमाहाजाण्य इत्यादिकबहुशास्त्रमां जोइलेजो  
उलास ॥ ४ ॥ तवकोइकेहेशेएसो भिन्नतमेकेमदाखो  
लोकभरमावाकारणे फोगटशानेजाखो॥५॥ उतरतेनेआ  
पुहवे सुणोसंतसुखकार हालनेपाडितेरच्या जिननखेपवि  
चार ॥६॥ तेकारणहूजाखुछु भिननखेपविचार पणकार  
जछेअभिनमा निश्चेथिनिरधार ॥७॥ ढाल ३६ मि ॥  
रागसिंदूडों ॥ चित्रोडिराजारे ॥ एदेशि ॥ अरिहंतए  
वुनामरे कोइजिवनुतामरे थापनाअरिहतनिमुर्तिलिजि  
येरे द्रव्यअरिहतरे जिहालगेसतरे छदमरुथकालत्या  
किजियेरे॥१॥ केवलज्ञानधारिरे दर्शनपदअजुवालीरे  
समोसरणेजावअरिहतजाणियेरे सिद्धएवुनामरे कोइजि  
वनुतामरे अथवाविद्यादिकथिजाणियेरे ॥२॥ प्रतिमागु  
णगेहरे सिद्धजिननितेहरे थापनानखेपोतेचित्तआणियेरे  
द्रव्यसिद्धजाणोरे तेरमेगुणठाणोरे तेमचउदमामाकिजि  
येरे ॥३॥ सिद्धखेत्रेवसियारे आत्मगुणरसियारे भावन

खेपोसिद्धनोतेलहोरे कोइनामेज्ञानरे कोइजिवनुतामरे  
 नामनखेपोतेत्यांजाणियेरे ॥४॥ शास्त्रजेलखीयारे अक्षरप  
 रमुखश्रौलखियारे अथवामुर्तिज्ञाननिकाहिरे द्रव्यनखे  
 पोजाखुरे विणउपयोगेदाखुरे सीद्धांतभणेवलीतेसहिरे  
 ॥५॥ अथवाअन्यमातिनारे शास्त्रसर्वरतीनारे वैदकजोती  
 शप्रमुखएमलहोरे ॥ नवतत्वजाणारे षटद्रव्यपरमाणेरे  
 जावनखेपोतेनेभापियेरे ॥६॥ नामतपकहियेरे एवुनाम  
 कोइनुलहीयेरे प्रथमनखेपोएणीपेरेजाणीयेरे तपविधि  
 जेहरे लखिपुस्तकमांतेहरे थापनातपतेनेदाखियेरे ॥७॥  
 मासखमणादिजाणारे दशपच्छखाणारे पुन्यकारणतेनेलि  
 जियेरे धर्मनहितेहरे आश्रवगुणएहरे द्रव्यनखेपोतेने  
 किजियेरे ॥८॥ परवस्तुजाणारे त्यागजावचीतआणीरे  
 निजस्वभावेतेहनररमेरे जावतेजाणारे नखेपोचितआ  
 णोरे नखेपाचारेतपमाहिलीजीयेरे ॥ ९ ॥ सवरादीकरे  
 वस्तुउतमठीकरे तीहातीहांनखेपाएणीपेरेवरणवोरे प्र  
 थमनात्रणएहरे नयचारमांगुणगेहरे चोथोनखेपोत्रिणन  
 यमांहेजाणियेरे ॥१०॥ नामथापनाजेहरे द्रव्यनखेपोतेहरे  
 कारणभाख्यांभावनखेपनारे मुख्यजावतेजाणोरे निमी  
 तअवरआणोरे माहाभाष्येएणीपेरेजाखीउरे ॥११॥  
 ॥उक्तचक्षाष्ये॥ अहवांनामठवणा ॥ दब्बाइजावमंग  
 लाइपाएण॥जावमंगलपरीणाम॥निर्मितउभावाश्रो॥

त्राणनखेपापाखेरे जावनखेपोदाखेरे कारजसिद्धिएए  
 कलोकरेरे अथवाएदोयरे द्रव्यजावतेजोयरे बेनखेपा  
 उपकारीकह्यारे ॥१२॥ नामादीकवीनारे जावनीक्षेपेकी  
 नारे- कारजकारिमाहाजाप्येकह्यारे, तेमाटेएमजाणीरे  
 जावनखेपोलेजोताणीरे एहथीकारजसीद्धिहोशेखरीरे १३

॥उक्तच॥वथसरुवनाम॥तप्पवयहेओओसधम्मव्व  
 ल्लुनाणाभिहाणाहोज्जाजावोविवज्जासो ॥१॥ वल्लसल  
 खणंसववहारोहसदाओ ॥ अजिहाणाहीणाओबुद्धिस  
 दाओकिरियाय॥२॥

नामथापनाजाणोरे उपगारचीतआणोरे कारणनिमीत  
 एहनेधारीयेरे मोक्षानीलाखेरे मोहदशादूरनाखेरे,जे  
 साधवावछेतेहनेहवेकहूरे ॥१४॥ सवरनीर्जराजेहेरे वद  
 ननमनतेहेरे जावनखेपेसवी सुखपामीयेरे कोइभाखेरे  
 अरीहतगुणदाखेरे भावनखेपेएहसुखपामशुरे॥१५॥ एम  
 नहीछेएहरे भाखुसमजोतेहेरे भावअरीहतथीपणअवर  
 तरेनहीरे जोएहथीतरतारे संसारीगुणवरतारे तोसर्वेसं  
 सारीमोक्षमाहीवशेरे ॥१६॥ पोतपोतानोजाणोरे जावन  
 खेपोचीतआणोरे तेहथीजीवसर्वेमुक्तीलहेरे एमजाणी  
 शुद्धरे आदरोभलीबुद्धरे भावनखेपोआराधनकरोरे॥१७  
 ॥नीक्षेपाएभाख्यारे वीवरीनेदाख्यारे समजुनेउपगारघ  
 णोथशेरे मुनीद्वुकमतभावरे रमेनीजगुणदावेरे सेहेजे

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३० ॥ वाच ३३ ॥ नमो

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३१ ॥ वाच ३३ ॥ नमो

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३२ ॥ वाच ३३ ॥ नमो

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३३ ॥ वाच ३३ ॥ नमो

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३४ ॥ वाच ३३ ॥ नमो

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३५ ॥ वाच ३३ ॥ नमो

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३६ ॥ वाच ३३ ॥ नमो

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३७ ॥ वाच ३३ ॥ नमो

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३८ ॥ वाच ३३ ॥ नमो

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३९ ॥ वाच ३३ ॥ नमो

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४० ॥ वाच ३३ ॥ नमो

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४१ ॥ वाच ३३ ॥ नमो

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४२ ॥ वाच ३३ ॥ नमो

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४३ ॥ वाच ३३ ॥ नमो

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४४ ॥ वाच ३३ ॥ नमो

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४५ ॥ वाच ३३ ॥ नमो

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४६ ॥ वाच ३३ ॥ नमो

लअनेवलीभावरें सु० ॥ १॥ ज , जी मां हो ॥  
 ममवद्रव्यमारे स्वगुणपर्जायरे सु० अस्तीजागोपेहेलो  
 थयोहोलाल स्यात्नास्तीबीजोकह्योरे भागातणोविचा  
 ररे सु० तेद्व्यर्थहवेलहोहोलाला ॥ ५ ॥ जीवद्रव्यमापाव  
 नां द्रव्यक्षेत्रनेकालरे सु० जावसहितचारजाणियेहोला  
 ल तेजीवमालाधेनहीरे तेथीनास्तीजागोथायरे सु० एम  
 सर्वद्रव्यमाआणियेहोला ॥ ६ ॥ स्वद्रव्येअस्तीकहीरे प  
 रद्रव्येनास्तीभावरें सु० गुणपर्जायपणएमलहोहोलाल  
 स्वगुणपर्जायस्वद्रव्यमारे अस्तीभावकेहेवायरे सु० पर  
 गुणादिनास्तीपणोकह्योहोलाल ॥ ७ ॥ हवेत्रीजाजगनीरे  
 अस्तीनास्तीविचाररे सु० स्यात्पदेएजोडियेहोला  
 जेसमेअस्तीतेसमेरे नास्तीपणुंतिहांदेखरे सु० स्यात्तव  
 चनेअसतमोडियेहोला ॥ ८ ॥ शुद्धस्वगुणेअस्तितरे तेणे  
 समेपरगुणजाणरे सु० नास्तिपणुतिहांकह्युं होला एक  
 समेतेकेमजाखियेरे दोयभगभेलाथायरे सु० तेकारणभंग  
 त्रीजोलहोहोलाल ॥ ९ ॥ हवेअस्तनास्तीदोउरे एकसमे  
 नेगाह्योयरे सु० तोस्वअस्तिकेहेताथकाहोलाल असस्या  
 तसमयहोवेरे तवनास्तीनिकेहेवायरे ॥ सु० ॥ मरखावादलागे  
 तिहाहोलाल ॥ १० ॥ परजावेनास्तीजाखियेरे स्वअस्तीन  
 केहेवायरे ॥ सु० ॥ इहाअसत्यआवेखरुहोलाल बेहूवचन  
 बोलवारे एकसमेनहोयरे ॥ सु० ॥ एहवीचारमनधरोहो

लाल॥११॥ एकअक्षरउचारणरे असंख्यातसमयथायरे  
 सु०तेथीचोथोनांगोकह्योहोलाल अवक्तव्यएजाणियेरे व  
 चनअगोचरएहरे सु० जीहाउचारणनवीलह्योहोलाल ॥  
 १२॥ शीष्यकहेस्वामीकहोरे अवक्तव्यकेहनोथायरे सु०  
 दोयनोनेगोभाखियोहोलाल गुरुकहेतुमेसांजलोरे अ  
 स्तीनावेअवक्तव्यरे सु०वचनउचारणनविदाखियोहोला  
 ल ॥१३॥ तेथीअस्तीअवक्तव्यछेरे तेमनास्तीपणजाण  
 रे सु० पाचमोछठोएमजाणियेहोलाल जुगपतपणअवक्त  
 व्यछेरे सातमोभांगोजेहरे सु० एमसप्तभंगीचित्तआणिये  
 होलाल॥१४॥ शिष्यकहेस्वामीकहोरे अवक्तव्यजावछेए  
 हरे सु०उच्चारणकेमकीजियेहोलाल गुरुकहेस्यात्पदल  
 होरे उच्चारणसुखेथायरे सु०एमसमोजावलिजियेहोलाल  
 ॥१५॥सर्वेपदमास्यात्जोडियेरे तोलागेनहिमृपावाढरे सु०  
 सत्उच्चारणएहछेहोलाल जेमएअस्तीनास्तीविपेरे नां  
 गासातेदाखरे सु०तेमवीजामाकेहेछेहोलाल॥१६॥ नित्य  
 अनित्यमांजाणियेरे एकअनेकमांसाररे सु०सतअसतपण  
 मकह्याहोलाल जेदअभेदमांजाखियेरे जव्यअजव्यम  
 णारे सु०गुणपर्जायपरमुखेलह्याहोलाल॥१७॥ एमअने  
 प्रकारमारे सप्तभंगीकेहेवायरे सु० सर्वेथानकेलागेखरी  
 होलाल जेकारणएमजाणियेरे सिद्धमांनयनहोयरे सु०स  
 भंगीतीहांठरीहोलाल॥१८॥सप्तभंगीएसिद्धमारे लागे



रण ८ तेमअवशरे ॥ प्रा० ॥ गती ९ थीती १० तुमेजाण  
 अवगाहनापणचितआणारे ॥ प्रा० ६ ॥ वरतना १२ गु  
 तेंकहिये चेतनपणू १३ पणलहियेरे ॥ प्रा० ॥ अचेतन  
 गुणतेह मुर्तीपणुपणएहरे १५ ॥ प्रा० ७ ॥ तेमअमूर्ति  
 हाणो १६ एसोलेविशेषवखाणारे ॥ प्रा० ॥ सामान्यवि  
 पगुणएह लक्षणपणकहियेतेहरे ॥ प्रा० ८ ॥ अस्तीवि  
 यपेहेलो जेह हवेअर्थकहूछूतेहरे ॥ प्रा० ॥ खटद्रव्यएपो  
 गुणपरजायतेहूतेरे ॥ प्रा० ९ ॥ प्रदेशेकरिअस्तीजाणो  
 मपाचद्रव्यकहाणारे ॥ प्रा० ॥ कालअस्तीनकहिजे ध  
 अधर्मआकाशलीजेरे ॥ प्रा० १० ॥ निवअसरूपप्रदेश  
 द्रव्यनाकहेशरे ॥ प्रा० ॥ खधअकेकोजाणो पुद्गलमाहवे  
 हेवाणारे ॥ प्रा० ११ ॥ खंधहोवानीशक्तीअनत तेणेपच  
 व्यएसतरे ॥ प्रा० ॥ पणकालनोसमयएक केणथमिल्यो  
 हिछेकरे ॥ प्रा० १२ ॥ एकविणशरेबीजोथाय तेंनेका  
 अस्तीनकेहेवायरे ॥ प्रा० ॥ एपाचेद्रव्यअस्तीकाय ए  
 थमगुणचितलायरे ॥ प्रा० १३ ॥ हवेवस्तुपणुभाखीजे  
 टद्रव्यमाहेदाखीजेरे ॥ प्रा० ॥ एकाकाशप्रदेश ध  
 नोएकप्रदेशरे ॥ प्रा० १४ ॥ जे . न . १ .  
 छेसतरे ॥ प्रा० ॥ पुद्गलपरमाणुआजाण  
 णारे ॥ प्रा० १५ ॥ प . १ . १ .  
 जेगाएहरे प्रा . १५ ॥ १ . १ .

आवेरे॥प्रा० १६॥हवेद्रव्यत्वगुणकहीजे खटद्रव्यमाहिलही  
 जेरे प्रा० आपआपणी क्रियाजेह सर्वद्रव्यकरेछेतेहरे॥प्रा०  
 १७॥ धर्मास्तीकायआपणो चलणगुणस्वप्रदेशेजाणो  
 रे प्रा० तेसदाकालपुद्गलने जीवनेचालवारुपकरनेरे॥प्रा०  
 तिहाकोइएमभासे सिद्धक्षेत्रलोकातवासेरे प्रा० धर्मा  
 स्तीकायछेतांहि सिद्धजीवचलावेनांहिरे ॥प्रा० १९॥ ते  
 नोउतरएम सिद्धजिवअक्रियनेमरे प्रा० तेथीचालेनहि  
 एह पणतेक्षेत्रेबीजाछेतेहरे ॥प्रा० २०॥ सुक्ष्मनीगौदी  
 जिव पुद्गलपणतिहांसदीवरे प्रा० तेहनेचलावेछेतेह तेथी  
 द्रव्यत्वगुणएहरे ॥प्रा० २१॥ अधर्मास्तीकायद्रव्यजेह  
 जिवपुद्गलनेथीरसाह्यतेहरे प्रा० एकियारेतेहमांजाणो  
 आकाशद्रव्यचितआणोरे ॥प्रा० २२॥ सर्वद्रव्यनेजेह  
 अवगाहनआपेछेतेहरे प्रा० इहांकोइपुछशेएम अलोका  
 काशमाकेमरे ॥प्रा० २३॥ विजोद्रव्यतिहानहि अवगाह  
 नकेनेआपेतांहिरे प्रा० उतरतेहनेएमदीजे अलोकाकाशे  
 एमकिजेरे ॥प्रा० २४॥ अवगाहनशक्तिछेतेने द्रव्यविना  
 आपेकेनेरे प्रा० पुद्गलनेमलवुविस्वरवु तेरुपक्रियानुकरवु  
 रे ॥प्रा० २५॥ कालद्रव्यआपणिजाणो वर्तानक्रियाकेहे  
 वाणोरे प्रा० ज्ञानलक्षणजिवनेकहिये उपयोगक्रियाति  
 हांलहियेरे ॥प्रा० २६॥ पोतेपोतानेद्रव्ये परणामीपणुते  
 सर्वेरे प्रा० स्वसंतानीकिरिया छद्रव्यकरेछेगुणवरियारे

॥प्रा० २७॥ हवेप्रमेयत्वकहिजे गुणचोथोएमलहिजेरे  
प्रा० मुनिहूकमगुणखास जाणेतेनोशिवपुरवासरे ॥प्रा०  
२८॥ ढाल३८मिसपुणे॥

॥दुहा॥ हवेप्रमेयत्वपणुकहू तेसुणजोसुखकार जि  
वस्वरुपनेजाणवा एहउतमआचार ॥१॥ केवलीयेज्ञाने  
करी खटद्रव्यदिठाजेह प्रत्येकेप्रत्येकेप्रमेयत्वपणु तेजा  
णोगुणगेह ॥२॥ खटद्रव्यनानामए कहिनेदाखुसार ध  
र्मअधर्मआकाशए एकएकद्रव्यधार ॥३॥ हवेजिवस्वरु  
पनु भाखुतासविचार अनतातेजाणीये सक्षेपेसरूपाधार  
॥४॥ सन्नीपचद्रिमनुपजे सरूपातानारूपाएह असरूपाता  
असंन्नीछे नारकिअसरूपाताजेह ॥५॥ देवपणअसंरूप  
छे तिर्यचपंचद्रिजेण असरूपातातेनाखीया वेरंद्रिअस  
रूपकेण ॥६॥ असरूपातातेरद्रिछे चौरद्रिअसरूपाताजे  
ह प्रथविकायअसंरूपछे अपकायअसरूपातातेह ॥७॥ अ  
संरूपतेउकायजाणिये वायुकायअसरूपाताधार प्रत्येकव  
नरूपतिजाणीये जिवअसंरूपाताधार ॥ ८॥ तेयिसि  
द्धजिवअनतछे वादरनिगोदजेह तेथीजिवअनंतछे एमस  
मंजोगुणगेह ॥ ९॥ सुक्षमनिगोदजाणिये जिवअनताधा  
र इहानिगोदतणोकहू सक्षेपेविचार ॥१०॥ ढाल३९मि॥  
जिनजीत्रेविसमोजिनपासके आशमुजपरवेरेलोल॥एदेशि  
हवेजेहनिगोदनाचावके प्राणितमेसाजलारेलोल सुक्षमअ

तिसेदिसेएहके गुरुमुखथाधरोरेलोल ॥हवे० १॥ लोका  
 काशनाजेहप्रदेशके प्रदेशप्रदेशोलहोरैलोल तिहांगोलो  
 अकेकोजोंयके तेहमांनीगोदलहोरैलोल ॥हवे० २॥ गोलां  
 प्रत्येअसख्यनीगोदके तेकायाकहिरेलोल अनंतजीव  
 तणीएधारके एकशरीरलहिरेलोल ॥हवे० ३॥ एमएकनी  
 गोदेअनताजीवके एवीअसख्यछेरैलोल तेहनोगोलोए  
 ककेहेवायके एहवाअसख्यछेरैलोल ॥हवे० ४॥ एमअके  
 कीनीगोदमांजोयके जीवअनंताकह्यारैलोल तेजीवैक  
 तणाप्रदेशके असंख्यातावह्यारैलोल ॥हवे० ५॥ जीवतणें  
 एकप्रदेशेजोयके कर्मअनंतरह्यारैलोल वर्गणाआठवलगी  
 छेतामके प्रत्येकेप्रत्येकेकह्यारैलोल ॥हवे० ६॥ अनंतप्र  
 माणवासाथके वर्गणातेकहिरेलोल जीवशूलागीछेनिर  
 धारके पन्नवणामालहिरेलोल ॥हवे० ७॥ हवेकहूआड  
 खानोविचारके जवितुमेचितधरोरेलोल मनुष्यपचंद्रीजे  
 निरोगके तेहनंमानकरैरेलोल ॥हवे० ८॥ एकसांसोस्वा  
 समांसत्तरके जवझाझीराकरैरेलोल मूर्तएकमांहेवलीजेह  
 के साडत्रीसोतोतेरधरेरेलोल ॥हवे० ९॥ एटलास्वासो  
 स्वासकेहेवायके पुलकजवहवेकहूरैलोल पासेटहजारने  
 सतपाचके छत्रीसभवलहूरैलोल ॥हवे० १०॥ नीगोदना  
 एकजवनंमानके बसेछपनसहरैलोल आवलीतणुछेप्रमा  
 णके नीगोदएभवकहिरेलोल ॥हवे० ११॥ हवेजेनीगोदमांर

ह्याजीवके तेहनुंस्वरुपसुणोरिलोल पाम्यात्रसपणूनहितेह  
 के केवारतेनणोरिलोल॥हवे० १२॥ नेमनहिपामेआवतेका  
 लके एमज्ञानीकहीरेलोल उपजेवीणसेत्यानात्यांहीके अ  
 नादीअनतलहिरिलोल॥हवे० १३॥ तेनीगोदनाभेदछेदो  
 यके विचारतससुणोरिलोल व्यवहारनीगोदपेहेलोनेदके  
 बीजोअव्यवहारभणोरिलोल ॥हवे० १४॥ हवेजेजीववाढ  
 रगतीमाहिके एकाद्रिपणुलहेरेलोल जावतत्रसंपणानोठां  
 मके तेव्यवहारीकहेरेलोल॥हवे० १५॥ पाछोनीगोदगतीमां  
 जायके कर्मउदयेकरिरिलोल तेजीवव्यवहारराशीकेहेवाय  
 के बीजोभेदकहूवलीरेलोल॥हवे० १६॥ नथीनिकल्योनीगो  
 दथीजेहके निकलगोनहिकदारिलोल तेअव्यवहारराशी  
 जाणके एमलहोमुदारिलोल ॥हवे० १७॥ नीगोदमांदोय  
 जातनाजीवके भव्यअन्नव्यकहारिलोल चवनभानुकेव  
 लीचरित्रके विचारतिहालहारिलोल॥हवे० १८॥ मनुष्य  
 पणैथीजेटलाजिवके कर्मखपविकरिरिलोल जेटलाजिव  
 मोक्षेजायके एकसमेवलीरेलोल ॥हवे० १९॥ तेटलाजीव  
 तेणेसमयके सुक्ष्मनीगोदथकीरेलोल अव्यवहारराशी  
 माहेथीआवेके व्यवहारीनकीरेलोल ॥हवे० २०॥ को  
 इसमेओछानिकलेभव्यके ॥ बाकीअन्नव्यजाणियेरेलोल  
 व्यवहारराशिवधेघटेनहिके एविचारचितआणीयेरेलोल  
 ॥हवे० २१॥ लोकमांहिअसरुयकेहेवायके गोलानीगोद

नारेलोल तेछदीशीनोलेवेछेआहारके पुद्गलसोदनारेलो  
ल ॥हवे० २२॥ जेरह्यालोकनेअतेजाणके चर्मप्रदेशेसहि  
रेलोल तेगोलानाजिवनेआहारके त्रणादिशीनोकहिरेलो  
ल ॥हवे० २३॥ फरशापुद्गलनोलेवेआहारके एमतमेचितध  
रोरेलोल हवेएसुक्ष्मनीगोदमाजाणके वनस्पतिखरोरे  
लोल ॥हवे० २४॥ एकसाधारणवनस्पतितेहके सुक्ष्मनी  
गोदतेकहेरेलोल अवरथावरदिसेछेचारके तेहनासुक्ष्मव  
हेरेलोल ॥हवे० २५॥ पृथविपरमुखचारेजाणके पणप्र  
त्येककहिरेलोल साधारणपणुवनस्पतिमाहिके विजेनवं  
लहीरेलोल ॥हवे० २६॥ एसर्वेनोलोकमांहिस्वस्थानके  
नेलारहेछेसहिरेलोल काजलकुपिपेरेतेहकेतेजीवसंख्या  
लहिरेलोल ॥हवे० २७॥ तिहांदूखघणुतुंधारके अवक्त  
व्यभावेकहूरेलोल केहेतातेहेनोनावेपारके शास्त्रेवहुलहू  
रेलोल ॥हवे० २८॥ एहनीगोदतणोविचारके नाख्योसंक्षेप  
थीरेलोल मुनीदूकमज्ञानगुणजासके संगेसुमतासखीरे  
लोल ॥हवे० २९॥ ढाल३९मीसंपूर्ण॥

॥दुहा॥ एमप्रणमेतेद्रव्यए जिवसहितजाणो आपआप  
णास्वभावभा प्रमेयपणोकहांणो ॥१॥ हवेसत्यपणुकहू  
गुणपांचमोसार खटद्रव्यमाज्ञाखशुं उपजेविणसेधार  
॥२॥ थिरताभावपणतेरहे तेहिजसतकेहेदाय तत्त्वार्थमां  
तेकह्यु तेहचितमालाय ॥३॥ हवेथोडाकविस्तारीशु जेदए

हनाधार समजुजिवतोसुखलहे जेहनेज्ञाननोप्यार ॥४॥  
 ॥ढाल४०मि॥ सुनंदाकतनेवदिरे ॥ एदेशि॥ धर्मास्ती  
 कायनाजाणारे असख्यप्रदेशकहांणारे एकप्रदेशमांचित  
 आणो॥१॥सलुणासत्पणोएधारारे॥एआंकणी॥अगुरुल  
 घुअसख्यातोआख्यारे विजेप्रदेशेअनंतोदाख्यारे तिजे  
 प्रदेशेसख्यातोआख्यो॥स०२॥असख्यप्रदेशएमकहियेरे  
 प्रदेशेप्रदेशेलहियेरे अगुरुलघुपरजायसहिये ॥स० ३॥  
 घटतोवधतोरह्योछेएहरे अगुरुलघुपरजायजेहरे तेथिच  
 लआख्योछेतेह॥स० ४॥ जेप्रदेशेअसख्यातोहोयरेतेणेप्र  
 देशेअनंतोजोयरे अनताठामेअसख्यातोसोय ॥स० ५॥  
 एमलोकप्रमाणेजाणारे असख्यातप्रदेशप्रमाणारे सम  
 कालेअगुरुलघुआणो ॥स० ६॥ परजायतणुएभाखुरे  
 परावर्तनधर्मदाखुरे प्रदेशप्रदेशमांआखु ॥स० ७॥  
 अनंतफिटिअसख्यातथायरे उत्पतिअसंख्यकेहेवायरे  
 नाशअनंततणोलेवाय ॥स० ८॥ ध्रुवपणुनीश्रलहोवेरे  
 अणजंगतेएमलेवेरे उत्पातवयध्रुवकेहेवे॥स० ९॥जेमएध  
 र्मद्रव्यमाआख्यारे तेमअधर्ममादाख्यारे असख्यप्रदेश  
 माआख्यो॥स० १०॥आकाशद्रव्यएमकहियेरे अनंतप्रदे  
 शतेलहियेरे अगुरुलघुएमवहिये ॥स० ११॥ जिवद्रव्य  
 अनताजाणारे प्रत्येकेप्रत्येकेवखाणारे एकजिवनाचित  
 आणो ॥स० १२॥ प्रदेशअसख्याताआख्यारे एकजिव

नाकहिनेदाख्यारे एमअनंतजिवनाराख्या ॥ स० १३॥  
 उपजवुविणसवुतेमारे ध्रुवपणुछेजेमारे एमत्रिजंगीछेएह  
 मां॥स० १४॥ पुद्गलप्रमाणुजाणोरे समेसमेएहवखाणोरे  
 त्रिभंगीएमकहांणो ॥स० १५॥ वर्तमानसमयेनाशरे तेतो  
 अतितकालनोथाशरे अनागतसमयआवेजाश ॥ स०  
 १६॥ एमउपजवोविणसवोजाणोरे कालपणोध्रुवप्रमाणो  
 रे एमअगुरुलघुकहांणो॥स० १७॥ एथुलपणामांजाख्योरे  
 उत्पातवयध्रुआख्योरे हवेवस्तुपणेकांडदाख्यो॥स० १८॥ व  
 स्तुगतेमुलएमाख्युरे गयेपलटवेज्ञानदाख्युरे एमभासनं  
 चितमांराख्युं॥ स० १९॥ पुर्वपर्जायभासनजेहरे सिद्धमां  
 पणकहियेतेहरे उत्पातवयध्रुवएह ॥स० २०॥ धर्मास्ती  
 कायमांजाणोरे प्रदेशेप्रदेशेवखाणोरे पुद्गलजिवखेत्रगत  
 आंणो ॥स० २१॥ अशख्याताप्रथमसमयेकहियेरे चल  
 णसाह्यपणोतेलहियेरे बीजेसमयेअनतासहिये ॥ स०  
 २२॥ तेहनेचलणसाह्यकरतारे असंख्यातानोवयवरतारे  
 अनंतानोचलणसाह्यधरता ॥ स० २३॥ एमउत्पातनेवय  
 जाणोरे ध्रुपणेद्रव्यवखाणोरे एमसमयेसमयेकहाणो॥  
 ॥स० २४॥ एमसर्वद्रव्यमाधारोरे पंचास्तीकायनीहारोरे  
 एककालछेउपचारो॥स० २५॥ तेकालउपचारेलहियेरे ए  
 मांवस्तुपणुनकहियेरे जावसवीउपचारिवहिये ॥स० २६॥  
 एमसत्त्वपणोएजाणोरे गुणपांचमोवखाणोरे मुनीहूकम



वचनप्रमाणो ॥ स० २७ ॥ ढाल ४० मी सपुर्ण ॥

॥ दुहा ॥ जो अगुरुलघुतणो जेदजुदोनथाय तोपरदेश  
माहोमाही जेदकेभकेहेवाय ॥ १ ॥ तेणेअगुरुलघुसर्वमां  
भेदजतेहकेहेवाय जेटलो जेटलो जाणीये उत्पातवयरुपथा  
य ॥ २ ॥ सत्यपणे एकद्रव्यछे जेहना भेदनहोय जीहासत्व  
पणोजुदोपडे तीहांद्रव्यदोजोय ॥ ३ ॥ एमएसत्यपणो जो  
जोबीचारीसार हवेगुणछठोवर्णवू अगुरुलघुचीचारा ॥ ४ ॥  
ढाल ४१ मी ॥ प्रीतमजीरगरसेरमिये ॥ एदेशि ॥ गुण  
अगुरुलघुनारुयो छठोपर्जायथीरारुयो हानीवरधीधकी  
दारुयो ॥ ५ ॥ सनेहीसमजोसुखकारी एआकणी ॥ खटप्रकारे  
तेसार वरधीपणुप्रथमधार नारुयुशास्त्रेउदार ॥ स० २ ॥  
अनतभागवरधीकहिये असख्यातजागकहिये संख्याता  
भागवरधीसहीये ॥ स० ३ ॥ सख्यातगुणीवरधीजाणो अस  
ख्यातगुणीवखाणो अनंतगुणीतेपरमाणो ॥ स० ४ ॥ एख  
टवरधीकहो हवेखटहानीलही मुणजोतुमेचितदेई ॥ स०  
५ ॥ अनतभागहानीजाणो असख्यातजागवखाणो स  
ख्यातभागप्रमाणो ॥ स० ६ ॥ सख्यातगुणीहानीकही अ  
सख्यातगुणीलही तेमअनंतगुणीसही ॥ स० ७ ॥ एमख  
टगुणीहानीजाणो वेडुथईभेदएमआणो द्वादशभेदव  
खाणो ॥ स० ८ ॥ हांनीतेनोवयकहीये वरधीतेतोउपजवुज  
हिये एमअगुरुलघुवाहिये ॥ स० ९ ॥ नहिलघुनेनहिगुरु

अगुरुलघुतेनामधरु सर्वस्वज्ञावमांतेहसरु ॥स० १०॥  
 सर्वद्रव्यमांतेलाधे अगुरुलघुसर्वसाधे आवर्णतणोनहि  
 छेबाधे ॥स० ११॥ पचमअगेतेजाख्युंश्रमिखथीकांईतेदा  
 ख्यु तेगुणतोचीतमांराख्युं ॥स० १२॥ आतममध्येगुणसा  
 रो अगुरुलघुएगुणधारो सर्वप्रदेशेविचारो ॥स० १३॥ खा  
 यकभावेएजाणो आवर्णराहितकहाणो सामान्यगुणपरी  
 माणो ॥स० १४॥ सर्वसामान्येनेकहिये अधिकोओछो  
 नवीलहिये छठोगुणजाखोसहिये ॥स० १५॥ खटगुण  
 जाख्याएह खटद्रव्यमांलाधेजेह तेथीसामान्यकहियेतेह  
 स० १६॥ वाकीचाररह्याजेह अर्थनवीजाखुतेह समजी  
 लेजोगुणगेह स० १७॥ स्वस्वद्रव्यअपेक्षाय सामान्य  
 पणुतेमथाय तेथीसामान्यकेहेवाय स० १८॥ अपरद्रव्य  
 मांनहिजेह सरस्वाजावनहितेह तेथीअर्थनांख्योनाहिएह  
 ॥स० १९॥ हवेगुणतणीजाखु जावनारीतइहांदाखु शुद्ध  
 अर्थइहाआखु ॥स० २०॥ खटद्रव्यमाहिधारो सरस्वागु  
 णजेमांजालो तेसामान्यगुणविचारो ॥स० २१॥ एकद्रव्य  
 मांजेगुणदेखो बीजाद्रव्यमांतेनवीपेखो विशेषगुणतेमां  
 लेखो ॥स० २२॥ कोईकोईद्रव्यमांहिजाणो कोईद्रव्यमां  
 नकहाणो तेगुणएमचीतमांआणो ॥स० २३॥ साधारण  
 असाधारणतेकहिजे एमगुणसर्वग्रहीजे एरीतेगुणनेसमजी  
 लीजे ॥स० २४॥ एछद्रव्यमांसार गुणअनंतासुखकार प

र्ताथयोविभावतो रागादीहोआवरणजेहके द्रव्यक  
 ० कर्ताथयो चावकर्मनोहोपणकर्ताएहके ॥हवे० ८॥  
 याअवरतकखायजे जोगआश्रवहो प्राणघातादी  
 एके तेइहाकारणजाणिये चावकर्मनुहोकरवूकारज  
 एके ॥हवे० ९॥ द्रव्यकर्मनोलाजजे अशूद्धतायेहोस  
 नकेहेवायके स्वपरनोरोधकहोवे क्षयउपसमहोहानी  
 थायके ॥हवे० १०॥ अथवापरअनूजाइये परवरतवुहो  
 दाननिवासके अशूद्धभावनाप्रमुखजे कर्मशक्तिहोरा  
 नीआशके ॥हवे० ११॥ एमआधारतेजाणिये अशूद्ध  
 टचक्रविचारके बाधकभावतेजाखियो हवेजाखूहो  
 कसुखकारके ॥हवे० १२॥ आत्मप्रणतीआदरी पल  
 होकारकचक्रतेहके साधकआत्मधर्मतणो वरतावेहो  
 गुणगेहके ॥हवे १३॥ सम्यकगूणठाणाथकी जीवल  
 अजोगीठाणके तिहालगेसाधकजाणिये पछीपामे  
 जेवनिरवाणके ॥हवे० १४॥ कर्ताआत्मद्रव्यए शूद्धआ  
 प्रगटकरवाकाजके तेहिजकारजजाणिये तेनिमिते  
 कारणसाजके ॥हवे० १५॥ स्वस्वभावरुपजे रम  
 होकरतेहनीमाहीके तेपरणतीआदरे एकियाहोभा  
 ताहिके ॥हवे० १६॥ स्वरमणादिकजोकिया तेकर  
 अधुरोछेज्याहिके पुर्णनेकरवीनवीकही भाख्युंछेहो  
 नाप्येताहिके ॥हवे० १७॥

॥ उक्तं च ज्ञाप्ये ॥ तस्माक्षुध्यध्याविसित्तं कार्यं ॥ अप्पात्म  
कारणमेव्यं इती ॥

हवे कारणं चोक्तं हू संप्रदानहो नीज आतमसारके ज्ञान  
दर्शनचरणतणा पर्जायदानहो दे आतमनेधारके ॥ हवे ० ॥  
१८ ॥ आतमजेनीपिजे तेरीते हो प्रगटकरवाकाजके तेम आ  
तमधर्म आदरे दानदाता हो ग्राहक अभेद राजके ॥ हवे ० १९ ॥

॥ उक्तं च ॥ देउस जस्स तसंपयाणं ॥ मिह तं पीकारणं तस्स हे  
ईतद छित्ताउन कीरइतवीणाजंसो ॥

हवे उपादानसांजलो कारक हो पांच मोछे जेह के आतम  
गुण परणतीपणे ज्ञानदर्शन हो चारित्रतेह के ॥ हवे ० २० ॥  
तत्त्व रमणीराधारता तत्त्व रुची हो तत्त्व रमणादिक जेह के  
अहसकनीराबाधता जथार्थ हो ज्ञासन गुणगेह के ॥ हवे ० ॥  
२१ ॥ परचावदुरेत्यागतो अजोगी हो परचावनातेह के स्व  
स्वरूप भोगता नीज वीरज हो फोरवे गुणगेह के ॥ हवे ० २२ ॥  
आतम सिद्धिरूप जे उतकृष्टो हो कारजनो कारण एह के आत  
मशक्ति प्रगट होवे स्व अनुजाई हो जाणो गुणगेह के ॥ ह ० २३ ॥

॥ उक्तं च ॥ साधक तम कारण करण ॥  
हवे अधीकरण जाणिये स्व पर्याय नो हो आधार छे एह के  
व्यापव्याप्त संबंध छे आतम नो हो पर्जाय थी छे तेह के ॥ हवे ०  
२४ ॥ स्थान कर्ते आतमा पर्जायने हो रे हेवानुठाम के खट  
कारक एनाखिया सक्षेपे हो दास्या छे एम के ॥ हवे ० २५ ॥ तेम

वलीसिद्धमाजाणिये स्वटकारकहों आतममाहितेहके कर्त्त  
 दिआतमजाणिये विशेष्यावश्यहोकभाख्युछेजेहकोह०२६॥  
 ॥उक्तंच॥ कारणव्याख्यातावशरे॥ छवीहकत्ताइकरण  
 कम्मा॥ चततोयसपयाणा॥ वयाणतहसंनिहाणाइ॥ इति  
 गाथायतथाच॥ कारणषोढायथाकारणतहावा॥ वद्धातच्छ  
 सततोत्ति॥ कारणकत्तावज्जपसायगतम॥ कारणजिउप्पि  
 उदडा॥॥१॥

ईत्यादिकबहुवारता जाखीछेहोग्रंथातरेमनुहारके मुनी  
 हूंकमबहुश्रुतथी पामशोहोज्ञानगुणअपारके॥हवे०२७॥  
 ढाल ४२ मी सपूर्ण॥

॥दुहा॥ नीश्वयव्यवहारएवर्णव्यो ज्ञानस्वरूपसुखकार  
 तेकारणव्यवहारए ज्ञानउत्तमआधार॥१॥ ज्ञानव्यवहा  
 रेकरी सुद्धउपयोगथाय जेदज्ञानतेहनेकह्यो असुद्धउ  
 पीयोगजाय॥२॥ मिथ्याअवरततेहथीटले टलेकखायने  
 जोग एहीजआश्रवनहेनुछे एहीजमोटोरोग॥३॥ तेटले  
 व्यवहारज्ञानथी शुक्लध्यानपणहोय प्रथक्तवीतर्कए  
 ताणीये प्रथमपायोसोय॥४॥ तेकारणएज्ञानते व्यव  
 हारनयेसार सुद्धचारीत्रपणहोवे अभेदज्ञानपणधारा॥५॥  
 मजाणीहदयेधरो निश्वयव्यवहारसार व्यवहारकारण  
 नेश्वेनुनिश्वयमुक्तिआधार॥६॥ हवेकिंचितचारीत्रनु नि  
 येनेव्यवहार स्वरूपइहातेमाखशु आगमनेअनुसारा॥७॥

॥ ढाल ४३ मी॥ नुलौमननमरातुं कयां नम्यो॥ एदेशी॥  
 चारीत्रवीधितेसां नलो नीश्वयव्यवहारदोयभेद आगमेत्र  
 नुसारेदाखशुं मतकोइवरज्योखेद ॥२॥ चारीत्रवीधितेसां  
 भलो एआकणी॥ प्रणातीपातादीत्यागजेव्यवहारचारीत्र  
 एह सुखअर्थीजे प्राणीया आदरेछेतेह ॥चा०२॥ अभवी  
 पणआदरे आश्वभावतेजाण मोक्षहेतुतेनवीकह्यो ज्ञान  
 वीनाचीतआण ॥चा०३॥ नीश्वेचारीत्रहवेभाखशुं थीरता  
 परीणामछेजेह आत्मस्वरूपएकत्वपणे रमणकरोगुणगे  
 हा॥चा०४॥ मोक्षहेतुजाणीकरी उद्यमकरोअभीराम जो  
 उद्यमएहवोनवीहोवे तोश्रद्धाराखोएहठाम ॥चा०५॥ ए  
 हीजसमकीतशुद्धछे तेवीनाज्ञाननेध्यान कीरीयापरमुख  
 निष्फलकही माटेश्रद्धाराखोसुजाण ॥चा०६॥

॥ उक्तचगाथा॥ जसकइतकीरेइ॥ अहवानसकेइ॥ तहयस  
 दहइ ॥ सदहमाणोजीवो ॥ पावेअयतमरंठांणं॥१॥

एमश्रद्धाशुद्धाराखजो ज्ञानश्रद्धाछेएक अनुजोगद्वार  
 मांभाखीयु जोइलेजोजिनेक॥चा०७॥

॥ उक्तचगाथा ॥ नायम्मीगिएहिसव्वो ॥ अगिणिह  
 सव्वेयइछे ॥ अछमीडाजइवमेवइ ॥ यजोसोगउवसोसो  
 नउनाम ॥१॥

रुडीपेरेमहाव्रतधरे कखायनोकरेजेत्याग तोपणमुक्ति  
 नवीलहे समकीतविनानहिलाग ॥चा० ८॥

रुपमां मुक्तिलेशेतेह ॥चा० २५॥ एहग्रथपुरणथयो जे  
माज्ञानछेसार मुनिदूकमजेआराधशे तेलेशेभवपार॥चा०  
२६॥ ढाल ४३ मि संपूर्ण॥

॥ कलस ॥ गायोगायोरेमेतोज्ञानसुधारसगायो खट  
द्रव्यनोवर्णनकरता ज्ञानअनुभवपायोरे ॥मेतो० १॥ ध  
र्मअधर्मआकाशतेजाणो कालपुद्गलनगरायो एपाचेअ  
जीवजाणीने चीतमापणनवीलायोरे ॥मेतो० २॥ सर्वर  
समाहीउत्तमरसए अमृतरसकहायो शूद्धचीदानदधर्म  
प्रगट्यो तेहीजज्ञानकहायोरे ॥मेतो० ३॥ सर्वद्रव्यमांप्र  
गटएछे सतधर्मकहायो ज्ञानसुधारसउत्तमजाणी एहध  
र्मचीतलायोरे ॥मेतो० ४॥ एवोधर्मदिशेनहीबीजो शिवप  
दएमाठरायो ज्ञानविनाधर्मनविहोवे एवोनिश्चेकरायो  
रे ॥मेतो० ५॥ द्रव्यगुणपर्जानीरचना जेदज्ञानठरायो शु  
द्धव्यवहारनयथीजाणो एहस्वरूपभरायोरे ॥मेतो० ६॥  
मोहर्ताकर्मनाशएहथी तेथीव्यवहारनयध्यायो निश्चेनय  
पणजाख्योछेएहमा अजेदज्ञानतेपायोरे॥मेतो० ७॥ खट  
द्रव्यनाभेदतेभाख्या गुणपर्जायसुगायो साधर्मीकपणूते  
दारूपू पक्षआठेतैलायोरे ॥मेतो० ८॥ चोभंगीबहूजात  
नीजाखी तेमस्वजावकहायो नयजंगवहूरीतेदाख्या ते  
मनिक्षेपापठायोरे ॥मेतो० ९॥ तेमवलीप्रमाणतेजाख्या  
सप्तभंगीचीतलायो त्रीभंगीपणतिहादाखी गुणलक्षण

कहायोरे ॥मैतो० १०॥ कारकखटपणतेजाख्या निश्चे  
व्यवहारतेध्यायो एमज्ञानस्वरूपमांरमियो अनुभवआ  
त्मपायोरे॥मैतो० ११॥ चारित्रवेजातनुंभाख्युं तेमसमकि  
तसुहायो अन्यदर्शननीचरचादाखी तेपणइहाकहायोरे  
॥मैतो० १२॥ एसर्वेनुसारतेजाणो ज्ञानस्वरूपसवायो नि  
श्चेस्वरूपआत्मनुचाख्यु तेलेजोसुखदायोरे॥मैतो० १३॥  
सर्वशास्त्रनुंसारएजाणो ज्ञानस्वरूपसुखदायो तेविनास  
विधर्मनहोवे संशयकोइनलायोरे ॥मैतो० १४॥ नगरन,  
सोचेजेममेदनीवीण तेमजीवविनाकायो शरीरनशोभेजे  
मनाकविण तेमधर्मकहायो ॥मैतो० १५॥ मुनीडुकमए  
ज्ञानरसगायो उलटअंगनमायो दीनदीनआनंदहोयअ  
धीकैरो अनुभवसहजसवायोरे ॥मैतो० १॥

॥कलस २ जो ॥ त्रीजगभासन ॥एदेशि ॥ द्रव्यगुणप  
र्जायजासन आत्मगुणतेअनुभव्यो सर्वग्रथमांसारएछे अ  
वरबीजोकोईनवीहवो ब्रक्षमांहिजेमकल्पब्रक्ष रत्नमांघिं  
तांमणीलह्यो वेलमांहेजिमचित्रावेली धातुमांसोदणकह्यो  
॥१॥पर्वतमांहेमेरुपर्वत रसमांजलरसजाणियेधर्ममांजेम  
दयाधर्म वाक्यमांसत्यवखाणीये सर्वग्रथमांएहग्रंथ सहूथी  
मोटोजाणिये एवोग्रंथअवरकोईनही जेमांआत्मस्वरूपव  
खाणिये ॥२॥ अवरग्रंथअनेकछेपण एजेवोकोछेनहि जे  
मशंभुरमणसमुद्रसरिखो अवरसमुद्रनहीसही एहग्रंथ ।



वाचताकाई सेहेजेसमकीतउपने ज्ञानस्वरूपतेशुद्धहोवे थी  
 रतान्नावआवीबने ॥३॥ तेहनेमुक्तिसुखसेहेजे प्राप्तहोवे  
 छेसही जन्मजरामर्णनासे एवोअवरग्रथकोनहिं देवलो  
 कनरलोकजेने थीरतापदजेहनेनहिं जेहनेरमणएग्रंथमां  
 ही थीरतायेमुक्तिछेसही ॥४॥ तेमाटेएग्रथजवीजन हाथथी  
 नमुकशो रातदीनअभ्यासएहनो करतांनवीचुकशो एहअ  
 र्थअगाधछेकाई तेथीमुरखनवीलहे अथवामतिपक्षीजेनर  
 एथीअलगातेरहे ॥५॥ ज्ञानीपुरुषजेहजाणे तेतोएमानित्यर  
 मे आत्मअर्थजेहप्राणी कालतेएहमागमे तेकारणभव्यजी  
 वतुमे एअभ्यासनचूकशो रातदीनरमणकरतां कर्मसवीते  
 मुकशो ॥६॥ जिहालगेसुरगीरंदएहि तिहालगेएहग्रथरहो  
 रविससी जिहालगेमडल वसुधामाविस्तारलहो तेलविंदु  
 जेमजलमा विस्तरेबहूपेरेसहि तेमएग्रथमुखमुखहोवे ज्ञा  
 नितणेतेचितवहि ॥७॥ हूकममुनिनोजेहमाने तेहज्ञानपांमे  
 खरो निमितकारणपुष्टएछे एहथीमननवदुरकरो मुक्ति  
 दाताएहसाचो ज्ञानधोरधरवली एवामुनिनोहूकममानो  
 एहिजशिवशुदरीमलि ॥८॥ विक्रमादित्यसवछरेए एप्रवं  
 धरच्योखरो ओगाणेशसतपचिसमाहि कारतगमासेचि  
 तधरो शुक्लपक्षअष्टमिये वारभगुछेसहि तेदीनएपूर्ण  
 किधो आमोदमयरमाहेरहि ॥९॥ चतुरमासुइहाकिधुं सघ  
 आग्रहघणोकरयो श्रावकओताबहुशुदर द्रव्याणुजोगेचि

तधरचो अनुभवज्ञानमांहिरशिया तेहनेवास्तेएरच्यो ते  
कारणअनुभवज्ञानएहि दाख्योअमृतरससच्यो ॥१०॥  
मुनिहूकमउपगारबुद्धे संघहेतेएकरचो अवरनेपणउपगा  
रथाशे जेनरएहदएधरचो अर्थएहनोबहुश्रुतपासे धारतां  
सविमुखसंपजे अहोनिसेग्रंथमांरमतां शिववधुधिकरे  
मजे ॥ ११ ॥

इति श्रीज्ञानविलासग्रंथप्राकृतबंध  
ढाल ॥ ४३ ॥ कलश ॥ २ ॥  
मुनीश्रीहूकममुनिजिकृतसंपूर्ण ॥

## श्रीध्यानविलास

श्रीगुरुभ्योनम

॥ दूहा ॥ धुरनमुपरमात्मा चिदानंदजगवंत तासपसा  
 परचनाकरुं देखोरीझेसंत ॥१॥ मूक्तिमारगनेसाधवा क  
 हूध्यानविचार शुभाशुभनेत्यागवु आदरवुशूद्धअनुसार  
 ॥ २ ॥ मूक्तिमार्गसाधनतणा मार्गदिशेअनेक पणमूक्ति  
 छेध्यानमा जाखूछूतेछेक ॥ ३ ॥ तपजपक्रियाअनेकविध  
 व्यवहारेकेहेवाय पणमूक्तितेहमांनही पुन्यप्रकृतीथाय  
 ॥ ४ ॥ मुक्तिरहिएकध्यानमा ज्ञानेकरीतेशूद्ध मूर्खअर्थपा  
 मेनही पामेपडितबुद्ध ॥५॥ तेकारणइहाजाखशू ध्यानत  
 णोविचार नेदघणाइहादाखशू शास्त्रतणेअनूसार ॥६॥  
 ध्यानविलासतेजाणिये नामग्रथनूएह ज्ञानीजनसूखीहो  
 शे वाचीगूणनोगेह ॥ ७ ॥ अत्रभापालिरुयते  
 हवेध्यानतेशानेकहीए जेचेतननाचपलपणानेथीरकर  
 वु चेतननाअद्यविसायथीरभावराखीनेध्यावु तेनेध्यानयो  
 गीकह्यो तेनात्रणप्रकारछे एकजावना ॥१॥ अनुपेक्षा ॥२॥  
 चितध्यान ॥३॥ एत्रणप्रकारेध्यानेकरीनेचित्तनेथीरकरवु  
 तेनेध्यानकहीए हवेअतरमहुरतएकाग्रहर्चितनोउपयोग  
 थीररेहेवोतेनेध्यानकहीए एटलेएकअर्थनेविशेजविचार  
 करवोतीहाघणाअर्थ पडखेथीसंक्रमणथाय तीहास्थीर

पणेरहेवु तथातीहांध्यानदिर्घपणोध्याननीपरपरा थए  
जजायछे तीहांकोइअंतरमहूरतनोनीयमछेनही एटले  
छद्वस्थनेएवीरतेध्यानप्रवर्ते अनेकेवलीनेजोगनुरोकवुं  
तेजध्यानकहीये ॥

॥उक्तच॥ अंतोमुहुत्तमित्तं चित्तावस्था मेगवत्छुमि छो  
मत्छाणंजोगनीरोहोजिणाणंतु ॥२॥

हवेतेध्याननाचारजेदछे आर्तध्यान ॥ १ ॥ रुद्रध्यान॥  
२॥ धर्मध्यान॥३॥ शुक्लध्यान ॥ ४ ॥ तेमध्येप्रथमनावेध्या  
नतेअशुजछे तेथकीअशुजकर्मबंधाय अशुजगतीप्राप्तथा  
यवाकिवेध्यानरह्यांतिमुक्तिनाकारणवाच्यछे एउत्तमजिव  
नेजप्राप्तथाय हवेतीहाप्रथमजेआर्तध्यानछेतेनुस्वरूपकहि  
येछिये तेनाचारपायाछे प्रथमईष्टविजोगनोविचारकरवो  
केरखेमनेतेवस्तुनोवीजोगथायएटले ईष्टकेहेतांजेवलभ  
पोतानामननेगमेएवापदार्थमल्या तेमांमगनथइनरेहेते  
कीयाकीया जेमातापीताजाई मीत्र पुत्र कलत्र धन धान्य  
सजनकुटुंबमेढीमेहेलवाडी आरामप्रमुखनो रखेमनेवी  
जोगथायएमकरतां कदीविजोगथयोतोमाहाचितामांपडे  
मोटोशोककरे माहावीलापकरे तेअजीलाखरूप, एकत्व  
पणेंजेपरिणामते इष्टवीजोगआर्तध्याननो पेहेजोपायो  
कहिए ॥ १ ॥ हवे बीजो अनिष्टसंयोगकेहेतां जेअ  
निष्टवस्तुनी प्राप्तिथिइएटलमनने नगमेतेवा शब्दादि

कपदार्थनुमलवुथयुछै तेनोविजोगंथवानोचितवे एटलेअ  
नीष्टजेभुंडांदुखनाकारण जेआशत्रुअर्हीथी क्यारेजाय ।  
अथवाआदरिद्रअवस्थामाहारीकाहारेजशे अथवाआ  
कुमाणसनोसमागमथयो तेकेमटले अथवाएथकी आप  
णोछुटकोक्यारेधशे ईत्यादिकवीचारवु ते अनिपूसयो  
गवीजोपायो कहिये

हवेत्रीजोपायोरोगचिताआर्तध्यानकेहेतां शरीरनेवी  
शे वायु गरमी पीत ज्वर इत्यादीकउपने थकेदूखघणु  
करे घणी चितामांप्रवर्ते एनाआशडउपचार करवानी  
चितामांरहे तेरोगचिता आर्तध्यानत्रिजोपायो कहिए ए  
ध्याननेविशे पराए त्रणलेस्याहोअ क्रश्रलेस्या ॥ १ ॥  
निललेस्या॥२॥ कापोतलेस्या एत्रणलेस्या सजवेछे ।

हवे चौथो पायो अग्रशोचकेहेता जे मन मांआ  
गलनाकालनो शोचकरे जेएणेवरसे एकामकरीशु  
अथवाआवतेवपे आवीरीतेकामकरीशु एमचींतवे तथा  
दान शियल तपनुफलमागे जेमाएणेजवआतप प्रमुख  
कीधा तेनुमनेअमुकुफलहोजो एटलेहूआवतेजवे इद्र  
तथा देव तथा चक्रवर्ती तथा वासुदेव बलदेव शोठसा  
हूकार पुत्र कलत्र धन धानादीक हरकोइमागे एआग  
लनाजवनीवच्छा एटलेअग्रशोचनापरीणामउपजे अ  
थवानीआणानुकरवुं तेपण एअग्रशोचमवेछे॥

॥ उक्तच ॥ निदानचित्तनंपाप ॥ एटले एआर्तध्याननोचो  
थोपायो अग्रशोचनामांकह्यो ॥

हवे एध्याननुलक्षणकहीछीए एजे आर्तध्यानछे तेने विशेषे  
अतीशे संछिष्टजावनथी एटले कुर प्रणाम दुरजय  
तीव्रनलाधे इहां एकर्मनीप्रणती एवीजदीशेछे हवे इहां  
गुलक्षणलाधेछे तेकहीएछीए हाहा हूंशुकरीश इत्यादी  
कआक्रदकरे उंचेस्वरकरे निरुदनकरे घणोसोचकरे नाम  
देइनेरुवेअथवानामदेइदेवनेपरचारीनेकहेजेतेमाहारुआ  
शुंकरयुं वलीछाती मस्तकताडनातरजनाकरे केशमाथां  
नातोडे इत्यादीकएसर्वे लक्षणआर्तध्याननांछे अथवा  
अमेमांदाछीए हवेअमेशुकरीए इत्यादीकपोतानाआत्मा  
नीनिंदाकरे इत्यादीकलक्षणएसर्वेआर्तध्याननांजाणवां  
अथवासाधुथइनेदूर्जननीरीतराखे तेनांलक्षणकहिएछीए  
अरेजाइओ अमेशुपालीए आजपाचमोआरो दूश्मका  
लछे नेमुक्तिमार्गतोमाहामोटोछे पणआकालेपालवुधणु  
कठणछे पडतेकालेकोइकजेवलोलाधे वलीपोवेपमांदी  
छे नेवीपयमांलेलीनछे व्रत नेम तप जप थकीउपरांठा  
धर्ममार्गथकी चुक्या जिनवांणीनेगोपवे एटले जथार्थउ  
पदेशकरेनही अनेलोकोपासेजाचनाओकरताफरे तेध  
णीआर्तध्यानमांजप्रवर्ते तेनेदूरिजनकहिए ॥ उक्तच ॥  
प्रसक्तश्चैतदुर्जना ॥ एध्यानछठागुणठाणासुधीहोय तेमा

टे जे आत्मार्यामुनीश्वरहोय ते नेएं पर्मादिनुस्वरूपजाणीने  
 अवश्यतजवुअने एध्यानवालांनी गती पराए त्रीजच सुधी  
 होय एवजाणीने अवश्य छांडवु ॥

॥ हवे रुद्रध्यान कहिये छिये ॥ रुद्र केहेतां महाकठोर ति  
 देय दुष्टपरणाममाप्रवर्ते एवजे माठु चितवण होय तेने  
 रुद्र कहिये ते रुद्रध्याननाचारपायाक ह्याछे हिंसा नुबधी १  
 मृखानुबधी २ चोरानुबधी ३ परीग्रहरक्षणानुबधी ४  
 एच्यारपायानां नामजाणवा हवे हिंसा नुबधी रुद्रध्यानक  
 हीये छिये जे जिव हिंसा करवानुचितवे अथवा जिव हिंसा कर  
 ताहर खसंतोपपामे तथा हिंसा करता देखिने खुशीयाय तथा  
 ज्याहासग्रामनी वारता ओथती होय अथवा एवाशास्त्रवा  
 चवानो घणो उमेदराखे अथवा अवासुरविरपुरुषो नाघणां  
 वखाणकरे अथवा एवातनी अनुमोदनाकरे एसर्वे हिंसा  
 नुबधी रुद्रध्यान पेहे जो पायो जाणवो १ हवे मृखानुबधी  
 केहेता जे जुठुवोले मनमाहरखपामे जे हूकेव जुठुवो ल्योछु  
 ने मारा तुठानी कोइने खबर पडती नथी अथवा आवीरी ते जु  
 ठुवोली ते अमुकने समजाविशु अथवा परनीचाडिकरे अ  
 थवा अन्यो अन्य खोटा विवाद चलावे अथवा मिथ्या त्वना  
 वचन उच्चारणकरे अथवा कपट सहित वीचारकरे एसर्वे  
 मृखानुबधी रुद्रध्यान नो बिजो पायो जाणवो २ हवे तिजो  
 चोरानुबधी केहेता जे चोरी करवी अथवा ठगाइ करवी अ

थवा गांठछोडीलेवी इत्यादिककारजकरी मंनमांखुगिथ  
वु अथवाइत्यादिककामकरवानुमनमांचितववु अथवा मं  
नमांएवीमोटाइनो हरखचितववो जेहूकेवोजोरावरछु  
जेहूंपारकोमालखाउछु मुजसरीखो कोणछे एवापरीणा  
मते चोरानुबधीरुद्रध्याननोतिजोपायोजाएवो ॥ ३ ॥

॥ हवे परीग्रह रक्षण कहेंता ॥ नवप्रकार नौ जे परीग्रह धन  
धान पुत्र कलत्र जानवर वाहन जमी जग्गा परमुखव  
धारवानी धणी इच्छा रहेते परीग्रहने नैल्लवानी इच्छाए  
अनेक पापारभ करे अथवा परीग्रह धन नैल्लवानी होयतो  
अजीमाने करी मगनथाय वलीते एहिग्रह नैली मध्ये डा  
टे अथवा बीजे कहीं अनेकथानके तेने नैल्लवानी मन्मांशं  
कारहेके रखेकोइ एमाहारुं मुकेल्लवानी अथवा एपरी  
ग्रह साचववावास्ते चाकर नैल्लवानी इत्या  
दिक माहामाठा परीणाम प्रवने एहिग्रह रक्षण रुद्रध्या  
न चोथोपाय जाणवो ॥ १॥ एहिग्रह रक्षण रुद्रध्या  
न करवे कराववे अथवा तेने नैल्लवानी एहिग्रह  
णाम तेने रुद्रध्यान जाणवने एहिग्रह रक्षण रुद्रध्या  
न शुभछे एध्यान पांचमागुण ठाणसुधोय अथवा  
जीवने छठागुण ठाणसुधोय एहिग्रह रक्षण रुद्रध्या  
न जनोमतछे हवे एध्यानगुण ठाणसुधोय एहिग्रह रक्षण  
लेस्या ॥ १॥ नैल्लवानी ॥ १॥



एसंजवेछे एलेस्यावालानाप्रणामअतीसच्छिष्टहोय के  
 ामहाक्रुरदूष्टपरणामी होय एकर्मनीप्रकृती एमज  
 यछे एलेस्याघणादोपनुकारणछे नानाप्रकारनाजीव  
 रणनेदोपेकरीहिंसादिकनी प्रवरतीएकरी पापेकरीने  
 शबरतीपणुनिर्दयपणुहोय पश्चातापहोयनहि परनाअ  
 ादथयाथीराजीपणुमाने माहाविषयनेविशे प्रवरतनप  
 धारे एलक्षणसर्वे रुद्रध्याननाजाणवा एध्यानवांलानी  
 तीपराए नर्कनीहोय माटेएनेअवश्यछाडवुं एटले एआ  
 यान तथा रुद्रध्यानबनेअशुजछे नेवनेमाहानबलांछे  
 नेजेमजेमएनोपरीचयविशेपेराखेतेमतेम एनोरसमा  
 कडवोथाय अनेएनोवीपाक माहाकटुकप्रगटे माटेजे  
 त्मार्थीमुनिश्वर अथवा सर्वेभव्यजीवोनेकहूछुके एथ  
 सदाएवेगलुरेहेवुं एध्यान नकरवु अनेजेथकिआत्मा  
 र्मलथाय नेपोतानुमुलस्वरुपप्रगटे एवुध्यानकरवुं सं  
 र्णनिर्मलध्याननआवे तोपणद्रव्य क्षेत्र काल जाव जो  
 तेशुभआवनाजाववी पणआत्मानिर्मलकरवानीरुचीहो  
 तो पोतानीसत्तानेआलवनलेइनेध्यानकरवुं नेतेथकी  
 रपेक्षपणेप्रवर्तवु तेशुनलेस्यानुलक्षणछे॥  
 हवेधर्मध्यानकहियेछिये ॥ धर्मव्यवहारक्रियारुपतेनि  
 तकारण एवाहारनुछे पणधर्मजे श्रुतज्ञान तथाचारीत्र  
 र्म तेउपादानकारणछेतेनुसाधन धर्मतथारत्नत्रयी चेद

पणोउपादानधर्मछे तेनेशुद्धव्यवहार उत्सर्गानुजायीछे  
 अथवा अपवादधर्म तथाऽनेदरत्नत्रयी तेध्यानशुद्धकहि  
 ए निश्चयनयेतेउत्सर्गधर्मछे जेवस्तुनुसत्तागत शुद्धपर  
 णाम स्वगुणप्रवरतीकरतादिक अनंतानंदरूप सिद्धअ  
 वस्थाएरह्योते एवंभुत उत्सर्ग उपादान शुद्धधर्मछे  
 तेधर्मनुज्ञापणरमण एक थिरतापणे चेतनतन्मयप  
 णानोउपयोग एकत्वनुचितवबु ते धर्मध्यान कहिये  
 हवेते धर्मध्यान एवजाणीने पछी चार जावनाने ध्याइये  
 ज्ञानभावना॥१॥ दर्शनजावना ॥ २॥ चारीत्रजावना ॥ ३॥  
 वैरागभावना॥४॥ हवेएचारनांलक्षणकहिएछिए ज्ञान  
 भावनाथकीनिश्चलपणुथाय एटलेपरवस्तु साचीजासे  
 नहि पोतानास्वभावमा स्थिरतापणुआवे नेदर्शनभाव  
 नाथकीमुझायनहि एटले मंतर तंतर देवदेवीना चम  
 त्कार परमुखदेखीसाचुमानेनहि जाणेकेएसर्वपरजावछे  
 कृत्रिमवस्तुछे तेसर्वेअसतछे नेअकृत्रिमवस्तुजे आत्म  
 स्वरूपप्रमुख सर्वे सत छे चारीत्रभावनाथकि पुर्वकृत  
 कर्म नीर्जरे नवांकर्म नउपारजे वैराग्य जावना थकी  
 स्त्री आदीनोसंग तथापुद्गलीकनोसंग एटले एपरवस्तुनो  
 संगसुखेतजवुंथाय संशयमात्रतेनेनहोय एचारेजावनानु  
 फलअनुक्रमेकहीनेदेखाड्यु हवेएविरीतनीजेजावनाजा  
 वे अथवाएवीजावनामांजेनुचितथीरथयुहोयतेधणीध्या

नकरवामांधीरपणुपामे माटेतेवाप्राणीजेछेतेध्यानकरवा  
 नेयोग्यछे बीजावाकीरह्यातेध्याननेअयोग्यछे शामाटेके  
 मनछेतेअतिशेचचलछे तेचपलतानेलीधेकरीनेजितायन  
 ही शत्रुनुशैन्यलाखोहोयतो तेनेजीतवाने पुरुपसमर्थथाय  
 छे पणतेवोपुरुपमननोनिग्रहकरवासमर्थनथइशके शामा  
 टेकेमनतोपवननीगोडेहाथमांआवेनहि तेथीमनजीतबुघ  
 णुकदुर्धरछे एवातमाकाइसशयनहि पणआत्मारथी एतो  
 अवश्यएवाचपलमननेपणजीतबुजोइए तेशीरीतेजीताय  
 तेनीरतरएनोअभ्यासराखे शब्दादिककोइनोकानेनपडे  
 एवीवस्तीमाएकातध्यानकरे नेवैरागेकरीनेमनवशकरे ए  
 मकरता करतामनवश्यथाय अनेजेधणीनुमनवश्यनथी  
 थयु तेपुरुपकइध्यानकरवासमर्थनथाय अनेजेवारेध्यान  
 दशानआवेतेवारेमुक्तिक्याछे एतोध्यानेकरीनेछे माटेम  
 ननेवश्यकरवानोउद्यमकरताथकां अभ्यासेकरीनेध्यान  
 दशापामवीसुलजथाशे जेजेपदार्थ देखवामाआवे तेते  
 सर्वे बाहाजपदार्थकहीए तेनोविश्वासनराखे तेतृश्रा  
 सरवनीछोडे तेधणीअभ्यासकरवाजोगछे तेशुद्धजाववा  
 लाने, वस्तीकेबीजोइए तेकहिएछिए के वस्तीकेहेता उ  
 पासरानेविशे स्त्रीनोरेहेवासनजोइए पशुकेहेता ढोरन  
 जोइए कलीवकेहेतां नपुशकनजोइए बीजामाढाआचा  
 रनाकोइनजोइए एवीवस्तीनेविशेमुनीनेरेहेवुं ध्यानवेला

ए विशेषेकरीने एवीवस्तीजोइए एवुआगममांपरमा  
 त्माएकह्युछे हवेजेनुचित्तीरवेठेलुछे मनवचनकायाना  
 जोगवश्यंछे तेवाआतमानाधणीने गाममांरह्यातोपणठी  
 कजछे वनमांरह्यातोपणठीकजछे एटलेतेनेकांइ वननोने  
 घरनो बाहाधएकेनोछेनही तेवामुनीश्वरनेतो ज्यांपोता  
 नाचित्तनेसमाधानरहे नेपोतानाउपयोगथीनचूके तेवेठे  
 काणेरहेवुं नेध्यानकरवुं जेजेस्थानकनेविशेजोगथीररहे  
 छे तेजकालपणरुडोजाणवो एटलोदिवश रात्रिपोहोर मु  
 हुरत घडी पल जेध्यानमांजाय तेवेलाधनकरीनेमानवा  
 नीछे तेनेकांइ कशविलानुनिमछेनहि वलीमुनीनेजेश्रव  
 स्थाएकेहेतांजे शोचाशोचपणुकईविचारवानुंछेनहि तेमा  
 सर्वस्थानकनेविशे शुभाशुभकांईजोवुंनहि ज्यांपोताना  
 ध्याननी व्याघातथायतेतजवाजोग बाकीसर्वथानकने  
 विशे जेमुनीश्वथीरचित्तवालाछेते बेठां अथवा सुतांध्या  
 नकरे जेद्रव्यक्षेत्रकाल जावना श्रवस्थाननेविशेरह्याजे  
 मुनीतेने कशीएवातनो नियमछेनहि जेनित्यपुणेजोगने  
 विशेषीररह्याश्रवा त्यारेतेनेकरणीशीरहिकेवांचनापुछना  
 परीअटना अनुपेक्षा श्रेचार ॥४॥ धर्मनांआलबनछेअने  
 तेवापुरुपने अवश्यश्रजकरणीछे श्रवीखरीवस्तुनु जेने  
 आलबनहोयतेप्राणी कठणमांकठण थानकहोय त्यांप  
 एचडे तेमतेवाआलबन वालाप्राणी ध्यानरूपीमेडीश्रे

રુઢીરીતેચડે શામાટેકેઆલબનગ્રહેવાના આદરથકીપ્રગ  
 થયોજે ગુણતે થકીવીધનમાત્રનોક્ષયથયો તેનાજોગથ  
 કીકરીનેધ્યાનરૂપીયાપર્વતઉપર સુખે સુખે ચડતાં જોગિ  
 શ્વરનેકોઢરીતનુશ્રવણનથાય અનેકેવલીપરમાત્માનેતો  
 જોગનોરોધકરવો તેજધ્યાનકહ્યુછે જિનમતનુતોએજપ્ર  
 માણછે અને અનેદર્શનવાલાતો જેનેજેનીનજરમાંઆવે  
 તેમસમાધાનકરેછે તેઉપરકાઢપરતીતથાયનહિ એવીરી  
 તેધ્યાનનુસ્વરૂપજાણીનેઓલખે તેધ્યાનકરવાયોગ્યહોય  
 તેધર્મધ્યાનના॥૪॥ ચારપાયાછે આજ્ઞાવીચય॥૧॥અપાય  
 વીચય॥૨॥વીપાકવીચય॥૩॥સંસ્થાનવીચય ॥૪॥ તેમંધ્યે  
 પ્રથમઆજ્ઞાવીચયકહિએછીએ જેવિતરાગદેવની આજ્ઞા  
 તેહેતકરિમાને સદ્ગહે એટલેભગવંતે સ્વદ્રવ્યનુ સ્વરૂ  
 પ્રદેશાડયું તેસાતેનયેકરીચારપ્રમાણેકરીચારનીક્ષેપેકરી  
 ઇત્યાદીકજેનારૂયુછે તેમંધ્યેપાચદ્રવ્યઅજિવજાણીનેતજ  
 વાકહ્યાછે એકઆત્મદ્રવ્ય શુદ્ધઆદરવાજોગછે  
 સ્વરૂપનેઓલખાણનેવાસ્તે ૨૫ ૧૫૬  
 પક્ષ નીશ્ચય વ્યવહાર

त्रयधर्मध्यानकहिए ॥१॥ हवेबीजोपायो अपायबीचयक  
 हिएछीए॥ अनेकसंसारजीवकर्मनेवशपड्या संसारमा  
 हेदूखीथायछे शायकिके अज्ञान राग द्वेष कषाय आ  
 श्रव तेनेवशपड्यातेदुखीयाछे पणहेचेतनतुंतोहवे जांण  
 पुरुषथयो एवस्तुतेपरजांणी माटेएवस्तुताहारीनहि तुं  
 तोचेतनछे नेएजडछे हवेतारुंशुछे नेतुंकेवोछे तेकहिए  
 छिए अनंतुज्ञान अनंतुदर्शन अनंतुचारीत्र अनंतवीर्य  
 मयतुंछे बलितुशुद्धछे बुद्धछे अविनाशीछेअजछे अनादि  
 छे अनंतछे अक्षयछे अक्षरछे अनक्षरछे अचलछे अकं  
 लछे अमरछे अगम्यछे अनामीछे अकर्माछे अवंधकछे  
 अनुदयछे अनुदिरकछे अजोगीछे अजोगीछे अरोगीछे  
 अभेदीछे अवेदीछे अछेदीछे अखेदीछे अकखाइछे अस  
 खाइछे अलेशि अशरीरी अनाहारिछे अव्याबाधछे अ  
 नअवगाहिछे अगुरु लघुछे परिणामिछे अतेद्रिछे अप्रां  
 णिछे अयोनीछे असंसारिछे अमलछे अपरंपरछे अ  
 व्यापीछे अनास्त्रातिछे अकंपछे अवीरुधछे अनाश्रवछे  
 अलखछे अशोकिछे असंगीछे अनाकारछे अमुर्तिछे लो  
 कालोकज्ञायकछे एवोसुद्धचिदानंदमाहारोआत्माछे अ  
 बुजेअेकाग्रतारुप तन्मयपणेरमण तेनेध्यानकहिअे अ  
 अपायबीचयधर्मध्याननोबीजोपायोजाएवो॥२॥  
 हवेबीजाकविचय त्रिजोपायो कहियेछीये हेवोआपणो

आत्मावितरागपरमात्मासरीखो ' सिद्धनोसाधर्मिछे ते  
 आसंसारमांकेमखुत्योछे तेस्वरुपविचारता एमजासनथयु  
 जेपरायोसगाकिधो तेमोराचीमार्चारह्यो तेथिकर्मनेवशप  
 ड्योदूखीथाउछुतेकर्मनोविचारकरेजेकारणज्ञानगुणतेज्ञा  
 नावरणीकर्मैदाव्योछेजावतविर्यगुणअतरायकर्मैदाव्योछे  
 एमआठकर्मथीजीवनाआठगुणदबाणाछेतेथीआससारने  
 विपे जीवनेजन्म मरणअनंताकरवापडेछे नेसुखदूख पो  
 तेपोतानाकिधेलाकर्मनाछेतेसुखउपरराचवुनहि एशुभक  
 र्मनाउदयथकीछे दूखउपन्येशोचकरवोनहि एअशुभकर्म  
 नाउदयथीछेएवनेपुद्गलीकभावछे हेमाआत्मीकजावछेन  
 हि वलीएकर्मनुस्वरुपविचारवु तेकहियेछिये प्रकृतीबंध  
 १ थितिबंध २ रसबंध ३ प्रदेशबंध ४ एच्यारबंधना  
 धानकविचारवा तथाउदयउदीरणासत्तातेनास्वरुपनुचित  
 वनकरवु तेएकाग्रतापरणामेवरते तेविपाकविचयधर्मध्या  
 ननोत्रिजोपायोजाणवो ३ हवेसस्थानविचय चौथोपायो  
 कहियेछिये त्याउत्पात वय ध्रु काल जावादीविचारे परे  
 जायलक्षणेकरी जुदाजुदाजेदे नामथापना द्रव्यभाव  
 नेदेकरीने चउदराजलोककेवोछे उचपणे चउदराजछे  
 तेमध्येसातराजनीचोछे तेनेअधोलोककहिये अनेविचा  
 रे अठारसेजोजन मनुष्यलोकछे तेनेतरीछोलोककहिये  
 तेउपरे कइंकउणोसातराज उर्ध्वलोकछे तेमध्येदेवता

विमानिक तेउपर सिद्धशल्या सिद्धक्षेत्र सिद्धजिववर्तेछे  
 एमलोकनुमानछे एलोकसंस्थाननुचिंतन विशेषेछे शा  
 माटेके अनंताकालमांआपणेजिवे संसारमांभमतां सर्व  
 लोकमां जन्मरणकरी फरगोछे हेवोजेलोकस्वरूप तथा  
 लोकनेविशे पंचास्तीकायनुअवस्थान तथा प्रणमन द्र  
 व्यगुणपरजायनुअवस्थान त्यांपोतानाकर्मनो कर्ताभो  
 का आत्माछे पणतेआत्माकेवोछे अरुपि अविनासी उ  
 पयोगलक्षणेकरीयुक्त एवोमारोआत्माछेएवीरीते एका  
 ग्रतापणे विचारवुं तन्मयपणे प्रणमवु तेध्यानते संस्था  
 नविचय धर्मध्याननो चोथोपायोजाणवो॥४॥ हवेसंक्षेपथ  
 की धर्मध्याननुलक्षणकहियेछिये हवेकर्मजनितसमुद्रव  
 खाणीएछिये एटलेकर्मकरी प्राप्तथयोएवोजेसमुद्रजन्म  
 जरा मरण रुपजलेकरीसंपूर्णभरेलोछे नेमोहरूप मोटा  
 भमरापडीरह्याछे नेकांमरुपवडवानलनामाअग्नी रही  
 छेअनेकखायरुपीयाचारपतालकलसाछे तेमधे आशारु  
 पीयो मोटोवायुतेणेकरीनेभरेलोछे माठावीकल्हरुपीआ  
 जेकलोल मोटाउछलीरह्याछे ओवोमाहामोहरुपउधतज  
 वसमुद्रकह्योछे हवेमनमाहे वीश्रातकेहेतां हरखशोकनुथा  
 वुंतेरुपणीवेलतेमांहेपड्यो तेनेनिकलवुघणुकठणजाणवू  
 वलीत्यां जाचनारुपशेवालनोसमुहघणोछे अनेदुखेकरी  
 नेपूर्णथायओवोजेविषयसुखतेसमुद्रनोमध्यजागछे अज्ञां



नरुपीवादलानोअधकारघणोव्यापिरह्योछे आपदारुप्र  
 णी वीजलीपडवानोभयघणोछे कदाग्रहरूप पवनअद्भुत  
 वाइरह्योछे वलीत्या विवीधजातीनारोग तेनोजेसंबंधते  
 रुपीया मच्छ कच्छादीक जलजीवघणाउच्छलीरह्योछे  
 वलीत्याजेसमुद्रमाहे पर्वतछेतेकहीअछीअ चंचलतारुप  
 सुनपणारुप गर्वपणारुप जेजेदोपतेतेपर्वतमोटा जीहां  
 अजवसमुद्रतेनेविचारवुं हवेतेवोजेजवसमुद्रतेनेतरीने  
 पारपामवानोउपायकहिअछीअ ज्यांसमकीतरुप दृढवं  
 धनवांधेलु अढारहजार शिलग तेरुपीयापाटीआं ज्यां  
 जडेलांछे त्याज्ञानरुपीया नीर्यामक अज्ञाननाचला  
 वनाराछे सवररुपीकीचकेहेतां तेलेकरीनेपाटीयांना आ  
 श्वरुपछीद्रनेपूरचाछे जेहेनोमनोगुप्तीरुप गुप्तसुकान  
 तेणेसमुचाले आचाररुपमडपेकरीदीपतुं नेउत्सर्गने अ  
 पवाद अवे मार्गछे जेहेने हेवुजेवाहाण तेनेवीशे सुजटनुं  
 सेन्य चडयुंतेकोण जेशुद्ध अधर्वासाय रुपीया घणां  
 बलवंत-हेवा शुजटछे वली तेवाहाणनो कुवो जलाजो  
 ग रुप थजछे तेथंजउपर थापेलो एवो जे शड बहा  
 णनेचलावेएवो वेगेभवसमुद्रने पारपमाडेएवोउजलनी  
 मेल अध्यात्मरुपीयोशड ज्याचडावेलोछे हवेएशडरुप  
 अध्यात्मथकीप्रगटथयोजे तपरुपीयोजेपवन अनुकुलवा  
 तोथको चालवानेवेगेकरीने सवेगरुप तेणेकरीनेचालतु

थकुवहाण वेरागमारगमांहे हेवुजेचारीत्ररूपीउझाहाज  
 महावेगेकरीनेचाल्युजायछे तेनीमांहेलीकोरे महामुनी  
 राजबेठाछे महारीधीनाधणीछे तेमनीआनित्यादीकजे भ  
 लीभावनाओ तेरुपणीपेटीपोतानी तेमध्येज्ञानरूपीयां र  
 लजरेलांछे तेपोतानीपासेराखेलीछे हेवीरीतेजेमुनीश्वर  
 प्रवरतेछे तेधणी निर्विघ्नपणे मुक्तिरूपीया नगरनुराज  
 सुखेसुखेपामे हवेहेवीरीते मोक्षरूपनगरे जातांथकां एक  
 संसारनीमांहेलीकोरे मोटोएकपल्लीपतीछे तेनुनाम मोह  
 राजाकेहेवायछे तेसर्वक्रोधादीकजील तेनोएराजाछेते  
 माहाजोरावरछे ईंद्र चंद्रनागेंद्र तेपणएनेजीतवासमंर  
 थनथी एवोजोरावर तेनेखबरपडी जेआचारित्ररूपीया  
 झाहाजमां ज्ञानरूपियांध्यानथीजरेला मुनीमाहेवेठेलां  
 तेमोक्षनगरेजायछे तेवीखबरसांजलीघणोक उदाशथ  
 यो विचारवालाग्योके आपणासंसाररूपीयानाटकनोउ  
 छेदथायछे अनेआपणीरिद्धिनोनाशथायछे एमघणोक  
 शोकातुरथइनेवेठो चितारूपीयाकोठारमांपेठो त्यांएवो  
 विचारउत्पन्नथयोजे कंगालथइनेवेशीरहेतोकिंकामवन  
 शेनही माटेउद्यमकरु अनेजइनेयुद्धकरीने एरिद्धिछेतेव  
 धीएलेइआवुं अनेएजीवने लेइआवीनेपाछोसंसारमांक  
 बजकरु एमविचारी पोतानोदुरध्याननामाझाहाइनोजे  
 टंडेल तेनेतेद्वार्वीनेकहुंकेआपणुं दुरबुद्धीनामावाहाण

सग्रामनेविशेवेशीनेलेइजवानूछे तेतईयारकरोबीजांदुष्टा  
चारप्रमुख झाहाजछेतेसर्वेतइयारकरो त्यारपछी पोता  
नाजेयोदा राग द्वेश प्रमुखनेकह्नुके आपआपणीसेना  
लेइनेतइयारथाओ त्यारेतेसर्वेपोतपोतानाशुजट सेना  
ओसजकरी वाहाणमावेठा भवसमुद्रमातेवाहाणवलवी  
ने लडाइउपरपोहोच्या तेवासमानेविशे धर्मराजानासु  
जटो चारित्ररूपीआझाहाजनेवीशेथीरता रूपीआमंडप  
नेविशेवेठाहता तेणेमोहराजानुसैन्यआवतुंदीठुं देखीतेतु  
रतउठीसजथइने रणमंडपनुमीएआवताहूवा तत्वचिं  
ताप्रमुखजेवाहाण तेलेइनेसर्वेसजथया पछीमोहराजा  
साथे मांहेमाहे युद्धकरवालाग्या त्यारेसम्यक्दर्शनप्र  
धाने मिथ्यात्वप्रधानने अतदशाएपोहोचाड्यो केवोमा  
हाजोरावरहतो मोहराजानोमोटोशुभट माहावीखमका  
मनोकरनारो तेवाप्रधानने शेजमाएकलीलाएकरीनेह  
ण्यो हवेजेमोहराजानोजेरणस्थभतेनेजइनेरोकीलीधो हे  
वोजेउपसमनामाशुजटतेणेकपायादिकचोरटाओसर्वनेव  
श्यकरया नेशीयलसुभटे कद्रपचोरनेजीत्यो अनेवैरागसु  
जटे हास्यादिकखटनेजीत्या हवेश्रुतज्ञानजोगादिक सुभ  
टतेणेनिद्रादिकसुभटोने हण्या धर्मध्यान शुक्लध्यान वे  
सुजटे आर्त रुद्र एवेसुभटोनेहण्या इंद्रीनीग्रहसुजटे अ  
संजमचोरनेहण्यो क्षयउपसमयोदे दर्शनावरणीचोरोने

हण्यो बलीअशातारुपसैन्य मोहराजानुं घणुहतु तेसर्वे  
 पुन्यउदययोद्वाना प्राक्रमथकीनाठुं हवेजेद्रव्यस्वरुपहा  
 थीउपरवेठी रागरुप सिंहेकरीनेसहित हेवोजेमोहराजा  
 पोतानारागकेसरी पुत्रनेलइने लढाइउपरपंडे आव्यो  
 त्यारे धर्मराजा श्रद्धारुप श्रष्टापद वाहन उपर बेशीने  
 साथेज्ञानरुपपुत्र भारंडपक्षीरुपलइने पोतेचढ्योत्यांमो  
 हरांजानेहण्यो त्यांसर्वमोहराजाना सैन्यनोक्षयकरी नी  
 कंदनकरयुं तेवारेतेमुनीराजमाहाआणंदने प्राप्तथया ध  
 र्मराजानापसायथकी पोतानुइछीतकाजथयुं तेवारेतेसां  
 धुमाहा व्यवहारीयाथया चारेदेशनो वेपारकरवालाग्या  
 तेमनेकोइरीतनो हवेजयरह्योनहि एवीरीतेपोतानामन  
 नीमाहेलीकोरेबंनेसैन्यनुंस्वरुपविचारवुं इहांबाहारनोको  
 इचोरनथी तेमराजाएकोइनथी पोतानास्वरुपनीमाहेलि  
 कोरेविचारीनेजुवेतोजासनथाय केमकेस्वरुपानुजायीपणे  
 प्रवर्तेतो धर्मराजानापक्षनीझीतसमजवी नेपरानुजायी  
 पणेप्रवर्तेतो मोहराजानापक्षनीझीतजाणवी एमपोता  
 नेअंतरमाबन्नेस्वरुपविचारवानांछे परअनुजायीए प्रवर्त  
 वुतेबंधछे स्वअनुजायीएप्रवर्तवुतेथि मुक्तिछे माटेमुक्तिने  
 बंध सर्वेपोतानाअंतरमांहेछे एवीरितेधर्मध्यानमांपेसवा  
 नुएलक्षणथकीपामे एवाविजाएपण आगमनेविशे पदा  
 र्थनासमुहकहेलाछे तेपोतानेविचारीलेवा जेमुनीइंद्रीयो

ने तथामननेझीतिनेनिर्विकारबुद्धिवालोथाय तेधर्मध्या  
 नध्यावावालोछे अनेतेहनेजधर्मध्यानध्याताकहिए बलि  
 संतदतपणतेनेजकहिए ज्ञाननुलक्षणएमजछे थिरभावे  
 रहेतेनेसर्वघटे संतोपीथइनेआत्मामाथीरभावग्रहे तेनेप  
 रिज्ञावंतकहिए तेनेजध्यानीकहिए एधर्मध्याननुलक्षण  
 कहु एधर्मध्यानछठागुणठाणायी तेआठमागुणठाणासु  
 धीहोय बलिकेटलाकआचारजकेहेछेकेचोथागुणठाणा  
 थितेआठमागुणठाणासुधीहोय केटलाकआचारजकेहे  
 छेकेचोथागुणठाणाथीते सातमागुणठाणासुधीहोय पछी  
 तत्त्वतीकेवलीगम्यछे पणचोथेगुणठाणेजोधर्मध्यान न  
 होयतोसमकीतरहेनहि माटेएमसमज्यामाआवेछेकेचोथे  
 गुणठाणेधीजधर्मध्यानछे तेसातमागुणठाणासुधीछे ने  
 आठमे गुणठाणेतो शुद्धध्यानआवे एवुभासनमाआवे  
 छे पछीतीकेवलीजाणेतखरुंछे एटलेएधर्मध्यानकहु हवे  
 एठेकाणेबीजापण चारध्यानकहेलाछे तेकहिएछिये पद  
 स्थ॥१॥पिडस्थ॥२॥रूपस्थ॥३॥रुपातीति॥४॥ हवेएपद  
 स्थध्यानकेहेताजे अरिहतादीक पाचपदतेनाजेगुणतेवि  
 चारी पोतानाआत्मसरूपमामेलवीलेवा तेगुणसर्वपोता  
 नाआत्मामालाधे तेगुणनुध्यानकरवु शमाटेके अरि  
 हंतादिकपदमां नेमाराआत्मामां कश्योभेदछेनहिमाटे  
 तेनुध्यानकरवु तेनेपदस्थध्यानकहिए हवेबीजुपिडस्थ

ध्यानकहिएछीए पिंडकहेतांजे शरीरनी मांहलीकोरे  
 असंख्यातपरदेशे नीर्मलआपणो आत्मा अनंतगुणे  
 करी व्यापिलोएवोमांहेरह्योछे तेसिद्धपरमात्मा सरखो  
 जछे इत्यादिकविचारवुं अथवासिद्धनीबरोबर गुणने  
 मेलववा एपिंडस्थध्यानकहिए हवेरुपस्थध्यानकहिएछि  
 एरुपकेहेतांजे आशरिरादिकमाहेरह्योछे एवोमाहारोचे  
 तनपण पोतेतोस्वभावेअरुपीछे अनंतगुणीछे वलीरुप  
 शब्दएवोजेकेहेतां वस्तुनुजेमुलस्वरुप सत्ताएछेएवुं तेने  
 पणरुपीकहिए हवेएवोआत्मस्वरुपतेने अवलंबीनेध्या  
 नकरवुं एटलेआत्मानुरुप एकत्वतापणे एवुंजेध्यानकरवुं  
 एटलेमुलस्वरुपमांजरमणतारहे एटलेपरभावनुत्यागीप  
 णुं स्वभावनुंजोगीपणुं एवीरीते एकत्वतापणे तन्मयपणे  
 जेरमवुतेत्रणेध्यानधर्मध्यानमांगवेरुयांछे एमुक्तिदातारन  
 यी मुक्तिनाकारणीकएछेएधर्मध्यानपराएदेवलोकनीगती  
 आपे हवेजेचोथुध्यान रुपातीतनामेछे तेशुकलध्याननाघ  
 रनुछे पणइहांसमुदाएभेगुआव्युंछे तैथीधर्मध्यानमलतुं  
 कहियेछिये पणएध्याननेशुकलध्यानभेगुंसमजवुं हवेते  
 रुपातितध्यानकहियेछिये रुपातितकहेतांजे रुपथकि  
 अतित एटलेपुद्गलादिकरुपथकिरहितपणुं स्वस्वभावी  
 कआत्मा, कर्मरुपरजेकरीनैरहित निर्मलसंकल्प वि  
 कल्परहितअनेद

॥ ॥ ॥ निर्मलचिदानंद त

त्वामृत असर्ग अखंड अनतगुण परजायरूप आत्म  
 स्वरूपनुंध्यान तेरुपातितध्यानजाणवु इहांमार्गणा गु  
 एठाणा नयप्रमाणपक्ष मतीआदिकज्ञान क्षयउपसमभा  
 व ॥ एसर्वेछाडवाजोगथया तेएठकाणे खपमांआवेनहि  
 ईहांतोगुणनुंकर्ताजेध्यानते लेवाजोग सिद्धपरमात्माना  
 मुलगुण तेरुपआत्मस्वरूपनेंध्यावे ईहांपरपक्षकशोयन  
 लाधे मुक्तिपामवानुकारण एजध्यानछे माटेजेवुंमुक्तिमां  
 स्वरूपछे तेवुंजआत्मानुस्वरूपध्याववुं एटलेएरुपातीत  
 ध्यानजाणवु हवे एघर्म ध्याननी भावनाओ च्यारछे  
 तेकहिएछिए मैत्रिभावना १ प्रमोद जावना २ मध्य  
 स्थजावना ३ करुणाजावना ४. हवेतेमध्येप्रथममैत्रि  
 जावनाकहिएछिए मैत्रिकेहेतांसर्वजीवसाथेमित्राइपणां  
 नाजावनी चितवणाकरवी जेमपोतानामित्रनुजलुचाहेछे  
 अनेतेनेरुडुकरवानेतेनेखुशबरस्तीघणीरेहेछे तेमसर्वजी  
 वनुकल्याणथवानीधाहनाकरवी कोइजीवनुजुडुचितववु  
 नहि एसर्वजीवनुहितथायहेवीचितवनाकरवि एटलेसर्व  
 जीवउपरहेतबुद्धि जेसर्वजीवसुखीथाय सर्वजीवनुकल्या  
 णथाय नेमुक्तेजाय अथवासर्वजीवधर्मपामेतोसारुं एम  
 सर्वजीवनामित्रभावेकरीने कल्याणनुचितववु पणकोइनु  
 अकल्याण चितववुनहि एवि रितनीचितवणाहोयतेवार  
 मैत्रिजावनाजाणवी १ हेवेविजीप्रमोदभावनाकहियोछि

ये प्रमोदकेहेतां महाहरंखनुथानकपांमवुतेशायकीजे गु  
णवंतनेदेखीनेअथवाज्ञानादीकगुणउपरघणोरागरेहे हवे  
जेगुणवंतकेहेतां जेपोतानाधर्माचार्य अथवाबीजापणज्ञा  
नजोगीश्वर महामुनितेवानामेलापथीमहाआणंदप्रगटे  
अहोमहारांधनजाएगजे आजमूनेमहाराधर्माचार्य अथ  
वाज्ञानीपुरुषोनोसमागमथयो आजमनेतेमनादर्शनथयां  
अहोहुतेमनीशेवाज्जिकरीश महारांसर्वपापगयां आज  
महारे मोटोपुन्यनोउदयथयोवलीतेगुरुकेवाछे केअनंतगु  
णनाधाणिछे मोक्षनासुखनादातारछे मोक्षमारगनुकारण  
एजछे वलीतेगुरुकेवाछे तत्वभोगीछे तत्वबीलासिछेतत्वा  
श्रीयछेस्वपरनाजाणछे परभावत्यागीछे हेवाजेकोइमहा  
राजे धर्माचार्य साक्षातआकाले परमात्मारूप अहोएम  
नुंउपगारतापणु जे अज्ञानजीव अजाणतेवाने बहू  
रीतथी उपदेशकरीनेधर्मपमाडे मार्गमांलाबीमोक्षपोचा  
डे दूरगतथीपडतावारे एवाजेगुरुजीनो माहामोटोउप  
गार एउमगार विजाथकिनिपजेनहि, हेवाउपगारीना गु  
णओशींगणथवानु कोइरितथीदिसतुनथि कोटानकोटि  
जवसुधि सर्वरितेकरिने शेवाज्जिकि आदेदेइनेकरे तोपण  
गुणओशींगणनथायमाटे, हेवागुरुनोमनेसमागममल्यो  
छे धन्यछेमहारांभाएग धन्यआजनोदहाडो धन्यघडीव  
न्यवेला अथवास्यादवादधर्मनोजोगमल्यो ज्यांआत्मस्व



रुपनीचरचा वारताथडरहिछे हेवोसमागमज्यामले त  
 पणघणो आणदमाने, एमगुरुवादीकनामलवाथकी ए  
 मनमांविचारेजे आजमनेचिंतामणीरत्नकोटाकोटिमले  
 आजमहारामनना मनोरथसर्वेफल्या एवो घणो आ  
 द पांमतो बलीमनमां एवविचारेजे आवांकारणमु  
 ने मलेलाछे तेनोविरहेपडेनहि मारेअहोनिश एवाका  
 एनोसमागमरहेतोघणुसारु एमआनंदमय चितवतोव  
 तेनेप्रमोदभावनाकहिये २ हवेत्रिजीमध्यस्थभावनाका  
 येछियेएटलेमध्यस्थकेहतांसमपरीणाम एटलेधर्मवतपु  
 प अथवाज्ञानिपुरुषअथवासरस्वीसरधावालाएवाजीवो  
 देखीनेतेउपररागउपजेतथामिथ्यादृष्टी कुमार्गीहिसक  
 रुपो तेउपरपण तेवाओतेमनाधणीने तेवादेखीने दयाउ  
 जे पणतेनाउपर द्वेशनउपजे हेवोमननीमांहेलीकोरेवि  
 चारथायजेएविचाराअज्ञानछे तोहूएनेउपदेशदेइने हे  
 युक्तियेकरीने एनेहूमार्गमांलावुं एधर्मपामेतो घणुसा  
 रु हूतेनेसार्गमालावीशकुतो बहूजसारुथाय नहितोएव  
 चारा अनाथजिव नर्कादिकचारगतिमारखडशे एवीर  
 तेविचारी तेनेउपदेशप्रमुखदेवो एमउपदेशदेतां कदा  
 पिमार्गमा नआवेतो पण एजीवउपर द्वेशकरवोनहि  
 एमर्चातववुं के एवचाराअज्ञाणछे नेसंसारबोहोलोबा  
 कीजणायछे माठाकर्मनाउदये करीने धर्मपामीसकतोने

थी एमसमपरिणामराखवा एवीरीतनीचीतवणा तेनेम  
 ध्यस्थजावनाकहिये ॥३॥ हवेचोथीकरुणा भावनाकहिये  
 छिये करुणाकहेतांदया सर्वजीवउपरराखवी सर्वजीवआ  
 णणा सरखाजाणवा पणकोइजीवनेहणवानिहि तथाकोइ  
 जीवदुखीहोयतो तेनाउपरपणकरुणाकरवी तेजीवनुदुख  
 टालवानीजोपोतामांसामरथीहोयतोतेनुदुखटालवु पण  
 बीजाजिवनेबाधापीडानथायतो तथाधर्महीणहोयतोतेनी  
 पणकरुणाकरवी जेअहोंआवचाराधर्म पाम्यानहि एसं  
 सारमारखडशे नेमहादुखीथशे ईत्यादिकचीतवना तेने  
 करुणाजावनाकहिये एटलेएचारेभावना धर्मध्याननाघ  
 रनीकहितेजाणवी.

हवेशुक्लध्यानकहियेछैये शुक्लकेहेतां निर्मलशुद्धपर  
 आलबन विनाआत्मस्वरुपने ओलखीने तन्मयपणे  
 ध्यावे एवुध्यान तेशुक्लध्यानकहिये शमाटेजे स्यांतद्यां  
 तहोय पोतानाआत्मस्वरुपने वीशेरमे तेजशुक्लध्यानजो  
 गछे केमकेसिद्धनोपणएजस्वजावछे तोसाधकनोपणस्व  
 जावएजजोइये विजेस्वजावेएवस्तूमलेनहि हवेतेशुक्ल  
 ध्याननाचारपायाछे तेकहियेछइये प्रथत्तववित्तर्कसप्र  
 विचार॥१॥ एकत्ववित्तर्कअप्रविचार॥२॥ सुक्ष्मक्रीयाअ  
 प्रतिपाति ॥३॥ उच्छिन्नक्रियानीवृत्ति ॥४॥ एचारजेदमां  
 हे प्रथमप्रथत्तववित्तर्कसप्रविचारकहियेछइये पणत्यां

प्रथमनाजे वेपायाछे, तेअप्रमतज्ञावे ध्यानथाय अनेप्रा  
 छलनावेपाया केवलनेध्यावानाछे अनेएध्याननाविश्रा  
 मनेविशे अनित्यादिजावनानोत्यागनंथाय भ्रमणारहित  
 पणेतैजावनाछे तेध्याननाप्राणजाणवा हवेएध्याननेवि  
 शेलेस्यात्रणहोय प्रथमतेजु विजिपद्म त्रिजिशुंक्लेस्या  
 एध्याननेविशेवर्ततोजिव जेदनोचजनारथाय तेतुचिन्हए  
 छेजेआगमनीसर्धाकरे एध्यानथकिउतमधर्मप्रगटे एथ  
 किस्वर्गनासुखनिप्राप्तीथाय मोटुपुन्यानुवधीपुन्यउपार्जे  
 पणएथकिमुक्तिनथाय हवेमुक्तिवारुपशुद्धध्यान तेक  
 हियेछइये त्याप्रथमसमपरिणामथार्येकपटरहितपणे जि  
 वनेमुक्तपणुधारणकर्ता शुद्धध्याननेध्यावे छद्मसंस्थपणे  
 आत्मामामनधरिनेरहे त्यारेरागद्वेषनेजिते तेधर्मीनिमु  
 क्तिथाय हवेतेपायानोविचारकहियेछइये हवेप्रथक्तंवित्त  
 कसप्रविचारनामि पेहेलोपायोकहियेछइये एटलेजिवथी  
 अजिवजुदोकरवास्वजावथीविजावजुदोकरवोप्रथक्तकेहे  
 ताभिन्नजिन्नजुदावेहेचीनाखवा स्वरुपनेविशेत्थाद्रव्यत  
 थापर्जायनेविशेप्रथक्तप्रथक्तपणेध्यानकरवुपर्जायतेगुणने  
 विशेसक्रमणकरवागुणनेपर्जायनेविशेसक्रमणकरवाएवि  
 रितेस्वधर्मनेविशे धर्मांतरजेदतेप्रथक्तवकहिये तेहनोजे  
 वित्तर्ककेहेतां श्रुतज्ञानादिकउपयोगे एटलेत्यांनानाप्र  
 कारनानयनिखेपाप्रमुखजागेकरिविचारवुएटलेएविचार

रूपश्रुतज्ञानध्यावथयु त्वांश्चर्यअक्षरजोगइत्यादिकनोजे  
 विचारतेनुमांहोमांहेसंक्रमणकरवु अथवाभिन्नजुदूकरवु  
 अथवाछद्रव्यविनागुणपर्याय तेमांजेनिगतिकेहेतांरमण  
 तथइछे ॥ एविरितेप्रथक्तप्रथक्तनोखोनोखो सप्रविचार  
 केहेतांआत्मद्रव्य चिन्नकाहाडि परद्रव्यपांचअप्रविचा  
 रजाणिदूरकरे तेसविकल्पएटलेपोतानोउपीयोग एटले  
 एकविचारचापछिविजोविचारथायैएविरितेप्रथक्तकेहेतांजे  
 निर्मलनेवित्तर्ककेहेतांजेविचार स्वपरनोजेकरवो एविरि  
 तेएकाग्रतापणे जेध्यान तेप्रथक्तववित्तर्कसप्रविचारनामे  
 शूद्धध्याननोपेहेलोपायोजाणवो हेविरितेपोतानासत्तास्व  
 रूपमांध्यावेप्रजावनोन्यागकरेएपक्षसर्वेशुद्धवेहेवारनयनो  
 छे ज्ञानथाकिभेदज्ञानकहिये ध्यानथाकिशूद्धध्याननोपेहेलो  
 प्रायो कहिये एपायावालोस्वर्गगतिपामे एपायोआठमाथी  
 तेअंगिअरमागुणठाणासुधिहोय एपायावालानेत्रणेजोग  
 उतकृष्टानुसाधनथाय एप्रथमप्रायोजाणवो हवेविजोपायो  
 एकलवित्तर्कअप्रविचारकेहेतां ते ठेकाणेपोहोच्योथको  
 जिवजेवरजे पांचद्रव्यधर्मास्तीकायादिक तेनागुणपर्या  
 यतेकांडइहांध्यानमाआवेनहि तथाअनताजिवरह्या तेनो  
 पणविचारलावेनहि त्याएकपोताना आत्मानागुणपर्या  
 यसाहित एकलपणेध्यावे एटलेआत्मद्रव्यज्ञानादिकगुण  
 पर्याय एसर्वमलिने एकआत्माथायछे माटेमाहारोआ

त्मागुणपर्यायेकरिने एकरूपछे जेमसिद्धपरमात्मानुरूप  
 छे तदवत्माहारस्वरूपछे हेबुध्यानतेएकत्वपणेस्वरूप त  
 न्मयपणेआत्मधर्मअनंतानोएकत्वपणेध्यानछेपणइहावित  
 र्ककेहेतांश्रुतज्ञानावलविपणेअनेअप्रविचारकेहेताविकल्प  
 रहितदर्शनज्ञाननोसमयांतरेकारणताविनारत्नत्रयीनुएक  
 समयीकारणकार्यता पणेजेध्याननेविर्जउपयोगनिशक्तिछे  
 तेथीएकाग्रतापणे शामाटेजेएस्थानकनेविशे त्रणेजोगशु  
 द्धहोय अनेवितर्ककेहेता विचारतेपणथोडोहोय एटलेम  
 ननुचंचलपणूथोडुहोय जेमसमुद्रपवनरहितथीरथाए ते  
 ममनथीरथाय एटलेहियाविचारछे पणसूक्ष्मछे एटलेए  
 ध्यानअवधीज्ञानमनपर्जवज्ञाननोउपयोगदेता एध्यानब  
 निशकेनाहि शामाटेकेअवधिमनपर्जवज्ञानछे तेपरानुजा  
 यीछे हेनोविषयरुपिद्रव्यनेजाणवानोछेअनेआध्यानछेतेस्व  
 अनुजायीछेअनेहेनोविषयअरुपिद्रव्यनेजाणवानोछेमाटे  
 एवेनोउपयोगअन्योअन्यप्रतिपक्षीछे तेमाटेएध्यानतेश्रु  
 तज्ञानवडेजनिपजे एध्यानथकीनिर्मलकेवलज्ञानपामे प  
 णएध्यानथकिमुक्तिकोइपामेनहि शामाटेकेएपणजोगा  
 टिकग्राहिकछे तेकारणमाटेएविरितेएकाग्रहपणे एध्या  
 ननेविषेप्रवर्ते तेनेएकत्ववितर्कअप्रविचार नामेविजोपा  
 योजाणवोनेथीरपरिणामीएध्यानछे दीपकजेमपवनरहि  
 तथीरशिखारेहेतेमंसकल्पविकल्परहितमनएध्यानमांरेहे

एध्यानपर्यायरूपछे वारमागुणठाणानाअंत्यसुधीएध्यान  
छे हवेसुक्ष्मक्रियाअप्रतिपाति त्रिजोपायो कहियेछिये एट  
लेबिजापायानाअतेकेवलज्ञानपामि तेरमागुणठाणामांव  
तैं त्यांतोध्यानात्रीकपणुहोय तेवारपांछितेरमानेअंते चउ  
दमेजतांत्रीजोपायो शुक्लध्याननोआवे एककायजोगवा  
धरथकिरुंधेलाछे तथामनजोगवचनजोग समस्तरुंधेला  
छे तथाकेटलाकआचारजकेहेछेके बाधरजरोकेलाछे एवि  
रतिबाधरजोगरोकिने तथावच कायानासुक्ष्मजोगपण  
रोकिने अजोगीथयो त्यांअप्रतिपातिनिर्मलविरज अच  
लतारूपपरीणाम तेसुक्ष्मक्रियाअप्रतिपातिध्यानजाणवुं  
इहांसत्तायेपंच्यासिप्रकृतिहती तेमध्येबोतेरप्रकृतिखपा  
वानी नेवाकिनीतेररहिएतिजोपायोजाणवो हवेचोथोउ  
छिन्नक्रियानिवृत्ति नामेकहियेछिये जेजोगकायानोसुक्ष्म  
रह्योहतोतेपणरोक्योएटलेसर्वेजोगरुंध्यानेसर्वेक्रियानोइ  
हांउछेदथइगयो अनेइहांशैलेशिकर्णकरे एटलेशैलकेहे  
ताजेवोपर्वत जेमकोइपवनथकीकपेनहि तेमअजोगीमु  
नीश्वर शैलेशिकर्णपोचाथका निश्कंपपणेरहे तेरप्रकृति  
जे रहिहूती तेनोपणत्याक्षयकरीने अकर्माथाय सर्वक्रि  
यारहितथइने स्वस्वरूपप्रगटकरे एध्याननुनामससुछिन्न  
क्रिया शुक्लध्यानबिजुपणनामछे हवेएध्याननोचोथोपायो  
ध्यातांथकां शरीरअवगाहनाआवखुसर्वथकी अलगोथइ

नेमोक्षमाजाय एटले एशुक्लध्याननोचोथोपायो कह्यो हवे ए  
 शुक्लध्यानना च्यारपायानुफल कहिये छिये ते प्रथमनाजे  
 वेपायाछे ते ध्यावावालो देवलोक जायने उपरन विपायामां  
 पेहेलोजे पायो छे ते मारण छे नहि अने चोथा पायावालो मो  
 क्षे जाय नेत्रिजाने मरण छे नहि पण चोथे पाये थइने सिद्धी वरे  
 एकइ पाछा पडवाना छे नहि माटे एबने पाया अवश्य मोक्ष ग  
 तिज छे हवे एशुक्लध्यानवालो जथार्थ पदार्थ देखे आश्रवनो  
 नाश देखे ने संसार स्वरूप एजवनी परंपरानुकारण देखे अ  
 न्य पदार्थ सर्व आत्माथ किविपरितपणे जाणे एशुक्लध्यानना  
 विसामामां ए विरीते जाणे देखे तथा शुक्लध्यानना त्रणे पाया  
 माधर्म उत कृष्टि शुक्ल लेस्या जाणवि ने चोथो प्रायोजे छे ते तो  
 ले स्याये करीने रहित कह्यो छे एटले तेने वीशे ले स्या होय नहि  
 ने शुक्लध्यानवालाना जोग पण सर्वेशुद्ध होय हवे एशुक्लध्यान  
 नु लक्षण कहिये छिये अहि सक होय मोहरहित होय विवेकि  
 होय त्याग बुद्धि होय वली अवध थयो ते माटे उपसर्ग परीस  
 हथी कपे नहि नीरज्य पणे वर्ते सुक्ष्म अर्थने विशेष समझाय  
 नही नीश कपणे रहे मोहमाया नालक्षण थकि तथा सर्वस  
 जोग थकि जुदोरहे एसर्व विवेक नालक्षण जाणवां देह तथा  
 उपगर्ण नि त्याग बुद्धिये असग अनुष्ठाने वर्ते एटले उपसर्ग  
 अनुष्ठान रूप लक्षण करी वर्ते हे वीरीते जे मुनी ए लक्षण ध्या  
 ना दीकने वीशे प्रवर्ते ते ज्ञानी पणुपामे एरीते ध्याननोजे अ

नुक्रमनेशुर्धरेतिजाणीने एजपरमात्मानिआज्ञाछे हेवीरीतिते  
 आज्ञानोअभ्यासकरशे तेसंपूर्णअध्यात्मज्ञानीथशे 'ह  
 वेएध्याननो महिमाकहियेछिये केज्यांएवुपरिपक्वउत्क  
 ष्ट ध्यानपामेथके ईंद्रचंद्रनागिंद्रनीपदवी तेमुनिश्वर त  
 रखलावरोवरगणेछे शामाटेकेआत्माने प्रकाशसुखेसुखे  
 करे एवुज्ञानप्रगटे नेवलिभवनोनाशकरेएवुतेमाटे एज  
 ध्यानतेशेवो 'अनेजेकामातुरिहोय तेपणकामदशानेछो  
 डेशामाटेकेजडस्वप्नावजाणिने विषयसुखनोत्यागकरेप  
 णरागदशा छांडवितोघणीदूकरछे अनेजेध्यानवंतमुनि  
 श्वरछे तेतोपरमात्मारुपजसाक्षातदसेछे तेध्यानमांतृप्ति  
 पामिने फरीनेतेरागाडिकनवछे अनेविजाजेजिवोरह्या  
 तेनेरात्रीसर्व निद्रामांजायछे अनेध्यानदशावालानेरा  
 त्रितो 'ओछवमोछवएसर्वे सरखाआनंदमांजजायछे अ  
 नेजेससारिजीवविषयमालव्धथका जेवेलाएजागेछे तेवेला  
 ध्यानिपुर्पानेसयनकरवानुछे जेमअवडकुवानुपाणि जेमडो  
 होलायेलुवगडेलुहोय तेमध्यानविनानुमनएवुजाणवू अ  
 नेजेसर्वथकिसिद्धफलनीइच्छाराखेतो, त्यांतोध्यानरुपी  
 याघटमा मनरुपीउजलभरे तोतेनिर्मिलथाय जेमहवड  
 कूवानुजल घटमांभर्युनिर्मिलथाय तदवतुजाणवू सर्वक्री  
 यानुफलतेध्यानथीजछे, अनेध्यानतेपरमअर्थनूकारणछे  
 कदापि कोइनमनवीपयकखायनेविशेपरवर्ततुहोय तोय



पणध्यानवत चेतननेकर्मवयायनाहि वलिअतिशेअनिष्ट  
 विषयपणूहोय नेघणेप्रकारेतेउंदयनाकष्टमांपड्योथकोपण  
 निश्चलपणुनछडे तेआत्मानेविशेलीनकहिये हवेप्रगटदी  
 ठु मोक्षसुखरूपजेसूरज एवुएध्यानएटले मोक्षसुखथकिप  
 णध्यानमोटुछे वलिजेशास्त्रनाविचारथकिजे नास्तिकजा  
 वअतिशेहण्योनयि एटलेनास्तिकभावरहितज्ञानमोटुछे  
 ज्यांस्वर्गनुतेजचंद्रमाग्रहनक्षत्र तारतेमनातेजनेविशोद्विप  
 कनुतेजअल्पछे तेमध्यानेकरिनेभेदाणोछे जेनोअज्ञानरूपि  
 योअधकार तेप्राणिनेमाहाआनदरुप आत्मानुतेजतेपण  
 आत्मामाहेशोभीरह्युछे वलिप्राणिनेघणाकालनो जेसम  
 तारतीरुपणीस्त्रीसाथे विजोगहतो ते एकक्षणेकमांही  
 स्त्रीनोविजोगभाग्यो नेसजोगथयो एवोध्यानरूपियोपर  
 ममित्र अमारंपरमहेतुछे नेअमनेपरमबाहालोछे एम  
 ध्यानिपुरुपकेहेछे अनेससारमाकृत्रिममीत्रथकिशुथायह  
 वेध्याननुघरवखाणीयेछैए एटलेध्यानरूपीयुघरकेबुछे के  
 ज्याकामरूपियो तापतोछेजनहि नेशीयलरुपशितलंसु  
 गंधेजरेलि एवितोवेठकोछे ज्यावलिमोटीसमतारुपणि  
 यो तलाइयोकेहेतागादीतकिया ज्यांतेवेठोछे एटले  
 ध्यानमंदीरमां आत्माएविरीतेवेठोथको सुखपामेछे वलि  
 शीयलरुपसिहासन ज्याइद्रिदमनरुपजलभरेलांछे स  
 मतारुपीयापोलीयाखडाछे ध्यानघरमांहेपोतानी रुम्ह

तीनामास्त्रीयेतेड्योथको आत्मापरुणापेरेपुजातोथको ए  
 बुध्यानकहिये एटलेआत्मानेविशे अनेपरमात्मानेविशे  
 जेअंतरहतोतेअतरजाग्योअनेएस्थानकनेविशे पंडीतलो  
 कोनाविवाद झघडाघणाहता तेध्यानरुपियासंधीपाले  
 सर्वनाविवादझघडातोडीनाखिनेसिघ्रपणे परमात्माने ने  
 आत्मानेअनेदपणेकरिदिधा हवेअमृतरस देखाडियेछ  
 डये एटलेअजाणलोकेअमृतरस घणेकठेकाणेमानेछे ने  
 ज्ञानीलोकतोएकध्याननेविशेजमानेछे तेकहियेछैये

॥उक्तच श्लोकः॥ कामृतंविपन्नृतफणिलोके॥कक्षयिण्य  
 पिविधौत्रिदिवेवा॥काप्सरोरतीमतांत्रिदशानां॥ध्यानमेवत  
 दिदंबुधसेव्यं॥१॥ गौस्तनेपुनसिक्तासुसुधायां॥नापिना  
 पिवानिताधरविवे॥ तेरसंकंचुकमपिवेति॥मनस्याध्यानसं  
 नवध्रतोप्रथनेय. ॥ २ ॥

॥अर्थः॥ हवेजेनागलोकछे त्यांअमृतक्यांथकिहोय ए  
 तोवचाराविषमारंगाइगयेलाछे अथवाकोइकहेशेचंद्रमा  
 मांअमृतछे तोतेपणवातजासनथतिनथी शामाटेकेदिनदि  
 नप्रतोक्षिणथतोजायछे तोअमृतरसज्यांहोय त्यांक्षिणप  
 णुकेमलाघे कदापिकोइकेहेशेके देवलोकनेविशेअमृतछे  
 तेपणकांइसंजवतुनथी शामाटेकेदेवलोकनादेवपण अप  
 छरायोना रंगमारंगाएलाछे माटेत्यांपणअमृतरसनथि  
 माटेएकध्यानमांजअमृतरसछे तेकारणमाटेहेपंडीतो ए

ध्याननुजशेवनकरो एपेहेलाश्लोकनोअर्थ हवेविजाश्लोक  
 नोअर्थकहियेछइये हवेअहियाकेटलाकजिव गायनास्त  
 नकेहेता दुधमाअमृतमानेछे केटलाएकसाकरमांमानेछे  
 तेमातोरसछेजनहि केटलाकस्त्रीनाअधरनेविशे अमृतर  
 समानेछे पणतेरसतोकोइस्थानकेछेजनहि एअमृतरसछे  
 एतोअपुर्वछे तेकोइपंडीतपुरुपजाणे अनेएरसतोध्या  
 नयकिजप्रगटथाय एविजायकिनहोय एवोजेअमृतर  
 सतेनोस्वाद ध्यानिपुरुपचाखे तेसतोपनुसुख तेनेजछे  
 एटलेएविजाश्लोकनोअर्थकह्यो एविरितेजेनुप्रवर्तनहोय  
 अनेजेएशुद्धध्यानध्यावे तेधणीमुक्तिनांसुखपामे एटलेए  
 शुद्धध्यानकह्यु तथाएच्यारध्यानकह्यु एच्यारध्यानमध्ये  
 थी प्रथमजेवेध्यानआर्तध्यान तथारुद्रध्यानछे तेअवश्य  
 छांडवाजोगछे अनेधर्मध्यानजेछे तेआदरवाजोगछे पण  
 एथकी मुक्तिपरावर्तनथी पणस्वर्गनासुखमले अनेशु  
 द्धध्यानछे तेमध्येवेपायाछे तेतोस्वर्गनासुखनादातारछे  
 तेकोइकजिवआश्रीनेछे पणघणाजिवनेतोएमुक्तिनुजकां  
 रणछेशामाटेजेपेहेलोपायोआठमाथी तेदसमागुणठाणा  
 सुधीछे एटलेएत्रणगुणठाणानेविशे तोकइंमरणछेनाहिं इ  
 हांजेस्वर्गादिकगतिकेहेविते उपरनागुणठाणाने अथवा  
 निचलागुणठाणाने आश्रीनेकेहेवानुछे शामाटेकेजे मृत्यु  
 पामवुहोयतोपाछापडे नेछठेसातमेआविने मृत्युपामे

अथवाचडेतो अगिआमैंगुणठाणेजइनेमरे तोसर्वारथासि  
 द्वेजायअथवाअगिआरमेनजजायनेपाधरोवारमेजायतो  
 केवलज्ञानउपारजी अंतघडकेवलथिइ चडदमानेअंतेका  
 लकरिमोक्षजाय पणशुद्धध्याननापेहेलापायामांतो कइं  
 जिवकालधर्मपामेनाहि इहांकोइकेहेशेके जोकालगतिन  
 थिपामतातो स्वर्गगतिकेहेवानीशीजरुरछे तेनोउत्तरकेए  
 ध्यानेवर्तेछेजेआत्मा तेनोउपयोगसर्वकर्मनाशकरवाजेवो  
 नथीएटलेजेटलिएनाउपयोगनिरमणतानोसुमारजोइने  
 स्वर्गगतिकहियेछिये पणइहांमरणपामेनाहिज हवेविजा  
 पायानेजेस्वर्गगतिकहि तेनोविचारकहूछु जेएपणकोइ  
 कजिवआश्रीछे पणकाइसर्वजिवआश्रीनथी शामाटेजेउ  
 पसमश्रेणीजेजीवआदरेतेजिवअगिआमैंगुणठाणेआव्यो  
 थको मर्णपामेतोसर्वारथमिद्वेजाय नेपाछोपढेतोदशमेगु  
 णठाणेजाय तेनितोकइगतिकेहेवानिजरुरछेनहिशामाटे  
 जेएमकरतांफरिथीचडेतोमोक्षपणजाय अथवाछठेसातमे  
 गुणठाणेजतारेहेतो स्वर्गेपणजाय तेथीपणघणोनिचोउ  
 तरिजायतो नर्कादीकगतिनेविशेपणजाय माटेपडतानो  
 तोकइंनियमछेनहिहवेजेजिवउपसमश्रेणिएनचडेनेक्षपक  
 श्रेणीएचडे तेजिवदशमागुणठाणानेअंत मोहानिकर्मनो  
 क्षयकरे इहांसुधीपेहेलोपायोजाणवो हवेत्यांथकिदशमा  
 नोउठयो वारमेगुणठाणेजाय पणतेअगिआरमेसर्वध्यान

जजाय त्यातोउपसमश्रेणीवालोहोयतेजजाय हवेजेबा  
 रमेगुणठाणेगएलोजिव क्षपकश्रेणिवालोत्याशुद्ध्यान  
 नो विजोपायोध्याय तेएपायानाध्याननेविशेवर्ततेथके त्र  
 एकर्मनोनाशकरे ज्ञानावरणी ॥१॥ दर्शनावरणी ॥२॥  
 अतराय ॥३॥ अनेएकमोहनिकर्मनोनाशप्रथम दशमेगु  
 णठाणेकरेलोहतो एटलेएचारेकर्मनोक्षयथयो तेकमनेघा  
 तीकर्मकहिये एटलेघातीकेहेता आत्मानागुणनिघातकर  
 ताछे तेकहियेछिये ज्ञानावरणिकर्मछे तेज्ञानगुणनेहणेछे  
 दर्शनावरणिकर्मछेते दर्शनगुणनेहणेछे मोहनिकर्मछेते  
 चारीत्रधर्मतथासमकीतधर्म बनेनोनाशकर्ताछे तथाविरं  
 जगुणअंतरायकर्मदाव्योछे एटलेएच्यारेकर्मआत्माना  
 जेच्यारेगुणमोटाछे तेएहणताछे माटेएनेघातिकर्मक  
 हिये नेचाकीनाजेच छे तेआत्मानागुणनेहणतान  
 थी तेतोशुभाशुन छे ताराछे माटेएवाजेच्यार  
 कृष्टतिकर्म एविज्ञानचाय छे तेनेक्षपक  
 तेकोइकाजे पणइ छे तेनेक्षपक  
 तेके

अथवाचडेतो अगिआमैंगुणठाणेजइनेमरे तोसवरिथसि  
 द्वेजायअथवाअगिआरमेनजजायनेपाधरोबारमेजायतो  
 केवलज्ञानउपारजी अतघडकेवलियइ चडदमानेअतेका  
 लकरिमोक्षेजाय पणशुद्धध्याननापेहेलापायामांतो कइं  
 जिवकालधर्मपामेनाहि इहांकोइकेहेशेके जोकालगतिन  
 थिपामतांतो स्वर्गगतिकेहेवानीशीजरुरछे तेनोउत्तरकेए  
 ध्यानेवर्तेछेजेआत्मा तेनोउपयोगसर्वकर्मनाशकरवाजेवो  
 नथीएटलेजेटलिएनाउपयोगनिरमणतानोसुमारजोइने  
 स्वर्गगतिकहियेछिये पणइहांमरणपामेनाहिज हवेबिजा  
 पायानेजेस्वर्गगतिकहि तेनोविचारकहूछु जेएपणकोइ  
 कजिवआश्रीछे पणकांइसर्वजिवआश्रीनथी शामाटेजेउ  
 पसमश्रेणीजेजीवआंदरेतेजिवअगिआमैंगुणठाणेआव्यो  
 थको मरणपामेतोसर्वारथमिद्वेजाय नेपाछोपढेतोदशमेगु  
 णठाणेजाय तेनितोकइगतिकेहेवानिजरुरछेनहिशामाटे  
 जेएमकरतांफरिथीचडेतोमोक्षपणजाय अथवाछठेसातमे  
 गुणठाणेजतारेहेतो स्वर्गेपणजाय तेथीपणघणैविमांथी  
 तरिजायतो नर्कादीकगतिनेविशेपणजाय मक्तिथइचुकी  
 तोकइंनियमछेनहिहवेजेजिवउपसमश्रेणीपक्षेजाय  
 श्रेणीएचडे तेजिवदशमागुणठाणानेअत्मान ध्यानजेद  
 क्षयकरे इहांसुधीपेहेलोपायोजाणवो पाया  
 नोउठयो बारमेगुणठाणेजाय

ध्याननुजशेवनकरो एपेहेलाश्लोकनोअर्थ हवेविजाश्लोक  
 नोअर्थकहियेछइये हवेअहियाकेटलाकजिव गायनास्त  
 नकेहेता, दुधमाअमृतमानेछे केटलाएकसाकरमांमानेछे  
 तेमांतोरसछेजनहि केटलाकस्त्रीनाअधरनेविशे अमृतर  
 समानेछे पणतेरसतोकोइस्थानकेछेजनहि एअमृतरसछे  
 एतोअपुर्वछे तेकोइपडीतपुरुपजाणे अनेएरसतोध्यां  
 नयकिजप्रगटथाय एविजायकिनहोय एवोजेअमृतर  
 सतेनोस्वाद ध्यानिपुरुपचाखे तेसतोपनुसुख तेनेजछे  
 एटलेएविजाश्लोकनोअर्थकह्यो एविरितेजेनुप्रवर्तनहोय  
 अनेजेएशुक्लध्यानध्यावे तेधणीमुक्तिनांसुखपामे एटलेए  
 शुक्लध्यानकह्यु तथाएच्यारध्यानकह्यां एच्यारध्यानमध्ये  
 थी प्रथमजेवेध्यानआर्त्तध्यान तथारुद्रध्यानछे तेअवश्य  
 छाडवाजोगछे अनेधर्मध्यानजेछे तेआदरवाजोंगछे पण  
 एथकी मुक्तिपरावर्तनथी पणस्वर्गनासुखमले अनेशु  
 क्लध्यानछे तेमध्येवेपायाछे तेतोस्वर्गनासुखनादातारछे  
 तेकोइकजिवआश्रीनेछे पणघणाजिवनेतोएमुक्तिनुजकां  
 रणछेशामाटेजेपेहेलोपायोआठमाथी तेदसमागुणठाणा  
 सुधीछे एटलेएत्रणगुणठाणानेविशे तोकइंमरणछेनहि इ  
 हांजेस्वर्गादिकगतिकेहेविते उपरनागुणठाणाने अथवा  
 निचलागुणठाणाने आश्रीनेकेहेवानुछे शामाटेकेजे मृत्यु  
 पामबुहोयतोपाछापडे नेछठेसातमेआविने मृत्युपामे

अथवाचडेतो अगिआमंगुणठाणेजइनेमरे तोसवारिथासि  
 द्वेजायअथवाअगिआरमेनजजायनेपाधरोवारमेजायतो  
 केवलज्ञानउपारजी अंतघडकेवलियइ चडदमानेअतेका  
 लकरिमोक्षेजाय पणशुद्धध्याननापेहेलापायामांतो कइं  
 जिवकालधर्मपामेनाहि इहांकोइकेहेशेके जोकालगतिन  
 थिपामतातो स्वर्गगतिकेहेवानीशीजरुरछे तेनोउत्तरकेए  
 ध्यानेवर्तेछेजेआत्मा तेनोउपयोगसर्वकर्मनाशकरवाजेवो  
 नथीएटलेजेटलिएनाउपयोगनिरमणतानोसुमारजोइने  
 स्वर्गगतिकहिऐछिये पणइहांमरणपामेनाहिज हवेविजा  
 पायानेजेस्वर्गगतिकहि तेनोविचारकहूछु जेएपणकोइ  
 कजिवआश्रीछे पणकांइसर्वजिवआश्रीनथी शामाटेजेउ  
 पसमश्रेणीजेजीवआदरेतेजिवअगिआमंगुणठाणेआव्यो  
 थको मरणपामेतोसर्वारथमिद्वेजाय नेपाछोपढेतोदशमेगु  
 णठाणेजाय तेनितोकइगतिकेहेवानिजरुरछेनहिशामाटे  
 जेएमकरताफरिथीचडेतोमोक्षपणजाय अथवाछठेसात  
 गुणठाणेजतारेहेतो स्वर्गेपणजाय तेथीपणधर्मेविमांथी  
 तरिजायतो नर्कादीकगतिनेविशेपणजाय क्तिथइचुकी  
 तोकइनियमछेनहिहवेजेजिवउपसमश्रेणीमोक्षेजाय  
 श्रेणीएचडे तेजिवदशमागुणठाणानेअंतेमान ध्यानजेद  
 क्षयकरे इहांसुधीपेहेलोपायोजाणवो अर्द्धध्यानए पाया  
 नोउठयो वारमेगुणठाणेजाय पणदेनास्याएसोय॥२॥



ध्याननुजंशेवनकरो एपेहेलाश्लोकनोअर्थ हवेविजाश्लोक  
 नोअर्थकहियेछइये हवेअहियांकेटलाकजिव गायनास्त  
 नकेहेतां दुधमाअमृतमानेछे केटलाएकसाकरंमांमानेछे  
 तेमांतोरसछेजनहि केटलाकस्त्रीनाअधरनेविशे अमृतर  
 समानेछे पणतेरसतोकोइस्थानकेछेजनहि एअमृतरसछे  
 एतोअपूर्वछे तेकोइपढीतपुरुषजाणे अनेएरसतोध्या  
 नयकिजप्रगटथाय एविजायकिनहोय एवोजेअमृतर  
 सतेनोस्वाद ध्यानिपुरुषचारखे तेसतोपनुसुख तेनेजछे  
 एटलेएविजाश्लोकनोअर्थकह्यो एविरितेजेनुप्रवर्तनहोय  
 अनेजेएशुक्लध्यानध्यावे तेधणीमुक्तिनांसुखपामे एटलेए  
 शुक्लध्यानकह्यु तथाएच्यारध्यानकह्या एच्यारध्यानमध्ये  
 थी प्रथमजेवेध्यानआर्तध्यान तथारुद्रध्यानछे तेअवश्य  
 छाडवाजोगछे अनेधर्मध्यानजेछे तेआदरवाजोगछे पण  
 एथकी मुक्तिपरावर्तनथी पणस्वर्गनासुखमले अनेशु  
 क्लध्यानछे तेमध्येवेपायाछे तेतोस्वर्गनासुखनादातारछे  
 तेकोइकजिवआश्रीनेछे पणधणाजिवनेतोएमुक्तिनुजकां  
 रणछेशामाटेजेपेहेलोपायोआठमाथी तेदसमागुणठाणा  
 सुधीछे एटलेएत्रणगुणठाणानेविशे तोकइंमरणछेनहिं इ  
 हांजेस्वर्गादिकगतिकेहेविते उपरनागुणठाणाने अथवा  
 निचलागुणठाणाने आश्रीनेकेहेवानुछे शामाटेकेजे मृत्यु  
 पामवुहोयतोपाछापडे नेछठेसातमेआविने मृत्युपामे

ग्रंथपुरणथयो पुरणआत्मीकसुख मुनिहूकमकहेएहध्याव  
 शे तेनेनहिभवदुख॥१७॥ भवदुखसेहेजेमटे ध्यानरसेसु  
 खकार किरियाकष्टनजोइए एफोगटआलपंपाल॥१८॥  
 खटपटसविदूरेकरो थीरकरोनिजचीत आत्मगुणप्रगट  
 होशे प्रगटेबोहोलुवित॥१९॥ एग्रंथजेवांचिभणे तैथायसं  
 तरूप रागद्वेषतेहनाटले होयआत्मस्वरूप ॥२०॥ मुनिहू  
 कमकहेआत्मीक जेहनेप्रगटीचाल शिववहूनांसुखभोग  
 वे होवेमंगलमाला॥२१॥

॥इतिश्रीध्यानविलासग्रंथ॥  
 ॥मुनीश्रीहूकममुनिकृतसमाप्त ॥

धर्मध्यानच्यारभेदथी जाख्योतासविचार पदस्थपिंडस्थए  
 मजाणिये रुपस्थकह्योनिर्धार॥३॥ भावनाच्यारकहितेह  
 नी जाखीग्रथमोझार लक्षणादिस्वरुपते ज्ञानिमनसुख  
 सार॥४॥ शुद्धध्यानतेमजाखीयु पायाच्यारसमेत तेमरुपा  
 वितजाखियु एमुक्तिनुखेत॥५॥ इत्यादिकबहूवारता जा  
 खीग्रंथमोझार वांचीआणदपामशे पडितजननिरधार  
 ॥६॥ एहग्रंथजणतायकां टुटेकर्मनीजाल पांमेसुखतेसा  
 स्वतां मुक्तितणांतत्काल ॥७॥ एहग्रंथरुदयेधरि ध्यानं  
 करेवलिजेह तेजवअटविनवभमे पांमेशिववधुगेह ॥८॥  
 धुपेरेअविचलरहो एहग्रंथसुखकार अर्कतेजेजेमविस्तरे  
 नेमविस्तरोउदार॥९॥ पंडीतनेमुखमुखवसे आत्मअर्थिते  
 मजोय एग्रंथसमअवरजो नविदिसेपणकोय॥१०॥ मुक्ति  
 दायकएग्रंथछे एहिजमुक्तिस्वरुप समजेज्ञानीहोयते  
 भाख्युआत्मस्वरुप ॥ ११ ॥ एग्रंथरुपछेब्रक्षजलो पत्रस  
 मतारुप कुशमतेहनांजाणिये नरसरगस्वरुप॥१२॥ फलए  
 नुअविचलछे सुखपणअविचलएह यितिपणअविचलंज  
 लि शिववधुनेगेह॥१३॥ जिनवरमुनितणो हूकमजेमाथे  
 चढाय पांमेसुखतेसास्वतां वेगेपोचेधाय॥१४॥ ओगणी  
 सतसवछरे उपरवाविसजाण वैशाखशुदिपचमिदिन वा  
 रगुरुप्रमाण ॥१५॥ आमोदगामेएरच्यो निजआनंदप्र  
 माण संघतणेआनदघणो ध्यानरसेगुणखाण॥१६॥ ए

ग्रंथपुरणथयो पुरणआत्मीकसुख मुनिहूकमकहेएहध्याव  
 शे तेनेनहिभवदुख॥१७॥ भवदुखसेहेजेमटे ध्यानरसेसु  
 खकार किरियाकष्टनजोइए एफोगटआलपंपाल॥१८॥  
 खटपटसविदूरेकरो थीरकरोनिजचीत आत्मगुणप्रगट  
 होशे प्रगटेवोहोलुविता॥१९॥ एग्रंथजेवांचेभणे तेथायसं  
 तरूप रागद्वेषतेहनाटले होयआत्मस्वरूप ॥२०॥ मुनिहू  
 कमकहेआत्मीक जेहनेप्रगटीचाल शिववहूनांसुखभोग  
 वे होवेमंगलमाला॥२१॥

॥इति श्रीध्यानविलासग्रंथ॥  
 ॥मुनीश्रीहूकममुनिकृतसमाप्त ॥



# श्रीअध्यात्मछनुवि.

श्रीगुरुभ्योनम.

॥ दुहा ॥ प्रणमिभगवतिभारति जेछेजगतआधार तेह  
 तणिकृपाथकी कहूआत्मविचार ॥१॥ ज्ञानविनाव्यवहा  
 रजे तेतोवालकचार बालधुलिलिलासमो नारख्योएआ  
 चार ॥ २ ॥ अध्यात्मगुणजिहांकने भावचारित्रजाण  
 दर्शनज्ञानपणछेसहि एवुग्रथेविनाण ॥ ३ ॥ मिथ्यादृ  
 ष्टिजीवडा करेवाहाजव्यवहार अतरभावजेदेनहि केमल  
 हेनवपार ॥४॥ जेमभाजनएकवासियुं हिंगलखणकेसंग  
 सुगंधतेग्रहेनहि उलटोग्रहेकुरंग ॥५॥ मिथ्यादृष्टिटालेन  
 हि करेसमकितकिवात पुर्वदोपटालेनहि केमहोयतेसु  
 जात ॥६॥ बाह्यद्रष्टिछंड्याविना अंतरद्रष्टिनहोय परमा  
 त्मपदक्युंमले हृदयविचारिजोय ॥७॥ तेमाटेभविजीवडा  
 छंमोवांहेरद्रष्ट परमात्मगतिचाहिये तोकरोअतरद्रष्टा ॥८॥  
 अतरद्रष्टिगुणविना कोईनहोवेशुद्ध बाह्यद्रष्टियेखेलता र  
 हे नवभ्रमणनिबुद्धा ॥९॥ बाह्यअव्रतनात्यागसें निर्मलहुवो  
 नकोय अन्नविपणतेहिजकरे दिलशुविचारिजोय ॥१०॥  
 अहिजेमकंचुकतजे पणनिरविघनविथाय तेमज्ञानविना

जिवडा चारगतिकहेवाय॥११॥ एमसुणिकोइवोलशे ल  
 हिअध्यात्मलेश कहेआत्मअवधछे शानेकरोउदेश॥१२॥  
 एपणजापाअसत्यछे चालेअज्ञानचाल अवधकंहिअव्रत  
 मा काढेप्रमादेकाल॥१३॥ अध्यात्मपोकारता तजेनहिप  
 रजाव तेतोबंधमापमे फेरनहिलवलाव॥१४॥ अथवाआ  
 त्मआत्मंकरे छमेनअशुद्धआचार कहोनिर्जरांतकेमहोवे  
 तेतोथिरसंसार॥१५॥ त्रणशुद्धिकहिशास्त्रमां विषय १ आ  
 त्म २ तत्व ३ दोमेतोधर्मछेनहि एवुसमजोसत्व ॥१६॥  
 तत्वएकशुद्धिथी पामेपदनिरवाण सद्गुरुसिखतोएमदि  
 ये समजोचतुरसुजाण ॥१७॥ विषयशुद्धिकरवाथकि  
 कारजकबहुनाहोय भवभ्रमणएथिवधे बोहोलसंसारिते  
 तोय॥१८॥ मोक्षमार्गजातांथकां आडोहोवेपाहाडखेसुखो  
 खसेनहि जेहनोउडोगाहाड॥१९॥ आत्मशुद्धिविजीकहू ते  
 सुणजोअधीकार समजीनेदूरकिजिये ज्ञानिवचनअनुसा  
 र॥२०॥ आत्मआत्मजेकरे करेनज्ञानविचार संसारमां  
 लग्योरहे एमुरखआचार॥२१॥ शत्रुमित्रमनचितवे करे  
 तेहशुविरुध रागद्वेषवलग्नीरह्यो एमाजेहनिछेमदबुध॥  
 २२॥ पुत्रकलत्रप्रेममां लुब्धाणाअहनिश कोइशिखाम  
 एदेजलि तोकरेखोटीरीसा॥२३॥ लुब्धोपरीग्रहभावमाइ  
 त्यादिकबहुजेद एहनिसाधकरतोरहे भट्योनमनकोखेद  
 ॥२४॥ साधुभयोतोक्याहूँ आव्योनहिसंजाव समतावि

नासुखनविलहे फोगटकटकहावा॥२५॥लोचकरोभोमिसु  
 वो अमवाणेपगचाल निस्पृहिपणेचालतो सुजतोआहार  
 निहाल ॥२६॥ इत्यादिकवहूकटकरे जाणेशिध्याकाज  
 मुरखमनसमजेनहि उलटीखोईलाज ॥२७॥ सदगुरु  
 शिखसुणेनहि चलवेनाकममाल किरियाकटसैजगठगे  
 मानपुजाव्यवहार॥२८॥ व्यवहारकिरीयाजेकहि दोय  
 गुणस्थानेधार तेतोपरमादजावमा तेप्रथमविचार॥२९॥  
 अप्रमतभावजीहांकने तेतोज्ञानिकोहोय तेमाटेकारज  
 सिद्धि आत्मआत्मकरेनाहोय ॥३०॥ विजीशुद्धिऐवेमहि  
 संसारवधावणहार तेमाटेछडोएहने ज्ञानिवचनअनुसार  
 ॥३१॥त्रिजिशुद्धिहवेनाखशुं जेछेमुक्तिदातार जावयरीने  
 सांजले जेथिभवतोपार ॥३२॥ रत्नत्रयीआराधवा करो  
 सदगुरुशेव तेविनाएनविमले टालिदुरपुर्वटेव ॥३३॥  
 ज्ञानदर्शनचारित्रते रत्नत्रयीकहेवाय तेसाधनकरवाज  
 णि प्रथममनवशलाय॥३४॥मनवशकरयाविना कारजसि  
 दिनाहोय वचनकायजोगतें भिन्नपदार्थहोय ॥३५॥वचन  
 जोगमुखथीकहे मनमाओरविचार एतोकपटाईठरी-दंभ  
 प्रकृतिधार॥३६॥दजसहितजेजेकरे तपजपकीरीआअने  
 कतेहनेनिष्फलकहि सिदांतमांहेटेका॥३७॥कायाथकीक्रीया  
 करे वंदननमनविवेक तपजपकरेवहूविधथी मनवशनहि  
 नेका॥३८॥मनवशकरयाविना कर्मनछूटेकोई उलटोकर्मबंध



होय प्रसनचद्ररखिजोय ॥३९॥ तेकारणमनवशकरी सु  
 णोज्ञानविचार ईद्रिपणवशतेहनि भाखुछउनिरधार ॥  
 ४०॥ ज्ञानशुद्धीप्रथमकरो जेहथीदर्शनहोय चरणजाख्यु  
 तेहने ज्ञानिवचनतेसोय ॥४१॥ ज्ञानकह्युं त्रणजेदसे बाल  
 अनुन्नवजोय मगनजावत्रिजुकह्यु समजीलेंजोसोय ॥४२॥  
 बालज्ञानमिथ्यामति जेशास्त्रअन्यहोय अथवात्रणअनुजो  
 गएम सदेहमाकरशोकोय ॥ ४३ ॥ आत्मविनाजेजेकथा  
 वखाणचरचाविचार तेसविबालज्ञानछे मिथ्यामतिआचा  
 र ॥४४॥ अनुभवआत्मस्वरूपनो करताविघटेकर्म भवभ्र  
 मएतेथिमटे टलेआनादिनो जर्म ॥४५॥ स्वस्वजावमांतेरमे  
 तजेअनादिनिचाल पुद्गलजावइच्छेनहि जाणिएदुरअवा  
 ल ॥४६॥ परभावपुद्गललगे बलग्योमिथ्यासग तेथिआत  
 मजुजुवो करेज्ञानशुरग ॥४७॥ पूरवकर्मबंधनो सतोपग्र  
 ह्योहोय छतिप्रजायप्रगटहोय उदैभावकुजोय ॥४८॥ उदे  
 कर्मजेआविया भोगवेतेनिशक नवुकर्मबाधेनाहि तेमान  
 विहोवेरग ॥४९॥ निजस्वजावमांसदारहे तजिरागनेद्वेश  
 पूर्वकर्मनेखेरवे एसिद्धातनोरेश ॥५०॥ जाणिएपुद्गलदशा  
 मलेनिखरेएह जीवअनंतानिएहछे केमकरीग्रहियेतेह ॥५१॥  
 आत्मस्वरूपअगाधछे अलखस्वरूपिकेहेवाय ज्ञानिविण  
 जाणोनहि एमविचारमनथाय ॥५२॥ भेदज्ञानथिभाविये  
 जडधेतनदोफार लक्षणगुणथीजाणिये चिन्नभिन्नविचार

॥५३॥ आत्मभावन्यारोकरि देखोपुद्गलभाव कालअना  
दिनोलग्यो शत्रुरुपस्वभाव॥५४॥ तेहिजपुद्गलजातनि व  
र्गणादिशेआठ वलगीआत्मस्वरूपने तेथिशक्तिनाठ ॥  
५५ ॥ तेमांहिआठमिजाणिए कर्मणवर्गणाजेह चेत  
नवशय्योतेहने कर्मकहिजेएह ॥ ५६ ॥ तेमांहिराजा  
एकछे मोहनिकर्मसरदार मोहरूपएभर्ममां जोलं  
व्योसविससार ॥ ५७ ॥ कइकशुभकइकअशुभ एम  
करतागयोएकाल पणधर्मपाम्योनहि मिथ्यामोहकि  
चाल ॥५८॥ शुभाशुभपुद्गलदशा वेदनिकर्मविचार आ  
त्मघातिएकह्या निश्चेतेनिरधार ॥ ५९ ॥ शुभाशुभक  
र्मगती निगमव्यवहारचाल तेकारणदूरेकरी निजस्वभा  
वनिहाल ॥६०॥ एमपुद्गलदशात्यागसे प्रगटेआत्मरूप  
जेदज्ञानविचारीए शुद्धव्यवहारस्वरूप ॥६१॥ शुध्यात्मअ  
नुभवदशा सेहेजस्वभावनिहाल वितरागताप्रगटे एअ  
नुभवकिचाल ॥६२॥ च्यारनयकुछडके त्रणनयकुग्रहे तो  
सिद्धताहोवेतुरत एवभूतेकेहे ॥ ६३ ॥ पक्षप्रमाणादिक  
ग्रहि स्यादवादसंयुक्त अनुभवआत्मकोकरो एहिआग  
मयुक्त ॥६४॥ गुणपरजायसंजुक्तते द्रव्यतणोविचार गु  
णपरजायसंक्रमणथि निन्ननिन्नमतिधार ॥६५॥ भिन्नअ  
निन्नविचारता गुणठाणदशमुधार शुद्धध्याननोतेकह्यो  
प्रथमपायोउदार ॥ ६६ ॥ एहिजेदज्ञानछे एहिशुधव्यव

हार एहिअनुभवकिजीये अध्यात्मसुखकार॥ ६७॥ ए  
 ध्यातांमिथ्याटले टलेसवअज्ञान व्यवहारपणसविट  
 ल्यो एभाख्युअनुभवज्ञान ॥ ६८॥ एहअनुभवकिजीये  
 आत्मकरोअनुप लोहफीटीकचनहोवे ज्युरसवेधकस्वरु  
 प॥ ६९॥ तेकारणविजावने तजीकरजोध्यान निजस्वरुपप्र  
 गटहोशे एहिअनुभवज्ञान ॥ ७०॥ जिहालगेपरजाव  
 नो त्यागनहोवेचित त्यालगेथिरससारछे साचिजाणोरी  
 त॥ ७१॥ तेकारणपरजावतजी करोमनइंद्रिवश आत्मजा  
 वमाथिरहोवो पिवोअनुभवरस ॥ ७२॥ विजोनेदएकह्यो  
 हवेकहुत्रिजोविचार ओतासुणजोथिरथइ मगनजावअ  
 धिकार ॥ ७३॥ पुद्गलसेन्यारोप्रभूमेरो ज्ञानवानसुखकार  
 निरजननिराकारए नहिलेपलगार ॥ ७४॥ पुद्गलजावव  
 नासिए हुअवनासिधार पुद्गलखेलअनादिनो एहजाल  
 आचार॥ ७५॥ कालअनादिजमतेथके जन्ममरणजजाल  
 लखचोरासिजोनिजम्यो खेल्योनवनवारुयाल ॥ ७६॥  
 एरुपतोहूनहि हूतोइनशुचिने ज्ञानरुपएआपणो तैथि  
 होवेलिन॥ ७७॥ एमस्वरुपविचारीने थाओपरशुउदास  
 उदाशिनतातवग्रहि किग्रोधरमावासा॥ ७८॥ नेदज्ञानतोत  
 जदियो जाणिमिथ्याभाव धर्मक्षमादिकर्त्तमीट्यो प्रगट्यो  
 सेहेजस्वजावा॥ ७९॥ नयभेदपणमिटगयो मिटगयोपक्षप्र  
 माण स्यादवादपणमटगयो एवप्रगट्युनाण॥ ८०॥ गुणपर

जायतिचिन्नता रत्नत्रियवलिचिन्नं जेदभावसबमटगयो  
 एकत्वजावथंयोलिन ॥८१॥ शत्रुजावयाकोनहि नहि  
 रागओरद्वेष ॥ पुत्रपिताविचारनहि मगनजावपरवेश  
 ॥ ८२ ॥ द्रष्टिगोचरजेहोवे ज्यादेखुत्यांरुप मुर्तिभाव  
 तेजहो तेतोरुपिस्वरुप ॥ ८३ ॥ तेरुपपुद्गलतणो हूरुपी  
 अनुप एनेमारेशीसगाइ एतोछेभवकूप ॥ ८४ ॥ असंख्यपं  
 रदेशिहूंसदा अक्षयरुपकहेवाउ अमुर्तिगुणमाहरो एहि  
 चितमांलाज ॥ ८५ ॥ ज्ञानदर्शनचर्णनो साचोदिसुंपुज सु  
 खअनंतुमाहरु प्रतक्षदेखिहूंज ॥ ८६ ॥ सर्वपरभावने  
 टालिने निजघेररहेमगन सुमताशुसगाइकरी तुरत  
 लिधुलगन ॥ ८७ ॥ कालअनादिनिविशरि भुल्योचेतनराय  
 ममतामांललचाइरह्यो तेथीएदुखियोकेहेवाय ॥ ८८ ॥  
 हवेतेमुजसांभरि भलियोतेहनोसंग ममताकूमतानाठ  
 गइ तुनोवाध्योरंग ॥ ८९ ॥ ज्ञानअनंततेमाहरु हूंछउज्ञा  
 नस्वरुप एदशाछेमाहारी जाणोभेदअनुप ॥ ९० ॥ वाको  
 सुखजेप्रगटयो लोकमांहिनसमाय जाणनवालोजाणे  
 सहि केणिहोठनआयु ॥ ९१ ॥ अखंडरुपहेमाहेरो अविना  
 शिअकलंक नीरविकल्पएरुपमां कोणहोवेएरंका ॥ ९२ ॥  
 जेदभावसबमटगयो टल्योमनकोखेद आत्मजावेथिरहू  
 वो प्रगटहूवोअवेद ॥ ९३ ॥ नीजअनुजवथीएकहि अध्या  
 त्मछनुजाण मुनिहूकमएनिजउल्लासथि उत्तमप्रगटयुए

नाण ॥९४॥ ओगणिसेसवछरे ओगणत्रिशत्रशाडमास  
 शुक्लपक्षअष्टमिगुरु रहिसुरतचोमास ॥९५॥ मुनिदूक  
 मरचनाकरी अनुचवज्ञानसजोग जेचणेनेआदरे तसजा  
 यभवरोग ॥९६॥

॥ इति श्रीअध्यात्मछनुविसमाप्त ॥

# श्रीमिथ्यात्वविध्वंसन.

श्रीगुरुभ्योनम

॥ दुहो ॥ वटूसिद्धस्वरूपने नीजानदवीलाश आपस्व  
रूपीआपमां वधेगुणकीराश ॥१॥

संसारनेवीशो सर्वेजीवसिद्धसरखाछे असंख्यातप्रदेशो  
करीनिर्मलछे एवीसत्तानाधणीछे परंतुपोतानीसत्तानेदे  
खीशकतानथी शामाटेकेमिथ्यात्वेकरीने आत्माछवराइ  
गयोछे तेथीकरीनेस्वस्वभावनेछोडीने परचावमांरमेछे  
शिष्यवाक्य--स्वामीमिथ्यात्वतेशानेकोहोछो नेमिथ्यात्व  
शायकीजाय गुरुवाक्य--हेभद्र मिथ्यात्वनोविस्तारघणोछे  
परंतुकिचितकहीदेखाडुछुं तेमिथ्यात्वनावेजेदछे तेनोवि  
वरोकरतांकेटलाएकवीजापणभेदकेहेवाशे हवेतेमिथ्या  
त्वनावेजेदकरीयेछीयेतेनानाम द्रव्यमिथ्यात्व॥१॥ भोवि  
मिथ्यात्व २ द्रव्यमिथ्यात्वनावेजेद एकवेहेवारमिथ्यात्व  
१ बीजोनिश्चयमिथ्यात्व २ हवेतेमिथ्यात्वनोस्वरूप संक्षे  
पथादेखाडीयेछीये एटलेमिथ्याकेहेतांजुठीवस्तुनेसाची  
करीनेमाने तथासाचीवस्तुनेजुठीकरीनेमानेतेनेमिथ्या  
त्वकहिये तेमधेलोकीकदेवकेहेतांहरिहरादीकतेनेदेवक  
रीनेमाने अथवापोतानीमतलवेतेनीबाधाआखडीराखे  
तथालोकिकगुरुकहेतांब्राह्मणजोगी संन्याशीप्रमुखनेगुं

रुक्मीजाणे तेनाचमत्कारदेखीनेतेनेमाने. २ लोकिधर्म  
जेसदावरतदेवुं तथाहोलीजुरूपारिहेवु इत्यादिकमिथ्यात्व  
नापर्वतथावरतकरे तेनेलोकिधर्मकहिए. ३ लोकोत्तर  
देवजे रिखवादीकजेतीर्थकर तेनाजेतीर्थपरतमातेनेपोता  
नासंसारहेतुएमानवा बाधाआखडीराखवीते लोकोत्तरदे  
वगतमिथ्यात्वकहिये ४. तथालोकोत्तरगुरुमिथ्यात्वके  
हेतांजे साधुमुनिराजनीशेवाभक्ति आहारपाणी प्रमुख  
नीससुरखाराखे मनमाएवुविचारेके महाराजवचनआशि  
र्वादेकेहेतोआपणुसारुथाय तथामत्रजंत्रप्रमुखनी आ  
द्याकरे ५ तथालोकोत्तरधर्मकेहेताश्रीपालने नवश्रांवी  
जनीओलीथकीसारुथयु तथागुणमजरीवरदतने पांच  
मकरवाथकीसारुथयु इत्यादिकबहूजणनेतपजप धर्मक  
रणीथकीसारुथयु तोआपणेपण श्रमुकोतपप्रमुखकरवा  
यकीसारुथाय ६ एवमिथ्यात्व तेमधेत्रणलोकीकमिथ्या  
तथात्रणलोकोत्तरमिथ्यातळे एमिथ्याततेवेहेवारथकीळे  
तथाद्रव्यमिथ्यातनाघरनाळे तथाद्रव्यमिथ्यातनाघरना  
रीश्वेमिथ्याततेनादशभेदळे देवमिथ्यातकेहेतां जेदेववी  
रागजेनोरागद्वेशगयो सर्वकर्मथकीरहितथया स्वरुपर  
णीलोकालोकजास्कर एवाजेअरिहतपरमात्मा तेनेदेव  
रीनजाणे एप्रथममिथ्यात्व १ तथाजेदेवपणुनथीपाम्या  
गद्वेश वीपयकपायनाभरेला एवाजेहरीहरादिकतेने

देवकरीनेमानेतेबीजुमिथ्यात्व. २. तथाजेसाधु आत्मरम  
णीकस्वरूपानुजायी परभावत्यागी स्वज्ञावचोगी मंदकषो  
इ करुणासोगर ज्ञानउपयोगी एवाजेमुनिराजतेनेसाधुक  
रीनमाने एत्रीजुमिथ्यात्व. ३. जेअसाधुरागद्वेशवीषयकषा  
यनाभरेला आत्मस्वरूपनाअजाण शुभाशुभकर्णीनारागी  
जन्मभावमांरचापचारेहे तेनेसाधुकरीनेमाने एचोथुमिथ्या  
त्व. ४. धर्मजेवस्तुनोस्वभाव तथाजिवदया स्वपरनोजडचेतन  
नोविजाग इत्यादिकजेकेवलीभास्यो धर्मतेनेअधर्ममाने ए  
पांचमुमिथ्यात्व. ५. जेअधर्मजीवदयाप्रमुखनही तथांवस्तुस्व  
रूपजाएयाविना क्रीयाकष्टतपजप प्रमुखनेधर्ममानेतेछ  
ठुमिथ्यात्व. ६. जेजिवस्वरूपचेतनालक्षण चारसंज्ञास  
हिततथाएकंद्रीथीते पंचंद्रीपर्यंत अनेकथांनकउपजवानां  
तथावीणसवानांशास्त्रादीकनजाणे नेइत्यादिकस्वरूपने  
जीवनमाने एसातमुमिथ्यात्व. ७. जेअजिवपदार्थजन्मे  
तेनेवणसमजणथी केटलाएकठांमनेविशेजीवकरीनेमाने  
तेनेआठमुमिथ्यात्व. ८. मुक्तिकेहेतां सरवजन्मभागनोत्या  
गीसर्वकर्मरहीत शुद्धस्वरूपजेवुसत्ताएहतुतेवुजनीर्मलप्र  
गटथयु नेलोकनेअतेसिद्धस्वरूपथइनेवीराजमानथया ते  
नेमुक्तिनमाने तेनवमुमिथ्यात्व. ९. जेअमुक्तिकेहेतां जेसं  
सारना वइभवथकीछुट्यानथी चाकरठाकरपणुज्यारह्युते  
जन्ममर्णजेनांगयांनथी एवाजे वइकुंठ गौलोक यावत



जोतपरजंतनेजेमुक्तिमानेहे तेदशमुमिथ्यात्व. १० तेदश  
मिथ्यात्वपाचप्रकारेकरीने मानवामात्रावे जेपुर्वेएदशक  
ह्यांतेमांहेलाजेबोल जेकुगुरुनाजंलावेला तेप्रतेहांमेनहि  
सुगुरुमलेसमजावे तोयपणहठवादबोमेनहि तेतेअभिग्र  
हितमिथ्यात्वपेहेलुकहीए. १

हवेतेमध्येकेटलाएकजीवएमजाणेजे सुगुरुकेहेतेपण  
ठीकजते तथापुर्वेकुगुरुएसमजावेलुहे तेपणठीकजते आ  
पणेएकुटमापेसबुनहि आपणेतोसर्वमानवाजोगहे एवुजे  
विचारहे तेनेसुगुरुकुगुरुनीपरीक्षानथइ तथासत्यासत्य  
वचननीपरीक्षानथइ तेनेएकेवातनोतीरधारपणनथयोतेने  
मन दुध अथवाबाशबंसे एकेपामेजाय तेनेअनाअभीग्र  
हीतमिथ्यात्वकहीए. २

जेपुर्वेसुगुरुएवताव्या एवाजेदशबोलतेसारीरितेसम  
जेलोतेकोइकर्मनाउदेयकिअणरुमृतिथिवचननीकल्यु प  
ठीपोतेसमजोकेआवचनतोहुबोलताबोल्होपरंतुहुबोल्हो  
तेवचनपाछुनफरे एवुधारीनेखोटीयुक्तिउकरी तेवचनने  
साबितकरे तथाकोइवातउपरममतयतांतेधर्मनेखोटुकरवा  
चाहेतेधर्मनेतोमवाचाहे एसर्वेजाणीनेकरवुरह्युअथवाकल्प  
व्यवहारनीमरजादावास्ते आत्मस्वरूपनेजाणतोथकोशु  
द्धमार्गनीखबरवालोजीवजमनीपुष्टिकरे एटलेशुजाशुज  
क्रिधानीपुष्टिकरे तेनेजमनीपुष्टिकरीकहीए शामाटेकोकि

यात्यांकर्मठेमाटेएसर्वेजन्तुपोषणयु शमाटेकेइहांकर्म  
नुवधारवुथायते एविरितीजाणीने एवाकांममांप्रवर्ततेने  
अजीनिवेशिकमिथ्यात्वकाहिए. ३

एजपुर्वेदशबोलकह्या इत्यादिकबोलोनेविषे शंकापमे  
जेकोणेजिवदीठो तथामुक्तिअरीहंतएकोणेदीठाते इत्या  
दिकसर्वेपरम्पराथीकेहेताआव्या तेमानीएहिए शुजाणी  
एकेएवस्तुसाचीठेकेजुठीते अनेशास्त्रनोकांइजरोसोपमेन  
हि केमकेजेमआस्वामीनारायणकालनजरेथयोतेमांमहादु  
खमहाकष्टेकरीघणोद्रव्य राजातथाब्राह्मणने खवरावीने  
पोतानीधर्मचलाव्योतेसर्वेआपणेप्रत्यक्षनजरेढीठेलुते ते  
नेलोकएनामतवालाजगवानकरीनेमानेते तथाकुवेरजक्त  
हालवर्तमानवेठोजते तेनेपणतेनामतवालाजगवानकेहे  
वानीइच्छाराखेते तेजाणीएठीएके चारेदहामेएनेमुवाप  
ठीजगवानठरावशे तेनांकर्तव्यसर्व आपणेप्रत्यक्षनजरे  
देखीएठीए एमआगलनाकोइढोंगीथी आधर्मचलाव्यो  
होयतोकेमखवरपमे अनेशास्त्रउपरजोजोवाजइएतो हा  
लजेउपरनाकह्या तेधर्मवालाएशास्त्रनवांवांधेलांते तेध  
णीएपणघणीजुक्तिअनेहलाहलखोटीवारतविमांहेलीको  
रेनाखीते तेधणीनाविद्यमानना देखवावालानंहिहोयत्यारे  
केटलालोकोएवुजाणशेके अहोभगवानेआवांआवांकाम  
करेलांते नेतेप्रत्यक्षपणे आपणेजोइएठीएके खोटांशास्त्र

बनाव्यांते एमआगलनाएतेवाशास्त्रबनाव्यांहोयतोतेनो  
शोभरोसोरहे एममनमाशंकाकखाजेनेरेहेतोहोय तेने  
संशयोकिमिथ्यात्वकहीए. ४

शीष्यवाक्य:-स्वामीतमेशंशयोकिमिथ्यात्वकह्युं तेठिकप  
एप्रत्यक्षआलोकोनांजेशास्त्रअनेआलोकोनाभगवानआप  
ऐदेखियेगीये तेमजआधर्मसामानेजासनथाय सत्धर्म  
शाथकीजासनथाय एतोकांइइहांवेसतुनथीपवीतमेजोराव  
रीथीमनावोतोमोटाठोकोणजोइआव्युकेएटलीवस्तुपुर्वबने  
लीठि केएवाढोंगीपुरुषे पोतानेपुजावावास्तेअथवा पोता  
नीपंडीताइदेखाम्वावास्ते उभुकरघुठे जेमआमाकोरनी  
मुर्तीगुगलीलोकोद्वारकांथकीचोरीनेलइआव्याठे अनेते  
नुमंकनामापुराणआमोदनादीनानाथनामेब्राह्मणेबनाव्यु  
छे तेधणीयेमाकोरनुमहेरु तथागामनांजाहामप्रमुखसर्वे  
सोनानाकह्यांते तेदीनानाथजटनेमुवानेवरसदशनेआश  
रेथवाआव्या तेधणीएएवांगप्पाप्रत्यक्षमारेल्लाठे तेमबी  
जाशास्त्रवालाएण. गप्पांमारचाहोयतो शीमालुमपमे  
माटेएठेकाणेतो शकामोहोटीजरहे तेवातमासदेहनही  
गुरुवाक्य-हेनद्रएवीतनेमाहामोटीशंकाउत्पन्नथइ तोता  
हारोसमकीतादीकगुण क्यांरह्योप्रत्यक्षनास्तीकपणु जा  
सनथायवेमाटे एवीशकानजाइये हवेहूंतने एशंकानो  
उत्तरआपुतेतुधीरचीत करीनेसाजल नेतारामननीशंका

कंखाहोय अथवाआउत्तरमांशंकाउत्पन्नथाय तेपुढीने  
 निश्चलथा जेतनेसर्वथकी धर्मनीशंकापडीतथाशास्त्रनी  
 पणशंकापणी माटेतनेशास्त्रनोउत्तरतो हालअमर्थकीदे  
 वायनहि परंतुन्यायवादेकरीने जेउत्तरतनेआपीये तेतुं  
 धार प्रत्यक्षपणेजीवते तेखरोकेनहि वादीयुक्त. जीवकांइ  
 दीसतो नथी गुरुवाक्यः-जीववीनाबोलबुचालबु तेकोण  
 करेते वादीयुक्तः बोलवानुस्वरुपतेआकाशमारहयुंते अ  
 नेचालबुतेजमनोस्वभावते गुरुवाक्य-केजेबोलवानुस्वरु  
 पतेआकाशनेविशेकहयु तेआकाशनेविशेतोशब्दनोगुण  
 तेपणअक्षरादीकउच्चारणनथी तथाचालवानोगुण जेतेंपु  
 द्गलनोस्वभावकह्योतेतोसुक्ष्मपुद्गलमांते परंतुबाहादरजे  
 थुलपुद्गल तेमांकांइचालवानोस्वभावप्रत्यक्षपणेदीसतो  
 नथी तेमांप्रत्यक्षचालवानोस्वभावहोयतो घटपटादीक  
 चाल्यांजोइये एमाटेएचेतननोजगुणइहांलेवो वादीयु  
 क्त-केजोचेतनमहिहोयतेथकी चालतुहोयतोतमाराकेहे  
 एथकीवनस्पतीमांजीवते तोंतेपणचालीजोइये गुरुवाक्य-  
 वनस्पतीनेविशे इद्रीएकजबेतेथीएचालीशकेनहि वादी  
 युक्तः केएकद्रीजेकायाते तेथीचालीनशकेतो बीजीचारइं  
 द्रीमांतोचालवानो स्वभावजेनहि तोजीवनुचालबुशा  
 नुरहयुं माटेअमेकहीयेगीएके चालबुतेजममांजतेजेमघनी  
 आल प्रत्यक्षजडबेतेएनीमिलेचाल्यांकरेते तेमएकायाप

ए पुद्गलचालेते इहाकाइजीवनुकारणतेनही गुरुवाक्य-  
 जेकाइघमीयालचालेते तेजीवनीबनावेलीकलतेउपरथी  
 चालेते तेपणजीवनेआठेनेआठेदहाभेसंजाललेवीपमेते कुं  
 चीफेवेंतेचकरप्रमुख लुच्चीपुजीपाठाचढावेते त्यारेचालेते  
 पणकाइतेनीमेलेचालतीनथी तथातेजेकहयुंकेचार इद्रीबी  
 जीमाचालवानोगुणतेनहि तेस्वरुते परतुबीजीइंद्रीउ आठ्या  
 विनाफरशइद्रीथकीचलायनहि केनीगोभेकेजेदूधते तेमां  
 थीकोइघीकाहामवाचाहाशे तोपणसर्वथानीकलीशकेन  
 ही पणजोपइशाभारमेलवणपमेतो पढीघीनीकलतेमए  
 कंद्रीमाबीजीइंद्रीनीप्राप्तीयायतोज चालवानीगतीआवे  
 पणतेविना चालवानीगतीआवेनही. वादीयुक्तः-जेमबी  
 जीइंद्रीनामलवायकितमेंचालवुकसु तेवारेएवुभासनथा  
 यतेकेइंद्रीउमाजचालवानोगुणरह्योते पणकाइजीवपणुतो  
 दीसतुनथी.

गुरुवाक्य-जीवपणाविनाइंद्रीउनुवांधवुकोणकरे मा  
 टेजेइंद्रीउवाधेतेतेजजीवते वादीयुक्त-जेतमेइंद्रीउनावां  
 धनारानेजीवठरावोते तेतोकिइसजवतोनथी जेत्रसरेणु  
 प्रमुखउमीउमीनेघरप्रमुख अवांवरजगानेविशेपमेते तेर  
 जपावीस्थुलथायते तेमातोकोइजीवसाख्वालाकेहेतानथी  
 तोएइंद्रीएककोणेबांधी माटेजमनोकर्ताजमते गुरुवाक्य  
 तेत्रसरेणुप्रमुखजेखंध तेसरेवेष्टयवीकाय तथावनस्प

तीकायनाते तेप्रथमजीवनावांघेला एकंद्रीनीकायनापुढ  
 लते जीवनीनावनरूपतीकायप्रमुखथायनही. वादीयुक्तः-  
 वनरूपतीप्रमुखनुजेथावुळे तेमाटीपांणीनाजोगथीउत्पत्ती  
 थायते एमांकइजीवनुकारणदीसतुनथी. गुरुवाक्यः-जी  
 वविनाउगेनही केजुवोप्रत्यक्षजेकइंजामळे तेजेनामाहेजी  
 वहोयतेपाणीनाजोगथीनवपल्लवथाय परंतुतेजव्रक्षनीम  
 लीजीवरहीतथइहोय तेनेकोइपल्लवआवेनहि माटेजीवते  
 तेसत्यते वादीयुक्तः-केतेमालीनापुढलघणाखरीगचाहो  
 तेथीतेनेपल्लवआवतुनथी जेमवृद्धपुरुषने केकरांनयाय  
 तेमएनेपण पल्लवनथीआवतु. गुरुवाक्यः-तेहीनवृद्धपु  
 रुपवीर्यहिणथयो तेनेबेकरांनयाय परंतुनहारतोतेपुरु  
 षकरे तेम एमालीप्रमुखनेविशेपल्लवतोलाआवे परंतुपाणी  
 तोखेंच्युजोइए तोतारीवातखरीधान परंतुपाणीनोरसलें  
 चवानीएनीशकीनथी. शक्तीतोदिविहोवत्यारेजपानील  
 वादीयुक्त-जोपाणीनोरसलेंच्युकीजीवमानोतो रु  
 कोनाहाथीप्रमुख अनेकलेंच्युकीजेते तेनेजे  
 मुकीयितेठलुपीवेजायते तदेनेच्युकीजीवमान्ये  
 रुवाक्य-एतोपांणिपिरडे तेमनुनरुतुजायते  
 मांकांइरेहेतुनथी नदेइवळुनजे वादीयुक्तः-  
 जेरसनो संश्रुते तेनेजीवमानोते  
 तजोरहो

दहोय तेरसपाचनओछुकरे माटेरसनाग्रहणअग्रहणय  
 कीजीवनोनिर्णयनथायशामाटेके पाचभुतमलीनेएकथुल  
 बंधायवे तेपाचेभुतपोतपोतानाकामकरेवे तेमाकाइजीव  
 पणुनमनाय गुरुवाक्य-जोपाचभुतपोतपोतानुकामकरे  
 वे तोपृथ्वीआदीक चारथावरनेविशे वायुतत्वशुकामकरे  
 वे वायुतत्वइहाकांइकामकरतोदिशतोनथी शामाटेके पृ  
 थ्वीआदिकथावरनेविशे एकएकतत्त्वनीमुख्यतावे एटले  
 पृथ्वीकायनेविशे पृथ्वीतत्त्वनीमुख्यतावे अपकायनेविशे  
 जलतत्त्वनीमुख्यतावे अग्नीकायनेविशेअग्नीतत्त्वनी मु  
 ख्यतावे वायुकायनेविशे वायुतत्त्वनिमुख्यतावे अनेवनस्प  
 तीकायनेविशे पृथ्वीतत्त्वनिमुख्यतावे एपाचयावरमध्येअ  
 ग्नीकायनेविशे अग्नीतत्त्वतथापृथ्वीतत्त्व बेनीमुख्यतादी  
 शेछे तथावनस्पतीकायनेविशे चारतत्त्वनीमुख्यतादीशे  
 वे पृथ्वीतत्त्वतथाजलतत्त्व तथाअग्नितत्त्वतथाआकाश  
 तत्वएचारतत्त्वनीमुख्यताजोयामाआवेवे तथावेरद्रीयादी  
 कजेत्रसजीवरह्या तेनेविशेपांचेभुतमालुमपेन्ने परतुए  
 पाचे भुतकांइजीवनथी नेएपाचेभुतजीवकीनारसपाचन  
 करवासमर्थनहि तथाचालवापणसमर्थनहि तथाअ  
 क्षरउच्चारणकरवाकांइसमर्थनहि एकारणसर्वे जीवहो  
 यत्यारेजवने वाढीयुक्त-चालबुहालबुसेर्वेवायुतत्त्वनापरी  
 बलथकीथायवे ज्यासुधीवायुतत्वहोय ताहांसुधीएरसपा

चनादोकसर्वकारजकरे नेवायुतत्वगयाथी. एसर्वतत्वजु  
ठापमेठे तेप्रत्यक्षजोयामांआवेठे इहांकोइजीवस्वरूपदीस  
तुनथी. गुरुवाक्य--तुंवायुतत्वनेजीवसरखोमानेठे एतारी  
मोटीभुलठे. केमकेअक्षरउच्चारणकरवानीशक्ति वायुनी  
होयनहि. तथाशुभाशुभवेदवु तेपणवायुतत्वजाणेनहि के  
मकेवायुतत्वथकीस्वासोस्वासलेवायठे परतुशुभाशुभमां  
एजम शुसमंजे तमेतमारामनमाविचारिजुवो वादीयुक्त  
शुभाशुभनुजाणवांवालुतोमनठे. अथवानवाविचारउठा  
ववावालुएमनठे. पणकाइजिवतोदीशतोनथी.

गुरुवाक्य--एजजीवगयापठीजे कलेवरपमेलुठेतेकेम  
कइंशुभाशुभवेदतुनथी इंद्रीजंतोपांचेसाबुतठे एकवायुत  
त्वमांहेथीगयांठे. परतुतेनेपठिकांइशुभाशुभकारणनेनहि.  
वादीयुक्त --मननोनाशथइगयो माटेकोणवेदे. गुरुवाक्य.  
वायुतत्वगयांठे पणमनतोतमाराकिधार्थीगयुनथी. वादी  
युक्त --मनतेवायुठेकेनहि. जगत्रमांमनपवनकेहेवायठे मा  
टेमनतोवायुनेगुजगयु गुरुवाक्य.--जोमनथाकिशुभाशु  
भवेदेठे तोपृथ्वीआदीकथावरनेविशे वेद्युजोइए परंतुपृ  
थ्वी वनस्पती इत्यादिकजेछे तेकइंशुभाशुभनेवेदतानथी  
तोशुएनेतमेएकभुतमानोबोके पांचभुतमांनोबो कदापित  
मेकेहेशोके पृथ्वीआदीकनेएकएकभुतमानीएवीए तोव  
नस्पतीकायभुतमांनेनहि. वादीयुक्त --वनस्पतिपृथ्वीत



ત્વમાંગણીએલીએ. ગુરુવાક્ય.-પ્રથ્વીતત્ત્વેતોએરસશાયકિ  
 પાચનકરેતે તોપ્રત્યક્ષહાંઅગ્નીતત્ત્વદીશેતે તથાતેનાંપાન  
 પ્રમુખનેમરદીએતોરસનિકલેતે તોજલતત્ત્વપણદીશેતે ત  
 થાસ્વીલીપ્રમુખ એનેવિશેમારીએતો માહેલીકોરેસમાયે  
 તોઆકાશતત્ત્વપણદીશેતે એચારતત્ત્વવનસ્પતીનેવિશેદી  
 ઠામાંઆવેછેનેવાયુતત્ત્વદીઠામાંઆવતોનથીઅનેરસનુપાચ  
 નવાયુતત્ત્વવિનાહાંપાયેતે તોહાંજીવસ્વરોકેનહિ અનેજો  
 જીવનમાનોતો પાંચભુતહામેલવીઆપો પાંચભુતવિનાપુ  
 તલુંબધાયનહિ એવિતારીવોલીતે વાદીયુક્ત:-તમારાશા  
 સ્ત્રમાંશ્વાસોશ્વાસ પર્યાપ્તીતથા શ્વાસોશ્વાસ પ્રાણકહ્યો  
 છે તેવાયુતત્ત્વજે. ગુરુવાક્ય:-તુંશાસ્ત્રતોપ્રથમમાનતોન  
 થી તથાપરોક્ષવસ્તુપણમાનતોનથી અનેહવેતનેઉત્તરદેવા  
 નીજગોનમલીત્યારેતેશાસ્ત્રદેસ્વામવામાડ્યુ તોએમપરોક્ષ  
 નેબાજેતે ત્યારેજિવજકબુલકરની અનેશાસ્ત્રમાંપણજીવ  
 તત્ત્વેલોતે એમશાસ્ત્રથીપુર્ણજાતો અમારેજવાબદેવાનુઘણુસુ  
 કંજેત્રસેઆટેજીવેતેસત્યતે સ્વોટીકલ્પનાજાનેકરેતે વાં  
 પાચે ભુતકાઈજોતાતો જીવભાસનથાયેતે પરંતુજીવતેકે  
 કરવાસમર્થનહિ રાંડદીઠામાંઆવતોનથી તેથીમનમાંશં

रीने जाणवामांश्रावे तेजीवनेविशेआठसांमान्यलक्षणवे  
 तेनानामकहीएगीए अस्तीत्व १ वस्तुस्त्व २ द्रव्यत्व  
 ३ प्रमेयत्व ४ अगुरुलघुत्व ५ परदेशत्व ६ चेतनत्व  
 ७ अमुरतीत्व, ८ एआठजीवनासामान्यगुणवे तथाठविशे  
 पगुणवे तेनांनांम ज्ञान १ दर्शन २ चारीत्र ३ वीर्य ४  
 चेतनत्व ५ अमुरतीत्व ६ हवेतेनोअर्थसंक्षेपथीदेखामीए  
 गीए जीवद्रव्यनागुण तेद्रव्यनेवलगीनेरह्यावे तेनोकोइ  
 कालेनाशनथाय तेनेअस्तीत्वभावकहीए. वादीयुक्तः—  
 जीवद्रव्यतेशुं एटलेजीवकेहेतांशुं द्रव्यकेहेतांशु नेगुणके  
 हेतांशुंतेनीअमनेसमजपमीनथी तेअमनेप्रथमसमजण  
 पामीनेपठीआगलचालो

॥ गुरुवाक्यः—जिवतोजेपुर्वेकह्योते चेतनालक्षणे करीने  
 सहितहोयतेनेजिवकहिये अनेखंधजेएकआखोहोयकोइ  
 कालेखंननथाय तेनेद्रव्यकहिए अनेगुणजेद्रव्यनेउल  
 खावेतेनेगुणकहिये जेमपटवेतेउढवापेहेरवाखपलागेतेथ  
 कीउलखीएकेएपटवे तथाघटवेतेजलजरवा खपलागे  
 तेगुणवमेकरीने घटउलखाय एटलेएकद्रव्यनोगुणवी  
 जाद्रव्यमांमलेनहि जेमघटउढवाखपनलागे पटवेतेजल  
 जरवाखपनलागे एटलेतेपोतेपोतानोगुण पोतानाद्रव्य  
 नेमलीनेरह्यावे तेथकीद्रव्यनीउलखाणथायवे हवेतेद्रव्य  
 उप्रकारनावे तेनानाम धर्मास्तीकाय १ ५ स्ती

२ आकाशास्तीकाय ३ पुद्गलास्तीकाय ४ जिवास्तीकाय  
 ५ काल ६ एतद्रव्यतेतेमध्येधर्मास्तीकाय ७ अधर्मास्ती  
 काय ८ आकाशास्तीकाय २ काल ४ एच्यारद्रव्य एक एक  
 जते अनेजिवद्रव्य एक एवाअनताते नेपुद्गलद्रव्य परमाणु  
 रुपअनताते तथाद्वीपरदेशीनीआदेदेइने अनंतपरदेशी  
 र्वंध एवाद्रव्य उपचारे करीने अनंताते हवेजेजिवस्वरुपते  
 तेकहि एबिए एटले एकजिवनाअसख्यातापरदेशेते अन  
 तागुणते नेअनंतापरजायते तेस्वरुपसर्वे प्रमाणनयथी  
 जाणवामांआवे तेप्रमाणनयनावेनेदते एकप्रत्यक्षप्रमाण  
 विजोपरोक्षप्रमाण प्रत्यक्षप्रमाणनावेनेद केवलज्ञानस  
 र्वप्रत्यक्षप्रमाणते एप्रथमनेद १ अवधीज्ञानमनपरज  
 वज्ञानएदेशप्रत्यक्षप्रमाण २ हवेपरोक्षप्रमाणकेहेताम  
 तीश्रुतज्ञानतेपरोक्षप्रमाणते तेनावेनेद एकद्रव्यार्थक १  
 विजोपर्यायार्थक २ तेद्रव्यार्थकना १० जेदते तथापर  
 जायार्थकनाठजेदते तथा एद्रव्यार्थक तथापर्यायार्थक  
 एवेनअमलीने सातनयपणथायते तेनानाम निगम १  
 संग्रह २ व्यवहार ३ रजुसुत्र ४ शब्द ५ संजीरुढ ६ ए  
 वंभूत ७ तथा व्यवहारनयनापक्षथकीउपचारेत्रणउपनय  
 पणथायते तेनानाम सद्भुतव्यवहार १ असद्भुतव्यव  
 हार २ सद्भुतसद्भुतव्यवहार ३ तेनुस्वरुप आगल  
 कहिशु हवेद्रव्यार्थकतादशनेददेखामिएबिए हवेशुद्ध

व्यर्थककेहेतां कर्मउपाधीरहितसत्तास्वरूपजोइएतोसर्वे  
 नसारीजिवसिद्धरूपते एतेशुद्धआत्माज केहेवायं १ नित्य  
 व्यर्थककेहेतां उत्पातवयनेनविचारीएतोशुद्धद्रव्यसत्ता  
 विपे जोतांतेनित्यते २ तथाअतिशुद्धद्रव्यार्थककेहेतां  
 कल्पनानीअपेक्षानकरवि जेथीगुणपरजायरूपद्रव्यनु  
 हांअनिन्नपणुथयु ३ कर्मउपाधिसापेक्ष स्वरूपनुविचा  
 वृत्तेअशुद्धद्रव्यार्थककहिए जेमक्रोधिआत्मा इत्यादिक  
 मधरावेते ४ उत्पातवयनीअपेक्षासहितस्वरूपनुजोवृत्तेअ  
 द्रव्यार्थक जेमएकसमयमांउत्पातवय धुआत्माछे ५ मे  
 कल्पनानीअपेक्षालेइने स्वरूपनुजोवृत्तेअशुद्धद्रव्यार्थ  
 छेजेमआत्मानाज्ञानदर्शनादिक गुणछेएवबोलु ६ अ  
 यद्रव्यार्थककेहेतां गुणपरजायस्वभाविकद्रव्य ७  
 द्रव्यादिग्राहिकद्रव्यार्थक जेमस्वद्रव्यादिचतुष्टीकअ  
 ताद्रव्यास्ती ८ परद्रव्यादीग्राहिकद्रव्यार्थक जथापर  
 यचतुष्टियअपेक्षाएद्रव्यनास्ती ९ परमजाविग्राहिक  
 र्थार्थकजथाज्ञानस्वरूपआत्मा एटलेअनेकत्वभावचेत  
 नाछेतेमध्येज्ञानमुख्यपणछे सामांतकंतेस्वपरंप्रकाशी  
 छेतेवास्ते १० एटलेद्रव्यार्थकनादशजेंदकह्या  
 हवेपर्यायार्थकना छेमेदकादिदिश  
 यायकहेतां पुद्गलपरजायनिमित्त १ आदिनित्यप  
 कहेतां सिद्धपरजायनिमित्त २ मृदपरजायकहेते

ठे हवेतेनासातगुणवाकीरह्या तेनुस्वरूपकहूतेशांभल बी  
 जोस्वभाववस्तुत्व एवेनामेएटलेवस्तुनो जेस्वभावतेफी  
 टीनेबीजीवस्तुनथाय एटलेघटफीटीनेपटनथाय नेपट  
 फीटीनेघटनथाय जटपिसामान्यविशेषवस्तुनो स्वभाव  
 दिसे जेमएकजिवमुक्तिनेविशे प्राप्तथयो ने एकजीव  
 ससारमाछे अथवाजेमएकघटनेविशे घीनरायतेघीनो  
 घटकेहेवाय एकघटअसुचीप्रमुखनो तेअसुचीनोकेहेवाय  
 एमसामान्यविशेषजणाय परंतुवस्तुधर्मपोतानु छोडीने  
 यांजुधर्मनाआदरे एबीजोगुणद्रव्यस्वभावकेहेतांनिजनि  
 जपोतपोतानापरदेशनासमुदायेकरि अखंमवर्ततोस्व  
 भावठे एटलेजीर्वसख्यातपरदेशी द्रव्यछेधर्मास्तीकाय  
 तथाअधर्मास्तीकाय असख्यातपरदेशीद्रव्यछे आका  
 शअनंतपरदेशीद्रव्यठे एचारेअखडद्रव्यछे एचारेद्रव्य  
 कोइकालेखमीतथायनहि एद्रव्यत्वस्वभावकहिये शीष्य  
 वाक्य-स्वामिपुर्वेठद्रव्यकह्याछेने इहाचारेद्रव्यकेमवता  
 व्या गुरुवाक्य-जोपुद्गलद्रव्यपरमाणुने कहियेछीयेतो  
 परदेशादिकलाघतानथि अनेजोखधनेद्रव्यकहियेछीये  
 तोएस्वभाविकद्रव्यछेनहि एविभाविकद्रव्यठे माटेएनाद्र  
 व्यनाविचारनीचरचाघणवैतेइहांजोकरवा बेशियेतोअथ  
 गोरवथइजाय माटेएद्रव्यइहांगणाव्योनहि तथाकाल  
 द्रव्यवैतेउपचारेठे एकांइवस्तुकशीछेनहि माटेएपणइहां

गएयो नयी तेमाटेचारद्रव्यअखंभीतछे एनेविशेद्रव्यत्व  
 स्वभावरह्योछे एनेविशेसत्द्रव्यपणानुलक्षण तादृश्यरु  
 पदीसेवे पोतानागुणपरजायनेविशे व्यापीरह्यो उत्पातव  
 यध्रुवसंयुक्ततेनेद्रव्यकहिये एटलेएद्रव्यनुलक्षणकह्युए  
 मीजोगुण. ३ प्रमेयत्वकेहेतां जेस्वपरनीवेहेचएतेनुजे  
 प्रमाणतेनेप्रमेयत्वकहिये तथापोतपोतानास्वभावनेवि  
 शेप्रणमवुपरजावनोत्यागकरवो तेनेप्रणम्यत्वकहिये ए  
 चोथोगुण. ४ अगुरुलघुत्वकेहेतां सुक्ष्मभाववचनगो  
 वरनहिप्रतक्षनहि आगमप्रमाणछेते पन्नवणाथकीजा  
 एजो ५ प्रदेशत्वकेहेतासुक्ष्मजेजावपरमात्माजास्वीतत  
 त्वनुजे हेतुपणतेहनेनहोयते आज्ञासिद्धकरवु केमकेद्र  
 व्यअन्यथानहोय प्रदेशस्वभावकेहेतांस्वेत्रनोअविभागते  
 नेप्रदेशत्वकहिये. ६ चेतनत्वकेहेताचेतनपण एटलेचेतन  
 नुअनुभववु यदुक्तं—श्लोक॥ चैतन्यमनुभुतिरुयात् सक्रिया  
 रुपमेवच क्रियामनोवच कायेष्व चिंतावर्ततेध्रुवं. ७ एट  
 लेचेतनत्वपणकह्यु ७ अमूर्तीत्वएटलेरुपादिकेकरीर  
 हीत. ८ एआठगुणिकरिनेसहीततेनेजीवकहिये इत्यादी  
 कबीजापणजीवनी ओलखाणनास्वभावादीकछे तेआग  
 लप्रसगेआवशे त्यां केटलाएककेहेवागे एटलेएवीरीते  
 जीवतुस्वरुपओलखवु शंकाकखाहोयतेकाढीनांस्ववि  
 तथाजेशास्त्रनीगका तेपण समजवुके सर्व

ज्ञानां वचन अने छद्मस्थना वचन कांइ छांना  
 रेहेनहि एटलेसर्वज्ञनावचनने आत्मस्वरूपनी रमणता  
 तथाजिवादिकनवतत्व खटद्रव्य तेपक्षप्रमाणादिकेकरी  
 नेजाणवा तथा जेनयनिक्षेपाप्रमाणप्रमुख जेदवेहेचवा  
 तेनयशुद्धव्यवहार कह्योछे गामाटेजेविकल्पेकरीने एस  
 र्वज्ञगजालथायछे मुलस्वभावेजोतातो कांइतेस्यादवाद  
 पक्षनीखपछेनहि इहातोअनेदज्ञानमुख्यपणेखपलागेछे  
 शिष्यवाक्य-स्वामीस्यादवादनी खपनथी त्यारेतोएकात  
 वचनथइजाय- गुरुवाक्य-जेस्यादवादवर्णवबु तेजव्यव  
 हारछे-तथाखटदर्शनसमुचयग्रथनीटीकामाएमजकह्युछे  
 ॥उक्तंच॥वादइतिविकल्प॥तेमाटेएकआत्मस्वरूपनुरमण  
 तथाआत्मानोवारतातेजसत्यछे-शिष्यवाक्य-त्यारेएटला  
 वधानेदकरवानुशुकारण-गुरुवाक्य-जेएभेदादिकवेहेच  
 वाथकीसामानेघणोखुलासोथाय एटलावास्तेकरीनेजे  
 दनुवेहेचवुथायछे माटेएवाशास्त्रजेछे तेसर्वेजाणवा-शि  
 ष्यवाक्य-स्वामिजेगणताणुजोगप्रमुखशास्त्रछे तेशाका  
 रणेकह्याहशे-गुरुवाक्य-जेगणताणुजोगछे तेजाणवारु  
 पछे तथाधर्मकथानुजोगछे तेपणजाणवारुपछे अनेजेचर  
 एकरणानुजोगछे- तेएकआदरवांजोगछे शिष्यवाक्य  
 स्वानिएतोपुद्गलनीकरणीछे तेनेआदरवानु शंकारण  
 तेएचरणकरणानुजोग नहिआदरेतोसासन

नीललखाणरेहेशेनहि अनेललखाणनेहिरहेतो सासननो  
उछेदथइजशे एटलावास्तेएचरणकरणानुजोगवांधेलोछे  
गाथा॥जइजिणजइयंपवजहंतो ॥ माववहारनयमयं  
मयह ॥ विवहारपरीवाये ॥ तिथुछेउजउवश ॥१॥

इत्यादिकवचन जद्रवाहूस्वामिनांपणछे माटेएसास  
ननीललखाण, तथासासननेराखवामाटे, एअनुजोगछे  
हवेपांचमुअणाजोगमिथ्यात्वकहियेछिये एटलेअणा  
जोगकेहेताअजाणपण एटलेतेनेधर्मनीतथा, वस्तुनीक  
शिमालमनथि तेनेअणाभोगमिथ्यात्वकहिये ५ एटले  
द्रव्यमिथ्यात्वना घरनुएनिश्चयमिथ्यात्वधु, शिष्यवा  
क्य - स्वामिव्यवहारमिथ्यात्वना छजेदकह्या, तथानि  
श्चयमिथ्यात्वनाप्रंदरजेदकह्यातेमांफेरशोछे:

गुरुवाक्य:-वेहेवारमिथ्यात्वनाछजेदकह्या तेकरणी  
रुपलोकनाजोवामांआवे माटेएनेवेहेवारकहीए अनेनी  
श्चयमिथ्यात्वना १५ भेदतेमनमांधारवासमजवानाछे ए  
बाहाजलोकनाजोयामांथोभाआवे माटेएनेनिश्चयमिथ्या  
त्वकह्यु एटलेद्रव्यमिथ्यात्वनुस्वरूपकह्यु हवेभावमिथ्या  
त्वनुस्वरूपकहियेछिये, एटलेभावकेहेता आत्मानोस्वचा  
व जेधर्मधर्मकरे, नेपरजावमांरमे, तेनेजावमिथ्यात्वकहि  
ये. शिष्यवाक्य:-स्वामिअमनेखुलासोकरीने समजपा  
मो संक्षेपथकिअमारीनजरपोहोचैनहि. गुरुवाक्य:-जे



परजावकेहेता जेजमनीदशातेनेपरभावकहीए एटलेजम  
नाजेजेकामछे तेनेधर्मकरीनेमानेछे केहेताजेमनेवचनका  
याथकिजेकरणीकरवीतेसर्वे आश्रवछे तेनेसंवरकरीमा  
नेकेहेताजे जमनीक्रीयानावेभेदछे शुभतथाअशुभ एटले  
संसारादिककरणी तेअशुभकरणी तथाशुभनाअनेकजेद  
छे एकेंद्रीयादीकनीदया तेनुपालणपोपण एसर्वेपापान  
बंधीयापुन्यनेविशेछे जथाजोगतरतमजोगछे तथाजेबि  
जीशुभकरणी शघ तीर्थजातराप्रमुखकरवाकराववा ते  
पणसर्वेशुभकरणीछेतथाजसवजेजीउपाध्यायेसमकितना  
संडसंडबोलनीसजायनेविशेएवुकह्युछे जेआठप्रभाविक  
साधुनहोयतो तीर्थजातराप्रमुखवालाछेकप्रजाविकछे ए  
टले एकइआठप्रजाविकमाछेनहि तथातेने समकितना  
पणनेमछेनहि तथाकरणीपणशुभनीजछे पछीतत्वतो  
केवलजीगम्ये तथाजे वरतनेमप्रमुखते पण शुभकर  
णीछे परतुदेशविरती सर्वविरती छठासातमागुण  
ठाणानाजावत अमियारमासुधीनाछे तथातपवे तेसर्व  
पुन्यानुबंधी पुन्यमापणछे तथानिरजरांमापणछे ते  
नोविवरोकेहियेछिये एटलेपाचमाछठागुणठाणासुधी प  
रमादभावछे तीहांसुधीक्रियाआचारपणछे सातमेगुणठा  
णैअप्रमादिछे तेमाकाइक्रियाआचारछेनहि तेछठासातमा  
छे तेने रजरा एछे तथाशुभाश्रव

पणछे अनेजेनेआत्मउपयोगनथी तेनेएकलोशुभाश्रवछे  
 अनेजेसातमा उपरअगिघोरमासुधी आत्मउपयोगाविना  
 होयनहि तेनेतोनिर्जराहोय तथापुन्यानुबंधीपुन्यहोय ए  
 वनेवानांलाधे माटेएमविचारीजोव एआश्रवनेधर्मकरी  
 माने तेनेभावमिथ्यात्वलागे माटेजेधर्मने धर्मकरीजाणे  
 अने आश्रवने आश्रवकरी जाणे एवाजीवती जेवजाछे  
 अनेगुनाश्रवनेधर्मकरीमानवावाला जीवघणादिसेछे ते  
 नेभावमिथ्यात्वकहिए तथाअनादि मिथ्यात्वादिकनेद  
 गुणस्थानककरमारोहनीटीकाथकीजाणजो तेकारणमा  
 टेएजेद्रव्यभाव मिथ्यात्वगयाविना समभावथायनहि ने  
 समभावथायविना श्रद्धास्थिरथायनहि श्रद्धाविनासम  
 कितहोयनहि समकितविनातपजपकिरीयाजएयुकशुयेले  
 खामांगणायनहि अनेज्ञानविनातो धर्मतथामुक्तिछेजन  
 हि शामाटेके आत्मस्वरूपनाउपयोगविनातो समकित  
 केहेवातुनथी उपयोगछे तेतोज्ञानमाछे तेकारणमाटेज्ञा  
 ननीखपकरवी शामाटेकेज्ञानछे तेहिजसमर्किततथाचा  
 रीत्रतथामुक्तिकहिए तेश्रीजसविजेजीउपाध्याये सवा  
 सोगाथानातवनमांकहुंछे जेज्ञाननोतिक्षणउपयोग तेने  
 चारीत्रकहिए तेमाटेज्ञानछे तेहिजचारीत्र तेहिजेमुक्तिछे  
 उक्तं बसवैयो एकतिसा॥कोइक्रुरकष्टसंहं तपसांशरी  
 रदहै धुमपानकरै अधोमुखन्हैकेझुलेहै केइमहाव्रत

गहै क्रियामेमगनरहै वहेमुनिजारमे पयारकेसेपूलेहै  
 इत्यादिक जीवनकोसर्वथामुगतिनाहि फिरेजगमाहि ज्यो  
 वयारकेवघुलेहै जिनकेहियेमेज्ञान तिन्हहिकोनिर्बान  
 करमकेकरतारजरममेभुलेहै १ तेकारणमाटेज्ञानछे एहि  
 जमुख्यछे माटेज्ञानवन्नेकरिनेसर्वद्रव्यनुजाणपणुकरिने  
 पाचद्रव्य हे जाणिनेछाडवा एकचेतनाज्ञानरुपडपादेजा  
 णिनेआदेरवो तेथकीजआत्मानि कर्मथाय माटेआत्मानु  
 ज्ञासनकरिनेमाहेव्यापकपणुकरवु नेरमणकरवु त्यांहा  
 नेदपणुनलाववु एटलेआत्मातेजपरमात्माछे एविरिते  
 तद्रूपस्वसत्तागवेखिनेशक्तिजावेगुणछे तेव्यक्तिभावमार  
 मणकरे तेनेजिवनमुक्तकहिए तेनोआत्माकर्मरुपरजथकि  
 निर्मलथाय तेनाअसख्यातापरदेशनिर्मलकरिने सिद्धक्षे  
 प्रमाजइनेसिद्धपणेरहे तेनेफरीथीजन्ममरणकरवानपडे  
 अनताकालसदाएसुखमारहे तेविनाकोइमुक्तिचाहेछे जे  
 केटलाएकतोएमजाणेछेके तपथकिमुक्तिलेइशु केटलाए  
 जजाणेछेकेक्रियाथकिमुक्तिलेइशु केटलाएकजाणेछेकेप्र  
 भुपुजवाथकिमुक्तिलेइशु पणतेवातमिथ्याछे इहाकोइ  
 गहेशे के प्रभुपुजवामा मुक्तिठामठामकहिछे नेतमेना  
 मकहोछो तेनोउत्तर के मुक्तितोआत्म स्वरुपमाछे  
 थाजसाविजेजि कृत साक्षित्रणसें गाथानातवलमां वा  
 १५५५५५ के अमेप्रभुपासे मुक्तिमागीलेइशु ते

नाउत्तरमाएवकह्युंछेजे कोणमुलेकरिने प्रभुपासेथीमु  
 क्तिवेचाथीलेशो एटलेबोधबीजकांडिधुआवतुंनथी त  
 थाश्रीहरिचंद्रसुरिजिकृत खटदर्शनसंमुख्य ग्रंथनेविशे  
 एवंकह्युंछेके रागद्वेपनांतजवाथकि तथाज्ञानदर्शनचारि  
 त्रनाआराधनथकिमुक्तिमले

॥उक्तच॥ जिनेद्रोदेवतातत्र॥ रागद्वेपविवर्जितः॥ हर्त  
 मोहमहामलः॥केवलज्ञानदर्शनः॥४७॥सुरासुरेन्द्रसंपूज्यः॥  
 सद्भूतार्थप्रकाशकः॥कृष्ण कर्मक्षयंकृत्वा॥सप्राप्त.परमंप  
 दं॥४८॥ जीवो १ जीवो २ तथापुण्य ३॥पाप ४ माश्रव ५  
 संवरौ ६॥ बंधो ७ विनिर्जरा ८ मोक्षो ९॥नवतत्वानितन्म  
 ते॥४९॥ तत्रज्ञानादिधर्मभ्यो ॥ जित्वाजित्तोविवर्तिमान्॥  
 शुभाशुभकर्मकर्ता ॥ भोक्ताकर्मफलस्यच ॥५०॥ चैतन्य  
 लक्षणोजीवो १॥यश्चैतद्विपरीतवान्॥अजीवः २ ससमा  
 रूपात्॥पुण्यं ३ सत्कर्मपुद्गलाः॥५१॥पापं ४ तद्विपरीतं  
 तु॥मिथ्यात्वाद्यास्तुहेतवः॥ यस्तैर्वंधःसविज्ञेयः॥ आश्रवो  
 सो ५ जिनशासने॥५२॥ सवर ६स्तन्निरोधस्तु॥बंधो ७जी  
 वस्यकर्मणः॥अन्योन्यानुगमात्माचा॥यःसंबंधोद्वयोरपि ॥  
 ५३॥वद्वस्यकर्मणःसादो॥यस्तुसानिर्जरांमंता ८॥आत्यंति  
 कोवियोगस्तु॥देहादेर्मोक्ष ९ उच्यते ॥ ५४॥एतानिनवतत्वा  
 नि॥यःश्रद्धतेस्थिराशयः॥संयुक्तज्ञानयोगेन॥ तस्यचारि  
 त्रयोग्यता॥५५॥तथाभव्यत्वपाकेन॥यस्यैतत्त्रितयंभवेत्

सम्यग्ज्ञानक्रियायोगा ज्जायतेमोक्षभाजनं॥५६॥ प्रत्यक्षचपरोक्षंच॥द्वेप्रमाणेतथामते॥अनंतधर्मकवस्तु॥प्रमाणविषयस्त्वह॥५७॥ अपरोक्षतयाऽर्थस्य॥ग्राहकंज्ञानमीदृशं प्रत्यक्षमितरज्ञेयं ॥ परोक्षग्रहणेक्षया॥५८॥

१ एटलेजीनिसासननुमुलकह्य एटलेजैननादेव केवाछे जीनेद्रो केहेताजीनन्यमसामानकेवली तेमाहेइद्रसमानएवातीर्थकरपरमात्माते देवछे तेरागद्वेपे करीनेवर्जितछे महामोहमल्लकेहेता मोहराजानेहणीनेकेवलज्ञानकेवलदर्शनपाम्याछे माटेमोहतथारागद्वेशने जीतेतेनि मुक्तिथायपण ते विनाकाइमुक्तिहोयनहि तथासुरासुरइंद्रपुजीततेशामाटेके सदभुतार्थ केहेताजथारथपरुपकछे तथाकृतकर्मकेहेता पुर्वशुभाशुभकर्मकरेलां तेनोक्षयकरिनेसंप्राप्त केहेतापाम्याछे परमपदकेहेतामुक्तिप्रतेएटले करघाकर्मभोगव्या विनाछुटेनहि अनेशुभाशुभकर्म क्षयकरघाविना मुक्तेजायनहीं माटे कोइनाथी कोइनी मुक्ति थती नथी तथा मुक्तितोज्ञानने विशे ठे तत्रज्ञानादिधर्मभ्यो केहेताज्ञानदर्शन चारित्र आदे धर्मकह्य तेधर्म जिन्नाजिन्नकेहेता नेदतथाअभेदएटलेजीवाद्दीनवतत्वनुवर्णववुतेनेदधर्मकहिये तथाआत्मद्रव्यनुजेगुणपरजायसहितकेहेवु तेअभेदधर्मकहिये तथा वचलाश्लोकोमां एनवतत्वनोविवरोठे तेनवेतत्वजीनिसा-

सननेमतेकह्यांठे एटलेनवतत्वनीसर्धाकरे तेनेसमकीती  
 कहिये तेमद्वेपांचतत्वतजवांकह्यांठे अजीव. १ पुन्य. २  
 पाप. ४ आश्रव. ४ बंध. ५ कोइकेहेशेकेपुन्यनेतजवु केम  
 कोहोठोतेनेकहिये अमेकेहेतानथीतेउपरलखेला श्लोकने  
 विशेषपुन्यनेपुद्गलकहिनेबोलाव्युंछे.

॥उक्तंच॥पुण्यंसत्कर्मपुद्गलाइतिवचनात् एटलेपुन्यठेतें  
 सतेकेहेतांशुभकर्मनापुद्गलठे पुद्गलतज्याविनातोमुक्तिथाय  
 जनहि शामाटेकेएहिजउपरकहेला श्लोकनेविशेकह्युंछे  
 ॥उक्तंच॥आत्यंतिकोवियोगस्तु॥देहादेर्मोक्षउच्यते॥श्लो  
 क ५४ मो टीका॥तथेत्युपदर्शने ॥ परिपक्वचव्यत्वेनतद  
 ज्ञावात्॥अवस्यकमोक्षगंतव्येन॥ पुंसस्त्रियोवाज्ञानदर्शन  
 चारित्रत्रयंसपुमानूमोक्षजाजनं ॥ मुक्तिश्चियंभुंक्तेसम्यगि  
 ति॥सम्यक्तज्ञानमागमाऽवबोध क्रियाचरणकरणचरणा  
 त्तिका॥तासायोगसंबंधःनकेवलज्ञानदर्शनचारित्रं वामो  
 क्षहेतुर्किंतुसमुदितंत्रय ॥ एटलेएचोपनमाश्लोकनीटीका  
 ठे तेनेविशेपुरुषादी वेदनेविशेमुक्तिनीनापामीठे तथाच  
 रणसितरी करणसीतरीथकीपण केवलज्ञानकेवलदर्शन  
 निनापामीठे माटेपरमेश्वरपुजवामांतो मुक्तिक्वांयकी  
 जहोय मुगतितोज्ञानदर्शनचारित्रनेविशे कहिठे तेंटीका  
 थकीजाणजो इहांकोइकेहेशेकेचारित्रतो पंचमहाव्रतादी  
 कवेहेवारजठेकेनाहि त

एउपरनाश्लोकनेविशेषचावनमोश्लोकते तेनेविशेषएनव  
 तत्वनीसर्वाकरेतेनेसमकीतिकहिये तेहिजसम्यक्तज्ञानते  
 नेजोगेरमणतातेनेचारीत्रकह्युते नेसाध्यसाधन जोगजे  
 व्यवहारचारीत्र तेनुप्रयोजन तथाफल आकाशनाकु  
 शमवत कह्युते तेश्लोकनीटिकाथकिजाणजो जेसमकित  
 ज्ञानचारित्रतेजमोक्षते शामाटेकेसम्यक्तज्ञानक्रियायोगा  
 केहेतातत्वनीजे सरधाकेहेता जेद्रव्यगुणपरजाय ज्ञा  
 नादि रत्नत्रयीनुसतज्ञासन प्रत्यक्षपरोक्षवस्तुनुविचारवु  
 तेने ज्ञानकहिए नेसतवस्तुनीसरधाकरवी तेनेसम्यक्त  
 कहिए एटलेसरधातेसमकितजाणवु तेज्ञानविचारवुते  
 क्रिया एटलेसम्यक्तज्ञानक्रिया योगाजायतेमोक्ष नाजन  
 एटलेएवुसमकितज्ञानक्रियाहोय तेमोक्षनुजाजन थाय  
 तथाप्रत्यक्षच परोक्षच द्वेपरमाणेतथामते तेप्रमाणनुस्व  
 रुपटिकाथकिजाणजो तथाअनंतधर्मकवस्तुप्रमाणविषय  
 स्त्वह ५७ यस्यटिकायेनकारणेन यदूत्पादव्ययध्रौव्या  
 त्मक तत्सत्स्वरूप मिष्यतेतेनकारणेन अनंतधर्मात्मक  
 वस्तुप्रमाणगोचर सर्ववस्तुपु उत्पत्त्यादित्रय युक्तास्यैवा  
 अनंतधर्मतातेनैवपुनरनंत धर्मात्मकत्वं मुक्तनपौनरुक्त्य  
 ५७ एटिकानेविषेउतपादव्यय ध्रुव्यात्मीक तेसततेने  
 सतस्वरूपकहिए तेनीजेनेइगते तेनेअनंतधर्म आत्मिक  
 वस्तुप्रमाणजाणीने सर्ववस्तुनुउत्पादादिक त्रिययुक्त

शवेतेनेअनंतधर्मआत्मककहिए तेनीजमुक्तिकहिएतेवि  
 नामुक्तिठेनहि एजिनसासननुसारठे माटेएआत्मस्वरूप  
 नेविशे भेदअनेदज्ञाननुविचारवु एटलेशुद्धव्यवहारतेने  
 दज्ञानठे नेशुद्धनिश्चयकेहेतां अनेदज्ञानठे हवेनेदज्ञान  
 केहेतांजेज्ञानदर्शन चारीत्रआत्मानाघरनुठे एमजेवोल  
 वुतेव्यवहारथयोएवुजेध्यानतेनेभेदभावरह्यो पोतेनेपोता  
 नागुणमाजुदापणुरह्युं आत्माएकहतोतेना त्रणने  
 दथयाएटले, व्यवहारनयकह्यो जोअभेदज्ञानविचारीने  
 जोइये त्यारेतोआत्माएकजदेखायठे एकजजाणिएबिएते  
 नेजविशेरमणकरिए इहांज्ञानादिकगुणजुदानथी आत्मा  
 तेज्ञानादिकगुणं तथाज्ञानादिकगुणतेआत्मा जथाद्रष्टांते  
 सुवर्णनुजारेपणु स्निग्धपणु पिलाशपणु तेकांसुव  
 र्णथकिनोखुनथी तेजसुवर्णठे एविरीते आत्मस्वरूप  
 निसरधाकरवी तेनेसमकितदर्शनकहिए तेजाणवुतेने  
 ज्ञानकहिए एनेजविशेथीरथइनेरमणकरवुं तेनेचारित्रक  
 हिए एजस्वरूपनेउपयोगदेइने जुवेतोसिद्धपरमात्मारु  
 पजठेएविरीतेजध्यान करतांमुक्तिथाय पणवीजिरीतेसर्व  
 थामुक्तिथायनहि. उक्तंच

दूहाः--एकदेखीयेजानियो॥रमिरहियेएकठौर॥ समल  
 विमलनविचारीये॥ यहसिंद्धिनहिऔर, १  
 सबैया. एकतिसा॥ जाकेपदसोहतमुल्लन अनंतज्ञान



स्तरो जीउंजलमाहीतेल मुखमुखएहीप्रगटहोवो अथ  
 गुणकीरेल ॥९॥ अक्षयथीतीमेरुतणी तेमएग्रथनीवास  
 रवीशशीपेरेअवीचलरहो उत्तममुखमेवास ॥१०॥ संवत  
 तंगणीशतंगणीशमा सुदरआसोमास कृश्रपक्षतिथिसप्त  
 मीपुरणथयोउलास ॥११॥ शितलकारीसोमवार आमो  
 वेगाममोजार वाचजोभणजोचविजना तेलेगेभवपार ॥  
 १२॥ एग्रंथरुदियेधरी ध्यानकरशेजेह मुनिहुकमसुखस  
 पदा पामशेगिववधुगेह. १३ इतीस्तपुदण्य

इति श्रीमिथ्यात्वविध्वंसननामा  
 अथसपूर्ण

# श्रीरागमाला.

श्रीगुरुभ्योनमः

उसकानामदर्वविलासः ॥ याग्रंथमैरागवालाकुतोराग  
हैठरकविजनाकैलीया ठरपंथितजनाकैलियादवाणजोग  
मै चिदानंदलीयाअनुलोकों स्वरुपहैसोग्यातापुरसांका  
बीचारवाजोगहै ॥ प्रथमरागभैरवी ॥ चिदानंदनजोरेभाइ  
चिदा० ॥ आकणी. सहेजस्वनावमेंसदाजोरहैवे रागभैरव  
मेगावे वोहीपरीब्रह्मवोहिपरमेश्वर वोहिचिदानंदका  
हावेरेभाइ ॥ चिदा० ॥ उनकिकिरपावमेयेहोवै मेरीइच्छापु  
री रागमालामेकरतहू नहिकोइवातअधुरीरेभाइ ॥ चि  
दा० ॥ ढरवाणपरजायजहिने येसवरागमेगाउ मुनिहूक  
मचिदानंदमुरति शुद्धस्वरुपमेपाउ ॥ इतिप्रथमपदसंपूर्ण ॥

रागनिजैरवी ॥ चेतनदरवजाणेरी दरवगुणपरजाय  
उनकु लक्षणैतेसमजेरी ॥ नएनिपपतत्वैकुजाणे जेदसंक्त  
करेरी ॥ १ ॥ श्रीजीनवैरनेऐसाजाराखा परजायनेएग्रहेरी ॥  
सुद्धसमकीतउनसेहोवै यावीनचितठरेरी ॥ श्री. २ ॥ चारअनु  
जोग्यमेएकजाराखा ढरवाणजोगकहेरी ॥ मुनीहूकमएनीश्वे  
अनुजोग रागनीभैरवीवोहोरी ॥ श्री. ३ ॥ इतीदुतीयेपदसंपूर्ण ॥

रागनीबिजास ॥ जीवादीवस्तुदरवकुभावस्वरुपीतेक  
हियेरे जीदरवैदरवप्रैतेकैतेजाणो बिरोधअपनेमेनालहियेरे

॥जी. १॥ जथारथस्वरूपहैयाका व्यापव्यापकेकहियेरे ल  
 वृणयेहैवस्तुस्वरूपका सचाचीतमेलहीयेरे॥जी. २॥ जीवद  
 रवअनंताजाण्य कारजनेदेजाणोरे ॥ भावनेदेतोएकज  
 कहिये खेत्रकालनाववखाएयोरे ॥जी. ३॥ समुदायएउन  
 काभास्या दरवादीचतुष्टीलहियेरे॥मुनीहूकमचिदानंदज  
 जतां रागनीवीभासएकहियेरे॥जी. ४॥ इतित्रीतीयेसपूर्णः॥  
 रागनीललता॥दरवप्रैतैसमजेनेजीया प्रदेशप्रदेशेजांणो॥  
 स्वैस्वैकारजकारनउनका साधयरूपवखाणो॥ दरव. १॥  
 अनताअविजागपरजायका तीनकेसमुदायरूप॥ताकोगु  
 एकहैहैग्यानि याकोसमजोसवैरूप॥दरव. २॥ कारजका  
 रणभिन्नतिवै तिहासाधयरूपलहिए॥ गुणपरजायजिन्न  
 भिन्यैये गुणपणअनंताकहिये ॥दरव. ३॥ गुणगुणपरतै  
 परजाय अवीजागरूपलहिए॥अनतापणसरखाभास्या  
 वरजायआस्तीरूपकहिये॥दरव ४॥ प्रतिके२वस्तुअनंती  
 तैथिअनंतगुणजाणो ॥ मुनिहूकमसाधयरपरजायरागनि  
 ललतागवाणो॥दरव. ५॥ इतिचतुर्थयसंपूर्ण॥

रागनिपटमंजणी ॥ उठतेरोरुपदेखोचिदानंदराया  
 दर्वकेलक्षणजाणो तीनुकानेदकाहाया॥ उतपातवयैद्वुव  
 जुक्तसंतलउगाहाया ॥१॥ दरवास्तिकपरथमनेयजास्या  
 परजायेनयैदूजो॥उभयैनयअपिष्याविलंठनजाणो उनसै  
 मोहोधुजो ॥२॥ गुणपरजायसहितेदर्वे जाणगबक्तासा

चो ॥ मुनीहुकमयेपटमंजरी रागनिगायराचो ॥ ३ ॥  
इतिपदपंचमोसंपूर्ण॥

रागनीपट ॥ परजायनयबिचारतचेतन संतधर्मसोक  
हियेरो॥परःअर्थक्रीयाकरेजोदर्वे परजायअपीप्यालहिये  
रो॥१॥परःआपआपणीसक्तीसारु धर्मअपीप्याकहियेरो॥  
धर्मअधर्मआकाशजाणो पुद्गलजतेलहियेरो॥२॥ ठाका  
लदरवतेनास्यो आपआपकेलप्यालहियेरो॥मुनीहुकमये  
दरवस्वभावै रागनिषटयेकहियेरो॥३॥इतिपदठोसंपूर्ण

रागमालकोस॥हेजीयाजेदग्यानयहैकीजै पंचास्तीका  
यचितलीजै॥आंकणी॥ठादरवैकालसोभास्या उनकुआ  
स्तिनेकीजै ॥ अप्रदेशीसैदातेजाणो उपचारदरवतोलिजै  
॥१॥ तेकारैणेअस्तीकायनेजाणौ वस्तुविनाकाहाकीजै ॥  
नास्तीपणोदरवकोदेखिउपचारैनेपतिजै॥२॥रागमालको  
समाहिगायो कालतणोअजावै ॥ मुनिहुकमपंचास्तीका  
यको आगैनाखुस्वैभावै॥३॥ इतिपद ७ संपूर्ण॥

रागनीटोमी॥समेजोरेहुग्यानद्रव्यकु खटदरैवकौबिचा  
र ॥ आंकणी॥ प्रथमद्रव्यधर्मास्तीनास्यो लोकप्रमाण  
अखं ॥ एकद्रव्यउनकोएजाणौ जिवपुद्गलकुआणंद ॥  
॥गाथा१॥ जेजेगतिप्रणमता पुष्टहेतुएजाणो॥असंख्य  
परदेशलोकप्रमाणे एहिदर्ववखाणो॥२॥जबजिवमुक्षैजा  
वै तिहाकामनआवै॥मुनीहुकमयेशुद्धस्वरूप नेटोमीराग

नीगावै ॥३॥ इतिपद८संपूर्ण॥

रागनीआसावरी ॥ सिद्धस्वरूपप्रणमिजेभाइ ग्यानशु  
धारसपिजै ॥आकणी॥ सिद्धअवस्तामेंसाजकारि अधर्मा  
स्तिकायकहिजै॥स्थिरताभावअनंतायाको उपयोगमेंपण  
लहिजै॥गाथा१॥जिवपुद्गलस्थिरताभावै पुष्टहेतुएकहिण॥  
असंख्यपरदेशएलोकप्रमाणो दुजोदरबएवहिण॥२॥आ  
सोछोमआसावैरीगायो शुद्धस्वरूपमैरहिण॥मुनीहूकमचि  
दानंदजनतां शिवरमणिसुखलहिण॥३॥इतिपद९संपूर्ण॥

रागनीविलावल ॥जियालोकस्वरूपकुजाणो अवगाह  
कस्वजावखाणो॥आकणी॥पुष्टहेतुसर्वदरबकु आकास्ति  
कायकांहांणो॥ अवगाहानासर्वकु देवैसोयेदोजातजाणो  
॥१॥लोकाअलोकदोयकहिण वाकोस्वरूपहुंजाखु॥ जिवा  
दीस्वरूपवसेजीहा सोइलोककैहिदाखु॥२॥असंख्यपरदे  
शउकेजाखे अवकहूअलोकविचार॥ अनंतपरदेशउनके  
जाखे पणनहिदरबपरचार ॥३॥ अवगाहकशक्तीउनमै  
पणलेनेवाला नाहि॥ लोकअलोकउजयेमीलकै येस्वरूप  
हैत्याहि॥४॥ अनंतपरदेशीदरवैयेतीजो आकास्तिकायते  
कहिये॥मुनिहूकमयेजाजनकाहाणो रागनीविलावलल  
हिये॥५॥ इतिपद १० संपूर्ण॥

रागनीकुब ॥चेतैनक्योतुनाहिबीचारै पुद्गलदरवैकुधा  
॥आकणी॥ अतिशुद्धमैपरमाणुजाण्या नित्यैस्वजाविकजे

हा॥ बरणगंदरस एक एक भांख्या दोय फेर से कहिये तेह ॥ १ ॥  
 असे पंचगुणहि जीनमें सोई परमाणु जाण ॥ कारण कारण  
 मील के ननमें पुरण गलन चित आण ॥ २ ॥ पुद्गल दर बैया  
 कौ कहिये चोथी रूपी मान ॥ मुनि दूकमये रागनी कुकव  
 अगै पुद्गल वखाण ॥ गाथा ३ ॥ इति पद ११ संपूर्ण ॥

रागनि गुण कली ॥ जीया पुद्गल स्वरुप ते येह लोक में  
 अनंता तेह ॥ घणुक पंद ते जाण अनंता तेह वखाण ॥ गाथा १ ॥  
 तणुक पंद पण कहिये औं असंख्या तीक पंद लहिये ॥ असं  
 ख्या तीक पण भाख्या अनंता ए कतीहांदा ख्या ॥ २ ॥ ये सरं  
 बेस बद जाणो येक ये व्या अनंत बैखाणो ॥ येक आकाश परदे  
 से कहिये अनंता पंद ते लहिये ॥ ३ ॥ ये मपंच परकार थीजा  
 ख्या अचेतन चित मै राख्या ॥ मुनि दूकम कहै ते त्यागो गुन  
 कली कुगांणै लाग्यो ॥ ४ ॥ इति पद १२ संपूर्ण ॥

राग ही मोल ॥ अरे जीया जाणतु स है जसु भाव कु चेतना ल  
 क्षणै स है तदाख्यो ॥ चेतना दोय परकार की जाणी ॥ ग्यान दर  
 शन उपी योग मे आणीयै ॥ अनत पर जाय परणा मिके दरै व  
 ये उन के दोय प्रकारे बैखाणीयै ॥ १ ॥ करत्वा दि लंछा है जीव  
 का पर चिते अशुद्ध जानो ॥ शुद्ध स्वभाव मै रमै जव चिद धन  
 शुद्ध पर जाय कुते है मानो ॥ २ ॥ उपी योग वंत ते चेतना जानी  
 ये वीन्य उपी योग जे मै जानो ॥ मुनी दूकम राग हि मो गो वाथ की  
 शुद्ध उपी योग थी शीव सुख वस्त्रांनो ॥ इति पद १३ संपूर्ण ॥

रागसारंग॥ पचास्तीकायकेमानमे नीजरूपपीछाना  
 तानमै॥ अरूपीचिदानंदस्वामी जीवएकवखानमै॥ पं० १॥  
 ओरत्वारौआस्तीकायये अजीवदरबतेजाणीयै॥ वाकेपरा  
 वर्तननीमीतै कालदर्बवखाणीयै ॥ पं० २॥ प्रत्तांप्रत्तैवैके  
 कारणमाटे बटोदर्बचितआणीयै येदर्बनेपरदेशनहीछै ते  
 थीआस्तीकायनजाणीयै ॥ पं० ३॥ व्यवहारनयअपीक्ष्या  
 यदर्ब समीयेखेत्रदाखीयै॥ आदितपरीवेदपरीमाणे समी  
 येआवैलीवखाणीये ॥ पं० ४॥ तेमाटेआस्तीकानहि  
 आस्तिकायपचधारीयै॥ मुनिहूकमकहैआगलकहैशुं राग  
 नीसारंगविचारीयै॥ इतिपद १४-- संपूर्ण ॥

रागनीगोम॥ अपनारूपजबहमनीरख्या पंचास्तिका  
 यमाहितेपरख्या॥ आकणी ॥ जीवस्वरूपअसखपरदेशी  
 लोकपरमाणेपरदेशतेधारो॥ तैमजधर्मअधर्मकहिये प्रतेके  
 प्रतेकैपरदेशविचारो॥ १॥ लोकअलोकमलीनेकहिये आ  
 कास्तिकायएककाहाणो॥ प्रदेशअनतायेनाकहिये चोथो  
 पुद्गलदरबचितआणो॥ २॥ येकअनेकप्रमाणुरूपये खधहे  
 तुजुगतयीकाहाणो॥ तेथीदर्बयेहैनेकहिये आस्तिकायत  
 णोप्रैमाणो॥ ३॥ येमआस्तिकायपाचैजाणी तेमैजीवास्त  
 आपणोधावो॥ ओरआस्तिकायचारतजीनै मुनिहूकमराग  
 नीगोमगावो ॥ ४॥ इतिपद १५ संपूर्ण ॥

रागनीशुद्धसार॥ चेतनअपनोधर्मसमारो सामा बिशेषनि

हारो॥आंकणी॥येधर्मपंचास्तिकायमैप्रथमसांनकाहाणो॥  
स्वजावलक्षणउनकेजाखे प्रतेकेप्रतेकतेजाणो ॥१॥ दर्व  
गुणपरजायव्यापक परणामीकलक्षणस्वभावो येकपणु  
नेनित्यप्रतीहा अविअवरहितपदध्यावो ॥२॥ कीरीयार  
हितसरबगतजाणो एसांमानधर्मकाहाणो॥पंचास्तिकाय  
माहितेकहीये सदास्वभावचितआणो ॥३॥ वशेपधर्मह  
वेतेकेरोआगेअमेतेकहिशुं ॥ मुनिहूकमशुद्धसारंगावतां  
चितहरखाशुं ॥४॥ इतिपद १६ संपूर्ण॥

रागनीमालसीरी॥ अपनाधर्मधावोआतम बसेसजाव  
चितजावो॥आंकणी॥वेसेसधर्मपंचास्तीकायमे द्रव्यगुण  
परजायजाणो॥व्यापकत्वैस्वरुपतेकहिये गरुगमथीचित  
आणो॥१॥परमाणीकलक्षणस्वजावजे एमअनेकचितधा  
रो॥एकअनेकनेनित्ययअनित्यए नीरअविएवस्वैअवियेव  
बिचारो॥२॥संक्रियेपदएहमैजाणो देशगतसर्वगतपरवेस  
॥वसेपपदारथगुणपरवरती कारणपणहोयबीशेपा॥३॥न  
हिसामानबसेपविठै विशेषसामानविनताही॥दोयधरमस  
दारेहेजीहां आस्तीकायकहियेत्यांही॥४॥मुनीहूकमयेह  
धर्मठै स्यादबादस्वरुपो॥रागनीमालसीरीयेगाइचिदानंद  
अनुपे॥५॥ इतिपद १७ संपूर्ण.

रागनीमुलताइ॥चेतनसामानस्वभावसमजा औरसम  
जासैकौनमजा॥आंकणी॥मुलसामानस्वजावकहियैखट



भेदउनकालीया॥आस्तीतैनेवस्तुतैजेह दरवतैतीजाकी  
 या॥१॥ परमेत्वैनेसतत्वैये अगरलघुबटाथया॥येसामान  
 सुभावेकेनेदहै खटविधएरचनाकह्या ॥२॥ सामान्नतेसबै  
 दरवमेलाधे सरस्वाधर्महोयखरा ॥ मुनीहुकमअर्थआगे  
 रागनीमुलताइवरा ॥३॥ इतिपद १८ संपूर्ण.  
 . रागमलार॥ आतमआस्तीस्वजावभाखी सुधैधर्मतेदा  
 खे॥आकणी॥वसेसधर्मकेआधारभुतजो सोहीआस्तीतैक  
 हिये॥गुणपरजायधरियाकु वस्तुत्तरवैभावलहिये॥१॥अर्थ  
 क्रोयाकरेसोदबै अथवाउतपातवैयजाणो॥उतपतीपरजा  
 यपुत्रपीताजीम आविरजाववखाणो॥२॥प्रैसवैसमलक्षण  
 बिरजभुत परजायतीरोभावकहिये॥भावरूपसक्तीआराधे  
 दरवत्वचोथोलहिये॥३॥सपरवविक्ष्यांग्यानप्रमाण नीति  
 प्रमाणतेकहिये॥स्वगुणमेप्रणमेजोचेतनसुधपरमेत्वैलहि  
 ये॥४॥उतपांतवैयदूवैजुक तेहनेसत्वैतेजाणो॥हाणत्रदीख  
 टगुणीजीहावै अगरुलघुवखाणो॥५॥ एसामानस्वजाव  
 खटनो अर्थसखेपेनाख्यो॥मुनीहुकमयेरागमलारे नीज  
 स्वरूपुकहिनेदाख्यो॥६॥ इतिपद १९ संपूर्ण.

॥रागनीमलार ॥ सामानसुजावकेउत्तरभाखु आस्ति  
 स्वजावकेजाणो॥अनतनेदयाकेभाखे, पणत्रियदंशवखा  
 णो॥१॥सामानसुजावकेउत्तरभाखु आस्तिनास्तीनीतसु  
 जावै॥अनितएकसुजावै अनेकभेदअभेदकाहिए॥२॥अव्यै

अनव्यैतेलावो बकैतव्यैअवकतव्यैजाणो॥परमस्वभाव  
तेरमोलहिएउतरसामानैवखाणो॥३॥ उतरसामानैसर्व  
दरवैमें सरखेभावैलाधे॥मुनीहुकमएमलाररागनी गाता  
मनुजोवाधे॥४॥ इतिपद२०संपूर्ण॥

॥रागनीदेशी॥ आस्तितास्वैनावमे दरवादिकचतुष्टि  
जाण ॥आंकणी॥ व्यापव्यापकैसवधथी सत्यथिआप्रण  
मंत॥मनहेतुअतरंगनो प्रणमतागुणग्रहेहंत॥ १ ॥ सुधव  
स्तुस्वैनावनो शुधप्रणतिजाण॥आस्तिसुभावनैनाखियो  
चिदानंदवैखाण ॥ २ ॥ आत्मस्वरूपआस्तिमये भाखो  
शुधरूप॥मुनीहुकमदेशिरागनी गात्रवस्तुअनुप ॥ ३ ॥  
इतिपद २१संपूर्ण॥

॥रागगुजरी॥ नास्तिपणोविचारोदरवैमैसोय सरवव  
स्तुमैगवेखिजोयै॥आंकणी॥जीहाआस्तितीहांनास्तीहोय  
जीहानास्तितीहाआस्तीजोया॥ दरवादिकचतुष्टिधार आ  
पआपणीलहोविचार ॥१॥ दरवादिकचतुष्टिजेह स्वैग्रहै  
आस्तीपदतेह॥परदरवादिकचेतनमेनहि जेग्रहातेनास्ती  
सहि ॥२॥ ग्यानदरशनादिजेगुण दरवखेत्रकालभादथी  
सुण॥आरतीनावचेतनमैलयो परचारेनास्तीमैकयो ॥३॥  
ऐमस्वरूपसजेजेआप तेहिजसादवादनेयथाप॥मुनीहुक  
मएधर्मअतुसार गुजरीरागनीबैमनुहारा॥४॥पद२२संपूर्ण॥  
॥रागनीबाहार॥ अमरतुकरतजाणपणाकीबात

॥ टेक ॥ संदैजावअसदजावतेजाणो आरपितअणारपी  
तविचार॥सपरपरजाएसहि एजंगमनुहार ॥१॥ वसेखप  
णोगविखीयेतो वक्तंव्यअवक्तव्यधारा॥उजैयजेदलाधैबै  
येहमै सैमजैतासुखकार ॥ २ ॥ तेहस्वरूपसप्तभंगीमाहि  
जाखुआगैविचार॥ मुनीहूकमएचिदानंदमयै गाइरागनी  
बाहार ॥३॥ इतिपद २३ संपूर्ण॥

॥ रागनीसुवा ॥ प्रथमजंगतेआस्तीकेहिए सर्वदरबमे  
धार ॥आकणी॥ दरवगुणपरजायमाहि आस्तीपणोतेजा  
ण॥प्रेतेकैरदरबमेलहि ए गुणपरजायैबखाण॥१॥ सटजा  
वैआपआपणो गुणपरजायतेहोय॥आपआपणादरबमै  
लाधै आस्तीपणोतिहाजोय ॥२॥ अरपीतपणोतेवस्तुनु  
होवै सोइवस्तुधर्मा॥एकसमेतेसरवेजासे सोइग्यांनीमर्म  
॥३॥बढमस्तनेतोअनुक्रमैजासै सरधाएकसमेयीयेहोय॥  
मुनीहूकमएप्रथमजागी रागनीसुवामैजोजोयै ॥ ४ ॥  
इतिपद २४ संपूर्ण॥

रागश्री॥अपनारुपरचैकेदेखी नहीपरगुणस्वभावै॥आ  
कणी॥आपस्वरूपमैलाधैनाही परदरवपरजाय॥गुणलक्ष  
णशुजावतैलाधै तेथीनास्तिपणोथाया॥१॥नास्तिस्वैजाव  
येहैआपको आस्तिपणोतेजाणो॥दोउजेदयेजीवकाकाहिथे  
इमसबदरबैबखाणो ॥२॥ बीजोभंगयेबखाणो नास्ति  
स्वभावनेजाण॥मुनिहूकमयेचिदानंदमेय श्रीरागबखाण

॥३॥ इतिपद २५ संपूर्णः ॥  
 रागनीधनासरी॥क्यांकहूचिदानंदधनकी मुखशुंकहीन  
 जाया॥आकंणी॥स्वपरंपरजायदोउलाधै सदभावासदजा  
 ॥संतासंतपणैयेकहिये-अर्पितअणअर्पितलाव ॥१॥ ये  
 मअनेकनंगतिहांलाधै दोदोभंगतेकहिये॥सकैतसबदनो  
 रहोबेइहां तेथीआस्तिनास्तिनलहिये॥२॥तेथीअवेक्तव्य  
 बेजास्यो त्रीजोभांगोयेलहिये॥गुणपरजाययेआत्मदरव  
 ना॥अनंतजेदतेकहिये॥३॥ तेथीएकसंमनकहैवाये आत्म  
 त्वजावयेमधावो॥मुनीहूकमयेरागनीधनासरी शुद्धस्वरु  
 पमेगावो ॥४॥ इतिपद २६ संपूर्णः ॥

रागनीकाफी ॥ अपनारुपनिहाराजबहमनै अपनारुप  
 निहारा॥आंकणी॥ स्वपरजायआस्तिकहीर्यै सोतोसंतका  
 हावै॥नास्तिपणोठैपरंपरजायै सोतोअस्त्वैयावै॥१॥ दोउ  
 भावयेकसमीये-चैतनमांडलहिये॥ तेथीभांगोएचोथोभा  
 खो भीअभावतेकहीये॥२॥ एमस्वरुपआतंमकेरो समजे  
 तेग्यानीजाणो॥मुनीहूकमतेबिनअग्न्यानी रागनीकाफी  
 काहाणो ॥३॥ इतिपद २७ संपूर्णः ॥

मुगराइरागनी॥आतमाआपसरुपजाने बचनगोचरन  
 हीठाणै॥आंकणी॥स्वैपरजायदेशेथी सदजावैजाणो॥अन  
 परजायबशेपथी अनर्पितअसतआणो ॥१॥ एकसमेजुंग

वचननहिजाचो॥२॥ जाणापणार्थीआस्तीपणोए एवचने  
 अवक्तव्यैजाणो॥ तेथीभागोपाचमोकहिये आस्तिअवक्त  
 व्यैवखाणो॥ ३॥ सरवैटरवमेभगयेवै जेमजीवमेजाखो॥  
 मुनीहूकमजाणपणोसाचो रागनीसुगराइदाखो॥ ४॥ इ  
 तिपद २८ सपूर्ण.

रागनीपर्ज ॥ अपनेरुपमैजागोछंटो नास्तिअवैतव्यै  
 जाण॥ परस्वभावअपनेरुपजे नास्तिभावैचीतठाण ॥१॥  
 अजजुगपतइहाकनैभाखु आस्तिनास्तिअवक्तव्यैसोय॥  
 येकदेशेस्वैपरजायै अर्पितभावैजोय ॥२॥ अनयेकदेशे  
 परजायै अणअर्पितजाववरीयै॥ सदजावअसदजावै स  
 त्यअसत्यकरीयै ॥३॥ एसर्वैअवक्तव्यैजाणो जांगोसात  
 मोकहीये॥ स्यादआस्तिस्यादनास्ति स्यादअवक्तव्यैलही  
 ये॥४॥ येसत्तैभगीवीशेपाविशेपै यहैस्वैरूपकाहाणो॥ भि  
 न्नस्वरुपसत्तजगीकेरो रतनाकरअवतार्कायजाणो॥५॥  
 येसत्तभगीसर्वदरवमै नित्यादिकनिवखाणो॥ मुनीहूकम  
 स्यादवाढये रागनीपर्जलखाणो॥६॥ इतिपद २९ सपूर्ण  
 होजीयास्यादवाढवीचार॥टेका॥ सत्तभगीमैमुखपणैये  
 भगवीनवीचार॥ स्यादआस्तिस्यादनास्ति स्यादअवक्त  
 व्यधार॥१॥ आस्तिपणैआस्तिधर्मठे नास्तिपणैनास्ति  
 धर्म॥जुगपदेउभीयेधर्मठे येस्यादवाढमरम॥२॥ सामान  
 विज्ञेपधर्ममेलोधे गुणपरजायमैजाण ॥ प्रतेकेप्रतेकेसत्त

भंगीजाणो नित्यादीकवखाण ॥३॥ स्यातपदग्रीहीनैकहै  
तादोगेणनेआवेयेक॥येमस्वरुपस्यादबादनो साचीग्या  
नेनीटेक॥४॥येजाणोतेनेसरवेजाणो बीजातोविदाअभ्या  
स॥मुनीहुंकमचिदानदमये रागनीमारेवेणप्रकास ॥५॥  
इतिपद३०संपूर्ण॥

रागनीगोमी॥स्वजातीमैआस्तिनास्तिपणो तीहांकहिने  
दाखो॥आंकणी॥जीवेजीसजातीजाखां पंचबीजातीकहिये  
॥स्वैजीवआस्तिपणोवै परजीवनास्तीलहिये॥१॥ग्यानै  
ग्यानआस्तिजावठे दरसनादीनास्तीभावै॥स्वेगीनानते  
आस्तीजावठे परगीनानतेनास्तीगावै ॥२॥आस्तिपणोते  
नास्तिनेहोवै नास्तिपणोतेआस्तीनैथावै॥आपणोगुणते  
परमेनजावै परआपणमेनाआवै॥ ३॥ स्वजातीधर्ममायै  
रहैवै ॥परजीवनीनवीहोवै ॥ एमगुणपरजायादिसरवमै  
आस्तिनास्तिजोवै ॥४॥ आस्तिनास्तीसरुपयेजाणो स  
जातीमैजाखु मुनीहुंकमयेनीजसुभावमै रागनीगोमीये  
दाखो॥५॥इतिपद ३१ संपूर्ण.

रागनीपुरवी॥चेतननित्यसुभावसमजोनेजाइ चेतनः  
दोयप्रैकारनित्यसुभावै समजोएहबिचारा॥उप्रैचुतीनीत्यै  
तांजाणो परंमपरनित्यैताधारे॥१॥सर्वदरवैमेएहैस्वैजाव  
ठे तेहैनादोयैप्रकारै॥उर्धताप्रचियैप्रथमैजाखो त्रिजकप्रे  
चीसारै ॥ २॥ येदरवसभावैनीतै उतपातवैयैदुजोनिते॥

येमअनेकस्वैभाववैदरवमे समजलोहोमीत॥३॥ नित्यैश्र  
नित्यैसुजावएमजे सर्वदरवमाहि॥मुनीहुकमतेसाचोग्या  
नी रागनीपुरबीगाइ॥४॥ इतिपद ३२ संपूर्ण॥

रागनीऐमैत॥नित्यस्वैजावधीबीधध्यावा दूजेयेप्रकारै  
रो॥आकणी॥कुटंस्तनेपरणीमीकयहैसरुपहुदाखु॥परदेसै  
येकुटस्तकहिये गुणमैप्रणामिकराखु॥१ चेतनप्रदेशनित्य  
कुटस्तै इनुपरवैरतनैनाहि॥परवैरैतनतोगुणपरजायमै  
सोपरणामीकनीत्यताकाहाइ २ एजेदतोसरवैदरवमे स  
मजैतैनेजणायो॥मुनीहुकमयेरागनीऐमन गाताहरखन  
रायो ३ इतिपद ३३ संपूर्ण॥

रागनीगयानाट॥ परजायधर्मकुजिन्नजिन्नकर आपो  
आपसमारो॥ आकणी॥शेकारीलक्षणेजेहमै तेहनेदर्वैक  
हिजे॥दरवैदरवैप्रतीप्रदेशे गुणैमैपणकहिजे १ उपादान  
कारजकारण प्रणामीकपरैजायै॥ब्यापकेपरजायउतपात  
कहियै गुणतेदरववैथायै २ शैमियेरैउतपातवैयै सर्वद  
रवैमेलहिये ॥ गतिथतीश्रवगाहवरतना मलैबियरणैक  
हिये ३ चेतननोउपीयोगगुणवैवस्तुस्वजावैककहिये॥उ  
तपातवैयैयेसरवैमेलागै गुणादिकमैकहिये ४ कारणका  
रजपोतानोकरता एमग्यानतेलहिये॥मुनीहुकमप्रथम  
व्याख्या परजायैरागनीनटमैकहि॥इतिपद ३४ संपूर्ण॥  
॥ रागनीबमहंस ॥ तुमतोशुंधर्मआराधो चिदानदकु

साधो हो ॥ टेक ॥ निजदरवपरणा ~~मिक~~ नोहि धर्म  
 साधो ॥ १ ॥ तुम ॥ पुर्वपरय जाय वै कर ~~न~~ उत पादो ॥  
 दरवपणो दरवपणै कहियै येहि ~~न~~ तुम ॥ पर  
 जाय व्याख्याधितिये भाखी ~~न~~ मुनी हूक  
 सब हंसरागनी समजे एहनु ~~न~~ संपूर्ण ॥  
 ॥ रागकालंगमा ॥ चेतन ~~न~~ दरणामिक  
 प्रवर्ति ॥ गुणादि पणै एम ~~न~~ देव रती चे ॥  
 ॥ अतित अनागत ~~न~~ ॥ वर्तमा  
 नपर जाय एकठे एम ~~न~~ वर्तमानपर  
 जाय अतित में प्रणमै ~~न~~ अनागत वा





दुकमवलहारीगुरुनी अलीविलावलरागनीकहि ॥ इति  
पद३९ संपूर्ण ॥

रागनीवीलावलसुवा ॥ चेतनअगरुलघुपरजायतेजाणो  
॥ चेतन० ॥ हांणव्रधिखटगुणभाखी सरवैदरवैमेप्रणमै ॥  
हाणीतेतोवयैकाहावै व्रधिउतपाततेरमै ॥ चेत० ॥ १ ॥ व्रधिवै  
यैहाणीउतपात अगरुलघुदरवैतेजाणो ॥ सरवैदरवैमेइम  
जकहिये येमपरजायवखाणो ॥ चेत० २ ॥ अलोकमेपणअ  
गुरुलघुहै नीचसैजावैलहीयै ॥ मुनीदुकमयेछटीव्याख्या  
सुवावीलावलकहियै ॥ इतिपद४० संपूर्ण ॥

रागनीसारंग ॥ बंद्रावनी आस्तिपरजायसांघैथरुपये  
येमचीतमेंसमजीयै ॥ आकणी ॥ सरवैदरवैनोआस्तीस्वजा  
वै अनंतगुणोतेलहियै ॥ वशेपरुपतेसांघैथपणोछे सांघैथप्रे  
जायतेकहियै ॥ १ ॥ प्रैवतिरुपतेनमीतजेदछे तेथीउतपातवै  
यैलहियै ॥ पुर्ववशेपपरजायनेवैयै अजिनवैवशेपतेकहियै  
॥ २ ॥ स. इमपरजायनोप्रैणमवौजाखु दुवैतेवशेपपरजायै ॥  
मुनिदुकतेरागनिजाखि बंद्रावनेसारंगयाये ॥ ३ ॥ इतिपद  
४१ संपूर्ण ॥

रागनीपिलु ॥ चेतननिजशुभावकुजाणे नित्यानित्यका  
हाणारे ॥ आकणी ॥ नित्यैस्वजावजाहानहिलाधे जाहाका  
रजनविहोवैरे ॥ कारणपणोपणतिहांनदिसै कारियेशिधिनै  
जोवैरे ॥ चेत० १ ॥ अनित्यैपणानोजाहांअजावछे गायकश

क्तिथाकिरे॥ अरथक्रियातेनरकरै गरुगमथिबुधपाकि  
॥चे०२॥ शरवशुभावपरजायधारो आधारभुतनिजेपे  
लहियेरे॥मुनिहूकमरागनिविलु येअधकारआगेकहिये  
॥चे०३॥ इतिपद ४२ सपूर्ण॥

रागवरवा॥सुनजियारेतैरेशुजावैकुलैके वसमसतसुभ  
वतेजाणोरे आपआपणापेत्रप्रदेशो आधारभुतवखाणो  
सुन०॥१॥सामान्यैजावैयेकसुजावछै बशेपभावैअनेक  
भावीरे॥येतोपरैवरणतिमैरमवो हवैकहूदरवैसुजावरो॥२॥  
आस्तित्वादिशर्वसुजावते गुणपरजायेकहियेरे॥शर्वेये  
परदेशोजाख्या आपआपणोयेत्रजेदकहियेरे ॥३॥ श  
परदेशतेभिन्ननजाख्या पंमिरुपतेलहियेरे॥परदेशप्रते  
तरनविहोवे दरवेयेकस्वभावकहियेरे ॥४॥ येमशरैवसु  
वपरजायजेदे दरवमैअनेकतेलाधैरे॥ मुनिहूकमरागि  
वरवो स्वभावजाणोगुणबाधेरे ॥५॥ इतिपद ४३ सपूर्ण॥

रागनीजजोटी॥जेदग्यानएचिदानढको मेउनकुपीठा  
॥आकणी॥आपआपणोकारजजेदये सभावैजेदएकहिये  
अगरुलघुपरजायजेदतेम भेदसजावतेलहिये ॥१॥ ज  
म२अवस्तापलेटे जेदस्वेजावतीहाजाणो॥ अभेदसुभाव  
अहेणकरीने भेदस्वैभावजोनैवखाणो ॥२॥ तोगुणगुण  
सुजावनेमाही शकरेवदोपैलैलागै॥गुणपरजायनैकार  
कारज लक्षणांलक्षैनागै ॥३॥ तेकारैणयेजेदग्यान

सुधपरणैतीयैअहीये ॥ मुनीहुकमयेकारणअभेदनो राग  
नीजेजोटीलहीये ॥४॥ इतिपद४४संपूर्ण ॥

रागनीजंगला ॥ अपनारुपप्रणामिकजोइ अतीअनंद  
मैपाया ॥ उत्रोतरपरजायत्रैणैमन नीजस्वभावमैआया ॥  
गाथा १ ॥ नीजस्वरुपमैदोषजावठै चंव्यैअमंव्यैसुभावै ता  
कोवीचारवेवरीदाखु समजुचितमैधावै ॥ २ ॥ उपीयोग  
धीरकरीनेधारो बीचारआगेकहीशु ॥ मुनीहुकमयेरागनी  
जंगलो शुद्धउपीयोगेलहीशु ॥ ३ ॥ इतिपद ४५ संपूर्ण.

रागनीस्यामकलाण ॥ भव्यैसुभावैतेजाणो ॥ टेक ॥ शुद्ध  
स्वरुपवखाणु जावधरमतोजीवस्वरुपनो तीहांजवान  
धर्मकहीये ॥ गुणपरजायपरावरतैनजे तथाआस्तिखेलही  
ये ॥ १ ॥ जावनवोउतपैनथायजे नवीनपरजायमैपरवरते ॥ पू  
रवजावतेनाशकरीने जवैस्वैभावयेमपलटै ॥ २ ॥ पलटैशु  
जातेभव्यकहीजै तहेमैभवानधरमदाखु ॥ मुनीहुकतेआग  
लकहीशु रागनीस्यामकल्याणआखु ॥ इतिपद ४६ संपूर्ण.

रागनीत्रैमनकल्याण ॥ भव्यैतधर्मठैजव्यैशुभावमै ग्या  
नीतेहवखाणै ॥ आकणी ॥ गुणपरजायेजेवस्तुनां तेहिजवै  
नधर्मकहीजे ॥ नवथवुसमअइपंथाने उत्तरभेदलहीजे ॥  
१ ॥ परवरतैनमैवकितरुपठै जेवरतीनुआस्तिजावै ॥ रुप्रंत  
रेजेप्रणमेवु तेभवैनधरमकाहावे ॥ २ ॥ दुग्धनोदाधिपणो  
थावु बीकारअंतरेप्रणमेवु ॥ ग्यानमहीजेमगीनेतेफरतो ते

मग्याननुप्रणमैव ॥३॥ वर्धिहाणीस्वनावै कारजकारण  
 लहीये ॥ आवीरनावतीरोनावकीये येमनवानधर्मलहीये  
 ॥४॥ इनोअरथगुरुगमतीलीजो हवेकहूआस्तिभाव ॥ मु  
 नीहूकमयेभव्येसुनावमै औमनकल्याणरागनीगाव ॥५॥  
 इतिपद ४७ संपूर्ण

॥ इति श्रीरागमालासंपूर्ण ॥

## चारत्रभावप्रकरणलक्षण

श्रीगुरुभ्योनमः

प्रणमुसुधानंदने, नाखुअभावतेचार अवलाथईनेप्रण  
म्या सवलाप्रणमेसुखकारा॥१॥

हवेजेचारअज्ञाव अन्यमतविशेषक दर्शनवालाएकह्या  
वे तेपूर्वेजैनपंथितोएपण केटलाएकविचारनेविशेग्रहण  
करयावे तेचारअज्ञावनुस्वरूपकिचित्मात्रहुंकहुछु तेचा  
रअज्ञावनानाम प्रागज्ञाव १ परध्वंशज्ञाव २ अत्यंता  
ज्ञाव ३ अन्योअन्यज्ञाव ४ हवेअज्ञावकेहेतांशुं जेनहि  
वेवस्तु तेनेअज्ञावकहिएवैए परंतुचेतनस्वरूपसाथे चारे  
अज्ञावनोविचारकरवाथिघणोफायदोवे तेमाटेएनुस्वरूप  
किचित्मात्र इहांदेखाडुछु हवेपरागभावकेहेतांपूर्वेजे  
भावनोअभावहतो तेभावप्रगटथाए तेनेप्रागज्ञावकहि  
ए हवेपूर्वेकह्याभावनोअज्ञावहतो अनेशुज्ञावप्रगटथयो  
तेनेप्रगभावकहिये तेनोविचारकहुछु आसंसारनिमां  
हिलिकोरे भावरूपवस्तुवेप्रकारनिवे एकशुद्धभाव १ वी  
जोअशुद्धभाव २ हवेतेअशुद्धज्ञावनाअनेकभेदवे अनेशु  
द्धज्ञावनोतोएकजभेदवे एटलेशुद्धभावकेहेतांशुद्धचिदानं  
द संकल्पविकल्परहित समपरिणामीनिजानंदउपयिओ

ग सस्वरूपमाथीरतांपण तेनेशुद्धभावकहिये हवेजेअशु  
 द्धभावते तेनाअनेकजेदढेतेकहियेढइए प्रथमसमपरिणा  
 मजेकह्यो तेनावेजदढेएकतोशुद्धपरणतिरुपसमपरिणाम  
 तेतोसर्वथीजीवनेकल्याणकारिते अनेशुद्धपरणतिसाथेजे  
 समपरिणामते तेनाअनेकजेदढे तेमधेजेअेणिप्रतिपन्नछे  
 तेसविकल्पपरिणामछे शामाटेजे एठेकाएस्वपरनोविचा  
 र अथवागुणपरजायनोविचार एसर्वविकल्पसहितछे प  
 रंतुघणोजभागएनोनिर्मलछे अनेथोमोजजागमालिनप  
 णुछे एकसमकितिथिमाफीनेसातमागुणठाणासुधी जेस  
 मभावथायछे तेद्रव्यगुणपरजायनुस्वरूपजाणि सस्वरु  
 पनेओलखी परजावनोत्यागकरिने समपरिणामेरमेछे  
 तेमवेपोतपोतानागुणठाणानिहदे जेसमपरिणामछेतेस्व  
 जाविकछे अनेतेउपरात जेटलुंरमणतथासमभाव एट  
 लोआरोपितउपचारिछे अहिंयानिर्मलपणुकथचितवेतेम  
 धेपणतरतमजोगरह्योछेतेविनासमभावछे तेएकएविजात  
 नोपणछे केद्रव्यगुणपरजायनाजेदजाणिनेपणस्वभावप्र  
 गटघोनथि अनेसस्वरूपनुग्रहणनथि अनेसमभावथाय  
 छेतेमलिनछे तेमिथ्याद्रष्टिछे वलिएकएविजातनोपणस  
 मजावछेजे स्वस्वरूपतोजाणतानथि तथाद्रव्यगुणपरजा  
 यनुपणजाणपणुनथि अनेमटकबेरागादिकपामिने ससा  
 रथकिविरकजावरेहेछे तेसर्वपणमलिनछे मिथ्याद्रष्टिछे

तेनोआत्माअशेषण निर्मलथयोनथि तथाएकएवि जात  
नोपणसमजावछे संसारछोमी अथवानछोमी कर्त्तरिभा  
वमांरच्यापच्याछे कर्त्तरिकेहेतांजेकर्म जेजेदर्शनवाला  
पोतपोतानाक्रीयाकर्म वेहेवारमार्गनावांधेलातेनेधर्ममा  
नेछे तेनेकर्त्तरीकर्मकहिए ॥उक्तंच॥ विहितकर्मजन्योधर्म  
निपिधकर्मजनोस्त्वधर्म॥ एटलेविहितकर्मकेहेतांजेकर्म  
नुकरवु एटलेक्रियाप्रमुखकरवाथिधर्ममानेछे एवुपणए  
कलोकमांधर्मछे पणंतकईधर्मनथि ग्रामाटेजेनिपेधकर्म  
केहेतांजेक्रियापरमुखनोनाशकरिनेस्वजावमांजेरमवुतेस  
तधर्मछे तथाएवुश्रीविशेष्यावशकमां नयअधिकारेनिग  
मनयआरोपितकहिछे तेमधेकारणनेविशेकारजनुआरोप  
वु एटलेकारणजेबाह्यवेहेवारनी जेजेकरणिपरमुखछे ते  
नेधर्ममानेछे तेकरतानेधर्मिकेहेछे तेकईधर्मिथयोनहि अ  
नेकरणितेकईधर्मथायनही ॥उक्तंच॥ बाह्यक्रियायाधर्म  
त्वः धर्मकारणस्यधर्मत्वेनकथनं ॥ एवुनयचक्रमांपणक  
ह्युछे इहांकोईकहेशेके जावकारणमातोकईआरोपनथि  
तेनोउत्तरजे जावकारणनेविशेतो आपआपणाकारजनो  
स्वजावछे त्यांहाकईकर्त्तरिनथि अनेनिगमनयछे तेकई  
जावमानथिएतोद्रव्यनयछेअहियांपणआकरतमजावनि  
वातछे अकरतमनीवातहोततोस्वजावग्रहणथाय तथाचे  
तनमात्रवरणवीतेतोचेतनानावेजेदछे एटलेशुद्धचेतना१



तथाअशुद्धचेतनार अशुद्धचेतनकेहेतानरनरकादिक चा  
 रेगतिनिवातजाणे. द्विपसमुद्रआदेदेईने सर्वपरभावनि  
 वातजाणेतनेअशुद्धचेतनाकहिए तेमद्वेजेस्वस्वरूपनागुण  
 परजायादिकजाणे तेअशुद्धचेतनाछे. पणमाहाशुनछे जे  
 पोतानास्वस्वरूपनेजाणे अनेशुद्धस्वभावनेविपेरमंणता  
 तेनेविपेथिरपरिणाम एवुजेजाणपणुछेतेनेशुद्धचेतनकहि  
 ए तेनेजधर्मकहिए अनेतेधर्मकेवुछे अविबिन्नकेहेता  
 कोईकालेपोतानास्वस्वरूपथिएधर्मजुदुनहिपमेएकंआ  
 त्मस्वरूपनिवृत्तिमात्रएनेजकहिएछे. ॥ उक्तच ॥ चेतन  
 मात्रवृत्तिधर्मविबिन्नाएवीरितेपरभावमाजेरमणता अने  
 धर्मनुमानवु एवुपणएकस्वभावेछे इत्यादिकअशुद्धपरण  
 तिरुपेगुभाशुभ कारजकारणना समभावचेतननवलगे  
 लाछे तेसर्वेपरभावनाघरनासमभावछे पणशुद्धपरणाति  
 रुपसमभावनथयोतेथिएसमभावनेपुद्गलिकरीदमागएयो  
 छे तेपरभावनोनाशथाय तारेशुद्धरूपनिप्राप्तिथाय

तिवचनात ॥ एटलेपुर्वनाभावनोनाशययोतेनेप्रागभाव  
कहिए ॥इतिप्रथम ॥१॥

हवेबीजोंपरध्वंशाभावकेहेतांजेकारजनिउत्पत्तिथयाप  
हेलां अथवाथयापछि ध्वंशकेहेतांनाशकरवोतेनेपरध्वंशा  
भावकहिए एटलेआपणोआत्माअनादिकालनो ससार  
नेविपेरखमेते अनेअनंतगुणनोधणिले तेकंडखपआव्युन  
हि अनेरखम्वुंपमेते तेनुकारणएतेजेमोहादिकशत्रुएंउत्प  
त्तिथयापेहेलां एटलेसमकितपाम्यांपहेलांथिआत्मानागु  
णनोनाशकरतारह्या एटलेगुणप्रगटथावादिधोनाहि अ  
नेपरभावमांरमाग्या परपोतानुंकरिमान्युंशुभाशुभनेधर्म  
करिमान्युंअज्ञाननेज्ञानजाएयुज्ञाननेअज्ञानजाएयुंवस्तुध  
र्मनेअधर्मजाएयुंशुद्धपरणतिनेअशुद्धपरणतिजाणिअशुद्ध  
परणतिनेशुद्धपरणतिजाणिआरोपिताउपचरितअसदभूत  
तेनेधर्मकरिमान्युंअणआरोपितअणउपचरितसदभूततेने  
अधर्मजाएयुं एसर्वेसमकितपाम्यापेहेलांनांलक्षणवैशामा  
टेजेकेटलाएकतोआजिविकानेअर्थेकरताफरेवे केटलाएक  
पुजावामनावानेअर्थे केटलाएकपोताना मतादिकनिखेचे  
करिने तेसर्वेमिथ्यात्विवे तथासमकितपामिनेवम्युं तैपण  
मोहादिशत्रून्मावेवे शामाटेकेसमकितपामिने वेअक्षरनुं  
जाणपणुययु अथवाबाइयथकी करणिआदिकसारिकरेते  
वारेमिथ्यात्वरूपभूतएनाहृदेमांपेसे तेवारेमतफारिजाएअ

नेगुरुआदिकनेमानेनहिअनेस्वमतिकल्पनाएधर्मउपदेश  
 करेजथारोहगुप्तनिन्नवएटलेपछि शास्त्रसिद्धातमानेनहि  
 पोतानिमतिकल्पनाएकरि एनुजुगतीएकरिने समजावे  
 तेमध्येसाधुनेउपदेशकरवानोअधिकार . अथवासुत्रभण  
 वानोअधिकार जेमवेहेवारसुत्रमाकह्योहे तेतलेतेतलेव  
 पैथाए तेविनाकरतेपणसुत्रनाउथापकहे तथासावकथइ  
 नेजेउपदेशकरतेपण सुत्रसिद्धांतनातथागुरुनापणउथाप  
 कहे तथाभगवाननिआज्ञानापणउथापकहे एसपूर्णसर्वे  
 प्रकारेथिनिन्नवजहेअनेजमालिप्रमुखजेनिन्नवथयातेतोदे  
 शथकिहे अनेग्रहस्थथइनेदेशनादेतेसर्वथकिनिन्नवहे ज्ञा  
 माटेजेश्रीविरपरमात्माएनोग्रहस्थिनेश्रोताकह्योहे अरथ  
 निप्राप्तिगुरुनेप्रश्नपुब्बाधिकहिहे पणवांचवाभणवालो  
 कोनेसंभलावातेथकिकहिनथि एअधिकारश्रीभगवती  
 जीथिजाणजो - तथाश्रीप्रश्नव्याकरणने - विशेषवरद्वारे  
 ग्रहस्थितथादेवतानेसाभलवानोअविकारह्योहे पणक  
 इसभाभेरीकरविदेशनाओदेवि तेअहि १५॥  
 ह्योहे तथाश्रीनिसिथसुत्रनेविशे जेसा १६॥

खेदकथुंते तेकारणजेकरे तेनेनिनवजकहिये तेधणीअनं  
 ताजवरखमे तथाएनिदेशनाना सांभलनारपण अनंता  
 जवरखमे एश्रीविरपरमात्मानुंजाखेलुंते तेसर्वेशास्त्रमांते  
 एणएनेमोहादिकशत्रुए एनाधर्मनोनाशकर्यो हवेजेमो  
 हादिकशत्रु समकितपाम्यापति जेजुद्वपरणतिनो अंशप्र  
 गटथयोहतो तेनोनाशकरेते तेनोविचारकिंचिमात्रदेखाडुं  
 ठं एनानिमित्तकारणतो पांचइंद्रिनेमनते अनेउपादान  
 कारण रागद्वेशप्रणतिते तेमध्येरागनावेभेदते एकशुभरा  
 गते १ विजोअशुजरागते २ शुजरागनावेभेदते एकप्रश  
 स्थराग १ विजोअप्रशस्थराग २ तेमध्येसमकिता  
 दिक पामवानोजेराग तेपणस्वप्रणतिते तथापिपामवा  
 नोरागते अथवापाम्या तेगुणसाचववानोरागते अथवा  
 आत्माना केवलादिकगुण प्रगटकरवानोरागते अथवा  
 माराआत्माना मुगतिथायेइत्यादिक सर्वरागतेते स्वप्र  
 णतिलिआते माटेहेनेपरशस्थकहिये अनेरागतेतेकर्मवं  
 धहेतुते माटेएनेशुभरागंकहिये तथाअपरस्थशुभराग  
 तेज्याआत्मस्वरूपनिरमणतानथि अनेदेवगरुधर्मउपरि  
 एरागराखेते अनेगरुआदिकनि जगतिनेविशेलेहेलिन  
 रेहे तेधणिनेअपरसस्तशुजरागते शामाटेजेस्वपरणति  
 रहितते परसस्तपणुंनथि तथाअशुजरागतेनावेभेदते ए  
 कपरसस्त ॥१॥ बीजोअपरस्त ॥२॥ तेमध्येपरसस्तजेध

મંએવોશબ્દનામગ્રહણકરિનેઃજેકરીઆકૃષ્ટતપઃ જપકરેતે  
 એસર્વશુન્નતે હૃદ્યઆકોઈકેશેજેધર્મનાવાકારણતેનેતમો  
 શુન્નકેમકોહોછો તેનોઉત્તરકેએસર્વેકારણવિશ્વક્રિયા ॥  
 ૧॥ ગરલકોરિઆ ॥૨॥ અનુષ્ઠાનઅન્યોઅન્યક્રિયા ॥૩॥  
 એત્રણક્રિયાનેવિશેષાયછે અનેએત્રણક્રિયાનેશુન્નજછેએ  
 ક્રિયાનેકોઈશુન્નલખતાનથિ એનાવિશેષવિચારશાસ્ત્રથકિ  
 જાણજો તથાઅપ્રશસ્તશુન્નરાગતેવણસમજાણે અથવા  
 ઉપયોગરહિત પરજીવનેવચાવવા અથવાઢાનાદિકદેવુ  
 અથવાસસારનાસર્વેકારણએસર્વેઅપ્રશસ્ત શુભરાગછે  
 માહાવિરસ્વામિએગોસાલાનેવચાવ્યો તદવતસમજિલે  
 જો હવેજેદ્વેરસતે તેપણવેપ્રકારનોતે એકસ્વપ્રણતિથાકિ  
 કર્માદિકભિન્નદ્રવ્યનેકાહામ્વાનો વિચારએકએવો પણદ્વે  
 શછે એસર્વધર્મદ્વેશ એકપ્રકારનોકેહેવાય વિજિજેઅધ  
 ર્મદ્વેશતેસસારાદિસર્વે કારણમાંસમજવો એવાજેકારણમ  
 લવાથિ જેપોતાનિશુદ્ધપ્રણતિનોઅશુપ્રગટથયો તેધર્મથ  
 કિઅષ્ટકરિનેસંસારમારોલે એટલેએઆત્મગુણનેનાશકરે  
 તેમોહાદિશત્રુઆત્મગુણનોપરધ્વંસજાવછેતેજઆત્માપોતે

एटले एवामोहोटा पुरुपनुं वलावुलिधेथके मारिरिद्धीनो  
 नाशमोहादिकचोरकरिशकेनहि माटेहु एवासदगुरुनेआ  
 धिनथईनेरहुं पुष्टआलवनएवगरबीजोकोईनहि हवेउपा  
 दानकारणनेविशे स्वप्रणतिप्रज्ञावमांजावानदेउ तेथिर  
 ज्ञावथाउ शुंजाशुजकारणकारजथकिमाहाराआत्माने  
 उगारुं अनेशुद्धभावनेविशेमाहाराआत्मानेजोडुं तोएमो  
 हादिकशत्रुओनोनाशथायएरितेपूर्वपणजेसिद्धिवरचाएध  
 णिएजावथिजसिद्धिवरचावे वर्तमानकालेपणजेनिसिद्धि  
 थायवे तेपणएजभावथिथायछे अनागतकालेपणकारज  
 सिद्धिएभावथिजथाशे एविनाबीजाप्रकारथीकारजसिद्धि  
 बेनहि एवातनिसंदेहवे एटलेआत्माप्रभावमांरमतोहतो  
 तेवारेस्वस्वज्ञावनोध्वंशभावहतो तेजआत्मास्वस्वभाव  
 मांप्रणम्यो तेवारेसर्वप्रज्ञावनोध्वंशथयोहवेकोईवस्तुनोए  
 नेध्वंशकरवोनथिएटलेएसत्यपरध्वंशाज्ञावकहिदेखाम्यो  
 एटलेएबीजोभावकह्यो.

हवेत्रिजोअत्यताज्ञावकहेताअत्यंतअभावछे तेक  
 हिएविये तेआत्मानेविशेपरभावनोअज्ञावछे शुद्धनिश्चे  
 नयेकरिनेजोईयेतो कर्तरीपणछेनहि अनेशुजाशुजपण  
 छेनहि एमुलवस्तुधर्ममां अत्यंतकहेतांघणोघणोकरिने  
 एधर्मआत्मानेविशेछेजनहि एटलेएत्रिजोअभावकह्यो.  
 हवेचोथोअन्योअन्यअज्ञावकहेतांजे प्रगटपणघटनेवि

अहियाकोईपुन्यनेधर्ममानेते तेधणीने आत्मस्वरूपस्व  
 गुणनोअत्यंतअज्ञावछे अनेहजुपरर्जावनोअत्यताभावन  
 थीकरयो एरीतेस्वधर्मनेविशे परधर्मनेपरधर्मने विशेष  
 धर्मनोअन्योअन्यअज्ञावछे एअन्योअन्यानावचोथोभे  
 दसमजवो एआत्मस्वरूपनेविशेत्रणेभावपरध्वशादिकअं  
 गीकारकरो तोप्रथमनोप्रागभावप्रगटथयो अनेएप्रा  
 गभावप्रगटथएजआत्मानीसिद्धिथाय एटलेशुद्धभावते  
 जप्रागभावते इतिसुधोअर्थजाणवो ॥

॥दूहा॥अज्ञावचारवेणव्या प्रागज्ञावादिजेहा॥वालजिव  
 नेकारणे तत्प्राप्तितेहा॥१॥ आत्मस्वभावअशुद्धजे काल  
 अनादिलाध्यो॥तेथिअभावचारेहुता अवलिपरणतिसाध्यो  
 ॥२॥हवेशुद्धस्वभावए ज्ञानद्रष्टिएजाग्यो॥च्यारेस्वभावह  
 वेसाधिया शुद्धस्वरूपमेलान्यो॥३॥ एरीतेसमजीकरी नि  
 जस्वजावमारेशे॥अवलातेसवलाकरी निजस्वरूपमालेशे  
 ॥४॥ अनुभवज्ञानथीएरच्यो चउअज्ञावप्रकरण॥शुद्धस्व  
 रूपनिखोजथी शुधोअनुभववर्ण॥५॥ एरितेअनुभवसहि  
 त वाचशेभणशेजेहा॥कारजतेनुसिद्धहोशे तेमानहिसदेहा॥  
 ६॥ओगणिसेवतरीसमै संवठरेअवधार॥आवणउत्तममा  
 सए शुकेलद्वादशिसार ॥७॥ जोमिपतिवारचलो सुर  
 तशेहेरमोजार॥ओताउत्तमजोगथी चोमासुरह्याउदार॥

८॥सेहजअनुभवरमतांथका एअनुभवचित्तआयो॥तेतुरत  
 प्रगटकरथो जव्यजीवहितलायो ॥९॥ हूकमजेमुनिवरत  
 णो माथेचमावीसार॥शास्त्रअनुसारेजाखियो अध्यातम  
 गुणउदार ॥१०॥ शुद्धस्वरूपपरकाशियो कीधोअशुद्धनो  
 नाश॥परप्रणतिपरभावनो अहिंयांनहिरेहेवास॥११॥ शुद्ध  
 भावशुद्धचेदथी शुद्धप्रणतिविशाल॥अभावच्यारेत्यांहाप्र  
 गट्या उत्तमलक्षणनिहाल ॥१२॥ एप्रबंधएरचनासवि  
 जाणेजावबहूश्रुत॥अल्पबुद्धिसमजेनहि गुरुगमथिरुकंत  
 ॥१३॥तेमाटेबहूश्रुतजोई निरुप्रहिनिजानंद॥शेवाकरजो  
 तेहनि नेदपामगोआणंद ॥१४॥ आणंदरूपएकआतमा  
 वाकीसर्वअसत्या॥तेध्यानेमुक्तिलहे आगेपाम्याअनंत ॥  
 १५॥ बलिअनंतापामशे पामेवेवर्तमान॥ नीश्चितउपादा  
 नशुद्धग्रहि एजाखुशुधमान ॥१६॥ मुनिहूकमरचनाकरि  
 स्वअनुभवधारि॥परअनुभवअलगोटल्यो शुद्धजावनिहा  
 लि॥१७॥ओतापणतेवातिथा अनुभवगुणनारशिया॥शु  
 द्धजावनालालचुतेमुजपासेवाशिया॥१८॥पुद्गलनाभिखारि  
 जेह तेनुनहिअहियाकाम॥तेअहिंयांआवेनहि तेचउगति  
 जटकणठाम ॥१९॥ रागद्वेशरहितए कीधोग्रथवीनाण ॥  
 जावेकरिजेवाचशे साजलताप्रगटेनाण ॥२०॥ बहूसुतत  
 कंवादसहित स्वपरस्वरूपनेजाणे ॥ नीरुप्रहिभावसदार



हे तेपासेभेदठाणे॥२१॥ न्यायविनासमजेनहि शुद्धाशुद्ध  
स्वरुप॥तेमाटेगुरुगमकहि लेविशुद्धअनुपा॥२२॥ एउपदे  
शहदयेधरि जेकरशेअभ्यास॥मुनीहूकमतपामशे शीवसु  
दरीघरवास ॥२३॥

॥इतिचउत्रनावप्रकरणसंपूर्ण॥

## श्रीअमरतेजमुनिनीसद्वायः

श्रीगुरुभ्योनमः

॥ढाल१॥त्रिजुमहाव्रतसांभलो॥एदेशी॥श्रीसंखेश्वरपा  
 सजी॥प्रणमीतेहनापाय॥केशुंगतीकर्मतणी॥दूरधरजेश्रं  
 तराय॥१॥रेजव्यप्राणीसांजलो॥करमनीगतीजेह॥भोग  
 व्यावणछुटेनहि॥ज्ञानीभाखेतेतेह॥रेभ०२॥आंकणी॥  
 जवसातमेजेथया॥अमरतेजराजंद॥वैताढपरवतेशो  
 जतुं॥विद्याधरनीरंद॥रेभ०॥३॥बहूरीधीयेदिपतो॥  
 भुजासेनवलजास॥जशश्रीनार्याजेहनी॥रुपगुणेजे  
 खासा॥रेभ०४॥जिनधर्मरुचीसदा॥नहिअन्यायनीलेश॥  
 दोगंधीकपरेसुखते॥भोगवतांतेविशेष॥रेज०५॥एवे  
 समेएकराजीयो॥वसुपालतेसारा॥भार्याधनश्रीतेहनी॥  
 रुपकलाएउदार॥रेभ०६॥वरमुखथीरुपसांजली॥का  
 मिथयोनरराय॥कामेबुद्धिहोयनहि॥निरलजतेहकहाय॥  
 रेभ०७॥आगेस्वरुपजेहूवुं॥तेसुणजोसहूकोय॥मुनीहूक  
 मकहेकामथी॥जेकदीयनहोय॥रेज०८॥ढाल१संपूर्ण॥  
 ॥ढाल२॥मायामोसनकीजे॥एदेशी॥हवेअमरतेजनररा  
 या॥जेहनंमनडुकामेवाय॥धनश्रीलेवानेजाय॥होलालका  
 मीकांईनविचारे॥१॥आंकणी॥हयगयपायकतेलेतो॥

वेमानरचीतेकेतो ॥ चाल्योपथेहवेवेतो ॥ होलाल ॥ का०  
 ॥२॥ बलहथुकितेलेवे ॥ निजथानकआवेहेवे ॥ जशश्रीआ  
 गलतेकेवे ॥ होलाल ॥ का० ३ ॥ हवेजशश्रीमनचिते ॥ मारेशो  
 कलहिएकते ॥ दूखदाईहोशेअते ॥ होलाल ॥ का० ४ ॥ हवे  
 पियुनेसमझावे ॥ बहूउपदेशएणीपेरेलावे ॥ जेमपियुचेद  
 नपावे ॥ होलाल ॥ का० ॥ परनारीनेपापेनरीयो ॥ जईनर  
 कसांहितेगरीयो ॥ लोहपुत्रीरदयेनरीयो ॥ होलाल ॥ का०  
 ॥६॥ तेकारणतमेनवकरजो ॥ परनारीसंगपरीहरजो ॥ जो  
 सुरंगतिजावानेसरजो ॥ होलाल ॥ का० ७ ॥ पुरवस्नेहनररा  
 य ॥ वेणमान्युप्रीयानुसाय ॥ तेनारीमुर्काचितलाय ॥ हो  
 लाल ॥ का० ८ ॥ खटदनसुधीतेराखी ॥ पछेमुकीतेहनीरपा  
 खी ॥ दूखसहेतीतेदाखी ॥ होलाल ॥ का० ९ ॥ मुनीहूकमनी  
 वाणी ॥ साभलताहेजभराणी ॥ आगेरसखाणीकहाणी  
 ॥ होलाल ॥ कामिकाईनविचारो ॥ १० ॥ ढाल२सपुर्ण ॥

॥ अथढालत्रीजी ॥ वृत्तविचारजो ॥ एदेशी ॥ पावलथी  
 हवेजेथयुरे ॥ तेसुणजोअधीकार ॥ वसुपालराजातिहारें ॥  
 नारीविजोगविचारें ॥ भविजीनसांभलो ॥ कर्मतणोगति  
 जेहरे ॥ मोहनोआंभलो ॥ आकणी ॥ जोरजबशुनविच  
 लेरे ॥ तेहथीथयोनीराश ॥ प्रीतिघणीप्रेमदाथकिरे ॥ खेण  
 खेणमुकेनीसासरे ॥ ज० कर० मो० २ ॥ नारीविजोगदूखे  
 करीरे ॥ पांभ्योरेमरतुकराय ॥ तेपापअतिआकरुंरे ॥ ला

ग्युंविद्याधररायरे ॥ भ० क० मो० ३ ॥ धनश्रीहवेजेगइ  
 रे ॥ तेहनेकुणआधार ॥ पीयुपणपरलोकगयोरे ॥ तेहथई  
 नीरधाररे ॥ भ० क० मो० ४ ॥ तेहपापजंसश्रीने ॥ लाग्युं  
 तेनीरधार ॥ अंत्रायकर्मतेवाधीयुरे ॥ दंपतियेअविचाररे ॥  
 भ० क० मो० ५ ॥ तेहकर्मफलआगलेरे ॥ चाखीशुअधि  
 कार ॥ तेकारणभव्यप्राणीयारे ॥ तजोतुंमेपरनाररे ॥ भ० क०  
 मो० ६ ॥ मुनीसंजोगेदपतीरे ॥ पाम्याप्रतिबोध ॥ राजदे  
 इनीजपुत्रनेरे ॥ करेआतमनीशोधरे ॥ भ० क० मो० ७ ॥  
 चारीत्रलहीप्रमादथीरे ॥ पाम्योउपसमगुणठाण ॥ लोभं  
 उदेयेपाछोपम्योरे ॥ रह्योचारीत्रगुणठाणरे ॥ भ० क० मो०  
 ८ ॥ तपजपकरीयाबहुकरिरे ॥ ज्ञानआराधीरेसार ॥ अंत्ये  
 सलेखणाकरीरे ॥ आलोहिअतिचाररे ॥ भ० क० मो० ९ ॥  
 आयुपपुरुकरीत्यांधकिरे ॥ देवलोकवारमेजाय ॥ आयुसा  
 गरबावीसनुरे ॥ सुखभोगवेचीतलायरे ॥ भ० क० मो० १० ॥  
 मुनीहूकमकहेआगलेरे ॥ जेहथयावृत्तत ॥ जथारथचाखुं  
 हवेरे ॥ साभलजोधरीखतरे ॥ भविजिनिसाभलो ॥ कर्मत  
 णीगतजेहेरे ॥ मोहनोआमलो ॥ ११ ॥ इतिढाल ३ समाप्तः ॥  
 ॥ अथढालचोथी ॥ कुंवरगजारोनजरदेखतां ॥ एदशी ॥  
 अमरतेजजीवचवीरे ॥ नवमेभवेसुखकाररे ॥ आरजक्षेत्रे  
 श्रावककुलेरे ॥ अवतारलह्योउदाररे ॥ कर्मतणीगतिसांभ  
 लोरे ॥ आंकणी ॥ ११ ॥ पंचवरसनोजब्रह्मवोरे ॥ पीतापोतो

कालरे॥रीद्वीसर्वेचुथाइगइरे ॥ एहीजगतिनीचालरे। क०  
 ॥२॥ मायेउछेरीमोटोकरघोरे॥ परणाव्योतेबालरे॥ पुत्र  
 परीवारतेहनेहूवोरे॥ ज्ञानअभ्याससुखकाररे॥ क० ३॥  
 धनउपार्जनकारणरे॥ चाल्योदेशातरविचाररे॥ पूर्वअभ्या  
 सतेहनेरे॥ चारित्रआप्युउदाररे॥ क० ४॥ मोहतोमीआ  
 त्तमजोमीरे॥ ज्ञानचरणनेसाथरे॥ कायामायासर्वेपरीहरी  
 रे॥ जेहनेआतमारिद्विआथरे ॥ क० ५॥ आतमज्ञानेजेर  
 म्योरे॥ तेहनेअवरकोणसुखमातरे॥ पुद्गलसंगरुचेनहीरे॥  
 जेहनेठेशीवरमणीनीखातरे ॥ क० ६॥ अवनशीसुखेश्रा  
 तमारे॥ सदाभावेमुनीरायरे॥ अतरआतमखेलतारे॥ ध्या  
 नपरमातमलायरे ॥ क० ७॥ नवकलपीविहारनारे॥ क  
 रतासदानीवाहरे॥ भव्यजीवप्रतिबोधतारे ॥ बहुदेवतस  
 साहरे ॥ क० ८॥ एमविचरताआवियारे॥ एकपुरेउदाररे॥  
 मुनीहूकमकहेसांभलोरे॥ जेहथीहोयेभवपाररे ॥ क० ९॥  
 ॥ इतिढाल ४ संपूर्ण ॥

॥ अथढाल ५ मी ॥ लीलावतकुंवरभलोरे ॥ एदेशी॥  
 देवलोकवारमेथीचवि ॥ जसश्रीजीवतेजाणरेभवि ॥ आ  
 वितेकुलेउपनी ॥ भास्युतेसुणोवाणरेजवि॥ कर्मनछूट्यो  
 प्राणीयो ॥ आकणी ॥ १॥ श्रावककुलेउपनी ॥ लघुवेथीस  
 रधासाररेभवि॥ श्रावककुलेतेदई॥ परणाविपीतायेउदारे  
 ॥ जवि ॥ क० २॥ खटवरसजेहवेथया ॥ वीधवाथइतेहबा

लरेभवि ॥ पूरवकरमउदेथकि ॥ इहांनहिबीजोउपचाररे  
 भवि ॥ क० ३॥ सरधार्थीमनथिरकरुं ॥ पालेसीयलउदा  
 ररेजवि ॥ तपजपक्रियावउकरे ॥ ज्ञानअभ्यासतेसाररेभ  
 वि ॥ क० ४॥ एहवेतेमुनीवरा ॥ प्रणमेहरखेअतीचंगरेभ  
 वि ॥ ज्ञानअभ्यासकरवाभणी ॥ रुदीयेवाध्योजसरंगरेभ  
 वि ॥ क० ५॥ मुनिवरपणतेउपरे ॥ करीक्रीपादीयोज्ञानरे  
 भवि ॥ पणपरमादगुणठाणथी ॥ सरागथयोतेजाणरेभवि ॥  
 क० ६॥ सासनदेवतेनीकह्यो ॥ पूढयोज्ञानविचाररेभवि ॥  
 प्रेमसरागकेमआवड्योनहि ॥ फरजनथीनिरधाररेभवि ॥  
 क० ७॥ ज्ञानिनेपूठिआविया ॥ कह्योपूर्वसर्वव्रतंतरेजवि ॥ पूर्व  
 स्नेहतवजाणीयो ॥ सरागथयोअतिखंतरेभवि ॥ क० ८॥ मु  
 नीवीचरताविजेगया ॥ सरागनगयोतेधाररेभवि ॥ कालदो  
 पणतेजाणीयो ॥ बकुसचारित्रविचाररेभवि ॥ क० ९॥ वंदन  
 पूजनबाईने ॥ दर्शननोघणोउमेदरेभवि ॥ मुनीहूकमकहे  
 तेअंतरायथी ॥ पाम्याठेअतिखेदरेजवि ॥ करमनछुटेप्राणी  
 यो ॥ ढाल ५ सपूर्ण ॥

॥ढाल ६॥ कपुरहोवेअतीउजलोरे ॥ एदेशी ॥ सजालो  
 कतमेंसांजलोरे ॥ कर्मतणुएफल ॥ पूर्वअंतरायवांधीयोरे ॥  
 तेहतणुएबलरे ॥ जवियणकरमनकरशोकोइ ॥ करमेंछुटेको  
 यरेजवियण ॥ क० ॥ आंकणी ॥ १॥ सुखसर्वेअलगारह्यां  
 रे ॥ पूर्वजवनोजेह ॥ आजवतोअंतरायथीरे ॥ दर्शननपांमेते

हरेभवि॥क० २॥ ज्ञानीमुखथीतेलहयुरे॥आगेमलशेए  
 ह॥देवलोकनरलोकनरे॥दोयभवकह्याजेहरेभवियेण॥  
 क० ३॥ तोर्थकरपदवीलहारे॥महावीदेहमोकार॥चक्रव  
 र्त्तिपद्मीकहारे॥दोयपद्मीतससाररेभविष्येण॥क० ४॥तांहां  
 पटराणीतेहोशेरे॥एवांज्ञानीनांवेण॥धर्मथकीश्रंतरायजा  
 सरे॥तेसुणजोसहुवांणरेजवीयण॥क० ५॥ कर्मखपावी  
 केवलजहारे॥पामशेसीवसुखसार॥श्रमरतेजमुनीरायनो  
 रे॥एगांयोश्रधीकाररेजवीयण॥क० ६॥ किचीतिकर्मथीदु  
 खएरे॥जोगेवीयुंतेजोया॥तेकारणभव्यप्राणीयोरे॥नवीकर  
 जोश्रंतरायकोयरेभवीयण॥क० ७॥सवतश्रोगणीसदसजेठ  
 मारे॥वदछठीशुक्रवार॥विद्याधरमुनिगाइयोरे॥मोरबीगाम  
 मोकाररेजवीयण॥करमतणी० ८॥मुनीवरनाशुणगावतां  
 रे॥शुलजबोधीहोयजीव॥मुनीहुकमकहेशीवलहरे सुख  
 भांगेवेसदीवरेभविष्येण॥कर्मनंकरशोकोय॥ गाथा० ९॥  
 ढाल ६ संपूर्ण ॥

॥इतिश्रीश्रमरतेजमुनीनीसंज्ञायसंपूर्ण॥

## तत्त्वसारोद्धारः

श्रीगुरुभ्योनमः

॥ दुहा ॥ श्रवनाशीश्रकलंकतुं नीरंजननीराकार ॥ ह्रवंदु  
ते आत्मा नीजश्रनुभवउदार ॥ १ ॥ तत्त्वतत्त्वग्रहणकरी  
ठवुवचनमनोहार ॥ श्रोतासुणजोकांनदेइ जेथीभवनोपा  
र ॥ २ ॥ तत्त्वसारोद्धारए ग्रंथज्ञानउद्योत ॥ जणतांगणतां  
नीपजे नीजआत्मगुणश्वेत ॥ ३ ॥

हवेजापालखीयेछीये-हवेजगत्रनेविशे अनेकपदार  
थछे तेसर्वेनुसार वीचारीनेकाढीये त्यारेतत्त्ववेछे जीवत  
त्व. १ अजीवतत्व. २ एवेजतत्त्वछे एवंवीनावीजोकोइ  
प्रढारथदीसतो नथी. शिष्यवाक्य-स्वामीपुर्वेअमेतत्त्वसा  
ततथानवसाभल्याछे तेनुंकेम. गुरुवाक्य-हेभद्रएवेतत्व  
नासातपणथाय तथा नवपणथाय तेकल्पनाठेपरंतुतने  
जेदकरीनेदेखाडुतेसाजल हवेजीविद्रव्यनाचारतत्त्वछे.  
जीवितत्व १ सवरतत्व २ नीरजरातत्व ३ मोक्षतत्व ४  
तथाअजीवतत्वनापांचतत्वछे अजीवितत्व १ पुन्यतत्व २  
पापतत्व ३ आश्रवतत्व, ४ वधतत्व ॥ एटलेएजीवअजीविम  
लीनेनवतत्वथया तथापुन्यपापनगणीयेतोसाततत्वथाय.  
शिष्य-स्वामीपुन्यपापगणीयेतेशावास्तेनेनागणीये  
तेशावास्तेएतत्वछेकेनथी तेसमजावो.



गुरु-जे पुन्यपापवेतत्वछे एआश्रवछे त्यारे एवेतत्व जुदागणीयेतो आश्रवशेनेकहीये जे पुन्यपापनादलि यांआवेते तेनेजआश्रवकहिये एटलेसातजतत्वछे तथा जेआवेछेतेनेआश्रवगणीनेजेदपामीये त्यारेउदेआवेला जेदलीया तेभोगवीनेखेरवीये तेनेपुन्यपापकहिये एटले तेथीनवेतत्वथाय.

शिष्य-स्वामीएनवेतत्वनोवीवरोकरीनेचतावी.

गुरु-प्रथमअजीवितत्वनीओलखाणकराबुछु अजीव तेकेहेनेकहियेकेजेनेविगेचेतनारुपलक्षणनथी तेअजीव नाजघन्यथकीपाचजेदते नेउतकृष्ण ५६० जेदते तेप्रथमजघन्यनापाचभेदओलखावीयेछीये तेनीवीगत-धर्मा स्तीकाय १-अधर्मास्तीकाय २ आकास्तीकाय ३ काल ४ पुद्गलास्तीकाय ५ हवेधर्मास्तीकायतेशुकहिये-धर्मा स्तीकायएकद्रव्यछे तेअरुपीते चउदराजलोकनाप्रमाणेएद्रव्यएकते जेटलालोकाकागनाप्रदेश तेटलाप्रदेश छेपणनीराकारछे आकारेकरीरहीतछे तेमाकशीकीरीया नो गुणनथी पणजेजीव पुद्गलचालेछे तेनेसाहाजआपेछे

शिष्य-स्वामीजो एनामाक्रीयानथीतो चालताने सा हाज्यकेमआपेते

गुरुवाक्य-हेभद्रसाहाज्यआपवी तेस्वभावीकते अ नेक्रीयाते तेवीजावीकछे तेवीभावदीशाएनेविशेनथी ते

पोतपोतानास्वप्नावमांसदायरहेछे जेमजलनोस्वप्नावछे  
तेतरवानोछे तथातेलनोस्वप्नावदुवाप्नवानोछे एतेस्वप्ना  
वीककेहेवाय वीभावीकनहीं वीभावीकतेकेनुनाम केजेम  
अग्नीछे तेकाष्टादीकनासंजोगथकी साहामीवस्तुनाना  
शकरे तेविभाविककहीये.

शिष्य—स्वामीअग्नीमांतोदाहकस्वभावछे एनेविभा  
विककेमकोहोछो.

गुरु—दाहकस्वप्नावछेतेकाष्टादिकवस्तुजोगछे तेनेवा  
ले परंतुपथ्थरनेकंडवालवानोस्वप्नावछेनहीं. पणविभावं  
नाजोरथीपथ्थरनेपणवाले तथापांणीछितेअग्नीनुशस्त्रछे  
शामाटेकेपाणीथकि अग्नीनोनाशयाय परंतुविप्नावना  
जोरथीअग्नीपाणीनेपणवाले एटलेविभावतेशु. जंपोता  
थकीबीजाअपरनुजलवुं वेमलीनेजेकारजकरवु तेनुनाम  
विभावकहीयेअनेविभावतेनेजक्रियाकहीये एटलेतेविभा  
वदशातेधर्मास्तीकायमांनथी.शामाटेजेएकथीबीजोमलेन  
हीं. एटलावास्तेअमेक्रियानीनापांणी तथाजेचेतननेचा  
लतांसाहाज्यआपेछे तेगादृष्टातेकेजेम मातुलांजलनेवि  
शेचाल्यांजायछे तेजलनासाहाज्यथकीचालेवे तेमजन्मे  
तनधर्मास्तीकायनीसाहाज्यथकीचालेवे. १ तथाअधर्मास्ती  
कायबीजोद्रव्यतेपणअरुपीछे तेनेविशेआकारनथी तथा  
क्रीयापणनथी तेजडचेतननेथीररेहेवुंहोय तेनेसाहाज्य

आपेछे शेट्टांतेकेजेमकोइपुरुपपथेचाल्यो जायछे अनेते  
 धरतीएवीठेजे ज्याहाजाहाडजाझुवेनहीं. अनेग्रिष्मरुतुवे  
 एटले जेठमहीनानादाहामवे अनेलुउपणघणीवायछे  
 तापपणघणोआकरोछे तेवीवखततेचालतापुरुपने सार  
 गमाचालताकोइकजामआव्यु तेजामकेवुछेके महाविस्ता  
 रवतजेनीगयाछे एवजामदेखीनेतेपथीलुउतथातापमाथी  
 हीमचोआवतोथकोतेजामहेठलवेसेकेनवेसेअपीतुवेसे एजा  
 मनीसाहाज्यथकीतेपथीवेठो तेमजीवअजीवनेथीररेहेवु  
 तेअधर्मास्तीकायनीसाहाज्यथकीरेहे. २ हवेत्रीजोआ  
 कास्तीकायद्रव्यएकलोकालोकप्रमाणेछे तेपणअरुपीछे  
 तेनेविशेषएकशोआकारनथीतथाक्रीयापणकशीछेनहींप  
 रतुजमचेतननेअवकाशआपेशेट्टातेकेजेमकाइएचुनेकरी  
 नेइटोचणीहोय पठीतेभीतमामागकश्योएहोयनहीं एवी  
 साफकरेलीठेतोपण तेनेविशेखीलीमारीएतोमाहीपेसे त  
 थाजेमकाटनामोनप्रमुखनेविशे जेटलीखीलीउमारीयेते  
 टलीमाहेसमाय परतुतेकाटनुमगलुतेखीलीनामागनुव  
 धारेथतुनथी तेजेमएकाटतथाभीतनोस्वभाववे तेजेमखी  
 लीनेमारगआपेतेम आकाशद्रव्य जिविपुद्गलनेमारगआ  
 पे-३ हवेचोथोद्रव्यजेकाल.

शिष्य--स्वामीपूर्वधर्मास्तीकाय प्रमुखद्रव्यनेआस्ती  
 कायकह्यो नेकालद्रव्यनेआस्तिकायकेमनकह्यो एकलो

कालकहिनेबोलाव्यो तेनुशुंकारण.

गुरु-हे देवाणुं प्रीय धर्मास्तिकाय प्रमुखजेद्रव्ये छे तेव  
हू परदेशी छे जामाटे के धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय तथा  
जीवास्तीकाय एत्रणद्रव्य अशरूयात परदेशी छे तथा आका  
स्तिकाय अनंत परदेशी छे अने पुद्गलास्तिकाय नाखंध अनं  
ता छे ते कोइही परदेशी छे कोइत्रण परदेशी छे जावत संख्या  
त परदेशी छे तथा असख्यात प्रदेशी तथा अनंत प्रदेशी छे त  
था अनंता परमाणु जुदा छे तेमां पण खंध मलवानी शक्तीर  
ही छे माटे एने आस्तिकाय कह्यो अने कालद्रव्य ने विशेषक स  
मय थी बीजे समय मलेन ही. माटे तेने आस्तिकाय कह्यो नही.  
शिष्य-स्वामी एक समे थी बीजे समे मलेन ही त्यारे एने  
द्रव्य के म कहो छो.

गुरु-हे नद्र सर्वशास्त्र ने विशेषे पंचास्तीकाय नीवांख्या  
वि अने द्रव्य नीवाख्या वि पण ठो द्रव्य जे काल ते कांइ पदार्थ  
न थी पण सर्व द्रव्य ने नवानुं जुनुं करे एटलामाटे तेने द्रव्य कह्यो  
परंतु प्रथम समय नो नाश थाय अने बीजे समय आवे माटे  
काल द्रव्य ने उपचार करीने द्रव्य कहिये छीये ते द्रव्य अरूपी  
छे आकार पण कइयो छे नहि क्रीया पण ठे नहि नवीवस्तु  
ने जुनी करे एवुं परावर्तन धर्म ठे ४ हवे पुद्गलास्तिकाय तेने  
विशेरूपी पण ठे आकार पण छे तथा क्रीया पण छे मलण बी  
खरण स्वभाव ठे ५ एटले ए अजीवना पांचे भेद ते मधे चार भेद

अरुपीअनेएकरुपी एसर्वेमलीनेपाचनी ओलखाणकरा  
वीएसर्वे वेहेवारनयनापक्षछे हवेजे ५६० जेदएनाकही  
शु तेअशुद्धवेहेवारनयनापक्षछेशामाटेकेकल्पनाकरीनेभे  
दउठाववा तेनुनामअशुद्धकहिये अनेवेहेचवुतेवेहेवारए  
टलेअशुद्ध वेहेवारथयो.

शिष्य-एवाअशुद्धभेदवेहेचवामाशिजिरुठे एवाकल्पी  
तजेदकरवानेवस्तुता कइजुदीपमनीनथी तेतोतेपाचमां  
नेपाचमाठे तोशावास्तेकल्पीतजेदकरोगे.

गुरु-हेभद्रएतेकह्युतेखरु परतुवालजीवने जेदवेहे  
च्याविनासमजणआवेनहि तेवास्तेएजेदवेहेचवापमेअ  
जेमकोइपुरुपपोतानाघरना माणसनेकेहेजेदातणलाव  
तेवारैतेपुरुपढाह्योसमजुहोयतो दातणपाणीनोलांटो रु  
माल तमाक प्रमुखजेघस्तोहोयतेसर्वेलावे एटलेतेजाणे  
केवधुएजोइशे पणअणसमजुहोय अथवाबालकछोकरु  
होय तोतेनेजेटलीविस्तुकहिये तेटलीलावे माटेतेनेसर्वे  
वीवरीनेकह्युजोइये तेमजसमजुपुरुपहोयते सखेपेथी

त्रीणि लोक इत्यादीकजेकल्पीये तेदेशकेहेवाय २ तेनाप  
 रदेशासंख्यातवे जेटलालोकाकाशनाप्रदेशवे तेटलाए  
 नावे ३ तेद्रव्यथकीएकजद्रव्यछे ४ खेत्रथकीलोकाकाश  
 प्रमाणेछे ५ तेकालथकीअनादीअनंतछे 'एटलेआदीअं  
 त्यनथी ६ जावथकीवरण गंध रस फेरश तथा स्वस्था  
 ननथी ७ गुणथकीजीवपुद्गलनेचालता साहाज्यआपे  
 ८ तेमजअधरमास्तीकायनेविशेजाणवा परंतुएटलोवि  
 शंप केधर्मास्तीकायचालतानेसाहाज्यआपे तेनहिनेथी  
 ररेहेतेनेसाहाज्यकरेतेगुणआठमोलेवो २ आकास्तीका  
 यनेविशे खयजेछेते लोकालोकप्रमाणे १ देशतेचउदरा  
 जलोकप्रमाणे तेनेदेशकहिये कदापीओगेअधिकोकल  
 पिये तोपणतेनेदेशकहिये २ परदेशअनंतवे ३ द्रव्य  
 थकीएकद्रव्यछे ४ खेत्रथकीलोकालोकप्रमाणे ५ का  
 ल ६ तथाजावथकिपुर्ववत ७ गुणथकीअवंगाहनागुण  
 जरुचेतननेमार्गआपे ८-३ चोथोकालद्रव्यना ६ जेदते  
 मधेकालद्रव्यविशेखधदेश ठेजनहिं शामाटेजेअबतोपदा  
 र्थवेसदायएकसमेलाधे १ द्रव्यथकीकालद्रव्यएकवे २ खेत्र  
 थकीअढीहीपप्रमाणे ३ काल ४ तथाजावथकीपुर्ववत ५ गुण  
 थकीनवापुरानावर्तनालक्षण ६ एकालद्रव्यउपचारथकीठे  
 एटलेअजीवअरुपीद्रव्यनाचारजेदधर्मास्तीकायआदेदइ  
 ने कह्यातेसर्वेअरुपीठे तेजानीनादीठामांआवे परंतुचर्म

द्विष्टीवालायी देखायनहि एमसदहवु हवेरुपीद्रव्यकहि  
 येगीये पुद्गलद्रव्यजेरुपीतेनाजेदकहियेगीये वरण ५ रा  
 तो-१ पीलो २ लीलो ३ धोलो ४ कालो ५ गंध रस  
 रजीतथादुरजी रस ॥ कम्बो कशायलो खाटो तीखो  
 मधुरो फरस ८ टाहाओ १ उनो २ लुखो ३ चोपनो ४  
 नारे ५ हलवो ६ बरहट ७ शुकोमल ८ स्वस्थान ५ लाबु  
 १ गोल २ त्रीखुण ३ चोखुण ४ वलीयानेआकारे ५ हवेपा  
 चवरणना १०० भेदथायतेकहियेगीये प्रथमजेरातोवरण  
 तेनेविशे सुरभीतथादूरभीवेगधहोय रसपाचेलीधे फ  
 रसआठेलाधे स्वस्थानपाचेलाधे तेनास्वामीकहियेगीये  
 रातेवरणेकुसुमगुलाव तथाकमलप्रमुखते तेनेविशेगधशु  
 रभीवे फरससकोमलहलकोतथा शीतलते तथास्नीग्ध  
 पणुते स्वस्थानगोलते रसमधुरोते एमएकएकवरणमां  
 गंधप्रमुख ज्याहाजथाजोगजोइये तेवागणीलेवा एटले  
 एरातावरणनेविशे विशभेदथया तेमलीलावरणनाविश  
 पीलावरणनाविश शामवरणनाविश धोलावरणनाविश  
 एटलेएपाचवरणनामलीने १०० थया एटले

हेविसजेदलाधे तेनीविगत-वरण ५ गंध २ फरस ८  
 स्वस्थान ५ एटलेविशथया एमपांचरसनाथइनेसोथाय  
 तेमजस्वस्थाननाविशेषण २० भेदलाधेतेनीविगतउप  
 रप्रमाणेपाचस्वस्थाननाथइने सोभेदथयातेमजगंधनेवि  
 शेतेवीसभेदलाधे तेनिविगत वरण ५ रस ५ फरस ८  
 स्वस्थान ५ ए २३ सुरजीगधनाने २३ दूरभीगंधनाम  
 लिने ४६ थाय हवेफरसनाप्रथम ७ फरसनेविशेप्रतिप  
 क्षीउप्तफरसनहोय बाकीना ६ एफरसलाधेवरण ५ रस  
 ५ गंध २ स्वस्थान ५ एटलेतेविसथया एएकफरसनाते  
 विसतेमआठेफरसनेतेविसतेविस गणतां १८४ जेदथया  
 एटलेवरणना १०० रसना १०० स्वस्थानना १०० गं  
 धना ४६ नेफरसना १८४ सर्वेमलीने ५३० थयाएट  
 लेरुपिअजिवद्रव्यना ५३० जेदथयाअनेअरुपिद्रव्यना  
 ३० भेदएटलेसर्वेअजिवमलिने ५६० भेदथयाएसर्वेअ  
 शुद्धव्यवहारनयनापक्षछे एटलेअजिवतत्वकह्यो हवेआ  
 श्रवंतत्वतलखावियेठिये एटलेआश्रवकहेतांजेकर्मनुंआ  
 वंथंथायठे तेनेआश्रवकहियेअनेतेआश्रवशाथकीआवेछे  
 अनेतेनोहेतुकोणठे तेनुंकारणदेखामियेठिये हवेएआश्र  
 वनेआववानेमुलहेतुच्यारछे उत्तरहेतु ५७ ठेतेमुलहेतु  
 नानामिथ्यात १ अत्रत २ कपाय ३ जोग ४ तेमामि  
 थ्यातना ५ भेदछेतेमांपहेलुअभीग्रहिमिथ्यात तेकहेने



कहिए जेपुरवेअज्ञानपणानेविशे कोइअज्ञानिनिसगेअ  
थवाअज्ञानिगुरुनाउपदेशथकीजेसाजल्युछे अनेजेवस्तु  
ग्रहणकरीवे । तेछोडेनहि कदापिकोइसुगुरुमले नेध  
पिरीतेकरीनेसमजावेतोएपणपोतानीहठछोमेनहि लोह  
वाणियानिपेठे अहियालोहवाणिआनोद्रष्टातलखीयेछीये.

वंसंतपुरनगरीनेविशे धनदत्त १ धनसार २ धनबल  
भ ३ वसुहिण ४ एवेनामेचारवाणीयावसेठे तेचारेनेढोस  
दारीनोहकवणोठेपरतुचारेनीरधनछे एकसमेचारेजेगा  
थइविचारकरयोकेआपणीपासेधननथी धनविनामानपा  
मियेनहि नेसुखपणहोयनहि माटेपरदेशधनकमावाज  
इयेएमविचारीनेचारेजणपरदेशगया आगलजतांएरुदी  
वशनासमाजोगे एकअटवीमाजता रस्तोभुल्यानेउच्चा  
गमेमारगेजायठे नेआगलजताएक लोढानीखाणआवी  
तेवारंचारेजणेविचारकरयोकेलोढुल्यो आपणनेखरची  
माखपलागशे एमविचारीचारेजणेलोढुलिधु त्याथकी  
आगलचाल्या त्याकलाइनीखाणआवी तेवारेसाहोमाहे  
कहेवालाग्याके कलाइल्यो लोढुपम्युमुको तेवारेत्रणज  
णेलोढुपम्युमुकोकलाइबाधी पणचोथोजेवसुहिणतेणेक  
लाइनलीधी त्यारेत्रणजणाकहेवालाग्याके तुकलाइले  
एटलेआपणेजइमे तोपणतेबोल्योनहि एमघणीवारक  
हुंत्यारेतेबोल्यो केतमारीरीतजोइनेहुतोनेचकथयोछुत्या

रेत्रणेजणेपुछयुकेतु शामाटेएवडुंबोलेने तेबोल्पो केतमेद  
 गाखोरआदमीगे तेउकहेतारीसाथे शोदगोकरयो तेणे  
 कहुंकेतमेलोढानासगानथया तेनेत्याथीलावीने अधव  
 चनाखीदीधुं तोतमेतेनाजलानथयातो विजानाशुंनलाथं  
 शो तेवारेतेउकहेकेएमांकाइजिवनथि केदगोकरयो एम  
 घणीरीतेकहुंकेतुंकलाइबांध पणकोइनोसमंजाव्योसम  
 ज्योनहि त्याथकीआगलचाल्या एटलेत्रांबानीखाणआ  
 वी त्यांपणतेसमज्योनहि पुरवनीपेरेलोढुराखीरह्यो ने  
 त्रांबुलीधुंनहि तेमजआगलजतारूपानि तथासोनानी  
 तथासोलेजातना रत्ननीखाणआवी त्यांपणएणेकोइनुक  
 हुंमान्युंनहि त्यारेसोलमीजेमणीरत्ननीखाणछे त्यांवे  
 शीनेधनसारप्रमुखेकहुंजे अमारेहवेआगलकमावांजवुं  
 नथि केमकेजेजोइयेतेधन इहांमल्युजे माटेअमेपाछाघेर  
 जइशु वास्तेसमजिनेमणीरत्नले नेलोढुंनखीदेएटले  
 आपणेघेरजइयेतोसरवेसुखीयाथइये परंतुतेवसुहीणेको  
 इनुंकहुंमान्युंनहीं उलटाअवगुणबोल्याकरयो वलीतेम  
 णेकहयुंके घेरगयापढीतुंमागीशतो अमथीअपाशोनहीं.  
 इत्यादिकघणीतिरेहसमजाव्यो पणतेसमज्योनहीं. पछी  
 चारंजणघेरआठ्या तेमांत्रणजणे मणीरत्नवेचीने करो  
 मोसोनइयानो वावसायकरवामांभयो. पालेखी, मेना,  
 घोडा, गामी, चाकर वीगेरे मोटीठकरातकरीनेवेठा ने

वसुहिणेतोहता तेवानेतेवारह्या तेवारैगामनालोकतेनेपु  
 छेजेतमेचारेमित्रसाथेगयाहता नेत्रणधनवानथया नेतुं  
 कइनलाव्योतेशु त्यारेमोघमउत्तरआपेके एत्रणदगाखो  
 रछे कुटीलमाणसछे विश्वासकरवाजोगनथी एवोउत्तर  
 करे तेथीगाममाएवीवारताप्रसिद्धयइके केटलाककेहेठेके  
 एनोजागत्रणेजणेआप्योनहीं केटलाककेहेठेके एजकमा  
 योहतो तेत्रणेजणेमलीनेवसुहीणनुपामीलीधु एममुखमुं  
 खनोखीनोखीवारताप्रवर्ते त्यारेगामनावेमाह्यासमजुह  
 ता तेणेवसुहीणना सगावाहालानेठपकोदीधोजे तमजे  
 वासगाने तेबचारागरीबनुपेलात्रणजणखाइगया तेनीत  
 मेमदतकरतानथी एठीकनहीं सारासगाशाकामनाछे ते  
 वारेतेमगावाहालाबोलाजे शेठजीतमेअमनेठपकोआ  
 प्योतेठीकछे पणअमनेकह्यावगरशीमालमपडे त्यारेतेम  
 णेकहयुके एगरीवशुंहेहेवाआवे तमारंबोलावीनेपुछधुंजो  
 इये तेवारैतेसगावाहालाजेगाथइने वसुहिणनेबोलावीने  
 पुछवालाग्याके ताहारेशीहकीगतथइ तेणेजवापदीधोके  
 १४ ।,दगाखोर एवाआदमीनीवातकरवामाकाइमालन  
 थीसगाएकहयुकेलुच्याप्रमुखजेवाहशे तेवानेअमेपोहोंची  
 शु पणतुअमनेवातकहे पणतेवातकेहेनहि घणोआग्रह  
 करीनेतेनीपासेवातकेहेवडावी. १५ त्यारेमाहेथीसारएवो  
 निकलयोके एणेजेपुर्वेलोहुंजाल्युंहेतुं तेछोडचुनहीं अनेपे

लान् ए जे सारवस्तु दीठिते लीधी. असार दीठिते नाखी दी  
धी. एवसां भली ने जे सगाम ल्याहता तेवो ल्याके भाडतारा  
कर्मनो वांकछे एमनो वाकनथी विनाहक नाहक एमनो वां  
कशावास्ते काहाडे छे जे ते लोडुजाली ने हठन मुकी तो तु दुखी  
योथयो एमणे तो तने घणुं समजाव्यो पण ते नामान्यु एमां  
एमनो कांइ वांकनथी एटले जे मते लोहवाणियो दुखियो थ  
यो तेम प्रथम अज्ञान पणामा जे वस्तु जाली ते कोइ सुगुरुम  
लेयी नागे डेतो ते चार गती संसारमा अनंता काल रखडे ते  
ने अमी ग्रही मिथ्यात्व कहिये १

बिजुं अणाभिग्रहि मिथ्यात कहे तां तेने विशेष ठवादनहि  
तेम सरधा पण स्थिर नहि सर्वे ने देव जाणे कोण सरागीने  
कोण वितरागी तथा कोण देवि देवला तथा सर्वे ने गुरु जाणे  
कोण निग्रंथने कोण संग्रंथ कोण आरंभी, कोण अणारंभी  
ए सर्वे ने वादे पुजे पण एने विशेषे सारा नस्तानि खबर नहि गु  
ण अवगुण नी परिधानहि मुक्तिदायक सुगुरु तेने पण सर  
खागणे सआरंजिकु गुरु कुगतिना दातार तेने पण सरखा  
जाणे एटले तेने विशेषे जाण पण कुशुं एनहिये जमोदुं अज्ञान ए  
बिजो भेद मिथ्यात नो जाणवो २ त्रिजो अचि नवेशि मिथ्या  
त्व तेने विशेषे जाणिने खोटी हठ करवी केम केकाइ प्रथम अ  
ज्ञान पणामां मरखावचनानि कलीगयुं पछी समज्यामां  
आव्युके आपणे वचन बोल्याते मिथ्यावे परतु आपणे वो

ल्यातेकांडपाछुंफरेनहि एमविचारोनेवचनउपर अने  
 तुजुक्तिलगाविनेतेनेसाचुकरे कोनीपेठेकेजेमआगुछे  
 चारियोवाला नोखीनोखीसमाचारियो बाधीनेवेठावे  
 नेशास्त्रमाप्रतक्ष अक्षरदेसेवेनेमानतानथी अनेपोत  
 गवनीसमाचारिनोमुमतमुक्तानथि अनेमुखथकीए  
 हेछेके एककानोमात्रउथापशे तोअनतससारीथशे ने  
 मपनेद्वारेएकेमानेनहि पोतानीमतलबमाआवेतेमा  
 पोतपोतानाघरडाआगलमरीगयाहोय तेनेआडाध  
 तेथकीतमेकाइविशेपजाणोठोएमणीकरचुहशेतेसमजी  
 करचुहशे तथासिद्धांतनेविशेआरंजपरीग्रहजेमओठो  
 तेमधर्मकहोवे पणआकालेतोजेम आरंजपरीग्रह  
 रेतेमधर्ममानेछे वलीमुखथकीएवुकेहेछेके कानोम  
 उथापवाथी जमालीपरमुखसातनीन्नवथया एमकहि  
 खाडे अनेपोतेसाबुथांसुत्रउथापे पोतेमनमानविचा  
 आपणेमोहोटीनीन्नवठीये तथापरमात्माना 'मार्गने  
 तो समकीत १ ज्ञान २ चारित्र ३ एवस्तुआआत्म  
 रुपमावे अनेआत्मस्वरुपथी प्रगटथायतो जतेनीमुक्ती  
 य शामाटेकेकेवलज्ञान तथामुक्तिएसर्वेशुकलध्यान  
 तथासमकितप्रमुखएसर्व आत्मस्वभावमाछे एवुसर्व  
 द्वातमादिगेछे परंतुएवापाठकोइसिद्धांतमाजोवामा  
 वतानथि जेफलाणातिथगयाथकीमुक्तिथाय तथाफ

एतिथीनोउपवासकरवो तेथकीमुक्तिथाय तथातेतंपनु  
 उजमणुकरवुं तथागुरुनानवअंगपुजवां तथापोथीपुजवि  
 तथावासनखाववां तथाजोगउपधानवहेवां तथातेनिवि  
 धिकराववी तेनारुपैयागुरुनेदेवाइत्यादिक हालमांएवहे  
 वारघणोदिसेछे नेसुत्रमापाठनथि तेनीपरुपणाकरवी ने  
 जेसुत्रनेविशेआत्मस्वरुपथीज मुक्तिकहितेनपरुपे तेने  
 अभिनिवेशी मिथ्यात्वकहिये केमकेतेजाणीनेसिद्धांतनी  
 रीतेपरुपतानथि पोतानीमतलवनुंपरुपेते तेनेअज्ञीनिवे  
 शीमिथ्यात्वकहिये ३ त्रोयुसंशयकमिथ्यात्व कहेतांजेकेव  
 लीपरमात्मानावचननेविशे शंकाउत्पन्नथाय जेमठछी  
 बुद्धिनाधणीजेवालजिवछे तेणेप्रथमअज्ञानी तथाकुगुरु  
 नावचनथीसाजलेलीवातोतथाशास्त्र पछीसुगुरुतेनेवतावेछे  
 केजाइउएतोआश्रवनातथाआरंजना कामतमेकरोछोते  
 थकीतमारससारवधशे माटेतमेसवरानिरजरानुकामकरो  
 नेउपाधिगेतेटालो जेमतमाराआत्मानुंकारजसिद्धथाय  
 तेवारेतेनामनमाशंकापेमेके आवचनसाचुकेपुर्वे सांभ  
 ल्युंतेवचनसांचुएमशंकारहे पणशास्त्रजोइने निश्चैनकरे  
 तेनेसंशयकमिथ्यात्वकहिये ४॥

पाचमुअणानोगमिथ्यात्वकेहेतां अजाणपणुजेनेधर्मक  
 र्मनीकंशी ओलखाणनथी ससारमारच्योपच्योरेहेछे  
 आत्मस्वरुपजाएयुनहोय त्यांहासुधीअजाणकहिये शा

माटेके सिद्धातमाएवुकह्युछेके अभेगयाजिवाजीवाइत्या  
दीकपाठवेमाटे जीवअजीवनीआदेदेइनेस्वरूपजाणप  
वे जीवस्वरूपनेसदहे अजीवसत्तानेदूरकरे इत्यादीकआ  
त्मस्वरूपनुजाणपणुछेतेने जाणकहियेएवीनानाबीजाजे  
रह्या तेनेअणानोगमिथ्यात्वकहिये ५ एमिथ्यात्वनोअ  
धिकारकह्योतेचोथाकर्म ग्रयथकीजाणजो एमिथ्यात्व  
ज्याहासुधीगयुनथी त्याहासुधीकोइजीवसमकीतपा  
नहिं एमिथ्यात्वनाकारणथीअनतानवाकर्मउपारजेने आ  
त्मानेजारेकरे एथकीआत्माअनताकाल ससारमापरीत्र  
ह्यणकरे एटलेआश्रवनोप्रथमहेतु कह्यो मुल १ उत्तर  
५ हवे बीजोहेतुअवरतवे तेना १२ जेद तेनीवीगत प्र  
थ्वीकाय १ अपकाय २ तेउकाय ३ वायुकाय ४ वन  
स्पतीकाय ५ त्रसकाय ६ फरसेद्री ७ रसेंद्री ८ घ्राणेद्री  
९ चक्षुइद्री १० श्रोतेद्री ११ मन १२ एवारनेजेणेसवरचा  
नथीनेनेमकरद्योनथीतिधणिने एवारेकारणथकी अनंता  
कर्मनुंआववुंथायछे केमकेजेमघरनोवेशे बारगीडांतेछी  
मापुरेनहि त्यासुधिचोरचखारसर्वेआवे नेतेघरमांकाइ  
मालजणगरहेनहि तेमइहाआत्मारुपीअघर तेनेज्ञानद  
रसनरुपीधननेबारअवरतरुपीयाठिमा तेमध्येरागद्वेषरु  
पियाचोरनुआववुंथाय ज्ञानदर्शनरुपिधनवे तेचोरीजाय  
पणएबारबिडाछेतेपुरेतोसुखेरहेवाय एआश्रवनोबिजोहे

तुकह्यो मुल २ उत्तर १७ हवेत्रिजेहितुकपाय १ विजो  
नोकपाय २ हवेतेकपायनाचारभेदछे क्रोध १ मान २  
माया ३ लोभ ४ तेएकएकनाचारचारभेदछे तेमध्येपहे  
लोअनंतानुबधियोक्रोध केवोछेकेजेमपथ्थरनीसल्याफा  
टिपमी तेफरीयीजेगीनथाय तेमअनतानुबधियाक्रोधवा  
लोजिव आवखापरजंतक्रोधेधमधामोरहे १ तथाअनंता  
नुबंधियोमानकेवोछेकेजेवापथ्थरथंन अनेकउपायकरिये  
तोपणनमेनहि कडकाकडकाथायपणतेनमेनहि तेमअनं  
तानुबंधियामानवालाजिव राज, पाट, देश, धन, सर्वेखुटे  
अनेकलोकसमजावेपणकोइनेनमुपासुआपेनहि २ अनं  
तानुबंधिमायाकेविवेके जेवांवांसनांमुरामांभिनभिनथइजा  
यपणपांशराथायनहि तेमअनंतानुबंधिमायावालाजिव  
जिवेत्यांसुधिकपटतजेनहि ३ तथाअनतानुबधिलोचके  
वोछेकेजेवाकरमजनारंगनुलुगडु बालिनेराखकरीयेतोप  
णलालरहेपणरगठोमेनहि तेमअनंतानुबंधिलोभवालो  
जिव जिवंतपरजंतलोचनतजे ४ तथाविजिचोकमीअप्र  
तियाखानीयाकपायनीकहियेछिये.

अप्रत्याखानीक्रोधकेवोछेके कोइकालीभोमीकानेविशे  
फाटपडेहे तेबारमहिनेवरसांदपांणीनवांथाय नेघणांढो  
रढांकणउपरफरेतेथीगुंदाइनेएकयायतेमएक्रोधवालाजी  
वनेबारमहिनेक्रोधउतरे १ तथाअप्रतीखानीमानकेवोछेके



जेवो अस्तीनोथानो घणीमेहेनते घणैकष्टेकरीने कोइक  
 बालवासमर्थथाय तेमएमानवालानेकोइकघणीतरेहथी  
 समजावतामानछोडे. २ अप्रतीखानीमायाकेवीछेके जे  
 बांधेदानांईगडापाशराकरवां तेकोईपुरुषकलावालोहो  
 य नेघणीकतरेहथी मेहेनतकरेत्यारेपासराथाय तेमएमा  
 यावालानेकोइ बहूरीतथीसमजावेतोमायातजे. ३ अप्र  
 तीखांनीलोचकेवोछेके अज्ञानीलोकनानोइकुवाछे तेम  
 धेघरनीअशुची अपवीत्रएठवान प्रमुखमांहेजायछे तेस  
 दायकोहीगएलुरेहेते तेनोमाघजेवस्तरनेलागेतोतेधोबी  
 थीपणजायनहीं कोइखरोकस्वीमलेतोएमाघनेकाहामेते  
 मतेलोचवालाने कोइखरीमेहेनतकरीनेतेनेसमजावेतोते  
 लोचछोमे तेविनाकाइछोमेनहि. ४ हवेत्रीजीचोकडीप्रत  
 खानीकपाय तेमधेप्रत्याखांननोक्रोधकेवोछे केजेवीवेल  
 नेविशेवेजागरूरीये तेकश्येएनीमेलेजेगाथायनहिं परंतु  
 वेरुतुगएथके त्रीजीरुतुआवेत्यारे तेवारसामोपवनआवे  
 तेरेतउमीनेखामपुरे तेवारतेरेतीएकमेकथाय तेमएक्रोध  
 वालापुरुषनेकोइसमजावेतोमुकीदे जावतचारमासउपर  
 रहेनहि ५ तथाप्रत्याखानीमानकेवोछेके जेवोलाकमान  
 थानोकोइपुरुष तेजतापथीमेहेनतकरे तोथोडीमेहेनतथ  
 वलेतेमतेमानवालाजीवने कोइसारीरीतेसमजावीने केहे  
 तोमानमुकीदे अथवाकेटलेदाहाडे स्वभावेपणमुकीदे.

तथाप्रतीखानीमायाकेवीछे केजेवीगउमुत्रीका जेमवांकी  
 वांकीमुतरतीचालेतेनेकोइपुरुपजालीनेउजोराखेतोवांका  
 इनरहे तेमतेमायावालाजीवने केटलीतरेहसमजावीने  
 केहेतो तेपुरुपकपटबोडीदे. ३ तथाप्रत्याखांनीलोचनकेहे  
 वोठे जेवुंगाडीनुंउजणतेनोडाघजेवस्रनेलाग्योहोय तोधो  
 बीनेत्याहांगयेथकेडाघजाय तेमतेलोभवालाजीवनेकाइ  
 थोडीमेहेनतकरीने समजावेतोलोचनतजे. ४ तथाचोथी  
 चोकडीसंजलनीकहियेछिये तेमधेप्रथमसंजलनोक्रोधके  
 वोहोय जेमपाणीमांआगललीटातांणताजइये नेपांछले  
 लीटीमलतीजाय तेमएसंजलवालाक्रोधनाजीवने क्रोध  
 नोधमधमाटथाय पणतुरततेक्रोधउत्तरीजाय तेनोपदर  
 दाहाडानोनियमठे एनियमचारेकशायनापराएसमजवा  
 १ तथासंजलनोमानकेहेवोहोय जेवानेतरनोथंन जेमवा  
 लीयेतेमयले तेमतेमानीपुरुपतेमानआवेनेतुरतवलीजा  
 य. २ संजलनीमायाकेवीछेके जेमवेलाउगेठे तेवांकावां  
 कांचालेछे परंतुएकठेडोजालीनेताणीये एटलेपांशरोतीर  
 याय तेमतेमायावालाजीविमनमांकपटकरे पणक्षणएक  
 मांकाहाडीनांखे. ३ संजलनोलोचनकेवोछेके जेवोहलदी  
 नोरंगतडकोलागेनेउडीजाय तेमतेलोचनवालाजीवनेलो  
 चनोउदयथाय परतुक्षिणएकमांवलीजाय. ४ एटलेएक  
 पायनचारेचोकडीना सोलजेदसहित कहिनेदेखाइया

हवेनोकखायनुस्वरूपकहियठिए एनोकखायनानवभेदछे.  
 शिष्य--स्वामिनोकरखायएवोशब्दशाथकीमुकवोपम्यो  
 गुरु--हेनद्रएनेविशे कपायपणुनधि परतुएथकिकपा  
 यउत्पन्नथायमाटेएनेकपायतोनाकहेवाय तेथोनोकखाय  
 कह्यापरंतुएकखायनहि पणकखायनाजाइछे हवेप्रथम  
 हास्य, एनामेनोकपायठे एटलेहाशीएवुतोविनादिनुनाम  
 ठेपरंतुहाशीथकिविखवादथाय एमसरवेनेदमा ससंजि  
 जावु १ रतकहेताशातामांनवि तेथकिपणसामानेश्रथवा  
 पोतानेद्वेपादिकारणउत्पन्नथाय २ अरंतएटलेअशाता  
 तेथकीप्रतक्षद्वेपभावदिसेठे ३ भय एटलेभयथकीपणद्वे  
 पादिकारण उत्पन्नथायठे ४ सोगतेथकिपणद्वेपउत्पन्न  
 थाय ५ दुगठतेथकीपणद्वेपथाय ६ पुरुषवेदएतोमहावि  
 खवादनुकारणादिसेठे ७ स्त्रिवेद ८ तथानपुशकवेद ९  
 एत्रणनेदनाउदयथकीप्रतक्षकंकासभांपणथायछे एटले  
 नवेनोकपायकह्या एटले कखायतथानोकखायमलीने  
 २५ नेदथयाएकपायनाकारणथकी अनताकर्मआवेछे  
 जायछे. एटलेकखायकह्यो मुल ३ उत्तर ४२ हवेजोगनुं  
 स्वरूपकहियेठिये तेनात्रणनेदछे मनजोग १ वचनजो  
 ग २ कायजोग ३ तेमध्येमनजोगनाचारनेद सतमन  
 जोग १ सतासतमनजोग २ असंतमनजोग ३ असता  
 सतमनजोग ४ तथावचननापणचारनेद सतवचनजोग

१ सतासतवचनजोग २ असतवचनजोग ३ असतासत  
वचनजोग ४ तथाकायजोगनासातचेद उदारीककाय  
जोग १ उदारीकमिश्रकायजोग २ विक्रियकायजोग ३  
विक्रियमिश्रकायजोग ४ आहारककायजोग ५ आहार  
कमिश्रकायजोग ६ तेजसकारमणकायजोग ७ एटले  
एजोगनापंदरचेदकह्या एजोगथकीपणअनंताकर्मआवे  
वेएटलेमुलहेतु ४ अनेउत्तरहेतु ५७ एनवांकर्मआववा  
नाकारणकह्या एटलेहेतुकहेतांकर्मआववानावालेशरी  
ठलाले एमाहेलोएकहोयत्यांसुधिकर्मआवे जेएचारनों  
नाशकरेतेनिपासेकर्मनाआवे कोनीपेठेकेएकसरोवरछे  
तेसरोवरनीचारेदशथकी पाणिआवेते तेमांपुर्वनीदशेपां  
चगडनालांते अनेदक्षणीदशेवारगडनालांते तथापश्ची  
मनिदशे २५ गडनालांछेनेउत्तरनीदिशे १५ गरनालां  
ते एटलेपांणीआववानाहेतुएगडनालांछेएगडनालांछेतो  
पाणीआविशके जोगडनालां वंधकरियेतोपाणी आवि  
शकेनहीं तेमइहांएकजीवारूपसरोवरते तेनेविशेपाचगड  
नालांतोमिथ्यातनांजाणवांवारगडनालांअव्रतनाजाणवा  
पचीसगडनालांकपायनांजाणवांतथापंदरगडनालांजोग  
नांकह्यांते एसर्वमलीने सतावनगडनालांते एसतावनेग  
डनालेथडेने कर्मरुपियांपाणीचाल्यांआवेछे तेथिजीवरुपि  
यासरोवरनेस्फाटिकंरत्नरुपजेतलियुंते तेदेखातुंनथि,अ

नेज्याहासुधीएगडनालांबंधनथाय त्वांहांसुधीकर्मरूपी  
 पांणी आववुंबंधकेमथाय अपितुनजथाय एटलेजे, आवे  
 छेरुमंतेहनेजआश्रवकहिये २ हवेतेहिजआश्रवनेविमं  
 आठ्याएवाजेकर्मतेनावेभेद्र एकशुभअनेबीजोअशुभहं  
 जेशुभगेतेथकीशुशुकारजथाय तेकहियेछइये शरीरसार  
 वधायरुपसारुहोय २ घांटसारोहोय ३ इद्रियोपांचेप  
 वमीहोय ४ गतीसारीदेवतानी तथामनुष्यनीउत्तमंपामे  
 ५ धनपामे पुत्रपरिवारपामे राज्यधानोपामे इद्रनीपहं  
 पामे तिर्यकरगोत्रवाधे इत्यादीकजेजेकारजरुडु तेस  
 नेशुभप्रकतीकहिये तेनेपुननोउदय जाणवो तेथकिउ  
 राठुजेटलुविपरितगे तेसर्वेशुभजाणवु तेनेपापनोउदय  
 कहिये एटलेकर्मनुआववु तेनेआश्रवकहिये अनेजेवां  
 तेकर्मउदेआठ्यां तेनेपुन्यपापकहिये एटलेएसर्वेपुद्र  
 दलगे तेआत्मानीघातकर्ताछे एथकिकाइआत्मानुं कल्य  
 णथायनहि

शिष्य—हेजगवानतमेपुन्यपाप वेहूसरखागणीनीखेदं  
 नारुया नेएवेमांफरकघणीछे शामाटेकेपुन्यनाउदेथकी  
 त्तमगतीनेपामे देवगुरुधरमनीसगतीथाय तीरथजात्रा  
 तनियमकरे वेरुपैयासारेमार्गेवावरे तेथकीसासनदीपे  
 नेतमेपापनीसाथेकेमगणोछो.

गुरु—हेभद्रतेपुन्यनेअधिकजाण्यु नेपापनेन्युनजाणेहं

तेतुंसुखदूखआश्रीनेसमजे परंतुजेटलुंसुखनुंकारणछे ते  
 पणअंतेदूखनुंकारणथाय अथवादुखनुंकारणतेअंतेसुख  
 नुंकारणथाय परंतुएवनेपुद्गलछे एकांइआत्मीकिगुणनथी  
 शामाटेजेमोटामोटाराजा तथाशेठसाहूकार तथाजावत  
 नवथीवेकनादेवसुधी एसर्वनेअंते चारेगतीसंसारमा  
 रखम्वानुंथायठे तेमधेजेसमकीतीजीवछे जावतपांचअनु  
 तरवीमाननादेवसुधी तेचारगतिमांरखडेनहीं शामाटेके  
 तेएवुंजाणेछेके आसुखसर्वेपुद्गलीकठे संजोगेमल्युंठेबीजो  
 गेजशे माटेवीणाशिकिसुखनीमोरगकोणराखे तेपोताना  
 आत्मीकसुखमांमगनठे तेनेकोइनीआशानथी एकफक  
 तआत्मीकधर्मनीरनणताकरिनेरेहेठे , तेनेचारगतिमांर  
 खडवुंनहोय अनेजेपुद्गलीकसुखनाजोगीछे तेचारगति  
 मांरखडे.

शिप-हेभगवानतमेकह्युंके आत्मीकसुखनाजोगीछे  
 तेसाचुपणसुखपाम्या तेपुन्यथीखराकेनहीं माटेपुन्यने  
 पाषनीवरावरकेमगणाय.

गुरु-हेभद्रपुन्यथीपाम्यातेठीकपणतेकंइपुन्यमांरच्या  
 पच्यानथी तथापुन्यचाहिनेकरवागयानथी केमकेजेमडां  
 गरनोवावनारोपरालवास्तेवावतोनथी तेमसमकीतीजी  
 वजेजेकामकरे तेआत्मानाधरमवास्तेकरे पणकंइपुन्यवा  
 स्तेकरेनहि कदापितदभवमोक्षेनजावुहोयतो शुजगती

बाधे परतुतेशु जना उदयमासमकीतीराचेतहि तथाजेव  
 वगुरुधर्मनीसामग्रीमेलवे एवुजेतेकह्यु पणतेकइएवोनि  
 यमनथीके देवगुरुधर्मनीसांमग्रीपुन्यथीजमले. शामा  
 केदेवगुरुनीसामग्रीमलवीतेनाघणाप्रकारछे जेपापने  
 देयादृढप्रहारीचोर प्रतक्षचारहट्याकरीनेजाताजगुरुने  
 ल्या नेगुरुनीपासेधर्मपामीचारीत्रलीधुं लेइनेछमास  
 धीमहापरीसहसहीने केवलज्ञानउपारजीनेमोक्षेगया  
 थादूरगधाआवतीचोवोसीमा पद्मनाभतीर्थकरपासेव  
 क्षालेइनेसिद्धिवरशे तेनोपणपापनोउदयजोयामाआवे  
 तथाश्रीनगवतीजीमा अरजुनमालीदीनएकप्रते छपु  
 पनेएकस्त्री एमसातमाणसदीनदीनप्रते मारवावालोते  
 एभगवाननीपासे दीक्षालेइनेमुक्षेगयो इत्यादिकबहु  
 णानोविचारशास्त्रामाठे तोएथीकाइएवोनियमनाथयो  
 पुन्यथकीजदेवगुरुनीसामग्रीमले तथाकह्युके तीरथज  
 त्राव्रतनियमकरे तेपणपुन्यहोयतोथाय तेवातपणा  
 थ्यातछे शामाटेकेस्थावरतीरथनीजात्राएजवुआववुंते  
 इधरममानथीकेमकेतेनेकोइगुणठाणानीअपेक्षालागेन  
 शिष्य-स्वामीचोयागुणठाणानीएकरणीछे अनेतम  
 णसम्यक्तद्वारग्रयमा तथामदीरस्वामीनीढालोप्रमुख  
 णाशास्त्रोभाजावेजाछो नेतमेइहानाकेमकोहोबो.  
 गुरु-हेमानुजाव अमेजेसम्यक्तद्वारप्रमुखने विशेष

व्याधिये तेनुंकारणसामल एकतोकलपवेहेवार आका  
लनाघणालोकोनुंमानेलु माटेतथाबीजुंकारणके ढुंडीया  
लोकोबीलकुलप्रतमाउठावीनेवेठाछे तेआपणापक्षनेमा  
नदेखाडवावास्ते तथात्रीजुंकारणएके सासनसारुदीसे  
एटलामाटेअमेलावेलाछीये हवेअमेजेचोथागुणठाणानी  
करणीनीनाकही तेनुंकारणसामल जेलोकोनेसुरीआन  
देवनो तथाध्रुपतीप्रमुखनोअधिकारदेखाडीयेछीये परंतु  
तेकरणीमाविचारघणोछे आभाटेकेवजेदेवताप्रमुखघणां  
देवेपुजादेवपणेउपन्यातेवखतकरीछे पणतेनेनगवानेस  
मकीतीकह्यानथी तेतोमिथ्यालीछे अनेतेदेवनवाउपने  
एटलासर्वेपुजाकरेएवुसुत्रजोतामालुमपमेछे परंतुकंइस  
मकीतीमिथ्यालीनोनियमरह्योनथी तेमकंइफरीथीपुजा  
करवानोअधिकारकोइनेवेनहि. तथाजेतेवरतनियमनुंक  
ह्युं तेकांडपुन्यथकीजथाय एवुसंभवतुंनथी. शामाटेकेनंदी  
खेणने मामानीसातकन्याउकोइएनाइछियो तेवारेजंपा  
पातलेवानेपाहामउपरचम्योहतोपरंतुगुरुएजंपापातकर  
वानहिढीधो. नेधर्मपमाडीनेचारीत्रदीधुं तथाश्रीअशकु  
मारनोजीवएजवथीनवमेजवे ननांमीका एवेनामेगाथाप  
तीनीदीकरीहती. तेमहादुखीखावापीवानुंउभारेहेवानुठे  
काणुंनोहोतु तेपणडुंगरउपरजंपापातकरवानेगइहती.  
त्याहांगुरुमल्यांने तेधरमपांमीनेपछखांणवहूकरयां इ



त्यादिकघणाजीवपापना उदयकीपणवरतनेमपामेलावे  
माटेतेपणइहांपुन्यनाउदयनोनियमनथी. तथातेजेकहंके  
बेरुपैयाखरचेवावरेछे तेपणखरचेवावरेतेसाचुछे परंतुपर  
मात्माएसाधुनादानविना बीजेमार्गेपइशोखरचे तेनेकइ  
धर्मकह्युनथी तेकरतांश्राकालनेविशेजेकांइखरचेछे ते  
अजीमाननालीधाथकाघणाखरचेछे अनेजेअजीमांना  
दिकथकीखरचेतेने प्रश्रव्याकरणसुत्रमांमदबुद्धियाकह्या  
वे जावतनरकगामीसुधोपणकह्यावेमाटेएपुन्यथकीकंडसु  
क्रीतनीपजतुंनथी.

शीष्यवाक्य-स्वामीपुन्यथकी सुक्रीतननीपजे एमके  
मकेवायशामाटेकेतिर्थकरनामकर्मतोपुन्यथकीज बंधायवे

गुरुवाक्य-हेदेवाणुप्रीय एटलाएटलाहट्टांतेमेतनेसम  
जाव्यो पणतुसमज्योनहिं हजीतारीदृष्टीपुन्यमां बध  
तिरेहैछेअनेपुन्यतेतोजमछे तेजमहोयतेजमनी दृष्टीराखे  
माटेएजमदृष्टीकाहामीनाख केजेमताराआत्मानुंकल्याण  
थाय अनेतुजाणतोहशेके तीर्थकरगोत्रपुन्यथकी बंधाय  
छे पणएठेकाणानेविशेती करोमोनीकमाणीखोइने को  
मीनीकमाणीहाथमाआवेवे तेनुंकारणकहुं तेहवेतुसाभ  
ल तीर्थकरगोत्रबाधवानाकारणविसकह्यावे तेमध्येथीए  
कअथवावेअथवात्रेण अथवाजावतविसआरावे तेधणी  
मोक्षेतदजवेजाय ज्यारिसरागजावमापमीजाय त्यारेती

र्थकरगोत्रवांधे जोसरागभावेनप्रणमैतो तदज्ञवमोक्षेजा  
तो अनेअनतासुखभोगवतो तेमुकीनेवेज्वनाजन्ममर्ण  
आदेदेइनेअनतादुखभोगववानोससारवधारंयोतेमांएणे  
शुंधारेनफोकाहोम्यो हवेजेतीर्थकरगोत्र वांधवानांस्थां  
नकविसछे तेतुंसांजल तेमांकयुंस्थानकपुन्यढायकछे ए  
तोसर्वेस्थानकधर्मढायकछे पणपोतानीचुलेपुंन्यढायक  
थयु हवेतेथानकनांनामकहियेछीये अरीहंत १ सिद्ध २  
प्रवचन ३ गुरु ४ थीवर ५ बहूश्रुत ६ तप ७ आत्मा  
नुवचलपणुं ८ ज्ञानभणवुं ९ दर्शन १० विनय ११  
आवशक १२ चारित्र १३ उपसमचारित्र १४ सर्वेअ  
तीचारंटाजवा १५ वीयावछ १६ समाधिवितरहेवुं १७  
गुरुनुंकारंजकरवुं १८ अपुर्वज्ञानजणवुं १९ प्रवचनपरजा  
वनाकरवी २० एविसेस्थानकज्ञाताजमांकह्याबे तथाहा  
लनापरंवरतनमांतो थानकवीजीरीतेछे तेजखीयेबीरे  
अरिहंत १ सिद्ध २ प्रवचन ३ आचारज ४ थीवर ५  
उपाध्याय ६ साधु ७ ज्ञान ८ दर्शन ९ विनय १० चा  
रित्र ११ ब्रह्मचर्य १२ क्रीया १३ तप १४ गोयमश  
१५ जीणाणं १६ चारित्र १७ नांणश १८ सुअसं १९  
तीथयसं २० एजविसथानकबे तेसर्वेनीशेवाजकतीपुजा  
बहूमानजेकरवु तेसर्वेनीरंजरामांछे केमकेएविसबोलचा  
रप्रकारमाआवांगयांछे तेचारनांनाम ज्ञान १ दर्शन २

चारित्र ३ वायें ४ प्रवचन १ ज्ञान २ सुश्रुत ३ नाण  
 स ४ एचारतोज्ञाननाभेदते १ दर्शनएवीजोभेद २ श्री  
 हंत १ सिद्ध २ आचारज ३ उपाध्याय ४ थीवर ५ सा  
 धु ६ वीनय ७ चारीत्र ८ ब्रह्मचरज ९ क्रीया १० गो  
 यमज्ञ ११ जीणेश १२ चारित्र १३ तीर्थ १४ एचउद  
 बोलतोचारित्रपदमांछे तेमध्येजीणेशबोलछे तेकेटलाए  
 कपनीतज्ञानमध्येगणछे केटलाकचारित्रमाकहेछे तत्वज्ञा  
 नीगम्यछे ३ तपएचोथोनेदते एटलेएचारेनेदमांविसे  
 थानकसमाइग्यानेएचारने भगवंतेमोक्षनामार्गजकह्या  
 छे तेकाइआश्रवथायनहि. एतोनिर्जराहेतुछे माटेतीर्थक  
 रनामकर्मबांधवुतेआश्रवछे तेएवांथानकशेवीने जेधणी  
 आश्रवउपार्जे तेधणीएरत्ननाखीदेइनेकोमीबाधी ग्रामा  
 टेजेमहानीर्जरानाकारणहता तेनेछोमीनेसरागजावमापे  
 ठा तेथीतेणेएतीर्थकरनामकर्मरुप आश्रवउपार्जीतदभव  
 नीमुक्तिगमावी अनेजन्ममरणवधारयो तेमाटेअमेकहि  
 येछियेकेपुन्यमाकाइमालनथी अनेजेपुन्यपापते तेवेआ  
 ठकर्मनीप्रकृतीछे तेमा १२० एकसोनेवीसप्रकृतीछे तेमां  
 पुन्यनी ४२ अनेपापनी ८२ तेमध्येप्रथमपुन्यनीप्रकृती  
 कहियेठिये ज्ञातावेदनी १ उचगोत्र २ मनुपनीगती ३  
 मनुपनीआनपुरवी ४ देवतानीगती ५ देवतानीआनपु  
 रवी ६ पंचेद्रीनीजात ७ उदारीकशरीर ८ वीक्रीयशरी

११ आहारकशरीर १० तेजशशरीर ११ कारमणशरीर १२ उदारीकशरीर १३ वीक्रीयशरीर १४ आहारकशरीर १५ वजररीखवनाराधसंघेण १६ समचोरसस्वस्थान १७ शुभवरण १८ शुभगंध १९ शुभरस २० शुभफरस २१ अगुरुलघुनामकर्म २२ पराघातनामकर्म २३ उस्वासनामकर्म २४ आतापनामकर्म २५ उद्योतनामकर्म २६ शुभवीहायोगती २७ नीरमाणनामकर्म २८ देवतानुंआवखु २९ मनुपनुंआवखु ३० त्रीजंचनुंआवखु ३१ तीर्थकरनामकर्म ३२ त्रसपणुं ३३ बाधरपणुं ३४ परजाप्तापणु ३५ प्रत्येकपणु ३७ शुभनामकर्म ३८ शुभंगनामकर्म ३९ सुस्वरनामकर्म ४० आदिनामकर्म ४१ जसनामकर्म ४२ एपुन्यनाभेदकह्या.

हवेपापनाभेदलखीयेछिये. मतीज्ञानावरणी १ श्रुतज्ञानावरणी २ अंधीज्ञानावरणी ३ मनपरजवज्ञानावरणी ४ केवलज्ञानावरणी ५ दानाअंतराय ६ लाजाअंतराय ७ जोगाअंतराय ८ उपभोगाअंतराय ९ वीरजअंतराय १० चक्षुदर्शनावरणी ११ अचक्षुदर्शनावरणी १२ अवधीदर्शनावरणी १३ केवलदर्शनावरणी १४ निद्रा १५ निद्रानिद्रा १६ प्रचला १७ प्रचलाप्रचला १८ थीणदी १९ अशातवेदनी २० नीचगोत्र २१ मिथ्यात्व २२ नरकनीगिती २३ नरकनीआनपुरवी २४ नरकनु

आवसुर ५ कपाय २५ पुर्वेकह्यातेसमजजो ५० त्रीजचनीग  
 तो ५१ त्रीजचनीआनपुरवी ५२ एकंद्रीनीजात ५३ वेरंद्रीनी  
 जात ५४ तेरद्रीनीजात ५५ चउरद्रीनीजात ५६ अशुभवि  
 हायोगती ५७ उपघातनामकर्म ५८ अशुजवरण ५९  
 अशुजगध ६० अशुभरस ६१ अशुभफरस ६२ रीखव  
 नाराचसघेण ६३ नाराचसघेण ६४ अर्धनाराठ ६५ के  
 लीकासघेण ६६ ठेवटुसघेण ६७ नीगरोधस्वस्थान ६८  
 ६८ सादीस्वस्थान ६९ वामनस्वस्थान ७० कुवजस्व  
 स्थान ७१ कुंडकस्वस्थान ७२ थावरनामकर्म ७३ सु  
 क्षमनामकर्म ७४ अत्रजातोनामकर्म ७५ साधारणनाम  
 कर्म ७६ अक्षरनामकर्म ८८ अशुभनामकर्म ७८ दुरजा  
 ग्यनामकर्म ७९ दुस्वरनामकर्म ८० अनादीनामकर्म  
 ८१ अजसनामकर्म ८२ इतिपापतत्त्वनाभेदएटलेएबेम  
 लीने १२४ थया तेमध्येवरणादिक ४ पुन्यतथापापवेमा  
 गणायवे माटे १२० प्रकृतीथइ तेमध्येतीर्थकरगोत्रपणना  
 मकर्ममांआवीगयु अनेअरीहततोकर्महणे तेनेअरीहंत  
 कह्यावेपणकाइकर्मबाधे तेनेअरीहंतकह्यानथीअनेएकर्म  
 नुंज्याहाआववुंतेनेआश्रवकहीयेशुचकर्मआवेतेनेशुभआ  
 श्रवकहिये तथाअशुचकर्मआवेतेनेअशुचआश्रवकहिये  
 एटलेएबनेआश्रवजछे माटेतिर्यकरनामकर्मबांधवु ते  
 पणआश्रवमावे अनेआश्रववे तेसदायतजवाजोगवे एट

लामाटेएपुन्यपापेवंनेनिखेद्यां माटेसमजुपुरुपनेपुन्यपाप  
 एकेवंठवाजोगनथी शादृष्टातेकेजेमएकलीममानेविशे लि  
 बोलीनोकलियोछे, तेकडवोठेअनेलिंबोलीनोरसकांश्मि  
 ठाअसहितवे परंतुवेमांदुर्गंधते माटेसमजुपुरुपखातान  
 थितेमपुन्यअथवापाप एवंनेआश्रवजते तेज्ञानिपुरुपने  
 आदरवाजोगनहोय एटलेपुन्यपापनुंस्वरूपककहयु हवे  
 बधतत्वउलखावियेठिये तेनाचारभेदते प्रकृतिबंध १  
 थितिबंध २ रसबंध ३ प्रदेशबंध ४ तेनेलामवानेदृष्टां  
 तेकहियेछिये परदेशतेतेलोटेनेठेकाणेते रसतेतेधीनेठेका  
 णेछे प्रकृतिवेतेखाडतथागोलनेठेकाणेछे स्थितिछेतेते  
 निमरजादाछे मरजादाकहेतां आलाडुआटलाकालसु  
 धिरहेशे हवेगोलनोलाडुहोयतोवायुहरताहोय खाडतथा  
 साकरनोलाडुहोयतोगरमिहरताहोय तेमअहियाजेवि  
 जेविप्रकृतिनोबंधतेवितेवि शुभाशुभप्रकृति उदयआवेत  
 थाजेरसछेतेनुकारण एवुठेकेरसबंधतोहांयतो लामवीन  
 भावे तेनाचारभेदते एकठाणियो १ वेठाणियो २ त्रण  
 ठाणियो ३ चारठाणियो ४ हवेठाणकहेताशुकहियेके  
 जेमजेलिमडानोरसछे तेरवभावेतोकम्वोठेज पणतेरस  
 पाचशेरलेइनेउकालिये तेचारशेररहे त्यारेउतारीयेत्या  
 रेतेनीकडवाशघणिवधे तेजरसत्रणशेर रहेत्यारेउतारीये  
 तोकडवाशअत्यंतवधतीजाय नेशेरवेरहेत्यारे उतारीये

त्वारेतेथिपणघणिवधे तथाशेरएकरहेनेउतारीयेत्यारेक  
 डवाशघणिवधीजायतेरसनीपासेपणजवायनहि तेमअ  
 हियाएकठाणियारसनांजेकर्मछेतेनुतोडवुसुलभपडे अने  
 जेवेठाणियारसनाकर्मछे तेतोडवादूर्लभपडे तेथकीपण  
 अणठाणियारसनाजेकर्मछे तेदेवांअतिदूर्लभपडे तेथकी  
 चउठाणियारसनाजेकर्मछे तेदेवामहा दूर्लभपडे  
 अहियारसपलीछेदादिकविचार एकठाणियाथीचउठा  
 णियासुधिअनंताभेदछे तेनोविस्तारकर्मग्रथनीटिकाथकी  
 जाणजोहवेजेलाडवामालोटएकशेरछेअनेधीअडधोपाशे  
 रछे तेलाडवानेभागताकाइवारलागेनहि लाडवोबांधतां  
 वेराइजाय तेमकेटलाएककर्मतोआवेछे तेमजायछेतथा  
 जेलाडवामापाशेरधीछे तेलाडवोवलेपरंतु हाथअराडता  
 जजागे तेमकेटलाएककर्मसहेजस्वजावधीअथवासहेज  
 कष्टकीक्षयथाय तथाजेलाडवामांअडधोशेरधीछे तेने  
 हाथेकरिनेज्यारेजागियेत्यारेभागे तेमएवाजेकर्मछेतेवा  
 हाजतपादिककष्टकी अथवाअल्पज्ञानंध्यानथकीक्षय  
 थायतथाजेलाडवामाशेरपोणोधीछे तेलाडवोजागतां  
 ठणपडे तेमतेवाजेकर्मछेतेसरवथाज्ञानंध्यानविना अथ  
 वाअगेनोगव्याविनाजायनहि तथाजेलाडवामाशेरशेर  
 धीपमेळुछे तेलाडवोभागवोतोबहूजकठणथइपडे तेमते  
 वीजातनाजेकर्मतेनेखरिशुकलध्यानरुपणी अगनिलागे

तो जबले अथवा अंगे जो गवेते दहामे जजाय.

शिष्य--स्वामीति मे पुर्वे कह्युं हतु केत पज पक्रिया आश्रव  
माछे अने इहां अगेरीया घीना लाडुना दृष्टा तमा कर्मने नीरज  
रा देख डावी तेनुं केम.

गुरु--हे जद्र अमे जे नीरज रा कहि तेनुं कारण सांभल के  
त्यां अल्प ज्ञान ध्यान कह्युं ते तो आत्म उपयोग होय तेने  
होय अने ज्ञां हा आत्म अपि योग तेनां सर्वे कार ज नीरज  
रामां क ह्या ते अपेक्षा एक ह्युं छे बीजे प्रकारे वली जे सर्वे जी  
व पुर्व कृत कर्म पोते भोगीने खेर वेतेने अकाम नीरज रा वा  
ला अज्ञान पणे तप कष्ट करिने पुर्व कर्मने वेदेने नवां कर्म बां  
धे ते श्री भगवती जीमां क ह्युं छे माटे अपेक्षाले इने कह्युं छे  
परंतु कंइ आदर वा जोग नथी पुर्वे जे आश्रव मां क ह्युं छे ते स  
त्य ते हवे जे कर्मनुं बांधवुं तेनी वर्गणा के टली थाय छे अने के  
टलां कर्म भेगां थये थीले वा जोग थाय छे तेनी विचार कहिये  
गीये तेनी विगतः--वर्गणा आ आठ छे तेनां नाम उदारिक  
१ विक्रीय २ आहारक ३ तेजस ४ चाप्या ५ स्वासो  
स्वास ६ मन ७ कारमण ८ हवे तेवर गणानुं मान कहि  
ये छिये जे टला छुटा प्रमाण आछे ते अनंता ते गणवानहिं  
जे वे प्रमाण आ भेला थाय तेने द्वीपर देशी खंध कहिये जेना  
त्रण परमाणु आ भेला थाय तेने तणु क खंध कहिये एम एक  
वध ते प्रमाणु ए संज्ञा पणते प्रमाणे नाम नी कहै वी जे वारे



नवप्रमाणुवाजेगाथाये संखातप्रदेशीखंधकहिये तेजाव  
 तअठाणुंआकं उपराउपरिचडे तेनुंनामसीहरपलीकांके  
 हेवाय एटलाप्रमाणुआभेगाथाय तेनेसख्यातप्रदेशीखं  
 धकहिये एटलेजघन्यसख्यातीखध नवप्रदेशीजाणवो  
 उत्कष्टोसंख्यातीखंध सीहरपलीकाप्रदेशीखधजाणवो  
 मध्यस्थसख्यातीखध तेनासख्यातीनेदजाणवा जेउतक  
 षोसख्यातीखधछेतेमाहे एकप्रमाणुओबीजोनलेतेवारे  
 असंख्यातीखधकहिये तेजावतअनतामांएकउणोहोय  
 त्याहासुधीअसंख्यातप्रदेशीखंधकहिये एटलेअसख्यात  
 प्रदेशीखध मध्यस्थनाअसख्यातानेदबेतथाअसख्याता  
 नानवनेदपणकरेलाबे तेश्रीविशेपावश्यकग्रथथकीजोजो  
 तथातेमाहे एकप्रदेशभलेथके अनतप्रदेशीखधकहिये  
 ते अनतप्रदेशी खधना जघन्यथकी उत्कष्टासुधी  
 जाताना वचेजेरह्यामध्यस्थ तेनाअनंतानेदबे तथा  
 नव नेदपणअनंतानाकरेलाछे तेपणविशेपावश्यकथकी  
 जाणजो तथाससारनीमाहेलीकोरे अन्नवीजीवअनंताबे  
 तेचोथेअनंतेबे तेथकीअनतगुणाप्रदेशमलीने खधवंधा  
 णो तेखधअनतप्रदेशी मध्यस्थमांगणाय एवोजेखंधतो  
 यपण जीवनेलेवाजोगनथाय शामाटेकेअतीशे शुद्धमछे  
 माटेजीवग्रहीझकेनहि तेज्यारेबादरनी वर्गणामाहोय  
 त्यागेज्जदारिकवर्गणामा लेवाजोगथाय एटलेएखधपण

उदारिकवर्गणानोजाणवो तेथकीअनंतगुणप्रदेशमली  
 ने जैखधथाय तेवीक्रीअनेलेवाजोगथाय शामाटेकेउदा  
 रिक करतांविक्रीअनी वरगणासुक्ष्मते २ तेथकीअनंतगु  
 णीआहारकनीवर्गणा एमअनुक्रमे एकएकथकीअनंत  
 गुणीकरता सातमीमनोवर्गणा अनंतगुणीथइजाय तेम  
 नोवर्गणाकरतां अनंतगुणीकारमणवर्गणा आठमीते  
 हवेतेवर्गणामां चारवर्गणासुक्ष्मते नेचारवर्गणाबाद  
 रते तेमांप्रथमबादरनीवर्गणानानाम गणावियेछीये उ  
 दारीक १ वीक्रीअ २ आहारक ३ तेजश ४ सुक्ष्मनांना  
 म भाषा १ स्वासोस्वास २ मन ३ कार्मण ४ हवेते  
 बादर शुक्ष्मनो फेरछे तेजणावियेछीये एटलेबादरवर्ग  
 णामांविस २० गुणछे अनेसुक्ष्मवर्गणामा १६ गुणहो  
 य बादरना २० गुणते वरण ५ गंध २ रस ५ फेरसट  
 ए २० विस सुक्ष्मना १६ गुणते वरण ५ गंध २ रस ५  
 फेरस ४ एसोल एविरीतेजे वर्गणाओकर्मनीआवी जी  
 वनेमलेते तेनोबंधपमेतेने बंधतत्वकहिये तेनोविस्तारवि  
 चार कमपेप्पीग्रंथनी टीकाथकीजाणजो एटलेएसर्वेअजी  
 वतत्वछे शामाटेकेअजीवना पांचनेदपुर्वेकरचाते तेमध्ये  
 पुद्गलास्तीकायरुपी द्रव्यएककह्योछे नेबाकीनाचारअरु  
 पीअजीवनेकंइनमत्तानथी अनेएकपुद्गलद्रव्यजीवनेने  
 छे त्यारेतेपुद्गलनेजीवनेआवीनेमलवुं तेनेआश्रवकह्यो.

તેમાશુભપુદ્ગલઆવેતેને શુભઆશ્રવકહિયે તેનેલોકમા પ્ર  
 સિદ્ધપણેપુન્યવુનામહે અશુભઆવે તેનેઅશુભઆશ્રવક  
 હિયે તેલોકમાપ્રસિદ્ધપાપવુનામછે તેજીવસાથેતેકર્મને  
 બંધાવવુ તેનેબંધકહિયે તેજેકર્મનોવડજીવસાથેથવો તે  
 નિસ્થીતિનું માનકહિયેછીયે જ્ઞાનાવરણીની ત્રીસકોઠા  
 કોઠીસાગરોપમની સ્થીતિછેતથામોહનીકર્મની સીતેરકો  
 ઠાકોઠાસાગરોપમની સ્થીતિછે તથાદર્શનાવરણી તથાવે  
 દનીનેત્રીશકોઠાકોઠીસાગરોપમનીસ્થીતિવે તથાઆયુ  
 કર્મનીતેત્રીસ સાગરોપમનીસ્થીતિવે તથાતેત્રીસલાખ  
 તેત્રીસહજારત્રણસેનેતેત્રીસ એટલાપુરવ તથાતેવીસલાખ  
 કરોડઅને વાવનહજારકરોડ વરસનિસ્થીતિ ઉતકઠીવે  
 અનેનામકર્મ તથાગોત્રકર્મ એવેનિવિસકોઠાકોઠીસાગરો  
 પમનીસ્થીતિવે તથાઅંતરાયકર્મનીત્રીસકોઠાકોઠાસાગરો  
 પમનીસ્થીતિવે ઇત્યાદિકઅજીવદ્રવ્યનોવિચાર જગવતીપ્ર  
 મુખનેવિશેષકીજાણજોએટલેજીવનાપાંચેતત્ત્વકહ્યા હવે  
 જીવતત્ત્વનોવિચારકહિયેઘીયે જીવકેહેતાજેહેનાવિશેષેત  
 નારૂપલક્ષણવે તેનાબલક્ષણવે તેનાનામ જ્ઞાન૧ દર્શન૨  
 ચારિત્ર૩વિર્ય૪ તપ૫ઉપયોગ૬ એબલક્ષણસહિતસર્વેજી  
 વવે કોણસિદ્ધઅથવાસસારી એટલેજીવનીસત્તાજોતાસિ  
 દ્ધતથાસસારી એકજરૂપવે તોયપણઅશુદ્ધવેહેવારનયનો  
 પક્ષલેઈનેજીવના જેદકહૂં તેજીવના ૫૬૩ જેદવે તે

चारगतिनामलीने प्रथमत्रीजंचनीगतिना ४८ चेदछे.  
 नरकनीगतिना १४ भेद देवतानीगतिना २९८ चेदछे  
 मनुष्यनीगतिना ३०३ चेद एसर्वेमलीने ५६३ चेदथ  
 या तेप्रथमत्रीजंचनीगतिना ४८ चेद विवरितेकहियेती  
 ये प्रथ्वीकायसुक्ष्मनेवादर एटलेसुक्ष्मकेहेतां चरमचक्षु  
 एदीठामानाआवे एतोज्ञानीनादीठामाआवे पणएसुक्ष्म  
 चउदराजलोकमां व्यापीनेरह्याछे तेजेमप्रथ्वीकायना  
 सुक्ष्मकह्या तेमपांचेस्थावरनासमजजो वादर प्रथ्वीका  
 यजे आधरती तथापाहाडपरवत सोनु रुपु प्रमुखतेस  
 र्वे वादरप्रथ्वीकहिये एसुक्ष्मवादरवे प्रथ्वीना प्रजाप्ता  
 नेअप्रजाप्तागणीये एटले चारजेदथया शिष्यवाक्यः--  
 प्रजाप्ता अप्रजाप्ता एटलेशु. गुरुवाक्यः--हेअद्रजीवमा  
 अप्रजाप्ता तथाप्राणनेधारणकरे तेनानामनोविवरासहि  
 तकहुं तेसांभल प्रथमप्रजाप्तीनानाम आहारप्रजाप्ती  
 १ सरीरप्रजाप्ती २ इंद्रीप्रजाप्ती ३ सासारेवास  
 प्रजाप्ती ४ भापाप्रजाप्ती ५ मनप्रजाप्ती ६ एछप्रजा  
 प्ती हवेतेनो अर्थआहारप्रजाप्ती केहेताजेगतिने विशे  
 थीचवीनेआव्यो तेजसमेपोतपोतानी गतिमांजइनेउप  
 जे कदापिवक्रगतिहोयतो वेएसमे तथात्रणसमे तथा  
 चोथेसमेजइनेउपजे तेनुंकारणआकाशनी श्रेणीनाविजा  
 गनुछेतेवहूसुतना मुखथकीधारीलेजो हवेज्यांसुधीरस्ता

सांछे त्यामुधी. आहारपामेनाहि जेवारेपोतपोतानीगति  
 माजइनेउपजे तेजसमेआहारले. १ तेआहारलेइने श  
 रीरपणेप्रणमावे एटलेइहाएकअंतरमहूर्त शरीरप्रजा  
 स्तीवीजीथाय एमजसमेसमेआहारकरीने शरीरनीपुष्टी  
 करता इंद्रीप्रगटकरे त्याहापणएकमहूर्तथाय तेने  
 इंद्रीप्रजाप्तीकहीए३ पछीअंतरमहूर्त स्वासोस्वासप्रजा  
 स्तीबधाय एटलेस्वासउचोलेइनीचोमुकवो तेनेस्वासो  
 स्वासप्रजाप्तीकहीए४ त्यारपछीअंतरमहूर्त नापाप्रजा  
 स्तीथाय एटलेभापानुउचारणथाय५ त्यारपछीअंतरमहूर्त  
 ते मनप्रजाप्तीथाय एटलेमनथकीविचारवु तेनेमनप्रजा  
 स्तीकहीए६ एछएप्रजाप्तीमलीने एकअंतरमहूर्तकहीए

शिष्यवाक्य - केछएमाअंतरमहूर्त२नोआंतरोक्तीने  
 छनुंमलीनेपण अंतरमहूर्तकह्यु तेनुंशुकारण

गुरुवाक्य - महूर्तएवोशब्दबेधडीनोछे तेमांथकीउणु  
 तेनेअंतरमहूर्तकहीए जयणांथकी नवसमानाकालने प  
 णअंतरमहूर्तकहीए उत्कृष्टवेधडीसमेउणु तेनेपणअंतर  
 महूर्तकहीए एटलेमध्यअंतरमहूर्तना असंख्यातानेदवे  
 तेमाटेपेहेलाअंतरमहूर्तजे प्रजाप्तीनाबाधवाना एकएक  
 जेकह्यु तेसर्वेजघन्यथकी तथामध्यस्थलीजीए तथाप  
 छाडीगएमलीने एकजेकह्युतेउत्कृष्टकहीए. हवेएप्रजा  
 स्ती जेनेजेटलीछे तेकहीएछीए एकद्रीकेहेता पाचेथावर

ने प्रथमनीचारप्रजाप्तीहोय वेरंद्रीतथातेरंद्री तथाचोरं  
द्री तथाअसेनीआपंचंद्री एटलानेपांचप्रजाप्तीहोय तथा  
सेनीआपंचंद्रीने छप्रजाप्तीहोय-हवेप्राणदसनांनाम.श्रो  
तइंद्री:१ चक्षुइंद्री:२ घ्राणइंद्री:३ रसइंद्री:४ फरसइंद्री:  
५ मनवल:६ वचनवल:७ कायवल:८ स्वासोस्वास:९  
आवखु:१०

शिष्यवाक्य -स्वासोस्वास प्रजाप्तीमांगएयोहतो ने  
प्राणमांकेमगणोछो.

गुरुवाक्य:-तिहांस्वासोस्वास प्रजाप्तीबांधवा आशरे  
गणीहती अनेइहांजोगववा आसरितकहिछे जेमकोइपु  
रुप आवीरीतेकरी लाखरुपैयाकमाणो नेतेधणीएआवी  
रीतेकरी लाखरुपैयाजोगव्या तेजेमकमाव्यानो नेभोग  
व्यानोजेमफेरबे तेमइहांप्रजाप्तीप्राणनो फेरसमजवो ए  
कंद्रीनाचारप्राण फरसइंद्री:१ कायवल:२ स्वासोरवा  
स:३ आवखु:४ वेरंद्रीनेठप्राण फरसइंद्री:१ रसइंद्री:२  
वचनवल:३ कायवल:४ स्वासोस्वास:५ आवखु:६ ते  
रंद्रीनेसातप्राण. फरसइंद्री:१ रसइंद्री:२ घ्राणइंद्री:३ व  
चनवल:४ कायवल:५ स्वासोस्वास:६ नेआवखु:७ चो  
रंद्रीनेआठप्राण फरसइंद्री:१ रसइंद्री:२ घ्राणइंद्री:३ चक्षु  
इंद्री:४ वचनवल:५ कायवल:६ स्वासोस्वास:७ नेआवखु  
८ समुर्बेपंचंद्रीनेनवप्राण फरसइंद्री:१ रसइंद्री:२ घ्राणइं

द्रो३ चक्षुइद्री४ श्रोतइद्री५ वचनवल६ कायवल७ स्वा  
 सोस्वास८ आवसु९ सेनीआपचद्रीनेदसत्राण ५इद्री  
 मनवल६ चचनवल७ कायवल८ स्वासोस्वास९ नेआ  
 वसु१० हवेजेअप्रजाप्तावे तेनावेभेद करणअप्रजाप्ता१  
 लब्धिअप्रजाप्ता२ एटलेकरणअप्रजाप्तोकेहेता ज्यासु  
 धीतीजीइद्री प्रजाप्तापुरीनथडहोय त्यांसुधीकरणअप्र  
 जाप्तीकहीए नेजेनेइद्रीप्रजाप्तीपुरीयइ तेनेकरणप्रजा  
 प्तीकहीए अनेलब्धिअप्रजाप्तोकेहेता चारतथापाचतथा  
 छ जेनेजेटली प्रजाप्तीलार्थीवे तेनेतेटलीमाअधुरीहोय  
 तेनेलब्धिअप्रजाप्तोकहीए अनेगतीनी मरजादप्रमाणे  
 जेनेजेटलीहती तेटलीप्रजाप्तीपुरीयइ तेनेलब्धिप्रजा  
 प्तोकहीए जेकरणअप्रजाप्तोकह्यो तेजीवइद्रीप्रजाप्ती वा  
 ध्यावगर कोइजिवमरेजनही जेजीवमरे तेकरणप्रजाप्ती  
 पुरीकरघापछी जेअप्रजाप्तोमरे तेल्ब्धिअप्रजाप्तोकेहे  
 ता चारवालाने चारमाथीउणी तथापांचवालाने पाचथ  
 कीउणी तथाछवालाने छथकीउणीहोय नेजेमरेतेनेल  
 ब्धिअप्रजाप्तोकहीए तथाज्यासुधीजेने जेटलीप्रजाप्तीवे  
 तेबाधीनधीरह्यो त्यासुधीपणतेने अप्रजाप्तोकहीए जेने  
 जेटलीप्रजाप्तीछे तेटलीबाधीरह्यो तेनेप्रजाप्तोकहीए

शिष्यवाक्यः—केस्वामीमने पूर्वेएकवचनमा शकारही  
 वे केतमोएवीगलेद्रिनेविपे वचनवलकह्युं तेवेरंद्रितथा

तेरंद्रिनेविपेकांशब्दपणुजणातुंनथी.

गुरुवाक्यः—हेचन्द्र बेरद्रितथा तेरंद्रिमांवचनबलक  
ह्यु तेसत्यवे परतुतनेसांचल्यामानाआवे तेथीतनेशंका  
पड्ये परतुजेनेरसइंद्रियइ तेनेवचनबलहोयज तथातने  
प्रत्यक्षप्रमाणथीवताबुछुके शंखला जलो एल प्रमुखए  
जीवसर्वेबेरंद्रिगे तथा कीमी मंकीमी कानखजुरा प्रमुख  
एजीवतेरद्रिगे तथा जमरा जमरी वींगी प्रमुखजीवचो  
रंद्रिगे तेमध्ये जमरा जमरीतोप्रत्यक्षबोले तेसांचलायगे  
बेरंद्रितथातेरंद्रिनीशक्तिजापानीमंदगे तेथीसांचलवामां  
नहिआवे शेंद्रष्टातेके जेमकोडगर्जनेविपेआवीनेउपन्योजे  
जीव तेजन्मअवस्थापेहेलां तेनेवचनबलनीशक्तिगेतो ज  
न्मीनेतरतबोलेगे जोपुर्वेशक्तिनहोततो अहिआंपाधरी  
शक्तिआवतनहि अनेतेनेवचनबलगर्जमांआव्यो त्यांए  
कअंतर मुहूर्तमावधाणुगे परंतुनवमहीनासुधी उचारण  
नीशक्तिनाआवी तेमइहावेरंद्रिआदिकजीवने वचनबल  
नीशक्तिगे परंतुउचारणकरवारुपशक्तिनथी हवेजेप्राथ्वि  
कायनाजेसुक्ष्म तथावाटर तथाप्रजाप्ता तथाअप्रजाप्ता  
४ तथाअपकायकेहेतापाणी तेनावाटर ५ तथासुक्ष्म ६  
वाटरकेहेता नदी तलाव प्रमुख सुक्ष्मतेचोंदराजलोक  
व्यापीप्रजाप्ता ७ अप्रजाप्ता ८ तथातेउकायकेहेतांजेश्र  
मिकायतेनावाटर ९ तथासुक्ष्म १० वाटरअग्निजेकाष्टा



दिकनीअढीद्वीपनेविपेसुक्ष्म अग्निकायकेहेतां चौदराज  
 लोकव्यापीप्रजाप्ता ११ अप्रजाप्ता १२ वायुकायकेहेता  
 जेवायरोवायछेतेबादर १३ तथासुक्ष्म १४ प्रजाप्ता १५  
 अप्रजाप्ता १६ तथावनस्पतिकायतेनावेजेदप्रतेक १ सा  
 धारण २ प्रतेककेहेताएकशरीरेएकजीवहोय तेनेप्रतेक  
 कहिए एटलेआवा लींखडा प्रमुखझाडवेलगुच्छाप्रमुख  
 नेविपेथडनो तथाडाला तथाखचा तथापानफलफुलएक  
 एकोजीवहोयतेमध्ये फुलनीजेटलीपांखडी तेटलाजीव  
 गणवा तेनोविस्तारपनवणासुत्रथीजाणजो तेप्रतेकवन  
 स्पतिनाप्रजाप्ता १७ अप्रजाप्ता १८

हवेसाधारणवनस्पतिना वेजेद बादरतथासुक्ष्मबाद  
 रजे बत्रीशअनंतकाय एटलेजेमकंदप्रमुखसर्व जाणवा  
 तेमाएकशरीरेअनंताजीव रह्याबेते दृष्टीगोचर दीठामा  
 आवेमाटेतेनेबादरकहिये तेनुंनाम बादरनीगोदपणकहि  
 ये तेनाप्रजाप्ता १९ ने अप्रजाप्ता २० हवेसुक्ष्मसाया  
 रणवनस्पतीनो विचार कहियेहिये तेनुनामसुक्ष्मनीगो  
 दपणकहिये तेचौदराजलोकमा व्यापीने रहेलछेतेनुसरु  
 पर्कीचीतमात्र कहियेछीये एकआगलनेमानआकाशनु  
 ग्रहणकरिये तेटलाआकाशना असख्याताजागकरिये  
 तेमाहेला एकजागनेविशे असख्याता आकाशप्रदेशछे  
 तेमाहेलो एकआकाशप्रदेशे एकगोलोछे एकगोलामाअ

संख्यातीनीगोदहे एकनीगोदमा' अनताजीयछे तेजीव  
नांमानकेटलांठे केअतीतकालनासमयगयाअनागतका  
लनाजेटलासमयआवशे तेथकीअनंतगुणाजीव एकनी  
गोदमांठेएटलेअतीतअनागतकालनासमयनोकांइपार  
पामीयेनहिं तेपणअनंताछे तेथकीपणअनंताजीविकनी  
गोदमाछे तेकोइकाले तेनीगोदनापारपामिये नहि.

शिष्यवाक्य-केस्वामीतेनीगोदखालीकेमनथायसदायका  
लमोक्षनोमार्गतो चालतोठे माटेएनीगोदकोइकालेपण  
खालीथइगइजोइये कांइनवाजीवतोउत्पन्नथताजनथी  
अनेजेजीवमाहेथीगया तेपाछाआवतानथी तोघणाजी  
वछेतेघणेकाले खालीथशे जेमएकबाजरीनोकोठारनरे  
लोठेतेमधेनविबाजरी नरशुंनहि अनेशांणेथीकाढवामां  
डीशुतो तेकोठारखालीथशेकेनहि अपीतुथायज अथवा  
मोटुंएकसरोवरपाणीएनरेलुंठे अनेनवीआवकआववानुं  
बधकर्युंठेने तेमांथीमाणस तथाजानवरेपीवामांभ्युं तेखा  
लीथायकेनहिं अपीतुखालीथायज .तेमएनीगोदनाजीव  
घणेकाले खुट्याजोइये.

गुरुवाक्य-हेनद्रजेअनागतकालना समयतेथकी तथा  
अतीतकालना समेथकीअनंतघणाजीविकनीगोदमांठे  
एटलेसमेसमे अकेकोजाय तोपणखालीनथाय तथा वे  
तथा त्रण त५११ समेमुगतीजा

नीगोदखालीथायनहि अनेअकेकेसमेराशबधी अकेको  
 तोमोक्षेजायनहि केमकेवचेब्रेहकालपडे अथवाएकस  
 मे एकसोनेआठमोक्षेजाय एथकीअधीकतोमोक्षेजवानो  
 अधिकारठेजनहि अनेएटलामोक्षेजायतो छमासरुधी  
 कोइमोक्षेजायनहि एवोब्रेहकालकह्योते तेथीएकनीगोदप  
 णखालीथायनही तथाजेकोठारतथासरोवरनुद्रष्टांतदीधुं  
 तेइहाजुक्तनथी इहाहुद्रष्टातदेउतेसाभल जेमसमुद्रनुपा  
 णी ढनप्रतेलाखोकरोडो माणसजानवर नरेढोलेवावरे  
 तोहंपणसमुद्रनुपाणी कोइदीनआछथवानछे ? तेमएनी

जेटलासमयथाय एटलाफेरातेत्रिगसागरोपमनेआव  
 खेसातमिनरनेकविशेएकजिवउपजे तेनुदु खसर्वेभेगुक  
 रियेतेथकिअनंतघणुदूखएकसमे निगोढनां जिवनेछेइ  
 त्यादिक विस्तारसर्वेपनवणा तथाजगवतिथकिजाण  
 जो.एटलेएसाधारण वनरूपतिनावेभेद सुक्ष्म १९  
 वादर २० प्रजाप्ता २१ नेश्रप्रजाप्ता २२ एटलेएएकं  
 द्रिनावाविशजेदथया हवेविगलंद्रिना ६ भेददेखाडेछे  
 बेरंद्रि १ तेरद्रि २ चोरंद्रि ३ एत्रणेनाप्रजाप्तानेश्रप्र  
 जाप्ताएटलेए छ जेदथया एटलेएकद्रिमुधां २८ भेद  
 थयाहवेत्रिजंचपंचद्रिना विशभेदकहियेठिये तेमध्येप्रथ  
 मवेभेद २ गरभज १ समुरछम २ तेमध्येगरभजना  
 पांचजेद जलचर १ थलचर २ खेचर ३ उरपरी ४  
 भुजपरी ५ जलचरकहेतांमछकछादिक थलचरकहेतां  
 पारेवुतथासमली परमुख उरपरीकहेतांसरपपरमुखभु  
 जपरीकहेतां नोलियातपरमुख एपाचेनाप्रजाप्ता तथा  
 अप्रजाप्ता एदशजेदगरभजनाकह्या गरभजकहेतांमा  
 तापितानाजोगथिपेदाथाय तेनेगरभज कहियेतेथकिवि  
 परितमातापितानाजोगविनामाटीपाणिप्रमुखथाकि उत्प  
 न्नाथायतेने समुरछमकहिये तेसमुरछमनापणदशजेदजे  
 मगरभजनाकह्या तेमजाणवाएटलेत्रिजंचपंचद्रिनाविश  
 जेदथया पुर्वनामाहेघालिये एटले ४८ भेदथयाएटले

त्रिजंघनीएकगतिकहेवाणि हवेनारकीना १४ जेदतेक  
 हियेछिये तेनारकीनानाम घमा १ वैशा २ सेला ३  
 अजना ४ रीठा ५ मघा ६ माघवति ७ एसातनरकना  
 प्रजाप्तातथाअप्रजाप्तामलिने १४. जेदथया नरकत्रिजं  
 चवनेगतिमलिने ६२ भेदथया हवेदेवताना- १९८ जेद  
 कहियेछिये तेनानामभुवनपति १ व्यतर २ ज्योतसी ३  
 वैमानिक ४ तेमध्येप्रथमभुवनपतिनानाम कहियेछिये  
 असुरकुमार १ नागकुमार २ सोवनकुमार ३ अग्नि  
 कुमार ४ देवकुमार ५ उदधीकुमार ६ दिशाकुमार ७  
 वायुकुमार ८ विद्युतकुमार ९ स्तनितकुमार १० तथा  
 परमाधामी १५ अंब १ अंबरिख २ शाम ३ सबत

शिष्यवाक्य-स्वामिएपरमाधामी देवनीचारजातिमा  
 कइजातिनाछे

गुरुवाक्य-भुवनपतिनिदशनिकायमाहेली प्रथमज  
 असुरकुमारनीकायनाछे हवेएभुवनपतिना २५ जेदथ  
 याहवेव्यतरतथा बाणव्यतरनासोलजेदकहियेछियेतेना  
 नाम अणपनि १ पणपनि २ रखिवाद ३ चुतवाद ४  
 कइनिकाय ५ कोहडनी ६ महाकडनी ७ पनबति ८  
 जक्ष ९ पिसाच १० भुत ११ राखस १२ किल्लर १३  
 किमपुरुष १४ गधर्व १५ शाम १६ एशोलेव्यतरनी  
 कायहवेत्रिजचजंबकदेवनादश १० भेदकहियेछियेतेनां

नाम अणजंबक १ वथजंबक २ वेणजंबक ३-विशिया  
जंबक ४ फरजंबक ५ अयाप्तजंबक ६ विभुतिजंबक ७.  
एटलेएत्रीजंचजंबकनां दशनामकह्यां एजेदवंतरनी  
काथमाहेजाणवा एटलेभुवनपती तथाव्यंतरमलीनेएका  
वन ५१ जेदथया हवेजोतिषनादशजेदकहिएछिए चंद्र  
मा १ सुरज २ ग्रह ३ नक्षत्र ४ तारा ५ एपांचअढीद्वी  
पमाहेछे तेचलछे नेअढीद्वीपबहारलातेपाचस्थिरहे एट  
लेजोतिपवेएमलीने दशजेदथया एटलेभुवनपतीतथावं  
तर तथाजोतसीमलीने ६१ एकसठजेदथया हवेकल्प  
वासीतथाकल्पातीतएवेना ३८ जेदकहिएछीए तेमध्ये  
कल्पवासीदेवता ३ जेदहे कुलविखीआ १ देवलोक २  
नेलोकांतिक ३ एत्रणभेदतेमध्ये प्रथमकुलविखियांक  
हियेछिये प्रथमत्रणपल्योपमनाआवखानो सुधर्मकल्प  
निनिचेरहेते १ विजोत्रणसागरोपमनाआवखानोधणी  
त्रिजादेवलोकनीनिचेरहेते २ तथात्रिजोतेरसागरोपम  
नाआवखानोधणी छठाकल्पनीनिचेरहेते ३ एटलेकुल  
विखियाकह्या हवेवारदेवलोकनानाम कहियेछिये सुधर्म  
देवलोक १ इशानदेवलोक २ सनतकुमारदेवलोक ३  
माहेंद्रदेवलोक ४ ब्रह्मदेवलोक ५ ललितंगदेवलोक ६ म  
हाशुकरदेवलोक ७ सहेसारदेवलोक ८ अनंतदेवलोक ९  
प्राणांतदेवलोक १० आरणदेवलोक ११ अचुतदेवलोक

१२ एटले एदेवलोकं नानामकह्या हवेन वलोकातिकनाना  
 मसारस्वत १ माइच २ वनहि ३ वरुणा ४ गदतो आख ५  
 तरुशिया ६ अविवावाह ७ अगिवा ८ रिठाय ९ एटले  
 लोकांतिककह्या एटलेकुलविखियां ३ देवलोक १२ लोकां  
 तिक ९ एत्रणमलिनेचोविशनेदथया

शिष्यवाक्य—जगवानकुलविखियातेशुकहिये.

गुरुवाक्य—हेभद्रजेममनुपलोकनेविशे चमालजंगिया  
 प्रमुखजातिछे तेमदेवलोकनेविशेकुलविखियानीजातिछे  
 जेकोइअहियाचारित्रधर्मयकितथाआत्मधर्मथकिभ्रष्टथइ  
 नेपोतानो मतचलावेतथापुजावानेअर्थेकष्टक्रियाघणातिप  
 जपविशेखेकरेमतजुदोपाडेतेधणीकष्टथकिपुन्यउपाराजिने  
 कुलविखियोदेवयापपरंतुआत्मधर्मनोघातकमाटेनिचोदे  
 वताथायजेमजमालिकुलविखियोथयोतेमजाणवु तथाजे  
 लोकातिकवे तेपाचमादेवलोकनेविशे नवक्रश्वराजिछेते  
 नेविशेक्रश्वराजिप्रतेविमानछे तेनवेविमानने विशेजेजे  
 उत्पन्नथयातेदेवनेलोकातिकदेवकहियेतेसर्वेभविहोयहवे  
 कल्पातिततेनावेजेद ग्रिवेकतथाअनुतरविमान तेमध्ये  
 प्रथमग्रिवेककहियेछिये सुदर्शन १ सुप्रतिबध २ मनोरमां  
 ३ सर्वतोन्नद्र ४ विशाल ५ सुमसंद ६ सुमनस ७ प्रतिकर  
 ८ आदित ९ एनवेगरिवेकनानामकह्या.

हवेअनुतरवीमाननानामकहिएछिए विजय १ विजीअत

२ जयत ३ अपराजीत ४ सर्वार्थसिद्ध ५ एटलेएसर्वे  
 मलीने कल्पातितनाचौदनेदथयातथाकल्पवासीना २४  
 नेदसर्वमलीने विमानीकना ३८ नेदथया पूर्वलीत्रणेनी  
 कायनादेवना ६१ नेदमांहेनाखीए तेवारेचारेनीकायम  
 ली नवाणुनेदथया ९९ तेनवाणुं प्रजाप्तानेनवाणुं अप्रजा  
 सा २९८ नेददेवगतिनाथया पूर्वनीवेगतिना ६२ नेद  
 माहेंघालीए एटलेत्रणगतिनामलीने २६० नेदथयाह  
 वेमनुष्यनीगतिना नेदकहिऐविए तेमनुष्यने उपजवानां  
 १०१ एकसोएकक्षेत्रवे तेनात्रणभेद कर्मभुमीनां १५ क्षेत्र  
 अकर्मभुमीनां ३० क्षेत्रछे अंतरद्विपनां ५६ क्षेत्रवे हवेजेक  
 मंभुमीतेशुंकहीए केज्यांअसी १ मसी २ कसी ३ एनोवेहे  
 वारछे एटलेअसीकेहेतां जेसहस्त्रादिकनुंवांधवु मसीके  
 हेताजे कागलप्रमुखनुंलखवुं कसीकेहेताखेतीकर्म इत्या  
 दिकज्यां संसारवेहेवारप्रवर्ते तेनेकर्मभुमीकहीए ज्यांए  
 पुर्वेकह्यो तेवेहेवारनहोय तेनेअकर्मभुमीकहीए.

शिष्यवाक्य:-स्वामीअंतरद्विपमां वेहेवारतोनथी तो  
 एपणअकर्मभुमीमां केमनगणाय छासीएअकर्मभुमी क  
 हीहोततोशुहतुं केइहांजुटापाप्प्या.

गुरुवाक्य:-हेनद्रआपीसनालीसक्षेत्र पृथ्वीउपरछेने  
 एछपनक्षेत्रजेतेसमुद्रमांअधरवे माटेएनेअंतरद्विपकही  
 एछीए तेनोविवरोसंक्षेपथकी आगलकहीशुं



नजइए त्वारेसातमोद्विप घणदतनामेआवे ते९००जो  
 न लांबोपोहोलोठे तेसर्वेनीपरधी त्रणगुणीजाजेरीजाण  
 वो जेमतेइशानकोणनी दाढाउपरसातद्विपकह्या तेमहेम  
 वतपर्वतनी अग्नोकोणनीदाढाउपरे सातद्विपजाणवां ते  
 नानामअभासी१ गजकरण२मेढमुख३ गजमुख४सीह  
 करण५ मेघमुख६लुसटदत७ एसातेद्विपनोविचार बा  
 कीपुर्ववतजाणवो तथाहेमवतपर्वतनीपश्चिमदिशानासमु  
 द्रमाहे नैरुतकोणनीदाढाउपरे जेसातद्विपछे तेनानामक  
 हीएछीए बैखाणी१गौकरण२ गोमुख३सीहमुख४ अ  
 करण५वीदुतमुखकरण नीगुढदत७ बाकीसर्वपुर्ववत त  
 थातेहीज हेमवतपर्वतनीदाढा पश्चिनासमुद्रेवाव्यकुणे  
 तेउपरसातद्विपछे तेनानामलागुलीक१ सकुलीकरण२  
 गोमुख३वाधरमुख४ करणपरवारण५ वीदुदत६सुधदं  
 त७ एसातद्विप हेमवतपर्वतनी पश्चिमदिशानी वाव्य  
 कोणनीदाढाउपरे एटलेहेमवतपर्वतनी चारदाढाउपरे  
 सर्वमलीने२८द्विपथाय तेमसखरीपर्वतनी पुर्वपश्चिमनी  
 चारदाढाउपरे एनेएजनामना२८द्विपछे एटलेएवेमलीने  
 उपनद्विपथया तेनेअतराद्विपकहीए एटलेएसर्वमलीने म  
 नुपनेउपजवाना १०१क्षेत्रथया नेएंकसोनेएकक्षेत्रना म  
 नुपनागर्जजनावेभेद प्रजाप्ता१अप्रजाप्ता एटले२०२ने  
 दथया तथा१०१असेनियामनुप अप्रजाप्ताजमरे मांटेते

नो एकजनेदलावे एटले ३० ३ भेद मनुपनाथया ने २६०  
 पुर्वे त्रणगती कहीतेना एचारगतीमलीने सर्वेनेद ५६ ३ थ  
 या एटले एअशुद्वयवहारथकी जीवनानेददेखाड्या ह  
 वे जीवत्वपणानो नावदेखाडेछे एटले जीवत्वते चेतनाल  
 क्षणकहीए एटले चारसंज्ञा सर्वे जीवने विशेषलाधेतेनांना  
 म आहारसंज्ञा १ नयसंज्ञा २ मीथुनसंज्ञा ३ परिग्रहसं  
 ज्ञा ४ एचारसंज्ञा थकि रहितकोइसंसारी जीवहोयनहि

शिष्यवाक्यः--हे प्रभु एकद्रीने विशेष संज्ञा चारक्यांदीसेबे.

गुरुवाक्य--हे नद्रउपयोग देइने जुवेतो एकंद्रीमाप  
 एचारसंज्ञालाधे जेमवनरूपतीबे तेपांणीमुलथकी लेइने  
 सीखाए पोहोचामे ते तो एप्रत्यक्षआहारलीधोकेनहि तथा  
 नयसंज्ञालजालुकाफने विशेषेकेकोइपुरुपहाथ अरामेतेसं  
 कोचाइनेनमीजायतथामीथुनसंज्ञाखजुरीपरमुखनेविशेबे  
 जेनरनोगेरचढेत्यारेखजुरीफलेत्यासुधीखजुरीफलेनहित  
 थापरीग्रसंज्ञाजेकाकमीप्रमुखनावेलापोतानाफलनेपोतेढा  
 कीनेरहेबेतथारातापुवामीयानांमुलज्यांधरतीमांनीधानहो  
 यत्यांवांटाइनेरहे तेमएकंद्रीनेविशे पाचेथावरने एचार  
 संज्ञाहोयज वादरद्रष्टी गोचरकोइकनुंआवे शायकीकेए  
 थावरते तेनुकरतव पोतानीज्ञानबुद्धीथकी समज्यामांआ  
 वेपणएचारसंज्ञाविना कोइसंसारीजीवनेनहि.

शिष्यवाक्य--स्वामीसीद्धने विशे . एचारसंज्ञापाभी

येकेनही.

गुरुवाक्य-सीद्धनेविशे एसंज्ञानहोय शमाटेकेसीद्ध  
वेते आत्मस्वरूपीछे सज्ञावेतेपुद्गलीकवे.

शिष्यवाक्य-भगवतीजीमा चारसंज्ञाआत्मीककहिंते  
नेतमे पुद्गलीककेमकोहोछो

गुरुवाक्य-जेआत्मीकसज्ञाकहिंछे तेवेहेवारवचनशा  
माटेके तेठेकाणेआत्माने कर्मसहितमान्योते माटेएठेका  
णेआत्मीककहि पणआत्मीकठेनहि.

शिष्यवाक्य-स्वामी कोइठेकाणेपुद्गलीककहिंते

गुरुवाक्य-केएहीजन्मभगवतीजीनेविशे तथापनवणाप्र  
मुखवणाशास्त्रमां सज्ञाने पुद्गलीककहिंछे तथासंज्ञा  
ओ १६ कहिंते तेमध्येक्रोधादीक संज्ञामांगणविमाटेस  
र्वेपुद्गलीकछे एटलेसज्ञासंसारजीवनेहोयसीद्धपरमात्मा  
नेनहोय एटलेएवीसज्ञासहितहोय तेनेजीवजाणवी ह  
वेतेसंसार जीवनुआवखु लखीयेछीये प्रथ्वीकायनुं  
२२००० बावीसहजारवर्षनुआवखु अपकायनुं ७०००  
सातहजारवर्षनुआवखु तेउकायनुत्रणअहोरातरीनुं वा  
युकायनुं ३००० त्रणहजारवर्षनुआवखु वनस्पतीकाय  
नुं १०००० दसहजारवर्षनुआवखु थावरपांचेनुंआवखु  
जाणवुं हवेतरसनुआवखुकहियेछीये बेरद्रीनुं १२ वर्ष  
नुं आवखुतेरंद्रीनुं ४९ दीवसनुचोरद्रीनुं ६ महोनानु

तथात्रीजंचपंचंद्रीजलचरनुं पुरवकोडनुंजाणवुं 'स्वेचरपं  
 खीनोपल्योपमनो असंख्यातो जगजाणवो 'तथाथलचर  
 त्रिजंचनुत्रणपल्योपमनुंआवखुंजाणवुं तथाउरपरीसर्पनुं  
 पुर्वकोडनुंजाणवुं भुजपरीसर्पनुंकोडपुर्वनुंजाणवुं 'सर्वेने  
 जघन्य अंतरमहूर्तजाणवुं' हवेजलचरछमुरठमनुपुर्वको  
 डनुंआवखुं थलचरसमुरछमनुं ८४००० चोराशिहजा  
 रवर्षनुं स्वेचरसमुरछमनुं ७२००० चहोतिरहजारवर्षनुं  
 उरपरीसमुरछमनुं ५३००० तेपनहजारवर्षनुं भुजपरी  
 समुरछमनुं ४२००० वेतालीसहजारवर्षनुंजाणवुं हवे  
 सातनर्कनुंआवखुंकहियेछिये ॥ पहेलीनर्कनुं एकसागरो  
 पमनुंआवखुंजाणवुं नेबिजिनर्केत्रणसागरोपमनुंआवखुं  
 जाणवुं त्रिजिनर्केसातसागरोपमनुंआवखुंजाणवुं चोथी  
 नर्केदशसागरोपमनुंआवखुंजाणवुं नेपांचमीनर्के सतर  
 १७ सागरोपमनुंआवखुंजाणवुं छठिनर्केबावीशसागरो  
 पमनुंआवखुंजाणवुं सातमीनर्के ३३ तेत्रिशसागरोपम  
 नुंआवखुंजाणवुं पहेलीनर्के जघन्य १०००० दशहजार  
 वर्षनुंआवखुपहेलीनुं जेउतकष्ट तेबिजीनुजघन्य एमजा  
 वतठठानुउतकष्ट तेसातमीनुजघन्य तथासातमीनर्केअ  
 पेठाणनर्कावाशे जघन्य तथा उतकष्ट ३३ सागरोपम  
 नुं तथाहवेभुवनपतिनुंआवखुंकहियेछिये असुरकुमार  
 नीनिकायमा दक्षणादिशाना चमरीइद्रनुं १५

मनु आवसु तेनिदेवीनुसाडीत्रणपलोपमनुआवसु उतर  
 दिशानावलीद्वंद्वनु एकसागरोपमज्ञाजेरुआवसु तेनिदे  
 विनुसोमीचारपल्योपमनुआवसु तथानागकुमार प्रमुखे  
 नवेनीकायनीदक्षणेऽश्रेणिनु १॥ दोढपल्योपमनु आवसु  
 तथाउतरदिशानानवेनिकायनु वेपल्योपममाठेरुआवसु  
 तेवेऽश्रेणिनादेवगनानु आवसु तेनीनिकायनादेवधीश्ररध  
 नुआवसुजाणवु तथासर्वभुवनपतिनुजघन्यथी १००००  
 दशहजारवर्षनुआवसुजाणवु हवेव्यतरनीनिकायनुउतक  
 ष्टं एकपल्योपमनुआवसुजाणवुने जघन्य १०००० दश  
 हजारवर्षनुआवसुजाणवुतेनिदेवीनुश्ररधापल्योपमनुजा  
 णवु चंद्रमानुएकपल्योपमने १०००००, एकलाखवर्षनु  
 आवसु सुरजनुएकएकपल्योपमने १००० एकहजारवर्ष  
 नुआवसुग्रहनेएकपल्योपमनु नक्षेत्रनु ०॥ अडधापल्यो  
 पमनु तारानु ०॥ पापल्योपमनुआवसु तेनिदेवीयांनुसर्व  
 सर्वनादेवथकी ०॥ अडधुजघन्यथकीसर्वेने पल्योपमनो  
 आठमोभाग हवेविमानिकनुआवसु कहियेछिये सुधर्म  
 देवलोकेजघन्य १॥ एकपल्योपमनुउतकष्ट बेसागरोपमनु  
 आवसु तेनिदेवीनुसातपल्योपमनु आवसु तथा अपरग्र  
 हितादेवीवृत्ते तेनु ५०, पचाशपल्योपमनु आवसु तथा  
 इशानदेवलोके बेसागरोपमनुज्ञाज्ञेरानुतथातेनिदेवीनु ९  
 नवपल्योपमनु त्याअपरग्रहितादेवीवृत्ते तेनु ५५ पचावन

पल्योपमनुआवखुबे सनतकुमारदेवलोके सातसागरोप  
 मनुआवखु देवंगनाहवेअहियायकीछेनहि जघन्य आव  
 खुनिचलादेवलोके उतकष्टहोयतेउपलेदेवलोकेजाणवुं  
 एटलेअहियावेसागरोपमनुआवखुंछे तेमसर्वेदेवलोकेस  
 मजवुं चोथेदेवलोकेसातसागरोपमझाझेरांतु आवखुजा  
 णवुं पाचमेदेवलोकेदशसागरोपमनु आवखुजाणवुं ठठे  
 देवलोकेचौदसागरोपमनु आवखुंजाणवुं सातमेदेवलो  
 केसत्तर सागरोपमनुआवखुजाणवु आठमेदेवलोकेअठ्ठा  
 रसागरोपमनु नवमे १९ सागरोपमनुआवखुं दशमे  
 २० सागरोपमनुआवखुं अगियारमे २१ सागरोपम  
 नुआवखु बारमेदेवलोके २२ सागरोपमनुआवखुं हवे  
 नवग्रहिवेकेप्रथम नर्कमध्येहेठेनीग्रहिवेकनु २३ तेविश  
 सागरोपमनुआवखुं विजि २ ग्रिवेके २४ चौबीशसा  
 गरोपमनुआवखुं ३ त्रिजिग्रहिवेकनु २५ पचीससाग  
 रोपमनुआवखु हवेमध्यनर्कनापहेलीग्रहिवेकनु २६ सा  
 गरोपमनुआवखुं विजिग्रहिवेकनु २७ सतावीशसागरो  
 पमनुआवखु त्रीजीग्रैवेकनु अठावीससागरोपमनुआ  
 वखु हवेउपरलो नरकता पहेलीग्रैवेकनु २८ सागरोप  
 मनुआवखुं विजिग्रैवेकनु ३० सागरोपमनुआवखुं  
 त्रिजिग्रैवेकनु ३१ एकत्रीससागरोपमनुआवखुं हवेपां  
 चअनुतरविमाननुआवखुंकहियेबिये तेमध्येचारअनुतर



चारगतीसंसारमां परीभ्रमणकरवुं जन्ममरणतांदुखसे  
हेवातेवुं केसथायवे

गुरुवाक्य—हेमानुभावजेधणीयेप्रोतानाचेतननी, भुलेज  
डनेप्रोतानो मान्योछे, त्यांसुधीदुखीछे पणपोते-प्रोताना  
स्वरूपनेविशे भासूनकरेपवीव्यापकपणकरे, पछीरमण  
करेतंतिनेकांश्ये, दुखहोयनहीअत्रद्रष्टांतजेमकोइपरुपमा  
हाडाह्यो विचीक्षणने तेजपुरुषेमदाराप्राप्तकरयु तेनाके  
फथी गफलतीथयो, तेवारते, असुधीजग्यानेविशेपडेअने  
पवीत्राइपणुमाने रस्तामांपडेने घरमानेपरंतु तेजविनो  
जेवारेकेफडतरे तेवारते, असुघीनेअसुचीमाने रस्तानेर  
स्तामानेप्रोतेप्रोताना, घरमांजइनेवेसे प्रथमकेफमाअशु  
चीने, शुखमांजीनेपड्योहतो तेभ्रमणावधीए मिटीजाय  
तेमआचेतन अज्ञाननाजोरथकी मिथ्यारुपभ्रमजालमां  
पड्योछे तेधणीसर्वपुद्गलनुं करतवतेनेआत्माजाणे तेथ  
कीकरिनेचारगतीसंसारमांरखनवानुंथाय जन्ममरणादि  
कदुखसहेजेवारे ज्ञानजासनथांय तेवारजेडनुंकरतव स  
र्वस्वोटुंजाणे, प्रोतेमांहीप्रवेशकरेनही तथाबीजेद्रष्टातेजे  
मफटकरत्ननो एकथंजवे तेथंभनेएकदीशायेलालपत्रवां  
धीयेएकदिशेशांमवांधीयेजेवारेलालपत्रवांध्याहोय तेवा  
रेफटकलालदीशे शांमफटकवांध्यहोयतेवारें फटकइयां  
सदीशें अपीतुंफटकतो शांमिनथीनेलालेनथी फटकतो



निर्मलस्वभावेजबे तेमआत्मा आत्मा राग द्वेपरुपजैलाल  
 श्यामरुपपत्रछे तेथीलोकमासारोनबलोकेहेवायबे पण  
 आत्मा मुलस्वभावे जोइयेत्यारे तेनेकांशरागद्वेपठेनही  
 रागद्वेपतो जडहे आत्मा तो नीरांकार नीरजनबे आत्मा  
 नेविशेतो ज्ञान दर्शन चारित्र रह्युठे एवीरीते जे आत्माने  
 ओलखीने जेरमणकरे ने जेशक्तिभावे संतानेविशे अनंती  
 रिद्धीरहीवे तेव्यक्तिभावकेहेता सर्व प्रगटकरे तेनुंकल्या  
 णथाय एटले एजीवतत्वकह्यो-१ हवेसवरतत्वकेहीयेछिये ए  
 टलेसवरकेहेता आवताकर्मनेरोकया तेनेसवरकहिये ते  
 संवरनात्रणभेदछे मनसंवर १ वचनसंवर २ कायसंवर ३  
 कायसवरकेहेता जेथको आश्रव आवे एवां कामकाया एक  
 रीनेकरे तथा वचनसवरकेहेता जेवोलवाधकी आश्रव  
 आवेतेवु वचननबोले तथामनसंवरकेहेता जेमनथकी आ  
 श्रव आवे एवुमननरमाडे एसंवरतेसर्वे वेहेवारहेनिश्रय  
 थकी आत्मा पोतानास्वरुपमारहेतेने संवरकहिये

शिष्यवाक्य-स्वामी अमेतोपुर्वे संवरना ५७ बोलसां  
 जलयाछे तेतमेकइकह्या नही अनेतमेतो आत्मानो संवर  
 कह्योतेतो अमेपुर्वेसाजलेलुनथी.

गुरुवाक्य-हेजडसतावनबोलजेते संवरनासां जलया  
 वे तेमधेकेटलां एकबोलतोवेहेवारबे कोइंकबोलनीश्रयबे  
 तेमधे जेवेहेवारसंवरछे तेथकीकोइजीवनी मुक्तिथा

यनहीएतोअंतेपण आश्रवजयाय अनेजेनिश्रयसंवर  
छेतेथकीज धर्मयायअनेमुकेपण तेथीजजाय.

गिण्यवाक्यः—स्वामी तेनोएटलोवधोफेरकेनते तेनीस  
मजपाप्पो.

गुणवाक्यः—हेचंद्रएसतावनंवलनीरतिते तेहुंतनेकहुं  
तेतुंसांजल प्रथमंसतावननामते तेकहिएछीए ड्यांमु  
मती १ आपामुमती २ एखणासुमती ३ आदाननीखेपणा  
सुमती ४ परीठावणीयामुमती ५ मनगुप्ती ६ वचनंगुप्ती ७  
कायगुप्ती ८ क्षुधापरिसह ९ त्रिपापरिसह १० गितप  
रिसह ११ उश्रपरिसह १२ डंसपरिसह १३ अचेलप  
रिसह १४ अरतिपरिसह १५ स्त्रीपरिसह १६ विहार  
परिसह १७ नीखेडपरिसह १८ सज्यापरिसह १९ आ  
क्रोसपरिसह २० बंधपरिसह २१ जाचनोपरिसह २२  
अलाजपरिसह २३ रोगपरिसह २४ त्रणफासपरिसह  
२५ मलपरिसह २६ सतकारपरिमह २७ परिज्ञापरि  
सह २८ अज्ञानपरिमह २९ समर्कोतपरिसह ३० क्षमा  
३१ मार्दव ३२ आर्जव ३३ मुर्ती ३४ तप ३५ संजम  
३६ सत्य ३७ सोच ३८ अर्कचन ३९ ब्रह्मचर्य ४०  
अनित्यजावना ४१ अगरणजावना ४२ संसारजावना  
४३ एकत्वजावना ४४ अन्यत्वजावना ४५ अंगुचीभा  
वना ४६ आय ४७ संवरजावना

भावना ४९ लोकजाविना ५० बोधदुर्लभभावना ५१ ध  
 र्मभावना ५२ सामायकेचारीत्र ५३ बेदोपस्थापनीय  
 चारीत्र ५४ परीहारवीशुद्धचारीत्र ५५ सुक्ष्मसंपरा  
 यचारीत्र ५६ जथास्वायकचारीत्र ५७ एसतावर्तबोलसं  
 वरनांते तेमध्येघणाबोलवेहेवारदीसेछे केमकेप्रथमजपां  
 चजेसुमतीते तेआत्मग्राहीनथी शामाटेजेप्रथमइरीआसु  
 मतीजेसाधुनेधुसराप्रमाणेकेहेता सामात्रणहाथद्रष्टीश  
 खीनेचालवु तेपरजीवनीदयाआश्रीनेछे तथापोतानाप  
 डवाआखडवा आश्रीनेछे तेवीसुमतीज्ञानविना घणा  
 जीवपालेते तथाभापासुमतीजेछे तेवचनथकी कोइजी  
 वनेबाधापीडाथाय एंवुवचननबोलवु तेपणपरजविआ  
 श्रीनेते तथापोतानुमानराखवाआश्रीनेछे तथात्रिजी  
 एखणासुमतीछे तेपणएकंद्रिआदिक जीवनेरखोपा  
 आश्रीनेते शामाटेजेगोचरीनाजे दोपटालवा तेमुख्य  
 तापणे अपकाय तथाअग्निकाय तथाविनरूपतिका  
 य प्रमुखजीवनुरखोपुते तथाचोथोआदानसुमती तेजण  
 शजावलेवीमेलवी तेपुजीप्रमार्जिनेलेवी तथामुकवीतेप  
 णपरजीवनीदयाआसरीनेते तथापाचमीपरीठावणीआ  
 सुमतीकेहेता जेआहारपाणीवस्त्रपात्रलघुनीतवडीनीतिप्र  
 मुखेजेजेपरठवु तेसर्वेजग्यापुजीपरमार्जिनेपरठववु तेप  
 णपरजीवनीदयाआसरीनेते तथामनगुप्तीकेहेता मनने

आर्तरुद्रध्यानमांजावानदेवुं, जातांनेरोकवु तथावचन  
गुप्तीजे वचनविनाकोरणेउचारणनकरवु अनेजेउचारण  
तेपणकोडजीवनेबाधापीडाथाय, एवंनकरवु तथाकायगु  
प्तीकेहेता जेकायाएकरीने जेजीवनीहिसाप्रमुखनिपजे  
तेकामनकरवां एटलेएंपंचसुमती, तथात्रणगुप्तीएआठ  
प्रवचनमांतोकहेवांय तेजमालीप्रमुखघणा जिवेपोली  
पणकांडतेजिवनीकारजसिद्धिथइनेहि अनेजगवानेएने  
निन्नवमांगएया तेप्रतक्ष सिद्धांतबोलेछे माटेएनेतेव्यव  
हारजजाणवो एनेविशे कांडआत्मानिकारज सीद्धिदि  
सतीनथी.

शिष्यवाक्य-स्वामीजोएनेविशे आत्मानिकारजसि  
द्धिनथीतोसिद्धांतनेविशेठेकाणेठेकाणेअष्टप्रवचनमांतानी  
वारताकेमलाव्याठे, नेएवादेखीनेतेनेसाधुजाणे तेनेमि  
थ्यात्वलागे.

गुरुवाक्य-हेभद्र एकल्पव्यवहारछे एथकीवाल  
जिवधर्मपामे नेसाधुनेगुणबाहाजथकी देखीनेसाधु  
माने माटेएनेकांड मिथ्यात्वलागेनहि एटलेसाधुआ  
वकनीउलखाणपणएथकीथाय तथासाधुनोव्यवहारघ  
णोसारोदिसे, तथापरजिवनीदयापणरहे तेकारणमाटे  
सिद्धांतमांएवारतालावेलाछे तेकरतांसिद्धांतनीमांहेली  
कोरेव्यवहारनीपुष्टिघणीकछे आमाटेकेत्यांत्रणनयनीवा

रतारहीछे निगम १ सग्रह २ व्यवहार ३ चारनय  
 नीवारता सिद्धांतमाधीकहाडीनाखीछे तेअधिकारसम्य  
 कद्वारग्रथकी जाणजो पणतेअष्टप्रवचनमातांनेविशे  
 आत्मस्वरूपतीरमणतानयी अनेज्यांआत्मस्वरूपतीरम  
 णतानेहिल्याकाइधर्मनहि अनेजोआत्मस्वरूपतीरमणता  
 विनाअष्टप्रवचनमातामा धर्महेततो जमालीप्रमुखते  
 निन्नवनकहेता माटेआत्मस्वरूपतीरमणतार्थकीधर्मत  
 थामुक्तिछे पणतेविज्ञानथी.   
 हवे वाविसपरीसहनी समजपाडु तेसांजल प्रथ  
 मजेक्षुधापरीसह कहेताजे क्षुधा वेदवीएथकिकांइआ  
 त्मानुकल्याण जासणथतुनयी शामाटेजे त्रिजचपंच  
 द्रि घोडा-ढोरा-प्रमुखवट्ट क्षुधावेठे पणकाइतेनुको  
 रजथतुनयी तेक्षुधावेठ्याथी कारजथायतो तेजजिवनु  
 कारजथाय तथातुपापरीसहकहेताजे जलनीपियास  
 जोगववीतेनेविशे काइआत्मकारजनथि शामाटेकेजो  
 एथकीकारजथायतो वपेआप्रमुखजानवर मोक्षेगया  
 जोइये तथाउष्णपरीसह कहेताजेतापसेहेवोतेथकीपण  
 काइमुक्तियायनहि केमकेवलदघोडारोझ खच्चरप्रमुख  
 जनावरसदाय तडकेजरहेते पणएतापथकीपणकाइते  
 निसिद्धियइनहि तथासीतपरीसहकहेतांजेटाहाडसेहेवी  
 तेपण सर्वपंखीतथाढोरतथाजिलप्रमुखघणामनुष्यतेप

णसितसहेछेपणतेनुकांइ; कारजसिद्धिथतुनथी तोविजा  
 नुक्रयांथकोथाय तथासपरीसहकहेताजे मंस, मछरं, चां  
 चड, मांकाण, इत्यादिक, परीसहंसेहेवोतेंपरीसहथकी  
 कारजसिद्धिहोयतो सर्वज्ञानवरंतथापंखीने विशेषथकी  
 थायवे नेमनुप्यनेसामान्यप्रकारेबे एपरीसहथकीजोमु  
 क्तिथतीहोयतोप्रथम, ज्ञानवरादिकनी सिद्धिथवीजोइए  
 पछीमनुप्यनी, सिद्धिथायपरंतुसनास्वरुपउलस्याविना  
 कोइदिनमुक्तिथवानीनथी; तथाअचेलपरीसह, कहेतांव  
 स्रादिकनराखवुं तेनावेजेद, डिगंवरनेमतेबिलकुलनरा  
 खवुश्वेतांवरनापक्षना, वेजेद सिद्धांतनोतथाआवशकनो  
 सिद्धांततापक्षथकीजोता, कोइसाधुवस्त्रराखे, तथाप्रश्न  
 व्याकरणसुत्रनेमते, वधाएराखेएवुंजासेबे, परंतु, विजा  
 सुत्रना मतथकी; भासणतथी, थतु, तथा, आचारंगजि  
 वालाएवुकहेछेके, कोइसाधुथीसीतपरीसहनखमायतो  
 एकतथावेतथात्रणपवेडीराखे, पछीसीतकालगयाथीव  
 सरावेअथवाकोइनउसरावे, तथाकल्पमुत्रनीटिकाप्रमुख  
 नेविशेआर्जंरक्षितनामाजुगप्रधाने, पोतानापितासोमल  
 नामाब्राह्मणनेदिक्षादिधी, तेवारतेनेसर्वधर्मसाचुजास्युं  
 पणचलोटी, कहाड्योनुहोतो, शायीके लज्जापरीसह  
 न, जिताणो, तेथकीतोयपणश्री आर्जंरक्षितजुगप्रधाने  
 बहुमहेनते जुक्तियेकरीनेकढाव्यो तोतेजीतांवस्त्रजापण

यतुनयी आवशकनेमतेहाथवेनोकटको वैकुणीवचेदात्री  
 नेचाले इत्यादिकविचारछे। एसर्वेनेअचेलकंजकहिये.  
 तेअचेलक परीसहयकी मुक्तीथाय। तेपणकाइसंजवतु  
 नयी शामाटेजेजानवर मात्रतोसर्वे अचेलकछे तयाम  
 नुप्यनेविशे वाधरीप्रमुखघणालोको तुछवस्त्रनाधारीछे  
 तेमनाअंगपणपुरां ढकातानयी तोतेनीमुक्ती प्रथमथवी  
 जोइयेपणतेकाइथतीनयी मुक्तीतोपोतोनाआत्मस्वरूप  
 थकीछे तथाअरतीपरिसहकेहेता अशांताएटलेशरीरा  
 दीकनेअथवामननेमान अपमानप्रमुखआदेदेइने अशा  
 ताउत्पन्नथाय एअशातापरिसहसेहेवोतेठीकछे समभावे  
 रेहेवायतो आत्मीककारजछे जोआत्माओलखेतो नही  
 तोएपणबेहेवारछे केमकेएवाघणाजीव मानअपमानस  
 मजावेगणछे तेजोगीविरागी तथाओछीसंमंजवालाजीव  
 तेपणसर्वैरामभावेरेहेछे परतुतेमांकाइकारजसीद्धीथायन  
 ही जोआत्मस्वरूपनेओलखनितेनेपुंढ्रलीकभावजाणीने  
 समजावरेहेतोतेनुकारजसीद्धीथाय तथास्त्रीपरिसहकेहे  
 तास्त्रीयादीकनाआवजावदेखीनेमनेचपलथायतेपरिसह  
 सेहेवोपरतुते परिसहसेहेवाथकीतोकेरजनीसीद्धिनेनहि  
 शामाटेके साखीसन्याशी परमहंसपरमुखघणाएजोग  
 नेसाचवेछे तथाघोडापरमुखजानवरपणपरवर्गहरहाथकी  
 पालेछे तथाकेटलाक मनुप्यनेअणमलते सचवायछे तथा

मलतेपणवणाधर्मवाला साचवेठेपणतेनुकांइ कारजसी  
द्विथायनहि.

शिष्यवाक्य-केस्वामीतेतो जैननुधर्मपाम्यावगरमोक्ष  
जतानथीपणजैननुधर्मपामेतेमांक्षेजायकेनहि.

गुरुवाक्य-केजैननाधर्मतोने. अन्यमतनाएवर्ममांशो  
फेरछेएवरततो सर्वेनेसरखुपालवानुछे माटेएवरतंआश  
रिने कांइजैनमाने अन्यधर्ममांकशोफेरछेनेहि परतुजै  
ननोएफेरछेकेजे खटद्रव्यनीओलखाण तेमध्येथीपांचद्र  
व्यनोत्याग. एकंआत्मधर्मनुआदरवुं तेनागुणप्रजाय. सं  
हितओलखाण करवीतेनेभेदज्ञानकहिये तेजअचेदज्ञा  
नपणोथाय तोमुक्तेजायमाटेज्ञानमाज मुगतीरहिछेतथा  
विहारपरिसह केहेताजेचालवुं तेनोश्रमतथागामगाम  
जायगानवीगोतवी तथाआहारपाणीसर्वे वीहारेमाउत्प  
न्नथायतेपरिसह शेहेवाथाकीकोइकहेशेके मुक्तीथायते  
वातपणसंभवेनेहि शोमाटेजेआजीवीकाथकीलोकोघणा  
गामोगामफेरछे नेपरिसहसेहेछे तथाअन्यमतीनाजेख  
धारीपणसर्वे एमजेपरिसहसेहेछे तथाघोडाप्रमुखवीहां  
रनापरिसहसेहेछे पणतेनुकांइकारजसीद्विथंतुनथी तथा  
नीखेदपरिसहकेहेताजे लोकोनुअपमानकरे नेपरिसहसे  
हेवोतेथकीपणकोइ केहेशेकेआत्माकर्मरहितथाय तेवात  
समवे तसामाटेजे नी लोकोघर नेतेलो



कोतेनेघणुनीभ्रछेतथास्वाननेघरघरथीमारीनेलोकोकाढी  
 मुकेछे तोएपरिसहथकीकारजसीद्धीथाततोएटलानेथवी  
 जोइये परतुकारजसीद्धीतोएकआत्मज्ञाननेविशेछे तथा  
 सज्यापरिसहकेहेताभुम्रीतथापाटत्रमुखनी जोगवाइसा  
 रीमलीअथवानबलीमलीतोतेपरिसहसेहेवो तेपरिसहथ  
 कीपणकाइकारजथतुदीसेनहिकेमेकजेवणा लोकोवीसम  
 जग्यानेविशेपणरेहेछेतथाजनावरपणविसमजग्यानेविशे  
 बेसेसुवेछेतेथी काइतेनुकारजथायनहि तथाआक्रोसपरि  
 सहकेहेताकोइआक्रोसकरिवचनकेहे अथवामरमनांवच  
 नकेहेतेपरिसहसेहेवोतेनोविचार पुर्वेनखेदपरिसहमाक  
 ह्योछेतथकीजाणजो तथावधपरिसहकेहेता काइताडेछेदे  
 भेदेतेपरिसहसेहेवो परतुकाइतेपरिसहथकीपणकारज  
 सीद्धियायनहि शमाटेजे त्रिजंचनीगतिनेविषेएकएक  
 नाछेदननेदनघणाकरेछे तथामनुष्यपणतेजीवोनेछेदन  
 नेदनकरेछे तथामनुष्यमनुष्यतेपणछेदनभेदनकरेछे त  
 थावाघरीथोरीप्रमुखनीचजातिनेतामनातरजनाघणीथा  
 यछे तथाउचलोकोमापणथायते तेप्रत्यक्षजोवामाआवेते  
 पणकाइतेनीकारजसीद्धितनीथी  
 - शिष्यवाक्य - स्वामी-तेलोकोछेदननेदनखमेते तेनेका  
 इसमताप्रणामनथी नेसाधुलोकोतो समताथकीपरिसह  
 सेहेतेमाटे तेलोकोनुंकारजसीद्धिनथाय नेसाधुलोकोनु

कारजसीद्धिथाय.

गुरुवाक्यः—हे नन्द समताकांइएकप्रकारनीनथी शामा  
टेजे कारणकारणजुक्तसमतावे एकतोसमताकेतां सामोपु  
रुपबोल्यो तेनासामुनबोले तेवारेपोतानामनमाविचारै  
के बन्नेसरखावनशु माटेपोतानीमोटमराखवानेनबोले  
तेपणसमताकहिंए तथाबीजोभेदसामोपुरुपबोल्यो तेपो  
तानीसमजमांजनहि केवलमुखपणेजेकहे तेनीहातेपण  
समताकेहेवांय तथात्रीजेनेदे राजाप्रमुखनासामुबोलवा  
नीपोतानीप्राप्तिनथी त्यांपणसमताराखवीपमे नाराखे  
तोउलटुंविशेषपेदांथाय तेनेपणसमताकहिंए तथाचोथो  
भेदसामानाबोल्याप्रमुखपेटमांराखे मुखथकीकेहेनहि  
लोकमांघणासमतावानजणाय परंतुजेवारेपोतानोअव  
सरआवे त्यारेतेएवेरले तेपणएकसमतां तथापांचमोभे  
दजेज्ञानमांसमजेनहि अनेमटकवेरागथकी पापनोभय  
राखीनेसमताराखे तेपणएकसमताइत्यादिक बहुप्रका  
रसमतानाछे पणतेथकीकाइकारजसरेनहि जेवारेआत्म  
स्वरूपनी ओलखाणथइहोय नेपुंढलनावंधउदेउदीरणा  
नाजावसमजतोहोय पछीआत्माथकी एवोविचारथायके  
एआत्मानाबाधेलां कर्मपुर्वेताउदेआव्यांछे तेजोगव्या  
विताछुटेनहि नेसामापुरुषने एवोजकर्मनोउदेछेके उल  
टाकर्मकीकणाबांधेते एमपदलननम्बरूपविचारतारागद्वेप

नउठे तेवारेआत्मस्वरूपमांस्थीरथायतेनेसमभावकहि ए  
 नेतेनुनामसमतातेथकी अनताकर्मनिर्जरे माटेएसमताते  
 समतामांगणाय बाकीसमताउत्तेवस्तुताएजोतांअसमता  
 जछे तेमाटेवधपरिसहथकीकांडमुक्तिनहि मुक्तितोपोता  
 नास्वरूपरमणमावे तथाजाचनापरिमहकेहेताजेघरघर  
 निक्षामागवो तेएकमोटोपरिसहवे तेपरीसहनुसहन  
 करवु परतुतेथकी काइकारजसरेनहि केमकेवणाभि  
 क्षुलोको तथासारामाणसं आजिविकार्थी हिणथये  
 थकेलज्जामुकी नीक्षावर्तीकरेवे तथाअनदर्शणनानेख  
 धारीपणसर्वेजाचनावर्तीएज आजिविकाछे तेथकीपण  
 कारजसीद्धियायनहि अनेजोकामथतुहोयंतोते पहेलुथ  
 बुजोइए तथाअलाभपरीसह कहेताजाचनाकरतापणव  
 स्तुपास्यानहि तेनेअलाजपरीसहकहिये तेपरीसहपण  
 सर्वेजाचकलोको तथाभिक्षुलोकोसर्वेअणमलवार्थीसंतो  
 पकरीनेवेसेवे तथाग्रहस्तीपणएकएकनेघेर वस्तुजांचवा  
 जायनेनमलेतोसतोपराखे तथाजनावरण घासदाणो  
 मलेतोचलेनमलेतोसंतोपराखीनेवेसेवे एमसर्वेजिवनी  
 एजनितीछे कदापीकोइजिवउत्पातीयाहोय तेहायवरा  
 थकरेपणतेकाइपरीसहथकीकांज सीद्धियायनहि तथा  
 रोगपरिसहकेहेता शरीरमारोगआवी उत्पन्नथएथके प  
 रिसहसेहे परतुतेपरिसहसर्वेजिवसेहेवे कोणमनुष्य वा

कोणजानवर तथाओसम्भवेसम्भसाधुने पणकरवांकह्यावि  
 तेसाधुकरेवे नेतेदुखनोनिरवाह समताराखीनेकरवो ते  
 सर्वेनिर्वाहकरेवे कोइउत्पातीनहोय तेहायवरायकरेपरं  
 तुरोगनुआवखुंआवीरह्यावगरं रोगजायनहि माटेएपं  
 रीसहसहेवाथकीकांइमुक्तिकहेवायनहितथातणफासपरी  
 सहकहेतां माजप्रमुखघासना संथारानाफरसकठणछे  
 तेमुनीनिर्वाहसमतार्थीकरेपरंतुतेपरीसहसेहेवाथकीमुक्ति  
 मलेतेतोसंजवेनहि शामाटेजेकोलीभिलप्रमुख घांसमां  
 जपजचारह्यावि तथाजानवरपणघासमां वेसेउठेतेतथा  
 खेतीवालालोकशियालोआवेयके परालनाढगलामांज  
 वेशीरहेवे माटेएपरीसहतोपराए घणाजिवनासहेवामां  
 आवेछे पणतेनुकोइनुकारजथयुं एवुंकोइनासांजल्यामां  
 आव्युंनथी तथामलपरीसहकहेतांजे शरीरेमेंलतथापर  
 सेवोवलेतेपरीसहसहेवो तोतेपरीसहबंधिवानलोकौरा  
 जद्वारेछे जेने केदथनल्यांथी मांडिने ज्यांसुधिकेदमां  
 रहेत्यांसुधिहजामततथा नाहोवुंतथालुगंमांधोवां एसर्वे  
 बंधछेतोते लोकोनेएपरीसहवरावरनोदिसेछे माटेजोए  
 परीसहथकीकारजसिद्धीथाय तोतेलोकोनीथविजोइये  
 परंतुआत्मस्वरूपनलख्याविना कारजसिद्धिनेनहि तथा  
 सत्कारपरीसहकहेतां सनमानपामवाथकी मनमांअजि  
 माननकरेतेपरीसहपणकपटी तथालोचिपुरुपजलिरीते

सहेतथागफलतमनुप्यपणसहे तथाजनावरमात्रनेपण  
 एपरीसहते माटेमानपामवाथकी अभिमाननथयु तेथकी  
 काइअविनाशीसुखमलेनहिअविनाशीसुखतोआत्मानिमे  
 लथयेमले तथापरिज्ञापरीसह कहेताजेज्ञाननु विशेष  
 पणेजाणवुंथाय तेनोमदनकरवो एपरीसहजोनसहेतोके  
 बलनपामेपरतुधर्मथकी अष्टनथायसमकिततेनुजायन  
 हिकढापितेथकी अतिशेमदथइजायतो आकरुकर्मउपा  
 रजेपरंतुसमकितनजाय जेममहारुसमहातुस नामामु  
 निपुर्वेज्ञाननोमदघणोकरयो तेथकीआजवनेविशेतेज्ञान  
 नुआवरणउडेआव्यु तेथिअगियारअगजएपाहतातेजु  
 लिंगयापरतुसमकित तथाचारित्रकाइगयुनहि जेएजंज  
 वनेविशेछे तेकर्मनाउडेनोक्षयकरीने केवलज्ञानपामिने  
 मोक्षेगया तेमएज्ञाननामदकरवांथी ज्ञाननुआवरणब  
 धायमाटेज्ञाननो मदनकरवो तेज्ञाननावेजेदछे व्यवहार  
 ज्ञानतथानिअयज्ञान व्यवहारज्ञानते वैदक जोतिप रा  
 ज्यनीति शृंगारशास्त्र कलाशास्त्र अन्यमतिनाशास्त्रएस  
 र्वेव्यवहारछे तथाजेनशास्त्रनाचारभेदछे ४ तेमध्येगण  
 ताणुजोगकहेताजेद्विपदेवलोकप्रमुखजे लावा पहोला  
 परद्विप आदेदेइनेमानवाधवु तेसर्वेगणताणुजोगकाहिये  
 तथाधर्मकथानुजोगकहेता जेनेविशेधर्म करवाथकीपा  
 म्यातेनिकयानकहेवि तेधर्मकथानुजोग तथाचरणकरणा

नुजोगकहेतां जेचरणशितरीना ७० बोलपंचमहाव्रत  
 आदेदेडनेतथाकरणशितरीना ७० बोलपलेहणं प्रमुखआ  
 देदेइने एनोजेविचार एजचरणं शितरी करणशितरीनुं जेकहे  
 वुंसां नलवुतेने चरणकरणानुं जोगकहिये तेत्रणें जोगव्यं  
 वहारें त्रेण पुन्यप्रकृतिना हेतुवें तथाचोथो द्रव्याणुं जोगके  
 हेता जेद्रव्यगुणने परजायनो विचार नयनीक्षेपांसहित  
 स्यादवा दजाणवुं तेकेहे वुंसां नलवुं तेने शुद्धव्यवहारकहि  
 ये पण आत्मानो उपियोगमां हेरमतो होयतो नहितो पूर्व  
 नाव्यवहारमांगणीये अने तेजद्रव्यगुणपरजाय अभेदप  
 णें ग्रहिने रमणताकरे तेने निश्चयज्ञानकहिये माटे एज्ञान  
 जे निश्चय ज्ञाननो समजुतेने मदआवेनहि कदापिकोष्क  
 र्मना उदेथकी मदआवेतो संजालीलेवो तेधणीना आत्म  
 नीसिद्धिथाय तेनि सदहजाणवुं तथा समकितपरिसह  
 केहेताजे संमकितं मामुझावुनहि शामाटे जे समकितने ते  
 अभ्यंतर आत्मानो रमणतामावे नेकदापि समनवामां वरा  
 वरन आवे तो पण सदहणापाकी राखवी पण मुझावुं नहि  
 एटले समकितकेहेतां श्रद्धानुं नामछे तेव्यवहार श्रद्धादेवगु  
 रुधर्मनेकहिये परंतु निश्चयश्रद्धातो सदद्रव्य नवतत्त्व न  
 यनिक्षेपाप्रमुखेकरिने आत्मउपियोगसाहित जेजाण  
 णुतेने निश्चयश्रद्धाकहिए अथवा तेनुं जाणणं तेने नहि  
 तो नवतत्त्व

परिसहकह्या.

शिष्यवाक्य - हे भगवंत तमेकेटला एकपरिसहनी मा  
हेलीकोरे अन्यमत्तिनो तथाग्रहस्थिनो तथाजिझुनो तथा  
जानवरनोद्रष्टांतदेइने तेपरिसहमेमुक्तिनीनापाडी परंतु  
तेजीवतोअज्ञानते तेअज्ञानपणेजेकरे तेनीमुक्तिशानीहो  
य तथापरिसहपरवशपणेसहे तेनीमुक्तिशानीहोयपणजे  
पोतानेवशपणे ससारनासुखछोमीनेसाधुपणुलीधुने  
जाणीतेपरिसहसहे तेनीमुक्तिकेमनहोय एअमारामनमां  
मोटीशकाछे.

गुरुवाक्य - तेजेकह्युं केसंसारमुकिनेनिकल्या तेनेप  
रिसहथीमुक्तिजोइये तेवातएमनथी जोपरिसहथकीमु  
क्तिहोय अनेसंसारमुकवाथकीमुक्तिहोयतोजमालीए रा  
जधानीहोडीनेदिक्षालीधी अनेपरिसहपण जावजीवसु  
धमिनुप्यना तथादेवना तथात्रिजंचनाउचनातेसह्या परं  
तुअनतसंसारीथया पणमुक्तिथइनहि.

शिष्यवाक्य - स्वामीएतो वचननाउथापकथया माटे  
ससाररखम्या परंतुआपणेतोकोइहमणाउथापकतोछेज  
नहि माटेतेनोपरिसहधर्ममाकेमनगवेरुयो.

गुरुवाक्य - हेजद्र तरणानाचोरने शुलीनोहुकमथाय  
त्यारेजेकरोमोधननोचोर तेनेसोदमदेवाय तोतेनोदंडतो  
हवेकाइसंभवतोनथी शायीके तरणासाटेशुलीथइ नेशु

लीथीश्रधीकदडतोबीजोकांइसभवतो नथी तेमइहाजमा  
 लीतो एकमात्रानोचोरठे केमकेजगवानेकहयुंकेकरेमाणेक  
 रुंएटलेकरवामांम्युं तेनेकरयुंकहिये नेजमालीनुकेहेवुएठे  
 के करुमाणेकरु एटलेकामपूरुथइरहे त्यारेकरयुंकहियेए  
 टलुएकमात्रावचनफेरव्युं तेथकीश्रनंतोसंसार वधीगयो  
 तोश्रहियांतोहालनासमाने विशेतोसर्वसुत्र उथाप्यावे  
 केमकेमोढेथकीतो एवुकहेछेक्रेकानोमात्र उथापवोनहि  
 एनोविस्तारसिद्धांतसारोद्धारथकीजाणजो हालनेसमे  
 श्रहिंजपरवरतनठे तेघणुकश्रावश्यकनीटिकाथकीठे परं  
 तुसुत्रनेमलतुकोइकवचनठे तेसमजुहोयते विचारीजो  
 जोप्रत्यक्षसुत्रने उथापीनेश्रावसकनीटिका मानीएछिए  
 तथाहालनातवनसजायमानिनेपण सुत्रनेउथापीनाखि  
 एछिए तेनेहवेशोडंडठरे श्रनंतोसंसारतो, जमालिनेक  
 ह्योनेश्रहियांतोकांइकउथापवानु लर्युरहेतुनथी माटेते  
 पुरुपमातेज्ञानिपणुशुजाएयुं माटेएपणपरीसहसहेतेसर्वे  
 श्रजाणजछेजेमश्रन्यदर्शननाजेखधारीपरीसहसहेतेम  
 एपणसहेछेए२२ बाविशपरीसहते तेशाता श्रशाताना  
 पक्षमांछे माटेएबाविशपरीसह सहेवाथकी कांइमुक्ति  
 यायनहि नेतेनेकांइसंवरकहेवायनहि श्रामाटेजेदाहाज  
 द्रष्टिव्यवहारवाला तेनेसवरमानेपरंतु निश्रयथकीवि  
 चारीजोतांश्राश्रवज्जे ज्यांश्रात्मस्वरूपनी रमणनातेने



निश्चयसवर कहिये एटले जेणे आत्मान्नीरमणता होयने प  
 रीसहसहे तेथकी मुक्ति थडतो एकाइ परीसहना जोरथी मु  
 क्ति पांम्यो नहि एतो ज्ञान न जोरथकी मुक्ति पांम्यो आहिया  
 कौडि विरस्वामी नोद्रष्टा तदेशे जेवणा परीसहसह्या तेनु के म  
 ति नो उत्तर जे एमने कर्म उदघणाहता तो घणों परीसहथया  
 परतु तेथकी केवल ज्ञान तो पांम्या नथी तेतो शुक्लव्याने  
 नो बिजो पायो एकत्वभाव ज्ञान विचारता केवल ज्ञान पा  
 म्या माटे आहिया परीसहनु परीवल जाणवुं नहि जो परीस  
 हथकी केवल ज्ञान होयतो धनो काकंडीतया मेघकुमार प्र  
 मुख घणासाधु ये परीसहसह्या पण कांइ केवल ज्ञान पांम्या न  
 हि तथा श्रीमल्लिनाथ स्वामी दिक्षालेडने तरत केवल ज्ञान  
 पांम्या त्याकाइ परीसहथयो नथी माटे मुक्ति तो ज्ञान ध्यान मा  
 ठे ते कांइ बिजिवस्तु माठे नहि एवा तमासंदेहराखवो नहि.  
 हवे दशविध जती धर्म कहिये ठिये ते मध्ये प्रथम क्षमा ध  
 र्म क्षमा कहता सम परीणाम एटले जडनु धर्म तेउ परराग द्वेष  
 न राखे आत्मस्वरूप मारमे तेने क्षमा धर्म ते आत्मीक कहि  
 ये ते पिना नीजे समता छे ते पुर्वे कहि वा विश परीसहना अधि  
 कारने विशेषे प्रमाणे जाणवी.  
 हवे बीजु मादव धर्म के हेता मद अहंकार नो त्याग ते पण पु  
 र्वे कहेलु जछे तो पण इहा जरा देखाडी एछी एके आठ प्रका  
 र नो मढे ते मध्ये प्रथम कुल मढे के हेता जे पोतानो पक्ष ते एवुं

विचारेके अमेआवाकुलनाछीये तेनेमदकहिये, परंतुतेम  
 दनकरे तेथीकाइआत्मानोधर्मप्रगटनथाय ग्रामाटेकेएने  
 विशेकाइआत्मरमणताछेनहि एतोलोकमांनिरमानीपुरु  
 पकेहेवाय कदापिजोआत्मस्वरूपनीरमणताहोयतो एवं  
 विचारेके तारुकुलएकेछेनहि अनेकुलतेचारगतिनेविपे  
 लाधे अनेतेचारगतिमां तुंएकेकुलमाउपन्याविनारह्योन  
 थी माटेइहांकीयुंकुलतारुगणीये एमाकोइतारुकुलनथी  
 एमांएकआत्मीकधर्मतेतारुछे तंतुंसांजल एटलेतेनेउचनी  
 चमध्यमकोइविचारवानोतेधणीनेनरह्योतेनेकुलमंदतज्यो  
 कहियेतेनेधर्मकहियेतथाबीजोजातिमदकेहेता मातानोप  
 क्ष एटलेमांतानुकुल तेपोतानीजातकेहेवाय तेनोविचार  
 पणसर्वकुलनीपरेजाणवो तथात्रीजोमदइश्वरेकहिए तेइ  
 श्वरमदकेहेतां ठकराइनोमद न्यांपणजेएवंविचारेजे आ  
 राव्यरीद्वीतिछे नेनथी एवंविचारीनेमदनकरे एकांइधर्म  
 मांनथी एपणसंसारव्यवहारमांछे हवेजेपुरुषएवुविचारे  
 जेअनंतोकालथया संसारमांजटकतोराना इश्वरप्रमुख  
 थयोतथातेओनोदासपणथयोमाटेएईश्वरपणुंतेतुंनही एतो  
 पुन्यनीप्रकृतिनाजोरथीपाम्योछेनेतेपुन्यतेजडछेनेतुंनोचे  
 तनछे तेएजडनीठकराइथी तारीकांइकारजसिद्धियइन  
 हि ज्यारेनुंतारीआत्मशक्तियेकरीने भुक्तिनोठाकोर थइ

दिकनेविशे कपटकरेतोअनताकर्मउपारजे तोजेधणीध  
 मिंपुरुपकहेवाय तेनेदजनहिराखवो. एटलेदजनसहितपु  
 रुपनुकरेलुजेधर्मलेखेआवेनहि दंजसमानजगतमावि  
 जुपापनथी सर्वधर्मनोनाशकरताएदभठे माटेदंभनराखे  
 तेनेआर्जवधर्मकाहिये ३ हवेचोथोमुत्तिधर्मकहेतानिलो  
 जपणुएटलेआहारपाणीवस्त्रपात्रप्रमुखनो लोभनहिरा  
 खेअनेलोचराखेतोसाधुगुणरहेनहि एसर्वेव्यवहारपरंतु  
 आत्माथकोएवोविचारउठेजे अहोचेतनतारे शुभाशुभ  
 कारजनकरवु शामाटेकेसर्वेपुद्गलीकवस्तुठे एमविचारिने  
 शुभकारजनोनिखेदकरे एटलेपुन्यनाकाम करेनहि पु  
 न्यनिवछापणकरेनहि जेधणीपुन्यनीवछाकरे तेनेसाधु  
 पणुलीधुपणएसंसारीजछे तेवारेकोइकहेशेजे साधुथइने  
 पुन्यनीवछाकोणकरेछे तेनेकाहियेजे तिर्थजात्रावरतनेम  
 तथाबाह्यतपतथाव्यवहारचारित्र तथाव्यवहाराक्रियाइ  
 त्यादिकनेविशे जेरच्यापच्यारहेठे तेसर्वेपुन्यनाइछकठे  
 नेतेनेआश्रवीकहिये.

शिष्यवाक्य-स्वामीजे परीग्रहप्रमुखराखेठेतकरतातो  
 एसाधुसाराठे.

गुरुवाक्य-परीग्रहराखेतेनेसाधुकहे तेनेमिथ्यातला  
 गेशामाटेकेवितरागनामारगमातोनिग्रथ प्रवचनकहेवा  
 यछे अनेजेस्थानकेनिग्रथपणुनथी त्यांसाधुपणुपणनथी

तेनेकोइसाधुकहेसो अथवासाधुजाणीने वस्त्रपात्रआहा  
रपाणिउसडवासंडअंयवारोगीप्रमुखजाणिने जेएनिअ  
नुंकपापणकरसो तेअनंतान्नवरखण्णो तेआवश्यकनिर्जुग  
तीप्रमुखघणामुत्रमांते तेजोइलेजोमाटेएअसंजतीनुंउठु  
देवुनहि अनेजेनिग्रथथइने साधुनामधरावेते नेआत्म  
स्वरूपनेउलखतानथीअनेव्यवहारमांरच्यापच्यारहेतेने  
लोकोने देवलोकादिकरिद्धिदेखाडीने बालजिवोनेव्य  
वहारमांनाखेछे तेपोतेपणअज्ञानिने नेतेनेपणअज्ञानप्र  
वरतावेते पोतानोपणसंसारवधारेछे नेसामानोपणसंसा  
रवधरावीआपेते तेपुन्यनीवंछाकरवीनहि एटलेव्यवहा  
रनिपणपुष्टिकरवीनहि एकआत्मधर्मनीपुष्टि करवीजेथ  
कीआत्माकर्मथकीछुटेतेवाशुद्धव्यवहारनी तथानिश्चय  
निपरूपणाकरीसामानेसमजावोपणअशुद्धव्यवहारतथा  
कल्पव्यवहारमांसामानेनाखवोनहि शामाटेजेअशुद्धव्य  
वहारतोअनादिकालनोचेतनकरतोअवेते एटलेपुन्य  
पापनीकरणीसंदायचेतननेते तेथिकांइआत्मानुंकारजथा  
यनहि तथाकल्पव्यवहारनेविशेविखवाड घणोरह्यो शा  
माटेजेबहुजनक्रतग्रथटिकाप्रमुखघणा तेनुंमंतुएकेनुंम  
लतुअविनहि तथासिद्धांतनोपणएकरीतनो बाधोदिस  
तोतथीतेपणअनेकरीतो जुंदीजुदीदिसेछे तथाआजने  
काले तवनसझायरास चरित्रप्रमुखघणानोखानोखाज

एनाकरेलावे तेथिकरीने आजनालोको एकल्पव्यवहार  
मांपड्याथका महाकर्मउपारजेवे लोकनेविशेधरमीनाम  
धरावेवेअनेपोतपोतानामतनोममतकदाग्रहोमतानथिते  
थिपोतेपणअनताकर्मउपारजेवेनेसामानेपणअनताकर्मव  
धनोकारणीकथायवे माटेकल्पव्यवहार तथाअशुद्धव्यव  
हारनेविशेपरवरतवबुनहि फकतएकरागद्वेपप्रमुखमद  
थइजायअनेआत्मस्वरूपनी नैलखाणथतीजायएवोउपदे  
शकरवो तेथीओतानुपणकल्याणथाय नेव्यक्तानेपणअ  
मलेखेआवेतेमपोतानेपण शुद्धव्यवहार तथानिश्चयमा  
रमणकरवु तेथीपोतेपुन्यनोग्राहिनथाय फकतएकपोता  
नीआत्मानी मुक्तिरुपकारजनोकरताथाय एविरीतेसम  
जिनेजेचाजवुंतेनेचोथुमुत्तिधर्मकाहिथे ४

हवेपाचमुतपधर्म 'केहेताजेतपकरवोते वेप्रकारेवेतेनो  
वीचारआगळनीर्जरातेत्वमां कहीशुं५ हवेछठो संजमध  
र्मसजमकेहेताजेआतमाने संवरभावमाराखवो एटलेष्ट  
ध्वीकायप्रमुखजीव अजीवनोजे संजमकेहेतां हणवान  
हीतथाजुठुबोलवुनही तथाचोरीकरवीनही तथामैथुनसे  
ववुनही तथापरोग्रहराखवीनही तथा पाचईंद्रीनेसवरवी  
तथाचारेकखांयनेटाळवुं तथात्रणदडथीवीरमबुड्यादीक  
संजमनासतरसंतर प्रकारघणैपकारे थायछेपरनुएसरवे  
वेहेवारनयमावे शामाटेजेएकामतोअभवीतथा अगनानी

पणकरेछेमाटेएसंजमथी आत्मानुंसारनथी हवेजेआत्मा  
 नुंसाररूपसंजमछे तैकहीयेछीये जेआत्माना गुणनहण  
 वाशा।माटेजे एगुणनीमुख्यतानहोय त्यांसुधी मुक्तिनी  
 आशानहीथायकदापीकोइकेहेशेके आत्मानागुणनेकोण  
 हएवेतेनेकहीएकेजेपरभावमां धर्ममानीनेवेठावे तेआत्मा  
 नागुणनाहणतावे तेपरभावकेहेतांपरजे जडतेनाकरतव  
 नेधर्मजाणैछे तोजडतोजडनाधर्मनो करतावेपण कांइ  
 आतमीकधर्मनो करतानथी एटलेजेटलावांहा वेहेवा  
 रपुन्यपापनीकरणीतथा वेहेवारसवरतथा वेहेवारनीर्ज  
 राएसर्वेजडनी करणीछेतेजडनीकरणीं ज्यांसुधीमांहेरहे  
 त्यासुधीआत्मानुं रमणसुखेथायनही अनेआत्मरमण  
 थयावगरधर्मकोइ दीनथायनही तेमाटेनीजस्वरूपनीरम  
 णताकरवीने श्रीभगवतीजीमां॥आयासंजमे॥एवोपाठवे  
 माटेआत्माछे तेजसंजमछे तथासतधरम सातमुंसतकहे  
 तांजेजुठुनबोलवुंते जुठुछप्रकारेकरीने बोलायवेक्रोध१  
 मान२ माया३ लोभ४ हास्य५ जय६ एवप्रकारेकरीनेजे  
 मृखावचनकेहेवु तेनोत्यागते वेहेवारसतथयुं हवेनी  
 अयओळखावीयेगीये नीश्रेसत्तनावेभेद आज्ञासत १  
 वस्तुसत २ प्रथमआज्ञा सतकहीयेगीये आज्ञाकेहेतां  
 जेश्रीवीतरागपरमात्माए आज्ञाफरमावी तेप्रमाणेपरुप  
 णाकरवीतेप्रमाणेजवचननुंउच्चारणकरवुंतेवीनाजेकरेतेने

केएअसंजतीवरतवालानयी एटलेअवरतीछे तोएपएस  
 तपरुपकठे एवुकहेछेतेमहामरखावादिते शामाटेजेपोतेकु  
 मार्गेचालेनेसामानिसुमार्गत्रतावे एवाततोभापणमांआवे  
 नहिअनेतेधणीसमार्गवतावेतो तेनेधनमलेक्यायकीअने  
 ज्याधननुंउपारजवुठेत्यामरखावादतोप्रत्यक्षठे अनेपरमा  
 त्मानुएजवचतछेजेनिग्रथविनाविजानुंवचनअनर्थकारीहो  
 य उक्तंच - श्रीज्ञातातथा भगवतीप्रमुख बहूमुत्रनेविशे  
 जेपाठछेतेलखीयेगीये॥समणसभगवहोमाहावीरस अते  
 एधमसोचा निसमहठतुठाए समणजगवमाहावीर ती  
 खुतोआयाहण पयाहणकरीएकरीए वदीअनमसीअएव  
 वीआसीसदहामीणभते नीगथपावीएण सदहेमाणेपती  
 अमाणे रोएमाणेफासेमाणे अभुठीओजीणजंते नीगथ  
 पावीएण एवमएभतेअवीतहमएइछींअमेयं पडीइठीध  
 मयइछीअंपडीइगीयंमय संसाओअनथमुवाओ॥इत्यादि  
 कपाठ धणासुत्रनेविशेछे माटेनीग्रथनुंवचनसदहवु ते  
 नोअर्थहवेसमणोजगवतकेहेता श्रमणजगवतश्री माहा  
 वीरस्वामीनीपासे जेजेपुरुपेधर्मसाभल्यो तेतेपुरुपनेहर  
 खसतोपधणोउपन्यो रुढेनेविपेआणंदेधणोययो तेणेउ  
 ठीनेजगवतने अणप्रदक्षणादिइने वादीनमस्कारकरीने  
 विनयसहितवेहायजोडीने एवुंकेहेकेसदहूछुंभगवंत एट  
 लेजगवतपदआगल एपदमांसर्वेठेकाणेजोडवो हवेसद

हूं केहेतां जेमनेसरधावेठी एकनीग्रंथनावचनउपरे तेनी  
 ग्रंथनावचननीप्रतीजछे तेजवचनमनेरुच्युं तेजवचनहूंका  
 याएकरीनेफरसुं एजनीग्रंथनावचनकरवानेवास्ते उभो  
 थयोछुं तेनीग्रंथप्रवचननिश्चेछे एकोइकालेजुठुंनाथाय ए  
 वचनअनंतइष्टकेहेतांवल्लभछे एहीजवचनवारंवारंहूएनेइ  
 छुछु एहीजवचनइछुपलीछु अवरजेनीग्रंथविनानांजेवच  
 नते अनर्थनुंमुलछे तेहूनसदहूं जावतहूएनेइछुपमीछुनही  
 इत्यादीकिपाठेशाधु अथवाआवकनाअधीकारछे त्यांए  
 लांवाछे माटेत्यातोनीग्रंथवीनानुवचनस्वपलाग्युंनही  
 अनेअनर्थनुंमुलकह्युं अनेतमेतेनेसत्यपरुपकवतावोछो  
 तेतमनेमोटुंअज्ञानदिसेछे शामाटेजेभगवाननी आज्ञाथ  
 कीउपराठुंछे अनेजेप्रमाणेभगवाननीआज्ञाछे तेप्रमाणे  
 वचनबोले तेनेआज्ञासत्यकहिये वस्तूसत्यकेहेतां जेद्र  
 व्यगुणनेपरजाय जेजेनाछेतेतेमांकहे तेनेवस्तूसत्य  
 कहिये तेनात्रणजेदछे द्रव्य १ गुण २ परजाय ३ हवे  
 द्रव्यकेहेताजेआत्मद्रव्य अरुपीनिराकार तेनेकोइरुपी  
 अथवामुरतिमाने तेनेवस्तुअसत्यथाय तथाआत्मानागु  
 णजेज्ञान दर्शन चारीत्रप्रमुखछे तेथकीउपरांठापुन्य  
 आश्रवथकीउत्पन्नथया लायकी चतुराइ प्रमुख तथाव्य  
 वहारसंवरक्रिया तपप्रमुखतथातेथकीउपरांठापापआश्र  
 वनागुणतेजआत्मानाकरीनेमाने तेनेवस्तुअसत्यकहिये



केमकेतेजडनागुणआत्मामाछेनहीनेपुन्यपापआश्रवएतो  
जडवेनेआत्माचितनछे माटेवेउनागुण भीन्नजीन्नजुदाजु  
दाछेएवीरीतेमाने तेनेवस्तुसत्यकेहेवायतथा आत्मानाप  
रजायजेखटगुणनी हानीब्रह्मतिथा अणअवगाहअव्या  
बाधआदेदेईनेअनतापरजायछेतथकीउपराठाजेवरणग  
धरसफरसस्वस्थानजे आत्मानापरजायमागणे अर्थवा  
नरनरकादीकगतीजेपरजायमागणे तेपणवस्तुअसत्यवे

शिष्यवाक्य -स्वामीनरनरकादीक गतीतोसरवे  
परजायमागणेते तमेअसत्यधर्ममांकेमकही.

गुरुवाक्य -हेभद्रजे नरनरकादीकगती तेजीवना  
परजायमागणीयेठीये एतेकर्मपरजाय आश्रीनेछेनेकर्मप  
रजायवे तेजडछे माटेएअसत्यजछे स्वभावपरजायजेग  
एवातेसत्यवेएटले सत्यधर्मकह्युं ७ हवेआठमुसोचधर्मक  
हीयेछीये एटलेसोचकेहेताजेपवीत्रपणु तेपवीत्रपणुकेट  
लाएकएम केहेछेजेजलतथा माटीतथादरजतथाअग्नी  
प्रमुखथीपवीत्रथाय एवुकेहेतेअज्ञानीछे शामाटेकाईज  
लप्रमुखथी पवीत्रथायनही एतोशरीरनेवाह्यथकीपवी  
त्रकरेतपण अणसमजुनेमते -पणसमजुनेमते थायनही  
त्याकोइकहेशेके बहाजथकीपवीत्र केमनथाय तेतोधोवा  
प्रमुखथकीथायछे तेनेकहीयेके जोएनाथकीपवीत्र थंतुहो  
यतोकोईपुरुपनुमोहोइ एठुछेतेपुरुपनेमाटी प्रमुखमोढा

मांघसावीने पाणीनासोबसे कोगळाकरावीये पठितेघणी  
नामोढानोकोगळो बीजापाणीनाभाजनमां नंखावीयेते  
पांणीबीजा भाजननुंकोईपीये तेवारेकहेकेनपीयेएवबोले  
त्यारेकहीयेकेशुंशुद्धयुं तेएटलाएटलापाणीना कोगळा  
कराव्यातथामाटीप्रमुखेकरीनेघसाव्युं तोयपणतेनामोढा  
नो कोगळोएठोनोएठोरह्यो त्यारेतमाराजशास्त्रनेवीपे  
प्रांचप्रकारनो सोचकह्योबे.

एकतोसत्यबोलेतेनेपवीत्रकह्योबे तथासर्वजीवनी  
दयापालेतेनेपवित्रकह्योछे तथापाचइंद्रीने जेपोतानेवश  
राखेतेनेपवित्रकह्योछे तथाक्षमासहीततपकरे तेनेपवित्र  
कह्योछेनेपांचमुजलपवित्रकह्युंतेमाटेजलथकीकांइपवित्र  
थायनहीतथाचारएसत्यवचनप्रमुखकह्यातेपणवेहेवारूप  
वित्रछे एकाइनिश्चेपवित्रकेहेवायनही तथाकोइकेहेशेके  
भगवाननुंतामलेइये एटलेमुखपवित्रथाय तथामनमांजग  
वाननुंस्मरणकरीये एटलेमनपवित्रथाय तथाकायायेक  
रीनेजगवाननीशेवाज्जिकरीये एटलेकायापवित्रथाय  
तेपणवेहेवारछे तेकांइनिश्चेनथी एघणीनेकांइपवित्रकेहे  
वायनही हवेपवित्रपणानीओलखाण करावीयेछीये जे  
कायाथकीपवित्रकोनेकहीये जेशुभाशुजआश्रवनुंकामक  
रेनही तेनेकायापवित्रकहीये तथावचनथकीपोतानेआश्र  
वने

तेइजीवनेवाधापीमाउपले एतत्तत्तत्तत्तत्तो

ले तथामनपवित्रकेहेता जेमननेविशे आहटदूहटध्यांनध्या  
 यनही सदायएकआत्मस्वरूपनोउपयोग तथाद्रव्यगुण  
 प्रजायनीरमणता परजावत्यागी स्वजावभोगीएवीरीते  
 जेमननेविशे ध्यानप्रवरतेतेनेनिश्चेसोचकहीये एटलेसो  
 चधर्मदेखाभ्यु हवेनवमुअकचनधर्मकेहेता जेसोनु १ रुप  
 २ तथात्राबु ३ तथाकलाइ ४ तथाजसत ५ तथासीसु  
 ६ तथालोढु ७ तथामाणिक ८ तथाहीरा ९ तथापानुं  
 १० मणी ११ तथापुखराज १२ तथालसणीया १३  
 तथामोती १४ तथापरवालु १५ परमुख अनेकवस्तुतेप  
 रीग्रहकहीये तेवस्तुनोजेनेत्यागतेनेअकचनधर्मकहीयेते  
 सर्वेहेवारठे निश्चेयकीकोइवस्तुपर स्नेहनहीराखे स  
 चीत अचीत मीश्रपदार्थ तेसचीतकेहेतांनरनारीउपरस्ने  
 हनहीराखवो अचीतकेहेतां धनधान्यपात्रप्रमुखवस्तुउ  
 परस्नेहनराखे मीश्रकेहेता गामनगरउपर स्नेहनराख  
 वोएटलेस्नेहलता तेअभ्यतरठे तेस्नेहलतानो जेनेक्ष  
 यउपसमथाय तेनेरागदेशनोक्षयउपसमथयोक्हीये नेजे  
 नेक्षयथाय तेनेरागदेशनोक्षयथयोक्हीये एमजेनोरागद्वे  
 शगयो तेनेअभ्यतरअकचनीकहीये तेनेनीग्रंथपणक  
 हीये एटलेअकचनधर्मनवमुंरुहु हवेदसमुब्रह्मचर्यधर्म  
 कहीयेगीयेतेनानवप्रकारठे तेनीवीगत मन १ वचन २  
 काया ३ हवेमनयकीपोतेमैथुनशेवेनही तथासेवावेपणन

ही तथा सेवताने न लो जाणे नही तथा वचन थकी मैथुन सेवे न  
ही सेवरावे नही सेवताने न लो जाणे नही तथा काया थकी  
मैथुन सेवे नही तथा कोइ पासे सेवरावे नही तथा कोइ सेवतो  
होय तेने न लो जाणे नही एम एन व प्रकारे ब्रह्म चर्य पाजे तथा  
बीजे प्रकारे पणन व जे दछे तथान व वा म् सहीत पण पालवुं ते  
ने ब्रह्म चर्य व्रत कहीये एटले दस वीध जती धर्म पण कहयुं  
हवे वार भावना नो अर्थ लखीयेगीये एटले जावना छे ते  
जावरुप जछे शामाटे के एने विशे कशी वे हे वार थकी वस्तु क  
रवां नी नथी एसर्वे आत्म थकी विचारवानुछे ते आत्माने घणुं  
हीतकारीछे हवे प्रथम जावना अनित्य एवेनामे तेनो अर्थ  
कहीये छीये.

हवे जे पुरुष आत्मा र्थी होय तेनो एवो जाव आत्मा थकी उ  
ठेने वारे एवु स्वरुप विचार के अहो ससार अनित्य ठे एमां  
काइ पदार्थ रहेवानु नथि जे वो फाजनी अणी उपर पाणिनो  
बिंदु वो के टली वारट के तेवो अथिर संसार जाणवो तथा जे  
वो इंद्र धनुष चोमा सामा आकाशे थायठे तेनो रंग के टली  
वारट कवांनो तेवो आसंसार अनित्य जाणवो एटले आस  
र्वे जे संजोग संसारने विशे मल्योछे तेकां इरहेवानो नथित  
थाकर तव्य वस्तु जे टलीछे एटली सर्व विनाशी कवे जेम वि  
जलि नो ज्ञ वकार्थ इने नाश थाय तेम एवु स्तु सर्व नो नाश थ  
वानो ठे जेम इंद्र जाल थकी कांकरानो रुपि उंकरे परतु एरु

पितृकाइकामलागेनहि तेमआससारनुसुख एकांकराना  
 रुपिआवरावरते एकांसदारहेनहि अथवाजेमस्वप्नाने  
 विशेशुनवाअशुनदेखे परंतुअहियांकाइशुन अथवाअ  
 शुनतथि एतोजाग्योनथीत्यामुधिएवुठे जाग्योएटलेका  
 इछेनहि एटलेतेस्वप्नानिवातउपरथी मनमाकाइहरखशो  
 कथायनहि तेमससारनासुखदुखउपरथी हरखशोककर  
 वोनहि एपणअनित्यपदार्थठे तथाजोवनपणअनित्यछेए  
 पणच्यारदहाडानोचटकोकहेवाय जेमठार एटलेझाक  
 लनोतरेपृथिवउपर केटलीवाररहे सुरजनउग्योत्यांसु  
 धितेमएजोवनपणत्यामुधिरहेवानुं एपणझाझादिवशट  
 केनहि तथाकोइरांकमाणससाथिस्नेहकरथी तेरांकवचा  
 रीआपणुशंकारजकरवानोहतो तेमएजोवनथकीपणकां  
 इसारुकारजतिपजेनहि माटेहेचेतनतुं ताहारांआत्मामा  
 रमणताकर शामाटेकेएअनित्यपदार्थ एजोवनतेपामिने  
 मदनकरवो तथाधनसपदाराज्वरिद्धि एसर्वेपणकारमा  
 छे एतोजेवोएकसमुद्रनोकलोलचनेनेक्षयथाय तेमएधन  
 ठकराइआवेनेजायजेमचारुदततथावनपालप्रमुखनाद्रष्टा  
 तजोजोजेएकभवभाकेटलीवारपाम्यानेक्षयथयोएवोएअ  
 नित्यपदार्थछे एकोईनेत्यास्थीरथईनेरहीनथीजेवोसध्या  
 नोरगतेसरखोएकपामेत्यारेबनेपरंतुएजरंगसध्यानोक्षण  
 एकमाक्षयथईनेअधारुघोरथाय तेमएधनसपदाक्षणएक

मांवीणसीपणजाय एनोकांइजरुसोथायनहीजुओमुजजे  
 वोराजातेनेपणअंतेभीखमागवीपडी अनेसुलीयेअपाणा  
 तोएरीद्धीतोएयीठे तथाआजकोई शरीरनुरूप रंगघाटघ  
 णोसुंदरसारोदीसे परंतुएनेपणकांईवीणसतां वारंजागे  
 नही केमकेजडनोस्वभावसडणपडणवीध्वंपणछे माटेए  
 वाशरीरउपरमुरछानराखवी जोसनंतकुमारनामांचक्र  
 व्रतीतेनुरूप सक्रीइंद्रेपण वखाण्युंनेदेवता जोवाआव्या  
 तेसमेखेळजरिकाया हतीतोपणदेखीने भेचकथईगयाते  
 हीजजेवखत सणगारकरी सजामांबेठोतेवारेंते रुपनर  
 हयुंतेदेवतानाकेहेणथकी तंबोलथुंकीजोयुं नेमांहेजीवडा  
 दीठातेजवखत तेचक्रवरती अनीतसंसारजाणीदीक्षाले  
 ईचालीनीकल्यो अथवाजेमकरितधर राजासुरजनेत्र  
 हणदेखीनेसंसारनेअनीत्यजाएयो तथाजेमकरकडुराजा  
 बळदनेजरायेपीड्योदेखीनेकाया परमुखसर्वेअनीत्यजो  
 णोतेमएसर्वेअनीत्यपदार्थउपरहेचेतन तारेकदीमुरछान  
 राखवी तथामनुष्यनु आवखुपणअथीरठे जेवोपाणीनो  
 परपोटो क्षणएकमांनाशपामे तेममनुपनु आवखुपणस  
 मेजवुंजेवोहाथीनो कानचपळतेवुं अथीरआवखुजाणवुं व  
 छीवीचारिजोके अहोसंसारनेवांशे तीरथंकरकेवलीगण  
 धरचक्रवरती वासुदेववलदेव ईंद्रदेवताआदीदेईने मोटा  
 मोटाप्राक्रमीपुरुष तेपणकोईइहां अमरथईने रह्यानही

एसर्वेनाआवखा आवीगया एवुआवखुअनीत्य जाणीने  
 तथाधनजोवन कायापुत्रपरीवारसर्वसजोरातथाकरतम  
 वस्तुएसर्वेअनीत्यवे माटेतेउपरेममतानकरवीएकनीत्यप  
 दार्थपोतानोआत्मा अवनासीज्ञानदर्शनचारीत्रनो युज  
 तेनुअहोनीश स्मरणकरवुएथकीअवीचलसुखमले ज  
 न्ममरणनाफेराटले एवीरीतेपेहेली जावनाचेतनभावे. १

हवेबीजीअशरणजावनाकहियेगीये एटलेअशरणकेहे  
 तांकोइशरणेराखवासमर्थनथी त्याआत्मानेएवीरीते भा  
 वनाजाववीजोइये आआवखुंतोअस्थीर जेमहथेलीमाज  
 लकेटलीवाररहे तेमएआवखुपणजाजीवाररहेनहि, नेस  
 मेसमेआवखुंघटतुंजायछे डाह्योपुरुपहोय तेविचारीनेजु  
 वै जेजेटलावर्पगया एटलातोमुवां एटले मुवाकेहेताजे  
 फरीपाठनाआवे तेनेमुवांकहिये तेजुअजेवालअवस्थाने  
 विपेजेवरणादिकहतु तेतरुणावस्थामानथी तथाजेबा  
 लअवस्थानाजावहता तेतरुणअवस्थामानथी तथाजेत  
 रुणअवस्थामावरणादिकहता तेवृद्धअवस्थामानथी त  
 रुणअवस्थानाभाव तेपणवृद्धअवस्थामानथी तोजेआ  
 गलगइ अवस्थानाजेजाव तेसर्वेमरीगयां एकाइहवेपा  
 छांआवेनहि अनेजेरह्युआवखुवाकी तेपणसमेसमेघटतुं  
 जायछे माटेहेचेतनतुचेतं केमकेकोइपुरुपजोदशगाउगा  
 मतरेजायछे तोपणसाथेसवलराखेछे तोतारेतोलांवीवा

टेजाबुंछे अने बीजीजग्यामां ते संवलमलवानुन थी.

शिष्यवाक्यः—स्वामी तमे तो आश्रवग्रहण करोगे जे संवलले वुते तो पुन्य आश्रव ठे.

गुरुवाक्यः—हे नद्र अमे आश्रव न थी के हेताने पुन्य रूप भा तुव धावतान थी परंतु अमे जे कह्युं जे संवल बांध ते ज्ञान दर्शन चारी त्रनुं आराधन करे ते रीद्वितने आगल चाल शे अने एज सुख दाता छे जो आश्रव ग्रहण करवानु के हेता होत तो पूर्व एवुन के हेता के बीजीजग्यो ये ज्ञातुं नहि मले ते ज्ञातुं ती देवता मां तथा त्रीजं च मां पण ठे.

शिष्यवाक्य—के जेत मे देवता त्रीजं च ने विषे पुन्यनुं कारण देखाम्युं तो श्रुत्या ज्ञान दर्शन चारी त्रनुं आराधन न थी.

गुरुवाक्य—देवताने विषेतो समकित सुधी छे अधिक आराधन ठे नहि तथा त्रीज चने विषे देशवर तीपणाना अगी आरवत आराध्या नो अधिकार ठे परंतु हाल काल मां तो कोइ एक अक्षर नो पण आराधक देखे तो न थी कदापि कोइ कहेशे के अढी द्वीप बहार हशे ते वात तो सर्वथा खोटी छे अढी द्वीप बहार चारी त्रधर्म छे नहि कदापि कोइ कहेशे के तिर्थ कर के वली विचरे त्यां हशे तो ते वात नीअम थी ना तो कहे वाती न थी परंतु डाह्या पुरुष ने विचार वाजे वी वात छे के म के जो एक खेतर मां सो कलशी दाणानि पजे तो जो डे लाखेतर वालाने पाशेर पणानि पज्या जोइये परंतु जो म्लेखेतर मां तो एक दाणो निय



जतोदीठोनहि माटेढाह्याहोय तेविज्जारीजोजो एटलेते  
 स्थानकनेविपेकांइज्ञान दर्शन चारीत्र एत्रणपदनुआरा  
 धननथी अनेसर्वत्रतीचारीत्रधर्मतोमनुष्यनेविशेछेबीजी  
 जंग्योएछेनहि तेमाटेअमोएकहयुके बीजीजंग्योएछेनहि  
 माटेएसवलइहाजमलगो माटेजेमभाथुवधाय तेमवाधी  
 लेजो तुपरमाढकरीगतो आवखूतोसमेसमेचाल्युजायछे  
 अनेकालतोकोइनेछोमनारोनथी जेमवकरानेवाघपकमी  
 नेलेइजाय नेवकरुवागरडापाडतुजरहे तेमइहांकालले  
 डजशे तेवखततुजथीकाइसधावानुनथी अनेकांइएवोजो  
 रावरनथीके तनेकालपासेथीछोमावे एकशरणफकतपो  
 तानाआत्मानुछे.

शिष्यवाक्य-शरणतोअमोये च्यारसांजल्यांवे तेमध्ये  
 आत्मानुशरणसाभल्युनथी

गुरुवाक्य-च्यारशरणातेसांजल्या तेतुसांभलजेप्रथ  
 मअरीहतनुशरणकहियेविये तेअरीहततोशुद्धद्रव्यार्थ  
 कनयेजोतातो आत्माएजअर्गहंतछे कदापिकोइकहेशे  
 केअरीहततोजेकेवलिययातेनेकहिये तेनेकहेवुके तेकहि  
 एवातठिकठे परतुएवभुतनयेकेवलि अरीहतछे तेशरण  
 करवाजोगछे परतुतेकाइअहिया आमोआवीनेहाथआपे  
 नहि नेजन्मजरामरणना फेराटलेनहि एतोआपणोज  
 आत्माआत्मस्वरूपनेविशेजरमशे अनेपोतानाकर्मरुपश

ब्रुनोक्षयकरंशेतेवारेपोतेजकेवलज्ञानपामिनेअरीहंतथशे  
माटेएआत्मानुं समरणेतेसत्यछे नेजेकेवलीअरीहंतवि  
चरताछेतेनुंशरणं तेव्यवहारछे तथोविजुसिद्धेनुंशरणते  
पणठिकेजेछे व्यवहारछेशामाटेकेतेमने फरिथीजन्मले  
बोनथीतारेएअहियाआविने आपणनेशीरीतेतारशेतथा  
मेशरिनीगोमेएवाबोल आपणामांनथी जेनगवाननीअ  
कललीलाछे तेएमनीइच्छाथशेत्यारेताणीलेशे तेतोरीत  
जैननीठेनहि तथाकोइकहेशेके तनानतारीआणं एपाठे  
तेनुकेमतेनेकहियेकेएपाठछे तेउपमावातठे पणकांइतार  
वासमर्थनथी तथाशास्त्रेएवंपणकह्युठे जेअरीहंतभव्य  
जिवनेतारवासमर्थनथी मार्गदेखाडवानाकुशलठेतोअरी  
हतसमर्थनहि तोसिद्धतोसमर्थशेनाहोय एजपरतुसिद्धप  
दतुआत्मानेसमज अतिशुद्धद्रव्यार्थकनयेकरीने मुलस  
तास्वरूपआवरणना अभावथीजाइगतो तारोआत्मासि  
द्धपरमात्माठे तोतेजशरणथकीताहारुकल्याणथशे तथा  
त्रिजुसांधुनुंजेशरणं तेसांधुजैनशुद्धमार्गना चालवावा  
लाएटलेआचारजउपाध्यायसर्वसांधुमां आव्यातेशुद्ध  
मार्गवालातेनुंशरणजेकरीये तेपणपुर्ववतव्यवहारछेअ  
हियांकोइकहेशेकेएतो उपदेशनाटातारछे तेसमकित  
ज्ञानचारित्रपमामे तेनेव्यवहारकेमकह्यो तेनेकहियेकेस  
मकितज्ञानचारीत्रपमाडे तेकांइवहारथीआवतुंनथीतेतो

आत्मामाथीप्रगटथायछे परंतुएवाउपदेशनादातारशुद्ध  
 मार्गनादेखाम्नारामाटे तेनोउपगारघणोमोहोदोछेकदा  
 पिश्रसंख्याताभवसुधी तेनीशेवाभक्तिकरीये तोएपणगण  
 वंशीगणनथइये परंतुउपदेशतोतेसर्वेनेदेवे पणतेनिमीत  
 कारणरुपछेपणउपादान कारणरुपगुरुतोआत्मातेजोपो  
 तेसवलोप्रणमे तथाधर्मनोखपीहोय तेनेउपदेशगुणला  
 गेपणजेकांडमिथ्यातनाजरेला बोहोलसंसारी तथाक्र  
 श्मपक्षीयातेवाजिवोनेकांडउपदेश लागेनहि जेमजमा  
 लीनेजगवततथागौतमप्रमुख साधुपणघणासमजावना  
 रामल्यातोपणतेकाइसमज्योनहि तोउपदेशनादेनारनुंशुं  
 वलेतयाश्रनदरशनीप्रमुख घणाजिवजगवंतपासेआवि  
 नेप्रश्नपुछ्याने प्रश्ननाउत्तरजगवंतेदिधा पणकांडतेणे  
 मान्यानहि तोजगवतथकीतितरद्यानहि तेअधिकारओ  
 भगवतीथकीजाणजो माटेपोतानोआत्मा सबलोप्रणमे  
 नेपोतानुधर्मप्रगटकरवाचाहे तेधणीधर्मपामे आत्मातेज  
 साधुछेतेजगवतीजिमाकह्युंछेमाटेतेनुजसमर्णकरवु  
 हवेचोधुजेकेवळी नाखीतधर्मनुंशरणकहेताजे केवळीए  
 नाख्युजे देशवरती १ सर्ववरती २ तथाबीजेप्रकारेप  
 णवेजेदकह्याछे श्रुतधर्म तथाचारीत्रधर्म तेनुजशरणकर  
 वुतेवेहेवारछे माटेकेवळीएनाख्युंएवंजेधर्मजेवस्तुनोस्व  
 ात्तेनुंजशरणकरवु तोनिश्चेछेएटलेवीतराग भाखीतजे

धर्म ते आत्मस्वरूपनी रमणतापरजावनो त्यागतेहीजश  
रणतेसत्यछे एटलेआसंसारनीमाहेलीकोरे पोतानाज्ञान  
ध्यानविनाकोइराखवासमर्थनथी एटलेजन्मजरामरणना  
फेरावीजाथकीटलेनही जेमश्रीगौतमस्वामी जगवान  
श्री वीरस्वामीनुनाम तथाशेवाभक्तिअहोनिशकरताहता  
नेजेवारेभगवानश्रीमहावीरनुंतीरवाणथयुतेवारेस्वपरनी  
रमणताथइनेजगवतथकी पोतानोआत्मापोतेजुदोदीठो  
तेवारेरागद्वेश मुकीनेस्वसत्तामां प्रवेशथयो एटलेशुकल  
ध्यानपणआव्युं तेथीकेवलज्ञानपांम्याअनेमोक्षपणगया  
नेजोजगवानवीरस्वामी २ करताहोततोत्रणकालमां प  
णमुक्तिथातनही माटेशरणतेपोतानाआत्मानुं तेहीजस  
त्यछे बाकीसर्वेव्यवहारछे तेमाटेहेचेतनपोतानाज्ञानद  
र्शनचारित्रनी रमणताकरवीतेथकी संसारनोपारपामी  
श अनेजोतुनहीकरेतोआसंसारमां तनेकोइराखवासम  
र्थनथी अनेतुजेआसंसारनी मोहजालमांगुथाणोछेतेमो  
हजालमीथ्याखोटीछे एसर्वेआलपपालफोकटनोछे आसं  
सारनीमायासर्वेजुठीजाणवी तेअमेसंक्षेपथीकहीयेछीये  
मातातथापिता तथास्त्री तथापुत्र तथाजाइ तथाजावन्स  
गांवहालाकुटुंबपरीवार एसर्वेस्वार्थनुंसगुछे एमांकोइता  
रुनथी अनेरोगादिकआवीने उपनेथकेअथवाआवरुंआ  
वेथकेतेकोइसगांवाहालां छोडाववानेसमर्थनथी रोगको

इथीलैवायनही तथाकालथकीपणराखवाकोइसंमर्थनथी  
अनेवेदनापोतेभांगवे नेमारुमारुकरतोजाय तेवारेनरका  
दीकगतीनामहादु खभोगववापडे अनेजेपापकरीनेपैसो  
जेकमाणतेकेमलाहोयतेजोगवे माटिपापजेवाध्युहोयते  
जोगववुपडे एसज्जननीपणकारमीसगाइछे एकाइआ  
आपणादू खनोविजागीनथाय.

तथापीजोने प्रत्यक्षपणेजे दुवारकाजेवीनगरीकश्व  
जेवोवासुदेव बलचद्रजेवोबलदेव अनेजगवान नेमना  
थजेवातीरथकर तेनेमाथेधणीतोयपण जेवखतधीपा  
यनदेवेदुवारकानोदाहकरीतेवारे कोइथीरखाणुनही अ  
नेसर्वनगरीनोक्षयथइगयो अनेक्रश्वबलभद्र बेजाइमा  
तापीतानेलेडनीकलवामाड्युतोयपणलेडनीकलायुनहीते  
पणएनगरीजेगाक्षयथइगयांतो कोनुशरणकरवुकेजोवासु  
देवबलदेव सरखामहाजोदा तेथकीपणेपोताना मावीत्र  
नेरखाणानही नेमहाकगालभीक्षुवतवन्नेजाइचालीनिक  
ल्या उपनकुलक्रोमजादवनापरीवारनोधणी तेनेपणएअ  
वस्थाथइ तेसर्वपोतानाकतकर्मपोतानेनडेछे जुवकैकोइ  
नुशरणइहाखपलाग्युनहि अनेतमजेटलुंतोतेचारशरण  
करवामासमजताहशे गामाटेकेज्यांश्रीजगवाननेमनाथ  
स्वामीनोविहारधणाफेराथयोछे तथातेक्षेत्रेसाधुसाधवी  
नोविहारपणधणोछे माटेतेणेशुअरीहताटिकशरणनहि

कर्यां होय परतुकोऽथीरखाणां न हितथारोहिणी देवकी  
 प्रमुखेतोतिथं करगोत्रवां धेलांछे तोतेनेशुंसमजनहि पडी  
 होय परंतुपोतानां वाधेलांजिकर्मतेपोतेजन्नोगये एकोइथ  
 कीदूरथायनहि एवुजाणीने आत्मधर्मनीखपकरवी तथा  
 नवनंदप्राप्तीपुरमांथया तेनेनवडुगरीठधननीसमुद्रमां  
 करावी तेधनत्यांरह्य नेपोतानेकालखाइगयो माटेधना  
 दिकवस्तुकोइशरणभुतथायनहि तथासन्नोमनामाआठ  
 मोचक्रवर्तिछखडनोन्नोक्ता जेनीपासेपचीशहजार देवता  
 शेवामांहता तोयपणसर्वेसेनापरिवारसहित समुद्रमां  
 डुब्यो पणकोइराखीशक्युनहि आवखुंआवीरह्युत्यारे  
 देवपणनाशीगया माटेआसंसारएवोशरणरहितछे माटे  
 तेसंसारनेविपे मुरछाराखवीनहि शामाटेकेजन्मजराम  
 रणसदायवासेलागीरहेलाछे तेकोइनेगोमतांनथी तोत  
 नेकेमठोमीदिशे तेमाटेतुंतारास्वचाविक धर्मनेविपेस्थिर  
 थापरभावदुरकर जेमताराआत्मानुकारजसरे एजएक  
 शरणभुतछे बीजोकोइसंसारमां शरणेराखनारनथी २  
 हवेबीजीसंसारभावंनाकहियेछिये एटलेमंमारनुंरुप  
 केवुछे तेसर्वेविचार्युजोडये प्रत्यक्षएवधीवरतुकारमीदी  
 सेतेकेजुठे आसंसारनेविपेआपणोजेचेतन अनंतोकालय  
 यापरिभ्रमणकरेतेतेसर्वकर्मनेवगरह्योको एटलेकर्मकेवां  
 जोरावरछेके नलाभलामुनीनेपण

थोपागनाखीआपेठे नेनितनवासंसारमारुपग्रहणकरावे  
 छे एटलेविविधप्रकारनुनाहकजीवपासेकरावेठे माटेआ  
 चीमनुष्यनोभव सुगुरुनीजोगयाइपामीने जोकांइधर्मनी  
 समजतनेपडीहोय अनेजोधर्मनोखपहोय अनेअनेकवि  
 धनाटकेसंसारमांकरचा तेथकीथाक्योहोयतोतुंआत्मस्व  
 रुपनीखपकरहवेतेपुर्वेनाटककर्तुं तेजवनोसंक्षेपदेखाडिये  
 छियेप्रथमतोअव्यवहारराशी नीगोदमाहंतोतेकोइअकाम  
 निर्जरांनाजोरथीव्यवहारराशीमाआव्योतोयपणअनंती  
 वारसुक्ष्मनीगोदमांगयो तथावादरनीगोदमांपण अनंती  
 वारगयोतेमर्जप्रत्येकनीगतीनेविशेषण पृथ्वीकांसुक्ष्म  
 तथावादेर अपकायसुक्ष्मतथावादेर इत्यादिकचारेगती  
 नेविशे अनताकालथयांतुंनटकेछे एवीगतीकोइनथीकेतुं  
 तेगतीनेविशेनगयो तथाएवोवरणगंधरस फरसरुपश  
 वद स्वस्थानतुनपाम्यो एवकोइदिसतुनथी सर्वपुद्गल  
 नाप्रमाणुतुपामीचूक्योबे तथाचौदराजलोकनेविशे एवो  
 कोइआकाशप्रदेशनथीजे तुफलाणाआकाशप्रदेशे ज  
 न्मतथामरण कर्माविनावाकीरह्यो तेमाटेअनताअनंता  
 पुद्गलपरावरतनथया शुभाशुभआगेभोगवतां तथाज  
 न्ममरणादिक दू खसेहेताथकागया तोएपणतनेहजूकां  
 इ ससारनोजपलागतोनथी तोएजोतांअहोचेतन तारु  
 घणुकठोरपण्ठेअनेकोणएसंसारमासुखीयोथयोजेणेएस

सारछोड्योतेसुखीआथयाः जुनथावचापुत्रमहारिद्विनो  
 धणीबत्रिशस्त्रेनजेनेछेः तेभगवाननेमनाथस्वामिनी दे  
 शनासांभलीनेसंसारखोटोजाएयोः, नेसंसारथकीविरक्त  
 भावथयो तेसंसारगोडीचारित्रलिधुं पोतानाआत्मानुंशुक  
 लध्यानधाइतेकेवलज्ञानपामिने मोक्षेगयातेसुखीयाथ  
 यातथाश्रनाथीमुनीससारथकीरोगनुकारण पामिनेविर  
 क्तथयात्यारपणीश्रेणिकराजामल्या तेवारैघणुकसंसारनुं  
 सुखआपवानुंदेखाम्युंतोयपण तेपासमांपड्यानहिनेसा  
 मुश्रेणीकराजानेसमकितपसाड्यु तेधणीसुखीयाथयाव  
 लीएससारनेविशेजे सगावहालाठे, तेनोपणनेमनधीजे  
 एनुएजसगपणरहे' एकएकजिवसाथेश्रनंतांसगपणथयां  
 तेसिद्धांतमाकहयुठे तथाविवरासहितजोवुंहोयतोनुवन  
 जानुकेवलीनाचरीत्रमाजोजोः तथाजसोधरतथाजसोध  
 रनीमातातथाजसोधरनीस्त्री, तथाजसोधरनाठेकरानांस  
 गपणअन्योअन्यययां, तेजसोधरनाचरीत्रयकी जाणजो  
 तथाश्रीरिखनदेवस्वामीने, श्रीश्रांसकुमारनां नवभवनां  
 सगपणजुदीजुदीरितयीथयां तेसर्वेश्रीरिखनदेवस्वामी  
 नाचरीत्रयकीजाणजो, इत्यादिकघणाशास्त्रनेविशे घणा  
 जिवोनाअधिकारमांसगपणनोनेम रहेतोनधी बहूविप  
 रीतसगपणथायछे, तेमाटेएवाश्रसारसंसारनुंस्वरूपवि  
 चारीनेजेमएसंसारथकीछटवानो तिसाउरनो जेगपण



थकीछुटवामा एकज्ञानदरशनचारित्रएजसुकारीवे तेपो  
 तानाआत्माभांजठे तेनेप्रगटकरवु तेशाथकीथायकेजोसु  
 गुरुस्वपरसमयनाजाण आत्मज्ञानीएवापुरुषनी शेवा  
 करीनेतेनीपासेअध्यात्मग्रंथ तथाद्रव्यानुजोगनाग्रंथसां  
 भलेतेसाजलवाथकीतमने ज्ञानप्रगटशेनेज्ञानयकीविज्ञा  
 नप्रगटगे जावतमुक्तिमलशे संसारनोवेहआवशेसर्वकर्म  
 नीनाशंथशे अनतसुखनाविभागीथशो एविरितेसंसार  
 जावनाजाववीएत्रिजिजावना.

हवेचोथीभावनाएकत्वकेहेतां एकाकिपणेछे एटलेआ  
 संसारनेविपेपुर्वकह्या जेजवातरगतिआदिकनेविपेकर्या  
 पणत्याएकाकीत्यांकोइजीवनोसहचारीहतोनहि जीवए  
 कजोसुखदुखसर्वजवनेविपे भोगवेछे तेमाटेहेचेतनअनं  
 तोकाजएवोएकाकीपणथयो तोथपणहजोतुममताठाम  
 तोनथी हजोतुजाणेछेके सर्वसंसारमांवरुंतुवे तेमारीजठे  
 एटलेधनधानपुत्रकलत्र सज्जनसंबंधीतुमारुमारुकरोर  
 ह्याठे पणतेकोइतारुनथी तारोतोतुंहेचेतनएकजठे अने  
 जोप्रत्यक्षपणेएसर्वससारीमल्या तेसर्वस्वार्थीयांछे स्वा  
 र्थपुरोथाय त्यासुधीएसर्वसगाजाणवां स्वार्थपुरोनेहियां  
 यतोएजदुश्मनजाणवा अनेतहारुअहियांकोणछे तुज  
 मोत्यारेपणएकलोहतो तेवारेकांसगांवहोलां तथाधन  
 मालसाथेलेइनेआव्योनहोतो तथाजइशतेवारेकांसथे

लेइनेजवानोनयी तेसर्वेसगांवहालांधनमाल अहियांप  
 ड्युरहेशेनेतारेएकलानेजवानुंठे माटेखोटीममताशावा  
 स्तेकरेठे तेकरतांप्रत्यक्षविचारीनेजो जेमोटा मोटाचक्रव  
 र्तीलेपणगेनीनेगया एटलेब्रह्मदत्तनामा चक्रवर्तीठखंमना  
 राज्यनोजोक्ता चौदरत्ननवनिधान चोसठहजारअंतेउं  
 रेइइत्यादिकसर्वचक्रवर्तीनीरिद्धिनेविशे अत्यंतमुरछीतह  
 तोनेचित्रमुनिये घणोउपदेशकरचोहतो एपणतेणेमान्यु  
 नहिउलटोतेनेसंसारमां नाखवानोउद्यमकरचो पणते  
 तोआत्मज्ञानीपुरुष तेसंसारनेप्रत्यक्षजुठोजाणेठेतेसंसा  
 रमांकेमपमेअनेब्रह्मदत्तने उपदेशनलाग्योतेवारेमुनीवि  
 हारकरीनेगया अनेतेब्रह्मदत्तचक्रवर्ती संसारनासुखनो  
 अत्यंतरागीतेजन्ममां आंधलोथयो नेअंतेमरीनेसातमी  
 नकेंगयोपणकोइरीद्धिपरीवारकोइसाथेगयोनहितथाराव  
 णलंकाधिपतित्रणखंडनुराजजेनेघेर - महाअभिमान  
 नोभरेलोएवोजेकोइपुरुष तेपणअंतरणसंग्रामनेविशेम  
 राणोअनेमरीने नकेंगयोपणएरीद्धिपरीवारकशुएखपला  
 ग्युंनहि माटेएवोसंसारअस्थिरछे नेआपणुकोइनथीआप  
 णोतोएकचेतनठे बाकीसर्वेस्वार्थनुठे जेमएकव्रक्षउपरसां  
 जपडेहजारोजनावरजेगांथाय अथवाकेटलाएकमांहेमा  
 लाकरीनेरहेताहोय पणजेवारेएव्रक्षनेमाथे आपटाआ  
 वीनेपमेएटले...गे अथवाकोइकापवाआवे तेवारेसर्वे

जानवरमुकीनेनासीजाय एमजश्र.संसारनेविशे जिवने  
 स्वार्थहोय त्यासुधिसर्वसगुळे पणआपडाआवीपनेतेवा  
 रेकोइजलुनथाय तथाआवखुआवीरहे तेवारेकोइराखे  
 नहि माटेआपणेएकलाआव्यानेएकलाजवु तेससार  
 उपरखोटीममताशावास्तेकरवी जेमूनमीराजापोतनाश  
 रीरनेदाहज्वररोगउपन्यो तेवारेस्त्रीउवावनाचदनधस  
 तितेचुमानोखमखडाटघणोथतो शामाटेके एकहजाररा  
 णीहती तेसर्वेयसतीतेपरधाननाकहेणयी श्रकेकीचुमीरा  
 खीतेयीराजानेसुखउपज्यु पछीपरधाननाकहेणयीराजा  
 नेमालमपयुकेराणीए श्रकेकीचुमीराखीठे तेथीखलभरा  
 टनयीमाटेएकाकीमा सुखवरतीछे एमविचारीमनसाथेए  
 वोनिश्चयकरयोकेजोमने रोगमटेतोहूएकाकीविचरुते  
 मजप्रजातिरोगमटयोनेचारीत्रलेइ च । च । च ।  
 ल्यो सर्वपरिवारफिकोथइने उभोरह्यो तेवारेगामम

काग्रपणमुकिने विजामाकेमजलेछे तेवारेचोथाप्रत्येक  
बोधेत्रिजाप्रत्येकबोधनेकहयुं तुवलीएनामाकेमपेसेतेतु  
तारास्वभावमारम्य तेवारेचारेत्रत्येकबोध एकत्वभावमां  
रमणकरवालाग्या तेथीकेवलज्ञानपाम्या तेअधिकारप्र  
त्येकबोधनाचरीत्रप्रमुखघण्टेकाणछे

१ एमएकत्वभावआत्मस्वरूपविचारवु इहांगुणपरजाय  
पणजुदानपाम्वा गुणपरजायते तेद्रव्यमांजछेअनेगुण  
परजायद्रव्यविनाशानाहोय अनेगुणपरजायविनाद्रव्य  
पणनहोय तेद्रष्टातेकरीनेउलखावीयेछीये जेघटनेघटनो  
गुणजलधारणपणुं तेकांइजुदूनथीज्याघटछे त्याजलधार  
णकरशेज ज्यांजलधारणत्याघटछेज माटेएद्रव्यनेद्रव्य  
नोगुणतेभेगोजते त्यांघटनेघटनापरजायजेरक्ततत्वादी  
कतेपणकांइजुदानथी ज्याघटछेत्यांवरणछे नेवरणछेत्यां  
घटते तेमजद्रव्यनेविशे द्रव्यनोपरजायजुदोनथीएटले  
आत्मातेद्रव्यज्ञानादिक तेगुण तेकांइआत्माथकीज्ञाना  
दिकगुणजुदानथी नेजोज्ञानादिकगुणजुदा कहियेतोआ  
त्माज्ञानेकहिये माटेआत्माएज्ञानादिकगुण नेज्ञानादिक  
गुणतेआत्मा तथाआत्मानेआत्मानागुणपरजायजुदान  
थी माटेगुणपरजायसहितआत्माजेमपटनेपटनुंश्वेतप  
णुतथाआधाराआधेपणुतेकांइजुदूनथी एत्रणमलिनेएक  
वस्तुथाय कदापीत्रणमांथीएकेनहोयतो एंवस्तुपणनहो

यत्रहियाउपनयजोडियेछिये जेमपटतेआत्मानेठामेने  
 आधारआवेपणुते ज्ञानादिकगुणनेठामे नेश्वेतादिकतेप  
 रजायनेठामे तेजेमत्रणमलीनेएकएक वस्त्रथयुं तेमत्र  
 हियांपणगुणपरजायसहितआत्मायाय एवीरीतेंविचार  
 एकत्वजावनोकरवो तेकेवलज्ञानदातारठे शामाटिकेए  
 शुद्धध्याननाविजापायानुलक्षणठे एटलेशुद्धध्याननेप  
 हेंलेपायेतोनेदज्ञानतथानेदामेदज्ञानछे तेथकीएकलामो  
 हनी कर्मनोनाशथाय पणकेवलज्ञाननपामे नेशुकल  
 ध्याननोविजोजेपायो एकत्वभावठे नेश्रजेदज्ञानठे तेथ  
 की त्रणकर्मनोनाशथाय ज्ञानावरणीदर्शनावरणीअंत  
 रायएत्रणकर्मनो क्षयथयायीकेवलज्ञान केवलदर्शनप्र  
 गटे एवोएकत्वजावनानेविशेमाजरह्योठे माटेएकत्वजाव  
 नासंदायनिरतरजाववी एजावनाभावतांथकांअनंताक  
 र्मनिर्जरेअनेमूक्तिढुकडीआवे एवातमांशकाराखवीनहि  
 एचोथीभावनाकहि हवेपाचमीजावनाकहियेठिये.

तेअनित्यजावनाठे एटलेअनित्यकेहेता सगावाहालां  
 सज्जननोजेस्नेहतेसर्वेअनित्यठे अनेएस्नेहनाराखवाथ  
 कीजीवभवसमुद्रनेविपेडुवेठे अनेअनंताजन्ममरणकरेछे  
 अनेअनंतदुखभोगवेठे एमविचारीने सगांवहालासज्ज  
 नउपरथीस्नेहजावतजवो केमकेएममतारुपमाकणी स  
 र्वेनेखाइगइछे नेआपणनेपणअनंतोकाळथयांरोलेछे मा

टेएममताडाकणीनेघेरथकीकहाप्त्वी अनेजेसज्जनसंबंधी  
 मल्यांछे तेस्वार्थनांसगावे पणतारुएमांकोइतेनहि तुं  
 पणएमांकोइनोनथी सर्वसंजोगेमली विजोगेजाशे जे  
 मपथीजननोमेलोकेहेतां जेमकोइकधर्मसलानेविपे रस्ते  
 जतारात्रत्यांरह्यां बीजांपणदेशदेशनांपंथीआवीनेउतर्या  
 छे तेनीसाथेप्रीतिबंधाणी तेप्रजातनोकालंथयो त्यारे  
 सर्वसर्वेनेमार्गेचालीनिकल्यां हवेएप्रीतिनोनिरवाहंक्यां  
 करशे तेमआजीवइहांथकी परलोकगयेथके एसगांवहा  
 लानोस्नेहनोनिरवाहक्यांकरशे माटेसर्वेअनित्यपदार्थ  
 छे अथवाजेमतिथनेविशे शंघप्रमुखमलेछे पछीतेमाकेट  
 लाएकजीवपुन्यउपारजे नेकेटलाएकजीवपापउपारजे ए  
 मनफोटोटोलेइनेसहूसहूनेमार्गेपाछाजायतेमआमनुष्य  
 नवरुपित्तिथ तेनेविपेआजीवरुपित्संघमल्योछे तेमां  
 कोइकजीवतोवस्तुधर्मपामीनेज्ञानध्यानकरे करीनेसर्व  
 कर्मखपावीनेमोक्षजाय अथवाकोइकजीव पुन्यउपार्जिने  
 देवादिक्शुजगतीमांजाय अथवाकोइकजीवपापउपार्जि  
 नेनर्कादिकगतिमांजाय पणकोइस्थिरचावतो अहियांर  
 हेवानोछेजनहि अनेजेसज्जनसंबंधी जोस्वार्थतेनोपुरोन  
 थायतो तुरतछेहदाखे जेमपरदेशीराजाने सुरीकंतारा  
 णीएझेरदेइनेमारीनांरूयो तेअधिकाररायपसेणीथीजो  
 जोतथाब्रह्मदत्तचक्रव्रतीनीमाताचुलणीजेस्वार्थपोतानोन

सरतोदीठो त्यारेलाखनामेहेलकरावीने दीकरावहूनेमां  
हेलीकोरमुवाग्या नेतेमेहेलसलगावीदीघो पठीतेब्रह्म  
दत्तनुआवखुहतु तोसलंगमांथडने जीवतोनिकल्यो परं  
तुमातानोस्नेहपणएटलोजछे माटेसंसारअनित्यछे तथा  
जुवोश्रेणीकराजापोतानोपुत्रकोणीकनोअंगुठो छमाससु  
धीमीहोडामाराखीने लोहीपरुचुस्यु अनेकोणीकनीमा  
ताचेलणाने एपुत्रजीवतोरारखवोजनहिहतो पणश्रेणीके  
जीरावरे तेपुत्रनेउछेरघो तेजपुत्रेपितानेकष्टपजरमाघा  
ल्यो नेदीनप्रतेपाचसेपाचसेकोरडामारे जुवोएसंसारनुं  
सगपणएवुअनित्यछे एसर्वेस्मार्थनुसगुठेतथामरुदेवामा  
ताजेवारे रीखवदेवस्वामी दिक्षालेइने जालीनिकल्या  
त्याथीमाडीनेएकहजारवर्षसुधी मारोरीखव २ करीने  
आखेआधलीथया तेसर्वेस्नेहनाफलजाणवा जेवारेजग  
वंतकेवलज्ञानपाम्या तेवारेभरतवादवागयो तेवारेमा  
तानेपणसाथेतेभीगया तेहाथीनीखधेबेठाथकाजजगवंत  
नीरिद्विसंपदादेखीने स्नेहटुटीगयो विचार्युजेदूरीखवरी  
सवकरता आधलीथइनेरीखवतो आटलीरिद्विजोगवे  
छे नेमातानेसंभारतोनथी तोकेनोरीखवनेकेनीमातासहू  
सहूनाआत्मानुसरीखछेएमअनित्यभावनाजावतांथकाअ  
तघडकेवलीथइनेमोक्षेगया तेफलतेअनित्यभावनानुतथा  
श्रीगौतमस्वामीत्रीशवर्षसुधी माहावीरस्वामीनीसेवा

मांरह्या अनेनगवानउपर घणोरुनेहरह्यो तेथीकरीनेके  
बलज्ञानपाम्यानहि तथाक्षपकश्रेणीपणआवीनहि जेवा  
रेनगवाननिस्वाणथया तेवारिएवीभावनाथइजे केनावि  
रनेकेनाकुविर, विरनाआत्मानुकारजकरीनेगया अनेतुं  
फोगटविरविरपोकारैछे तेमातारुशुबल्यु तुंताराआत्मा  
नुंकारजकर एमअनित्यजावनाजावताथका केवलज्ञान  
पाम्या एमबीजानेपणअनित्यजावनाभाववी तेथकीआ  
त्मानुकारजथाय एटलेएपांचमीभावनाकहि.

हवेछट्टीभावनाअसुची नामेकहियेछिये एटलेअसुचीके  
हेताअपवित्रवस्तुनेविचारवी एटलेतेअपवित्रपणुंशाथकी  
पामेवे तेकहियेछिये जेजीवमोहनेवशपड्योथकोकर्मबांधे  
तेथकीमनवशपणनरहे अनेमनवशनरहे तेवारेमनजोगथ  
किकर्मघणांबांधे. तथामनवशनहोयतोइंद्रिउपणजोरघणुं  
टाखवे अनेइंद्रिउनापरिवलथीकरीनेजिवप्रमादमांपमेने  
प्रमादमापड्यो एटलेतेनेज्ञानध्यानतोहोयजनहि तेनेतो  
इंद्रिउनापोपणनोजविचारअहोनिशरहे तेथीजिवअनंतां  
कर्मअशुनउपारजे अथवाकटापिकोडशुभउपारजे परंतु  
अतेएकर्मबंधकहिये तेकर्मनाजोरथीकरीने जिवनरका  
टिकगतिनेविपेजइनेउपजे तोत्यांतोरुधीरमासनोकरद  
मथइनेरह्योछे तेसदायछेदनभेदनठे त्यांअसुचीनुंशुकेहे  
वु अथवामनुष्यअथवात्रिजंचनीगतिनेविशेआवे तोत्यां.



नेजाणवी नपुशकनेछसेनेएशीनाडीहोय.

हवेशरीरमा धातुप्रमुखनुंप्रमाणछे तेकहीएछीये शरीरमध्येरुधीरनोएकहामोहोयनेमासनोअमधोहामोहोयअनेमाथानोभेजोएकपायोहोय लघुनितएरुहाडोहोयवडी नीतएरुपाथोहोय पीतनोएककलवहोय कफतोएककलवहोय सलेखमनोएकरुलवहोय वीर्यनोअडधकलवहोय एप्रमाणेवरावरशरीरमासर्वेवस्तुरेहे त्यासुवीशरीरमारोगादीकनथाय अधिकनुंन्यथाय तेवाररोगनीउत्पत्तिथाय तथापुरुषनेपांचकोठाशरीरमाहोय. स्त्रीनेबकोठाहोय एटलेएककोठोगरभधरवानोअधिकहोय पुरुषनेनवद्वारसदायवेहेछे स्त्रीनेबारद्वारवहेछे तेनांनाम कान २ चक्षु २ वमीनित १ नासीका २ मुख १ लघुनीत १ एपुरुषनेनवद्वारजाणवा स्त्रीनेएथकी त्रणद्वारअधिकते नानाम स्तन २ प्रसवयोनी १ एत्रणअधिकहोय एरीते बारद्वारस्त्रीनेवेहे सदायपुरुषस्त्रीनेवह्याजकरेछे. तथाजे पुरुषनेपाचसेपेसीमासनीकिहीछे तेमध्येयीत्रीसठ्ठीस्त्रीनेहोयतथानपुशकनेवीसगणीहोय एटलेमनुशेनाशरीरनेविपेमासमेलादीकजेअरेछे तेमहाअपावित्रछे केमके माहेपरुछे लघुनीतवमीनीतप्रमुखभर्युछे माहादूर्गछानुस्थानकठेमाटेएवुअशुचिनुंस्थानकआशरीरेअपावित्रनोकोथलो तेतुंजाणतोनिथी अनेजवानीनामदमाछाक्यो

थकोचंदनअतरकुसम चुरणप्रमुखेपोतानाशरीरनेविलेप  
नप्रमुखसुगंधेजरघोरेहेछे नेलोकोनीदूर्गछनाघणीकरेउ  
तेतनेआगलकरमंधणांनोगववांपडशे माटेपुरवनाजेक  
हेलाबोलगरनतथाशरीरप्रमुखनातेसंचारीने दूर्गछना  
कोइतीकरवीनही अनेआत्मासाथेएवोविचारकरवो हेचे  
तनेएपुदगलनोस्वभावसडणपणवीदवंसणवे- एनावर  
एनेरसफरसनेपलटवानोस्वभावहोछे एनापरजायनी  
एजस्थीतिछेमाटेतुंपुदगलनाधरममां प्रवेशकरीशतने  
राआत्मीकधर्मनेविपेप्रवेशकरताराधर्मनेविपेकरी  
अपवित्रतेनही तुतोसदायपवित्रतेमाटेपोतानुंनानुंन  
चारित्रनाउपयोगनेमुकवुंतहीएवीठट्टीअसुचीअज्ञान  
हवे सातमी आश्रवजावना कहीयेछे  
श्रवकेवोछे के आश्रवरुपीएकसरोवरते एतल्लेसुया  
रुपसरोवरजाणवुं- तेमध्येइंद्रीतथामनस्य इत्येकमी  
रह्योते तथाविषयनाकलोलत्यांचणाथइत्युक्ते अथवापि  
युपाणीभरेलुते तेकायारुपआश्रवसरोवरते तेइत्युक्ते  
नालांतेतेपाचगडनालानांनाम- जिवहिंस १ कुटुबोलवुं  
२ चोरी ३ मैथुन ४ परीग्रह ५ हरेत्येनयननेजिव  
हिसानेत्रसतथास्थावरजिवनी- हिंसकर्मनिमित्त  
संसारनिमित्ते करवीतेनेहिंसासकर्म- अहिंसांने  
हेशेकेधर्मनिमित्ते कांइहिसाथापि

तेनेकहियेकेप्रश्रव्याकरणसुत्रनेविशे धर्मनिमित्तजेहि  
 साकरेतेनेमहामदबुद्धियानेमहादूष्टप्रणामीकह्याछेतथाद  
 शविकालिकसुत्रनेविशे जैणाएधर्मकह्योछे इत्यादिकसर्वे  
 सुत्रनेविशे जैणाविनाधर्मथायनहि अनेजेधमाधमकरी  
 नेधर्मधर्मपोकारेठे नेजिवहिसाकरेठे तेजिवशास्त्रजोता  
 महामाठागतीनाछे अनेबहोलससारीदिठामांश्रावेछेअ  
 नेअनंतोससारतेरखमझो एवापरमात्मानां वचनछेतथा  
 जेधननालोभिथकाजेपुजाप्रतिष्ठा सनात्रवरत पचखाण  
 करावेछेतथातेनोउपदेशकरेठे तेसर्वेपत्थरनीनावसरखा  
 जाणवातेमातेबुडेंठे नेविजानेबोलेछे एवचाराअज्ञान  
 जिवपेटन्नरवावास्ते धर्मतथापापनीतथा आश्रवसंवरनी  
 कशीउलखाणराखतानथी अनेकदापिकोइये बेशास्त्रवां  
 चेलाबेतोतेनेपोतानास्वार्थआगल कांडसुजपम्तीनथीते  
 थीपोतेपणबुद्धेनेआगलनानेपणबुडाम्नेएवुश्रीपरमात्मानु  
 वचनठेमाटेज्याज्याजिवनीहिसात्यांत्यासर्वेठेकाणेआश्रव  
 जकहिये शामाटेकेजगवतेअवरतवारकह्याछेतमाछएका  
 यनुंअवरतहश्याजछे त्याकाइएवुनथीकह्युंकेधर्मकारणेहं  
 साकरेतेपापमानगणवीजेकोइजाणनिंसीमलखाशेतेनेप  
 णझेरचडशेनेअजाणेखाशेतेनेपणझेरचडशेमाटेसंसारअ  
 र्थेअप्रवाधर्मअर्थजेधणीहिंसाकरशेतेनेमहाआंकराकर्मबं  
 धाशेजावतनकादिकगतिनेविशेजशेएवुकोइजिवेकह्युंनथी



ज तथा सर्व आश्रव नुमुल तथा सर्व दुख नोदातार एवो  
 आरभ परीग्रह थकी सदाय अलगुंरहेवु अते पण ते आर  
 परीग्रह आपणी हारे आवेनहि एथ की आपणे अनता जव  
 खप्पु पडे माटे एपाचे आश्रव ते थकी सदाय वेगलोरहे ना  
 तो एज तने ससारमा अनता जव जन्म मरण करावशे तथ  
 बीजे प्रकारे अढार पाप स्थानक ते पण आश्रव जछे ते थ  
 पण सदाय वेगलुरहेवु तेना नाम हसादिक ५ पूर्व कह  
 ते तथा क्रोध छठो एटले क्रोध छे ते पण आश्रव रुप जछे  
 वखत जिव क्रोध नेविशे आवी जायछे ते वखत कांइ कृत  
 कृत्य विचार तो नथी तथामान ते पण जीव अभिमान  
 लीधो थकी न करवानां कारज करे तथामाया कपट  
 जरे लो जीव शुन करे ते सर्वे कारज सेवे तेनो कोइ विश्वा  
 पण न करे तथा लो जते तो सर्व थकी महानिष्ट छे लो जी  
 ए सने कोइ सगुवहालु हेतु कोइ होय नहि अने न करवा  
 कारज ते सर्वे ए लो जी माण सकरे पोते दुखी थाय नेवी  
 ने पण दुखी करे तथाराग ते स्नेह नो लीधो थकी कोइ व  
 बोलवानो पण विचार न होय तथा कोइ काम करवानो प  
 विचार न होय कोइ नीलाज शरम पण न रहे एराग सोना  
 वेमी सरखो छे तथा द्वेप ते द्वेप ना भर थो थकी पोतानुं कारज  
 वगाडे ने सामानु कारज पण वगाडे केवो के लोढा नीवेडी  
 वोवे तथा कलेश जे सामासाथे उभो करवो अने सताप थकी

डीएकछेटेखसेनहि पोतेकलेशमाजरचारहे नेसामानेक  
लेशउपजावे तथाअभ्यास्यानएटले पराडखोटीवातो  
जाणीअजाणीकरवी तथाखोटांआलकोइनेमाथेदेवां.

हवेपरिसुनकेहेतां पराडचामीठखावी अथवाकोइहेतु  
जाणिनेमर्मनीवात आपणनेकहीहोय तेप्रसिद्धकरवीत  
थाकोडनीमर्मनीवातजाण्यामांआवीहोयतो फजेतोकर  
वी तथापरीपरीवादकेहेतां परनाअवरणवादबोलवाको  
इनागुणग्रहणकरवामां समजेनही ज्यांत्यांसर्वनाअव  
गुणग्रहणकरवामांसमजे पंदरमुपापस्थानरत अरत  
एटलेसुखआवेथके सातावेदवी एटलेपोतानासुखमांम  
गनथइगयो पारकुंदुखजाणेनही दुखआवेथकेहायवरा  
घघणोकरे संतोशराखेनही तथासत्तरमुं मायामोसकेहे  
तांजेकपटसहित जुठुबोलवुजेमआगेतो विपहतुंअनेव  
लीतेनेवधार्युं एटलेतेनाझेरनुशुंकेहेवुं तेमपेहेलुंजुठुंबोल  
वुतेतोमाहापापछे नेवलीदंजसहितबोलवुं एटलेतेनापा  
पमांशुंकेहेवुं तथाअठारमुंमीथ्यात्वसल्यएअठारपापस्था  
नथकी हेचेतनसदायवेगलोरहे एथकीजसर्वपापनीक्रि  
यालागेवे नेपापनीबासीएप्रकृतिनाउपरंजननाकरवा  
वालाएअठारपापस्थानकजछे नेएअठारपापस्थानक  
ज्यांसुधीमांहेंथीगयांनथी त्यांसुधीजीवनेसंसारथोरजा  
वजठे त्यांसुधीसंसारघट्योनथी एवातनिश्च्येजठे तथाते

अठारपापस्थानमा सत्तरपापस्थानथोडासंसारनाधणी  
 छे अने एकमीथ्यातपापस्थानकअनतसंसारनाधणीठै मा  
 टेएवुजाणीनेहेचेतनएथकीतुसढायअलगोरेहे तथापाचइं  
 द्रीनाआश्रवणे तेपणतजवाकेश्रोतइंद्रीना ३ विषयछेते  
 पणतजवा जोनहीतजितोएथकीजडनुंपोपणथशे नेआ  
 त्मानुघातथशे तेमपाचइंद्रीनाविषयसमजवातेश्रोतइंद्री  
 नापरवशपणार्थी मरगनोजीवथायछे तथाचक्षुइंद्रीनापर  
 वशपणार्थकीपतगीआनाप्राणजायछे तथारसइंद्रीनापरव  
 शपणार्थीमांछलानाप्राणजायछे तथाघ्राणइंद्रीनापरवश  
 पणार्थीभमरानोजीवजायछे तथाफरसइंद्रीनाविषयथकी  
 गजनोनाशथायछे तथाएपाचइंद्रीमध्येअकेकीइंद्रीजेनी  
 वशनर्था तेनाजीवजायछे तोजेनीपाचेइंद्रीमोकलीहोय  
 तेतोसुखक्याथकीदेखे माटेहेचेतनएपाचेइंद्रीरुपजेससा  
 रनादूततेनेछुटामुकीगतोएतनेसुखकेमआववादेशे नेतने  
 ससारमारोलवशेमाटे तुएपाचेदूतनेपकमीनेकेदकर एट  
 लेतुंसुखीयोथइशइत्मादीक जेजेकारणथकीआश्रवनुंआ  
 ववुथायछे तेतेकारणनेतुववकरजेमतारोआत्मानोरनथा  
 य अनेजोतुआश्रवनेवधनहीकरेतोताराआत्मानेतरवानी  
 वखतकोदकालेनथीमाटेआश्रववधकरीएवीजावनाजाववी  
 तथाआठमीजेसवरजावना एटलेपुर्वेसातमीआश्रव  
 जावनानेविषेजेआधिकारकह्यो तेनेरुंधवानोविचारतेनेसं

वरकहिये तथामनवचनकायानाजोग संवरवातेसर्वेव्य  
वहारसंवरछे तथाजेपरजावनोत्यागनेस्वजावनेविपेरम  
एकरवुंएटलेज्ञानदर्शनचारीत्रमां रमणकरवुं तेनेसंवरक  
हिये ॥ तथानवमीनिरजराभावना एटलेधर्मध्यानशुद्ध  
ध्याननुंध्यावुं तथागुरुपासेलागेलादोपनुं प्राश्रितलेवुंत  
थाविनेवियावचगुरुवादिकनीकरवी इत्यादिकजावना  
भाववीतेनेनिरजरातत्वकहिये॥दशमीलोकस्वरूपजावना  
लोककहेतांचौदराजलोक तेनोआकारकहियेछिये पुरुष  
आकारकहेतांपुरुषवेपगपहोलाकरीने उन्नोरहेहाथवेके  
मेआपेतेवाआकारेलोकछे तथाविजेप्रकारे वलोणाआका  
रकहिये तेकहेताजेमस्त्रीवलोवानेउभिरहे अनेमाखणउ  
परजाववाझडकालेछे तेवखतजेवोएनोआकारहोय ते  
आकारेलोकछे तथात्रिजेप्रकारेएकसरावलु निचेउंधुवा  
लीएतेउपरसरावलानुसपटकरीने उपरमुकीयेपणनिचे  
नुंकांडकमोटुमुकीएने उपरनावेसरखानेनाहानांमुकीएते  
आकारेलोकछे तेलोकनात्रणजेदछे उर्धतथाअधोतथा  
तरिठोलोकछे तेजेपुरुषाकारनेविशे जेनाजिनीजग्याथ  
कीनिचुतेनेअधोलोककहिये तेसातराजथी कांडकझाझुवे  
तथासातराजमाठेरोनाजिथकीउपरनोभागछे तेनेउरध  
लोककहिये तथाजेनाजिनीजग्यानोजागछे तेनेत्रिछो  
लोककहिये हवेतेत्रणेलोकनुं किंचीतस्वरूपदेखागियेछि



येजेअघोलो रुनेविशे सातपृथ्वीछे तेमध्येपहेलीपृथ्वीर  
 तनप्रभाएवेनामेछे तेनोएकलाखने एसीहजारजोजननो  
 पिंछेतेमेरुपर्यंतनासभुतलापृथ्वीनाभागयकीगणवोहवे  
 जेएकलाखएसीहजारजोजननोपडछे तेमध्येएकहजार  
 जोजननिचेमुकीये नेएकहजारजोजनउपरमुकीये तेना  
 मध्यमाएकलाखनेअठोतेरहजार जोजननोपद्मरह्योतेमा  
 हेतेरजागकरीये तेमातेरनर्कनापाथमाछे तेनावचलाआ  
 तराअगीयाररह्या तेमध्येदशआतरामा भुवनपतिनीद  
 शनिकायोछेनेएकआतरुखालीछे तथाहजारजोजनजेउप  
 रनुरह्यु तेमध्येसोजोजनउपरमुकीए तथासोजोजनहेठ  
 लमुकीएमध्येआठसेजोजनरह्यु तेमध्येआठव्यतरनीनि  
 कायोछे तथाउपरनासोजोजननेदशजोजनउपरमुकीएत  
 थादशजोजननिचेमुकीए मध्यमाएसीजोजनमाआठजा  
 तनावाणव्यंतरनोरैहवासछेतेभुवनपतितथाव्यतरनेरत्न  
 मयजग्याउछे हवेजेनर्करत्नप्रजातेनात्रणजागकरीए ते  
 मध्येप्रथमनोजागरत्ननोछे तेरत्ननाजागनीमाहेलीकोर  
 सोलकभरत्ननासोलजातनाछे बीजाभागोमांरत्ननाजा  
 गनथी तथातेरपाथडेथइनेत्रीसलाखनर्कवासछे तेनर्क  
 पृथ्वीनेनिचेत्रणवलियाछे एकघनोदधी १ घनवा २ त  
 नवा ३ एत्रणवलीयानेआघारेकरीनेएपृथ्वीरहीछे तेनी  
 निचेएकराजआकाशछे त्यांगयेथकेबीजीनर्कपृथ्वीआवे

तेनेविशेअगीयारपाथडाछे ते पृथ्विकांकरासरखीजाणवी  
 त्यांथकी एकराजगयेथकेत्रीजी पृथ्विवालुकप्रभाएवेनामे  
 आवे तेनेविशेनवपाथडाछे ते पृथ्विवेलुसरखीछेत्यांथकी ए  
 कराजचौथी पृथ्विपंकप्रभाएवेनामे आवे त्यांसातपाथडाछे  
 ते पृथ्विपंककेहेतांकादवजेवीछे त्यांथकी एकराज पांचमी  
 पृथ्विधुमप्रभाएवेनामे आवे त्यांपाचपाथडाछे नेधुंवा  
 णासरखी पृथ्विछे त्यांथकी एकराजछठी पृथ्वितमप्रभाना  
 मे आवे तमकेहेतांअंधकाररुपछे त्यांत्रणपाथडाछे त्यां  
 थकी एकराजजाजेरी सातमी पृथ्वितमतमाएवेनामे आवे  
 त्यांअंधकारअत्यंतघणोजतदरुपछे त्यांएकजपाथडाछे  
 तेमध्येपांचनरकावासछे तेनांनामकहियेछिये काल १  
 माहाकाल २ रोलुं ३ माहारोलु ४ अपेठा ५ कालादी  
 कचारपाथडाचारदसीनेविपेठे तेअसंख्याताजोजननाठे  
 तेअपेठाणनामेनरकावासमध्यनोएकलाखजोजनलांबी  
 पोहोलीछे तेनीवेदनाघणीआकरीछे त्यांथकी एकराजग  
 येथकेअलोकआवे हवेतेसातेपृथ्वीनुंपोहोलप्रणु कहीये  
 छीये पेहेलीपृथ्वीएकराजलांबीपोहोलीछे बीजीनरकपृ  
 थ्वीवेराजलांबीपोहोलीछे त्रीजीनरकपृथ्वीत्रणराजलां  
 पोहोलीछे तेमएकएकराजवधतेवधतेछठीठराजतेथकीसा  
 तमीनरकपृथ्वीसातराजलांबीपोहोलीछे हवेतेसातेनरक  
 नीवेदनात्स्वरुपकहियेछीये प्रथमनीत्रणनरकनेविपेपर

साधामीकृतवेदनाछे तथाखेत्रवेदनापणछे । तथाचोथी  
 पांचमीवेनरकनेविषे माहोमाहेवीक्रियकरीने लढीमरेवे  
 एकैकनेवेदनाकरछे तथाखेत्रवेदनापणछे । तथाछठ्ठीसा  
 तमीवेनरकनेविषे । खेत्रवेदनाएकलीजवे परंतुपेहेलीन  
 रकनेविषेअनतीवेदनाछे तैयकीबीजीनरकनेविषेअनंत  
 गुणीवेदनाछे । एमअनुक्रमेएकएकथकीअनंतगणीविधती  
 वेदनाजावतछठ्ठीकेरतासातमीनरकपृथ्वीनेविषेअनतग  
 णीवेदनाछे तथातेसातेनरकमाहेमाहाश्रयकारछे त्यांको  
 ईचद्रमासूरजप्रमुखअजवालुंकरतावेनेही ।  
 शिष्यवाक्य—ज्यारेसातेनरकपृथ्वीसाअधारुकहुंत्यारे  
 भुवनपतीव्यतरमापणअधारुवे ।  
 गुरुवाक्य—भुवनपतीव्यतरनेविषेहेवानाजेरेहेवासते  
 सवैरतनमंयछेतेथीमाहाउद्योतकीरीबेत्यांकाइअधकारछे  
 नहीअनेतेनारेहेवासनाजेभुवन तेजबुद्धीपजेवडाछे, जाव  
 तअढीद्वीपजेवमावेतथाव्यतरनाभुवनतेभरंतक्षेत्रजेवमाछे  
 जावतजबुद्धीपजेवडावे तेमाहाउद्योतमंयछे । घटारामठा  
 राममार्हातेजनोपुंजमुकेबेइत्यादिक । एनोविस्तारंजीवा  
 निगमथकीजाणजो ।  
 शिष्यवाक्य—केस्वामि ; आतरेआतरेभुवनपतिनेविशे  
 महाउद्योतमहासुखवे । तोनर्कनापाथडानेविशे । अधारु  
 नेमहादूखतेशु नेपणपृथ्वितोरंननीवे अथवासोलकंर

लनापूर्वेतमेकह्याजयेः ॥ १ ॥  
 गुरुवाक्यः--हेभद्रजेदेवनाजेरहेवासनाजेउद्योत तथा  
 सुखतेसर्वेपुन्यं नाजोरथीभोगवेतेतथानर्कवालानेअंधकार  
 तथादूखतेसर्वपापनाजोरथीछे, जेमकोइएकघरनेविशेहे  
 ठेउपरतेनाउपरएमअतेकलोकवसेवे तेसर्वेनेसुखदूखतो  
 पोतानांपुन्यपापनाउदेप्रमाणेमलेछे, तथाजग्यानीजेशो  
 नातेपणपुन्यपापप्रमाणेवे तथातेजेकहु, जेरत्ननीपृथ्वि  
 तथारत्ननाकडतेनुएमछेके, ज्यानरियानोरेवासछे, त्यां  
 तोउपरखरपृथ्विसमज्यामाआवेछे, माटेत्यांउद्योतनथी,  
 तेनोविस्तारपनवणां, तथाजीवाभिगमथकीजाणजो, हवे  
 त्रिछांलोकतो, अधिकारंकहियेछिये, त्यांप्रथमजंबुद्वीपए  
 कलाखजोजनलावोपहोलोछे, तेसर्वेद्वीपंसमुद्रएनेवीटी  
 नेरह्याछे तेनामध्यभागनेविशेनेरुपर्वतवे, तेएकलाखजो  
 जननोउद्योछे, दशहजारजोजनलावोपहोलोवे, तेनीपूर्व  
 पश्चिमेमहाविदेहनीसोलसोलवजेवे, वेमलीनेवत्रिशवजे  
 वे, देवकुरुउत्तरकुरुआदेदेइने, छक्षेत्रजुगलीयानावे, तथा  
 अरतअइस्वरतक्षेत्रवे, तेकर्मभुमिनाछे, तेसर्वेउत्तरदक्षिणे  
 वे, तेसर्वेक्षेत्रथकीमेरुउत्तरदिशामाछे, तथाछपनअतरद्वी  
 पछे, तेसर्वेद्वीपोनेफरतीजगतिवे, तथाजंबुद्वीपनेजगतिनो  
 कोटवे तेनेचारंदरवाजोछे, तथाउत्तरकुरुनेविशे, सुदर्शन  
 नामाजबुव्रक्षवे इत्यादिकविचार, सर्वजंबुद्वीपपनतीथकी

जाणवो तेनेफरतो लवणसमुद्र जाणवो तेबेलाखजो जन  
 नो जाणवो तेमापतालकलसाठे तेमध्येथकीपाणीउछ  
 लेठे तेनीभरतीउठथायठे तेनुपाणीखारुछे तेनेपणफ  
 रतीजगतिछे तेनीपरधीसोललाखजो जनमाठेरीछे तेनी  
 फरतोधातकीखडछे तेनेविशेजंबुद्धीपकरता बमणाक्षेत्र  
 तथाबमणीरीतसर्वेजाणवी एटलोविशेष जेत्यानाबेएमेरु  
 चोरासीहजारजो जनउचाठे तथाबेइखुकालपर्वतछे तथा  
 धावडीनुब्रक्षछेतथाफरतीजगतिवेवाकीसर्वेजबुद्धीपनीरीते  
 जाणवु. तेद्धीपचारलाखजो जनपोहोलोछे ते नीपरधीएकता  
 लीसलाखजो जनझाझेरीछे तेनेफरतो कालोदधीनामसमु  
 द्रछे तेनुपाणीकालेवरणेछे नेपाणीसरखुपाणीमीठुछे तेने  
 पणफरतीजगतीछे आठलाखजो जनपोहोलोछे तेनीपर  
 धीएकाणुलाखजो जनझाझेरीछे तेनेफरतो पुखरवरनामा  
 द्वीपछे तेनामध्यभागनेविपे मानुखोतरपर्वतवलीयाकारे  
 पड्योठे तेनीमाहेलीकोरेश्रमधोजेद्वीप तेमध्येसर्वधातकी  
 खंडनीपेरेसमजीलेवू परतूखेतरधातकीखंडनाकरताएब  
 मणोमोठोठे एअदीद्वीपनीमाहेलीकोरेमनूप्यनोरेहेवास  
 ठे तथामनूप्यनुंजन्ममरणपणएअदीद्वीपनीमाहेलीकोरे  
 ठेतथातीर्थकरकेवलीगणधरआचारजउपाध्यायसाधूतेध  
 र्मदेवतातथादेवार्धीदेवतेअदीद्वीपनीमाहेलीकोरेजठेतथा  
 अदीद्वीपनीबाहारनीकोरेदेवतात्रीजचनोरेहेवासछे तेए

क एकद्वीपथकीसमुद्रबमणोएमअनुक्रमेश्रसंख्याताद्वीपस  
मुद्रमुकताथकाछेलोसभुरमणनामाद्वीपश्रावे ते पाराज  
पोहोलोवे तेथकीसंभुरमणनामासमुद्रबमणोपोहोलोछेए  
टलेअडधाराजमांछे तथाअढीद्वीपनेविपे जेचंद्रमासुर्यग्र  
हनक्षेत्रतारासदायफर्याकरेवेतेथीदिवसरात्रनुमानबंधाय  
वे तेथीसमयखेतरकहीयेछीये तथाअढीद्वीपवाहारजेचंद्र  
मासुरजग्रहक्षेत्रतारावेसर्वस्थीरंजाववे ज्यांसुरजछेत्यांस  
दायदिवसरेहेवे चंद्रमावेत्यासदायरात्ररेहेवे तथाचंद्रमा  
सुरजनंपचासहजारजोजननुंआतरुरेहेवे एटलेश्रेणीबंध  
रेहेवे एमअसंख्याताद्वीपसमुद्रनुंजाणवु.

शिष्यवाक्य—स्वामीतेअसंख्याताकेटलाहशे.

गुरुवाक्य—अढीसागरोपमनाजेटलासमयंतटलाएद्वी  
पसमुद्रवेतेनोविस्तारअधिकारजिवाजिगमथकीजाणजो  
एटलेतरिछालोकनोअधिकारकह्यो. हवेउरधलोकनोक  
हियेबिये त्यांपहेलुदेवलोक सुधर्मनामावे त्यांबत्रीशला  
खवेमानवे सर्वैरतमयछे तेथकीउत्तरनीदशे बरोबरइ  
शानदेवलोकछे तेनेविशेश्रठाविशलाखवेमानछे तेनाइं  
द्रनुनामदेवलोकनेनामेसमजिलेवुसर्वेनेविशेतेवेदेवलोक  
लगडीनेआकारेछे तेनाउपरेसनंतकुमारनामा देवलोक  
दक्षणादिशाएवे तेनेविशेबांरलाखविमानवे तेनेविशेदेव  
गनानुंउपजवुंहोयनहि तथाआगलनादेवलोकमांपणउ

वहारथकोतपक्रिया कष्टचारीत्रपालेछे तेजिवनेहजुसुधी  
 समकितपणप्रगट्युनथीनेमिथ्याद्रष्टीछेतेकोइभवीछेअने  
 कोइअभवीछे तेसर्वेएवाव्यवहारकष्टकी नवग्रीविक  
 सुधीजायपण कांइतेनाआत्मानुकल्याणथायनहि तेज  
 वतोअनेतोकालसंसारमारखडवाना जाणवा माटेतेने  
 व्यवहारचारित्र्योपाकहिये तथानिश्चेचारित्र्योपा पाचअ  
 नुतरविमानतथासिधपणजाय हवेतेचउद्वराजलोकउंच  
 पणवे तेमध्येएकराजलावापहोलापणो चउद्वराजसुधीति  
 नेत्रशनाडीकहिये परतुसिधसलाएगएथके पिस्तालीस  
 लाखजोजनलांवीपहोलीछे एजत्रसनाडीनेविशेजत्रसे  
 जिववे बाकीसर्वेलोकनेविशे पांचथावरभरेलाछे तेमाटे  
 हेचेतनएजलोकनेविशे कोइआकाशपरदेश तेज-ममर  
 णकरपाविनावेमथ्यानथी.

शिष्यवाक्य—सर्वलोककहेतां सिद्धपणभेगाआव्यातो  
 शुसिधनाभेगाविजाजिववे.

गुरुवाक्य—सिधनाभेगापाचेस्थावरसुक्ष्मतयावादरवा  
 युकायल्यावे तेमध्येचारस्थावरतोअसंख्यातावेअनेसुक्ष्म  
 वनरूपतितेनीगोदकहिये तेजिवअनताछे.

शिष्यवाक्य—तेजीवसिद्धक्षेत्रमारह्यावे तेनेकाइसिद्ध  
 नासुखनोभागआवतोहशे अथवाकाइसिद्धनाजीवनेए  
 बाधापीडाकरताहशे

गुरुवाक्य-सिद्धनासुखनो जागएनेआवेनही तेमकांड  
 एसिद्धनाजीवनेबाधापीडाकरेनही जथाद्रष्टांत जेमचंद्र  
 मानुंअजवालुठे तेअजवालानुंसुखकांडवेआंखेअंधछेतेने  
 होयनही तेमतेअधकांडचंद्रमानांअजवालानेबाधापीडा  
 करीशकतो नथी तेमतेजीवरह्याठे तेआपआपणाकरमने  
 वशहूखपीडामारेहेठे तेअधरुपजाणवा तेनेसिद्धनासुख  
 नो जागकथायकीहोय तथासिद्धजीवनीराकारपोताना  
 स्वरुपरमणीछे तेनेएबाधापीडाकरवासमर्थकेमथाय ते  
 अजवालारुपठे हेचेतनएवोजेकोडलोक तेनेविशेतुंअनत  
 कालपरीब्रह्मणाकरेठे तोहवेतुएवुंलोकनुंस्वरुपजाणीनेह  
 जुतुएलोकथीअलगोथवाकेमइच्छतो नथीजोतुसमज्योही  
 यतोएलोकथीउदाशयइने पोतानास्वपरुनीउलखाणकर  
 एजतनेश्रेयकारीठे एयीजतारीमुक्तीठे एवीरीतेलोकस्व  
 रुपजावनाजाववी.

हवेअगीयारमी बोधदूलभभावना कहेतांबोधवीजनुं  
 पांमवुं तेघणमुडकलठेतेकाइसर्वगतीनेविशे पामवुंथतुन  
 धीतेठेकाणावतावीवेछीये जेपाचरुथावरसुक्ष्मवादरनेवि  
 पेतोअव्यक्तवपणुंछे तथाविगलेद्रीनेविशेषणअव्यक्तव  
 जेवुजठे जेनेविपेमनतथाओतइंद्रीठेजनही तोधर्मनुंसां  
 भलवुअनेविचारवुंशायकीकरे तथात्रीजंचपंचंद्रीनेविपेछ  
 मुर्धममांतोधर्मठेजनही तथागर्जजनेशास्त्रवालालखेठेके



समकीतमुलश्रगीय.रव्रतहोय तेहशंतारेकेहेताहउ परं  
 तुहालनासमानेविपेतोकाइडीठामांआवतु नथी अनेतेजी  
 वनेतोबेदननेडन मारकुट भुखतरश ताहामनमको एमदू  
 खसहेताजदीनजायछे तथानारकीनेविपेतोगुरुनीजोग  
 वाइवेजनही तोएजीवधर्मशानुपामे तथाएजीवछेदननेड  
 ननामाहाआकरादूख वेठनाथकांविचरेछे समयमात्रनुसु  
 खतोवेनही तोधमेशायकीपामे तथादेवगतोनेविपेपणचा  
 रीत्रधर्मनीशास्त्रपणनापाडेवे तथाश्रुतधर्महशेपणकोइडे  
 वनेहशे परतुघणादेवतापोतानाविषयसुखमांजभवहारी  
 जायवे तथाजेअकर्मभुमीतथाअतरद्वीपनामनुपनेतोधर्म  
 वेजनही तथाजेकर्मभुमीनाक्षेत्र एकसोसीतेरविजयवेते  
 अकेकीविजयमा बत्रीसबत्रीसहजारदेशवे तेमध्येएकत्री  
 सहजारनवसेमामीचुवोत्तेरदेशतोअनारजवे तेमांकोइजी  
 वधर्मपामे नाकेहेवायनही परतुबोहोलताएतोनाजपामे  
 तथाजेसामीपचविस देशआरजछे तेमापणवाघरीजील  
 कोली प्रमुखजीवअनारजघणावसेवे अनेआरजजीवंतो  
 घणाथोमावे तेनेपणसुगुरुनीजोगवाइघणीमूडकेलवे शा  
 माटेकेपृथ्वीउपरपाखइधर्मघणुप्रवर्तेछेअनेजीनधर्मथोडू  
 प्रवर्तेवे तेजीनधर्मनेविपे पणपाखडीभेखधारीघणादीसे  
 वेजेआरंभपरीग्रहमाडुव्यापम्यावे अनेजेवीतरागजाखी  
 तवस्तुधर्मनीउलखाणकरावनाराएवाजे सुगुरुतेतोकाइ

कटीसेछे अहीयाकोइककेहेशेकेएकवीसहजारवरससुधी  
 जगवाननुंधर्मचालशे तेअमथकीचालशेएवुंकेहेशे तेमा  
 हामीथ्यात्वीठे नेजगवाननामारगनाचोरछे गामाटेजेज  
 गदानेआरंभपरीग्रहवालानेसाधुकह्यानथी तोतेथकीध  
 र्मशानुरेहे धर्मतोसाधुमुनीराजथकीजरहेहेशे.

शिष्यवाक्य—स्वामीतमेप्रथमजे क्रियाव्यवहारपाले  
 आरंभपरीग्रहथकीवेगलारहे तेनेतोतमेसाधुपणानीना  
 पाडीहतीतोहवे कयासाधुमुनीराजथकीधर्मरहेशे.

गुरुवाक्य—हेभद्रअमेजेनापामी तेज्ञानहिणजेखोटोक्रि  
 याआडंबरकरीनेचाले तेनीअमेनापाडीहती तेथीसुम  
 तीग्रंथनेविशे सिधसेनदेवाकरएवुकहीगयाठे तथाश्रीज  
 गवतीजिनेविशे शुधर्मास्वामीएमकहीगयाछे कहयुंछेजे  
 गितार्थहोयनेनेसाधुकहिये अथवातेगितार्थनाकहेणप्रमा  
 णंविचरेतेनेसाधुकहिये तेविनानजेटलाविचरेठे तेधणी  
 कष्टक्रियातपलुखागपणुराखेठे तोचपणतेनेसाधुकहियेन  
 हिएश्रीविरनामुखनावचनछे तेवारेकोइकहेशेजेआजन  
 कालेवेअक्षरनाजाणपणितपणधरावता एवानेखधारीप  
 णछे तेनेसाधुकहियेकेनाकहिये तेनोउत्तरजेएवावेअक्षर  
 नाजाणथइने जेआरंभपरीग्रहथकीअलगानथया तेने  
 महामिथ्यात्वीकहिये नेमहाअज्ञानीकहिये तेनुंजएयूसर्व  
 धुलमागयुंतेकांडलेखेआव्युंनहि तेश्रीउतराधेनजिता

अगीयारमावहू श्रतनामा अभ्ययननेविशे एवं कह्युंछे तथा  
 श्रीआचारगजिमा तेनीसाथेजावतठलेजवासुधीनीता  
 पानीठे तथा श्रीआवशकनीरजुक्तिनेविशे श्रीजद्रवाहूसा  
 भिएएवंकह्युंछे केजे एनेवादेते श्रनंताजव 'ससारमाख  
 डेतथा श्रीजगवतीजिना आठमासतकनेविशे एनेजेआ  
 हारपाणी आपेते श्रनंताजवरखडे तेमजश्रावकनाप्रतीक  
 मणानेविशे एनेआहारपाणीआपे तेनीआलीयएगुरुपा  
 सेमागीछे एमजावतघणाशास्त्रनेविशे एनेनिशेध्यावेमाटे  
 एनेसाधुनकहिये तथाप्रत्यक्षपणेसमजोके 'जेपुरुपपैते  
 कुबोजाणेठे तेधणीकांडचालतोकुवामांपडीजाय' जेनजा  
 णेतेपडे जाणेतेपमेनहि तेमजेपुरुपनेज्ञाननुंजाणपणुंही  
 यतोतेपुरुपश्रवरतनेकेमशेवे 'माटेएशेववावालापुरुपपां  
 सेज्ञानछे तेपणश्रज्ञानठे तेवाजेनेखधारीपाखमीतेनाज  
 रूयाधर्ममार्गटपरचालेतेनेपणकांडधर्मपाम्योकाहियेनहि  
 तेअधिकारश्रीमहानिसीथसुत्रने चोथेअध्येयने नागील  
 सोमलनोअधिकारछे तेजोजोमाटेसुगुरुविनाधर्महोयेन  
 हितेसुगुरु तेवहूश्रुतज्ञानीपुरुप आरभपरीग्रहथकीवेग  
 लाहोयतेनेगुसुरुकहिये तेसुगुरुसदायकालसर्वेक्षेत्रेना  
 होयएतोकोइकक्षेत्रेकोइक अवसरेमले तेचोथेआरेपण  
 कोइकअवसरेमलता तेअधिकारमहानिसीथसुत्रथकी  
 जाणजो एवाकदापीकोइअवसरे 'सुगुरुनुंमलवुंथायेंतो

स्यांतेरकाठीयाआवीनेनमे तेथकीगुरुदरशनकरीशकेन  
हि तोवाणीसांभलवीतोक्याथकीकटापीकोइजिवजवरो  
थइने तेरकाठीआने दुरकरीनेगुरुपासेजायतोपणशण  
गरादिकरसकथानालोलपीथका धर्मपामीशकेनहि अ  
थवाकेटलाकजिववेठाथकाउघे अथवाकेटलाकजिवक  
थामाचारप्रकारनीवारतालेइवेसे तेथकीधर्मसांजलेजन  
हि एमकरतांएसर्वकारणने दूरकरीनेधर्मसांजलवावेसे  
तोपुर्वेकुगुरुस्वदर्शनना अथवाअनदर्शनना तेणेजेभर  
मावेलाठेनेथीतेनेसुगुरुनुंवचनरुचेनहिजथाद्रष्टाते एकन  
गरनेविशे राजामहाज्जक्तिवान अनेपमीतनावचननोलो  
लपीअनेस्वभावेज्जद्रीकहतोतेजेजेपडीतलोकआवे तेने  
बडेआडंबरथीहाथीउपर वेसाडीनेघेरतेडीलावितेनेपांच  
रात्रीराखीशेवाज्जक्तिकरीधर्मतेनीपासेसांभलीने तेनेपांच  
रुपैयानोमालदेइने भलीरीतेविदायकरीआवे . एमजेजे  
पंडितआवितेनेएमकरे तेमाएकब्राह्मणपंडितआठयोतेस्व  
जावेकपटीठे तेमनमाएवुंविचारतोहूवोजेआराजाबहुभ  
क्तिवाननेबहुढानेश्वराठे तोएराजामहारेवशरहेतोघणु  
सारुतोहूजोएनेविलोमुकीनेघेरजइशतोएराजाज्जद्रीकठे  
तेविजानेवशथशेएमविचारीत्यांथकीजायनहि एमकरतां  
केटलांकवर्षवहिगयां तेवारेमनमांविचार्युंकेआपणेग्रह  
स्तीठरचातेघेरगयाविनातोचालेनहि माटेहवेघेरतोजबु

पणराजाआपणेशरहेएवुकरीनेजवु एवुविचारीराजापा  
 सेआज्ञामागीतेवारैराजाएकहयुकेसुखेथकीपधारो हूंतम  
 नेशक्तिसारुविदायगिरीकरु तेवारैब्राह्मणेएवातकबुलक  
 रीराजायेविदायगिरीकरी तेवारैतेपडितराजाप्रतेकहतो  
 हवोजेतुउणोजडीकडे अनेघणोदानेश्वरीठि पणतनेहजु  
 पंमितनीपरीक्षानथी पणहूतनेशास्त्रमाकोइकरीतनाअर्थ  
 छेतेदेखाडुपणताहारापेटमारहेतो कोइपासेकहेतोतेदेखा  
 डवाजेवुनथी तेवारैराजाबोल्योजेआवडीवधीसर्वराजनी  
 वारतामाहारापेटमारहेठे तोशास्त्रनीवारताहूकोइनेकेम  
 कहीशमाटेमनेक्रपाकरीनेदेखामो तेवारैपडितनामुकरग  
 योकेएवाततनेकहेवायनहिअनेतजथकीजिरवायपणनहि  
 एमकहीनेराजानेघणोमोहचडाव्यो तेवारैराजाघणोआ  
 ग्रहकरीनेवलग्योतेवारैतेपमिते, घणोबढोबस्तकरीनेरा  
 जानेगीतानीपाठदेखाड्यो तेमध्येएकशब्दनोअर्थपूर्वेजे  
 थतोहतोअनेशब्दनोअर्थपणएजहतो तेकहीनेदेखाड्यो  
 अनेपछीकहयुकेआअर्थतोअमारेसर्वलोकनेसमजाववानो  
 ठे पणपमितलोकनासमज्यामाएशब्दनोअर्थएवोछेकेसीं  
 केवेठिदेवीचणाचवेएवोअर्थपडितोनाजाणवामाछे, बिजा  
 ताजाएयामानथीअनेपडितविजानेजणावतापणनथी प  
 णतारीघणीभक्तिजाणीनेमेतनेएअर्थकह्योछे पणतुकोइ  
 नीपासेकहीशनहिअनेएशब्दनोएजअर्थकरेतेनेपमितजा

एजेविजानेपमितीजाणीशनहि.

तेपडीतएवुसलघालीनेपोतानेधंरगयो त्यारपछीजेजे  
 पंमितीआवेतेनेराजाचहूआम्रवरथीलावीने तेगीतानापा  
 ठनाशब्दनोअर्थकरावे तेएनेपुर्वेपेलोपमितीसलघालीने  
 गयो तेअर्थतोकोइथकीथायनही त्यारेतेपडीतोनेनीजरं  
 ठीअपमानकरीनेकाढे तेवातदेशमांप्रसिद्धथइजेराजापुर्वे  
 पडीतोनुंबहुमानपुजाकरता नेहमणांतोसर्वपंमितीनेनीभ  
 रंवेतेवातकाइमीरमाएकपंमितीसर्वोपरीशास्त्रनाजाणसर  
 स्वतीनोउपाशक तेणेसाजलीनेएवोविचारथयोजे हूंजड  
 नेराजानेठेकाणपाडु तेवारैरातनेसमेसरस्वतीएआवीने.  
 तेपंमितीनेएवुकह्युजे एनेआगलपंमितीसलदेइगयोते ते  
 शब्दनाअर्थमातेवातकइहेनहीतोतेशब्दनाअर्थतुंक्यांयकी  
 करीश केसीकेवेठिदेवीचणाचावे माटेनुपणजडनेअपमा  
 नपामीश तेवारैतेपडीतेदेवीनेकह्यु एजकारणजेदेवीनुं  
 ठेतेवारैदेवीएकह्युएजकारणछे तेवारैपडीनेकह्युदेवीने  
 वांतजाणीवे तोठेकाणपाडीनेआवीश तेवारैनेमितीने  
 गरेआव्यो तेपंमितीवडोनामीचोदेशचावांछे तेवंगनाव  
 मेआम्रवरैकरीनेलाव्यो नेतेगीतानोपाठयाछेमीद्रोडाआ  
 गलधर्योतेवारैमुलअर्थहतोतेकर्योतेवारैराजाबाल्योकेवी  
 जोकाइअर्थएतोहंतेवारैपंमितीबाल्यांहाते तेवारैपंमितीने  
 वीरीतेसातआठअर्थएशब्दनाकरयातोपणुगजानुन

इरीइयुनही तेवारेपडीतवोल्थोके जगदनाशने  
 पणंऐनोमुलअर्थएकछे तेतोअमेपडीतलोककोइ  
 तानथी ते तेराजाय तेरा करिनेवलजजे  
 मनेजरुरदेखाडवोपडशे चालोहूंएकातआवु  
 एकातजइ कोइनेकेहेवुनही बोवढोवस्तकर  
 जे सीकेवेठोदेवीचणाचावे ते तेराज नहृखुशी  
 नेकेहेवालाग्योजेपुर्वेफलाणास्वामीआव्याहता  
 र्थकयोहतो केनमेआजएअर्थकयो तेवारेपडीते  
 जणएअर्थजाणतानथी ते तेपडीतहो तेज  
 पछीपडीतमनमाविचारवालाग्योजे मुखा  
 सलघालीगयो तेअर्थपमीतक्याथकीलावे  
 काहाडवोएमविचारिराजानेव्याकरण  
 कौमोदीसुधीभणाव्यु छी तेताना जनेराज  
 करावामाडयो तेव ते ते ते ते ते ते  
 तेकल्पीत तेहते ते तेवारेपडीतेकए  
 तुन ते ते ते ते ते ते ते ते ते ते ते ते  
 जेहूकाचोछुतेतमेकोहोतेतेसत्यवे तेहू  
 थशेएममोहोमाहेविवादघणोथयो ते ते  
 जअर्थसत्यवे ते तेआटलावधपडीतोनुत्र  
 तेवारेराजावोल्थोजे स्व ते ते ते ते ते ते  
 नशुजाणु नेहवेतोतमेमने ते ते ते ते ते

मुतिपुद्गलछे नेदेवावालोतेपणपुद्गलछे एसर्वकायाथकीज  
थायतथापुजाजेकरवीतेपणकायाथकीथाय. तेमवरतनेम  
तपेप्रमुखसर्वेकायाथकी निपजेठे तेकांइआत्माथकी नि  
पजतुनथी.

शिष्यवाक्य--कायाथकीनिपजेठेपणकांइआत्मानाउप  
योगविनानिपजेठे.

गुरुवाक्य--जेतेआत्मानोउपयोगमान्यो. तेतारीमोटी  
भुल्यछेशामाटेजेआहिंयांतोमननाप्रणामभेगाजलीनेका  
रजकरेठे.

शिष्यवाक्य--मननीनेआत्मानीजुदीकेमखबरपमेजुजा  
णीयिकेएमननाप्रणामछे केआत्मानोउपयोगछेअमेवेउने  
एकजुजाणीएठिए.

गुरुवाक्य--अहोअद्वैतजिसुधीतनेमनआत्मानीजुदीख  
बरपमीनथी तोतुधर्मनीवारताशानीपुठेठेनेतुंधर्मसुंपाम्यो  
जेजन्चेतननोविभागयोनहित्यांसुधिसमकितक्यांछेअ  
नेसंमकितविनाधर्मनाहोय अनेधर्मविनामुक्तिशानीमले  
माटेतुपहेलीजडचेतननोविभागनीसमजकर.

शिष्यवाक्य--स्वामीक्रपाकरीनेमनेनेदज्ञानदेखाडोजे  
थीहुंआत्मानुंअनेमनेनेस्वरूपजुदुजुदुजाणु.

गुरुवाक्य--हेदेवाणुप्रियनिद्रावीकथा प्रमादतजिनेए  
कायहचित्तथइनेतुसांजल जेआत्माछेतेउपयोगग्राहीठेअ



નેમતઁ તેપ્રણામગ્રાહીતિ શાસ્ત્રમાણ્વુકહ્યુછેકે ક્રિયાએક  
 મંપ્રણામેવથ અનેઉપયોગેધર્મ એટલેક્રિયાછેતેકર્મનીસેચ  
 નારીતિ અનેપ્રણામછેતેકર્મનાંવધપામ્તાતિ માટેએવેઉતજ  
 વાજોગિછે નેએકઉપયોગછે તેથકીધર્મનિપજેતેઉપયોગજે  
 છેતેસ્વરૂપનેવિશે જેરમણતાકરવી તેનેઉપયોગકહિયેઅ  
 નેજેપરજાવમાપેસવુ તેનેપ્રણામકહિયે એવીરીતેઉપયોગ  
 નીનેપ્રણામનીવેચણજાણવી.

હવેજેપુદ્ગલનોસ્વભાવતેપુદ્ગલનુધર્મકર્તાછે તેથકીકાઙ  
 આત્માનુધર્મધાયનહિ શામાટેકેપુર્વજેદયાપ્રમુખભેદક  
 હ્યાતેસર્વેપુદ્ગલથકીધાય ત્યારેતેપુદ્ગલકીધર્મકહિયે અને  
 સર્વેધર્મવાલાપોતપોતાનીપુષ્ટિકરેછે તેમનિશ્ચેમાએજમજ  
 મનીપુષ્ટિકરેઠે જેએપુરવલાજેદકહ્યા તેથકીશુયાયતેશુભ  
 કર્મઉપારજે તોશુભકર્મતેપણજડછે અનેઅશુભકર્મતેપણ  
 જમછેતોએજડેજડનાવશનોવધારોકરયો. પણકાઙઆ  
 ત્મગુણનોવધારોએથકીધાયનહિ આત્મગુણનોવધારોતો  
 પોતાનાઉપયોગમારહ્યાથકીજથાયપણપુદ્ગલનાકામોમા  
 આત્માનોઉપયોગહોયનહિતેનેધર્મીકેમકહિયે.

શિષ્યવાક્ય-જા. ૫૭ના  
 તમેનાપાડોછોપણતેરમાગુણત

नोउपयोगनथी शाद्रष्टातेकेजेम कोइपुरुपनेराजाएमार  
 वाकहाड्योतेपुरुपनेलाभ्वोखावाआपेठे तेनेकांइलाभ  
 वोखातालाडवामांएनुंचितवे तेनुंचिततोलाडवामांनथी  
 शामाटेकेतेनेतोमारवानोमहोटोजयछे तेमजेज्ञानीपुरुष  
 छेतेपुद्गलनांकामोकरेठे पणतेजेमपेलोपुरुपलाडवोखाय  
 तेवोरीतेकरेठे पेटमांसमजेकेएकांइमहारुनथी पणपुद्गल  
 नुधर्मउदेआव्युंतेरोक्थुरहेनहि तेभोगवीनेखेरवेपणपोते  
 भेगोभलेनहि पोतेपोतानाआत्मानाउपयोगमांजरहे जे  
 मकोइस्त्रीनेपरायाओकरानेधवराववाने महिनोठरावीने  
 लाव्याछे पणतेनाचितनोआणदपोतानाछोकरानेधवडा  
 ववामाठे अनेपानोपणपोतानाछोकरानेदेखीनेआवेनेते  
 छोकरानेजेधवमावे तेमनमाविचारेजेपेलानोमहीनोखाइ  
 येछीये तेधवराव्यावगरचालेनहि परंतुतेमांकाइचितनो  
 आणदपणनावे तेमकाइपानोपणनावे तेमअहियांज्ञानी  
 पुरुपनेसमजवोकेपुद्गलनाकामोमां जेगोनाभले हवेजेपु  
 द्गलीकधर्मनाप्रणामउठावीने आत्मीकधर्मनोउपयोगक  
 रवो तेज्ञानदर्शनचारीत्रिरत्नत्रीयनुसाधवु अनेतेनास्वरु  
 पनेविशे रमवुंतेनेधर्मजावनाकहिये नेमाजेव्यवहारधर्म  
 नीभावनाजाववी तेथकीशुचिआश्रवनउपारजकुंथायतेथ  
 कीआत्माशुचिकर्मबांधे आत्माजारेथायपणकांइआत्मा  
 नुकारजसिधथायनहि अनेनिश्चेस्वरुपनीजेभावनाभाव

वीतिथकी जावसंवरथाय अने आत्मानेन वां कर्म आवतां री  
के अने तेना आत्मानुंकार जसिद्ध थाय एवा तमास देहराखवो  
नहि एटले जावना उवारे कहि

हवे पाच चारी त्रकहिये छिये प्रथम समाधिक चारी त्रकहेतां  
जे स्वसमाधि एटले आत्मस्वरूपने विशेष रमणता तेने स्वस  
माधिकहिये

शिष्यवाक्य—समाधी तो घणी करीत थी जोगनुसाधन था  
यत्पारे समाधी तो थाय ठे अने तमे तो आत्माने रमणता ने स  
माधी कहोगे.

गुरुवाक्य—जे जोगसाधन थकी समाधी चढावठे अने खट  
चक्रनुसाधन करेठे अने रुचके कुंजक प्रमुख समाधी तथा सुर  
स्वास रुधीने समाधी चढाववी तेने हठ समाधी कहिये तेमा  
मेहेनत एक करो मरुपैयानी छे अने प्राप्ती एक कोडी नीछेक  
दापिको इकहेशे के तमेन थी मानता थी एव कहोगे तेने क  
हिये के भाइ अमार तो एवा तनो राग द्वेष छे जनहि अने अमा  
र मते पण अमे कहें तो न थी उमिया स्वामी कृत गुण स्थान क  
कर मारी हय थछे तेनी टिकाने विशेष नो विस्तार घणोठे ते  
जो शो तो तमने समज पडशे माटे सहे ज समाधीनु साधन क  
रवुं सहे ज तो आत्मानुं स्वरूप जछे तेनी जे स्वभावे रमणता  
थाय तेने सहे ज समाधी कहिये एवा जे समाधी वत तेने सामा  
यक कहिये ते समायक नावे भेद सर्व विरती समायक तेसा

धुतेसदायएवीसमाधीमाजरमणताकरे नेदेशविरतीसमा  
 यकंकहेताश्रावकतेनेसमाधीमानिरंतररहीनाशके शामा  
 टेकेगृहस्थीतेथीनिरंतररमणताथायनहि तथागुणठाणुप  
 एपाचमुतेथीतेप्रमाणेसमाधीहोय तेनेसमायकचारीत्रक  
 हिये तथाबिजुठेदोपस्थापननामाचारीत्रकहियेछियेजेपु  
 र्वेकहीजेसमाधीतेथकीभ्रष्टथाय शार्थीकेपुर्व क्रतकर्मना  
 जोरथकीप्रणामनीयाराफरे तेथीकरिनेआश्रवजावमाजि  
 वजायतेवारसमाधीगुणनरहे त्वारेसमायकचारीत्रपण  
 नारहयु तेपाछोपोतानाआत्मानोउपयोगदेइनेपुर्वकृतक  
 र्मनेछेदीने पाछोचारीत्रस्थापनकरेएटलेज्ञानदर्शननेविषे  
 अखरमणकरेतेनेदोस्थापनचारीत्रकहिये-

हवेत्रीजुपरिहारविशुद्धचारित्रकहियेछिये एटलेअशु  
 द्धनोपरिहार तेनोआत्माविशुद्धथाय एटलेअशुद्धजेराग  
 द्वेषनाप्रणामनेघटाडवुं उपाधीनेघटाडवु अनेपोतानास्व  
 रुपनुंनिर्मलपणुंकरवु तेनिर्मलशार्थकीथाय केभेदज्ञान  
 प्रथमप्रगटे त्वारेआत्मानिर्मलथाय एटलेभेदज्ञानतेशु  
 कहिये जडचेतननीवेहेचणतेनेभेदज्ञानकहिये तेसक्षेपथ  
 कीदेखाडियेछिये जेरुपीसाकाररागद्वेष क्रोधमानमाया  
 लोभकामविकारइत्यादिक जेवस्तुछे तेसर्वजडनाघरनी  
 छे तथाज्ञानदर्शनचारित्रविरजआदिदेइनेजेवस्तुछे तेस  
 र्वचेतननाघरनीछे एमसमजीनेजडनीविस्तुनेदूरकरे ने

આત્માનીવસ્તુપોતાનીજાણીને તેનેવિપેરમણતાકરે એટ  
 લેજડનોપરિહારઆત્માનુવિશુદ્ધતાપણું તેનુનામપરિહાર  
 વિશુદ્ધચારિત્રકહિયે તથાચોથું સુક્ષ્મસંપરાયચારિત્રતેશ્રે  
 ãીગતેઢે એટલેજેજીવશ્રેણીઆરાંહે તેશ્રેણીવિપ્રકારનીછે  
 એકઉપસમશ્રેણી વીજીક્ષપકશ્રેણી ઉપસમશ્રેણીનોકર  
 નારોજીવપાઠાપડે અનેક્ષપકશ્રેણીનોકરનારો જીવપાઠા  
 નાપડે શાદ્રઠાતેકેજેમચુલાનાં તથાવીજિજગ્યોયેઅગ્નિઢે  
 તેઅગ્નિનેએકપુરુષતો રાખપ્રમુખનાસ્ત્રીનેદાવે તેકોઈના  
 જીવામાનાઆવે કેઅહિંયાંઅગ્નિઢેએવીકરે અનેએકપુરુષ  
 પાણીનાસ્ત્રીનેતેઅગ્નિનોક્ષયકરે તેવેમાંકોનીઅગ્નિપ્રગટથા  
 ય કેજેધણીયેપાણીનાસ્ત્રીનેઅગ્નિનોક્ષયકસ્થોછે તેનેકાંઈ  
 અગ્નિપ્રગટથવાનીછેનહિ અનેજેધણીયે રાખનાંસ્ત્રીનેદા  
 વીછે તેનેએઅગ્નિતોપ્રગટથાશેજ તેદ્રઠાતેઅહિંયાવેશ્રેણીનુ  
 સ્વરુપજાણવું જેજિવઆઠમુંઅપૂર્ણ કરણનામાગુણઠાણે  
 જાય ત્યાથીશ્રેણીવિધાય જ્યાંસુધીસાતમાગુણઠાણામાહો  
 ય ત્યાસુધીકાંઈશ્રેણીપ્રાપ્તિથાયનહિ હવેજેઆઠમાનેવિશે  
 શ્રેણીછે તેશ્રેણીકહેતાંમુક્તિપુરનેવિપે જવાનોરસ્તોતે ત્યાં  
 થીબેરસ્તાઢે એકજમણો અનેએકમાવો તેજમણેરસ્તેચડે  
 તોતેધણીતેનગરેપહોચે તથામાબેરસ્તેચડે તેરસ્તોતોરાન  
 નોઢે તેકેટલીકજોયસુધીચાલે પઠીઆગલતોમાર્ગઢેનહિ  
 તેવારેપાછુકરીનેમુલઠેકાણેઆવવુપડે એટલેઅહિંયાંજેજ

मणोरस्तोतेक्षपकश्रेणीकहिये डोबोरस्तोतेउपसमश्रेणी  
 कहिये जेधणीउपसमश्रेणीयेचडेतेवणी कखायतथामि  
 थ्यातनेदावतोचाल्योजाय नैजेक्षपकश्रेणीयेचडे तेमि  
 श्वातप्रमुखनोक्षयकरतोचाल्योजायतेक्षयनोकरनारोजा  
 वतकेवलपामीमाक्षेजाय अनेजेदावतोचाल्योजाय तेअ  
 गीयारमेगुणठाणसुधीजाय पणआगलरस्तोछे नहि  
 माटेतेनेपाछुफरवंपमे अयवाजोआवखुआविरह्यहोयतो  
 कालप्राप्तयाय हवेजेपाछोवले तेशाद्रिटातेकेजेमकोइप  
 खीनेपगेदोरीवांधीनेउराडेछे तपंखीजेटलीदोरीहोय ए  
 टलीभोथउडे पणतेथकीआगलजेवायनहि अनेतेदोरी  
 वालोदोरीखेचे एटलेठकाणेश्राववुपमे तेमउपसमश्रेणी  
 वालानेमोहनीकर्मनोनाशथेयीनेथी एतोउपसमावेलीछे  
 तेप्रकृतिपाछीप्रगटथइनै तेजिवनेअगियारमेगुणठाणैथी  
 पाछोखेचेएमजाणवु हवेतेवश्रेणीनेविषेसुक्ष्मसंपरायचा  
 रित्रछे तेनुंस्वरूपकिंचितदेखामियेछिये हवेतेआठमेगुण  
 ठाणेगयोथकोप्रथमहाशरतअरतभयेशाकंदूगंछा एख  
 टकनेखपावे तथाउपसमावे तेवारपछीनेवमेगुणठाणेसं  
 जलनी क्रोध मान भाया पुरुषवेद स्त्रीवेद नेपुंशकवेद  
 खपावे तथाउपसमावे तेवारदशमेगुणठाणेएकसंजलनी  
 लोअरहे पणतेलोअधन्यधान्यादिक जन्वस्तुनोनहोय  
 अत्यंतसुक्ष्मपोतानास्वरूपप्रप्तनोहोय तथाअगियारमे

गुणठाणे तेलोन्नतपसर्गयोगो होय अथवा पोताना स्वरूप  
नी प्राप्तिथवानो विचार मनमाथाय जेमारा आत्मानि मुक्ति  
करु एवो लोन्नथाय तो पाठो अगियार मेथी पडोने दशमे आवे  
शीष्यवाक्यः—स्वामी एकोइ परभावमा तो पेठो नथी.  
पोताना आत्मानि मुक्ति ताकता उलटो पाठो पड्यो एशु.

गुरुवाक्य—हे नद्रइहां आत्मानि मुक्ती वीचारी ते  
साची वात पण एनुनाम पण लोन्नके हे वाय अने लोन्नगे ते  
जडवे अने जडवे ते आत्माना गुणनो घात करतावे माटे एट  
लो एलोन्न समजुने न जोइये.

शीष्यवाक्य—स्वामी आत्मानि मुक्ती त्या नवीचारे तो  
त्या शुची चारता हशे.

गुरुवाक्य—हे देवाणु प्रिय त्या पोतानी परनी कशी खबर  
नथी त्या तो द्रव्य गुण परजाय भीन्न भीन्न नो खाकरे तथा गुण छे  
ते परजाय मासंक्रमावे अथवा द्रव्य मासक्रमावे अथवा  
गुण परजाय वने द्रव्य मासक्रमावे एवीरी ते त्यां भेद ज्ञान तो  
था जे दाने दज्ञान वे ते पोताना स्वरूप रमण जछे तेने सुक्ष्म  
सप्राय चारी त्रकही ए हवे पाच मुजथा क्षायक चारी त्रकही  
एगीये॥ एटले जथा क्षायक कहेता जथा रथ क्षय कर्यो ते जेणे  
मोहनी करमनो एटले पुरवे सुक्ष्म सप्राय चारी त्रने वीशे  
दसमे गुण ठाणे सुक्ष्मनो जेलो भ्ररह्यो हतो तेलो भ्रनो क्ष  
य कर्यो एटले संपुरण मोहनी कर्मनो क्षय थयो ते वारे ते जिव

क्षीणमोहीथयो हवेतेजिवनामननाप्रणामनोकलोलचमे  
 नहिशामाटेजेनदिरारुपमोहनीनोजेकेफहतो तेकेफना  
 जोरथीअनेकतुरंगउठताहता तेनोहनीकर्मनोक्षयथयोए  
 टलेधेलगामोहेथीगइ तेवारतेनोआत्माथीरजावथयोजेम  
 सरोवरनुपाणीवायुबंधथयेथके थीरजावरहेतेमएआत्मा  
 नोउपयोगथीरभावथयोएटलेजथार्थचारीत्रथयु एटलेक्षा  
 र्यककहेतांमोहनीनोक्षयकहिये थीरजावकहेताचारीत्रक  
 हिये तेजथार्थकहेता जेवुंसत्तागतनेविशेवस्तुपणेहतुतेवुं  
 जप्रगटपणथयुं तेवारतेनेएकत्वजावथयो जेमजलनीजे  
 सितलताअनेजलरसनोस्वाद अनेजलएत्रणेएकजछेर  
 सस्वादनेसितलतापणुतेकांइजलथकीजुदूनथी तेमजगु  
 णपरजायसहिततेजद्रव्यबे कटापीकोइअहियांकहेशेके  
 पाणीतोउनुपणहोय तेनेकहियेकेविभावथकीपाणीमांड  
 णतापेसेबे पणस्वभावथकीनथी जेअग्नीनाजोगथी  
 पाणीउण्णथाय पणअग्निथकीअलगुकरीये अनेघमीवे  
 थापएटलेसितपणुथाय तेमआपणोआत्माकखायादिक  
 नाजोगथकी कांभी क्रोधी मानी लोभी अनेकनामधरा  
 वेबेपणतेमोहनीकर्मनोनाशथयो तेवारस्वजाविकनीरवि  
 कल्पनिरउपाधीथीरप्रणामेजहोय एवंएनेदज्ञानत्यांप्र  
 गटेत्यांकांइआत्माअने आत्मानानुणपरजायजुदानथीए  
 टलेध्याताधेयध्यान एकत्वपणेभजे एटलेधेपदार्थपरमा



गुणठाणे तेलोन्नतपसमीगयोहोय अथवापोतानास्वरूप  
नीप्राप्तिथवानोविचारमनमायाय जेमाराआत्मानीमुक्ति  
करुएवोलोन्नथायतोपाठेअगियारमेथीपढीने दशमेआवे

शीष्यवाक्यः--स्वामीएकोइपरभावमांतोपेठोनथी  
पोतानाआत्मानीमुक्किताकताउलटोपाठेपढ्योएशु

गुरुवाक्य--हेजद्रइहा आत्मानीमुक्ती वीचारीते  
साचीवात. पणएनुनामपणलोन्नकेहेवायअनेलोन्नते  
जडवेअनेजडते आत्मानागुणनोघातकरतावे माटेएट  
लोएलोन्न समजुनेनजोइये

शीष्यवाक्यः--स्वामी आत्मानीमुक्कीत्यां नवीचारेतो  
त्याशुवीचारताहशेः

गुरुवाक्यः--हेदेवाणुप्रियत्यापोतानीपरनीकशीखवर  
नथीत्यातोद्रव्यगुणपरजायभीन्नभीन्ननोखाकरेतथांगुणछे  
तेपरजायमासक्रमावे अथवाद्वयमासक्रमावे अथवा  
गुणपरजायवनेद्रव्यमासक्रमावे एवीरीतित्याभेदज्ञानत  
थाभेदानेदज्ञानते तेपोतानास्वरूप रमणजछे तेनेसुक्ष्म  
सप्रायचारीत्रकहीए हवेपाचमुजथा क्षायकचारीत्रकही  
एवोये॥ एटलेजथाक्षायककहेताजथारथक्षयकयोहे जेणे  
मोहनीकरमनो एटलेपुरवेसुक्ष्म सपरायचार  
दसमेगुणठाणेसुक्ष्मनो जेलोभरह्योहतो तेलो  
यकरयोएटलेसपुरणमोहनीकर्मनोक्षयथयो ते

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

कनकावलीतपादीन ४३४ पयलोनादीन ६६ एवं  
मास १३ खीन १२ एक परवाडीन चार परवाडीये पांच  
परस नव मास नै अराड दीन

हंवे लघुमिहं कीर्डीत तपकहिये छीयं. प्रथम एक अपवास पारण वरो  
नैवे अपवास पछी एक अपवास पछी त्रण अपवास पछी बे अपवास पछी  
चार पछी त्रण पछी पांच पछी चार पछी छ पछी पांच पछी सात पछी छ प-  
छी आठ पछी सात पछी नव पछी आठ पछी नव पछी सात पछी आठ पछी  
छ पछी सात पछी पांच पछी छ पछी चार पछी पांच पछी त्रण पछी चार प-  
छी बे पछी त्रण पछी एक पछी बे पछी एक तेनो जंत्र.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

लघुसिहं कीर्डीत तपादीन १५४ पारणनादीन ३३ एक परवाडी चार  
परवाडीये पड़ने बे वरस एक मास नै बे दीन

हंवे रुद्रसिहं कीर्डीत तपकहिये छीयं. प्रथम एक उपवास पछी बे उप-  
वास पछी एक पछी त्रण पछी बे पछी चार पछी त्रण पछी पांच पछी चार  
पछी छ पछी पांच पछी सात पछी छ पछी आठ पछी सात पछी नव पछी  
आठ पछी दस पछी नव पछी अंगीयार पछी दस पछी बार पछी अंगीया-  
र पछी तेर पछी बार पछी चउद पछी तेर पछी पदर पछी चउद पछी सो-  
ल पछी पंदर पछी सोल पछी चउद पछी पंदर पछी तेर पछी चउद पछी  
बार पछी तेर पछी अंगीयार पछी बार पछी दस पछी अंगीयार पछी न-  
व पछी दस पछी आठ पछी नव पछी सात पछी आठ पछी छ पछी सात  
पछी पांच पछी छ पछी चार पछी पांच पछी त्रण पछी चार पछी बे प-  
छी त्रण पछी एक पछी बे पछी एक तेनो जंत्र.

पारणुपगेवेउपवास पगेपारणु पगेत्रणउपवासपठेआ  
 ठठठपगेएकउपवासथीमानीनेसोलउपवाससुधीचडे प  
 गेचोत्रीसछठकरे पाछासोलउपवासथी एकउपवाससु  
 धीउतरेपाछाआठठठकरे पछीअठमथीएकउपवाससुधी  
 उतरेएटले एकपरवामीथाय तेएकवरसत्रणमासत्रावीस  
 दिवशेएकपरवाडीपुरीथाय एवीचारपरवामीकरवीतेबि  
 जिपरवामीयेत्याविगेनावारे त्रिजिपरवामीयेपात्रनेलेप  
 लागेएवीवस्तुनावारे चौथीपरवामीयेआवेलकरे एवी  
 रीतेएरत्नावलीतप पांचवरसएकमासनेअठवीसदिवशे  
 एतपपुरीथाय तेएकपरवाडीयेअठासीपारणाआवे एम  
 चारपरवामीयेथइने त्रणसेनेवावनपारणाआवे तेनोजंत्र

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

द्वयेकनकाली तप कंदीयेछीये तेपुरवेजे रत्नावलीतप तेज प्रमा  
 णेकरवानो फकन फरक एटलोकेजेआठआठ ठठकहावेतेअठम  
 स्वाअनेचोत्रीसठठकहातेतअठमकरवा तेनीएक परवाडीये वरस  
 एक मास ५ पांच अने दिवस २२ बार चार परवाडीये यइने वर  
 ५ पांच मास एनव दीन अराड तेनोजंत्र

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

कनकायजीतपोदीन १५४ पाषाणानादीन २६ एवं  
 आस १७ रीत १२ एक परवाडीन चार परवाडीये पाच  
 परस नव भास न अराड दीन

हंय लघुमिहं कीर्डाततपकहिये छीयं प्रथम एक अपवास पाषाणं करो  
 नेवे अपवास पछी एक अपवास पछी त्रण अपवास पछी वे अपवास पछी  
 चार पछी त्रण पछी पांच पछी चार पछी छ पछी पांच पछी सात पछी छ प-  
 छी आठ पछी सात पछी नव पछी आठ पछी नव पछी सात पछी आठ पछी  
 छ पछी सात पछी पाच पछी छ पछी चार पछी पांच पछी त्रण पछी चार प-  
 छी वे पछी त्रण पछी एक पछी वे पछी एक तेनो जंत्र.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

लघुमिहं कीर्डात तपोदीन १५४ पाषाणानादीन ३३ एक परवाडी चार  
 परवाडीये धेदने बे वरस एक भास न वे दीन

हवे लघुमिहं कीर्डात तपकहिये छीयं प्रथम एक अपवास पछी वे अप-  
 वास पछी एक पछी त्रण पछी वे पछी चार पछी त्रण पछी पांच पछी चार  
 पछी छ पछी पांच पछी सात पछी छ पछी आठ पछी सात पछी नव पछी  
 आठ पछी दस पछी नव पछी अंगीयार पछी दस पछी बार पछी अंगीया-  
 र पछी तेर पछी बार पछी चउद पछी तेर पछी पंदर पछी चउद पछी सो-  
 ल पछी पंदर पछी सोल पछी चउद पछी पंदर पछी तेर पछी चउद पछी  
 बार पछी तेर पछी अंगीयार पछी बार पछी दस पछी अंगीयार पछी न-  
 व पछी दस पछी आठ पछी नव पछी सात पछी आठ पछी छ पछी सात  
 पछी पांच पछी छ पछी चार पछी पाच पछी त्रण पछी चार पछी वे प-  
 छी त्रण पछी एक पछी वे पछी एक तेनो जंत्र.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०

हवे सुक्तावली तप कहीये तीये प्रथम एक उपवास पठीये उपवास प-  
छी एक पठी त्रण पठी एक पठी चार पठी एक पठी पांच एम अनुक्रमे सो  
ल सुधी चडवा पाठा एक पठी सोल पठी एक पठी पदर एम अनुक्रमे एक  
सुधी उतरवा तेनो जत्र.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०

ए कनकावली आरेरेने सुक्तावली सुधी चार परवाडीनां पारणा-  
नी रीत रत्नावली प्रमाणे जाणयी

हवे गुणरत्नाकर संवत्तर तप कहीये तीये प्रथम मासे एक एक उपवा-  
सनु पारणुं करवु बीजे मासे बडे उपवासनुं पारणुं करवु बीजे मासे त्रण-  
त्रण उपवासनुं पारणुं करवु एम जायत सोल जे मासे सोल सोल उपवास  
नुं पारणुं करवु अने ते विषे आतापना परमुरव जेवी ते अधिकार भगव  
तीजीना बीजा सतकथी जाणजो.

हवे कोरीक तप कहीये तीये प्रथम एक उपवास करवो पठी बेकरवा ए  
मत्तावत सोल सुधी चडवु अने सोल थोपाळु एक सुधी उतरवु एम एनी प  
ण चार परवाडी करवी पारणानी रीत पुरवनी येरे जाणवी तेनो जत्र

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०

हवे खुडपडीमा तप कहीयेछीये प्रथमएकउपवासकरयोपछीवे

१	२	३	४	५
३	४	५	१	२
५	१	२	३	४
२	३	४	५	१
४	५	१	२	३

पठीत्रणपछीचारपठीपांचपठीत्रणपछीचारपठीपांच  
पठीएकपछीवे पछीपांचपछी एकवेत्रणचार पछीवे  
त्रणचारपांचएक पछी चारपांचएकवेत्रणएनीएक  
परवाडीये तपदीन ७५ पारणां दीन २५ चारपरवाडी थइने

वरसएकने मासएकदीन १० एतपपुरोथाय पारणां पुरववत.

हवे महाभद्रपडीमा कहीयेछीये तेप्रथमपांचउपवासकरवापछीठ

५	६	७	८	९
७	८	९	५	६
६	५	६	७	८
८	७	८	९	५
९	५	६	७	८

पछीसात पछीआठ पछीनवपछीसातआठनवपाचछप  
छीनवपछीपांचएमअनुक्रमेउपवासकरवातेनोजं  
एममहाभद्रपडीमानातपोदीन १०५ पारणां दीन २५  
सरबमजीने मासछअनेदीनवीसएकपरवाडीयेजाए

वोचारपरवाडीयेथइनेवरसवेमासवेदीन २० थायएदजेएतपपुरा  
थाय पारणानी रीत पुरववत.

१	२	३	४	५	६	७
४	५	६	७	१	२	३
७	१	२	३	४	५	६
३	४	५	६	७	१	२
६	७	१	२	३	४	५
२	३	४	५	६	७	१
५	६	७	१	२	३	४

हवेअतिभद्रपडीमा कहीयेछीये प्रथमएक  
उपवासकरयोपछीवेपछीत्रणपछीचारपछीपांच  
पछीछपछीसातपछीचारपछीपांचपछीछपछी  
सातपछीएकवेत्रणपछीसातपछी एकवेत्रणचा  
रपांचछपछीत्रणएमअनुक्रमेउपवासकरवा अ

तिभद्रपडीमातपोदीन १९६ पारणादीन ४९ सरबमजीने आठमहीनले  
पांचद्विसएकपरवाडीनाजाएवा चारपरवाडीयोथइनेवरसवेमास  
आठदीन २० वीसेएतपपुरोथाय पारणां पुरववत

हवे अतिशुद्ध पडीमा कहीयेछीये. प्रथमएकउपवासकरयो  
पछीवे पछीत्रणपछीचार पछी पांच पछी छपछीसात पछीआ  
ठपछीनवपछी पांचपछी छपछीसात आठनवएकवेत्रणचार  
पछीनवपछीएक पछीवे त्रणचार पांच छ सात आठ पछी

१	२	३	४	५	६	७	८	९
५	६	७	८	९	१	२	३	४
९	१	२	३	४	५	६	७	८
४	५	६	७	८	९	१	२	३
८	९	१	२	३	४	५	६	७
३	४	५	६	७	८	९	१	२
७	८	९	१	२	३	४	५	६
२	३	४	५	६	७	८	९	१
६	७	८	९	१	२	३	४	५

चार पांच छ सात आठ नव एकवे  
 अण एम अनुक्रमे उपवास करवा  
 साथेना जंत्रमां बताव्या प्रमाणे  
 तिगुधपडीमा तपदीन ४२५ पार-  
 णादीन ८१ सरवमजीने वसर  
 कमास चारदीन ६ एक परवाडी  
 थाय चार परवाडीये मजीने वसर  
 पांच मास चारदीन चोवीस एतप  
 पुराण थाय. पारणा पूर्वे कहा प्रमाणे

इये महागुध भद्रपडीमा कहीये छीये प्रथम एक उपवास पछीचे उ पक

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
६	७	८	९	१०	११	१	२	३	४	५
११	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
५	६	७	८	९	१०	११	१	२	३	४
१०	११	१	२	३	४	५	६	७	८	९
४	५	६	७	८	९	१०	११	१	२	३
९	१०	११	१	२	३	४	५	६	७	८
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१	२
८	९	१०	११	१	२	३	४	५	६	७
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१
७	८	९	१०	११	१	२	३	४	५	६

पछी अण पछी चार पछी पाच पछी  
 छ पछी सात पछी आठ पछी नव पछी  
 दस पछी अंगीयार पछी सात आ  
 ठ नव दस अंगीयार एक बे अण चा  
 र पाच पछी अंगीयार पछी एक बे  
 अण एम अनुक्रमे उपवास जंत्रमां  
 बताव्या प्रमाणे करवा अति महा  
 गुधपडीमाना तपदीन ७२६ पार  
 णादीन १२१ सरवमजीने वसर

बे मास चारदीन ७ प्रथम परवाडी थाय चार परवाडी थइने व  
 स नव मास ४ चारने दीवस २६ एतप पुराण थाय पारणा पूरव प्रमाणे

अथ करम घाती तपलस्वीये छीये प्रथम छठ आठ कर-  
 वा पारणे वेसण करवु. एम आठ ठठ सजग करवा आंतरा र  
 हीत गरण नमो नाणस गणवु नोकार वाली २० वीस गणवी

वारवर्षनोसलेखणातपकहियेछियेतेप्रथमचारवर्षसुधी  
विगेनोत्यागकरवो बिजाचारवर्षनेविशे उपवासआदिदे  
इनेविचित्रप्रकारनोअठमसुधीतपकरवो तेवारपछीएक  
वर्षएकातरेउपवासकरवा नेपारणेआंबेलकरवु तेपगीमां  
स ६ अठमअठमनोतपकरवो तेवारपगीमांस ६ अठम  
उपरनोविकटजक्ततपकरवो तेवारपछीवर्षएकआंबेलनो  
तपकरवो तेवारपछीवर्षएकआंबेलआदिदेइने मासखम  
एसुधीशक्तिसारुतपकरवो एवीरीतनोवारवर्षनोसलेख  
णातपजाणवो तथाजवमधपडीमाएकमासनोतपतेनी  
विगतजेप्रथमशुक्लपक्षनेपद्मेथकीमांडवो तेप्रथमतपेदां  
तीएकआहारनीतथा दांतीएकपाणीनी बिजेदिनेदांतीव  
बेश्राहारपाणीनीएमजावतपुनेमनेदिने पंदरदांतीआहा  
रअनेपंदरदांतीपाणीनी पाछुक्रश्रपक्षमांपडवेनेदिनेचउद  
दांतीआहारनी तथाचउदपाणीनीएमजावतउगणत्रीश  
मेदिवशेएकदांतीआहारनी तथाएकपाणीनीत्रिशमेदिव  
शेउपवासकरवो तनुनामजवमधपद्मीमाकहिये तथाव  
जरमधपद्मीमाएकमासनीहोय तेपणप्रथमशुक्लपक्षनीए  
कमथीमांनवो तेप्रथमदिवसेदांतीपंदरआहारनी तथादां  
तीपंदरपाणीनी बिजेदिनेद्वन्द्वदांतीआहारनीनेचउद  
दांतीपाणीनी एमजावतपुनेमनेदिवशेएकदांती  
नेएकदांतीपाणीनीनयावदने प्रथमनादिवशेए



हारनी तथा एकपाणीनी वद २ वेदाती आहारनी ने वेदाती  
 पाणीनी एम जावत अमावास्याये पदरदाती आहार अने  
 पंदरदाती पाणीनी तेने वजर मध पडी मा कहिये इत्यादि  
 कत पसिद्धातने विगे वीजा पण कह्याते तथा हाल मानवाक  
 ल्पीत तप घणा थाय ठे एस वें ने इतर कहेंता थोडा काल नो अ  
 ण सणत प कहिये तथा जावजिव अण सणत प तेना वेभेद  
 एक पादो उपगमण अण सण अने एक भत प चखाण अण स  
 ण हवे पादो उपगमण अण सण ना वेभेद एक सींह अग्नी प्रमु  
 ख नो उपसर्ग थाय तो पण त्याथी डगे नहि विजा एवा उपस  
 र्ग वना जेम वृक्ष नी डाल कापेली पडी होय - ते महा ले चाले न  
 ही जत प चखाण अण सण ना वेभेद एक सीहा दीक उपसर्ग  
 उपनाथ का जत प चखाण करे वीजो ज्ञात पाणी विना उपस  
 र्ग प चखे एवे भेद एटले अण सणत प कह्यो हवे अणोदरी त  
 प कह्ये ठीये तेना वेभेद एक द्रव्य अणोदरी एक भाव अण  
 दरी द्रव्य अणोदरी ना वेभेद एक उपगमण अणोदरी वीज  
 भात पाणीनी अणोदरी उपगमण अणोदरी ना वेभेद एव  
 पातरुकाष्ट अथवा माटी नुराखवु ते पात्र अणोदरी कहिये ह  
 वे भात पाणीनी अणोदरी ना अने कचेद आठ कवल आहार  
 ना करे तेने अल्प आहारी कहिये कवल के हेतांकु कडाना  
 डा प्रमाणे कोली होय वार कवल जे आहार करे तेने  
 अड्या अणोदरी कहिये तथा चोवीस कोलीया आहार

करे तेने चोथाजागनी अणोदरीकहीये एमजावत  
 एकत्रीसकवलनोआहारकरे तेने पणअणोदरी कहीये  
 शामाटेकेवत्रीसकवलनुपुरुपने आहारनुप्रमाणतेथीए  
 कत्रीसवालोअणोदरीमाछे तेथीस्त्रीनेअठावीसकवलमु  
 परीमाणछे तेनेसतावीससुधीअणोदरीकहीयेतेथीजावत  
 आठकवलथीतेएकत्रीसकवलसुधी अणोदरीनो तपकही  
 ये अनेवत्रीसकवलपुरालेतेने परमाणुप्रेतअहारकही  
 ये अथवातेमांथीकाइएकगीख अथवाएकग्रासउणोलेते  
 नेपणपरमाणुप्रेतकहीये पणएकगीखेउणोरहे त्यांसुधी  
 तेसाधुपेटनरोनाकहीये एटलेजातपाणीनीअणोदरीक  
 हीतथाद्रव्यअणोदरीकही.

हवेभावअणोदरीकहियेछिये तेनाअनेकभेदछे अल्प  
 क्रोध अल्पमान अल्पमाया अल्पलोचन अल्पज्ञान  
 अल्पबोलवु अल्पकलहइत्यादिक एभावअणोदरीकहि  
 ये एटलेअणोदरीतपकशी. हवेत्रीजोव्रतीसंक्षेपतपकहि  
 येछिये जेगोचरीनाअनेकभेदछे द्रव्यथकीअग्निग्रहकरे  
 क्षेत्रथकी कालथकी जावथकी अभिग्रहकरे एटलेद्रव्य  
 थकी जेफलाणोद्रव्यमलशेतोलेइशुं तथाक्षेत्रथकी जेआ  
 गाममा अथवाफलाणांगाममा अथवाफलाणीपोलमां  
 अथवाफलाणामेहेलामामंलशेतोलेइशुं कालथकीअग्नि  
 ग्रहफलाणीवैलायेमलशेतोजलेइशुं भावथकीअग्निग्रहजे

स्त्रियथवापुरुषवाकुवारीकाप्रमुख आवीरीतेआपशेतोले  
 इशु अथवाजाजनमाहेथीउपाडेलुहशेतोजलेइशु अथवा  
 नाजनमांथीबीजाभाजनमाघालेलुहशेतोजलेइशु अथ  
 वाआपणेकाजेउपाडीने बीजाजाजनमाघाल्युंहशेतोलेइ  
 शु अथवाअनेरेजाजनेघालेलीवस्तु आपणेकाजेउपाडे  
 लीहशेतोलेइशु अथवाअनेरानेपीरसेलुंहशेतोलेआपशेतोले  
 इशु अथवावस्त्रनेविशे ढोकला ढोकली खाखरा प्रमुख  
 मोकलाकरेलाहशे अनेतेमांथीलेइजाजनमांघालताह  
 शे तेआपशेतोलेइशु अथवाकोइनेत्यार्थीलावेलुं तेआप  
 शेतोलेइशु अथवाकोइनाजाणामापीरस्युछे तेनेवधारेप  
 ड्यु तेआपशेतोलेइशु अथवातेपाछुलेइने बीजाठामने  
 विशेघाल्युठे तेआपशेतोलेइशु अथवानिदानेस्तुतिभेली  
 थायतेवुजेरसवतिअनेपाणीखारुएवोजोगमलशेतोलेइशु  
 उशरीयुंहेहेताएनेपीरस्युतेलेइशु अथवानिदनीकआहार  
 लेइशु अथवालोकनेवखाणवाजेबो प्रीयकारीमोदकपर  
 मुखआहारतेमलशेतोलेइशु अथवाकटुकआहारपरंतु  
 वेगुणकारीतेमलशेतोलेइशु इत्यादीकआहारनोतरेतरे  
 हनोअनीग्रहकरे तथाहवेदातारनोअनीग्रहकहीयेडीये  
 खरमेहाथेदेतोलेइशु अथवाअणखरमेहाथेदेशेतोलेइशु  
 अथवाजेद्रव्येहाथखरड्योठे तेद्रव्यआपशेतोलेइशु अथ  
 वावस्त्रादीकअनेकप्रकारना अहीयाअनीग्रहकेहेवा अथ

वाकोइथीक्षुधावेदनीनखमातीहोयतोशीतउष्णजेवोमल  
 शे एवोलेइशु अथवागोचरीएमोनपणेविचरशु अथवा  
 पोतानीद्रुटीएदीठो आहारदातारआपशेतोलेइशु अथ  
 वाअण्णदीठोआपशेतोलेइशु अथवादातारेजेआहारनंपु  
 छयु तेजआहारआपशेतोलेइशु अथवाजीक्षाएजेवोमल  
 शेतेवोलेइशु अथवाघणुअनस्तवनाकरीआपशे तोलेइ  
 शुं अथवाअज्ञातघरनीभीक्षालेइशु अथवाग्रहस्तीएमो  
 होआगललावीनेमुक्युतेजलेइशु अथवामानसहीतजेआ  
 हारग्रहणकरवाजोग तेआहारमलशेतोलेइशुअथवाशुद्ध  
 निर्दोषमलशेतोलइशुअथवादातीनीसंख्यायेआहारलेइ  
 शुं इत्यादीकव्रतीसंखेपतपनाभेदजाणवाएटलेव्रतीसंखे  
 पतपकह्यो हवेरसचाहुचोथोतपतेनाअनेकभेदछे एटले  
 घीप्रमुखझरतेथके एवीवगेनोत्यागकरे अरसकेहेताअ  
 डद चएया वाल इत्यादीकनोआहारलेइशु अथवाआंवे  
 लकरीशु अथवाओसामणमाहेलाशीतनीकलेतेनेजवाव  
 रीशु अथवाहींगपरमुखेवघारेलुहशे तांतेआहारनहीक  
 रीये अथवाजुनुंधानखाणपरमुखतेनोआहारकरीशु अथ  
 वाअतआहारकेहेतां उखलारवलीजलीहशेतोलेइशुअ  
 थवापतआहारकहेतांटाढोपरमुखआहारलेइशु अथवालु  
 खोआहारलेइशु तेसर्वैरसनोत्यागतेनेरसचाहुतपकह्यो  
 हवेकायकेशतपकहीयेछीये तेनाअनेकभेदछे काउसग

## तत्त्वसारोद्धार

करीनेउभुरेहेवु अथवाकाउसगकरीनेउचारहीनेहालवु  
 नही अथवाउकम्प्रासनेवेसवुअथवावारपडीमापरमुख  
 साधुनीवेहेवी अथवावीरासनेवेसवु अथवापलाठीवा  
 लीनेवेसवु अथवावकरशीयालनीपेरेवेसवु अथवाढाड  
 नीपेरेसुवु अथवाताहान्तापवेनीआतापनालेवी अथवा  
 वस्त्रउपगरणनराखवु अथवाशरीरेखाजनखणवी मुख  
 थुकपरठवुनही गलेउतारीजवुशरीरनुजेसुसुरखारोमवे  
 शनखपरमुखनसमारवा अथवागणगारनकरवो एका  
 कलेशतपकह्यो हवेप्रतीसलीनतातपकहीयेंछीये तेनाच  
 रभेदछे इंद्रीप्रतीसलीनता १ कखायप्रतीसलीनता २  
 जोगप्रतीसलीनता ३ वीवक्तप्रतीसलीनता ४ हवेइंद्र  
 प्रतीसलीनतानापाचभेद श्रोतइंद्रीकहेता काननावीश  
 नेविपेपरवरतवु तेनेरुधवुएटलेरुडामाठाशब्दकाननेवि  
 आवीपड्यातेउपररागद्वेशनकरवोतेनेश्रोतइंद्रीसलीनत  
 कह्येअथवाचक्षुइंद्रीसलीनताकेहेताजेरुपरुडामाठांदेर  
 वा तेनेविपेचक्षुनुपरवरतवरुधवु एटलेनेत्रनोविशयजे  
 चवरणनारुपनेविपेछे तेरुपनेविपेरागद्वेशनाकरवोहवेश  
 हणइंद्रीसलीनताकहीयेछीये एटलेनासीकातेनेगधनेव  
 पेपरवतवु तेथकीरुधवुएटले सुरभीगंधदुरभीगंधनास  
 कातेआवीप्राप्तथाय तेनोद्वेशनकरवो हवेरसइंद्रीसली  
 ताकहीयेछीयेएटलेजीभनोस्वजावतेरसनेगद्वेशनाकरवो

वे तेनेविपेपरवर्तवु तेनेरुधवुएटले पाचप्रकारनारसनी  
 ग्रहणकरताजोभते तेजेजेरसआवीनेप्राप्तथाय तेशुच  
 अथवाअशुचहोय तोपणद्वेशरागनकरवो हवेफरसइंद्री  
 सलीनताकहीयेछीये एशरीरनेफरसनेविपे परवर्तवानो  
 स्वभावछे तेनेरुधवातेआठप्रकारनाफरसठेतेनेविशेतेश  
 रीरनोविषयछेतेफरसआठेप्रकारनारुडाअथवामाठाआ  
 वीप्राप्तथायतेनेविपेरागद्वेशनाकरवोएटलेइंद्रीसलीनता  
 तपकह्यो हवेकसायपडीसलीनतातपकहीयेछीये तेनाचा  
 रप्रकार क्रोधजेरीसनाउदयेकरीउपजवुतेनेरुधवुअथवा  
 क्रोधआवीनेप्राप्तथयोछे तेनेनिश्फलकरवो सामानावच  
 नादीकहोयतेसहीजवा अथवामानजेउदयआवतानेरुध  
 वु अथवाजेउदयआवीप्राप्तथयो एवोजेअग्निमानतेनेनि  
 श्फलकरवो तथामायाकेहेताकपटतेनेउदयआवतानेरुध  
 वु अथवाआवीप्राप्तथाय तेनेनिश्फलकरवु तथालोभकेहे  
 ताइगवठा रुपतेउदेआवतानेरुधवु अथवालोचनोउदे  
 आवीप्राप्तथाय तेनेनिश्फलकरवुएटलेकसायप्रतीसली  
 नतातपकह्यो हवेजोगप्रतीसलीनतातपकहीयेछीयेतेना  
 त्रणभेटवे एकमननोजेवेपार जेपरजुजवो तेनेबहूप्रकारे  
 करीनेपणसंवरवो तथावीजोवचनंसलीनताकेहेतां जेअ  
 नेकप्रकारिनावचनपर जुंजवातेनेसवरवु तथात्रिजोकाय  
 जोगकहेताजेकायानोवेपार आश्रवथकीरोकवो हवेम

ननोजेवेपारतेनुसंवरवुं एटलेमाठुजेमनतेनेरुंधवुं अला  
मननीउदारणाकरवी तेनेमनप्रतीसलीनताकहिये तथा  
वचनजोगनावेपारनुंरुंधवुं एटलेमाठांजेवचनतनुं रुंधवु  
अलाजेवचनतेनीउदारणाकरवी एटलेवचनजोगनीप्र  
तीसलीनताकहिये हवेजेकायजोग एटलेकायानोवेपार  
संवरवोएटले समाधीसहीतवर्तवु एटलेहाथअनेपग  
काचवानीगोडेगोठवीराखे इद्रीयोपाचेगोपवीराखवीश  
रीरनाअगोपांगतेनेकायजोगप्रतीसलीनताकहिये एट  
लेजोगसलीनताकह्यो हवेविवक्तसलीनताकहियेछियेए  
टलेउपाश्रीये स्त्री पशु नपुपक प्रमुखनहोय तेउपा  
शरीरहेवुं तथापाटबाजोठपाटलाप्रमुख तेपणस्त्रीयादि  
कनहोयनेशेववुं भोगंववु वलीउत्तमवनवामीतथाउदान  
अथवामोटावृक्षनीहेठे तथादेवकुलनेविशे तथाघणाज  
एवेसताउठताहोय तेवीसजानेविशे तथापाणीभरताहो  
यंतथापीताहोयत्यातथाघणाकिरीयाणालेवेकरथतोहोय  
त्यास्त्रीमनुपनीपणहोय तथागायभेशनपुशकएथकीरही  
तएवीजेवस्तीहोय एवाउपाशरानेविशे पराशुतएटले  
अचीतनिरदोशत्यापाटपाटलावाजोठ तथाअठीगणमु  
कवानुंपाटीयु तथासंथारोगाजप्रमुखघासनो अथवाउद  
ननोइत्यादिकवस्तीपासेमागीलेइनेविचरे तेनेप्रतीसली  
नताकहिये एटलेएछेएवहाजतपकह्या एटलेएवहाजत

पथकीकर्मतोनाशथायनहि कोइकहेगेनांशनथायत्यारे  
 शास्त्रवालेआवास्तेकह्या तेनोउत्तरजेशास्त्रवालेकह्यातेने  
 व्यवहारचलववो अनेपोतानादर्शननीनोखीउलखाएक  
 राववो प्रथमतोएजकारण बीजुएकेएवातपथकी सासन  
 नोशोभाघणीबंधेसासनसारुलागे त्रिजुएकेतेधणीनीवा  
 हाजथकीइंद्रीयोविजाविकारमानपेसे इत्यादिक कारण  
 जाणवापरंतुएनेविशे कांडआत्मउपयोग एवोशब्दतोछे  
 जतहि अनेचारीत्रनामआत्मानुगे तोजेवस्तुचारीत्रवेतो  
 तेवस्तुतोएमागेनहि आतोएकक्रियारुपछे तोक्रियानेवि  
 शेतोकोइनुमनस्थीररहेनेकोइनुंनारहे जोस्थीररहेतोएप  
 रमादगुणठाणानीक्रियागे काइअपरमादीजावतोएमांछे  
 नहि अनेअपरमादीजावनेविशेतो क्रियाहोयजतहिते  
 विचारीजुवो हवेजेएवीक्रियाकरेतेथकीकांडमुक्तितोमलेन  
 हिकेमकेमुक्तिनुप्रथमकारण जेदज्ञानगे तेचोथागुणठाणा  
 थीमाडीनेआठमागुणठाणासुधीचाले तथानवमुदसमुगु  
 णठाणुगे त्यांजेदाभेदज्ञानगे नेवारमेगुणठाणेअभेदज्ञान  
 छेएटलागुणठाणांकहेतां आठमागुणठाणाथीवारमागुण  
 ठाणासुधीवचननुंउचारणपणछेनहि तथामनद्रव्यगुणप  
 रजायआत्मउपयोगनाजेगुजरहे तेविनाजोविजिजगाये  
 जायतोतेगुणठाणारहेनहि पागेठेसातमेगुणठाणेजाय  
 जावतमिथ्यातमांपणजाय तथाअवेधीज्ञानी मनपरजव



ज्ञानीकोइसाधुहोय तेसाधुपणअवधीमनपरजवज्ञाननो  
 उपयोगदेतां एगुणठाणापामेनहि तेगुणठाणाश्रुतज्ञान  
 अवलबीछे तेवारमेगुणठाणेअनेदज्ञानते व्याघातीकर्म  
 नोक्षयकरीनेतेरमेगुणठाणेकेवलज्ञानपामे तेतोबहोरनी  
 क्रियातथावहारनातपमाकाइछेनहि तेवारकोइकहेशेके  
 आजकाइतेवस्तुछेनहि माटेवहाजक्रियानेतप तेजप्रधान  
 छेतेनेकहियेकेवहाजक्रियानेवहाजतपप्रधानछे तेठीकछे  
 पणतमेआत्मधर्मनाद्वेशीमाटितमने हजुसमकितगुणठा  
 णुपणआव्युनथी माटेतमेखुशीपमेतेमकरो पणएकेवुछेके  
 जेमलाकडानापुतलाने वरवनावीनेजातलेइनेजाय तेने  
 कोइकन्यापरणावेनहि अनेएजानैयालाजखोइनेघेरआ  
 वेतेमतमेपणआत्मज्ञानहिणवहाजक्रियानाआमंवरीमाटे  
 अनंतोसंसाररखमशो अनेतमाराउपदेशनासाजलवा  
 वालातेपणअनंतोससाररखमशो तेवारतेवोटयाजेतमेव  
 हूकठोरवचनबोलोछो अनेअमेतोवहूपंमितनावचनकह्यां  
 छेतेउपरचालीयेगीये माटेअमेशामाटेरखमीये तेनोउत्तर  
 जेतमेपडितोनाकहेणउपरथीचालोछो तेकाइपंमितआत्म  
 ज्ञानीनाएवावचननाहोय शामाटेकेसमकितवनाआश्रव  
 मानाखवाछे नेआश्रवनोवधारोकरवो एवचनपडितनाक  
 हेवायनहि पडितहोयतेतोआत्मानुस्वरूपग्रहीनेसंवरजा  
 वनीपरुपणाकरे तेनेपडितकहिये तेअधिकारघणाशास्त्र

मांछे नेशास्त्रनांनाम अमेपूर्वेलाधेलांछें तेथकीजाणजो.  
 त्यारेतेवोल्याजे तेशास्त्रनावांधनारपडीतखरा नेवी  
 जाशास्त्रनावांधनारा पंडीततेशुखोटा तेनोउत्तरजेतेकह्युं  
 तेपंडीतखोटा तोएप्रतक्षखोटाजछे शामाटेकेआचारदी  
 नकरग्रथनेविशे एवुकह्युछेके ग्रहस्तीनाछोकराने परणां  
 ववानेसाधुजाय एवावचननाकेनाराने पडीतकेमकंहीये  
 प्रत्यक्षतेमणेपोतानी नेपोतानापरिवारनीआजीवीकावा  
 धीछे तथाजेतपमां उजमणांकरवानाग्रंथवांध्या तोते  
 नेपुछीयेके पुर्वेकह्यातेतपसुत्रमांछे तेनांतोउजमणांकांइ  
 छेनही अनेतमेजेनवातपउत्पन्नकर्या तेतपसुत्रमांतोछेन  
 ही नेतेनांउजमणातमेवाध्यां तेतमारीआजीवीका चला  
 ववासारुवाध्यां केशावास्तेवाध्यां तथाश्रावकनेउपधान  
 नुकहोवो अनेतेनाएवाप्रकरणपणवतावोवोजे श्रावकनो  
 नोकारपणउपधानवह्यावगरखपलागेनही तेतमेकयासु  
 त्रमाथी लावीनेदेखावोवो जेउपाशकदशांगनेविशे आणं  
 दजीआदि दसश्रावकनोअधिकारछे तेणेतुरतधर्मसाज  
 की समकीतमुळवारव्रतउचर्या नेअगियारपडीमाश्राव  
 कनीवहीपणउपधानवह्यांतोदीसतांनथी एमेजेजेसुत्रमां  
 श्रावकनोअधिकारहोय त्यांजोंतोतथातमेकहोछोके सा  
 धुनेजोगवह्याविनासुत्रवचायनहि तोभगवतीजिनेविशे  
 खंधकतापसतुरतदिक्षालेइने द्वादशअंगीजण्याइत्यादि

कजेटलासुत्रमांश्रावकनाधिकारते तेसर्वेदिक्षाउल्लेखने  
 कोइअगीयारअगजण्या कोइद्वादशअगीभण्या तथाअनु  
 तरउवाइनेविशे धनाकाकडीएनवमहीनाचारीत्रपाल्युते  
 मध्येमासएकतासयारानोगयो आठमासचारीत्ररह्युतेमा  
 अगीयारअगजण्यातोतेणेजोगकयेदहाडेवह्या एरुजग  
 वतीजिनाजोगमा ठमहीनाजोइये, तोमाडलीप्रातथाआ  
 चारीतथादशअंगना जोगवहेताएनेकेटलावरसजोइयेते  
 विचारीनेजवाबदेजो एटलेएग्रथनाबाधनाराये पोतानी  
 आजिवीकाबाधीते पणकाइधर्ममार्गबाध्योनथी, तथाआ  
 धविधीप्रमुखग्रंथोनेविशे बडोनीतलघुनीत दातणनाहा  
 वाखावा, प्रमुखनाआचारवांध्या तेनेतेशुधर्मकहिये केते  
 नेतेशुपापकहिये एवाग्रथनाबाधनारानेकहोपंमिनशीरी  
 तेकहिये नेतेनेपडितकहेतेनेपणअज्ञानीकहिये.

शिष्यवाक्य—स्वामिसुत्रनेविशेपणतमेपुर्वेकह्यातेतपक  
 हेलाछे तेधर्ममांखराकेनहि.

गुरुवाक्य—हेभद्रएतोत्याजवहाजतपकह्याछे, वहाज  
 कहेताबहारथीकायानेतपावे तेनेवहाजतपकहिये अभ्य  
 तरतपतेकर्मनेवाले तेनेकहिये माटेवहाजछेएव्यबहार  
 तेमाटेत्याजधर्ममागवेरूयानथी.

शिशवाक्य—धर्ममागवेरूयानथी तोइहाकेहेचानीजरु  
 रशीहती.

गुरुवाक्य - जगवाने तो सा ते नयवतां व्याछे - परंतु धर्म  
तो त्रण नयमां जवता व्योछे तथा सुत्रकारे जेत पवाहा जनुं  
मानवधार्युछे ते सुत्रकार नावचनमां तो घणीवा तो नीगंका  
जछे प्रथमतो जसवी जे जीउ पाध्याये नवाणु बो लतो अण  
मलता काहाडी जमुके लाछे तथा सिद्धान्त नामालीक जी  
न जद्रगणी खमाश्रमण दस पुरवधरहता तेने तथा सीधसे  
न देवा करने जे चरचाओ थइ ते चरचामां पण जिन भद्रगणी  
खमाश्रमणना उत्तरमां कशुठे काणु दीसतुं नथी ते शिवाये  
पण घणावोल सिद्धान्तना अणमलता कल्पित जाणथा  
यछे परंतु आपणे सिद्धान्तनो आधारठे तेथी ते आधारउपर  
चालवानुं वे वादी उत्तर - तमने सिद्धान्त कल्पित भापण थयां  
तो तमे गावास्ते खोटुं जाणीने मानोछो तेनो उत्तर सर्वसू  
त्रतो कांइ खोटाना पण पतानथी अने जे जे बोलखोटा ना प  
णथायछे ते अमे सदहतानथी अमारे कांइ ताहारी पठे हठ  
वादिछे नही जे अमारा घरडा कहि गया ते खरुं एवु गधापुंछ  
तो तमने सो प्युवे.

शिशवाक्य - स्वामी वाहा जत पतो व्यवहारमांगयो ए  
मा तो काइ आत्मानुकार जयवानुं छे नही माटे अमउपर क  
पा करीने अभ्यंतरत पओलखावो तेम अमे करीये जेम अ  
मारा आत्मानुकार जसिद्ध थाय.

गुरुवाक्य - अभ्यंतरत पनाछ जे दठे ते कहिये छीये प्राश्वी

त १ वीनय २ वीयावच ३ सजाय ४ ध्यान ५ काउ  
सग ६ एमध्येप्रथमप्राश्चितनादसजेद्वे तेकहीयेछिये  
जेपोतानेलागुजेपाप तेगुरुपासेआवीनेआलोववुंकेहेतां  
केहेवु तेथकीशुद्धथाय तथापडकमवुंतथामीछामीदूकमंदे  
वुतथाआलोववुनेमीछामीदूकडदेवुं चेएकरवातथाअशुद्ध  
जावनुटालवु तेणेशुद्धथायअथवातपनुंदेवुतेथीशुद्धथायत  
थाचारीत्रनीप्रजायनुछेदवु तेथीशुद्धथायतथाफरीथकीचा  
रीत्रदेवुंतेथीशुद्धथाय जेथकीअतीचारलागेतेथकीवेगला  
राखे एदसप्रकारेगुरुपासेप्राश्चितले गुरुजेवुपापदेखेते  
वीआलोयणआपे पणद्रव्यक्षेत्रकालजावजोइनेआपे ए  
टलेआलोयणआपवानामुखंत्यारगुरुबे भाटेगुरुनीनजर  
प्रोचेतेवीआलोयणआपे एटलेप्राश्चिततपकह्यो हवेवी  
जोवीनयंतपकहीयेछिये तेनासातभेद ज्ञाननोवीनय १  
दरसननोवीनय २ चारीत्रनोवीनय ३ मननोवीनय ४  
वचननोवीनय ५ कायानोविनय ६ लोकविनय ७ तेम  
ध्येज्ञाननोविनयपाचप्रकारनोछे मतीज्ञाननोविनयकर  
वो तेमतीज्ञाननागुणवरणकरवा १ श्रुतज्ञाननोविनय  
करवो ते श्रुतज्ञाननागुणग्रामकरवा २ अवधीज्ञानजेमर  
जादाप्रमाणेरुपीद्रव्यनुदेखवु तेनागुणग्रामकरवा ३ म  
नपरजवज्ञानजेअढीद्वीपसज्ञी पंचइद्रीनामननाजावजा  
एतेनोविनयकरवो एटलेतेनागुणग्रामकरवा ४ केवलज्ञा



कहीये थीवरनीआशातनाटालवी तेथीवरत्रणप्रकारना  
 श्रुतथीवरबहूश्रुतनीआशातनाटालवी वीसवरसउपरां  
 तचारित्रनीपरजायथइहोयतेनेकहीये. तथासाठवरसउप  
 रातंसाधुहोय तेनेवयथीवरकहीये. हवेकुलनीआशातना  
 टालवी एटलेचंद्रादिककुल सिद्धांतमाचालेलाछे. तेनी  
 आशातनाटालवी गणकेहेतांगछनीआशातनाटालवी ते  
 गछश्रीसीद्धातमांकिह्याछेतेनी संघनीआशातनाटालवी  
 संघकेहेतांजेंसाधुसमुदाय क्रियापक्षीक्रियानोरागीकर  
 नारो. तेनीआशातनाटालवी सजोगीएटलेसरखीसमां  
 चारीनांसाधुहोयें तेनीआशातनाटालवी मतीज्ञानश्रुत  
 ज्ञान. श्रवधिज्ञानमेंनपरजवज्ञान. अनेकेवलज्ञान. एपांच  
 ज्ञाननीआशातनाटालवी एपदरजेदनीनक्तिबहूमानक  
 रेवा एवत्रीसजेद अनेए पंदरेगुणनागुणनी वरणवता  
 करीनेवाहेरदिपाववु. एटलेएपीस्तालीसभेदथया एआ  
 शातनाटालवारुपवीनयतथादरशनवीनयकह्यो.

हवेचारित्रविनयकहीयेछीये तेनापाचप्रकार सामाय  
 कचारित्रशुद्धउपयोगेआदरवु१ छेदोउपस्थापनरुडीरी  
 तेपालवु२ परिहारविशुद्धचारित्र रुडीरीतेपालवुतेविन  
 य३ सुक्ष्मसंप्रायचारित्रपालवुं४ जथाक्षायकचारित्रपा  
 लवु५ एपांचेनुस्वरूप पुर्वेसंवरद्वारमांकह्युंछे एटलेचारि  
 त्रविनयकह्यो. हवेमनविनयलखियेठिये तेनावेजेद. एक

प्रशस्थमनविनय१- अने एक अप्रशस्थमनविनय२ हवे  
 अप्रशस्थमनके हेतां मनना अभिप्राय जे माठा कायकादि  
 क्रियाना विचार उठे, ते पोताने पण दुखदाइ ने परने पण दु  
 खदाइ, एवं माठुं मन प्रवरते तेने अप्रशस्थमनविनय कहि  
 ये तेथ कीउ पराठुजे स्वगुण परजाय नीरमणता पोताना  
 स्वरूप नुध्यावु आत्माने उधरवानो विचार तेने प्रशस्थम  
 नविनय कहिये एटले मनविनय कह्यो हवे वचनविनय क  
 हिये छिये ते वचनना पण वेजेद एक अप्रशस्थवचन अने  
 बीजु प्रशस्थवचन अप्रशस्थवचनके हेता जे वचन माठानी  
 कले एक द्वियादिक जीवने उपद्रव थाय पोताने कायकादि  
 क क्रिया लागे सामाने ने पोताने वेउने उपद्रव नुं जे कारण थ  
 यु आश्रव आवे ते वचन जे बोलवुं, तेने अप्रशस्थवचन वि  
 नय कहिये, हवे प्रशस्थवचनविनय कहिये छिये प्रशस्थके  
 हेता भलु जे वचन बोलवुं, जे कोइ जीवने वाधा पीडान थाय  
 पोताने पण न वा कर्मन आवे जुना कर्म नुं निरजर वुथाय पर  
 ने तथा पोताने सुखदाइ एवं जे अध्यात्म स्वरूप तथा द्रव्य  
 गुण परजाय नीचरचा तेने प्रशस्थवचनविनय कहिये, एट  
 ले वचनविनय कह्यो हवे कायविनय कहिये छिये तेना वे प्र  
 कार एक अप्रशस्थकायविनय अने बीजो प्रशस्थकायवि  
 नय, हवे अप्रशस्थकायविनयके हेतां विना उपयोगे काया  
 ने प्रवरता वची तेना सात जे दळे उपयोग विना जे जावुं अथ



वाआवबुकरे अथवाउभुरेहेवुंअथवावेसवु अथवासुइरेहे  
 वुअथवाखाडप्रमुखकुदीनेजावु तथापांचइद्रीनुप्रवरताव  
 वु तेनेअप्रशस्थकायविनयकहिये हवेप्रशस्थकायविन  
 यएटले पुर्वेअप्रशस्थकह्या तेथकीउपराठाचलाजे आ  
 णासहितउपयोगसहितप्रवरतवु तेनेप्रशस्थकायविनय  
 कहिये एटलेएकायविनयकह्यो हवेलोकविनयकहियेछि  
 ये एटलेलोकसंघधीउपचारतेनेविनयकहिये तेनासातभे  
 दछेतेकहियेछिये गुरुनासमीपनेविशेसदायप्रवरतवु १  
 अथवापारकागुरुनाअभिप्रायेवरतवुं तेज्ञानादिकलेवाने  
 अर्थे२ जातपाणीआणीदेवु३ एनीएवीबुधीथायजेहुंएने  
 नणावु त्यारपणीविनयकरवी ४ आर्तउपनेतेनाआर्तनी  
 चिंताकरवी ५ देशकालनुजाणथावु६ सर्वअर्थप्रयोजनं  
 नेविशेसावधानरेहेवु तेथकीउपराठुनाथवुं ७ तेनेलोकउ  
 पचारीविनयकहिये एटलेएविनयतपकह्यो.

हवेवयावच्छतपकहीयेछीये तेनादसप्रकारछेआचारज  
 एटलेपचाचारनेपालनारतेनीवयावच्छकरवी १ उपाध्या  
 यजीद्वादसअगीनाजाण तेनीवयावच्छकरवी २ साधुनी  
 वयावच्छकरवी ३ नवदक्षितशीप्यनीवयावच्छकरवी ४ रो  
 गीनीवयावच्छकरवी ५ तपसीनीवयावच्छकरवी ६ धीवर  
 नीवयावच्छकरवी ७ साधमीकपोतानीसरखीसमाचारी  
 नासाधुहोयतेनीवयावच्छकरवी ८ कुलनीजेचंद्रादीकितेनी

वयावच्छकरवी ९ गणएटलेगछनीवयावच्छकरवी १० ए  
 टलेवयावच्छनपकह्यो ३ हवेसजायतपचोथोकहीयेछीये  
 तेनापांचजेदछे गुरुवाचकपासेवाचनाएटलेजणवु १ प्र  
 श्ननीशंकाउपजेतेपुछीनेनिश्चयकरवो २ पुर्वेभएयाहोय  
 तेसंनारीवालवुं ३ शास्त्रशब्दनाअर्थएकएकनीअपेक्षा  
 येविचारीजोवा ४ अनेधर्मकथाकेहेताधर्मनीचर्चावार्ताक  
 रवी ५ एटलेएसजायतपकह्यो ४ हवेध्यानतपकहीयेगी  
 ये तेनाचारभेद आर्तध्यान १ रुद्रध्यान २ धर्मध्यान ३  
 शुद्धध्यान ४ हवेआर्तध्याननाचारपाया आर्तकेहेतां  
 मननिजेचिता तेनेआर्तध्यानकहीये मननेनगमेतेवाश  
 व्दरुपरसगंधफरसादिक जेजेपदार्थमल्यातेनोएवोविचा  
 रकरेजेआक्यारेअहींआंथकटिले तेनाबीजोगनुंजेचींतव  
 वु तेनेअनीटसंजोगनामेपायो कहोये १ हवेइष्टविजोग  
 नामेबीजोपायो एटलेजलाशब्दरुपरसगंधफरसपुत्रक  
 लत्रसगासंबधीपोतानामननेगमेतेवांमलेलांवे तेनोविचा  
 रजेएनोविजोगनथायअथवानथीमल्या तेनेमलवानोवि  
 चारइत्यादिकजेविचारतेनोबीजोपायो कहोये २ हवेत्रीजोरो  
 गआतसपायो रोगादिकउपनेतेनीचिंताकरेजे क्यारेमट  
 शेक्यारेजशे अथवानवोरोगनथायतेनोविचारकरवो ए  
 त्रीजोपायो ३ हवेचोथोपायो अगामीककालनीचिंताजे  
 कालआपणेअमुककरीशुं अथवाआवतीसालअमुककरी

शु अथवा आसाल आपणे ठीक हतु हवे आवती साले शु यशे  
 इत्यादिक चितववु तेने अगामांक काल नीचिता कहीये एट  
 ले आर्त ध्यान नाचार पाया कह्या हवे ते आर्त ध्यान नाचा  
 र लक्षण कहीये छीये कडणीया केहेता मोटेशब्दे करी रुढत  
 विलाप करे १ सोयणीया केहेता सोचना दिन पणु होय २  
 तपणीया केहेता आख्य मांयी आसुझरे ३ वलवणीया केहेता  
 मुख थकी वारवार एवो शब्द करे केहे देव हे प्रभु हवे के मथशे  
 एचरे आर्त ध्यान ना लक्षण कह्या हवे रुद्र ध्यान कहीये छीये रु  
 द्र केहेता माहा आकरा दुष्ट परणाम तेनाचार प्राया हंशानुं  
 वधी एट ले जीव हसा चितववी मन थकी आरंभ समारज  
 फोजन गरगाम लुटवां जागवा मेहेल मदीर कराववा लेप  
 वाथेपवा एसर्व नेह शानु वधी रुद्र ध्यान कहीये १ बीजोपा  
 यो मरखानु वधी रुद्र ध्यान एट ले मन मा एवा विचार करे जे फ  
 लाणनि आवीरी ते कहीने मम जावी शुं अमुक ने आम कहीने स  
 म जावी शु इत्यादिक मन थकी मरखा बोलवानो विचार करे ते  
 ने मरखानु वधी रुद्र ध्यान कहीये २ हवे चोरानु वधी रुद्र ध्या  
 न मन थकी चोरी करवानो विचार करवो अथवा कोइ पासे चो  
 री कराववानो विचार करवो अथवा चोर ने सवुर आपवानो  
 विचार करे एसर्व चोरानु वधी रुद्र ध्यान कहीये ३ चोथोपा  
 यो परिग्रहरक्षानु वधी रुद्र ध्यान जे परिग्रह मे लववानो वि  
 चार तथा मलो परिग्रह तेने रखोपु करवानो विचार ते सारु

गीरवदीप्रमुखरोखवी अथवापरिग्रहनाक्षयकारीपुरुषो  
नेहणवा बदीखानेनाखवानखाववाइत्यादिकजेमनथीवि  
चारें तेनेपरिग्रहरक्षानुबधीरुद्रध्यानकहिये४ एरुद्रध्या  
नकह्युं हवेरुद्रध्याननाचारंलक्षणकहियेठिये उष्णदोश  
बंधीकेहेता प्रायेहशामंरखाअदत मीथुनपरिग्रहनेविशे  
प्रवरतवु१ शेषदूदोपायकेहेता जेहशांप्रमुखनेविशेबद्ध  
प्रवरतवु२ अणांदोशकेहेतां अज्ञानथकीहंगादिकनेवि  
शेप्रवरतवुनेधर्ममानवु३ आमंरणांतंदोशकेहेतां जेमंर  
णांतिलगेकोइपापनोपश्चांतापनकरे एटलेएरुद्रध्यानना  
चारलक्षणकह्यां

हवे धर्मध्यान कहिये ठिये एटलेधर्मकेहेतां जे  
वस्तुधर्मनुपामवु आत्माथकी कर्मनुनीरजरवु तेनेध  
र्मकहियेतेनाचारजेदठे आज्ञावीचयधर्मध्यानकेहेतां जे  
परमात्मानांशोआज्ञाछेतेविचारवु परमात्माभीएवीआ  
ज्ञाछेके ज्याजीवनीहंगात्माधर्मछेनही जेअज्ञानीदयापा  
लेतेपणकाइधर्ममाछेनही धर्मतोज्ञाननेविशेरह्योछे ज्ञा  
नतेआत्मानेविशेरह्युं४ त्यारेंआत्मानोजेस्वभावतेजधर्मइ  
त्यादिकपरमात्मानां आज्ञानुस्वरुपविचारवुंतेपेहेलोपा  
यो हवेवीजोपायोअपायवीचीय अपायकेहेतांआत्माते  
नोजेविचार जेआत्माकेवांछे केजेवोफटकरत्ननिर्मलछे  
तेवोआत्मानिर्मल४ नेजेआकर्मरुपमेलछेतेपुद्गल४ तेहेचे

तनतुनहितुतो एकस्वरूपीये अनेकछेतेतोपुद्गलछे तुतो  
 तनअव्यावायछे एटलेतनेकगीवाधार्पाडावेनहि व  
 पीप्ताजेछतेपुद्गलनेवेतेतुनही तुअनतज्ञानमयवे जेश्र  
 नछेतेपुद्गलछे तुअनतदरशनमयवे अदरशनवेतेपुद्ग  
 तुअनतचारित्रमयवे अचारित्रतेपुद्गलछे नेतुअनंतवी  
 मयवे अशक्तीवानतेपुद्गलछे तुअरागीठेनेरागतेजडछे  
 अद्वेशीछे द्वेशतेपुद्गलछे तुअक्रियछेतुअमानीछे तुअ  
 अलोनीअवेदीअछेदीअभेदीअकचनीअवरणीछेतुअ  
 अगंधअफरसतुअप्राणीछेतेअजोनीअजरअमरछेइत्य  
 कआत्मानास्वरूपनाअनंतगुणछेअनेसामोप्रतीपक्षी  
 डतेनाअनंताजेदोशतेविचारतेनेअपायवीचयधर्मध्या  
 हिये हवेवीपाकवीचयधर्मध्यानकेहेताजेवीचीत्रप्रका  
 शुभाशुभकर्मनाजेउदेभोगववा तेनुंजेस्वरूपवीचारव  
 लेआठकर्मनीएकसोअठावनप्रकृती तेनोधंधउदयउ  
 णानेसतातेनास्वरूपनोजे विचारतथाएकसोचोवीस  
 तीपुन्यपापनीतेनोविचारते सर्वपुद्गलनोआगजाणीने  
 डवानोविचारतेथकी आत्मानेठोडाववातेविचार तेस  
 पाकवीचयधर्मध्यानकहीये हवेचोथुस्वरथानवीचय  
 ध्यानकेहेता चौदराजलोकतथाउर्ध्वअधो त्रीछोलोव  
 विचारतेसर्वस्थानके हेचेतनतुजन्ममरणकरीचुक्यो  
 काइताराजवनोअतआव्योनही माटिततारास्वरूपनी

खाणकरके ताराजन्ममरणमटेइत्यादिकजेविचारतेनेस्व  
 स्थानवीचधर्मध्यानकहीये हवेतेधर्मध्याननाचारलक्ष  
 णकहीयेछीये एकतोअगवतनीआज्ञानीरुचीहोय १ वि  
 नाउपदेशेपोतानास्वभावथकीजरुचीप्रगटथायनेसमकी  
 तपामे २ गुरुउपदेशथकीरुचीप्रगटे ३ अनेशास्त्रनाअ  
 र्थविचारवानीरुची ४ एचारलक्षणकह्यां हवेचारधर्मध्या  
 ननांआलवनकहीयेछीये गुरुसमीपेवाचनालेवी १ गुरु  
 पासेपाछंगणीवालवुं २ गुरुपासेशब्दअर्थनुंमेलववुं ३ गु  
 रुपासेधर्मकथानुंकेहेवुं ४ एचारधर्मध्याननांआलवनजा  
 एवां हवेधर्मध्याननिर्णयकरवारुपाविचारणातेनाचारभेद  
 कहीयेछीये प्रणातीपातादीकआश्रवद्वारनुंउपजवुं तेनां  
 जेउपायविचारीनेदूरकरवा १ आससारनेविपेजेशुना  
 शुचकारणमेलववा तेनोविचारकरीतेपणदूरकरवा २  
 अनतीसंसारनीजेसमताजेश्रेणी तेनाअनतपणानुंचीत  
 ववुं ३ वस्तुनापरणामक्षणक्षणपरावर्तनथांयवे एटलेप्र  
 जांयनुंपलटवुंसमेसमेछेज तेनुस्वरुपाविचारवुं ४ एटले  
 धर्मध्याननीचारअनुपेक्षाकही तेधर्मध्यानकह्यो.

हवेशुद्धध्यानकहीयेगीयेशुद्धकेहेतांनिर्मलसुद्धआत्मानुजे  
 ध्यान तेनेशुद्धध्यानकहीये तेनापायाचारप्रथक्तवितर्क १  
 एकत्ववितर्क २ सुक्ष्मकीरीयाप्रतीपाती ३ उगीनकीरीया  
 नीवृत्ति ४ हवेप्रथक्तवितर्ककेहेतां जेप्रथक्तप्रथक्तजुदा

जुदाद्रव्यगुणप्रजायनाविनर्ककेहेतां विचारवृत्तेपेहेलोपा  
 योते तैसक्षेपमात्रद्रव्यगुणप्रजायनोविचारकहीयेतीये  
 हवेद्रव्यतेकोनेकहीये जेनुरुपत्रणकालमावडलायनही  
 एटलेनुतभविष्यने वर्तमानएत्रणकालकहीये अनेगुण  
 प्रजायनुपरावर्तेनपणथाय, उदपातवयध्रुएत्रणलक्षणैक  
 रीनेरुहोतहोयतेनेद्रव्यकहीये अनेउत्पातनेवयएप्रजाय  
 नेविपेहोयअनेध्रुवतापणुतेद्रव्यनेविपेहोयअनेगुणप्रजाय  
 तेद्रव्यनेविशेलाये एटलेद्रव्यतेतेप्रजायनीगोडेकोडकाले  
 पलटेनही तेनेद्रव्यकहीयेतेस्वजावीकद्रव्य जेमजीवने  
 विपेज्ञानादिकजे गुणतथाअव्यावाधादिकप्रजायरह्याते  
 तथापुद्गलनेविशेवरणादिकजेपरजाय तथामलवावीखर  
 वादिकगुणरह्याते जेममृतीकाद्रव्यनेविशे जेआधारा  
 आधेप्रमुखगुण तथारक्तादिकपरजायरह्याते तेमपटद्र  
 व्यनेविशे ततुपरजायकहिये एटलेपटनाश्रवयवनीअपे  
 क्षायेकरिनेपरजायकेहेवाय इहाकोइकेहेशेकेतमे अपेक्षा  
 येद्रव्यपरजायकोहोछो पणकाइस्वजावीकपणेनहीतेने  
 कहिये जेपुद्गलस्कधमाहेद्रव्यपरजायतेअपेक्षायेजथाय  
 शामाटेजेपुद्गलनास्कधनुजेमलवु त्यारेएकस्कधद्रव्यथा  
 य अनेपाछातेवलीवेराइपणजाय नेस्वजावीकद्रव्यहो  
 यतेवेरायनही अनेद्रव्यएकनावेथायनही माटेइहाअपे  
 क्षीतद्रव्यकेहेवाय कदापीकोइकेहेशेके त्यारेपरमाणुद्र





र्थे॥ हवेस्वजावीकहेताद्रव्यजावी एतलेद्रव्यतेगुणकहि  
 ये एतलेजीवनोपयोगगुण पुद्गलनोग्रहणगुण धर्मास्ती  
 कायनोगतिहीत्वगुण अधर्मास्तीकायनोस्थितित्वगुण आ  
 कास्तीकायनोअवगाहनाहीत्वगुण हवेकर्मजावीतेद्रव्य  
 नाजेपरजायकहिये एतलेजीवनेनरनरकादिक परजाय  
 पुद्गलनेवरणगंधादिकनुंपरावर्तवु तेपरजायकहिये तेद्र  
 व्यादिकनात्रणलक्षणवे चित्र १ अचित्र २ चित्राभिन्न  
 ३ हवेजेचित्रकेहेतापरदेशनाअवीभागथीत्रीवीधछे ए  
 उपचारेजाणवुएतलेलक्षणादिकथीअभिन्नवे अनेएकएक  
 मात्रणत्रणभेदआवे तेथीत्रणलक्षणबांध्यां तथात्रणलक्ष  
 णउत्पातवयनेध्रुवरुपवे एवोपदार्थएकजएजिनवचननुंप्रमा  
 णवे एतलेद्रव्यगुणपरजायनुचित्रपणु खुलासेदेखानी  
 चेछीये एकमणीरत्ननीमालावे तेमालानुंजेकोइतेजरक्त  
 त्वादिपणु तेथीमालाअलगीवे तथातेमणीरत्नथकीपण  
 अलगीवे तेमजएद्रव्यशक्तिगुणपरजाय व्यक्तवथीअल  
 गाछे तथापिएत्रणेएकप्रदेशसंबधेवलग्यावे जेमणीरत्न  
 छे तेपरजायजाणवा तेरक्तत्वादिकतेजतेगुणजाणवा ने  
 मालातेद्रव्यकहिये एमद्रष्टातेअर्हियासमजवु आत्माते  
 द्रव्यज्ञानादिकतेगुण अव्यावाधादिकतेपरजाय तेशक्ति  
 तथागुणनीव्यक्तवताकरिये तेवारेतेद्रव्यथकीभिन्नछे त  
 थापिमुलस्वरुपेजोताएकप्रदेशसंबधेवलगीरह्यावेतेमअ

संख्यातप्रदेशोपजाणवा एटलेएपरोक्षवस्तुवे तथाघटा  
दिनोद्रष्टातदेइनेप्रत्यक्षदेखामियेछिये.

हवेजेघटादीकद्रव्य प्रत्यक्षप्रमाणेसामान्यविशेशरूप  
तेनुंअनुभवीयेछिये तेसामान्यउपयोगजोता मृतिकादी  
सामान्यजासेवे अनेविशेशउपयोगेघटादीविशेशजासेवे  
एटलेसामान्यमांतेद्रव्यरूपजाणवुंअनेविशेशतेगुणप्रजा  
यरूपजाणवुं हवेसामान्यनेद्रव्यकह्यो तेसामान्यवेप्रकां  
रनोवे तेदेखामियेछिये उर्धतासामान्यअनेत्रीर्यगसामा  
न्यतेमध्येउर्धतासामान्य तेद्रव्यनीशक्तिकहीयेतथापेहे  
लाअथवापढीजेगुणनुविशेशनुंजेकरवु तेसर्वमाहेएकरु  
पशक्तिरेहे जेमकंचननेकुंडलादिकसर्वघाटनेविशेषोतेरेहे  
एटलेपोतानीशक्तिसरखीराखे एटलेकंचननाअनेकघाट  
निपजे वलींतिघाटभागीनेबीजाघाटवनेएटलेजेमतेघाट  
नुंफरवुयायछे तेमकइकंचननुंफरवुंयायनही तेकंचनना  
पिंडनुंकुशलतापणानुंकारणकेटलुंकेप्रजायमाहेसेहेचारी  
पणरेहे अनेजोएकुडलादिकप्रजायनेविशे जोअनुगत  
कुंडलादिद्रव्यपणुं नमानीयेतेवारेसर्वेविपेक्षरूपथाय अ  
नेविशेशरूपयतांक्षणेकवादी बोधनोमतआवे अर्थवासर्व  
द्रव्यमाहेएकजद्रव्यआवे तेमाटेकुंडलादीद्रव्य तेमांसा  
मान्यपणसुवर्णादीद्रव्य अनुभववामांआवेछे तेप्राप्तउ  
र्धतासामान्यमानवा एटलेकुंडलादीद्रव्य थोडाप्रजा

यनेव्यापीछे अनेकचनादीद्रव्यधणाप्रजायनेव्यापीछेए  
 नरनरकादीद्रव्यनुंपणविशेषपणेसमजवु एसर्वेनीगमने  
 यनोमतछे अनेशुद्धसंग्रहनयनेनतेतोएकजद्रव्यआवे ते  
 वारेअद्वैतवादीनोमतआवे ज्यारेजीन्नद्रव्यमांजीन्नपरदे  
 शीकहीये अनेविशेषमाद्रव्यनीगतिएकरूपएकाकारछे  
 तेनेत्रीजगसामान्यकहीये तेदेखाडोयेगीये जेमतेकुडल  
 द्रव्यपोतानुंकुडलताद्रव्यपणुराखेछे हवेअहीयाकोइए  
 केहेशेके कुडलादीकनुजीन्नद्रव्यक्तवताकरी तेकुडलादीए  
 कसामान्यमाछे तेमसौवर्णपिडादीकनुकुशलतातेपणमा  
 मान्यतोत्रीजगसामान्यने उरधतासामान्यमाशोफरक  
 तेनेकहीयेजे काइसर्वथकीभेदहोयनेही देशथकीभेदहोय  
 एटलामाटेज्यादेशभेदजोयामाआवे अनेद्रव्यप्रजायनी  
 एकाकारप्रतीतउपजे तेनेत्रीजगसामान्यकहीयेअनेज्या  
 कालभेदजोयामाआवेआवताकालनीपरतीतउपजे तेनेउ  
 र्धतासामान्यकहीये अहीयाकोइमतवालाडीगवरादिक  
 एवुबोलेछेजे खटद्रव्यनीमांहेलीकोरे एककालद्रव्यना  
 प्रजायकेहेवा तेउर्वतापरचीयेछीये अनेकालविनापाच  
 द्रव्यनेपोतपोतानाअवयवनीसंधातेमलीरह्यातेनेत्रीजग  
 परचीयेते एतेनेमतेत्रीजगपरचीयेनोआधार कुडलादि  
 कत्रीजगसामान्यथाय तेवारेपरमाणुरूपअपरचीयेप्रज  
 यनोआधारजीन्नद्रव्यजोइयेपरतुत्रीजगपरचीयेनोविच

रवदूखुलासेथी : ङीगवराणुसारीदेवआगमनामाग्रथने  
 विशेछे हवेउर्धतासामान्यशक्तिना वेनेददेखामियेछिये  
 सर्वेद्रव्यपोतपोतानागुणपरजायनीशक्तिमात्रजोइये ते  
 नेओघशक्तिकहिये अनेजेकारजनिपजवानेतुरतथायते  
 वुंदेखिये तेकारजनीअपेक्षादेइनेजोतातेनेसमुचीतशक्ति  
 कहिये एटलेसमुचीतकेहेता वेहेवारजोगछे इहांद्रष्टां  
 तदेखामियेछिये पत्थरनेविशे धातुरहेली एवीजेकांकं  
 रियोतेने विशेकचनकहियेते केहेवायनही शामाटेके  
 एवातलोकनीरुचीमांआवे नही शामाटेकेलोककेहेशेके  
 पत्थरमांकचनकयांथकोआव्युं पणजोद्रष्टीदेइनेजोइयेतो  
 एपथरमाहेनुतोकाकरीमांपणकचनआव्युपणतेनेओघश  
 क्तिकहिये अनेजेकांकरीमाकचनकहिये एसर्वेनेरुचीमां  
 आवे कांकरीउंकलेनेतरतकचननीकले माटेतेनेसमुची  
 तशक्तिकहिये तथावीजेद्रष्टातेजेमघासनेविशेधीकहिये  
 तेओघशक्तिछे एघासगायप्रमुखचरेछे तेथीदूधदेछेतेदू  
 धमांवीनीशक्तिआवी तेघासनाप्रजावथकी एमअनुमा  
 नथीद्रष्टांतदेइनेजोइयेतो समज्यामाआवेपण तेकेहेवाय  
 नही शामाटेकेलोकनेरुचीनाआवे अनेदूधमाजेधीकही  
 येतेसर्वेलोकनीरुचीमांआवे तेसमुचीतशक्तिकहिये एट  
 लेनीकटजेकारजआवेथक तेनाकारणनेसमुचीतशक्तिक  
 हीये अनेपरंपराकारणकेहेतां घणुंदूरकारणरह्यु माटेते

नेत्रधशक्तिकहीयेतेवेनुअत्रकारणताअनेप्रयोजनताएबे  
 वीजानामपणछेतेजाणवु एआत्मद्रव्यमाटेएवेशक्तिखो  
 लावीयेछीये जेमजेनव्यप्राणीजीवनेपुर्वे अनंतापुद्गलप  
 रावरतनवीत्यातिदाहाडेपणउधपणेसामान्यधर्मनीशक्ति  
 हती अनेजोपुर्वेनहोती तोछेलेपुद्गलपरावरतेशक्तिक्यां  
 थीआवे ठतीप्रजायाविनासामर्थप्रजायथायनही माटेएपु  
 र्वनीअवस्थातेनेत्रधशक्तिकहीयेअनेठेलापुद्गलपरावरते  
 धर्मनीसमुचीतशक्तिकहीये एटलेआगलनाजेपुद्गलपरा  
 वरतनविशे जीवनेवालअवस्थाकेहेवायछे अनेठेलुपुद्गल  
 परावर्तनवाकीरहुं त्यांथीतेमोक्षजायत्यासुधीजोवनअव  
 स्थाकहीये एविचारहरीभद्रसुरीकृतजोगनीवीशीविशेक  
 ह्योछे एमएकएककारजनेविशे उधसमुचीतरुपअनेकश  
 क्तिएकद्रव्यनीपामीये तेसर्वेव्यवहारनयेकरीतेछेएटले  
 व्यवहारनयेकारणकारजनेद नानाप्रकारनामनायठे प  
 णनिश्चयनीतोद्रव्यनांकारजकारणअनेक परतुशक्ति  
 स्वभावजोता एकरुपजहृदयमांजापणथायठे अनेजोए  
 मनाहोयतो स्वभावनोनेदपडे स्वभावनोनेदपड्योत्यारे  
 द्रव्यनोनेदपडेमाटेदेशकालादिकनीअपेक्षायेकरीनेएका  
 नेककारणस्वभावमानतांकांडदोशनथी केमकेकालंतरनी  
 अपेक्षायेठे एटलेकारणमाटेस्वभावनु अतरनुतपणुठे  
 जतेणैकरीनेकाइतेनुनीफलपणुनहोय त्यांशुद्धनिश्चयने

यनेमतेतोकारणकारजमीथ्यावे एटलेकारजकारणकल्प  
नावे कल्पनायेकरीनेरहीतजेद्रव्यतेनेकहीये तेशुद्धथीर  
तारुपते तेनेद्रव्यजाणवोएमएशक्तिरुप द्रव्यकेहेतास  
त्तानीशक्तिग्रहणकरीनेकह्यो.

हवेव्यक्तीरुपकहियेछिये एटलेव्यक्तीकहेतांजेप्रगटप  
णेजेगुणपरजाययया तेप्रत्येदेखाडीयेछिये तेगुणपरजा  
यव्यक्तीपणेबहुंभेदेएटले अनेकप्रकारनाछे पोतपोता  
नीजातीस्वभाव स्वभावीककर्मभावीकल्पनाकृतआपआ  
पणावस्तुस्वभावमांवर्तेछे वलीकोइकशास्त्रवाला तथा  
मिंगंवरवालातेशक्तीरुपगुणमानेछे केमकेतेएवुंकहेछेके  
द्रव्यपरजायनुंकारणतेद्रव्यजछे तेमगुणपरजायनुंकार  
णगुणछे तेद्रव्यपरजाय द्रव्यअनथाभाव जेमनरनर्का  
दिगतीअथवा जेमद्विपरदेशत्रणपरदेशी आदिकजेखंध  
तेनोगुणपरजायगुणनो अन्यथाभावछे अथवाजेममती  
श्रुतादिविशेशअथवा भावस्तस्यादवादविशेशकेवल  
ज्ञानछेएमद्रव्यगुणनीजातीसास्वतीछे अनेपरजायथीअ  
सास्वतीछे एमएमनाकहेवामांआवे एवाततेकांइभापण  
मांवरावरआवतीनथी. एपणएककल्पनापोतानीछेअथ  
वातेवाशास्त्रोनीछे तथापीजुगतीएमलेनहि शामाटेकेसु  
मतीग्रंथनेविशे गुणपरजायनेजुदोकह्योनथी तेप्रत्यक्षए  
अथमांजोयामांआवे उक्तंचसुमतीग्रंथे-परीगमणप

ज्जातं अणोरणकरणे गुणतीतुल्लंघा तद्विणगुन्तीभण्डः  
पञ्चवणत्रदेशणाजह्मा. १

जेमकर्मजावीपणानुपरजायनुलक्षणछे तेमअनेकरतिं  
करवुंतेपणसर्वेपरजायनालक्षणछे पणद्रव्यतोएकजठेअ  
नेज्ञानदर्शनादिकजेनेदकरेठे तेपरजायजठे पणगुणना  
कहिये शामाटेकेपरमात्मानादेशनानेविशेतोद्रव्यपरजा  
यनीदेशनाछे पणद्रव्यगुणनीदेशनानथी एगाथानोएज  
अर्थछे त्वारेकोइतर्ककरशेकेगुणठे तेपरजायधीजुढानथी  
एवुज्यारेतमेकहेशेतोद्रव्यगुणपरजाय, एत्रणनामशावा  
स्तेकहोछो तेनोउत्तरजेएतोवविक्षाठे तेतोनेदनयनीक  
ल्पनातेयकीकहेवायठे परंतुधीने धीनीधाराएकाइनोखी  
नथीबोलवामाधीनेधीनीधाराबोलायखरूपणएकजतेमज  
स्वभावीनेकर्मजावीकहिने गुणपरजायनिन्ननिन्नसमजा  
ववामाआवेपरतुमुलरवजावेतोएकजठे अनेएभेदसर्वेउप  
चरीतठे, तेमाटेतेनेगक्तिकेमकहियेपरमार्थजोतांजुदाप  
णुदिसतुनथी शामाटेकेउपचरीतस्त्रीकांइहावजावकरेन  
हितेमउपचरीतेगुणशक्तीपणनधरे तेमाटेजेगुणपरजा  
यथीभिन्नमानेछे तेनेदोपणदेखाडियेछिये केजोद्रव्यपर  
जायर्थकीगुणएवोपदार्थजुढोहोततो, त्रिजिनयपणकही  
जोइयेपणसुत्रनेविशेतोवेजनयकहिठे द्रव्यार्थअलेपरजा  
यार्थ जोगुणपदार्थ नोखाहोततोगुणार्थनयजरुरकेहेता

ते उक्तं च सुमती ग्रंथे ॥ दोडि एणं या न गवया दवड्डीय  
पजवठीयाणीययो ॥ जइ पुण गुणो विहूणो गुण ठीयण ओ  
विजुजंतो ॥ १ ॥ जं च पुण जगवया ते सुते सुमुते सुगोयमाइ  
ए ॥ पजवशणाणीयया वागरीयाते एं पजाया ॥ २ ॥

रूपादीकने गुण कहिये ते सुत्रे कंइ कह्युन थी शास्त्रमां  
तो एवाशब्द ते के वन पजवा गंध पंजवा रस पजवा स्वास  
पजवा इत्यादीक परजाय शब्द बोलाव्याछे अने जे एक  
गुणो काळो जावत अनंत गुणो काळो इत्यादीक जे ठाम ठाम  
शब्द छे ते तो गणीत शास्त्र नाछे एटले ए परजाय नी सामा  
न्य वीशे शनी गणतरी आशरीते पण ते वचन कांइ गुणास्ती  
कने अवीखये वां चीन थी उक्तं च सुमती ग्रंथ मध्ये ॥ २ ॥ गु  
ण सदमंतरेणावितणु पजव विशेष शंखाण ॥ सोझइ एं वरं  
संख्याण सथद्ध मोणय गुणोती ॥ १ ॥ जं पइ जं पंती अत्थीस  
मये एग गुणो दश गुणो अनंत गुणो रुवाइ परीणामा जणइत  
महाविशेषो ॥ २ ॥ जह दश सुदश गुणं मीय एगं मी दशतणं  
शमतवेव ॥ अहीयं मी विगुण सदेत हे वयेयं पीदठव ॥ ३ ॥

एग गुण परजाय थी परमार्थ द्रष्टी निम्न न थी तो ते द्रव्य नी  
पेरेशक्ती रूप गुण के म के हे वाय परजाय नाद लने गुण नी  
शक्ती रूप को होछो तेने वीशे मोहो दुंदोषण आविहे तेने दोष  
ए देखा डीये छीये के जो गुण परजाय नुंदल कहिये तो उपा  
दान कारण पण ते जथाय त्यारे द्रव्य ज्ञाने कहिंशुं ने द्रव्य नुं



कामज्यारेगुणैक्यं त्वारेद्रव्यं नुं कारणशूरहं अनेगुणनेप  
 परजायएवंपदार्थं ज्यारेकहीशुत्यारे त्रीजोपदार्थनठयोते  
 वारेकेहेशोकेअमेकहीयेगीयेकेद्रव्य परजायनेगुणपरजाय  
 नुंकारजभिन्नछे तेमाटेद्रव्यगुणरूपकारणजुदुकलपीयेते  
 नोउत्तरकेएवातकाइसजवतीनथी शामाटेकेकारजमाटेका  
 रणशब्दनोप्रवेशवे तेणेएकारणजेदकारजनो पणजेद  
 धायअनेकारजभेदययो तेवारेतो प्रवेशपणधाय तेनेका  
 रणभेदधाय एअन्योअन्याओयनामेदोपणउपजे तेमाटे  
 गुणपरजायजेकहीये तेगुणपरणमवानो हेतुभेदकलप  
 नारुपतेयीजकेवलसभवे पणपरमार्थेनही अनेजेद्रव्यगु  
 णपरजाय एत्रणनामजेकहीये तेपणभेदउपचारनयेकरी  
 नेसमजवाएवीरीते द्रव्यएकगुणपरजायअनेकछे परतु  
 माहेमाहेपरस्पर भेदवीचारवो एमज आधाराधेयप्रमुख  
 भाविकेहेतास्वभाव तेहीजमनमाहीवीचारवो.

हवेतेहिजस्वरूपविवरीने देखाडियोछिये घटादिकजे  
 द्रव्यतेआधाररूपदिसेछे जेमाटेएघटरूपादिकतेथकीज  
 णायवे एटलेगुणपरजायरूपरसादिक आधियपणेद्रव्य  
 उपररह्याछेएमआधाराधीयभावएवीरीतेद्रव्यथीगुणपर  
 जायनेजेदवे तथारूपादिकगुणपरजाय एकडद्रिगोचरक  
 हेतावीपयछे एटलेजेमरूपचक्षुडद्रिजजाणे अनेरसजी  
 भद्रिजाणेइत्यादि अनेघटादिद्रव्यवे तेवेइंद्रिगोचरछे

एटलेचक्षुर्इंद्रियकीदिठामात्रावे अनेस्पर्शइंद्रियकीपणज  
 णाय एटलेएनेविशेएवेइंद्रिनोविपयठे तथान्यायकमत  
 नाअनुमारथी विचारिनेजोइयेतो त्रिजिइंद्रिनोपणविप  
 यठे एटलेघ्राणइंद्रियेकरीने पणद्रव्यप्रत्यक्षठे गंधवति  
 पृथ्विइतिवचनात् इत्यादिकविचारतांज्ञाननेविशेभ्रांतप  
 णुंथायतेमाटेएकअनेकइंद्रिग्राह्यपणेद्रव्यथकीगुणपरजा  
 यनेनेदजाणवो गुणपरजायनेमांहोमाहेनेदतेस्वजावि  
 कपणकहिये कर्मजाविपणकहिये एवेकल्पनांथकीजाण  
 वा तथासंज्ञाकेहेतांनामतेथकीपण भेदद्रव्यनाम गुणना  
 म प्रजायनाम एसरूपागणनादिकभेदतो द्रव्यजोइये  
 तोछछे अनेगुणअनेकठे प्रजायपणअनेकठे एमनेद  
 ज्ञाननुंविचारवु एटलेद्रव्यथकीगुणप्रजायनोखाकरवा  
 कोइठेकाणेगुणथीप्रजायनोखाकरवा कोइठेकाणेप्रजा  
 द्रव्यमासमाववा कोइठेकाणेप्रजाय गुणमासमाववा को  
 इठेकाणे गुणप्रजायएवेद्रव्यमासमाववा एवीरीतेध्यांन  
 करवुतेनेशुक्लध्याननो पेहेलोषायोकहीये पणएटलो  
 व्रीशेशछेके आद्रव्यनाविचारनेवीशे अन्यमतनीअपेक्षा  
 ओतथाअन्यशास्त्रनी अपेक्षाउनांखठिते त्यांध्यांनमांन  
 होय ध्याननेवीशेतो स्वआत्मद्रव्यगुण प्रजायनोजवी  
 चारहोयएटले प्रथमपायोशुक्लध्याननोकह्यो.  
 १ हवेवीजोपायोएकत्ववितर्ककहियेतीये एकत्वकेहेतां

जेगुणप्रजायसहीतद्रव्य एनेएकत्वकहीये तेनोजेविचार  
 तेनेवीतिकेकहीये हवेपूर्वेजेभेदप्रथक्तप्रथक्तजुदाकरीते  
 विचार्युहत्तु तेतोव्यवहारनयनोपक्ष अनेतेदसमागुणठा  
 णासुधीहोय अनेआजेपायोतेतोशुद्धनिश्चयनयनुस्वरूप  
 वे अनेबारमेगुणठाणेलाये एपायाथकीघातीकर्मनोक्षय  
 करीनेकेवलज्ञानपामे एसर्वआपायानेविशेछे ज्ञानदरश  
 नचारित्रिसहीतआत्माएकछे तेअहीयाज्ञानादिकगुणप्र  
 जायाआत्माथकीजुदोवीवरवोहोयनही अहीयातोफक्तए  
 कत्वस्वरूपनोविचारछे अहीयांसक्षेपथकीअनेदज्ञानक  
 हीयेबीये हवेजेअनेदपक्षनेअनुसरीने जेद्रव्यादिकनोगु  
 णप्रजायनोजोएकांतनेदजनाखीयेतो बीजाद्रव्यनीपेरे  
 स्पद्रव्यनेविशेषण गुणगुणीजावनोउछेदथइजाय केम  
 केजीवद्रव्यनागुण ज्ञानदरशनचारित्रइत्यादिकछे तथा  
 पुद्गलद्रव्यनामलणवीखरणादिक गुणतेपोतपोतानागु  
 णपोतपोतानादरपने गती ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ जेका ॥ ॥

केद्रव्यनेविशेगुणप्रजायनोअभेदजसवधे नेजोद्रव्यने  
विशेगुणप्रजायनोसमवायनमानीये तोसबंधभिन्नकल्पि  
ये तेवारेअन्यअवस्थादोपणथाय जेमाटेगुणगुणीथीअ  
ल्गोसमवायसबंधकह्यो तोतेउपरद्रष्टांतकहियेछिये प  
टनेपटनुंउजलतापणुतेकइजुदुबेनहि पटतेद्रव्यछे अनेउ  
जलतापणुं तेगुणप्रजायादिके माटेएकत्वजछे अनेक  
दापिगुणप्रजायनोसमवायद्रव्यमानहिमानो तोतेगुण  
प्रजायनेकोइबीजोसमवायपणजोइये तोतेउजलतापट  
द्रव्यनेनथीवलगीतोएनोसमवायकोएद्रव्यसाथेते तेतो  
कांइबीजाद्रव्यसाथेदीसतुनथी माटेगुणप्रजायतेपोता  
नाद्रव्यमांछे तेकांइजुदानथी अनेकदापीअन्यद्रव्यनीसा  
थेसमवायमेलववाजइयेतो वलीअन्यअन्यनेमेलवाय ए  
मकरताकंइएकठेकाणेरुथीरवेसेनही अनेजोसमवायनुं  
स्वरुपसंबंधअभिन्नपणेमानेतो गुणगुणनुस्वरुपसंबंधअ  
भिन्नमानताशुवगडेछेजेफोक्रटनवोसंबंधउजोकरवोनवी  
कटपनाकरवीएमाशुहाथमाआवेछे तथाजोअभेदनहीमा  
नोतोतमनेमोटुवाधकआवशे तेपूर्वसोनुहतुतेजकुमलथयुं  
छेतथाजेपूर्वमृतीकाहती तेजकोठलाप्रमुखआकारबंधा  
णोछेअथवाजेघटप्रथमरक्तवरणहतोतेजशामथयोएवुंस  
र्वलोकनेअनुभवशुद्धवेहेवारनघटे जोअज्ञेदस्वभावद्रव्या  
दीकत्रणेनेनहोयतोबीजुवाधकपणदेखाडीयेछीयेकेखंधक

हीये तथाश्रवयवनेदेशकहीये एमश्रवयवनोजोभेदमानी  
 येतो वमणोन्नारखधमाथयोजोइये शामाटेके एकखंधनो  
 नारवीजोश्रवयवनोन्नार एमवमणोन्नारभेदमानताथयो  
 जोइये जेमके एकलाडुतेशेरनोछे तेलाडुतेद्रव्यते अने ए  
 नोजेवातपीतहरवादीकगुण तथाश्वेतादीकप्रजाय एम  
 ज्यारैलाडुथकीगुणप्रजायजुदामानीये त्यारेशेरन्नारतो  
 लाडुनोहतो तथागुणनोपणपाशेरन्नारजोइये तथाप्रजा  
 यनोपणशेरन्नारजोइये तेवारेशेरनोलाडुतेत्रणशेरजोइये  
 तेतोवातसजवेनहीत्यारे एगुणप्रजायतेद्रव्यते एमसमज  
 वुं पणजुदुनसमजवुं अथवानवान्यायक एमकेहेठेकेश्रवयव  
 नाभारथकी श्रवयवीनोभारअत्यंतश्रोठोते तेनेमतेद्वीपर  
 देशादीकखधमाहेकंडएउतकष्टोन्नारनथयोजोइये पणते  
 मीथ्याछे शामाटेजेद्वीपरदेशीखधएकलापरमाणुनीअपे  
 क्षायेंश्रवयवीते अनेपरमाणुतेश्रवयवछे त्यारेपरमाणु  
 रताद्वीपरदेशीमात्रोभारजोइये ने एकपरमाणुपरदेशक  
 रताद्वीपरदेशीखधवमणोते तेउछोकेमथवानो अथवाएक  
 परमाणुमाहे उत्कष्टुभारेपणुमानीयेतो रूपादीकविशेष  
 णेप्रणम्याजोइयेतो द्वीपरदेशीमाहेकेमनमान्याजोइये ए  
 माटेअजेदनयनांववमानीयेतो परदेशनोभारतेतेहजखंध  
 नाभारपणेप्रणमे जेमतंतुरुपपटरुपपणेप्रणमे जेमएकशे  
 रततुनोपटवणे तेपटपणएकशेरनोथाय तेवारैगुरुपणानो

दोषनलागे' त्यांकोइकेहेशेके तमेएकजद्रव्यएकत्वपणे  
 मानोछो अनेजेदमानतानथी तोकोइमेलातप्रमुखआवा  
 सछे तेनेविशेकाष्टपत्थरलोढु माटीचुनोइत्यादिकनाप्रजा  
 यमलीनेएकजवनघरथायवे तेनेएकद्रव्यकोहोछोएकघर  
 इत्यादीकलोकवेहेवारमाटे एकद्रव्यकांइमनायनही शा  
 माटेकेएकद्रव्यमां द्रव्यगुणप्रजायनोअभेदहोयतो कही  
 येपणअहीयांतोद्रव्यघणावे माटेएकद्रव्यनमनाय पापा  
 ण काष्टइत्यादीक द्रव्यनोखानोखावे माटेनमनाय जेए  
 कजद्रव्यहोय तेनागुणप्रजायतेअभेदमागणाय जेघटने  
 घटनोजलधारणगुण रक्ततत्त्वादीकप्रजायतेअनेदछेते  
 कांइघटयकीजुदानथी तेमजआत्मद्रव्यतेजआत्मगुणतेज  
 आत्मप्रजायएवोव्यवहारअनादिसिद्धते जेजिवद्रव्यअ  
 जिवद्रव्यइत्यादिकजेव्यवस्थासहितजेव्यवहारथायछेते  
 गुणप्रजायनाअनेदर्थीनिपजे ज्ञानादिकगुणप्रजायथीअ  
 भिन्नद्रव्यतेजिवधर्म मलणविखरणादिकगुणप्रजायथी  
 अभिनतेअजिवद्रव्य नहितोद्रव्यसामान्यथीविशेशसं  
 ज्ञाथाय तेमाटेसामान्यकांइरहेनहि अनेद्रव्यगुणएवोश  
 द्दपणरहेनहि अनेजेद्रव्यगुणप्रजाय एत्रणनामछे एत्र  
 णेनामस्वजातीछे अनेएकत्वपणेप्रणमेछे तेमाटेएत्रणेनेए  
 कजप्रकारेकहिये तेमआत्मगुणप्रजायनेएमजाणवुं अ  
 नेजोद्रव्यगुणप्रजायने अनेदतापणुनथी तोकारणका

रजनेपणञ्जेदतापणुनाहोय त्वारिमृत्तिकादिकारणथी  
 घटादिकारणकेमनिपजे कारजमाटेकारजनीशक्तिहो  
 यतो जकारजनिपजे तेविनासर्वथाकारजनिपजेनहि कार  
 णमाहेअवतीवस्तुनीप्रणतीननिपजे जेमससानेसिंघना  
 थायशामाटेकेससानेविशे सिंघपणानीशक्तिरहीनथीअ  
 थवाविजेद्रटातेएजघटवेलुकानोकानवनावेपणवेलुकामां  
 घटपणानीशक्तिनथी एशक्तितोमृत्तिकामांजछे माटे स  
 त्तामाजे शक्तिहोय तेजगुणप्रजायमांव्यक्तीपणेप्रगट  
 थाय वास्तेजेकारजमाटे कारणनीसत्तामानिये त्वारेअ  
 नेदपणुसहेजजआवे अहियाकोइकहेशेजेकारजउपन्या  
 पहेलांजोसत्तायेकारजकारणनेविशे रह्युंवे तोप्रथमजका  
 रजकेमनथीदेखातु तेनोउत्तर कारजनथीउपन्युंत्यासुधी  
 कारणमाहेकारजनीशक्तिद्रव्यरुपे तेरोभावनीठे तेणेक  
 रीनेकारजजणातुनथी पणसामग्रीमलेत्वारेगुणप्रजाय  
 नीव्यक्तितथीआविरजावथायवे तेणेकरीकारजदिसेछेए  
 टलेतेरोजावतथाआवीरजावएवे दरशनादरशनजणाव  
 वारुपकारजनापरजायविशेकजाणवा तेणेकरीआवीरजा  
 वनेसत्यअसत्यविकल्पदोपणनहोय शामाटेकेअनुजवने  
 अनुसारेपरजायविकल्पवे अहियान्यायंकमतवालाएवु  
 कहेछेकेअतितकालविशे जेघटादिकअवतावे तेनुंजेमज्ञा  
 नहोयतेपणअवतुवे तेमघटादिककारजअवताजमृत्तिका

दिदलथकीसामग्रीमलेनिपजशेएअछतानुंज्ञानहोयतोअ  
 ठतानी उत्पतीकेमनहोय एटलेघटनुकारणदंडादिकअमे  
 कहियेछिये त्यांजाघवपणुठे तमारमेतेघटाजीव्यक्तिनुंदं  
 डादिककारणकहेबुत्यांगोरवहोय विजुअजीव्यक्तीनुंका  
 रणचक्षुप्रमुखठे पणुदंडादिकनथी तेमाटेजेदपक्षजद्रव्य  
 घटाजीव्यक्तनुंकारणदंडाभावपणजेघट चक्षुजावेगोरव  
 नथी एमजेबोलतादोपलागे अठतानीउत्पतीएवुंकहेवुते  
 पणमिथ्यावारताठे अनेभुतकालनेविशे पणघटादिक  
 पदार्थअछतानथी परजायार्थथीनथी पणद्रव्यार्थथीनि  
 त्यजठे अनेनिशटघटपणमृतिकारुपठे तेतोसर्वथाअस  
 त्यमार्गठे तेनभकुशमवतथाय जेएवुंबोलेछेकेसर्वथाअछ  
 तापदार्थनुंसर्वज्ञानमाहेभापणछे एवुंकहेवेतेनेमोटोदोष  
 आवेठे तेदेखामियेठिये केजोज्ञाननेस्वजावेजअठतोअर्थ  
 अतीतघटप्रमुखनोचासे एवुंमानीयेतोसर्वसंसारज्ञानना  
 कारजठे एटलेवहाजआकार अनादिअविद्यावासनाए  
 अठताचासेठे जेमस्वप्नमाहेअठतापदार्थभासेठे एमवहा  
 जआकाररहीतशुद्धज्ञान तेबोधनेजहोय एटलेजेपुर्वेक  
 ह्यांएवांवचनजेबोलवाथकी एजोगाचारनामात्रिजोबोध  
 तेनोपक्षयाय तेमाटेअठतानुंज्ञाननहोय तोकोइकहेशेके  
 तमनेकेमजाणवामांआव्युं केअतीतकालेघटहतो तेनोउ  
 त्तरजेअतीतघटहमणांपणजाणीयेठियेजामाटेजेद्रव्यथीठे



तां अतीतघटनेविशेषवर्तमान गयाकालरूपप्रजायथी हम  
 णांपणअतीतघटजाएयोजायछे अथवानीगमनयनेमते  
 अतीतकालनेविशे वर्तमानतानोआरोपकरीयेछिये तेस  
 र्वथाअछतीवस्तुनंज्ञाननथाय एटलेधर्मजेअतीतगयाका  
 लनेविशेजेअवतेकालेघटनहितो अभावकालेभासेठेअथ  
 वाधर्मअतीतघटअछतेकालेभासेठे एमतुजनेचीतमाहेशु  
 भासेछे तेसर्वेअतीतअनागतवर्तमानकालेनिर्भेपणेभासे  
 ठे एद्रष्टातजोतातोससासिधपणजाएयुंजायएमनयी शा  
 माटेकेअछताअर्थनोबोधनहोय निश्चेएकारणकारजनो  
 अनेदछेजतेद्रष्टातेकरीने द्रव्यगुणप्रजायनोपणअनेदछे  
 ज्ञानादिकगुणप्रजायेकरीने आत्मापणअनेदछे एवीरिति  
 एकत्वभावथाय परंतुसमासेवातआवीतेथीवेयेनयनास्वा  
 मीदेखाडियेछिये एटलेभेदनयनोस्वामी तेन्यायकठेअने  
 अभेदनयनोस्वामी तेसखठेअनेजिनमतवालाअनेदतथाअ  
 नेदवेहुनयनास्वामीठे एटलेएकेनयनापक्षपातीनथीस्या  
 दवादपक्षनाअधिकारीछे उक्तंच अन्योअन्यपक्षप्रतिप  
 क्षभावात् व्यथापरमसरिण प्रवाद नयानशोपानविशे  
 पमीय नपक्षपातीसमयस्तथाने १ यएवदोपाकिलनित्य  
 वादे विनासीवादेविशमस्तएव परस्परंसीपुकंटकेपु जय  
 त्यधृष्यजिनसासनते २॥ माटेजिनस्यादवादपक्षीछे हवे  
 एवोजेएकत्वभावतेशुद्धध्याननोविजोपायो वारमेगुणंठा

ऐहोय एटले एकत्ववीतर्कविजोपायो कह्यो. तथा सुक्ष्मक्रिं  
या प्रतिपाती त्रिजोपायो तथा उच्छीनक्रियावृत्तिचोथोपायो  
एकेवलपाम्यापठो मोक्षजवाना अवसरनाछे एटले एध्यां  
नतपकह्यो ५

हवेकायोतसर्गछटोतपकहिये छिये. एटले कायाप्रमुखउंस  
राववुं तेने कायोतसर्ग कहिये एटले उपाधीनु उंसराववु तथाक  
खायनु उंसराववुं. तथा दूरध्याननु उंसराववुं तथा कायानुं  
उंसराववु अने आत्मस्वरूपने विगेरमवु. तेने कायोतसर्ग  
तपकहिये एछ प्रकारे अभ्यंतरकहेतां आत्मा नीमाहेली  
कोरेरह्यां जे कर्म तेने वालवाने समर्थ तेने अभ्यंतरतपकहि  
ये एटले लोक एने तपस्वीना जाणोपण समजुहोय ते तो एने त  
पस्वीजाणे अने कर्मथी गोमाववासमर्थ एहिजतपछे माटेत  
पतो एने कहिये एटले निर्जरानुस्वरूपकह्यु ८

हवे मोक्षतत्व कहिये छिये एटले मोक्षकहेता जे कर्मथकी  
जिवने मुकाववुं.

शिष्यवाक्य-स्वामी तमे जे निर्जरा कहि ते कर्मथकी निर्ज  
रवुते मुकाववुं ज कह्युहुतु अने अर्होवली मोक्षतत्व जुदोक  
हो गेते माशु निन्नपणछे-

गुरुवाक्य-हे भद्र निर्जरा ते देशथकी कर्मनुछां मवुंछे अने  
सर्वथकी कर्मनु मुकाववुं तेने मुक्ति कहिये अने निर्जरा तो नि  
गोदिया जिवने पणछे अने मुक्ति तो गर्जजपंचंद्रीमनुप्यचा

रीत्रीयानेचौदमेगुणठाणेढे

शिष्यवाक्य--स्वामीतमेनिर्जरानावारजेदकह्या तेमां  
कयाभेदनेविशे निगोदीयानेनिर्जराढेजेतमोवताचोछो

गुरुवाक्य--निर्जरानावेजेदढे एकसकामनिर्जराविजि  
अकामनिर्जरातेअकामनिर्जरानोभेदनिगोदीयाथीमामी  
नेमनुष्यसुधीछे एटलेअकामकहेताजेनेज्ञानदर्शनचारी  
अनीउलखाणनथी पणढेदनजेदनाटिकदुखसहीनेजेकर्म  
नुंछुटवु तेनेअकामनिर्जराकहिये जेममनुष्यतथात्रिजंघ  
पचद्रीघणाकठोरकर्मकरीनेनकेंजाय त्यानकंनाछेदनभे  
दनखमीनेकर्मनिर्जरे तथामनुष्यत्रिजचसमकितविनाना  
जिवतपक्रियाकष्टप्रमुखसहीने शुभकर्मबाधीनेदेवतामां  
जायतेदेवतासंबवीयासुखजोगवीनेकर्मछुटे तेबन्नेनेअ  
कामनिर्जराकहिये तथाजेजिवसमकितादिगुणपाम्योअ  
नेज्ञानदर्शनचारीअनावलयकी कर्मनिर्जरेतेनेसकामनि  
र्जराकहिये तेविचारश्रीभगवतीजिनेविशे वालमरणत  
गपणितमरणनाअधिकारथकीसमजजो हवेजेसर्वकर्मथ  
गिरहीतथाय तेनेमुक्तिकहिये एटलेजिवनाअसख्यातप्र  
शेढेनेअकेके प्रदेशेअनताकर्मवलग्याछे तेथकीछुटेतेने  
क्तिकहिये

शिष्यवाक्य--स्वामी जिवतोएकद्रव्यअखंढे. तोप्रदे  
प्रदेशेमाहीजेदीनेपेसीगयाकेशीरीते एकर्मवलग्यांढे.

गुरुवाक्य—हे भद्रजिवते ते अखडछे ते जिवथकी जिवनां प्रदेश नो खानपमे परंतु ए प्रदेशना आकार नुं फरवुछे तेथी प्रदेश अके कानी अणपणवधायतथा लोकाकाशने पुरवोहो यत्यारे जेटला आकाश प्रदेश लोकाकाशनाते ते टले प्रदेशे आत्मानो अकेक प्रदेश वेहेची अपाय माटे ए प्रदेश आत्माना एवीरी ते जिन्न जिन्न थाय पणद्रव्यथकी जुदोनपडें हवे एजे कर्मवलग्यांते चेतनने ते खीरनीर रुपवलगीर ह्यांछें ते थाजे मकचन प्रमुखधातुने अग्निमांघालेथी अग्निने धातु एकमेक थडरहेछे तेम आत्मा साथे कर्मवलगीर ह्यांछे ते कर्म सर्व छुटे तेने मुक्तिकहिये ते सिद्धना पंदर जेदछे.

शिष्यवाक्य—स्वामी मुक्तिना अधिकारने विशे सिद्धनुं शुं कांमछे.

गुरुवाक्य—मुक्तिकहिये अथवा सिद्धकहिये एवने एक जनामते अने मुक्तिकहेवानुं कारण केटलुछेके अहियां कर्म थकी मुकावुतेनुं नाम मुक्ति तोजे कर्म थकी मुकाणो एजजिव सिद्ध अहियांका इविजो अर्थछे जनहि.

शिष्यवाक्य—स्वामी सिद्धतो लोकने अंत होय.

गुरुवाक्य—सिद्धतो कर्म थकी मुकाणो एजसिद्ध पणतेने रहेवानुं थानक लोकने अंतते पणत्यांकां इवधाउने सिद्धसम जवानहि त्यांतो सिद्धजिवपणते अने संसारी जिवपणछे माटे अही कर्म थकी मुकाणो तेने सिद्धकहिये हवे तेनां पंदर.

जेदतेदेखाडियेछिये तिर्यकरसिद्ध १ तिर्यकरविनाना  
 सिद्ध २ तिर्यसिद्ध ३ अतीर्थसिद्ध ४ ग्रहस्तीलिगेसि  
 द्द ५ अन्यलिगेसिद्ध ६ स्वलिगेसिद्ध ७ स्त्रीलिगेसिद्ध ८  
 नपुशकलिगेसिद्ध ९ पुरुषलिगेसिद्ध १० प्रत्येकबोध  
 सिद्ध ११ स्वयंबोधसिद्ध १२ बुधंबांधीसिद्ध १३ एक  
 सिद्ध १४ अनेकसिद्ध १५ हवेतिर्यकरसिद्धतेमहावीर  
 स्वामीप्रमुखजेतिर्यकरमोक्षेगया तेनेतिर्यकरसिद्धकहि  
 ये १ तिर्यकरविनानासिद्ध एटलेजेगौतमादिगणधरसि  
 ध्यातेनेअजनसिद्धकहिये २ तिर्यसिद्धएटलेजेनगवाननुं  
 तिर्यप्रवर्त्यापणीजे एटलेजेरिखवदेवस्वामीयेप्रथमतिर्य  
 प्रवर्ताव्युत्पारपछीजेमोक्षेगया तेनेतिर्यसिद्धकहिये एट  
 लेतिर्यकहेता जेसाधुसाधवीश्रावकश्रावीका एच्यारप्र  
 कारनुतिर्यकहियेएसाधुप्रमुखनेजंगमतिर्यनेभगवानेएम  
 नेजतिर्यकह्याछे तेतिर्यथाप्यापहेलाजेमोक्षेगयातेनेअती  
 र्थसिद्धकहिये तेमरुदेव्यामाताप्रमुखएचोथोजेद ४ ग्रह  
 स्तीलिगेकहेताससारपणामारह्योथको कर्मखपावीमोक्ष  
 जायतेनेग्रहस्तीलिगेसिद्धकहिये .

शिष्यवाक्य-स्वामी चारीत्रविनातोमुक्तिनीनापाडो  
 ओ तोग्रहस्तीपणामाकेममोक्षेगया.

गुरुवाक्य-चारीत्रविनामुक्तिहोयनहि पणचारीत्रनावे  
 प्रकारेएकनिश्चेविजोव्यवहारजेव्यवहारचारीत्रछेतेसंसा

रनोत्यांगकरवोतथापंचमहाव्रतउचरवाइत्यादिकसर्वेएव्य  
वहारचारीत्रछे तेनेविपेकाइमुक्तिछेनहि तेतोअभवीप  
एआदरेवे अनेमुक्तितोनिश्चेचारीत्रमावे, तेनिश्चेचारीत्र  
तेआत्मरमणनेविपेरह्युवे तेज्ञानध्यानथीकरीनेहेठलना  
गुणठाणानिछांमृतोजायअनेउपरनागुणठाणानेआदरतो  
जायएमअनुक्रमेचउदमेगुणठाणेतइनेमोक्षेपणजायएस  
र्वेआत्मान्नीरमणताज्ञानध्यानरुपउपयोगतेमाछे एकाइ  
बहारनाव्यवहारचारीत्रमामुक्तितथी माटेग्रहस्तीनेजा  
वचारीत्रआवेतोमोक्षेजाय

शिष्यवाक्यः--कोइग्रहस्तीमोक्षेगयाकेएकेहेणीजछे.

गुरुवाक्य--मोक्षेगयाछेकेहेणीखोटीहोयनही प्रत्यक्ष  
मरुदेव्याग्रहस्तावासेजमोक्षेगयाछे एणेकयांसाधुपणु  
लीधुछे एटलेग्रहस्तीलीगेसिद्ध ५ अन्यलीगेसिद्धएटले  
जैनसासननालीगधारणविना अन्यदर्शनीनाजेखवाला  
मोक्षेजाय तेनेअन्यलीगेसिद्धकहीये.

शिष्यवाक्य --स्वामीजैनसासनविना बीजानेतोमुक्ति  
छेनही अन्यदर्शननेविपे परीब्राजकनीपाचमादेवलोक  
सुधीनीगतीछे, अनेआजीवीकामतीनेवारमादेवलोकसु  
धीनीगतीछे बीजासर्वनीतेथीनीचिगतीछे अनेवारमादे  
वलोकउपरतो एकजैनदर्शनवालानीजगतीछे अनेतमे  
तोअहीअन्यदर्शननीमुक्तिकोहोछो तेनुंकेम.

ગુરુવાક્ય - હે જન તે જે પ્રશ્ન કર્યું તે ઠીક પણ તારી નજર  
વરાવર પોહોંની નહીં શામાટે કે તેના તેજ ધર્મ માર ચ્યા પચ્યા  
રહે તેની એટલા સુધી ગતી છે અને જેને અતર માજે ન જાવ આ  
વે તેની કાઢી ગતી નથી

શિષ્યવાક્ય - સ્વામી જો જે ન જાવ આ વિતો એકાચ નોકુ  
ટોકે મ કરે અને એકાચ નીંહ શાતો ગઈ જ નથી તો સાધ પણુ ક્યા  
થંકી આવ્યું

ગુરુવાક્ય - એકાચ નોકુ ટો વે હે વાર થકી ન મટ્યો તે દેશી  
ને તુ સ્વરૂપ હશાને પાપ માને છે તે કાંઈ જ્ઞાની પુરુષ શાતર માગ  
ણતા નથી શામાટે કે મુકિનુ કારણ તે તો જ્ઞાન તથા સ્વભાવને  
વિપે છે અને સ્વરૂપ દયા જે છે તે તો અજ્ઞાનને વિપે તથા પરજા  
વને વિપે છે.

શિષ્યવાક્ય - જો પરજાવને વિપે તથા અજ્ઞાનને વિપે છે  
તો મહાવ્રત ઉચરવાનું શુકારણ છે.

ગુરુવાક્ય - જે જીવ સમકીત પામીને સાતમે ગુણ ઠાળે ગ  
યા અને વ્યવહાર ચારી ત્રણે તેને એ ગુણ કરતા છે શાદ્રષ્ટાંતે કે  
જેમ કોઈ પુરુષ જમવા વેઠો અને સર્વ જાતની રસોઈ જાણામા  
આવી છે અને તે રસોઈ જમતાની વસ્તુ તમા જો અથાણુ આવે  
તો વેક વલવ થતા જાવે પણ રસોઈ જાણામા પીરડી નથી અ  
ને અથાણુ એકલું જાણામા આવે તેથી કાંઈ મુશ્કેલી નહીં મા  
ટે સમજુને પણ જીવદયા પ્રમુશ્કેલી રીતે પાલવી એ જીવદયા

ज्ञाननेवहूगुणकर्ताबि जेमकोइवरपरणवानेजाय अने  
पोशाकसारोनहोयतो लोकमांकशोभापामेतथापोताना-  
मनथी पणवहूखोटुंलागे अनेपोशाकप्रमुखसामग्रीसा-  
रीहोयतो पोतानामनथीपणसारुलागे अनेलोकमांपण-  
सारुदीसे जदपीकन्यातोवरनेवरवानीबि कंइपोशाकनेव-  
रवानीनथी तेमअहीयांपणजीवदयाछे तेपोशाकतथाअ-  
थाणारुपंसमजबु माटेसमजुनेएगुणकर्ताबि अनेअन्यलीं  
गवालाजेमोक्षेजाय तेकंइजैनदर्शननाशास्त्रनाभोमीया-  
नथी तेतोएकज्ञाननापरीवलथकी आत्मस्वरूपनीरमण-  
ताकरीनेकर्मखपावेछे जोएमनाहोयतोअनारजलोकअ-  
नारजनामुलकमारह्याथकाअनंतामोक्षेगयाबि तेशाथकी  
मोक्षेगया त्यांकांइजैननोउपदेशछेनही परंतुएकज्ञानना  
परीवलथकी आत्मस्वरूपनीओलखाणथइ तेथीस्वरूप-  
रमणीथइनेकर्मखपावेनेमोक्षेजाय तेआगेअनंतागयाहम-  
णांजायछे अनेआगेअनंताजशे एवातमाशंकाराखबीन-  
ही स्वलींगतथाअन्यलींगनेविपेमुक्ति तथाधर्मपेठुंनथीध-  
र्मतथामुक्तितोएकआत्मस्वरूपमाछे एटलेअन्यलींगेसि-  
द्धकह्या ६ हवेस्वलींगेसिद्ध एटलेजैनदर्सननोलींगए-  
टलेसाधुवेशेसिद्धवरयाते७ पुरुपलींगेसिद्धतेपुरुपलींगे-  
सिद्ध्यातेगौतमादीकप्रमुख८ स्त्रीलींगेसिद्धतेचंदनवाला  
प्रमुख९नपुशकलींगेसिद्ध तेजातेनपुशकधर्मनपामेकृत्री



मनपुशकसिद्ध १० बुधबोधीसिद्धकेहेताजेगुरुनाउपदेश  
 थकीप्रतीबोधपामीनेजेसिध्याते ११ प्रत्येकबोधकेहेताजे  
 प्रतीकारणएटले काइकारणदेखीनेप्रतीबोधपाम्या जेम  
 करकंडुरीखवेनेजराकुलजाणीनेप्रतीबोधपाम्यातथानमि  
 राजाएकचूनीथकी प्रतीबोधपाम्या इत्यादिकप्रतीबोधपा  
 म्यातेनेप्रत्येकबोधकहीये १२ हवेस्वयबोधकेहेताजेस्वयं  
 मेवपोतानीमेले प्रतिबोधपामी चारीत्रलेइमोक्षेगयातेने  
 स्वयबोधसिद्धकहीये

शिष्यवाक्य -स्वामीप्रत्येकबोधमानेस्वयंबोधमांशोफेरठे  
 गुरुवाक्य -प्रत्येकबोधपरकारणबडे प्रतीबोधपामेछे  
 अनेस्वयंबोधतेनेपरपोतानोनियमनथी शामाटेकेमरघा  
 पुत्रसाधुनेदेखीनेजातीस्मरणपामीप्रतिबोधपाम्या तेमज  
 भगुप्रोहिततथाभगुप्रोहितनापुत्र आदेदेइनेवजिव ते  
 मध्येवेनेजातीस्मरणवारएकएकनाकारणथी तथाअनाथी  
 मुनीरोगआकुलथकी तथाकपीलकेवलीनिक्षानाकारण  
 थीइत्यादिकस्वयबोधनोकेइएकप्रकारनोनियमनथीतयां  
 पिप्रत्येकबोधअनेस्वयबोध एनोअनभावएकसरखोछेप  
 रंतुशास्त्रकारेजेदजुडोलख्योठे तेथ्रीपन्नवणासुत्रनीटिका  
 नेविषेएवुकह्योठे केस्वयबोधपोतानेज्ञानजाणपणुहोयतो  
 पोतेपोतानीमेलेविचरे कोइनाजेगोनविचरे कदापिपोता  
 नेजाणपणुआहुहोयतो कोइसाधुनासंघामामा जेगोरही

नेक्रियाआचारशिखेपछोपोतानीखुशीहोयतो जेगोविचरे  
 याजुदो विचरे अहियांकदापीकोइकहेशेके स्वयंबोधने  
 चेलाचेलीपरवारनहोय तेकहेवावालाअज्ञानिछे शामा  
 टेकेकपीलकेवलोयेसातसेभिलोनेदिक्षाआपोछेइत्यादिक  
 शास्त्रमांजुवेतों चेलाचेलीपरवारकह्याछे तथाभगवतीं  
 जिनेविपेएवुंकह्युंछेकेस्वयंबोधना साधुतथासाधवीतथा  
 श्रावकतथाश्रावीका इत्यादिकपाठघणासुत्रमांछेपणजे  
 नेअज्ञानरूपीयांपडलआडांफरयाहोय तेधणीनादेखे ते  
 मांकांइशास्त्रनोदोपनाजाणवो एटलेस्वयंबोधनोअधि  
 कारकह्यो १३ तथाएकसिद्धतेमहावीरस्वामीप्रमुख१४  
 अनेकसिद्धतेरीखवदेवप्रमुख १५ एमपंदरेजेदेकर्मथकी  
 मुकाइनेसिद्धिपढनेवरया तेनेमुक्तितत्वकहिये एटलेएन  
 वतत्वसंक्षेपथीदेखाडया तेनवतत्वनुसारतत्वएकछेतेसर्व  
 माहेआत्मतत्वएजसारठे अनेबीजोजेअजिवतत्वतेगोर  
 वाजोगछे एमएवेतत्वनुंस्वरुपउलखीने हे ज्ञे उपादे  
 एअणस्वरुपमाहे हे तेछाडवाजोगवस्तुनेगडवी ज्ञे कहेता  
 जाणवाजोगवस्तुनेजाणवी उपादे कहेताआदरवाजोग  
 वस्तुनेआदरवी एटलेजिवाजिवपदार्थजाणवानेतेजाणीं  
 नेअजिवपदार्थनोत्यागकरवो अनेजिवपदार्थआत्मस्वरुप  
 तेनुंआदरवुं एवीरीतेतत्वंनीसारजाणीं रागद्वेषविखयक  
 खायत्यागीनेपोतानास्वरुपनेविपे यिरभावेरमणताक

रवी एटलेसर्वधर्मनुं तथासर्वशास्त्रनुंसारएहिजठे.

॥ दुहा ॥ एग्रथपुरणनयो पुरणनयोआणद ॥ गुण  
निधीगुणआगलो प्रगट्योचिदानद ॥ १ ॥ चितघनंआ  
नंदनो भासूयोएहविचार ॥ तत्ववेतेमाचाखीया जडचेत  
नएधार ॥ २ ॥ तेनातत्वनवकह्या विवरीनेविचार ॥ त  
त्वएकतेमाकह्यो उध्वीतभावउदार ॥ ३ ॥ रत्नागरसमए  
हंछे ॥ भरीयोगहेरगजीर बहुवस्तुवद्वपदतणो बहोरीन  
रीयोनिरा ॥ ४ ॥ कल्पवृक्षसमजाणजो वठीतपुरणहारा ॥ सर्व  
ग्रथसीरताजए उत्तमएहविचारा ॥ ५ ॥ एहग्रथजेवांचशे न  
णशेजेमहाभाग ॥ आत्मानिर्मलतेहनो अनुभवसाथेजाग  
॥ ६ ॥ अनुभवएहमादाखीयो आत्मकेरोसार व्यक्तापुरुष  
तेपिये अथवाश्रोतासार ॥ ७ ॥ अनुभवजगचितामणी अ  
नुभववठीतपुरा ॥ अनुभवथीकर्मसवीटले थायेतेशुरविर  
॥ ८ ॥ गुणअनतअनुभवतणा कहेतानावेपारा ॥ एहथीशि  
वसपतिमले एहिजसुखदातार ॥ ९ ॥ समाकिनपणअनुभव  
विषे चारीत्रपणएहा ॥ अनुभवथीकेवललहे एमानहिस  
देहा ॥ १० ॥ एमअनतागुणकह्या अनुभवज्ञाननासार ॥ ज्ञा  
तालेजोपरखीने एहग्रथनेधार ॥ ११ ॥ अनुभवविणजेजेक  
था अथग्रकरणहोया ॥ तेतेंसहूनिष्फलकह्या हंसविणकाया  
जोया ॥ १२ ॥ तजेकबुद्धिएहथी भजेसबुद्धिसार ॥ पढतांए  
हग्रथने भेदज्ञानमनोहारा ॥ १३ ॥ तेमअभेदज्ञानवे नयनि

अथ व्यवहारः॥ आत्मज्ञानी सुखलहे पामे जवनो पार १४॥  
 कल्पव्यवहार उठे दीयो उछे दीो परजाव॥ वादवीवाट एमां  
 नही नही परगुण गाव॥ १५॥ गायो गुण एक आत्मा भाव  
 अध्यात्म साथ॥ तेम द्रव्याणु जोग सही जे हछे नीज आथा॥  
 १६॥ सत्तारवरुप वर्णन कह्यो शक्तिव्यक्तिते मजाण॥ इत्या  
 दिवहु भेद थी गुण पर्जाया चित्त आण॥ १७॥ सुलज बोधी जी  
 वहरो ते सदहरो एह ॥ अल्पकाले ते शी वलहे तेमां नही सं  
 देह ॥ १८॥ बाहेर ज्ञानी वापडा ते अज्ञानी के हे वाय॥ तेने  
 रुची नवी होवे देखतां मती मुझाय ॥ १९॥ अन्ननी रुची नवी  
 होवे जीयुं ज्वर के जोर ॥ त्युं कर्म के उदे अथ न रुचे जोर ॥ २०  
 ॥ जावे जव ज्वर तेहने अन्न पर रुची थाय ॥ त्युं मीथ्या त  
 उदे मटे अथ एचित्त सुहाय ॥ २१॥ समकीत स्वरुप ने पा  
 मवा पामवानी ज स्वभाव ॥ तो ए अथ ने आदरो जेम दूर म  
 ती दुर जाय ॥ २२॥ पक्षी जे अग्रंथना ताको स्थीर विश्राम॥  
 वेगे ते नर पामरो शिवर मणी नो ठाम ॥ २३॥ उपराठा अग्र  
 यथी रह्या जे नर तेह ॥ ते ससारमां जटकरो बोहोल ससा  
 री एह ॥ २४॥ कामकुंभ कल्पवेल जे तेम पारस पाशाण॥ वं  
 नीत पुरण अने कछे एक जव के जाण ॥ २५॥ अते परजव दुं  
 ख दीये धन थी सुगती न होय ॥ दूख दाइ ससारमां धन क  
 हुंछे सोय ॥ २६॥ इहा अथ थी संपजे आजव परभव सुख ॥  
 अधिपति तीन लोकको सेहे जे थाये मुख ॥ २७॥ अथ एह गु

एज्ञानवे करेघटउद्योत ॥ स्वपरवस्तुप्रकाशनो जेनीअ  
 नंतीजोत ॥२८॥ तेकारणनव्यप्राणिया करजोज्ञानअ  
 भ्यास ॥ एग्रथआधारजो तेथीसुखनीराश ॥२९॥ श्रोता  
 व्यकासुखलहे प्रगटेआत्मरूप ॥ सेहेजेशिवरमणीवरे  
 तेमुदेभवकुप ॥३०॥ एग्रथअविवलरहो जेमरह्यागेशिव ॥  
 मुरगीरीपरतेमरहो ननपेरेसदीव ॥३१॥ एग्रथविस्त  
 रीसही भुलोकमाएह ॥ मुखमुखएहीजग्रथने विरुयात  
 होजोतेह ॥३२॥ सवतओगणीओगणीसमे श्रावणदूजो  
 रास ॥ कश्चपक्षसप्तमीसही पुरणथइआश ॥३३॥ भगु  
 ररेभाखीयो साथेसघउमेद ॥ रीइयादलतेसर्वनां टल्या  
 र्विनोखेद ॥३४॥ मुनीहुकममोटमने रच्योग्रथविशाल  
 पमटायोतनको प्रगटयोअनुनवलाल ॥३५॥ अमृत  
 सपीयोभलो ज्ञानसुधारसआज ॥ दुखदोहगदुरेगया  
 रयोआत्मकाज ॥३६॥ धन्यदाहाडोतेआजनो सफल  
 डोतेआज ॥ वगीतकाजपुरुथयु पाम्योअनुनवराज ॥  
 ३७॥ बहूशास्त्रनीशाखथी बहूग्रथनाभाव ॥ मुनीहुक  
 एभाखीयो पाम्योआत्मलाव ॥३८॥

॥ इति श्रीतत्त्वसारोद्धारग्रथसंपूर्ण ॥

## अनुभवप्रकाश ग्रंथ

श्रीगुरुभ्योनमः

अंतरअनुभवके प्रकाशता जे अनुभवते नो बोधथाय एवो  
आग्रयंछे एटले आग्रयने विशेष अनुभव नो विचार कहुछु  
शामाटे जे मुक्तिमार्ग साधन नो अनेक मार्ग छे पण अनुभव  
विना कोइ जीवनी मुक्तो थाय नही मुख्य राजमार्ग तो ए  
ज छे बीजा जे मार्ग छे ते सर्व छिडियो छे ते पण छिडियो अनु  
भवनी हृद सुधी तो पोचती जननी तो आगल शानी ज चाले  
अने अनुभव ते के बोछे साक्षातरत्न चिंता मणी जे बोछे जे म  
रत्न चिंता मणी मनो वंछित पुरे ते पण एक जवनु ने वणासीक  
सुख नो दातार छे अने अनुभव ते तो अविनासी सुख नो  
दातार छे शामाटे जे अनुभवने विपे तो आत्म अनुभव करवा  
थी संतो परुषी जे सुख उत्पन्न थाय ते मुख थकी तो कहै वाय  
नहि जेने केवली तथा अनुभव बीजाणे केम के एसुख ने पडखे  
कोइ बीजा सुख नीउ पमा देवा जो गठे नहि तो प्रत्यक्ष जोतां  
अनुभव ते तो चिंता मणी रत्न छे अने परजव से सर्व कर्म थकी मु  
कावीने शुद्ध स्वरूप निरंजन नीराकार थइ पोताना शुद्ध स्वरूप  
जावने थीर तापणु पामीने सिद्ध क्षेत्रमा विराजमान थको  
अनंतो काल रहे एटले एने जनम जरामरण ना दुख टले माटे  
अनुभव ए ज चिंता मणी रत्न छे ए ज सत्य छे पे लु चिंता मणी रत्न

हेतेतोपुढगलीकछे तेतोजीवनेघणो काजरखडावनारहे  
अनेआतोमोक्षदातारहे अहीयाकोइकेशेजेवंतामणिरत्न  
भववधारनारहे तोएनीउपमाकेमदीधी

तेनोउत्तरजे संसारनीमाहेलीकोरएथीवीजीवस्तुउत्तम  
जोवामाआवतीनथी माटेएनीउपमादीधी माटेउपमाते  
कंडवरावरगणवीनही हवेजेअनुभवते तेमहाअमृतरस  
बेंएटलेअमृतकेहेताशु केजेनेखावेफरीथी मरवुनपडेते  
नेअमृतकहीये अहीयांअजाणलोक घणीजगायेवत  
लावेछेपणतेसरवेअसतछे केमकेइद्रादीक सर्वेनेजनमम  
रणरह्यावे माटेत्याकइअमृतरसबेनहि अमृतरसतो  
एकअनुभवज्ञानमाजबे जेनेपीधेथकी जनमवुमरवुपमेन  
हि इत्यादिकघणीउपमाजेसारमासारहोय तेअनुभवज्ञा  
नमाजलागुपडेवे पणवीजानेसारी उपमालागुपन्तीनथी  
शामाटेजेमुक्तिसाधननेविपे तप जप क्रिया कष्टपूजा  
शेवादानादिक एसर्वेमिथ्याभावबे एथकीपणमुक्तित्रण  
कार्लमाथापनहि मुक्तिनोमार्गतो एअनुभवज्ञानजबे ए  
टलेअनुभवछेते शुद्धस्वरुपनापगथीयावे अनेशुद्धस्वरुप  
तेमुक्तीनोदरवाजोते तेकारणमाटेधर्मअर्थीजीवोनेआत्म  
अनुभवरुपपगथीये पगथीयेचडवुंतोकोइवरवतेशुद्धस्वरु  
परुपदरवाजामपिसाशे तोमुक्तिना सुखपणपामशो अने  
एअनुभवविना बीजेआडेअवलेपगथीयेचमशो तोधर्मको

इतिनपामवानानथी मुक्तिनांसुखतमनेमलशेनहि चारग  
तीसंसारमारखडशो माटेआत्मअनुभव करोकेतमारुक  
ल्याणथायएहमारो हेतुउपदेगवे इतिपीठिका

हवेअनुभवपदार्थवे-एटलेअनुभवकेतां- जेवीचार  
ण तेनेअनुभवकहिये तेनावेभेदवे- एकशुद्धः १ बी  
जोअशुद्ध २ हवेजेअशुद्धअनुभववे तेनावेभेदवे एकशुद्ध  
१ बीजोअशुभ २ तेमध्येअशुभनावेभेदवे एकक्रत्रिम  
एकसेजथी हवेजेक्रत्रिमअशुभअनुभववे तेसंसारनीमां  
माहेलीकोरे अशुभक्रतवनोजेटलोविचार तथाकेटलाक  
मांधर्मतथापुन्यकहेछे जीवादिकूँसांप्रमुखसर्वेनावरह्या  
वे तथारागद्वेशमोहविषय कखायादिक उत्पन्नकरवांतेने  
लोकीकनेविपे धर्मतथापुन्यकेटलाएककाममांमानेछे ए  
सर्वेक्रत्रिमअशुभअनुभवजाणवो हवेजेसेहेजअशुभअनु  
भवतेनोविचारकहुंछु एटलेजीवमात्रअनादिकालनाअ  
ज्ञानीवेअने मिथ्या १ अवृत्त २ कखाय ३ जोग ४ प्र  
मुखनेविपेकारणविनारमणताकरीरह्योछे - तेवैसंगक्रि  
यारुपवे तेअनंताकर्मनवांअशुभवाधेवे एजवीचारणाते  
नेस्वभाविकअशुभअनुभवकहिये एबीजोभेद २ हवेजेशु  
भक्रत्रिमअनुभव तेनोवीचारकहुंछु एटलेशुभकेहेतांजेरु  
मापुदगलनुमेलववुं अशुभकेहेतांजे साठापुदगलनुमेल  
ववुंमाठापुदगलतेपापरुपरुडापुदगलतेपुन्यरुप हवेअही



यांशुभजेकत्रिम तेपुन्यरुपछेतेअहीया शुविचारकरेतेकहु  
 छुहंशा मृखा अदत मैथुनने परिग्रह इत्यादिकतजवा  
 नोजेविचार तेनेविपेएकाग्रचित्ततलालीनपणुंतेनेअनुभव  
 कहियेतेकत्रिमअनुभवथयो पणकइस्वभावकीक्षयडप  
 समजावआवेनही तोएथीकइआत्मानुं कल्याणथयुंनहि  
 विशेषपुन्यबंधपणथायनहि एसामान्यप्रकारेशुभकत्रिम  
 अनुभवकहियेछीये पणएथीकइआगल कारजसिद्धिनथी  
 हवेजेआगलअकतम स्वभाविकजेशुभ अनुभवतेनाअ  
 नेकभेदछे कोइकतोवेहेवारसमकीतनीविचारकरे कोइदे  
 शीवीती कोइकसर्ववीतीपणानोविचारकरे पणतेशुद्धनथी  
 शांमाटेजेतेतेथानकनी प्रकतीयोनोनाशथयोनथी माटेते  
 अशुद्धजणे

शिष्यवाक्य -स्वामी एनेस्वभाविकतोकहोछो अने  
 अशुद्धकेमकहोछो तेनोदत्तरजेस्वभाविककहियेछियेतेनु  
 कारणसांजल-जेएनेस्वभावजससारउपरथीरागादिकम  
 दपडयोढे अनेजवजथीकरिनेउद्वेगपणुछे तेथीस्वभा  
 वजेशुभरमणतारहेछेतेमध्येकोइकजिवजथाप्रवर्तिकरणे  
 गयो अनेकोइकनगयो एमाटेएनेस्वभाविकशुभकहिये  
 पणशुद्धतोएनार्थीघणुंदुरछे अनेएशुभअनुभवथीपुन्यकि  
 चितसारउपार्जेमाटेएनेस्वभाविकशुभअनुभवकहिये ह  
 वेजेशुद्धअनुभवनुस्वरूपकहुछुंके एश्रोताजनो एकाग्रचि

तथइनेधारजो एथीतमाराआत्मानुंकल्याणथशे हवेशुद्ध  
अनुभवतेविचित्रप्रकारनोठे परंतुसमुदायेतेनावेजेद २  
एककृतमशुद्धअनुभव १ बीजोक्रत्रिमशुद्धअनुभव हवे  
जेक्रत्रिमशुद्धअनुभवते तेआत्मानेदेवतत्वकरीविचारे अ  
थवाद्रव्यगुणप्रजायनोविचारकरे अथवाज्ञानदर्शनचारी  
प्रनोविचारकरे तेनेक्रत्रिमशुद्धअनुभवकहिये.

शिष्यवाक्य -स्वामिएतोप्रथम अशुद्धवालाने घेरवि  
चारहतोज तोअहियांविशेषशुंथयु तेशुद्धशाथकिकहोठो  
॥ तेनोउत्तर ॥ हवेगुरुजीमाहाराज शिष्यनेसमजावेठे  
देवाणुप्रियत्यातो सम्यकगुणप्रगटथयो माटेएनेशुद्धक  
हियेठियेएटलेजेनेसम्यकगुणप्रगटथो तेनेज्ञानीकहिये  
जेनेसम्यकगुणनप्रगटथोतेनेअज्ञानीकहिये अज्ञानतेअ  
शुद्धनेज्ञानतेशुद्ध तेमाटेतेनेशुद्धअनुभवकहियेछिये.

शिष्यवाक्य -स्वामिसम्यकजावतेशुं ॥तेनोउत्तर॥ जे  
सम्यककहेताजेनलेप्रकारेआत्मस्वरूपनुंजाणवुतेनेसम्य  
कजावकहिये हवेतेसम्यकजावनुंजेप्रगटवुं तेनावेभेदछे  
एकव्यवहारथकी १ बीजानिश्रैयकी त्याव्यवहारथकी  
जेदेवअरिहंत २ गुरुसुसाधुनिग्रथशुद्धपरुपक शुद्ध  
जावमारमणतावाला २ धर्मजेकेवलजीनाखीत. खट  
द्रव्य पंचास्तिकाय तैमध्येथीएकआत्मद्रव्यजिवास्ति  
काय तेआदरवाजोगछे बाकीधर्मास्ति २ अधर्मास्ति

२ आकारित ३ एत्रएद्रव्यजाणवाजोगवे पुद्रलास्ति  
 कछांडवाजोगएत्रणेतत्त्व ३ साचाकरिनेजाणे तेनेसदहे  
 तेनेव्यवहारसमकितकहिये एव्यवहारसमकित एकंका  
 जीवनेअनद्विवारआवे पणएथकीकांडजीवनंकल्याणथा  
 यनहि नेजन्ममरणनाफेराटलेनहि माटेएव्यवहारसम  
 कितपणजाणवाजोगवे

हवेनिश्वेसम्यकजावकहूछुं जेनिश्वेकहेताआवीवस्तु  
 पाछीनफरे तेनेनिश्वेकहिये अहियाकोइकहेजेनेनिश्वेस  
 मकिततोआव्युंपाछुंजायछे ॥ तेनोउत्तर ॥ जेएनीसत्ताये  
 कइमिथ्यातफरीविल्युंनथी जेमकोइबीजनेघणुमृत्तिकानुं  
 दलचनीजाय त्पारेतेविजजणायनहि पणजेवारेतेमृति  
 कानुंदलधोवाइजाय तेवारिऐजबीजउगीनेमोटुंझाम्याय  
 तेमअहियांजेगंठीनेदंकरेलोवे तेगांठयफरीथी रागद्वेप  
 नीवधातीनथीअनेजेप्रदेशेजेमिथ्यातफरीविल्युतेमिथ्यात  
 ज्यारेत्यारेपणनाशपामे शामाटेजेअर्धपुद्रलपरावर्तनउ  
 परतोरहेवानुठेनहि अनेपुर्वजेबीजवावेल्हछे समकितरुं  
 पतेसमकितरुपविजनेकरणपणकरवानथी अनेगंठीभेद  
 पणकरवानथी तुरंतएवृक्षयइनेमौक्षरुपीयाफलनीप्राप्ती  
 थाय माटेएसत्तायिसमकितोछे माटेविकेमीततेथीकइसम  
 कितगयुंनहि एमसमजवुंकोनिश्वेवस्तुपाम्या तेजाय  
 नहि हवेजेनिश्वेजेसम्यकजावतेनुंपामवुंतेनावेजेदछेएक

तोसम्यक्ज्ञान १ विजुसम्यक्दर्शन २ तेवनेवानांक्षयउप  
समभावमारह्याछेअनेक्षयउपसमभावहेतेतोस्वजावीकठे  
तेखेउपसमचारकर्मनोथायहे ज्ञानावरणी १ दर्शनावर  
णी २ मोहनी ३ अतराय ४ एच्यारक्षयउपसमीककर्मछे  
बाकीच्यारकर्मरह्यांतेतोउदिकजावेहे । अनेतेभवपर्यंतहे  
पणगुणठाणानीरीतमानथी । अनेआजेच्यारकर्महे तेउ  
दिकजावतोहेज पणगुणस्थानकनी हटप्रमाणेक्षयउप  
समथतोजाय तेमध्येचोथेगुणठाणेदर्शनआसरीउपसम  
तथाक्षयउपसमतथाक्षायकत्रणेभावलाधे तथाआठमेनव  
मेदर्शमेगुणठाणेचारीत्रआसरीउपसमजाव तथाक्षायक  
भाववेलाधेहेतथाअगियारमेगुणठाणेचारीत्रआशरीएक  
जोउपसमेजावजलाधेछे उपरातक्षायकभावलाधेछेतथा  
ज्ञानतथापांचलब्धीनेविपे । चौथागुणठाणाथीमामीनेवा  
रमागुणठाणासुधी क्षयउपसमलाधेछे उपरांतआएक  
जावहे माटेअहियाप्रथमगुणनुंकर्ताविशेशेकरीने क्षयउ  
पसमजठे तेमाटेप्रथमजजेज्ञाननोस्वजाविकक्षयउपसम  
भावथायतोपोतानाआत्मस्वरूपनेजाणे । अनेपरभावनो  
त्यागकरे एभावपुर्वेनोतोतेजावअहियांप्रगटकरे । तेदर्श  
ननुंपणअपुर्वकारणकहिये । एजजेवारेपोतानास्वरूपनुंज  
थार्यजाणपणुंअंशेथायतेवारे समकितदर्शनपणप्राप्तिथा  
यएटलेअहियां । मिथ्यातमोहीनीतथाचारीत्रमोहीनीनो

क्षयउपसमथाय . . . . .  
 हवेतेजेज्ञानावरणीकर्मनाक्षयउपसमनुकह्यु तेनावि  
 चित्रप्रकारवे परंतुवेभेदअवडयसमजवाजोश्ये एकक्षय  
 उपसमअज्ञाननेभजेवेबीजोक्षयोपसमज्ञाननेभजेछे . जे  
 क्षयउपसमअज्ञाननेभजेछे तेनाअनेकनेदछे . तेना  
 समुदायेत्रणभेदकरियेछिये मतीअज्ञान १ श्रुतअज्ञान २  
 विभगअज्ञान ३ तेमध्येतीगोटथीतेपांचथावरमुधी तेने  
 विपेवेअज्ञानछे , मतीअज्ञाननेश्रुतअज्ञान तेनाअनंता  
 प्रजाय , अवक्तव्यजावेछतीप्रजायेछे - अनेतेद्रव्यनुसाम्ब  
 थपणुतथाकचित्प्रजायहजुसाम्बथपणुव्यक्तवजावेवादर  
 थावरमाजणायछे पणसुक्ष्मनेविपेतोकेवलअव्यक्तव्यजा  
 वजभासनथायछे अनेजेवनेअज्ञानकह्यांतेतोवादरमा त  
 थासुक्ष्ममाअवक्तव्यभावेजभासनथायछे तथा बेरद्री तेरं  
 द्री चोरद्री एत्रणनेज बीगलेद्रीकहियेछिये तेनेविपेवक्त  
 व्यपणुछे शासाटेकेसुखहु . खनेवेदेछे तेनेविपेपणमतीअ  
 ज्ञाननेसुतअज्ञाननो क्षयउपसमछे , इहाकोइकेहेगेजेम  
 तीअज्ञाननेसुतअज्ञानपणसिद्धातमाकह्याछे . तेनोउत्त  
 रंकेएवातसिद्धातमाकहिछंतेसत्यछे शासाटेकेएकउपज  
 तीवखत अप्रजाप्तअवस्थामालाधे - शासाटेकेजेकोइक  
 जीव सास्वादनगुणठाणेरहोयकोमरणपामेवे अनेवी  
 गलेद्रीमाउपजेवे तेजीवनेउपजतीवखतलाधे , पणकाइ

सर्वजीवआशरीनेकह्युंनथी माटेएगतीआशरीनेतो मती  
 अज्ञाननेसूतअज्ञानएवेनो क्षयउपसमलाधेछे तथाअ  
 सेनियापंचद्रीनेमतीअज्ञाननेसूतअज्ञान एवेनोजक्षय  
 उपसमलाधेछे तथासेनियापंचद्रीनेत्रणक्षयउपसमलाधे  
 मतीअज्ञानश्रूतअज्ञानने विभंगअज्ञान तेमध्येविभंग  
 अज्ञानेछे तेनारकीनेतथादेवनेभवप्रत्येछे अनेत्रीजचुंत  
 थामनुपपंचद्रीएवेनेगुणप्रत्येछे तेपणत्रणेअज्ञाननाअ  
 नतानेदछे इहांकोइकेहेशेके अवधीनाअसख्याता तथा  
 मतीश्रूतनासंख्यातानेदछे तेनोउत्तरकेसंख्यातातथाअ  
 संख्याताभेदकह्यातेतोउपजवाआशरीठे पणएज्ञाननावि  
 पेनाअनंताभेदछेएअज्ञाननाक्षयउपसमनोसंक्षेपेविचारक  
 ह्यो हवेज्ञाननाक्षयउपसमनोविचारकहुछु पणतेज्ञाननोवि  
 चारतोविस्तारेछे तेकेहेतांतोग्रंथगोरवथइजायनेअहीयां  
 तोअनुभवनोविचार'केहेवोछेमाटेअनुभवजेटलोसंक्षेपेक  
 हिशु हवेजेअनुभवकरवोतेतोसस्वरूपनो करवो फायदो  
 तीतेमांजछेपरस्वरूपनाअनुभवमाकइ फायदोठेनही हवे  
 त्यास्वस्वरूपनु जाणवु तेपरस्वरूपनुजाण्याविनास्वस्व  
 रूपओलखायनही अहीयांकोइकेहेशेजे परस्वरूपनुजा  
 णवानुशंकामछे एकआत्मानोअनुभव करीयेतेनेकहीयेके  
 जाइतारुबोळवुंकाची समजनुथामछे शामाटेजेआत्माछे  
 तेतोअरुपीछे अनेरुपीनेविपेदवाणोवे हवेतुंअरुपीनेगी

रीतिजाणीजानेतेनो, अनुभवशीरीतेकरीश माटेद्रव्यनाल  
 क्षणओलखवांजोइये लक्षणवडेकरीनेसर्वेजुटापमे, पछी  
 तेगाहीथीआपणोद्रव्यछे तेआपणेतहीलइयेनेवाकीनाद्र  
 व्यछेनेनेपड्यामुकीये अनेआपणेआपणा आत्मानोएवे  
 अनुभवकरीये तेमाटेप्रथमसर्वद्रव्यने जाणवाजोइयेअने  
 तेनालक्षणगुणप्रजाय - सर्वेजाणवाजोइये - त्यारेसतअ  
 नुभवथाय तेमाटेप्रथमद्रव्यनानामकहुछं, धर्मास्तीकाय  
 १-अधर्मास्तीकाय २ आकास्तीकाय ३ पुद्गलास्तीका  
 य ४ जिवास्तीकाय ५ नेण्डोकोलद्रव्य - ६ हवेतेनुलक्ष  
 णउत्पातवयनेध्रुवे तेउपजवुनेवणसवु, तेप्रजायनयनी  
 अपेक्षायेवे अनेध्रुवतापणुतेद्रव्यार्थकनयनीअपेक्षायेवेए  
 जेकडउत्पातनेवयमजुक्तएसतलक्षणद्रव्यनावे  
 हवेतेजेप्रजायनोजेसमुदायेतेनेगुणकहियेबिये एटले  
 एकएकद्रव्यमाअनतागुणरह्यावे नेएकएकगुणमाअनंता  
 प्रजायरह्यावे इत्यादिकअनेकविचारवेपणगुणप्रजायवत  
 तेद्रव्य हवेजेअर्थक्रियाकरे तेनेद्रव्यकह्याछे त्यातोपोत  
 पोतानोअर्थसाधेतेनेद्रव्यकहिये तेमधेधर्मास्तिकाय चल  
 णसाह्यनेअधर्मास्तिकायथारसाह्यकरे आकाशअवगाह  
 नाआपे अनेकालवर्तनापणुकरे एसर्वेआपआपणीक्रीया  
 करेछेअनेपुद्गलास्तिकवे तेपणमलवुनेवीखरवुपुरणथव  
 नेवेराइजवुं एपणपोतपोतानीशकीये पोतपोतानीअर्थ

क्रीयाकरेठेपण आपणो जेचेतनएज महाअज्ञानमांपड्यो  
 थकोपोतानी अर्थक्रीयाछोडीने परक्रियाकरेठेएमोटुदूःख  
 थायेतेशामाटेके तुंतोचेतनालक्षणवे तेतुंतारोधर्मछोडीने  
 परधर्मकेमपेसेछे पणतुंशुंकरे तनेअनादिका,लनुंअज्ञान  
 सगोछे एकइनवुंनथी तेअवकव्यजावमापणतनेहतु तेव  
 कव्यजावमापणतेअज्ञानरह्यु तेथीपरनोकीधोसंग तेवा  
 रेतनेमोहेआपुअंग तेवारतेनेविशेपेवाध्योरंग तेवारथयो  
 स्वधर्मतोन्नग हवेतोतनेसदगुरुयेषणी कृपाकरिनेधर्म  
 मार्गदेखाड्यो अनेसर्वेअनुभवकरवालायककरथो माटे  
 तुंआत्मअनुभवकर आत्मस्वरूपकेवुछेकेशुद्धद्रव्यार्थकन  
 येजोइये तोशुद्धचिदानंदमयमुर्ति परमानंदमयसाक्षात  
 तुपरमात्मावे एनिश्चेनयनुवचनवे शामाटेकेअहीयाअनु  
 भवकरवोरहेनहि केमकेउच्चारणकरवुंवधथयुं तेवारेगुण  
 गुणीनेदपणकरीशकायनहि तेवारेएकजाणवामात्रअनु  
 भवरह्यो एनयतोपूर्णनेघरेछे अनेआपणेतोअधुरावि  
 ये केमकेसिद्धयानथी साधकअवस्थावे माटेआपणने  
 तोव्यवहारनयप्रधानछे केमकेजेअनुभवकरवो तेगुण  
 गुणीनानेदकरवापडे गुणप्रजायनोविचारकरवोपमेतेस  
 र्वेव्यवहारनयथायछेमाटेअधुरानेव्यवहारनयबलवानछे  
 अंतेतोएव्यवहारनयमिथ्याछे हवेजेअनुभवकरवोतेप्रजा  
 यनेविपेकरवानेवे हवेतेप्रजायआत्मानेविपेकेटलाकसा



मान्यथकीठेकेटलाकविशेषयकवितेकिंचितनामथकीजणा  
 वुंछु मूलसामान्यस्वभावना ६ ७ भेद अस्तित्व १ वस्तु  
 त्व २ द्रव्यत्व ३ प्रमेयत्व ४ सतत्व ५ अगुरुलघुत्व  
 ६ एवमूलसामान्यस्वभावकह्यातेमध्येआस्तिसामान्य  
 स्वभावनाउत्तरसामान्यस्वभाव १ ३ तेरकह्याते तेनांनाम  
 अस्तित्वस्वभाव १ नास्तित्वस्वभाव २ नित्यस्वभाव ३ अ  
 नित्यस्वभाव ४ एकस्वभाव ५ अनेकस्वभाव ६ जेद  
 स्वभाव ७ अजेदस्वभाव ८ भव्यस्वभाव ९ अभव्यस्व  
 भाव १० वक्तव्यस्वभाव ११ अवक्तव्यस्वभाव १२ प  
 रमस्वभाव १३ इतिउत्तरसामान्यस्वभाव हवेविशेषस्व  
 भावकहूछुं विशेषकहेतांकोइद्रव्यमांलाधे नेकोइद्रव्यमां  
 नलाधे तेना २५ भेदते परिणामिकता १ कर्तृता २ ज्ञा  
 यकता ३ ग्राहकता ४ जोकृता ५ रक्षणता ६ व्याप्या  
 व्यापकता ७ आधाराधेयता ८ जन्यजनकता ९ अ  
 गुरुलघुता १० विभुतकारणता ११ कारकता १२ प्रभु  
 ता १३ जावुकता १४ अभावुकता १५ स्वकार्यता  
 १६ सप्रदेशता १७ गतिस्वभावता १८ स्थितिस्वभावता  
 १९ अवगाहकस्वभावता २० अखण्डता २१ अचलता  
 २२ असंगता २३ अक्रियता २४ सक्रियता २५ एष  
 चीसेविशेषस्वभावजाणवा हवेसामान्यप्रजायते ६ छे  
 तेद्रव्यप्रजायजाणवा तेद्रव्यव्यजनप्रजाय १ गुणप्रजा

य २ गुणव्यजनप्रजाय ३ स्वभावप्रजाय ४ अगुरुल  
घुप्रजाय ५ विज्ञावप्रजाय ६ एतसामान्यप्रजाय कहिये  
तथा अगियारसामान्यस्वभावकह्याछे तथा अविशेषस्वचा  
वकह्याछे तथा दशसामान्यलक्षणकह्याछे तथा सोलविशेष  
लक्षणकह्याछे इत्यादिकद्रव्यप्रजाये समजवावास्ते अने  
कभेदकह्याछे ते अनुभवमां विचारकरता सर्वे कत्रिम अनुभव  
थाय पण स्वभाविक अनुभव एमनथी अने कत्रिम अनुभव नी  
हद चोथा गुण ठाणा थी मांडीने सातमा गुण ठाणा सुधीनी छे  
अने स्वभाविक अनुभव छे ते आठमा थी ते दशमा गुण ठाणा  
सुधीनी छे ने आठमा गुण ठाणा थी हे ठलवा लाने किंचित भा  
ग छे ते पण चोथा थी ते सातमा सुधीने तरतम जोग जाणवो ए  
टले एशू द्वकत्रिम अनुभव कह्यो.

हवेषु द्वकत्रिम अनुभव ते स्वभावी कहिये ते अनुभवनी  
वार्ता कहैवाने तो हू समर्थनथी परंतु किंचित् जागद्रष्टा ते स  
मजवामारी शक्ति प्रमाणे कह्युं ते स्वभावी अनुभव तो  
फ्यारे प्रगटे ज्यारे विभावी अनुभव नो नाशथाय तयारे  
स्वभाविक अनुभव प्रगटे श्रेष्ठ ते जेमकोइ जाजन मां दुर्ग  
धवस्तु भरीने भाजन मां दुर्ग धनी वासना वेठी छे ते दुर्ग धनी  
वासना गया त्रिना ए जाजन ने सुगंधवासी ये तो सुगंधवासी  
तथा यनहि माटे अहियां आत्माने विभाव नो संगन छुटे त्यां  
सुधी स्वभाविक अनुभव के म करीने थाय अहियां कोइ कहै

शेकेविजावनोनाशथशे त्वारेतोएवितरागथशे त्वारेपठे  
 हेनेशेनोअनुभवकरवोछे तेनोउत्तर जेनेज्ञानावर्णीनोक्ष  
 यउपसमथयोछे अनेज्ञानभावप्रगट्योछे तेपुरुषनेजे  
 लोनेटलोविभावनाअशनोनाशथाय तेटलोतेटलोस्व  
 जावीकअनुभवप्रगटे नेसपूर्णविजावनोनाशथाय तोजा  
 एवारुपअनुभवप्रगटे करवारुपअनुभवत्यांनहि हवेजे  
 अशेप्रगटे तेनेविवरोकरीनेदेखाडुछु तेप्रथमद्रष्टाकहूछु  
 तेसमजजो केजेमसुरजठे तेसपूर्णवादलायेकरीनेघेरी  
 लीधोअनेएनातापतडकानोनाशथइगयो अनेअजवांलु  
 पणउछुथइगयु अथकारविशेषेवाप्योछे तेमध्येथीएकवा  
 दलुखसेतेटलोअजवासवये अनेअथकारनोनाशथायतेम  
 अहियार्जीवद्रव्यनेअनादिकालनो मिथ्यात्वीअज्ञानरुप  
 वादलाफरीवल्याहता तेमध्येथी कोइकजिवेकाललब्ध  
 पामीसदगुरुनासमागमथी कोइनेस्वस्वभावथीत्रणकर्ण  
 करीने समकितरुपरीद्विपाम्नो त्यामिथ्याततथाअनंतु  
 बंधीचोकडीनोक्षयउपसमादिथयो त्वारेएप्रकृतियोनाप्र  
 देशहता तेआत्मानाप्रदेशयकीअलगाटल्या त्वारेआ  
 त्मानाप्रदेशनोअजवासजेटलोखुलोयथा एटलीस्वभा  
 वीकरमणताथाय एटलेजेअशेखुल्योएटलोस्वजावीकअ  
 नुभवज्ञाननोथयो एमसातमागुणठाणांसुधीलइये शामा  
 एजेअहियासुधी मोहनुजोरघणुछे त्यासुधीअशेविजाव

नोनाशथायज्जनेसेणीगतेमोहनंजानरमपद्मीगयु त्वारे  
विभावरहो तेजावतदशमानेअते विभावनोनेमोहनोसर्वे  
नोनाशथायछे त्यांशुद्वस्वजाविकअनुभवकरवामांआवेछे  
पणअहियांक्रात्रिमनथी जेआअथवाद्रव्यगुणप्रजाय इ  
त्यादिकनोविचारअहियांकरवोनथी अनेस्वभावोक्रमुण  
गुणीभेदअथवागुणप्रजायभेद अथवासंकरमरणएपोत्रा  
नेस्वभावेजविचारमाचाल्योआवे पणपोतेजाणेनहि के  
हुंआविचारमांछु एवोतदरुपएकाकारपणप्रणमेलोएने  
अनुभवतेनेस्वजाविकअनुभवकहिये तेनावेप्रकारछे एक  
समल १ विजोविमल २ एटलेजेक्षपकसेणीवालानोजे  
अनुभवते तेनिर्मलतेअनेउपसमसेणीवालानोजेअनुभ  
वछेतेसमलते शामाटेजेउपसमसेणीवालोजेसर्वमोहनी  
कर्मनीप्रक्रतियोनेउपसमावताकहेतादावतोजायते तेध  
णीअगीयारमेगुणठाणेजाय एउपसमवितरागकहेवाय  
पणआत्मप्रदेशथी मोहनीकर्मनोनाशथयोनहि अनेपो  
तानी विभावदशाजेअशुद्धप्रणती तेनोपणनाशथयोनहि  
सत्तायेएसर्वरह्याछे माटेजेस्थानकविपेएधणीनोकालआ  
वीपहोच्योतोएचोथेगुणठाणेजाय एटलेअगीयारमानोउ  
ठ्योचोथेगुणठाणेआवे त्वारेमोहनीकर्मनीप्रक्रती ७ सा  
तप्रक्रती विनावधीप्रक्रतियोनो उदेथइजाय पणएका  
वतारवि सर्वाथिसिद्धेजाय अनेजेनोएगुणठाणेकालनजि

कनहिहोयतोप्रकृतीउदेश्यइनेपाछोपडे तोतेजिवजावत  
निगोटसुधीपणजाय कोइकजिवतद्भवमोक्षे पणजाय  
कोइकजिवउपसमसेणीकरेतोएकजवमावेवारकरेअनेआ  
खीजवस्थितिमापाचवारकरे माटेएस्वजाविकअनुभवए  
उपसमसेणीवालानोसमलकहेतामलसहीतवे.

इवेजेवीमलस्वजाविक अनुभवछेतेतो मोहनीकर्मनोना  
शकरतोचाल्योआवेछे तेदसमानेश्रते संपूर्णमोहनीकर्म  
नोनाशकरेअहीया अशुद्धपरणतीनो तथाविजावनोपण  
नाशथयोतेवारे शुद्धस्वजावजेवोसत्तायेहतो एवोजजाण  
पणारुपअनुभवथाय एटलेएवारमेगुणठाणे क्षायकभाव  
नोवीतरागथयोअहीयागुणगुणीजेदुहतोतेगयोनेएकजा  
वथइनेप्रणम्योअहिशुद्धनीश्रेनयजाणवारुपअनुभवथयो  
एटलेएअनुभवछे तेमनोवाञ्छितदातारछे अनेहवेजन्मम  
रणकरवोपमेनही माटेएवाएवाअनुभवनीखपकरोएजव्य  
जीवोशामाटेजे एशुद्धस्वजावरुपीआदस्वाजामापेठो ए  
एकक्षणनीअंदर केवलज्ञानपामीनेमोक्षेजायकोइकनेआ  
वखुवधारेहोयतो आवखुजोगवीने मोक्षेजायपणफरीथी  
तोहवेकोइनेजन्ममरणकरवुनथी एसदायेसीदमावीरा  
जमानअनंतुसुख जोगवतांविचारशेतेमाटेएजव्यजीवोशु  
द्धस्वभावनोअनुभवकरो एजहमारोहेतुउपदेशछे.

॥दूह॥ शुद्धस्वभावएवर्णव्यो शुद्धअनुभवजोग॥अशु

द्वस्वप्नावदुरेटले टल्योमोहनीरोग॥१॥ शुद्धअनुभवप्रत्यक्षते शुद्धज्ञानएजाणो ॥ शुद्धस्वरूपनुदेखवुं नीश्चेचितजआणो ॥२॥ एअनुभवमुजचीतवश्यो जेममधुकरनेकमल ॥ एथीसवीसुखपामीये होयआत्मनीरिमल ॥३॥ निरधननेमनदेवरीध जेमवलजलागे ॥ तेमज्ञानीनेअनुभवशुद्धचित्तलागे ॥४॥ एजावमेवर्णव्यो स्वपरहेतकारी ॥ ताराचंद्रनीजाचना तेमेटीलधारी ॥५॥ एहग्रथरचनाकरी बहून्यायसाथे ॥ हेतुजुकीपणवेघणी नीजरिद्धिहाथे ॥६॥ ज्ञानीकुंएग्रथवे अनुजवीकुरसलीन ॥ ग्रथहाथगुंडोडेनही अमरीतघटघटपीन ॥७॥ अज्ञानीसमजेनही एहशब्दविवार ॥ तेमांमुजकोइदोशनही क्षयउपसमविचार॥८॥ संवत१९३३शमें प्रथमजेष्ठकृष्णपक्ष ॥ चतुर्थीगुरुवार एपूरणथयोदक्ष ॥९॥ दूकममुनीनोमानजो बहूश्रुतनीसुप्रहीजोइ ॥ तेपासेग्रथदेखजो अर्थपांमशो सोइ ॥१०॥ एहअर्थपाम्याथकी पामशोअनुभवसार ॥ मुनीदूकमतेप्राप्ती सीववधुघरधार ॥११॥ सीववधुसेसुखभोगवो जोकरोअनुभवएह॥ दूकममुनीनोमाथेलइ पांमोरिद्धितेह ॥१२॥ मुनीदूकमअनुभवग्रहे सुधानंदस्वरूप ॥ शुद्धपीरताप्रगटसे पामेशीवस्वरूप ॥१३॥

॥ इतिअनुभवप्रकाशग्रंथसंपूर्णः ॥



# अथश्रीआत्मचिंतामणी.



श्रीगुरुभ्योनमः

॥ दोहा ॥ हूवंदुनीजआत्मा पुर्णानंदस्वामी ॥

अनुभवजोगेतेग्रहो निजअतरजामी ॥१॥

अत्रनापालिरुयते ॥ हवेएआत्मचितामणीनामाग्रथ  
 केवोठेकेसाक्षात्मुक्तिनोमार्गएजठे अनेएनेजमुक्तिकही  
 येछीये एटलेजेनेआत्मज्ञानप्रगटथयुछे एनोरसजेणेजा  
 एयोछे तेनेमाहासंतोपरुपीमोटुंसुखप्राप्तथयुं एवापुरुषो  
 कंइराजानेपणलेखामागणतानथीपणहवेएआत्मशास्त्रनो  
 जेरसतेनोद्रष्टांतकहीसमजावुंछु एटलेजेस्त्रीनाअधरविव  
 नोजेरसतेनोजेस्वादजवानपुरुषनेसुखप्रगटथायतेरसतो  
 बिदूमात्रपणनथी एवोआआत्मज्ञानरुपीशास्त्रनोजेस्वा  
 दतेतोसमुद्ररुपछे हवेजेप्राणीअध्यात्मशास्त्रनेविपे अथ  
 वानिश्रेनीवार्तानेविपेनथीसमजतां तेमांपरावर्तननथी  
 नेपंडीताइनोगर्वधरेछे जेअमेपंडीतछीये तेपुरुषकेवुकरे  
 केजेमकोइपांगलोपुरुषकल्पवृक्षनुं फललेवानेहाथउंचो  
 करतेनेकल्पवृक्षनुंफलहाथमांआवे अपीतुनजआवे तेम  
 एपंमीताइनोअभिमानफोगटराखेछे हवेएआत्मज्ञानछे  
 तेतोकर्मरुपीयावननेवालीनेचुवोकरे नेतुरतसिद्धिप्रदआ



पे एटलेवेदतथाविजाशास्त्र अध्यात्मशास्त्रविनाना तेतो  
 वधोयेआत्मानेकेशकरवानोठेनेआत्मज्ञानविनाजेटलाशा  
 स्त्रभणोवाचो अथवातेनुजाणपणुकरो तेसर्वफोकठेजेम  
 विधवास्त्रीनुतरुणपणुफोकठे तेमजुठुजाणवुजेणेआत्मज्ञा  
 ननाशास्त्रजोयांअनेतेनुजाणपणुयधुतेनुसर्वलेखेछेअनेज्ञा  
 ननोरसतोआत्मज्ञानीजपामे एटलेथोडूपणंभणंतरजणी  
 नेएकआत्मानुजाणपणुकरतेनूलेखेछे तेविनाअनेकशास्त्र  
 नोअभ्यासकरतेथीकइएने ज्ञाननारसनीप्राप्तीनथाय जे  
 मखरउपरवावनाचदनभर्यु तेथीकइएखरनेवावनाचदन  
 नोस्वादनथी एतोभारवहीजांणेछे एनोरसस्वादतोजेभा  
 ग्यवानपुरुपहोयतेजोगवेछे माटेआत्मज्ञाननोअभ्यास  
 करवो बीजोसर्वआलपंपालखटपटोठेतेटालवो जेथकी  
 आपणांजन्ममरणनछुटे तेकामनआदरवू हवेआजेंग्रंथ  
 करीयेगीये तेवालजीवनाहीतनेअर्थकरीयेछीयेएटलेआ  
 त्मज्ञानरहीत तेनेवालकहीये तेनाउपकारनेअर्थकरुंछु  
 तथाजोगेश्वरपूरुप तथाआत्मज्ञानीपूरुपोनेआग्रथघणो  
 प्रितिनूकारणथाशे केमकेएनेविपेअनूभवज्ञाननोरसतेने  
 स्वादेकरीमाहाप्रितिनूस्थानकथशे जेमभोगीपूरुपोनेस्त्री  
 नागीतवल्लभछे अथवाजैमसगीतवंधनाटकवल्लभछे तेम  
 आग्रंथवल्लभलागे हवेएग्रंथजैजाणपूरुपोठे तेनेवल्लभ  
 छे एटलेलोभीनरने जेमचीतामणीरत्नपारसपापाणका

मकूभसोवर्णफूरसाप्रमूख जेमतेनेवल्लभछे अनेतेमातागू  
एएवडोछेनही तेतोपूद्वलीकवस्तूछे एकभवनोसखाइछे  
वलीकंडैएथकीजन्मजरामरणता फेराटलेनहीव्याधीश  
रीरनीमटेनहि अनेपरभवमाठीगतीआपे अनेआजेग्रथछे  
तेतोआभवने विपेतोसतोपसुखमोटुआपे नेसंतोपसुख  
मांसर्वसुखसमाइगया एनामहोडाआगलइद्रचंद्रनागेंद्र  
कोइगणतीनानथी. ॥ उक्तचगाथा ॥ इद्रचंद्रपदरोगजा  
णो॥ जेणेनिजशुद्धसत्ताधनपठाणो॥ नअनआपेनअनचो  
रे ॥ कोणजगदीनकोणजगजोरे ॥ १ ॥ एवंएग्रथनुमहा  
त्मजाणीने एग्रथनोअभ्यासकरवो.

हवेग्रथनोप्रारंजकरीयेबिये अहोभव्यजिवो सर्व  
कारंजवोमीने एकआत्मज्ञाननेविपेउद्यमकरो एआत्म  
ज्ञानछे तेआत्मीकसुखनुंदातारछे नेविजाकारणछे तेपु  
द्वलीकसुखनादातारछे तेथकीकाइमुक्तिथायनहि नेआथ  
कीजन्ममरणताफेराटले. अनेवितरागनामार्गनेविपेख  
टद्रव्यभाखेलाछे तेमध्येपाचद्रव्यछांडवा एकआत्मद्रव्य  
आंदरवाजोगकह्योवेतोअहियांविजुवहारनुंजाणपणुछेअ  
थवाआदरवुछे एसर्वपुद्वलीकजावछे माटेअवश्यछाडवा  
जोगछे अहियाकोइकहेशेके पगथीयेपगथीयेचडायकांड  
एकेहारेमेमीउपरजवायनहि माटेशुजाशुजकारजनेविपे  
उद्यमराखवो तथाद्विपसमुद्रदेवलोकादिकनुंजाणपणुभ

गवंतेशावास्तेकह्यु माटेतेजाणेतनेपंडितकहिये तेनेज्ञानी  
पणकहिये तेनोउत्तर.

हवेजेपावडीयेपावडीयेतमेचडवुकह्यु तेखरुं पणमुक्ति  
नापावमियांतोज्ञानध्यानवे अनेशुजाशुजपावमियातेतो  
पुद्गलीकवे नेपावमियेचमताउतरतातो अनंतोकालआगे  
पणवहिगयो तेथकीकांडइआपणाआत्मानुंकल्याणथयुन  
हिनेहजिएनाएजपावडियानेझालीनेवेशीरहीशंत्यारेआ  
पणीमुक्तिकेदाहाडोथवानी अनेएवाजेपावडियानेविपेरा  
गराखीरह्यावे तेजिवनेमुक्तिघणीदूरभापणथायछे अने  
जेनेपावडियाचडवानीखपहोय नेमालउपरजवुंहोयतेथ  
णीतोपावडियोछोफतोजाय नेउपरलेपावमियेचडतोजा  
यतेथणीतोमालउपरसुखेसुखेपोचे पणप्रथमपगथियेज  
अटकीनेवेठो अनेमहोमेथिएवुंकहेशेजेभाइपगथियेपग  
थियेचडाशे नेउपरनेपगथियेतोचडतोछेनहि तेकाइमेडी  
उपरजायनहि तेमआहियांजेजन्मपरजंतथकीजशुजाशु  
जपगथियुंझालीनेवेठोतेमुवासुधीधर्मनेपगथियेचडतोछे  
नहि अनेमहोमेथीकहेछेके पगथियेपगथियेचमाशेतोथ  
णीनिकाइमुक्तिथायनहि एतोएकवचनबोलवानुंठुपक  
ड्युछे एधामधुमनोरागीशुभाशुभमारच्योपध्योवालजि  
वनेरिक्षवे पणएथीकाइपोतानाआत्मानुंकल्याणथायन  
हि माटेहेभव्यजिवोएपगर्थायुअनादिकालनुंझालेलुंएथ

कीअनंताजन्ममरणकर्या एथकीसंसारनो पारआव्यो  
 नहिमाटेजोआत्मानुहेतवंतोतो एपगथियानेढोडो नेजा  
 नध्यांनरूपीयेपगथियेचडो संभवारुपदोरडुझालो अ  
 धवशायरुपवेगेकरीने चम्वामांनो तोमोक्षरुपिमेडीमां  
 जइनेवेसाय तथाएजाणपणुछे तेमांकांइनिश्चेछेनहिंए  
 तोव्यवहारथकीजाणवानुंछे तेमांकांइआत्मानुंकल्याणुछे  
 नहि एजाणवाथकीमुक्तिपांमिये एवाअक्षरतोकांइशा  
 स्त्रमांसितानथी तथाएवस्तुकोइध्यानमांलावेलानथीए  
 मकरतांकदापिस्वस्थानविचयधर्मध्यानमांगणीये तोतेप  
 णपुद्गीकसुखनोढातारछे तेथकीकांइमुक्तिथायनहिएसर्वे  
 व्यवहारअनुजोगमांगणेलाछेनिश्चेअनूजोगतोएकद्रव्या  
 णुजोगछे तेमध्येपणपांचद्रव्यनेछोडीएकआत्मद्रव्यनेआ  
 दरवोतेथकीजुमुक्तिथाय माटेप्रथमआत्मस्वरुपनीउल  
 खाणकरवी नेपतीतेस्वरुपनेविपोचितवनाकरवीतेनुनाम  
 आत्मचिंतामणीकहिये तेनेध्यानपणकहिये तेनेज्ञानपण  
 कहिये तेथकीआत्मानिश कर्माथय माटेआत्मानुंध्यान  
 छेएमोटुंस्वरुपछे.

॥ उक्तंच ॥ आत्मध्यानफलंध्याना॥मात्मज्ञानंचमुक्तिदं॥  
 आत्मज्ञानायतन्नित्यं॥ यत्न कार्योमहात्मना॥१॥  
 अर्थहवेआत्मध्यानतेआत्मानुंध्यानतेनुफलपणतेध्यां  
 नजछेनेआत्मज्ञानेनहोयत्यारेमुक्तिआपे माटेज्ञानएजज

गतमामहोदुते तेमाटेमहोटापुरुषोपंडितज्ञानीहोय तेने  
तोआत्मज्ञाननोजउद्यमकरवो एजजुक्तवे.

॥श्लोक॥ज्ञातेह्यात्मनिनोभूयो॥ज्ञातव्यमवशिष्यते॥

अज्ञानंपुनरेतस्मिन् ॥ ज्ञानमन्यन्निरर्थकं ॥२॥

अर्थ--जेणेपोतानोआत्माजाएयो नेपोतानास्वरूपनीउ  
लखाएथइ तेधणीनेविजुकाइजाणवानीफरीथीजरुरवे  
जनेहि'एगोजाणेसवेजाणेइतिवचनात्'माटेजेणेएकआ  
त्माजाएयोतेणेसर्वजाएयुंछे, अनेजेनेपोतानाआत्मानुंजा  
णपणुनथीथयुं नेविजाअनेकशास्त्रनीरीत्योजाणेछे तेसर्व  
निष्फलवे फोगटकायछेशकरेवे एमांकांइएनाआत्माने  
मुणथयोनहि माटेजेआत्मातेहिजपरमात्माठे. अहिया  
विजोकोइपरमात्माछेनहि एनुंजध्यानकरवुं एथीजमु  
क्तिथाय

॥उक्तचगाथा॥एहिजअप्पासोपरमप्पा॥कमविशेपइजायो  
जप्पा॥इसमेदेवजुसोपरमप्पा॥जावहूंतुमेअपोअप्पा॥१॥

अर्थ--अहोभव्यजिवोतमोसमजो तमनेमाहाहेतका  
रीछेएहिजअप्पासोपरमप्पाकहेताआपणोआत्माजेआ  
शरीरनेविपेरह्योछे तेहिजसाक्षातपरमात्माठे. निश्चेथकी  
शुद्धपरीब्रह्मएनेजजाणवो एपुर्वअनादिकर्मनासंजोगथ  
कीशुभाशुभक्रियानेविषे पडयोथकोजन्ममरणकरेवे पण  
एशरीरमारह्योजेचेतनएहिजदेवछे नेएहिजपरमेश्वरछे

माटेशुचाशुन्नक्रियानोत्पागकरीने पोतानाआत्मानुध्यां  
नकरो नेतमेएनुंजसमर्णकरोसाक्षाततरणतारणआजएपो  
तपोतानोआत्माजबे माटेएवंपोतानाआत्मानुंस्वरुपतेनी  
चुलेपरनीजेशेवाआदरोबो नेपरनीआशाराखोबो नेजा  
णोबोकेकोइकअमनेतारशे एतमारुमोटुअज्ञानपणुछेएअ  
ज्ञानभावबोडीने पोतानास्वरुपनुंध्यानकरो एथीतमारु  
कारजथशे अनेकारजजेसर्वैरहयुं तेज्ञाननेविपेछे नेज्ञान  
छेतेआत्माबे माटपोतांनाआत्मानुजस्मर्णकरवु.

॥श्लोका॥ नवानामपीतत्वाना॥ज्ञानमात्मप्रसिद्धये॥

येनाजिवादयोभावा. ॥ स्वभेदप्रतियोगिनः ॥

नवानामपीतत्वाना कहेताजेएनव तत्वकह्यांतेनेनां  
मजीवतत्व १ अजीवतत्व २ पुन्यतत्व ३ पापतत्व ४  
आश्रवतत्व ५ सवरतत्व ६ नीरजरातत्व ७ वधतत्व ८  
मोक्षतत्व ९ एनवतत्वछे तेमध्ये एकजीवतत्व तेतत्वबे  
वाकीसर्वैअतत्वछे : केमकेसंवरनीरजरा नेमोक्षएतोआ  
त्मानागुणबे अजीवपुन्यपापआश्रवंधएसर्वैअजीवते  
आत्मानाजाणवामांआवे ज्ञानमात्माप्रसिद्धए केहेतांजे  
ज्ञानरुपआत्मातेजमोटोछे तेवीनासर्वैकाचुछे शामाटेके  
अजीवादीकजावजे सर्वैरह्यातेसर्वै आत्मज्ञानमांसमाय  
छेआत्मज्ञाननेवीपेजे आदरवाजोगहोयतेआदरे छांडवा  
जोगहोयतेछांडेअनेजाणवाजोगहोयतेजाणे.

॥ उक्तचगाथा ॥ नयजंगपमाणेहि ॥ जोअप्पासाअ  
वाअजावेणं ॥ जाणईमोपस्वरुवं॥समदिठायोसोनेउ॥२॥  
अर्थ-नयजंगपमाणेही केहेतांनयेकरीने जागेकरीनेप्र  
माणेकरीने जेअपाशाअवाअजावणेकेहेतां जेआपणा  
आत्मानेएटलेनयेकरीनेजाणवो तथासतजगीचोभगी  
आदेदेइजागेकरीनेजाणवो अथवाप्रत्यक्षादिकप्रमाणेक  
रिनेजाणवोइत्यादिकस्यादवादमार्गेकरीने जेनेआत्मानुं  
जाणपणुथयुछेतथामोक्षनुंस्वरुपजेणेजाणुछेतेनेसमद्रष्टि  
कहिये तेनेममकितज्ञानपणकहिये तेनीजमुक्तिथायपण  
तेविनाजेक्रियाआचारउतकष्टापाले छजिवनीदयापाले  
तेधीकाइतेनाआत्मानुकल्याणथायनहि.

॥ उक्तचगाथा ॥ विरयासावजाउ॥कपायहिणामहव्व  
यधरावि॥समदिठिविहूणा॥कपाविमुपनपावंति॥१॥

अर्थ-विरयासावजाउकेहेतां जेजिवविरमासावदथकी  
कहेताजेप्रणातिपातजिवहिशानोत्यागकरो तथासर्वथ  
किमृखावादनोत्यागकरोतथासर्वथकीअदतादाननोत्या  
गकरो तथासर्वथकीस्त्रीआदिकनोत्यागकरो तथासर्व  
थकीपरीग्रहनोत्यागकरो एटलेएपाचे आश्रवनोत्याग  
करो तथापाचेइंद्रियोवशकरी तथामनादिकगुप्तित्रैएपा  
लेएकायायकी.तथावचनथकी तथामनथकी सर्वसावदं  
कर्मनोत्यागकरो. कपायहिणामाहावियधाराविकहेतांक

पायकहेता जेक्रोध मान माया लोभ रागद्वेषइत्यादि  
कंकपायनोनाशययो जोआमासजपरिणामआवेअथवा  
कोइकंपंचमहाव्रतधारणकरी जनकल्पीतुलव्रतपालेअथ  
वाशुधर्मास्वामीसरखुचोरीत्रपाले तोपणशुंकांइएजिवनी  
मुक्तिथाय अपीतुकोइकालेनजथाय शामाटेकेएजिवनी  
समद्रष्टिथइनहि एटलेसमद्रष्टिकहेताजेपरजावउपररा  
गेनथीतेमद्वेपेनथी नेपोतानास्वरूपनेविपेथिरभावेरह्या  
छेएवोजावमाहिप्राप्तथयोनहि तेथीमुक्तिनपामे केमकेमु  
क्तितोआत्मदशामांछे तेजावएनेआव्योनहि नेपरभांव  
माहेथीगयोनहि तेथीतेजिवनुंकल्याणकांइथायनहिऐंचा  
रगतिससारमापरीभ्रमणकरेजपणकारजसिद्धिथायनहि

॥श्लोक॥ श्रुतोह्यात्मपरांजेदो॥ नुभूत संस्तुतोपिच ॥  
निसर्गादुपदेशाद्वा ॥ वेत्तिजेदंतुकश्चन ॥ ४ ॥

हवेकारजसिद्धिथावानुकारणकहीयेगीयेके जेनेस्वकेहे  
तापोतानाआत्मस्वरूपअनेपरकेहेता जेपुद्गलादीकपाच  
द्रव्यतेवनेनो जेनेजेदपडेलोवे अनेभेदरवरूपजेनासम  
ज्यामांआव्यु नेपरजेपुद्गलादीक पाचद्रव्यनेनोखापानी  
पोतानाआत्मस्वरूपनोअनुभवकरे एनेजविपेरमणकरेए  
कोइकजीवनेपोतानेसेहेज स्वजावेप्रगटथाय कोइकजी  
वनेगुरुनाउपदेशथकीथाय एवीरीतेभेदजाणीआत्माने  
जुदोकरीनेअनुभवकरे तेवारेएकत्ववीतर्क बीजोपायोप्रा



सथाय कोइकजगायेप्रथक्तवीतर्कप्रगटथाय तेपायाने  
 विपेआत्मज्ञानहीतकारीथाय अन्यथाजेवाचवाभणवा  
 जाणवा तेसर्वेफोगटजाणवा तेमीथ्याट्टिरुपरह्योतेनेवि  
 टंवनारूपीकष्टछे त्यातोएकजआत्मस्वभावपणेरह्योतेत्या  
 तोआत्मज्ञानदर्शनचारित्ररूपकह्युंते तेकाडआत्माथकी  
 जुदूजाणवुनही तेतोलोलीभुतथइनेरेहेलुछे तेउपरद्रष्टा  
 तकहीयेछीये जेमरत्ननीमालानेरत्ननीकाती एवेयेनीश  
 किकंडजुदीनथी तेमएज्ञानदर्शनचारित्रतेलक्षणकंडआ  
 त्माथकीजुदूजाणवुनही आत्माअनेआत्मानुंलक्षणज्ञाना  
 दीकजेनेदकेहेवोते व्यवहारनयेतेएछठीविचिक्किनेन्याये  
 करीमानीयेपणनिश्चेथीतोइहांकशीयेनेदनथी एउपरद  
 ष्टातकहीयेगीये जेमघटअनेघटनुजेरुपाटिकजेवर्ण तेघट  
 थकीचिन्नमानीयेतेकल्पनावे पणकइघटनेघटनुरुपजुदू  
 नथी घटविनावर्णशानेआधारेरह्यु अनेघटपणरुपाटीवि  
 नाट्टीगोचरमाशानोआवे एभिन्नमानवोतेव्यवहारनय  
 नीकल्पनाछे निश्चेथीतोएकजछे तेमआत्मानेआत्मानागु  
 णादीकतेपणकइजुदानथी परमार्थविचारीनेजोइयेतोएक  
 जते एवोजेशुद्धनयेकरीआत्मस्वरूपछे तेनिश्चेकरीनेअनु  
 भववामाआवेते एटलेरमाणकरवामाआवेछे अनेव्यवहा  
 रनयेकरीपरजेकायादिकद्रव्यश्रीलखायछे तेगडवाजो  
 गजाणवामाआवेते एवीरीतेनयपक्षपणविचारीजोवोतथा

वस्तुतानोभावंजोतांतोगुणनेगुणीनुंअभेदस्वरूपठेअनेजो  
 नेदस्वरूपमानीयेतोविरोधआवे केमकेमृतीकानेमृतीका  
 मांघटादीथवानोगुण अथवामलवावीखरवानोगुणजुदो  
 मानीयेतोमृतीकाविना मलेविखरेकोण तथाघटादीरूप  
 शानांथाय माटेइहांभिन्नमानतांमोटुदोपणठे तेमजआ  
 त्मानेआत्मानागुणतेकांइजुदावेजनही अनेजोजुदामान  
 वाजइये तेवारेज्ञानादीकगुणजुदोनेआत्माजुदोएमथायते  
 वारेज्ञानविनातोआत्मावेजनही तेवारेजडथायछेतथाज्ञा  
 नादीकगुणते आत्मावनाशानेआधारेरेहे तेवारेएआत्मा  
 तथाज्ञानादीकगुणसर्वनिश्फलठे एकल्पनाससासिंगवत्  
 ठरीमाटेअहीयांमोटोविरोधआवे तेकारणमाटेआत्माने  
 आत्मानागुणएकत्वनावेसंलग्नरह्यावे अनेचेतनएवोजे  
 शब्दतेसामान्यपदठे शामाटेकेएमांसर्वआत्मानुएकठाप  
 णुथयुं निश्चेथीतोकर्मजनीत्यजेवस्तुतेनेदनेपामे तेविटंब  
 नारुपछे पणतेपोतानुस्वरूपतजीनेजुदानजाणवाअनेव्य  
 धहारनयवालोएमजुदामानेठेतेकहीयेछीये तेजीवनासमु  
 दायनोतरेहतरहथी भेदकल्पेएकद्रीआदिकगतीआश्रीत  
 थाकपायादिक आश्रीतथागुणस्थानादीकआश्रीतथावय  
 आश्रीतथावर्णादिकआश्री अनेकप्रकारेनेदकल्पनाकरे  
 मांहोमाहेविचीत्रपणुंजणावेछे एसवेंवेहेवारनयजाणवो  
 अनेएवार्तानिश्चयनयनीसमजवालो जीवतोमानतोनथी

तनासमजवामातोएवुठेके जेजेजीवनीअवस्थाप्राप्तयाय  
छे शुभ वा अशुभ तेतोनामकर्मनी प्रकृतिनास्वभाव  
कीछे अथवा अन्यकर्मसातमाहेली हरकोइनीप्रकृतिना  
स्वभावथीयायछे पण काइते आत्मानास्वभावथी यतु  
तथी आत्मातोनिर्विकल्पीछे अरुपीछे एनेविपेतो एक  
जाणवानोजस्वभावछे बीजीरीते कोइस्वभावलाधतोन  
थी अनेजेजन्मजरादिक प्रणतीजेछेतेतोसर्वकर्मनेवडाछे  
तेकइआत्माभावेनही आत्मातोअविकारीछे अनेकर्मना  
स्वभावतेकइआत्मानास्वभावमासजवतानथी अहीया  
तोकेवलएकस्वस्वभावलाधेछे अनेजन्मजरादिकएतोक  
र्मप्रकृतीजछे नेकर्मजनीतजेभावतेआत्मानेविपेजेआरोपे  
छे तेनेज्ञानथकीभ्रष्टजाणवा तेचारेगतीसताररुपसमुद्र  
महानयकरतेमध्येजमशे एटलेजेउपाधीनाजेदथकीप्रग  
ट्योजेजेदतेतोमुखप्राणीहोयतेमाने जेमफटकरतनी  
माहेलीकोरेअनेकपदार्थभापणथाय तेनेफटककरीमानेते  
मुखजाणवो पणतेएमनथीसमजतोकेफटकरजुदुछेअने  
तेपदार्थजुदाछेएवीजेनीमरतनपोचीतेअज्ञानकहीयेतेमअ  
हीयाआत्मानेविपे पणकृतकर्मभेदएमानेछे पणएमनथी  
जाणतोकेएतोजडनुंकामुछे एवुनसमजेतेनेअज्ञानीकहीये  
अनेपोतानाजें व्यवहारनापक्षयकी कर्मजीनतजेउपाधी  
तेनथी एवुमानेतेआत्मविरुपवादीजाणवो केएकक्षेत्रमा

हेरह्योछे एवोजेआत्माअनेकर्मतोयपणएसंजोगपामतो न  
थी जेमएकघटनीमांहेलीकोर पुंगीफलतथाअन्यबीजुदा  
णाप्रमुखअनेकवस्तुनरीहोयतोयेपणतेवस्तुपुगीफलफी  
टीनेदाणोनथायअथवादाणाफीटी पुगीफलनथायतेमअ  
हीयाएवोजेआत्मातेपोतानाजे कोइगुणज्ञानादीकअथवा  
भलोपोतानो जेकंड्रअस्तीत्वप्रमुख स्वभावतेकइगैमीने  
कर्मजनीतथायनहीएवोशुद्धस्वभावीआत्मातोछेजेमधर्मा  
स्तीकायलोकनेविषेप्रदेशेप्रदेशेव्यापीरह्योछे अनेबीजा  
पणद्रव्यव्यापीनेरह्योछे पणकंड्रधर्मास्तीकायपणफीटी  
नेअधर्मास्तीकायपणथायनहीएमसर्वेद्रव्यमांसमजबुंसौ  
सौनास्वभावमांजरहे.

हवेइहांजेजाणवामांफरकठेतैकहियेछिये जेमकोइपुरु  
पने आंखनुतेजमंदहोय अथवालीलांपीलांकमलआखे  
आवतांहोय अथवाघरणवेहेलोहोय तेधणीचंद्रमावेदे  
खेपणचंद्रमातोआकाशमाएकजठे अहीयांकइचंद्रमानी  
भुलनथी अहीयातोएनादेखवामांजफरकछे तेमअहीयां  
पणजेजीवज्ञाननथीपाम्या तेजीवआत्मानिअनेकअव  
स्थामानेवे.

शिष्यवाक्य-स्वामीश्रनेकशास्त्रवांचेते जुवेछेधर्मउप  
देशकरेते पडीतनागधरावेते तेज्ञानकेमनपाम्याकहीये ते  
ने ७ एके

लस्युनथीतेविना शास्त्रचाहेतेवांवांचोउपदेशकरोपणते  
नेज्ञानीकहेवायनहि.

हवेएवानिश्रेतीवातनाजाणपणाविनांनाजेप्राणिरह्या  
तेनेउनमादनाजरेलाजाणवा तेममतवडेकरीनेआत्माने  
अनेकप्रकारेमानेते पणजेमअनवययी एकस्वरुपआस्ती  
पणानेअनुजवियेठिये एटलेसर्वेआत्मानुसरखापणुठेवि  
दमानजापणपणुठे तेमाटेआत्माएकजकहिये, अहियां  
काइदोपछेनहि जेव्यवहंरनयथी सत्यअसत्यरुपजेचा  
डियोठे तेनेगोपविये एटलेतेनीगवेखणाकरवीनहि अहि  
यांतोएकशुद्धनयरुपियो जेमित्रठे तेतोएकत्वपणेरत्नत्री  
यदेखामेतेअर्गीकारकरिये तथानरनर्कादिकजेगतीरु  
पप्रजायेकरिने जेउपजवुंवणसवुछे तेजुदुठेमाटेतेप्रजाये  
करीने सदायिअनवययेजशुद्धछे एटलेएपर्जायादिकमां  
फरवाथकीकाइआत्मस्वरुपपोतानातत्वभावएकत्वपणा  
प्रतेगडतोनथीतेउपरद्रष्टातकहियेठिये जंथाकहेतांजेम  
सोवर्णस्वरुपएकठे हवेतेसोवर्णना उतपातवेनेवीपेअने  
कघाटपरवर्तेवे कुडळकंठी बाजुवेढइत्यादीक पर्यायनुप  
रवर्तनपणुठेपण कंइसोवरणपणानु पलटणनथीएघाट  
नेर्वपिभिन्नजावछे तेमआत्माएकजछे अनेनरनरकादीक  
गतीतेभिन्नजावठे पणआत्मानोस्वप्नावतो एकजरुपछेअं  
जेजेगतीआदीक पर्जायतेतोकरमना पर्जायछे पणशुद्ध

स्वरूपसाक्षात्तनिश्चयनये आत्मपर्जायनेविषे कर्मक्रिया  
 स्वभावछेनहि एटलेआत्मानेविषे एकर्मपर्यायवेनहि  
 आत्मातोअजस्वचाविकछे अथवाजेकर्मनाजेप्रमाणवाते  
 काइसर्गादिकसुखरूपचाविकनथी एतोशुचाशुचपरवर्त  
 ननेविषेवे कदापीकोइकप्रमाणवाउज्वल शुभनाजोग  
 धीसर्गादिकसुखअथवा धनपुत्रकलत्रादिक सुखनेदेखी  
 नेकोइएशुचपुद्गलने सारामानेछे तेमोटुअज्ञानपणुतेनुवे  
 केमकेएप्रमाणनुपरवर्तनतो नवेतत्वमारह्युछे अत्रद्रष्टात  
 कहियेछिये केजेमकोइकशुचद्रव्यरुमोरगलेइनेचित्रामण  
 कोइयेकाहुं तेजितजागनेविपेशीजे पणकांइजितजारते  
 नउपाडे एपणएककारमीशोचरुपछे तेनेसत्यकरीनेमा  
 नीये माटेकांइएभिंतनुंकामचित्रामणकरेनहि एपणप्रपंच  
 जाणवा अथवाजेमस्वप्नामाहेदिठु जेराज्यअथवाधनइ  
 त्यादिकवस्तुपणतेजाग्यापछी देखायनहि नेखपमाआवे  
 नहि तेमआव्यवहारमार्गनाअनुसारनेविषे स्पष्टपणेदी  
 ठामाआवेवेधनपुत्रकलत्रादिकपणतोनिश्चयथीज्ञानद्रष्टीवि  
 चारीनेजोइयेतो एवस्तुयेजुदीवे नेआत्मायेजुदोवे अथवा  
 जन्मातरपरियतरहेवानो काइनेमछेनहि एपणअथीरप  
 दार्थछे तथाकदापीसर्गादिकसुखशास्त्रथकीस्पष्टजणाय  
 छेपणपुनरपीजन्मथयो त्यांतोतेकाइसुखजणातुनथी ने  
 सांजरतुपणनथी माटेएसर्वखोटीकल्पनाछे शामाटेकेए

कारणकेवुठे केजेमग्रिप्परितुनेविपे मध्यानसमेमरघट  
 श्नाकहेता स्वारनीजोमिनेविपे जेमस्वारज्ञगेछे तेदीठा  
 माएवुंआवेकेजाणेसर्वपाणीपाणीजरयुठे तेप्रमाणेआस  
 जोगर्थाउपनीजेस्पष्टविकार एमंसर्गजेमल्यो तेसर्वेनो  
 अतेनाशजठे एवस्तुसाचीनथी माटेव्यवहारनाकर्तव्य  
 माकशोयेसाचोपदार्थभाषणथतो नथी तथाजेमगधर्वना  
 नगरवडेआकाशघणोशोभायमानदिसे पणतेक्षणकमांस  
 वेठकाणथइजाय त्यारेआकाशहतोएवोथइरहे तेमआ  
 व्यवहारनयनावलथकी सर्गादिकसजोगमले तेनोविला  
 सपणकदापीपामे तोपणशुंएस्वप्नापरायछे तेकारणमाटे  
 एकजजेशुद्धनयेकरीनेग्रहेलो जे एकत्वभावएटले एकत्व  
 पणेकरीनेजआत्मानेविपेज पांमवुधायठे अनेएवस्तुबी  
 जेकाइसपूर्णमलतीनथी बीजेजेरहितेश्नाग्राहिनेसर्वक  
 रजकरेछे जेमकोइपुरुषएकतादूलनोदाणोलेंइने एवुक  
 हेकेमारीपासेपणतादुलठे पणतेतादूलथीकोइसामानेप  
 णजमाडीशकेनहि अनेपोतानापणभुखभागेनहि तेमए  
 अशेग्राहिने कल्पनाजेकरवी तेथीकाइकारजसिद्धीयाय  
 नहि जेनेसपूर्णआत्मस्वरुपनुजाणपणथयु तेपूर्णवादीक  
 हेवाय तेनेकाइअशकल्पनामारुचीआवतीनथी तथासु  
 त्रमध्येपणएगेंआयाएवोपाठछे तोतेनोपणआशयएहिज  
 कह्योते तेकारणमाटे प्रत्यक्षएकजोतीरुप झलझलाटमां

नएकआत्मस्वरूप तेजसस्यवे एमशुद्धनयवालापणकेहे  
 ताहवा अनेजेपरपंचनोसंचेकरीनेजेसंकलेशकरवो तेतो  
 सर्वदुखनुजकारणवे एटलेज्यांमाहामायारुप मोटोफद  
 रह्योत्यांमारुतारु कल्पनाघणोरही त्यांकडकारजसिद्धि  
 वेनही प्रगटसिद्धिपोतानाआत्मस्वरूपमा जेहुंपोतेजआ  
 त्माछुहुंपोतेजभगवान्छुं एवीरीतेप्रसन्नथवुं एवीरीतेशुद्ध  
 रूपपोतानोप्रकाशकरवो एनेश्रयनयवाळानो एजमत  
 वे अनेव्यवहारनयवालोछे तेनोमततोफोगटकल्पनारुप  
 जोवामांआवेवे तेकहायेछीयेकेशरीरने नेआत्मानेएकत्व  
 पणुंकरीनेमानेवे अथवाकोइकप्रकारे आत्मानेरुपीपणुंक  
 रीनेमानेवे शामाटेजेशरीरादीकनी याधीव्याधीनाका  
 रणनेमेलवीनेकेहेवे एसर्ववेहेवारनयनीघेलछावे निश्चेन  
 यवाळोतोएवस्तुने कबुलनथीकरतो जेकारणमाटेसा  
 क्षांतअरुपीआत्मपदार्थछे असख्यातप्रदेशेनीरमल तोते  
 नेअंशेकरीनेपण रुपीपणुकेमपामीये अपीतुनजपामीये  
 जेमकोइअग्नीने केहेशेकेशतिलथइ तोतेवातकेममनांय  
 अग्नीशीतलकोइकालिथायजंनही एतोअग्नीनाजीवग  
 मापछीजेदलप्रथ्वीकायनाभागनुरह्युं तेशीतलछे पणते  
 एटलीसरतनपोची तेथीतेणेअग्नीशीतलकही अथवा  
 तेइकेहेशेकेधृतउष्णथयुं पणएमनथीजाणतोके धृततो  
 तिलजवेएतोअग्नीनोसंजोगमलवाथकीअग्नीनाप्रदेश



घृतमापेठावेतेउष्णवे पणएकक्षणैकअतरि अग्नीनाप्रदेश  
 वलीजायतेवारे घृतशीतलजलाधे तेमआपुढगलजेरु  
 पीपंदार्थतेनासंजोगमां आवीनेशरीरजेवांध्युं तेनेआत्मा  
 ठरावेछे अनेतेआत्मानेरुपीकेहेछे तेमोटीतेजीवनेभ्रमणा  
 जेपेठेलीवे एमसमजवु शामाटेजेरुप रसगवस्पर्श स्व  
 स्थानइत्यादीक वस्तुएआत्मानाघरमानथी बाहारनुंजे  
 करवुंकराववुअथवाशब्दादीकजेउचारणकरवुंएवुदेखीनेते  
 नेरुपीपणुमानेछे पणतेकांइआत्मांनीवस्तुनथी आत्मातो  
 केवोवे। केतेकांइनजरेदेखवामाआवतोनथी मनथकीपण  
 कांइग्रहेणथतोनथी वचनथकीपण अगोचररुपछे अनेए  
 आत्मावीजीवस्तुने प्रकाशकरीशकेनही एतोपोताना  
 स्वरुपमांजप्रकाशकरेछे तेवोआत्मस्वरुप तेनेरुपीकेमंक  
 रीनेकेहेवाय एसाक्षातआत्मस्वरुप चीदानंदमयसंत्यस्व  
 स्वरुपठेतेनुस्वरुपवीचारीनेजोइयेत्यारेसुक्षममासुक्ष्मछेने  
 उतकंष्टामाउतकष्टोपणछेएवीअन्यदर्शननेवीपेपणपुछा  
 थयेजीछेकेशुआत्मा मुर्तीपणानेफरसेकेनफरसेतेनोएअन  
 मतीवालायेएवोउत्तरआपेलोवेकेशरीरनेवीपेइद्रियोछेतेमो  
 टीछेइद्रियोथकीमनघणुंमोटुंमनथकीबुद्धीघणीमोटीवेनेबु  
 द्धिथकीआत्माघणोमोटुंवेअहीयांएकस्वेंदकरीनेउत्तरकेहे  
 छेजेवीकललोकोकेहेतां जेअज्ञानलोकोअमुर्तीआत्माछे  
 नेमुर्तीपणानी भ्रमणाराखीरह्यावे। तेथीजेज्ञानीपुरुषो

छेतेने एकमोटुअचंवाभूत मालुमपडे आलोकोनीशीमुर  
खाडछेजेमाटेजीव आत्मानेमुर्तीनी मतीवेदनाप्रगटपणे  
छेएमजोमानीये तोपुदगलनेपणवेदनाथइजोइये पणअ  
हीयांतो जेवेदनाछे तेतोआत्माने अशुद्धपणेशक्तीप्रणमेली  
तेनाअनुभवथकीथायछे केमकेजे ईद्विद्वारेकरीनेजेअज्ञां  
नपणुतेपोतानीमेलेज पोतेप्रणमछे तेनापरभावथकीइष्ट  
पणुंवाअनीष्टपणानो वीपेशफर्सद्वारेकरीनेवेदनाप्रणमछे  
अहीयांएवेदनातोमालेकआत्मउपयोगपणनथी पणकं  
इअहीयापुदगलदशा मालकनथीअहीयां एकअज्ञानद  
शाएटलेआत्मानो अवलोउपयोगमालकछे एटलेएवी  
पाककारपांमीनेआ वेदनाप्रणामनेभजेछे एटलोअहीयां  
कल्पनाथकी आत्मानोभागमालुमपडेछे तेमाटेअहीयां  
मुर्तीपणुजेमानवुते नीमीतमात्रथयुं एटलेअनवीयकेहेतां  
सहेचारपिणथयुं केनीगोडेकेजेम घटनेदंडचक्रतदवत्प  
णअहियाकांइआत्मारुपीथायनहि केमकेआत्माछेतेतो  
ज्ञानमयचेतनारुपबोचछे अनेजेजीवकर्मनाअधीष्टितप  
णानेविषेरक्तछे तेणेकरिनेतेजीवने तेकर्मफलनामावेद  
नाछेतेवीपदेशिपाम्योछे तेकारणमाटेजेआत्माछे एतोअ  
मुर्तिजठेचेतनपणाने कोइकांलेओलघेनही तेकारणमाटे  
जेआशरीरादीकजे पुदगलमुर्ती स्वभावीकछेतेनीसाथेर  
होजेआत्माते कांइमुर्तिथायनही शाकारणमाटेकेदेहनी

साथेआत्माकोइ एकत्वपणुपामतो नथी.

एप्रकारेकर्मवर्गणाना तथा मनोवर्गणाना तथावच  
नवर्गणाना जे आत्माने समिपे एपुद्गल प्रवर्तैछे ते एकत्व  
संगते प्रवर्तैछे ते कीया तन्धनादिकना जे पुद्गल ते तो दूर  
जवे तथा मनवचनना जे पुद्गल ते पण आत्मा थकी जुदा जमा  
नवा जामाटे जे पुद्गल नो गुण तो मुर्ति मानछे न आत्मा तो  
ज्ञान गुणवालो छे ते कारण माटे पुद्गल थी आत्मद्रव्य सदाय  
जुदा जवे जे मधर्मास्तीकाय नो गुण गती हेतव छे ते म आ  
त्मानो गुण ज्ञान मय छे ते कारण माटे धर्मास्तीकाय थकी प  
ण आत्मा जुदा छे एवं ज परमेश्वर नुं वचन छे तथा अधर्मा  
स्तीकायद्रव्य नो गुण ते थीर साहेकारी छे ते गुण पण कांइ  
आत्मानो नथी आत्मा तो ज्ञान मय जवे ते कारण माटे ए अ  
धर्मास्तीकायद्रव्य थकी आत्मद्रव्य भिन्न कह्यो छे एव सर्व  
ज्ञये कह्यो छे तथा आकाशद्रव्य नो गुण अवगाहना हेतव छे  
ते थकी पण आत्मगुण जुदा ज छे ते कारण माटे आकाशद्रव्य  
थकी आत्मद्रव्य भिन्न कह्यो छे एवातिर्यकरना वचन छे ते का  
रण माटे आत्मा तो ज्ञान गुणे करीने ज सिद्ध छे तथा कालव  
रतनारूप छे तो ते थकी पण आत्मा जुदा ज छे एवीरि ते पांच  
अजिवद्रव्य थकी आत्मानु जुदा पण सावत ठरयुं प्रगट ए भे  
द करीने जुवे तो समज पडे अने देश थकी अजिव पण आत्मा व  
छे ते नुं कारण कहियो बिये केम के जे प्राणीने शुद्ध स्वभाव नी

प्राप्तीनयेइ शुद्धज्ञानपणनजाएयु अनेशुद्धस्वरूपनीरमण  
 तापणनआवी त्यारेतेशुद्धकारणयकीछेटेरह्योतेवारेतेनुंस  
 र्वअज्ञानदशारूपथयु एटलेतेनुज्ञानपणमेलुरहयु तेनाअ  
 धवशायकरतकरावतमारह्या तेनेवाहाजपुद्गलनुपरावर्त  
 नरहयु तेजिवनेअजिवजकह्यावे एवीरीतेशास्त्रमाछेजअ  
 नेसमजुपुरुषनेतो एवीरीतेजाणवानुंछेके इन्द्रिवलसासो  
 आसनेआउखुएचारेछे तेनेद्रव्यप्राणकहिये तेतोआत्मा  
 थकीभिन्नवे अनेजेपर्यायजेरह्या तेपणपुद्गलनेआश्रीने  
 रहेलाछे तेपणआत्मेस्वरूपथकीतो जुदाजछे केमकेआत्मा  
 नेकाइएप्राणपर्यायवने काइजिववुंनथी शमाटेकेएप  
 र्यायकेवाछेके काइज्ञानरूपनथी तथाधिरजरूपनथी तथा  
 नित्यसासवतानथी वलीथिरंनावनथी एटलाकारणयकी  
 तोएरहीतछे माटेएनेविपेशुआत्मानेमलतापणुवे नेआ  
 त्मजिसदीवजंथकीजिवेछे तेतोप्रकृतीरूपजे पोतानीस  
 क्तिसदायसदायसाश्वतीछे तेशक्तिवडेकरीने आत्मासदी  
 वजिवेवे एशुद्धद्रव्यार्थकनयनोपक्षजाणवो अहियाए  
 कअचरजकारिवारतावे तेकहियेठिये केअहोजेजिवप्रा  
 णेकरीनेजिवतो नथी नेप्राणविनाजिवजिवेछे तोएअचवा  
 निजवारतावे जेमचित्रकारीनु चरीत्रसांभलिकोनेहरखन  
 आवेअपीतुआवेज तेमएवातशुद्धनेयमीकोणनग्रहे सर्वेश्व  
 रहवे वलितेआत्माकेवाछे केपुन्यरूपतेपणआत्मानहिअ

नेपापरुपतेपणआत्मानहि पुन्यतथापापवेयेपुहलरुपते ।  
 जेवालकालेजेशरीरतेउपादानं नावेकरीनेकल्पेते एटले  
 जेमवालालिलाकहेता वालकछोकरांधुलनीक्रिडाकरेछे ।  
 तेनेसत्यकरीमानेछे तेमएवालजिवज्ञानरहित पुन्यपाप  
 नाकामनेआदरवु गडवुसत्यकरीमानेतेपणपुन्यछेतेशुन  
 कर्मते नेपापछेतेअशुनकर्मछे । त्यांकोइकहेशेकेपुन्यछेते  
 आदरवाजोगते पापतेछांडवाजोगते तेनेशिक्षाकरेतेके  
 शुकाइशुनकर्मते तेथकीजिवशंससारमापडेते केनथीपड  
 तोमाटेएथकीपणससारमा रखडवुजपडे एतोकेवुठेकेएक  
 लोढानीवेडीते नेएकसोनानीवेडीछे एवन्नेवेडीयो वधि  
 खानाछे वन्नेयेपरवशते नेवन्नेयेदूखदाइछे विचारीनेजो  
 इयेतोफलभेदकाइजणातोनथी वन्नेवेदनीकर्मरुपतेएक  
 सुखनुफलछे नेएकदुखनुफलछे एवन्नेनुफलप्रगटजोइये  
 तोपुन्यपापमध्येकाइभेदछेनहि जेकारणमाटेपुन्यथकीसु  
 खविलशे एपुन्यफलछे तेनाजेफलतेआगलदूसरुपप्रग  
 टेत्यारेएमसमजवु केएपुन्यफलथकीपापप्राप्तथयुत्या  
 रेएपुन्यतेपापनुदातारठरछु नेएपापकर्मनोजेवारेउदध  
 योतेवारेदुखनीप्राप्तिथाय माटेतेमातोमुखहोय तेसाता  
 करीमाने प्रणामथकीविचारीनेजोइयेतोमहातापकारीछे  
 केमकेपडितजनएवुकहेतेजे संस्कारथकीउलटागुणनोवि  
 रोधकरताएपुन्यछे अनेवलीतेपुन्यथकीनिपन्युजेसुखते

सुखनेभोगवता पापकरीनेदूखनेपामेठे तेउतराधेनजि  
निकथानेविपेएवुंकहयुंछे जेममोटोबोकडो तेनेखानपान  
सारीपेठेमलेतेथकी शरीरपुष्टथाय पोतेपणमनथीखुश  
थायपणघरेपरोणोआवे तेवखतएनोवधकरे तेवारेदुखी  
थाय तेमजएराजातथा इंद्रादिकतेनापणसुखमाशरीरपु  
ष्टथायछे तेवोकमांवत्जाणवुं प्रणामेजोताएपुंन्यठे तेदुख  
नुकारणजठे अथवाजेमजलोठे तेलोहिपिताथकांघणुसु  
खमानेछे पणतेनेदोहिनेलोहिकाढीले तेवारेमहादुखनी  
प्राप्तिथायछे तेमएपुंन्यनाउदेंथकी पांम्योजेसुखतेभोग  
वतांघणीखुशीमानेठे पणतेसुखभोगवताउपाज्युंजेपाप  
कर्म तेथीमहादुखनिप्राप्तिथाय माटेपुंन्यपापवन्नेत  
जंवालायकठे ज्ञानिपुरुषतोएकेश्रादरवाजोगकहेतानथी  
आदरवाजोगतो एकआत्मस्वरूपजंछे अनेविपेभोगनिज  
ब्रह्मातेतोप्राणिने अंतेपणमाठिदशानेपमामे जेमअ  
ग्निनुवलवलतुपाणिपिवे जलनीतुपाक्यांथकीठिपे तेम  
जेठेकाणेइंद्रियोनिउतकंठा घणिरहेतो एसदायमननेवि  
पेवलिरहेलोछे त्यांसुखक्यांथकीहोय तथाज्यांद्विपघणो  
रहेतेवोथको घरमासुखेवेठोहोय तोयपणतेसुखनाअनु  
भवनाकालनेविपे द्वेपरुपियातापेकरीनेमनदूखवेदे केम  
के एकखभाउपरथी विजेखभेभारआरोपणकरिये.  
तेविचारीनेजोतांकांइ चारउतर्योनहितेमज इंद्रियोनाआ

एदयकीकाइ आत्मानेसुखप्रगट्युनेहि अतेदुखनुंदूख  
रह्युएटलेसुखदुखने मोहएत्रणेगुणवर्तीरुपछे पणआत्मा  
नेतोविरोधीजछे पणपोतपोतानागुणमा गुणनीवृत्तीछेए  
टलेदुखरुपीजेवनतेनेतो ओलधीशकेनेहि अनेआससा  
रनुजेसुखअथवा दूखतेकोनाजेवुछेके जेममोहोदोनाग  
माहाक्रोधिहोयअनेतेणे पोतानीफणाटोप विस्तार्योहोय  
तेसरखोएसंसारनोविलोसवे माटेविवेकीपुरुपनेतोएमहा  
जयनोजहेतुवे एवीरीतेफलनीअपेक्षा विचारनेजोतापु  
न्यपापनुएकत्वपणुंजठरेछेजेमुखनमाने तेनेअज्ञानदशा  
ठरीतेधणोससारंपरीत्रमणकरशेअने, जेएवंस्तुएवीरिते  
संमजीनेअंगिकारकरे तेधणीजेवसमुद्रतरेएमाकाइंसदेह  
तेनहीएंटलेपुन्यतथापापएवंनेएकदुखरुपजछेअनेसदाय  
कालआत्माथकीभीनछेअनेआत्मगुणनाविरोधीछे मा  
टेअवश्येतजवाजोगवेशुद्धनीअथयथकी विचारीनेजोता  
शुद्धआत्मासदायसत्यरुपचिदानंदमयछे एतोचोथीद  
शाजाणवाजोगछे तेवगरुपवित्र एवोआचरणवशिशेशो  
जेवे जेमवृपाकाले मेघवरशीरह्यापछीजेमवादलानोना  
शथायत्यारंपठी सुरजनीजेशोनाकातिदीसेतेमएआ  
त्मांनीसोनादिसे जेमजगत्तनाजीवने इद्रियोनुसुखवृत्ती  
नुनानाप्रकारनुयायवेअनेसमान्यप्रकारेजेप्रिदानदरुपछे  
तेतोसर्वदशामहिसरखुसुखदेखेछे तेनेकाइवंधतुउछेजे

नहीजेमतणखेकरीने अग्निदिपेनही अथवाएथकिकांइ  
 तापपणलागेनाहि तेमजेअनुभवसहित आत्माछेतेंपरा  
 भवथकीकशुयेथतुनथी जेपरवशतायेजेम सुखरुपनोसा  
 क्षिजेआत्मानथी तेनेअजीमानअहंकारपणनथी तेविना  
 जसुखनुजापणथायछे शामाटेकेविवेकदशा जेनेप्रगटप  
 णेथइतेनेसुद्धभापणथयुगे तेनेतोसर्वस्थानकनेविपेसुख  
 जदिठामाआवेगे तेकारणमोटशुद्ध निश्चेनयथकीएकचि  
 दानंदजावनो आत्माजोकाछे अशुद्धनिश्चयनयथकीक  
 रयांजेकर्मशुजाशुच तेथकिउपन्युंजेसुखदुखतेनो भोक्ता  
 आत्मावे जेकर्मनाफलनोभोगदारिसर्गनिआदेदेइनेते  
 व्यवहारथकिप्रवर्तनछे.एसर्वेनिगमादिकनयनीअवस्था  
 एविरितनीजजावनाहे शुद्धजावनोकरता जेआत्मातेतोशु  
 द्दनयथकिजपांमिये एसामर्थाइविजीजगायेनथी जेसमे  
 शुद्धपरिणामवर्तेगे तेसमंसामर्थ्यविरजनिवृत्तिने आश्रीने  
 शुद्धजावनोकरताजएनयवालोमानेगे उपद्रव्यअतराया  
 दिकरहितसामर्थ्यपणुतेनेविपे दुष्टजावनोनाशथयेथके  
 शुद्धस्वभावप्रगटकरवाने आत्माप्रवर्ते अनेज्यांरागद्वे  
 पकलेपेकरिनेचितवाशेलुजेनुगे तंजिवतोसंसारिजकहेवा  
 यअनेजेरागद्वेपमोहथकीमुकाणाछे तेनोतोमोक्षजकहिये  
 जेमननोपरिणामशंकलिंष्टगे रागद्वेपेवापेलोगे तेनेआत्मा  
 नकहिये आत्मानुरूपतोअन्यवडेनथीपोतानासत्वार्थपणे



जत्रविकारीजठे हवेअहियांशब्दनयवालो सुतज्ञानना  
 उपयोगवंतनेआत्माकहेछे एनयनोविचारछे माटेअहि  
 यांन्यायग्रथमहोटा तेथकिनयनोविचार थोमोककहि  
 शु' त्यानयोवेछे एकद्रव्यार्थक विजिपर्यायार्थक तेमध्ये  
 द्रव्यार्थककोनेकहिये विजिनयतेनयथकीभिन्ननपडे एवो  
 विषयजेनोतेनेद्रव्यार्थककहिये तेनाचारभेदछे निगम १  
 संग्रह २ व्यवहार ३ रजुसुत्र ४ एनेदठे तथापर्याया  
 र्थकनात्रणभेदछे शब्द १ सभिरुढ २ एवभुत ३ एभेद  
 ठे तथाविकल्पेकरीनेरजुसुत्रनयपण पर्यायार्थमाकह्योछे  
 एविकल्परूपनयछे हवेनिगमनयनात्रणभेदछे आरोप १  
 अंश २ संकल्प ३ एभेदभाख्याठे तथाअहियांचोथो  
 भेदउपचारपणकहेठे तेशुकेनथीएकगमोअभिप्रायकहेठे  
 एटले निगमनयकहेवाय अनेकआश्रियेछे तेनिगमना  
 चारभेदठे तेमध्येआरोपनिगमनाचारभेदठे द्रव्यारोप १  
 गुणारोप २ कालारोप ३ कारणादिआरोप ४ त्यागु  
 णादिकनेविषे द्रव्यपणुमानवु तेद्रव्यारोप जेमवर्तमा  
 नापरिणाम तेपचास्तीकायनेविषेप्रणमनधर्मठे तेहेनेका  
 लद्रव्यकहिवोलवो एभिन्नद्रव्यरूपपंडछेनहि पणद्रव्य  
 कहेवोतेआरोपधर्मकहोठो अथवाद्व्यनेविषे गुणनोआ  
 रोपकरवो जेमज्ञानगुणछे इत्यादिकआत्मानागुणकहेवा  
 तोएज्ञानतेजआत्माकह्योठे इत्यादिकगुणनोआरोपकह्यो

ठे २ तथाकालआरोप जेमश्रीविरनिरवाणथया घणोका  
लवित्योपणआजदिवालीने विरनुंनिरवाणछे इत्यादिक  
वचनबोलवुं एवर्तमानमांअतितनोआरोपकरथो अथवा  
आजश्रीपदमनाथप्रज्जुनिरवाणछे एवर्तमाननेविपे अ  
नागत्यनुंआरोपछे एमअतितनेविपेपणवेभेदथाय तथा  
अनागतनेविपेपण वेजेदथाय एविरितेकालारोपनेविपे  
ठभेदजाणवा ३ हवेकारणनेविपे कारजनोआरोपकरवो  
त्यांकारणरोपकहिये तेकारणनाचारभेदछे तेकहियेछिये  
उपादानकारण १ निमित्तकारण २असाधारणकारण ३  
अपेक्षाकारण ४ एचारकारणछे तेमध्येजेउपादानका  
रणप्रथमकहुं तेआत्मानाज्ञानादिकगुणनुआराधन स्व  
भावग्राहि विभावत्यागि स्वसत्ताअविलंबन इत्यादिक  
पोतानास्वभावनेविपे थारभावेरमणताकरवी तेउपादा  
नकारणकहिये १ हवेबीजुनीमीतकारणतेनावेजेद शुद्ध १  
अशुद्ध २ जेगुरुशुद्धमार्गनादेखाडनारा आत्मस्वरूपनीओ  
लखाणकरावे परभावनोत्यागकरावे तेजगुरुमोक्षनादा  
तारकहिये परमउपगारीस्वपरनीओलखाणनावताव  
नार तरणतारणझाहाजसमान तेनीजेसेवाभक्तीकरवी  
एशुद्धनीमीतकहिये तथाअशुद्धनीमीतजे बाह्यकष्टक्रिया  
तपादिककरे तेद्रव्यथकीसाध्यसाधनसापेक्षछे तेबाह्य  
जीवनेधर्मनीमीतकारणछे तेनेव्यवहारथकीधर्मकहिये

पणकारणनेविपेकर्तापणानोआरोपथयो२ एमआरोप  
नाअनेकप्रकारकह्याछे अगनीगमतोव्यवहारादिककार  
णनेविपे सर्वठेकाणेव्यापिनेजरह्योछे तथासकल्पनीग  
मनावेजेदछे एकस्वप्रमाणरुपजेवीर्ज चेतनानोनवोनवो  
क्षयउपसमथायतेलेवो अथवाकारजतरेनवोनवोकारज  
नोउपयोगथायएवेजेदछे हवेजेअशनीगमपुर्वेकह्यो ते  
नावेजेदसंक्षेपयकीकहुंछु एकचिन्नास१बीजोअचिन्नास  
२ तेचिन्नासकेहेताजे पुद्गलनास्कधजुदाजुदाकलपायछे  
नेछेपणजूदाजूदा शामाटेकेएनामामलवावीखरवानोध  
र्मरह्योछे तथाअभीनासकेहेताजे आत्मानाप्रदेशतथागु  
णअचिन्नछे एकोइकालेजूदाथायनही तेमजधर्मास्तीका  
य तथाअधर्मास्तीकाय तथाआकास्तीकायपणजाणवा  
एटलेनिगमनयकह्यो१ हवेसग्रहनयकहियेविये सामा  
न्यपणेमुलद्रव्यव्याक जेनीतत्वादिकसत्तापणेरह्याजेध  
र्म तेनेसग्रहकरतेसग्रहनयकहिये तेसग्रहनयनावेजेद  
छे सामान्यसग्रह१विपेशसग्रह२ त्यासामान्यसग्रहनावे  
भेदछे एकमुलसामान्यसग्रह१ तथाउत्तरसामान्यसग्र  
ह२ मुलसामान्यसग्रहनाछभेदछे तेआगलअस्तीतत्वा  
दिस्वभावकहिशुत्याकेहेवाशे तथाउत्तरसामान्यननावे  
भेदछे एकजातीसामान्य१बीजोसमुदायसामान्य२ जा  
तीसामान्यकेहेता मनुपजातीतथात्रीजंचजातीतथादेव

जाती एजातीसामान्यछे तथासमुदायसामान्य जेमआ  
 बानासमुहनेविपे अथवाआवानावननेविपे एटलेसर्वेआं  
 बाग्रहणथयाएसमुदायवचनछे अथवामनुपसमुदायनेवि  
 पे मनुपसर्वेग्रहणथाय एसर्वेसमुदायसामान्यजाणवुं ए  
 टले एउत्तरसामान्यजेछे तेचक्षुदर्शनतथाअचक्षुदर्शन  
 ग्राहीछे अनेमुलसामान्यजेछे तेतोअवधीदर्शनथजिअ  
 हेवायछे शावास्तेकेइहामुलवस्तुनुजाणवुछेतेप्रत्यक्षज्ञान  
 दर्शनविनाग्रहणथायनहि अनेजेपरोक्षवालाजाणेछे ते  
 सदगुरुनाकेहेणथकीजजाणेछे अथवाबीजेप्रकारे एसंग्र  
 हनयनावेजेदछे सामान्यसंग्रह१विपेशसंग्रह२ त्यांद्रव्य  
 एवोशब्दकेहेवोतेसामान्यसंग्रहछे शामाटेकेद्रव्यकेहेतां  
 छयेद्रव्यआवीगया माटेएनेसामान्यसंग्रहकहिये तथा  
 विपेशसंग्रहकेहेता जीवद्रव्यअजीवद्रव्य एमजीवथीअ  
 जीवजूदापाडवा एमरूपीथीअरूपीजूदापाम्वा एविपेश  
 थयो एकएकद्रव्यनेबीजाद्रव्यथकीजूदोपाडीएकद्रव्यपो  
 तानीजातीनोसंग्रहकरीवोले तेनेविपेशसंग्रहनयकहिये  
 तथाएविपेशसंग्रहनयनोविस्तारघणोछे तथाविपेशावि  
 पेशग्रथनेविपे एसंग्रहनयनाचारजेदकह्यावे तेगाथानो  
 अभिप्रायसामान्यथकीदेखाडुंछु संग्रहणकेहेतां एकठो  
 एकवचनमध्ये एकअध्यवसायउपयोगमांसमकालेग्रहे  
 वो सामान्यरूपपणेसर्ववस्तुनो आकरोमनग्रहणकरवो

तेसग्रहकहियेअथवासर्वभेदसामान्यपणेग्रहियेजेणेतेणेते  
 सग्रहकहियेअथवासग्रहीतपंडितसमुदायअर्थग्रहेवापजे  
 एवचनेतेसग्रहेवचनकहिये तेनाचारभेद सग्रहीतसंग्रह  
 १पंडीतसग्रह२ अनुगमसग्रह३वीत्रीकसंग्रह४ सामान्य  
 पणेवेहेचणवीनाजेगृहणथाय एवजेउपयोगअथवावच  
 न अथवाएवजेधर्म कौडवस्तुनेविपेतेसग्रहकहिये१ अ  
 नेएकजातेमाटेएकपणुमानीये एकमध्येसर्वगृहणथायते  
 पंडीतसग्रहकहिये जेमएगेआयाएगेपुगला इत्यादिव  
 स्तुअनतीठेपणजातीएकठे माटेएकवचनमागृहणथायठे  
 तेनेपंडीतसग्रहवीजोनेदकह्यो२ तथासर्ववक्तीजेअनेकजी  
 वरूप अनेवक्ताछेतेसर्वमापामिये तेनेअनुगतसंग्रहकहि  
 ये सत्तचीतमयोआत्मा एटलेसर्वजीवतथासर्वप्रदेश त  
 थासर्वगुणतेजीवनाचेतनालक्षणकहिये एनेअनुगमसग्र  
 हकहिये ३ तथाजेनेताकेहेवेतेथीइतरनो सर्वसग्रहपणे  
 ज्ञानथाय एवीत्रीकसग्रहकहिये जेमजीवठेत्यारेजीवन  
 हीहतेअजीवकहिये एटलेकोइजीवठेएवुठ्यु एवीत्रीकव  
 चनेअथवाउपयोगेजीवनोगृहणथायठे तेनेवीत्रीकसग्रह  
 कहिये४ अथवावेनेदसग्रहकेहेवायठे एकतोमाहासत्ता  
 रुप१ बीजोआवतरसत्तारुप२ एरीतेसंग्रहनंस्वरूपकह्यु  
 एटलेत्रणभुवनमाएवीवस्तुकोइठेनही जेसग्रहनयनागृ  
 हणमांआवेनही अर्थात्सर्ववस्तुसग्रहनयनागृहणमाआ

वेगे ॥ उक्तच ॥ सदितिभिणीएणजम्हा ॥ सव्वणुपव्व  
तएवुद्धी ॥ तीसव्वसत्तमतं ॥ नत्तीतदतरकिचि ॥ १ ॥ इति  
संगृहणयकह्यो २ हवेव्यवहारनयकहियेछिये जेपुर्वेसंगृ  
हणयेजेवस्तुगृहणकरी तेनेजेदंतरकरीनेवेहेचवु तेनेव्य  
वहारनयकहिये जेमद्रव्यकह्योतेसामान्यकह्यो तेमध्येवे  
हेचणकरिये त्पारेद्रव्यनावेभेदथाय एकरूपी १ बीजोअ  
रूपी २ अरूपीनावेभेद एकचेतन १ बीजोअचेतन २ इत्या  
दिकजेभेदवेहेचवा तेसर्वेव्यवहारनयनोपक्षजाणवो अथ  
वाव्यवहारकेहेतां प्रवर्तनतेनेव्यवहारनयकहियेछिये ते  
नावेभेदछे शुद्धव्यवहार १ अशुद्धव्यवहार २ तेशुद्धव्यव  
हारनावेभेद वस्तुगतव्यवहारकेहेतां जेसर्वद्रव्यनीस्व  
रूपरुपशुद्धप्रवर्तीहोय जेमधर्मास्तीकायनीचलणसहाय  
ता अधर्मास्तीकायनीस्थीरसहायता जीवनीज्ञायकता  
इत्यादिकवस्तुगतव्यवहारछे तेनात्रणभेदछे द्रव्यव्यव  
हार १ गुणव्यवहार २ स्वभावव्यवहार ३ बीजोसाधनव्य  
वहारनावेभेद उत्सर्गसाधन १ अपवादसाधन २ जेउत्स  
र्गसाधनते द्रव्यनुत्सर्गनीपजाववामाटे रत्नत्रीयनी  
शुद्धताकरवी तेगुणस्थानेश्रेणीआरोहणरुपथावु हवेजेअ  
शुद्धव्यवहारनावेभेदजे क्षेत्रअवस्थाने अचेदरह्याजेगु  
णज्ञानादिकेदकेहेवा असदभुतव्यवहारकेहेतां अमुको  
क्रोधी मानी विपद्इत्यादिक अथवादिवतामनुपइत्यादी

कअथवादेवतापणु तेहेतुपणेप्रणमे आहाजेदेवगतीवीपा  
 कीकर्मतेनेअहोरुपप्रजाववे पणजथार्थज्ञानविनाजेदज्ञा  
 नमुनजीवएकरुमीमानेवे तेअशुद्धव्यवहारकहीये तेवली  
 अशुद्धव्यवहारनावेजेदएकसंकलेसीतअशुद्धव्यवहारजे  
 शरीरमाहारु हुशरीरइत्यादिकअसदभुतव्यवहार तथा  
 अससलेपीतकेहेता पुत्रधनाढीएमाहारु एकेहेवुतेअसं  
 सलेपीतएअशुद्धव्यवहारनावेजेद माहाजाप्यमाकह्याछे  
 हवेजेव्यवहारनावेजेदमुलछे एकवैचणरुपव्यवहार १  
 बीजोप्रवृत्तिव्यवहार तथाप्रवृत्ति एकवस्तुप्रवर्तन १ सा  
 धनप्रवृत्ति २ लौकिकप्रवृत्ति हवेसाधनप्रवृत्तिनावेजेद  
 एकलोकोत्तरसाधनप्रवृत्ति जेअरीहंतनीआज्ञापेशुद्धसा  
 धनमार्गेएहलोकसंसार पुद्गलभोगासंसाजसासंसादिर  
 हीत जेरत्नत्रीयनीप्रणती परजावत्यागसहीतनेसाध  
 नाप्रवृत्ति तथाजेस्यादवादविना मिथ्याजीमानसहितकु  
 प्रवचनकसाधनाप्रवृत्तिक अथवालोकव्यवहारपरोवाये  
 वचनेजेलोकनोस्वस्वदेशअनुकुलप्रवर्ते तेलोकव्यवहार  
 कहीये एटलेआपआपणेस्वार्थनोमार्गचलववोअथवाआ  
 पआपणास्वार्थनो उपदेशतेमार्गमाजेप्रवर्तेअथवाप्रवर्ता  
 वेतेसर्वेलोकव्यवहारनयनाभेदजाणवा तथाद्वादशानय  
 चक्रमध्येएकएकनयनासोसोनेदकह्याछेतेशास्त्ररहस्यना  
 जाणजीवहोय तेनेएग्रथथकीजाणवा एविचारधारवार्थी

खुलामोघणोथशे एटलेएव्यवहारनयकह्यो ३ हवेरजु  
सुत्रनयकहीयेगीये रजुसरलजेसुतकहेताबोधते रजु  
सुत्रकहीये रजुशब्देअवक्रपणुंछे एटलेसमोभावहोयते  
सुतहोयतेने रजुसुत्रकहीयेअथवा रजुअवक्रपणवेस्तु  
पदार्थनेसत्यकरीजाणे तेनेरजुसुत्रकहीये तेवस्तुनुवक्रप  
णुकेमजणायतेकहीयेछीये सप्रतेवर्तमानपणेउपन्योवर्त  
मानकालवस्तु तेरजुकहीये अनेजेअतीतअनागततेर  
जुसुत्रनीअपेक्षायेश्रवतोछे एटलेअतीततोवणशीगयोअ  
नागततोआव्योनथी तेवारेअतीतअनागतएवेछे तेअव  
स्तुछे अनेजेवर्तमानपर्यायवरते तेवस्तुपणुंसत्यछे पूर्व  
कालपञ्चातकाललेइवस्तुकहेवी तेनिगमनयेआरोपणरु  
पठेत्याकोइपुछशेजे संसारीजीवकर्मसहितनेसिद्धसमान  
कहेछे तेअनागतकालेसिद्धथाशे तेमाटेकहेछे तेनेतमेअ  
नागतनेअवस्तुकेमकहोणे तेनोउत्तर.

हेअव्यएअनागतजावी माटेकहेतानथी एतोवर्तमान  
सर्वगुणनीछतीपर्याय आत्मप्रदेशेणे जोवतीपर्यायन  
होयतोसामर्थ्यपर्यायक्याथकीथाय माटेएवर्तमानमाव  
स्तुछेजपणआवरणेकरीने ढकाइगयोणे तेथीप्रवर्तननथी  
तेमाटेतिरोभावपणामाटे संग्रहनयकहिये पणवस्तुमाते  
सर्वसकलज्ञानादिकगुणंछतावर्तेछे तेमाटेसिद्धकहियोणे  
ये अनेजेवस्तुतेनामादिकपर्यायसहितजेवर्तेछे माटेनामा



दिक्निक्षेपाते सर्वरजुसुत्रनाभेदछे एटलेनामादिकत्रणानि ।  
 क्षेपाद्रव्य अनेभावएवेव्याख्याकारणकारज जावनीवहे  
 चणकरेतेमाटेवे पणवस्तुमासहेजचारनिक्षेपातेभावधर्म  
 जठे तथापोतपोतानुकारजकरताजछे एरजुसुत्र तथावी  
 जांथुलरजुसुत्रएक्षणवर्तमानकालनो एकसमयतेनेसुक्ष्म  
 रजुसुत्रकहिये अनेबहूकोलीरजुसुत्रएपणकालापेक्षाना  
 वेछे तथाएजावनयेछे तथाएनेजोगाविलंबीपणेतबहाज  
 ठेतेद्रव्यमध्येगणेंवे एरजुसुत्रनयकह्यो ४ हवेशब्दनयनुं  
 स्वरूपकहियेछिये सप्रतीकहेताबोलावे तेनेशब्दकहिये  
 अथवासपीयेबोलावियेवस्तुपणेतेशब्दकहिये तेशब्दते  
 वाचअर्थहेनेग्रहेतेप्रधानपणे जेनयेतेपणशब्दकहिये जे  
 मकरतकतेजेकर्यो तेनोहेतुजेधर्मवस्तुमाहोय तेबोलावि  
 येएटलेशब्दनंकारणतो वस्तुनुंधर्मथयुं जोजलाहरणध  
 र्मछेतेनेघटकहियेछिये एमअहियांपणशब्देवाचअर्थग्रहे  
 तेनयेपणशब्दकहेवाय जथाजेमरजुसुत्रनयने वर्तमान  
 कालनुधर्मइष्टछे तेमशब्दादिकनय तेपणवर्तमाननेजइ  
 ष्टे जेकारणेपेटेपरथु पहोलो बुधन गोलसकोचीतउद  
 रकलीत युक्तजलाहरण क्रियानंसामर्थप्रसिद्धघटरूप  
 भावघटमाजघटेछे पणशेषनामथापनाद्रव्यरूपत्रणघट  
 नयेघटनमानेघटशब्दनाअर्थनेतंसकेननेजघटकहेघटधा  
 तुतेचेष्टावाचीठे तेकारणमाटे शब्दनयतेचेष्टाकरतानेजघ

टकहे एटलेरजुसुत्रनयच्यारेनक्षेपासंजुक्तछे पणघटमा  
 नेअनेशब्दनय तेजावघटनेघटमाने एटलोविशेषपणोठे  
 शब्दनाअर्थनीज्याउत्पत्तिहोय तेनेतेवस्तुकहे एटलेरजु  
 सुत्रनयेसामान्यघटगवेख्यो अनेशब्दनयेसदजावजेअ  
 स्तीधर्म असदजावजेनास्तीधर्म तेसंजुक्तवस्तुनेवस्तुपणु  
 कहे एटलेवस्तुनेशब्देबोलावतां सातभांगेबोलाववो  
 एटलेएसप्तजंगीजेटला तेशब्दनयनाभेदजाणे तेसप्तभं  
 गीनुंस्वरूपबोधदीनकरथकीजाणवुं एशब्दादिकनय व  
 स्तुनापर्यायनेअवलंबीने वस्तुनाभावधर्मनो आहकछे  
 तेमाटेजावनिक्षेपेएनयमुख्यछेअनेधुरनीचारनयमांनामा  
 दिकत्रणानिक्षेपामुख्यछे एटलेएशब्दनयनुंस्वरूपकह्युं ५  
 हवेसंजीरुढनयनीव्याख्याकहिधेछिये पुर्वेशब्दनयक  
 ह्यातेनेमतेइंद्रशकरपुरंदरइत्यादिसर्वेनामभेदछेएकपर्या  
 यवंतनेदेखिइंद्रसर्वनामकहे उक्तच विशेषावश्यकें एक  
 समिनपी॥इंद्रादिकेवस्तुनीआचित॥इदनसरकनपुरणंदी  
 यो॥अरथाघटतेतदधसेनसक्रादि॥बहूपरजायमपी॥ तद्व  
 वस्तुशब्दनयोमन्यते॥संभीरुढवस्तुनेवमस्यती॥इतिनयो  
 रचेद॥ एकपर्यायप्रगटपणेशेपपर्यायने अणप्रगटवेतेंट  
 लासर्वनामबोलावे पणसंभीरुढतेनबोलावे .एटलोश  
 ब्दनयतथा संभीरुढनयनोचेदछे तेमाटेहवेसंभीरुढनय  
 कहेछे जेसंज्ञाघटकुंभादिकामध्ये जेसंज्ञानोवाचअर्थदि

दिकनिक्षेपाते सर्वरजुसुत्रनाभेदछे एटलेनामादिकत्रणनि  
क्षेपाद्रव्य अनेभावएवेव्याख्याकारणकारज जावनीवहे  
चणकरेतेमाटेवे पणवस्तुमासहेजचारनिक्षेपातेभावधर्म  
जवे तथापोतपोतानुंकारजकरताजछे एरजुसुत्र तथावी  
जोथुलरजुसुत्रएक्षणावर्तमानकालनो एकसमयतेनेसुक्ष्म  
रजुसुत्रकहिये अनेवहूकालीरजुसुत्रएपणकालापेक्षाजा  
वेछे तथाएजावनयेछे तथाएनेजोगाविलंबीपणेतेवहाज  
बेतेद्रव्यमध्येगणेवे एरजुसुत्रनयकह्यो ४ हवेशब्दनयनुं  
स्वरूपकहियेछिये सप्रतीकहेतावोलावे तेनेशब्दकहिये  
अथवासपीयेबोलावियेवस्तुपणेतेशब्दकहिये तेशब्दते  
वाचअर्थहेनेग्रहेतेप्रधानपणे जेनयेतेपणशब्दकहिये जे  
मकरतकतेजेकर्यो तेनोहेतुजेधर्मवस्तुमाहोय तेबोलावि  
येएटलेशब्दनुंकारणतो वस्तुनुंधर्मयथु जोजलाहरणध  
र्मछेतेनेघटकहियेछिये एमअहियापणशब्देवाचअर्थग्रहे  
तेनयेपणशब्दकहेवाय जथाजेमरजुसुत्रनयने वर्तमान  
कालनुधर्मइष्टछे तेमशब्दादिकनय तेपणवर्तमाननेजइ  
ष्टछे जेकारणेपेटेपरथु पहोलो बुधन गोलसकोचीतउद  
रकलीत युक्तजलाहरण क्रियानेसामर्थप्रसिद्धघटरूप  
नावघटमाजघटेछे पणशेषनामथापनाद्रव्यरूपत्रणघट  
येघटनमानेघटशब्दनाअर्थनेतंसकेतनेजघटकहेघटधा  
तेचेष्टावाचीछे तेकारणमाटे शब्दनयतेचेष्टाकरतानेजघ

हे एटलेरजुसुत्रनयच्यारेनक्षेपासंजुक्तछे पणघटमा  
 प्रनेशब्दनय तेजावघटनेघटमाने एटलोविशेषपणोबे  
 षटनाअर्थनीज्याउत्पत्तिहोय तेनेतेवस्तुकहे एटलेरजु  
 नयेसामान्यघटगवेरुयो अनेशब्दनयेसदजावजेअ  
 धर्म असदजावजेनास्तीधर्म तेसंजुक्तवस्तुनेवस्तुपणु  
 एटलेवस्तुनेशब्देबोलावतां सातभागेबोलाववो  
 लेएसप्तजंगीजेटला तेशब्दनयनाभेदजाणे तेसप्तभं  
 नुंस्वरूपबोधदीनकरथकीजाणवुं एशब्दादिकनय व  
 नापर्यायनेअवलंबीने वस्तुनाभावधर्मनो आहकछे  
 टेजावनिक्षेपेएनयमुख्यछेअनेधुरनीचारनयमांनामा  
 अणानिक्षेपामुख्यछे एटलेएशब्दनयनुंस्वरूपकह्युं ५  
 संजीरुढनयनीव्याख्याकहियेछिये पुर्वेजेशब्दनयक  
 निमतेइंद्रशकरपुरंदरइत्यादिसर्वेनामभेदछेएकपर्या  
 निदेखिइंद्रसर्वनामकहे उक्तच विशेषावश्यकें एक  
 नपी॥इंद्रादिकेवस्तुनीआचित॥इदनसरकनपुरणंदी  
 अरथाघटंतेतदधसेनसक्रादि॥बहूपरजायमपी॥ तद्व  
 शब्दनयोमन्यते॥संभीरुढवस्तुनेवमस्यती॥इतिनयो  
 ॥ एकपर्यायिप्रगटपणेशेपपर्यायने अणप्रगटवेतेंट  
 र्वनामबोलावे पणसंभीरुढतेनबोलावे .एटलोश  
 यतथा संभीरुढनयनोजेदछे तेमाटेहवेसंभीरुढनय  
 जेसंज्ञाघटकुंभादिकामध्ये जेसंज्ञानोवाचअर्थदि

दिकनिक्षेपातेसर्वरजुसुत्रनाभेदछे एटलेनामादिकत्रणनि  
 क्षेपाद्रव्य अनेभावएवेव्याख्याकारणकारज जावनीवहें  
 चणकरेतेमाटेवे पणवस्तुमांसहेजचारनिक्षेपातेभावधर्म  
 जवे तथापोतपोतानुंकारजकरताजछे एरजुसुत्र तथावी  
 जांधुलरजुसुत्रएक्षणवर्तमानकालनो एकसमयतेनेसुक्ष्म  
 रजुसुत्रकहिये अनेबहूकांजीरजुसुत्रएपणकालापेक्षाजा  
 वेछे तथाएजावनयेछे तथाएनेजोगाविलवीपणेतबहाज  
 वेतेद्रव्यमध्येगणवे एरजुसुत्रनयकह्यो ४ ह्वेशब्दनयनुं  
 स्वरूपकहियेछिये सप्रतीकहेतांबोलावे तेनेशब्दकहिये  
 अथवासपीयेबोलावियेवस्तुपणेतेशब्दकहिये तेशब्दते  
 वाचअर्थहेनेग्रहेतेप्रधानपणे जेनयेतेपणशब्दकहिये जे  
 मकरतकतेजेकयो तेनोहेतुजेधर्मवस्तुमाहोय तेबोलावि  
 येएटलेशब्दनुकारणतो वस्तुनुधर्मथयु जोजलाहरणध  
 र्मछेतेनेघटकहियेछिये एमअहियापणशब्देवाचअर्थग्रहे  
 तेनयेपणशब्दकहेवाय जथाजेमरजुसुत्रनयने वर्तमान  
 कालनुंधर्मइष्टछे तेमशब्दादिकनय तेपणवर्तमाननेजइ  
 ष्टवे जेकारणेपेटेपरथु पहोलो बुधन गोलसकोचीतउद  
 रकलीत युक्तजलाहरण क्रियानेसामर्थप्रसिद्धघटरूप  
 भावघटमाजघटेछे पणशेपनामथापनाद्रव्यरूपत्रणघट  
 नयेघटनमानेघटशब्दनाअर्थनेतंसकेतनेजघटकहेघटधा  
 तुतेचेष्टावाचीवे तेकारणमाटे शब्दनयतेचेष्टाकरतानेजघ

टकहे एटलेरजुसुत्रनयच्यारेनक्षेपासंजुक्तछे पणघटमा  
 नेअनेशब्दनय तेजावघटनेघटमाने एटलोविशेषपणोठे  
 शब्दनाअर्थनीज्याउत्पत्तिहोय तेनेतेवस्तुकहे एटलेरजु  
 सुत्रनयेसामान्यघटगवेख्यो अनेशब्दनयेसदजावजेअ  
 स्तीधर्म असदजावजेनास्तीधर्म तेसंजुक्तवस्तुनेवस्तुपणु  
 कहे एटलेवस्तुनेशब्देवोलावतां सातभांगिवोलाववो  
 एटलेएसप्तजंगीजेटला तेशब्दनयनाभेदजाणे तेसप्तभं  
 गीनुंस्वरूपबोधदीनकरथकीजाणवुं एशब्दादिकनय व  
 स्तुनापर्यायनेअवलंबीने वस्तुनाभावधर्मनो ग्राहकछे  
 तेमाटेजावनिक्षेपेएनयमुख्यछेअनेधुरनीचारनयमांनामा  
 दिकत्रणनिक्षेपामुख्यछे एटलेएशब्दनयनुंस्वरूपकह्युं ५  
 हवेसंजीरुढनयनीव्याख्याकहियेछिये पुर्वजेशब्दनयक  
 ह्यतेनेमतेइंद्रशंकरपुरंदरइत्यादिसर्वेनामभेदछेएकपर्या  
 यवंतनेदेखिइंद्रसर्वनामकहे उक्तच विशेषावश्यके एक  
 समिनपी॥इंद्रादिकेवस्तुनीआचिता॥इदनसरकनपुरणदी  
 यो॥अरथाघटतेतदधसेनसक्रादि॥बहूपरजायमपी॥ तद्व  
 वस्तुशब्दनयोमन्यते॥सभीरुढवस्तुनेवमस्यती॥इतिनयो  
 रनेदा॥ एकपर्यायप्रगटपणेशेपपर्यायने अणप्रगटवेतेंट  
 लांसर्वनामवोलावे पणसंभीरुढतेनवोलावे .एटलोश  
 व्दनयतथा संभीरुढनयनोनेदछे तेमाटेहवेसंभीरुढनय  
 कहेछे जेसंज्ञाघटकुंभादिकामध्ये जेसंज्ञानोवाचअर्थदि

सेतेजसज्ञाकहे संज्ञांतरार्थनेविषे प्रमुखछे तेसभीरुट  
 नयकहिये जोएकसज्ञामध्ये जेसर्वमत्रमानियेतोसर्वश  
 करथाय ध्यारेपर्यायनोभेदपणोरहेनहि अनेजेप्रजाअ  
 तरहोवेतेतोभेदपणोजहोवे तेमाटेप्रजाअंतरनोभेदपणो  
 जरह्योवे तेमाटेलींगाढीभेदनेसापेक्षपणे वस्तुनेभेदपणो  
 जमानवो एसभीरुटनयवखाएयो एनयपणभेदज्ञाननी  
 मुख्यताछे एटजेसभीरुटनयकह्यो ६ हवेएवभुतनयक  
 हियेठिये एवकहेता जेमघट एशब्दचेष्टाव्यापी इत्यादि  
 करुपेशब्दनोअर्थकह्योवे एरीतेजपरवर्ते तेघटादिकअर्थ  
 तेएवकहेताएमहिजवर्ते विदमानपणेजेशब्दनोअर्थनेला  
 विनेवर्ते तेगब्दनोवाचनथी अनेशब्दार्थपणुजेमानपामि  
 येतेवस्तुतेरुपनहि शब्दार्थमाहेथी एकपर्यायपणुठो  
 होवेतोएवभुतनयतेनेकहे एमाटेशब्दनयथी तथासजी  
 रुटनयथीएवभुतविपेशांतरवे एएवभुतनयेस्त्रिनेमाथेव  
 ड्यो पाणीआणवानीक्रियानोनिमित्तमार्गे आवतापणेनी  
 चेष्टाकरतोघटमाने पणघरनेखुणेरह्यो तेनेघटनमाने  
 केमकेचेष्टानेअणकरवामाटे जेक्रियावतथकोहोय तेनेव  
 स्तुकहे विजानेनकहे तेअर्थकह्यो जेलक्षणकह्या तेरुपेवि  
 शेपथीएजेचेष्टाघटशब्दवाचेप्रसिद्धवे इयोसितस्त्रिनेमाथे  
 पाणीलावतोतेघट तथास्थानकेरह्यो अथवात्रणक्रिया  
 करतानेतेएवंभुतनयघटनकहे एशब्देअर्थ तथाअर्थेस

वदनेवापेते अहियातोरहस्यएजछे जेस्त्रिनेमाथेचमयोवे  
 एवतअर्थतेघटशब्देबोलावे तेथकीअनथातेनेनबोलावे.  
 जेससामान्यकेवलीने सभीरुढनयेअरीहंतकहे जेज्ञाना  
 दिकगुणसामान्यछे पणएवंभुतनयेसमोवसरणादि अ  
 तिश्यसंपदासहित केवलीइद्रादिकपुजता युक्तनेजअ  
 रीहतकहे वाचवाचकनीपूर्णतानेकहे एस्वरुपेएवंभुतनय  
 जाणवो एसातेनयनाविशेषावश्यकनेअनुसारे भेदकह्या  
 तेभेद१२छेतेनोवीवरोनिगमना १० संग्रहना १२ व्यव  
 हारना १४ रजुसुत्रना ६ शब्दनयना ७ संजीरुढनय  
 ना २ एवभुतनयनो १ नेदएवंसर्वमलीने५२नेदकह्या  
 वलीनयचक्रमध्ये सातसेनेदपणकह्यावे तेपणजाणवा  
 तथाअठावीसभेदपणकेटलेकठेकाणेकहेलाछेतथास्याद  
 वादरत्नाकरमानयनुस्वरुपकहयुंछेतेरीतेअहियाकहिनेदे  
 खामियेछिये नयतेकहेतासुतज्ञानरुपप्रमाणेपमाडे जेण  
 वीपयकीधोजेपदार्थनोअशतेथीइतरकहेतावीजोअंशतेथी  
 उदासिनपणे तेनेजपडीवजवावालानोअभिप्रायविशेपेते  
 नयकहिये एटलेवस्तुनाअशनेग्रहेअनेवाकीपदार्थथीउ  
 दासिनपणुतेनयकहिये अनेएकअंशनेमुख्यपणेकरी वी  
 जाअशनेउथापे तेनेनियाभासकहिये तेनयनावेनेदछे  
 एकद्रव्यार्थक वीजोपर्यायार्थक त्यांद्रव्यार्थकनाचारभेद  
 निगम १ संग्रह २ व्यवहार ३ रजुसुत्र ४ एचारनेद



वे कोइकरजुसुत्रनयनेभावनयकरीगृहेते तेनयेद्रव्यार्थक  
नात्रणजेदथाय.

हवेनीगमनयनु स्वरूपकेहेते धर्मनोप्रधानतथागुणप  
णेअथवाधर्मने प्रधानअथवागुणपणे तेधर्मथीएवेनाप्र  
धानतथागुणपणे जेगवेख्योएटले धर्मनीप्रधानतातेवारे  
पर्यायनीप्रधानताथाय तथाधर्मनोप्रधानपणो तेवारेद्र  
व्यनोप्रधानपणो तथागुणपणु तथाधर्मनोप्रधानगुणप  
णो तेजेद्रव्यपर्यायनोगुणप्रधानपणो एरीतेजेगवेखणा  
रूपज्ञाननोउपियोग तेनेनिगमनयजाणवो तेनावोधनेनि  
गमबोधकाहिये हवेएनाउदाहरणकरेछे सतरहेताठतांप  
णेचेतनकहेताजाणपणु एवेधर्ममध्येएकधर्मनोपक्षमुख्य  
गणे बीजानेगुणपणेकरीनेगवेखे एरीतेनिगमनयजाण  
वो अहियाचैतननामेव्यजनप्रजाय तेप्रधानपणेगणे जे  
कारणेचैतनपणोविशेषगुणवे अनेसत्त्वनामाव्यजनप्रजा  
यवे तेसकलद्रव्यसाधारणछे तेमाटेतेनेगुणपणेलेखवे ए  
प्रथमनिगमनेटकह्यो . तथावलीवस्तुपर्यायचद्रव्यएधर्म  
नोनिगमछे अहियापर्यायएवद्रव्यएमवस्तुवे अहियाद्र  
व्यनुप्रधानपणुवस्तुपर्यायवत अहियावस्तुनुगुणपणुप  
र्यायनुमुख्यपणु अहियाउजधेगोचरपणामाटेएनिगमवे  
जेदलक्षणमेकसुंवी विषयाशक्त इतितुधर्मधर्मनोरीति  
अहियाविषयाशक्तजेव्याख्या जेधर्मनीमुख्यतानाविषे

कपणाथीसुखलक्षणधर्मनुं प्रधानतातेविशेषपणेकरीनेध  
र्मधर्मीनेआलवनेसंगमठारे एटलेवर्मतथाधर्मीछे नेआ  
लवेएवेगृहेतासंपुर्णवस्तुनुं गृहणथयुंतेवारैएज्ञाननेप्रमा  
णकह्यो त्यांउत्तरद्रव्यपर्याय वमीएवनेप्रधान एणेश्र  
नुभवतोजे ज्ञानतेप्रमाणथाय अहिंयावेपक्षनेविपेगुण  
ताबीजानीमुख्यतालेइनेज्ञानथायछे तेमाटेनयेकही त  
थावलीसुक्ष्मनिगोदीजिवसिद्धसमासत्तावतछे अथवाअ  
जोगीजनतेससारीएअंशनिगमते.

हवेनीगमाभाष्यकेहेठे वस्तुमांधर्मअनेकठे तेएकाते  
एकबीजाने सापेक्षपणेनमाने एकधर्मनेमानेबीजाध  
र्मनेनमानेतेनीगमाभाष्य कहीयेएदुरनयजाणवो जेकार  
णेश्रन्यनयनेगवेखेनही तेसर्वेदुरनयजाणवो जेमआत्मा  
नेविपेसत्त्वतथाचैतन एवनेधर्मजीनिछे तेणचैतन्यपणुमाने  
सत्त्वपणुनमाने एनीगमजाष्यकहीये एटलेनीगमनयक  
ह्यो १ सामान्यमात्र समस्ताविशेषरहीत सत्त्वद्रव्यत्वा  
दिकनेग्रहेवानोठे स्वभावजेनो सकेहेतापंड्यपणेविशेष  
राशीनेग्रहेपणवक्तव्यपणे नग्रहेएसग्रहकहीये एजा  
वनाछेएटलेस्वजातीना दिठाजेडष्टअर्थतेने निरोधकरी  
नेविशेषधर्मने एकरूपपणेजेग्रहेवो तेसग्रहनयकहीये  
तेनावेचेद एकपरसंग्रह बीजोअपरसंग्रह त्यांपरसंग्र  
हनोअर्थलखीयेछीये॥ असेपविशेषटासीनां भजमानंसु

धद्रव्य मनमात्रमभीमनमान्य परमग्रह इति॥समस्तवि  
 शेपधर्मपणानेजजतो एटलेविशेषपणानेश्रणग्रहेता शु  
 द्धद्रव्य सत्तामात्रप्रतेमाने तेपरसग्रहकहिये जथाद्रव्यए  
 परसग्रह विश्वएकसत्यपणामाटेएमकहेवे तापणानोएक  
 पणानोज्ञानथायछेएटलेसर्वपदार्थनोएकएनेग्रहणवे अने  
 जेसत्तानोअधेतश्रीकरेद्रव्यतरभेदमानेसकलविशेषनेना  
 केहेताजेगृहणकरे तेपरसग्रहाज्ञाश्यकहिये एटलेअध्वी  
 त्ववादीदर्शनजेवेदातीतथाशंखदर्शन एवनेसंग्रहाज्ञाश्य  
 वे जेमाटेदीसताजेदधर्म तथाद्रव्यंतरनमाने तेमाटेमंगृ  
 हाज्ञाश्यकहिये जिनतोविशेषसहीतसामान्यनेगृहे तेमाटे  
 सग्रहनयकहिये हवेअपरसग्रहनस्वरूपकहियेठिने द्रव्य  
 त्वादीन अतरसामान्यनीमीत्वातवानेदनेदेसुगजनीम  
 लीकाम चलमवमानअप्रसग्रह एटलेद्रव्यजेजिवअजि  
 वादिकजेआवतरसामान्यनेमानतो अनेजिवनेविपेपरती  
 जिवनोनेदव्य अजव्यसमकीतिमिथ्यात्वी नरनरकादि  
 जेनेदतेनेगजमलीकाकेहेता मस्ताइयेनगवेस्वोतेअप्रसं  
 गृहकहिये अनेद्रव्यनेसामान्यपणुमाने पणस्वद्रव्यनेप्र  
 णमीकतादिकधर्मनमाने तेअपरसग्रहाभायकहिये एट  
 लेएसग्रहनयनोस्वरूपकह्यो २

हवेव्यवहारनयनुस्वरूपकहियेछिये जेसग्रहनयेग्रहा  
 सत्त्वादिकधर्मपदार्थ तेनेजेगुणभेदेवहेवे भिन्नभिन्नगवेस्वे

तथा जे पदार्थ तेनी जे गुण प्रवृत्ति तेने मनुष्य पणें गवेखे ए  
व्यवहार नय कहिये जे मद्रव्य ठाजिव १ पुद्गल २ धर्मा  
स्ती ३ अयर्मास्ती ४ आकास्ती ५ काल ६ तथा पर्या  
य वे प्रकारना कर्मभावी १ स्वभावी २ तथा द्रव्य वे प्रका  
रना एकरूपी विजो अरूपी ते अरूपी नावे जेद एक चेतन  
विजो अचेतन ते चेतन नावे भेद एक सिद्ध विजासंसारि  
ते ससारी नावे जेद एक अजोगी विजासजोगी ते सजोगी  
नावे जेद एक सजोगी केवली तेर मागुण ठाणाना विजास  
जोगी संसारि ते सजोगी संसारि नावे जेद एक क्षिण मोहि  
वार मागुण ठाणाना विजा उपसंत मोहि ते उपसंत मोहिना  
वे जेद एक अकखाइ विजासकखाइ अकखाइ उपसंत मो  
हि अगियार मागुण ठाणाना विजासकखाइ ते सकखाइ  
नावे भेद एक सुक्ष्म कखाइ ते दश मागुण ठाणाना विजा बा  
दर कखाइ ते बादर कखाइ नावे भेद अवेदीने सवेदी अवेदी  
ते नव मागुण ठाणाना विजासवेदी ते सवेदी नावे भेद एक  
श्रेणी प्रतिपन्न ते आठ मागुण ठाणाना विजा श्रेणी रहित ते  
श्रेणी रहित नावे जेद अप्रमादी ते सात मागुण ठाणाना वि  
जा प्रमादी ते प्रमादी नावे जेद सर्ववर्ति ते षष्ठा गुण ठाणां  
विजा देशवर्ति ते देशवर्ति नावे भेद एक देशवर्ति ते आवक  
ते पाच मागुण ठाणाना विजा अवर्ति ते अवर्ति नावे भेद एक स  
मकित्ती ते चौथा गुण ठाणाना विजा मिथ्यात्वी ते मिथ्यात्वीना

वेनेद एक जव्य विजा अजव्य ते जव्य नावे भेद एक ग्रंथी भे  
दी विजा ग्रंथी अने दी इत्यादिक गती प्रमुख चेतन ना अनेक  
नेद थाय तथा अचेतन अरु पीना च्यार नेद धर्मां स्ती १ अध  
र्मां स्ती २ आकास्ती ३ काल ४ तेना पण खधादिक नेदे  
अनेक नेद थाय तथारु पीद्रव्य कहेता पुद्गल तेना वेनेद  
खध तथा प्रमाण तेना पण खधादिक भेद करता अनेक नेद  
थाय इत्यादिक कारज नेदे तेने भेद माने तेने व्यवहार नय  
जाणवो. हवे कर्म नावी पर्याय नावे नेद एक क्रियारु पवी जो अ  
क्रियारु प एमव हे चण सामर्थ्यादिक गुण नेदे पडे ते सर्व व्यव  
हार नय जाणवो जे परमार्थ विना द्रव्य पर्याय ना विभाग करे  
ते व्यवहार भास जाणवो जे कल्पना ये करीने नेद वहे चेतेंदु  
रनय जाणवो ए च्यार वाक मतने व्यवहार नय दूर नय छे  
शामाटे जे च्यार वाक मत वालानुं कहेवु एवु ते के जिव तो लो  
क मा प्रत्यक्ष द्रष्टी गोचर आवतो नथी ते माटे जिव जगत मा ठे  
नहि जे आजगत मा सर्व रुप मनुष्यादी ठे ते सर्व पंच भुत नु पु  
त लु छे पण काइ जिव छे नहि एवी खोटी कल्पना करीने लो  
कोने कु मार्गे पाडे छे पुन्य पाप पर लोक सर्व उथा पे छे माटे ते  
मत वालाने व्यवहार नय दूर नय कहिये एटले व्यवहार न  
य नु स्वरुप कह्युं.

हवे रजु सुत्रादिक च्यार नय नु स्वरुप कहिये छिये प्रथम र  
जु सुत्र कहेता सरल अतित अनागतने अण गवे खता वर्तमा

नसमयेवर्ततो जेपर्यायमात्रप्रधानपणेसुतकहेतागवखे  
 तेरजुसुत्रनयकहिये जेज्ञाननेउपयोगे वर्ततानेज्ञानीकहे  
 दर्शननोउपयोगवर्तताने दर्शनीकहिये कखायनोउपयो  
 गवर्तताजिवनेकखाइकहिये समतानेउपयोगेवर्ततात्तेस  
 मायककहिये अहियाकोइपुछशेजे एमकरतारजुसुत्रत  
 थाशब्दनयएवन्नेनयो एकथइजायछे तेनोउत्तरकहेछेजे  
 विशेषावश्यकग्रथमाकह्युंठेके कारणरजुसुत्र एटलेज्ञान  
 नाकारणपणेवर्ततोरजुसुत्रग्रहेछे अनेज्यारेजाणपणारुप  
 कारजपणेथाय त्यारेशब्दनयकहिये एफेरछे वर्तमान  
 कालनेपणनग्रहे तेनेरजुसुत्रजासकहीये अनेठताजावअ  
 छताकहे अथवाविप्रीतकहे अथवाजिवनेअजिवकहे अ  
 जिवनेजिवकहे इत्यागतकहेतांबोधदर्शननोएमतछे शा  
 माटेजेछतोसदावर्ततोजिवपदार्थ तेनेपर्यायपलटणनी  
 हारेद्रव्यनुपलटणकरावेछे शामाटेकेसमेसमे पर्यायनो  
 विनाशथायछे तेथानके तेदर्शनवालाद्रव्यनोविनाशमा  
 नेछे तेकारणमाटे एदर्शनवालानेनिआजासजाणवाएट  
 लेरजुसुत्रनयकह्यो.

हवेशब्दनयकहियेछिये एकपर्यायनेप्रगटदिसवेअन्य  
 जे तेशब्दवाचकपर्यायनेतिरोभावे अणप्रगटवेपणतेप  
 र्यायनेग्रहे तेशब्दनयकहिये अथवाकालादिजेदेत्रणका  
 ल वचनत्रण लिगनेभेदे शब्दनेभेदतेपडेतेजेदअर्थनेकहे

तेशब्दनयकहीये जलाहरणादि सामर्थ्यनेघटकहे अने  
 कहेतां कुभादिकवचन पर्यायजेटलाछे तेटलानो अर्थवत  
 तोनादिसेपणतेनामकहीबोलावे तेकारजसामर्थ्यवतनेग्र  
 हेतेशब्दनयकहीये पणमाटिनापिडनेघटनकहे सग्रहनी  
 गमवा लोकहे तेनयवालासत्ताजोगताअगनाग्राहकहे  
 तथातत्त्वार्थटिकामध्येशब्दवसयीअर्थ पमीवजवतोशब्दे  
 बोलातोहोयजेअर्थ तेवस्तुमाधर्मपणे प्रगटदिसेतनेतेव  
 स्तुमाने एनयशब्दअनुजाइअर्थ प्रणमतीजेवस्तुनेवस्तु  
 कहेवे काललीगादिभेदेअर्थनोभेदहे तेनेदनेतेधर्मवस्तु  
 माने तेशब्दनयकहीये अनेतेअर्थविनातेवस्तुमध्येतेप  
 णोवर्ततोदिसतोनी तेनेवस्तुपणेमामर्थकरे तेशब्दभा  
 सकहीये एटलेशब्दनयकह्यो ५

हवेसजिरुढनयकहीयेठिये एकपदार्थनेअवलबीनेजे  
 टलासरखानाम तेपर्यायनामजेटलाहोय तेटलानीरू  
 क्तिव्युत्पत्तिनिन्नहोयतेअर्थनेसकहेतासम्यकप्रकारेआरो  
 हतोएटलेएटलासर्व अर्थसजुक्तजेतेसजिरुढनयकहीये  
 जेमइद्राद्रीधातुपरमेश्वरनेअर्थवेतेपरमेश्वर्यवतनेइद्रकाहि  
 येतथाशकनकहेतानवनवी सयुक्तनेशक्रकहीये पुरके०द  
 इतनेदलेके०विडारेंतेपुरदरसचीतेनोपतीकहेता स्वामीते  
 सचिपतीकहीये एटलासर्वधर्मतेंइद्रजेदेवलोकनोधिणीठि  
 तेनेएनामेबोलावेछे विजानामादिकइद्रनेएनामनकहेए

टलेजेटलापर्यायनामछे तेनाजेअर्थथाय तेसर्वेनेचिन्न  
भिन्नअर्थकहे पणकारजअर्थनजाणे तेसभिरुढाभासक  
हिये एटलेएसचिरुढनयकह्यो.

• हवेएवभुतनयकहियेछिये शब्दनीपटुतिनोनीमोतभुत  
जेक्रियाते विसिष्टसंजुक्तजेअर्थ तेनेवाच्यजेधर्म तेने  
पोचतोजेएटलेतेकारणकारजधर्मसहित तेएवंभुतनयक  
हिये तथाइश्वरीअसहिततेइंद्र शक्ररुपसिंहासनेवेसे ते  
शक्रशचीनीसंगेवेठो तेसचीपतिएटलेजेशब्दना जेटला  
पर्यायनेसर्वतेमांपोहोचताजाव तेनामकहिनेबोलावे जे  
पर्यायपोहोचताजावने तेनामकहिनेबोलावेजेपर्यायपो  
होचतो नदिसे तेपर्यायनीनाकहे एकपर्यायउणामुधीसं  
जीरुढनयकहिये सकलवचनपर्यायनेपोहोचे तेवारेएवं  
भुतनयकहिये जेपदार्थनामभेदनोभेददेखीपदार्थनीजी  
न्नताकहे तेनयाजासकहिये नामभेदनेवस्तुताजीन्न  
हाथी घोडा हरणी जेमचिन्नछे एमभिन्नपणुमाने तेएवं  
भुतनयनोटुरनयकहिये घटथीजेमपटचिन्न अर्थचिन्नमा  
टे तेमइंद्रपणाथीपुरंदरपणोजिन्नमाने तेदूरनयजाणवो  
एटलेघटथीजेमपटचिन्नअर्थभिन्नमाटीठे पणकइंद्रपणा  
थीपुरंदरपणोजिन्नठेनहि तेनेभिन्नमाने तेदूरनयजाणवो  
एटलेएवभुतनयकह्यो ७ एटलेसातेनयनीव्याख्याकही  
अथ । चारनयतेअविशुद्धे शामाटेजेपदार्थ



जेद्रव्यसामान्यकेहेवानोअधिकारीते कयाँएकअर्थनयए  
 वुनामउेअर्थशब्दद्रव्यलेवो तथाशब्दादिकत्रणनयते ते  
 शुद्धनयतेजेकारणेशब्दनाअर्थनीएनेमुख्यताते धुरलाचा  
 रनयजेदपणेवेहेचवानेवतेते शब्दादिकजेदजेर्लीगादिके  
 अजेदवेहेचणेअभेदकहे अनेचिन्नवचनेभिन्नार्थकहिमाने  
 संजीरुद्धनयचिन्नशब्देतेवस्तुपर्यायमाने पणशब्दनाप  
 र्यायमाने एवभुतनयचिन्नगोचरपर्यायभिन्नचिन्नमाने घ  
 टनेचेष्टाकरतोघटकहे पणखुणेपण्योघटनकहे चीत्रामण  
 करताउपियोगवतनेचीत्रकारकहे तथासुताजमतानेचक्र  
 कारनकहे तेउपियोगरहितते तेमाटेएनयतोशब्दनेतथा  
 अर्थनेअजेदपणुमानेते तेअर्थशून्यशब्दनेप्रमाणनथी श  
 व्दनेप्रधानअरधद्रव्यने गोपणेवर्तताशब्दादिककह्याछे  
 एसातनयनेविपेनिगमतेसामान्यते विशेषेनयमानेते ने  
 सग्रहनयतेसामान्यनेमानेछे व्यवहारनयतेविशेषनेमाने  
 अनेद्रव्यार्थाअविलंबाते नेरजुसुत्रविशेषग्राहकछे एचा  
 रनयदुरलाद्रव्यार्थकनयमाते नेशब्दादिकत्रणनयप्रजा  
 यार्थकनयमाते विशेषालंबीभावते तथाशब्दादिकनयते  
 त्रणनिक्षेपानेअवस्तुमानेते

अत्रनिक्षेपानो विचारसक्षेपथकी लखीयेछिये  
 श्री विशेषावश्यकनी भाष्यमध्येकह्युंते तेक  
 हियेछिये चत्वारोवथूपजवीया एवचनते तेमाटेस्वपर्याय

कहिये शामाटेजेवस्तुनासेहेजनाजेचारानिक्षेपावे तेवस्तु  
 माजछे तेवस्तुनास्वपर्यायवे तथाश्रीअनुजोगद्वारसुत्र  
 मध्येकह्युवे जेज्यांजेवस्तुनानिक्षेपाजेटलाजाणीये आप  
 णीबुद्धिशक्तिज्यासुधीपोचेत्यासुधीतेटलाजनिक्षेपाकरिये  
 कंदाचितवधतानिक्षेपाभापणमानाअवेअथवाआपणीबु  
 द्धिशक्तियटलीनफेलायतोयपणचारानिक्षेपाअवश्यकरवा  
 हवेतेचारानिक्षेपानानामकहियेछिये नामनिक्षेपो १  
 स्थापनानिक्षेपो २ द्रव्यनिक्षेपो ३ भावनिक्षेपो ४ त्या  
 नामनिक्षेपानावेभेदवे एकसहेजनाम एकसकेतीकनाम  
 सहेजनामतचेतनजिव आत्माइत्यादिक एनामकोइना  
 करेलांवेनहि एनामज्यांजशे त्यांजेगुनेजेगुजवे एनाम  
 नोनाशकदापीकालेथवानोनथी माटेएसतनामछे विजुसं  
 केतिकनामते देवदत्तप्रमुख एटलेलोकनीवाधेलीसंज्ञाजे  
 एनुनामदेवदत्त अथवाएनुनामधर्मचंद इत्यादिकंएलो  
 कसंज्ञायेनामपाडेलावे तेअसत्यकल्पनावे शामाटेकेतेना  
 मप्रमाणेगुणहोय अथवानहोय वलीतेनामकाइआगल  
 चालेनहि तेमआभवमापणएनुएनामरहे एवोनिश्चय  
 नहि एविजोचेद एटलेनामनिक्षेपोकह्यो.

हवेथापनानिक्षेपोकहियेछिये तेनावेभेदवे एकसहेज  
 थापना १ विजोआरोगीतथापना हवेसहेजथापनानावे  
 चेद एकसहेजस्वप्नावीकथापना १ एकसहेजविजावीक

थापना हवेसहेजस्वभाविकथापनातेआत्मानाअसख्या  
 तप्रदेशरुपअवगाहनाथापना पुद्गलनोप्रमाणरुपइत्यादि  
 कस्वरुपअवगाहनाये सहिततेमहेजस्वभाविकथापना  
 कहीये तेभागोअनादीअनतछे हवेविजोभागोजेसहेज  
 विजावीकथापनाकहेता आपआपणाशरीरनीअवगाह  
 नातेविजाविरुथापनाते अहियाकोइकहेगेके शरीरविभा  
 विक तेनेतमेसहेजपदकेममेलवोछो तेनोउत्तरजे एसहेज  
 जेजिवनोस्वभावससारीपणेवर्ते त्यासुधीशरीरनोबाधना  
 रोतेछे अशग्रहीनेअमेसहेजपदजोड्योछे एनिगमनय  
 नोपक्षठे पणरजुसुत्रनयेतो एवीजावीकथापनाकहेवाय  
 अहियासहेजपदलागुथायनहि पणएशरीरथापनासादी  
 सतजागेते तेशरीरते तेविजाविकते नेमाहेचेतनरह्योतेस  
 हेजस्वभावीकछे माटेएनेमहेजविजावीकभागोकहियेते  
 नुकाइदोपणठेनहि

हवेजेआरोपितथापना तेचेतनरहितशरीरथकीभिन्न  
 हरकोइवस्तुनेविपे हरकोइनामनीथापनाकरवी तेथाप  
 नाकृतमकहेवाय एआरोपणथकीथायछे तेअसतकल्प  
 नाछे पणवालजिवनेसमजाववारुपछे तेथ्रीअनुजोगद्वा  
 रमादशप्रकारनीथापनाकहीछे कष्टकर्म चितकर्म इत्या  
 दिकछे तेमध्येपाचआकारसहितछे पाचआकाररहितछे  
 आकारसहित तेकाष्टनोघोडो हाथीप्रमुखअनेकछे ते

आकारसहितथापनाकहिये अथवाजेमअन्यलोकदेवदेवी  
 नेकाष्टनाफलामुकेते तेआकाररहितथापनाछे एसोरठडे  
 गप्रसिद्धछे अथवाजेमसारंगरामजेने मोहो माथुकगुछे  
 नहि गोललांवात्रिखुणोजेवोमले तेवोथापेछे तेनुनाम  
 आरोपजाथापनाकहिये एटलेवीजोथापनानिक्षेपोकह्यो  
 हवेद्रव्यनिक्षेपोकहियेछिये तेद्रव्यनिक्षेपानावेभेद आ  
 गमद्रव्यनिक्षेपो नोआगमद्रव्यनिक्षेपो आगमद्रव्यनिक्षे  
 पोकेहेतांजेपुरुपनेस्वस्वरुपनुं परस्वरुपनुंजाणपणुछेपणह  
 मणातेनोउपियोगनथी हवेनोआगमकेहेतां जेतैवस्तुमा  
 गुणसर्वेछे पणहमणातेवर्ततानथी तेनात्रणभेद जेपुर्वेश  
 रीरहतुं पणहमणामरणपाम्युं जेमश्रीरीखवदेवस्वामिनुं  
 शरीरजेमजबुद्धीपपन्नतिमारुप लक्षण गुण वखाएया तेम  
 आपणेकहियेछिये वलीभव्यशरीरकेहेता हमणातेगुणम  
 यनथी पणगुणमयेथाय जेमपद्मनाभतिर्थकरनुशरीरव  
 खाणीयेतदवत् तथाद्रव्यातिरक्केहेता जेणेगुणेवर्तेते प  
 णहमणातेउपियोगवस्तुतानथी जेमरमणीकेहेतां स्त्री  
 महाचतुरविचक्षण पोतानास्वामिसाथेकिडाकरवानीव  
 खतेरमणिकेहेवाय तेवेसमेकोइकअपरचिन्ताउत्पन्नथंइ  
 तेवारे रमणिपणानोउपियोगगयो तेवारेतेद्रव्यमाणिके  
 हेवाय तदवत् अणउवियोगोदवो एटलेएअनुजोगद्वार  
 सुत्रनुंवचनठे माटेउपियोगरहित तेनेद्रव्यनिक्षेपोकहिये

एटलेद्रव्यनिक्षेपोकह्यो ३

हवेभावनिक्षेपोकहियेछिये तेभावनिक्षेपानावेजेदछे ए  
कआगमीक विजोनोआगमीक हवेआगमीककहेता जेआ  
गमशास्त्रनोजाण वलीतेनाजउपियोगमाप्रवर्तेछे १ हने  
नोआगमीकजावनिक्षेपोकहेता जेरुपेआत्मातद्वतजआ  
त्मानेउपियोगेप्रवर्तेछे अथवाज्ञानितेज्ञाननेजउपियोगेप्र  
वर्तेछे दर्शनितेदर्शननेउपयोगेप्रवर्तेछे एमजेजेगुणतेगुण  
उपियोगसहितप्रवर्तेतदरुपहोय तेभावनिक्षेपोकहिये  
एटलेअनुजोगद्वारमाकह्युछे उबीउगोचावो एटलेउपियो  
गतेजजावछे एटलेजावनिक्षेपोकह्यो ४

एजेचारनिक्षेपाकह्या तेमध्येत्रणनिक्षेपाधुरनाजेबेतेका  
रणरुपछे अनेजावनिक्षेपोतोकारजरुपछे एटलेकारजवि  
नाकारणनिष्फलछे जेमचक्रदडदोरो कुंभकार माटिनापं  
डविनाघटथायनहि माटेएकारजविनानिष्फल जोमाटी  
नोपंडहोयतो एकारणखपलागे तेमजावनिक्षेपाविनाधु  
रनात्रणेनिक्षेपानिष्फलछे अनेभावनिक्षेपोनिपजताप्रथ  
मनात्रणेनिक्षेपाप्रमाणछे नहिरअप्रमाणछे धुरनात्रणे  
निक्षेपाद्रव्यनयमाछे एकभावनिक्षेपो तेजावनयमाछेमा  
टेजावनयअणनिपजताद्रव्यादि प्रवर्तीतेनिष्फलछे तेथ्री  
आचारगजिनीटीकामध्येकह्युछे तेजोकविजयनामाअ  
ध्ययननीटीकामध्येछे तेलखियेछिये

फलमेवगुणफलगुण फलंचक्रियायाजवती सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रक्रियायास्त्वैकान्तिकनाबाधमुखारण्यसिद्धिगुणो॥वाप्पतेएतद्भूतंभवतीसम्यग्दर्शनादिके॥वेक्रियासिद्धिफलगुण॥नफलवन्यपरानुसंसारिकसुखफलाभ्यासएवफलाध्यारोपानीफलेइत्यर्थ॥

एटलेज्ञानदर्शनचारीत्रनी प्रणमनविनाजेक्रियाकरवी तेसर्वेफोकते अथवाजेथकीसंसारिसुखप्राप्तथाय एटलेदेवताइंद्रचक्रवर्ती वासुदेवराजाशेठसाहूकार पुत्रकलत्रादीसुखनिपजे एवीजेक्रियातेसर्वेनिष्फलछे एवीरीतेएपाठछे एटलेभावनिक्षेपानाकारणविनात्रणेनिक्षेपानिष्फलछे एटलेसंक्षेपमात्रनिक्षेपानोविचारकह्यो माटेआहियांशब्दनयतेत्रणेनिक्षेपाने अवस्तुजमानेछे एकभावनिक्षेपानेजवस्तुमानेछे तिनहंसदनियाणं अनथुएअनुजोगद्वारनुवचनछे तथाएकएकनयनासोसोनेदथायठे एमसातनयमलीनेसातसेनयनाजेदथायठे एअनुजोगद्वारथकी अधिकारकह्यो

हवेपुर्वकहेता पुठलो नयतेनोविषयघणोजाणवो अने तेथीउपल्योनयतेपरीमीतविषयछे एटलेथोडोविषयछेसत्तामात्रनोग्राहकसग्रहनयठे एटलेबतीसत्तानेसंग्रहनयग्रहेअनेनिगमतेगताभाव अथवासंकल्पपणु अथवाअवताभावसर्वग्रहे अथवासामान्यविशेषवन्नेग्रहे एटलेएनग्रनु

कोऽप्रमाणेनहि अनेव्यवहारनयशक्तिविशेषनेजग्रहे  
 तेमाटेसंग्रहनयथी व्यवहारनयनोविषयथोडोठे तथारजु  
 सुत्रनयवर्तमानविशेषधर्मनोग्राहकछे अनेव्यवहारतर  
 कालीकविषयनोग्राहकछे तेमाटेव्यवहारवहूविषयठेअने  
 व्यवहारथीरजुसुत्रअल्पविषयछे नेरजुसुत्रनयवर्तमान  
 कालीशब्दनयकालादी वचनलिगथीवहेचताअर्थनेग्रहे  
 अनेरजुसुत्रवचनलिगने चिन्नपाडतो नथी तेमाटेरजुसु  
 त्रनयथीशब्दनयअल्पविषयठे अनेशब्दनयथीसर्वपर्या  
 यनेएकग्रहे अनेसभिरुढते जेधर्मवक्ततेवाचकपर्यायने  
 ग्रहेतेमाटे शब्दनयथी सभिरुढनयनो अल्पविषयछे  
 तथासभिरुढ तेपर्यायनेवधोयेकालगवेखेठे अनेएवभुत  
 नयप्रतीसमीयेक्रियाजेठे भिनार्थपणेमानतोअल्पविषय  
 ठेतेमाटे एवभुतअल्पविषयइजाणवो एनयवचनछे तेपोता  
 नानयनेस्वरुपेअस्तीपणुछे अनेपरनयस्वरुपेनास्तीप  
 णुठे एमसर्वनयनीविधी प्रतीवधेकरीने सप्तभंगीउपजैप  
 णनयनी सप्तभंगीनउपजाववी एपुरवाआचारजियोये  
 निखेदिछे

तथारत्नाकरावतारीकाया विकलादेशस्वभावा दिन  
 यसप्तभंगीस्वश मात्रपरुपकत्वात् सकलादेशस्वभा  
 वानुं प्रमाणसप्तजगीसपूर्ण वस्तुस्वरुप परुपकत्वात्  
 एवचनछे.

एटलेजथाजोग्यपणेएनयअधिकारकह्यो हवेपुर्वउत्तर  
सामान्यसग्रहनाछभेदकह्यानहोतातेकहियेछिये एटले  
एमुलसामान्यताठजेद तेसर्वद्रव्यमाव्यापिकपणेरह्याछे  
तेनानाम आस्तित्व १ वस्तुत्व २ द्रव्यत्व ३ परमेयत्व  
४ सत्व ५ अगुरुलघुत्वं ६ एवमुलस्वभावसर्वद्रव्यम  
ध्येप्रणामिकपणेप्रणमेछे एधर्मनेकोइनोसाहायनथी ते  
केहेता सर्वद्रव्यनेविपेउत्तरसामान्यस्वभावनीतत्व अनि  
त्वादिक तथाविशेषस्वभावप्रणामिकत्वादिक तेनोआ  
धारभुतधर्म तेधर्मनेसामान्यस्वभावकहिये आस्तित्वरु  
पकहेवे तिर्थकरदेवे तथागणधरेजेगुणपर्यायआधारवंत  
तेवस्तुपणेकहिये अर्थजेद्रव्यतेनीजक्रियाजथाधर्मास्ति  
कायनीचलणसाहायक्रिया अधर्मास्तिकायनीस्थिरमा  
हायक्रिया आकाशद्रव्यनीअवगाहनाक्रिया जिवनीउपि  
योगलक्षणक्रियापुद्गलनीमलवाविखरवानीक्रियाएक्रिया  
नोकारीपणो अर्थक्रियाजेपर्यायनीप्रवृत्ति तेअर्थक्रिया  
नोअधिकारीधर्म तेद्रव्यपणोकह्योछे तथावलीलक्षणांत  
रकहेवे उतपादपर्यायनोजनकप्रसवशक्तिआवीरजावल  
क्षणजेशक्ति तेनोवयभुतपर्यायनोतीरोजावथयो अथ  
वाअभावथयो रुपजेशक्तिनोजेआधारभुतधर्मतेद्रव्यक  
हिये स्वतेपोतेआत्मपरजेपुद्गलादिक धर्मास्तिकायादिक  
अ तेनेज । ए ॥ तेनेज्ञानीकहिये तेज्ञाननापाच



भेदछे तेज्ञानउपियोगमात्रावे एवीजेशक्ति तेनेप्रणमीये  
 पणुक्कहिये तेप्रणमीयेपणोसर्वद्रव्यनोमुलधर्मछे तेप्रमाणे  
 मेव्यजेवस्तुतेप्रणमीयपणोकहियेतेसर्वद्रव्यपर्यायप्रणमी  
 येछे अनेआत्मानोज्ञानगुणतेमाप्रमाणपणोप्रणमीयेपणो  
 एवेधर्मछे पोतानोप्रमाणपणोपोतेजकरेछे दर्शनगुणनो  
 प्रमाणज्ञानगुणकरेछे एकारणेदर्शनगुणतेअविशेषछे सा  
 व्येवउ जेसाव्येवहोय तेअविशेषजहोय जेविशेषतेज्ञान  
 जाणीये दर्शनगुणतेसामान्यद्रव्यनाग्राहकछे पणप्रमा  
 णनास्वव्येवह्या त्याज्ञानजगृहेछे तेनुंकारणजेदर्शनउपि  
 योगवक्तपडतो नथी तेनेप्रमाणमागवेरूपोनथी.

हवेप्रमाणनाजेदलखियेछिये मुलप्रमाणनावेजेद प्र  
 त्यक्ष १ परोक्ष २

स्पष्ट पत्यक्ष परोक्ष मन्यवत् इति स्याद्वाढरत्नाकरवा  
 क्यात्

एटलेउतपादकेहेताउपजवुवयकेहेतांविणसबुधुकेहेता  
 नित्यपणो वस्तुमाएकसमेएत्रणगुणसदायसाथेप्रणमेछे  
 एवीजेप्रणमनतेसत्यपणो कहिये सत्यपणानोचावतेसत्य  
 पणोकहिये.

हवेखटगुणीहाणीवृद्धिकहियेछिये अनंतजागहाणी १  
 असंख्यातभागहाणी २ सख्यातभागहाणी ३ सख्यात  
 गुणीहाणी ४ असख्यातगुणीहाणी ५ अनंतगुणीहा

णी एवप्रकारनीहाणी.

हवेछप्रकारनीवृद्धिकहियेछिये अनंतजागवृद्धि १  
अमख्यातजागवृद्धि २ संख्यातजागवृद्धि ३ सख्या  
तगुणीवृद्धि ४ असख्यातगुणीवृद्धि ५ अनंतगुणीवृ  
द्धि ६ एटलेएहाणीवृद्धि सर्वद्रव्यनेसर्वप्रदेशेछे एनु  
नामअगुरुलघुरवजावकहेवाय एअगुरुलघुपर्यायप्रणमे  
तेएकप्रदेशे वा अनेकप्रदेशेकोइसमे अनंतजागहाणीपि  
एप्रणमेछे कोइसमेअनंतजागवृद्धिपणेप्रणमेछे एववारे  
प्रकारेप्रणमेछे तेअगुरुलघुपर्यायनीप्रणमनशक्ति तेअ  
गुरुलघुत्वंकहिये एटलेअगुरुलघुनोभावजाणवो तत्वार्थ  
नीटिकानेविपे पंचमेअध्याये अलोकाकाशनोअधिकारठे  
त्याकहयुछे एठयेस्वभावसर्वद्रव्यनोविपेप्रणमेछे एछद्र  
व्यनोमुलस्वभावठे छद्रव्यतोप्रदेशनुभिन्नपणुअगुरुल  
घुनेभेदपणैथायछे तेमाटेएमुलसामान्यस्वभावछे एद्र  
व्यादिकधर्मछे एनो प्रणमनतेप्रजास्तीधर्मठे तथासा  
मान्यस्वजाववस्तुमाअनंतरह्याठे तथाअनेकातजयपता  
काग्रथने विपे सामान्य स्वजाव तेरकह्याठे तथा शा  
स्त्रने विपे विशेषस्वभावपणअनेक प्रकारना कह्याठे  
अनेकग्रंथने विपेकह्याछे तथावारतीकसमुचयग्रंथअहि  
रीचद्रसुरीकृतमाप्रमाणस्वजावकह्याछे जिवनेजाणवाप  
णानीशक्तिआपआपणीतिज्ञानलक्षणजिवनुकहिये एव

चनउतराधेनजिमाळेतथाअवश्यकनीर्जुक्तिनेविपे जिवने  
 ग्राहकशक्तिकहीछे एटलेकर्ता जोक्तापणुपणजिवमाळे  
 उक्तच कर्तासएवजोक्ताइतिवचनात् लक्षणता १  
 व्यापकता २ आधाराधेयता ३ जिन्यजनकता ४ एत  
 त्वार्थटीकामध्येकह्याछे तथाअगुरु १ लघुता २ विभुता  
 ३ कारणता ४ कारजता ५ कारकता ६ ऐशक्तीयो  
 नीव्याख्याविशेषावश्यकग्रथमध्येछेजाउकतथाअजाउक  
 शक्तिनाग्रथश्रीहरिभट्टसुरीकृतभाउकं प्रकरणएमध्ये  
 एमकेटलोकशक्तियोजेनतरक अनेकातजयपताका तथा  
 सुमतिप्रमुखग्रथनेविपेछे तथाउर्ध्वप्रचयेशक्ति १ तरीज  
 गप्रचीयेशक्ति २ उग्रशक्ति ३ समुचीतशक्ति ४ एत  
 मतीग्रथनेविपेछे इत्यादिकअनेकशक्ति तथाअनेकरूप  
 जेआत्माना तथाअनेकस्वभाव तथाअनेकलक्षण तथा  
 अनेकगुणजेआत्मानाकह्याछे तेग्रंथादिकशास्त्रजोयांथी  
 समज्यामाआवे अथवावहूश्रुतनीसेवाकरे तेनामुख्यको  
 सामलीनेसमज्यामाआवेतेकारणमाटेजेनेआत्मस्वरूपस  
 मजवानीखपहोय नेधर्मरुचीहोय तेग्रंथजोवानीखपकर  
 जो नेवहूश्रुतनीसेवाकरजो एटलेजेज्ञानाउपियांगीहोय  
 स्वस्वभावनीरमणतावालोहोय मंदकखाइहोय परभाव  
 त्यागीहोय एवागुणवानगुरुहोय तेनीसेवाकरजो तोत  
 मारुकारजथशे एटलेएनयअधिकारकह्यो एटलेअहि

याशब्दनयवालोसुतज्ञानवतउपयोगीने आत्मामानेछे  
 माटेअहियासमजवानुएके शब्दादिकत्रणेनयमाधर्मर  
 हयुंछे अनेत्यांतोआत्मानागुणजेमजेमप्रगटथाय तेमतेम  
 उपरलीनयवालोतेनेआत्मामाने माटेआत्मानोस्वस्वचा  
 वगुद्वउपयोगपणेग्रहणकरवो तेजधर्मछे एटलेअहियां  
 ज्ञानगुणविसीष्टछे तेज्ञानस्वरूपसमजवावास्ते अहियां  
 प्रमाणवतावीयेठिये तेप्रमाणनुस्वरूपकहियेछियेसकल न  
 यनुस्वरूपतथासप्तजगीनुंस्वरूप तथा निक्षेपानुंस्वरूपत  
 थापक्षनुंस्वरूपइत्यादिक जेजेप्रकारशास्त्रमाकह्याछे तेते  
 रुपनेग्रहेतोसर्वधर्मनोजाण तेनेज्ञानकहिये तेज्ञानतेजप्र  
 माणकहिये तेप्रमाणनाकरताआत्माछे तेनेजपरमात्मा  
 कहिये तेप्रत्यक्षादिप्रमाण तेचेतनस्वरूपमांप्रणमेलाछे  
 णामीतभवानधर्मथी उत्पादवयपणेप्रणमवु तेमाटेप्र  
 णामीकछे एद्रव्यस्वभावछे एटलेआत्मापोतानास्वभाव  
 राजप्रणमे तेनेसहेजआत्माकहिये परचावमांप्रणमेतेने  
 वेभावीकआत्माकहिये.

हवेसहेजआत्मातेपोतानास्वरूपरमण अरुपीमूर्ति नि  
 जन निराकार अनतज्ञानादिकगुणमय सदायरमणता  
 त्वउपयोगी एवीरीतेजेवर्ते तेनैजिवत्वमुक्तकहिये एटले  
 तेजिवमोक्षेत्रवश्यजाय तेमुक्तिनुंस्वरुपाकिचीतलाखिये  
 गिये जेआचौदराजलोकछे तेनाउपरनोचौदमोराजलोक

तेनेछेडेसर्वार्थसिद्धनामाविमान तेविमाननीधजायकीवा  
 रजोजनउपरजइये त्यासिद्धसलाफटकरत्नमयछे तेम  
 ध्येआठजोजनजामीठे ठेमेउतरतीउतरतीमाखीनीपाख  
 जेवीरहीछेजेवुअमधाकोठनुआकारतेआकारेठे अथवाजे  
 वोआठमनोचद्रमातेसरखेआकारेठे उपरपीसतालीसला  
 खजोजनलावीपुर्वपश्चिमेछे दक्षिणउत्तरेपीस्तालीसला  
 खजोजनथीत्रणगणीझाझेरीप्रधीपणेठे उपरनुतलीयुव  
 णुमरखुंसमरमणिकछेजेवुवाघचरमखीलेलुसरखुहोय ते  
 सरखुंछे अथवाजेवोजलनोनागउपरनोसरखोहोयअथ  
 वाजेवुमादलनुपडुसरखुंहोय अथवाकाचसरखोहोय ए  
 वीरीतेउपरनोभागसमोरमणिकछे घणुनिर्मलठे तेतलाथ  
 कीएकजोजनउगीदआंगलनामापनु एटलेउचेअलोकछे  
 तेजोजननातेविसजागनिचेनामुकीये त्यारेचोवीसमोभा  
 गउपरलोरह्यो तेचोवीसमाजागध्येसिद्धपरमात्माठेतेअ  
 लोकनेअडीनेरह्याछे शामाटेकेचोवीसमाभागे त्रणसेते  
 त्रीसधनुपनेवत्रीसआगलनोछे अनेपाचसेधनुपनीकाया  
 वालाउभाउजांमोक्षजाय तेत्रिजाभागनीअवगाहनापी  
 लारनाजागनीघटे त्यारेवेजागनीअवगाहनाघनरुपरहे  
 तेअवगाहनायेसिद्धीवरे त्यारेतेवेभागनीअवगाहनाना  
 त्रणसेतेत्रीसधनुपनेवत्रीसआगलरहे तेअवगाहनावा  
 लोतेवीसजागउपरना आकाशप्रदेशनेचरणअवगाहना

फरसेनेमस्तकनी अवगाहनाउपरअलोकनेफरसे एटले  
एचोवीसमोनागसर्वेसिद्धक्षेत्रछे

हवेत्यासिद्धीवरे तेनाशरीरनुमानकहियेछिये उतकष्टो  
पांचसेंधनुपनीकायानोमानवालोसिद्धेजघन्यवेहाथनीका  
यानामानवालोसिद्धे मध्यस्थअवगाहनावेहाथथीमांडी  
नेजावतपांचसेंधनुपथीउणीएकप्रदेशहोय त्यासुधीमध्य  
स्थअवगाहनाकहियेतेअवगाहनावालासिद्धेतेनेमध्यस्थ  
अवगाहनाकहिये.

हवेएसिद्धक्षेत्रमांकेवीरीतेअवगाहनायोरहीछे तेकहि  
येछिये जेअहियांडभांथकांमोक्षगयो तेनीअवगाहनासि  
द्धमापणउभीछे वेठांगयोतेनीवेठीछे सुतांगयोतेनीसुती  
वेकोइचतोसुतो तथाकोइउधोसुतो तथाकोइपाशाजेरसु  
तो तेनीतेवीजअवगाहनाछे अथवाकोइविकटाटिकआस  
नेहोय अथवाकोइविप्रीतआसनेहोय तेनीतेवीजअवगा  
हनात्यांहोय अथवाकोइखोडो पागलो कांइखोडवालो  
होयतोतेनीतेवीजअवगाहनाहोय तेसर्वेउपरअलोकने  
अडीनेरहे उंचेनीचीअवगाहना तेनिचलाजागमांरहेप  
णउपरनाजागमांनहोय अहियांकोइप्रश्नकरशेकेज्यारे  
अवगाहनातमेमानोवो त्यारेरुपघाटसर्वेसावुतथायछे ते  
नोउत्तरजे कांइपुद्गलन्यांछेनहि केरुपघाटथाय एतोएक  
आत्मानाप्रदेश निरावणीजेअहिनाशरीरनी अवगाहना

हती तेआत्मानाप्रदेश तेप्रमाणेविस्तारेहता पणआश  
 रीरमध्ये एकजागनीपोलारबे तेपोलारनोजागघटाडीने  
 घनपणेकरी तेनेअवगाहनाकहियेबिये पणअहियांकाइ  
 रुपपणुबेनहि एतोअरुपी अमुर्तिजछे नेजोकदापीरुपक  
 हियेतोमोटोविरोधआवे शामाटेकेखटद्रव्यमा एकरुपीप  
 दार्थतीपुद्गलबे नेपुद्गलमातोमलवाविखरवानोस्वभावर  
 ह्योछे तेस्वजावपणपाठेसिद्धनेविपे लेवोपडे त्यारेमली  
 नेविखरवुशाबेतथयु त्यारेसिद्धपणेथीपाछुसंसारमाआ  
 ववुथाय त्यारेसिद्धपणुनिष्फलथयु माटेएमोटोविरोध  
 आवे अथवाज्यारुपरहे त्यावर्णादिकपर्यायपणहोयत्यारे  
 तेपर्यायनीतोसमेसमेहाणीथइजोइये त्यारेतोसिद्धनीप  
 णसमेसमेक्षिणताथाय एपणमोटोविरोधआवे अहिया  
 कोइप्रश्नकरशेजे सिद्धातमाएवुकह्युबे दवठीयाए सासी  
 याए पजवठीयाए असासीयाए माटेपर्यायथकीक्षिण  
 थाय तेपर्यायतोअसाश्वताबे तेमाकाइदोपणुबेनहि तेनो  
 उत्तरजे सिद्धपरमात्मानेपर्यायथकी असाश्वताकहेवा.  
 तेअपेक्षायकीछे पणकाइस्वजावथकीछेनहिअनेजोकदा  
 पीस्वजावथकीकहियेतो महाविरोधआवे शामाटेजेसि  
 द्धानाज्ञानदर्शनादिकजेपर्याय तेनोशुकाइनाशथाय अथ  
 वाशुकाइउठुवतुथाय कदापीजोनाशकहियेतो आत्मभा  
 वनोनाशथाय नेजडजावथइजाय त्यारेतोनास्तीकपणु

आवेअथवा उंछुवतुकहियेतो शुएमनेकर्मपाठांवलग्या  
 केमकेआवर्णविनातोज्ञानादिकगुण उंगवत्ताथायनहिक  
 दापी अहियांकोइतर्ककरगेके ज्ञानादिकतोगुणछे तेने  
 तमेपर्यायमांकेमकहोछो तेनोउत्तर केसिद्धांतमातोएने  
 पर्यायकह्यावे ज्ञाननपजवाए दर्शनपजवाए इत्यादिक  
 पाठवेमाटेज्ञानदर्शनादीकने पर्यायकहाने बोलाव्याछेअ  
 नेजेद्रव्यगुणपर्याय कहियेछीये तेभेदज्ञाननीअपीक्षा  
 लेइने वालजीवनेसमजवावास्तेवे शामाटेकेसीद्धातत  
 थासुमतीप्रमुखग्रंथनेविपे नयोवेकह्यावे द्रव्यार्थकतथा  
 पर्यायार्थक पणकाइगुणार्थकनयकह्योनथी माटेपदार्थवे  
 जछेएकद्रव्य नेबीजोपर्याय त्रिजोपदार्थवेनहि गुणपदा  
 र्थजोत्रिजोहोततोगुणार्थक नयकहेतापणएगुण तेतोद्र  
 व्यपर्यायनुंउलखाणकरावारुपजुदोकहियेठिये पणएनुज  
 नामपर्यायछे माटेअहियाज्ञानादिक जेपर्यायतेनीहानी  
 वृद्धिथायनहि कदापीअहियाकोइकहेगेके खटगुणीहा  
 णवृद्धिलागेवे तेनोउत्तरजे एपरअपीक्षावडेवे शामाटे  
 जेजेजेज्ञेपदार्थजाणवादेखवामाआवेवे तेज्ञेपदार्थनोनाश  
 अथवाउत्पत्ती अथवाहानीवृद्धिथाय तेथीज्ञानादिकगु  
 णनीहानीवृद्धिनाशकहेवायवे तेपरअपीक्षायंवे पणकाइ  
 पोतानुज्ञानदर्शन उंछुंवतुंथतुनथी जेटलुछेएटलुनेएटलुं  
 जरहे माटेजेपर्यायअसाश्वताकह्या तेपरअपीक्षायेजाण



वाअनेएजेवणादिकपर्याय तेतोसडणपडणस्वभावनाध  
णीछे तोतेपर्यायकाइमिद्वनेविपेछेनहि तेतोससारीनेवि  
पेरह्यावे माटेअहियारूपीपणुमानता महाविरोधआवेअ  
थवावलीविजेप्रकारेपणविरोधआवेछेतेसाभलोतेकहूछु.

हवेजेसिद्धछे तेअनादिअनंतजागेवे एटलेएमसिद्धनी  
आद्यनथी केफलाणेदहामेसिद्धथया तेमअंतपणनथी के  
अमुकेदहाडेसिद्धससारनेविपैआवशे माटेअनादिकेहेतां  
आगेअनताअनंतपुद्गलपरावर्तनवहीगया नेअकेकापुद्ग  
लपरावर्तनमाअनंता कालचक्रवहिगयां एमआगलना  
कालनुंकोइरीतनुंप्रमाणबंधायनहि नेएककालचक्रनावे  
जेद अवसर्पणी १ उसर्पणी २ तेअकेकानेदेअकेकीचो  
वीशीगणाय तेएकचोवीशीनादशकोडाकोमसागरोपमव  
र्षजायवे तेमापाचभरथ नेपांचअइरवर्ते एककोडाकोड  
सागरोपममामुक्तिकहिचे पणपांचमहाविदेहमांतोसदा  
यकालनिरतरमुक्तिवे अनेआदशक्षेत्रथइनेतोएकमाहा  
विदेहनीविजयजेटलुतोछेनहिअनेत्यांमाहाविदेहमातोस  
दायमुक्तिचालतीवे तोएवीरीतेमोक्षेजातांआगेअनंताअ  
नतकालवहिगयोतेथीअनताअनतजिवमोक्षगया नेमोक्ष  
क्षेत्रतोएपिसतालिसलाखजोजनमावे तेकेमकरीनेमाय  
ज्यांरुपकहिये त्यातोपुद्गलादिकथयुंज त्यातोसंकडाश  
थाय नेतेजिवमुक्तिमामायनहि माटेएपणएकमोटोवि

रोधश्चावे माटेएअवगाहनाकहि तेअरुपिठे केहेवामात्र  
छे शमाटेकेएकअवगाहनाजोसावुतरुपहोय त्यांविजि  
अवगाहनापेशीशकेनहि अनेअहिंयातो ज्यांसिद्धपरमा  
त्मांनी एकअवगाहनाठे त्यांअनंतासिद्ध भगवाननी  
अवगाहनाठे कोइआडी कोइउर्जी कोइवेठी कोइसुती  
इत्यादिकरुपेरहीछे तेआकाशवत्ठे एकजाणपणारुपल  
क्षणतेचेतनागुणठे तेथीसिद्धभगवानकहेवायठे पणत्या  
कांइरुपादिकपदार्थएमनेविपेठेनहि एतोअरुपिपदार्थछे  
हवेसिद्धनाजेगुणलक्षणठे तेकहियेछिये एटलेसिद्धप  
रमात्माअरागीछे एटलेरागकेहेतांजे प्रेमदशातेथीरहि  
त तेनावेजेद एकप्रशस्तराग १ विजोअप्रशस्तराग २  
प्रशस्तकेहेता जेदेवगुरुधर्मसंवंधीराग नेअप्रशस्तकेहे  
ता संसारादिकराग तेवनेथकिरहितठे तथाअद्वेपीछे  
तेनापणवेभेद प्रशस्त १ विजोअप्रशस्त प्रशस्तकेहेता  
देवगुरुधर्मउपरखेदकरतोदेखी तेनाउपरद्वेपआवे अप्र  
शस्तकेहेतां पोतानासंसारादिक कारजपणामाखेदकर  
तोदेखी तेनाउपरद्वेपआवे एवाद्वेपथकिरहितछे अज्ञान  
पणाथकिरहितठे तथामोहदशाजेमारुमारुकरवुं तेथंकि  
रहितठेतथाआश्रवपणाथकिरहितठे एटलेआश्रवकेहेतां  
जेनवाकर्मखेचीने आत्मसत्तामासंग्रहकरवो तेथकिरहि  
तठेतथाअनंतुज्ञानछे अंहीयांकोइं प्रश्नकरशेकेज्ञानतोए

कजछे नेतमेअनतुकेमकोहोछो तेनोउत्तर जेज्ञेपदार्थअ  
नताठेतैप्रतेजाणेते माटेअनतुज्ञानकहिये तथालोकअलो  
करुपीअरुपीसर्वपदार्थनेजाणे देखेते तेअलोकपणअन  
तोछेतथापुद्गलप्रमाण तथापुद्गलीकखंधतेपणअनताठेए  
वाअनतपदार्थनेजाणे माटेअनतुज्ञानकहियेछिये

अिष्यवाक्य-स्वामीएतोपरअपीक्षावडे करीनेअनतु  
ज्ञानठरंछे पणस्वभावीकज्ञानतोठरतुनथी जेमकोइएक  
चादरनेविपेराइमुखवस्तु नोगासडोबाधीलाव्यो तेराइ  
नादाणाअनेकछे तेथीएचादरपणअनेकठरेछे पणचादर  
जोतातोएकजछे जेममनुष्यएकज तेअनेकपदार्थनेजाणे  
देखेछे तेथीतेमनुष्यनाकाइमनपणअनेकनथया नेआ  
ख्योपणअनेकनथइ तेमसिद्धपरमात्मानुज्ञान तेएकजठ  
रेछे तेनोउत्तरजे आत्मानाअसख्याताप्रदेशछे नेप्रदेशे  
प्रदेशेअनतुज्ञानते तेपरअनुजाइपणेछे स्वअनुजाइपणे  
सर्वप्रदेशेजाणवुते तेजाणवानोस्वभावजोताएकजछेपण  
परअपीक्षावडेकरीने अनतप्रकारनुजाणवुरहचु तेथी  
अनतुज्ञानकहिये तेसर्वेउपमावाचछे माटेअनतुज्ञानज  
कहेवु एटलेसिद्धपरमात्माअनंतज्ञानीछे तथासिद्धपरमा  
त्माअनतदर्शनीछे एटलेअनतपदार्थनेदेखवेकरीनेअनंत  
दर्शनीकहिये तेमर्वैपुर्ववतजाणवु अहियाकोइकहेशेकेचो  
थुज्ञानजेमनपरजवतेनेदर्शनछेनहि तोकेवलज्ञाननेदर्श

नक्यांथकीथयुं तेनोउत्तरजे मनपरजवज्ञानछे तेविशेष  
उपयोगीछे शामाटेकेएएकअवधीज्ञाननोभेदछे जेअवधी  
ज्ञानछे तेसर्वपुद्गललोकभावरूपीपदार्थसपुर्णनेजाणेदेखेअ  
लोकविशेलोकलोकजेवमाअसंख्याता खांमवांजाणेदेखे  
अनेमनपरजवज्ञानतो अढीद्विपप्रमाणे मनोवर्गणानापु  
द्गलद्रव्यनेजाणे माटेअवधीज्ञानकरता मनपरजवज्ञान  
नोविषयअत्यंतअल्पछे अनेतेनेविशेषणरूपीपदार्थनुजाण  
बुद्धेखबुद्धेनेएनेविषेपणरूपीपदार्थनुजाणबुद्धे तथाअवधी  
ज्ञानीपणमननापर्यायनेजाणेदेखेछे एअधिकारजगवर्ती  
जिमाछे ज्यावेदेवताविमानीकेभगवानने मनथकीवांछा  
पुण्याप्रश्नपुछ्यां जगवानेपणमनथकी उत्तरदीधा एवी  
रीतनो अधिकारछेतथाप्रत्यक्षपणेजेमनुष्यनीपासेदेवनुं  
आवबुथायछे तेमनुष्यमनथकीदेवनेसमरेछे अथवामनथ  
कीकोइवातपुछे तेनोउत्तरदेवआपेछे माटेएमजाणवामां  
आवेछेके मनोवर्गणानाप्रदेशदेवनाजोयामांसारीरीतेआ  
वेछे एवातप्रत्यक्षमापणजापणथायछेतथासिधातमापण  
लेखछे तेथीएमजाणीयेछिये केअवधीज्ञानसर्वरूपीपदा  
र्थनोविषयछेतेमध्येथीमनोवर्गणानोअल्पविषयमनपरज  
वज्ञानथीनामसंज्ञाकहिने जुढोनेदपाम्यांछे तेथीतेनेदश  
नगएधुंनथीपणीतत्वतोज्ञानीगमछे माटेसिद्धपरमात्मानेजे  
तेसामान्यउपयोगीछे अनेविशेषउपयोगी

तो ज्ञानछे एजिन नद्रगणीक्षमाश्रमणनेमतेछे तथासिद्ध  
 सेनदेवाकरनेमतेतोभिन्नउपयोगमान्योनथी त्यातोएक  
 समेवनेउपयोगकह्याछे तथासिद्धपरमात्मा अनंतचारी  
 ननापणीछे एटलेचारीत्रकहेता जेज्ञानदर्शननेविपेथीर  
 भावतेनेचारीत्रकहिये अहियाव्यवहारचारीत्रगवेखवुन  
 हि व्यवहारचारीत्रतोपुद्गलीकजावछे एटलेव्यवहारक  
 हेताजेपचमद्वात्रतादिकबहाजथकी पालवुपलाववुतेसंव  
 पुद्गलीकभावछे तेनेविपेकाइआत्मानुकल्याणवेनहि एपु  
 द्गलीकभावनोनाशथयेजमुक्तिमले माटेअहियानिश्रय  
 चारीत्रलेवु तेनिश्रयचारीत्रतेआत्मानोथिरजावजाणवो  
 तेजचारीत्रसिद्धपरमात्मानेवे

बलीसिद्धभगवानने अनतुविर्यकह्युंछे विर्यहेताजे  
 आत्मानीशक्ति ज्ञानदर्शननेविपे स्थिरतापणेविस्तरेली  
 जठे अहियापुद्गलविर्यजाणवुनहि एटलेपुद्गलीकविर्य  
 यकिसिद्धभगवानरहितछे अनतमुखमयकेहेताजे ज्या  
 याधिकेहेताजेमननी चिंता व्याधिकेहेताजेशरीरनोरो  
 गादिक तथाक्षुधावेदनी तथासातजनयप्रमुखअनेकरितना  
 ससारमादुखछे तेदुखथकिरहितथयातेजसुख बलिसि  
 द्धभगवानअनततपनाश्रणीवे तेसदायकालज्ञानदर्शनमा  
 रमणतारुपछे तथाअनतउपयोगीछे एटलेज्ञानदर्शननी  
 उपयोगअनताज्ञेपदार्थनेविपे प्रवृत्तिरह्योछे तथाशुद्ध

ठे अज्ञाननावप्रमुखअशुद्धतागइछे माटेशुद्धकहिये त  
 थाबुधकहिये एटलेबुधकेहेताजेक्षायकनावे ज्ञानदर्शन  
 प्रगटेलुछे तथाअवनासिकहिये एटलेअवनासिकेहेता  
 हवेकोइकालेसिद्धक्षेत्रथकिनाशथवानोछेनहि अजकहि  
 ये अजकेहेतांजे हवेकोइकालेजन्मलेवोठेनहि अनेत्याप  
 णकाइजन्मलीधोठेनहि जेवाअहिथीअसंख्यातप्रदेशनि  
 मलथडनेगया तेवाजत्यांप्रगटपणेस्थिरत्तावेरह्याते त  
 थाअनादिते एटलेआद्यजेनीठेजनहि तथासिद्धअनंतते ए  
 टलेएकएवाअनताते तथाअक्षयछे एटलेकोइकालेसि  
 द्दपणानोक्षयथवानोछेजनहि तथाअक्षरछे एटलेकोइका  
 लेसिद्धपणामांथीखरवानाठेनहि तथाकोइप्रदेशपणख  
 रीपडेनहि तथाकोइगुणपर्यायपणखरेनहि माटेअक्षरक  
 हिये तथाअणअक्षरते एटलेअकारादिकअक्षर तेमाएरु  
 पआवेनहि एटलेअक्षरादिकथकिरहितते त्यांकोइकहेशे  
 के सिद्धअथवामुक्तिजेकेहेशो तेतोअक्षरसहितते नेतमे  
 अणअक्षरकेमकहोछो तेनोउत्तरजेसिद्धअथवामुक्तिइत्या  
 दिककहिनेबोलावबुं तेतोअहियाससारीनेउचारणकरवा  
 नीसंज्ञाछे पणत्यानुंतोरुपबंधायनहि अनेत्याकाइनामा  
 दिकठेनहि माटेएअणअक्षरजकहिये तथाअकलते ए  
 टलेएकोइनाकळवामाआवेनहि. एकज्ञानिजएनेजाणे वी  
 जानाजाणनआवे तथाअचलते एटलेएकप्रदेशआ

कीरहितमाटेअवधकहिये तथाअणउदयकहियेएटलेक  
 र्मकाइछेनहि माटेउदयशानोहोय तेथीअणउदयकहिये  
 तथाअणउदारीककहिये एटलेकर्मविनाकाइउदारीणाक  
 रवीहोयनहि तथाअजोगीकहिये एटलेमनजोग १ वच  
 नजोग २ कायजोग ३ एत्रणेजोगना १५ भेदवेतेसर्वे  
 जोगथकीरहितवे माटेअजोगीकहिये तथाअजोगीकहि  
 येएटलेपांचद्रिना तेवीशविषय तेमाहेलोएकोविषयत्या  
 ठेनहि तथाइद्रियोपणत्याठेनहि तथामननोभोगपणछे  
 नहितेथीरूपीपदार्थत्याकोइठेनहि तेथीअजोगीकहियेत  
 थाअरोगीकहिये रोगजेवातपितकफप्रमुखतेशरीरहोय  
 तेनेथायत्यांतोकाइ शरीरछेनहि माटेअरोगीकहिये तथा  
 अजेदीकहियेएटलेजेअसख्यातप्रदेशरुपआत्मानोजेघन  
 ठेतेनेकोइजालाप्रमुखेजेदेकहेताविधे एटलेछिद्रपाडवुठ  
 रचुतेकाइपडेनहि सदायअभेदीठे तथाअछेदीकहेताजे  
 घनमार्थीकोइकडकोजुदोपामजोचाहे तेकाइकोइकालेप  
 णेनहि तथाअवेदीकहेताजे पुरुषवेद १ स्त्रिवेद २ नपु  
 षवेद ३ तेत्रणेवेदेकरीनिरहीतछे तथाअखेदीकहेताजेजे  
 कारजकरता थाकलागेतेनेखेदकहिये तेमाहेलुत्याकाइ  
 कारजकरवुकराववुठेनहितेथीअखेदीकहियेतथाअकखाइ  
 कहिये कखायकहेताजेक्रोधादिक तेनाचारभेद क्रोधक  
 हेतांजेतप्तपरिणाममानकहेताजेअभिमान तेनेजगत्रमद

कहेते तेनाआठजेदवे जातमद १ कुलमद २ वलमद ३  
रुपमद ४ धनमद ५ इश्वरीयमद ६ ज्ञानमद ७ तप  
मद ८ इत्यादीकअनेकजेदएमदअहंकारनावे तथामाया  
कहेताजेकपटस्वअर्थकरे परअर्थकरे तथास्वजावेपणक  
पटमाजरम्याकरे लोभकहेताजेतुप्ता धननी राजनी पु  
त्रनी स्त्रिनी जसकीर्तिनी आभवनी परभवनी एसर्वेनेतु  
प्ताकहिये एक्रोधादिकचारेनेकखायकहिये एवाचारेक  
खायथकीरहित तेनेअकखाइकहिये एटलेएसिद्धभगवा  
नअखाइजछे तथाअसखाइकहेता जेसिद्धभगवान  
सखाइकहेता कोइनीसाहाजकरेनहि एटलेजेमुक्तिग  
यातेनीकोइजिवआशाराखे जेमहारुकारजकरे तेसर्वमि  
थ्यावे सिधन्नगवानअहियाआवेपणनहि नेकोइनुंकारज  
करेपणनहि त्यावेठापणकोइनुकारजकरेनहि एतोपोता  
नास्वभावमास्थीरभावेछे माटेएमनेअसखाइकहिये अथ  
वाविजोअर्थजेअसखाइकहेता एविजाकोइनीसाहाजेसि  
धरह्यानथी अनेकोइनीसाहाजथकीसिद्धथयानथी एतो  
पोतानीआत्मशक्तियेजसिद्धथयाछे नेपोतानीआत्मश  
क्तियेजस्थीरजावेसिधनेविपेरह्याछेअहियाकोइनीसाहा  
जखपलागतीनथीकोइनीसाहाजथकीपूर्वेसिद्धथयानथी  
हमणापणकोइनीसाहाजथकी कोइसिद्धथतानथी आवते  
कालेपणकोइनीसाहाजथकीसिद्धथवानानथी अहियातो



एकआत्मशक्तिस्वपलागेते माटेअसखाइजकहिये वली  
 अलेसीते एटलेलेइयाकहेता क्रश्मलेइया १ निललेइया  
 २ कापांतलेइया ३ तेजुलेइया ४ पद्मलइया ५ शुक्ललेइया  
 ६ एछयेलेइया यकीरहितते माटेअलेसीकहिये तथाअश  
 रीरीकहेता उदारीक १ विक्रिय २ आहारक ३ तेजस ४  
 कारमण ५ एपाचेशरीरेंकरनेरहित माटेअशरीरीकहि  
 येतथाअणाहारीकहेता कवलहारकहेता जेकोलियोवा  
 लीनेमुखमांधरे १ रोमाहारकहेता रोमरोमथकीप्रण  
 मे २ उनाहारकहेता गर्जावासप्रमुखजाणवानुं इत्यादि  
 कआहारेकरनेरहित तेनेअणाहारीकहिये तथाअव्या  
 बाधकहेता जेबाधापीमारहित तथाअणअवगाहकहेता  
 जेअवगाहनाजेशरीरनीमंसारमानोखीनोखीते तेसक्षेप  
 थीकहियेछिये प्रथवीआदिकचार थावरनीआगलनेअसं  
 र्यातमेभागेछे वनस्पतिनीहजारजोजननीते बेरद्रीनी  
 बारजोजननी तेरद्रीनीत्रणगाउनी चौरद्रीनीचारगाउनी  
 त्रिजचपंचद्रीनीआगलतोअसस्यातमोभाग उतकष्टीह  
 जारजोजननी नारकीनीपाचसेधनुपनी देवतानीसातहा  
 थनी मनुष्यनीत्रणगाउनी एवीचारपनवणासुत्रथकीजो  
 इलेजोडत्यादिकअवगाहनायेकरिरहित तेनेनिरअवगा  
 हनाकहियेअहियाकोइकहेशेकेसिद्धनअवगाहनाजघन्य  
 बत्रिशआगलनीउतकष्टी त्रणसेतेत्रिशधनुपनेबत्रिशआं

गलनींते नेतमेअणअवगाहिकेमकहोछो तेनोउत्तर जे  
 त्याकाइपुद्गलीकअवगाहनाबेनहि नेत्यांजेछेतेनोआत्मी  
 कअवगाहनाबे तेएकअवगाहनात्यांअनंतीअवगाहनाउ  
 रहिबे माटेएअवगाहनातोकहेवामात्ररहीबे नेपुद्गलीकअ  
 वगाहनामांएकमांवीजिसमाधनहि अहियांकोइकहेशेजे  
 मनुष्यतथाजनावरनाशरीरनेविपेकीडाप्रमुखपडेछे माटे  
 विजिअवगाहनाउ समायकेनहि तेनोउत्तर जेमनुष्यत  
 थाजनावरनेविपेकीडापडेछे तेतोअल्पशरीरींते नेरोगा  
 दिककारणेपडेछे माटेकांइमनुष्यमांमनुष्यपद्मतांनथी ने  
 जनावरजनावरमापडतांनथीनेस्त्रिआदिकगर्जधरेबे तेतो  
 गर्जनोकोठोन्यारोजछे गर्भस्थीतिपुरीथये प्रसवथायमा  
 टेएअवगाहनामाअवगाहनाकहेवायनहि माटेएतोस्थी  
 तियाजावछे माटेअहियापुद्गलीकजावमा विजिअवगाह  
 नासमातीनथी नेसिद्धजगवाननेतोएक सिद्धनीअवगाह  
 नात्यांअनंतासिद्धनीअवगाहनारहीछे माटेएअवगाहना  
 गणायनहि तेथीसिद्धजगवानअणअवगाहीछे तथावली  
 अगुरुलघुकहेता खटगुणीहाणवृधिअथवाहलवोचारे ए  
 सर्वेव्यवहारनयेकरीने सिद्धजगवाननेकहियेछिये शामा  
 टेकेस्वअपीक्षायेबेनहि परअपीक्षायेलाधेतेविचारसर्वसु  
 मतीग्रथकीजाणजों तंथाअप्रणामीकहेता कोइगतिआ  
 दिकविशेप्रणमवानोस्वजावबेनहि माटेअप्रणामीक्रि २

तथा अतिंद्रियकहेता श्रोतडंद्रि १ चक्षुश्चंद्रि २ घ्राणइंद्रि  
 ३ रसइंद्रि ४ फरसइंद्रि ५ एडंद्रियोयेकरीनेरहिततेने  
 अतिंद्रियकहिये तथा अप्राणीकहेतां पाचजेडंद्रि पुर्वकहेते  
 मनोबल १ वचनबल २ कायबल ३ स्वासोस्वास ४ नेआव  
 खु ५ एदशप्राणथकीरहिततेने अप्राणीकहिये तथा सिद्धज  
 गवानेनो प्रजाप्तीकहिये एटले प्रजाप्तीकेहेतां आहार  
 प्रजाप्ती १ शरीर प्रजाप्ती २ इंद्री प्रजाप्ती ३ स्वासोस्वा  
 प्रजाप्ती ४ नापा प्रजाप्ती ५ मन प्रजाप्ती ६ एष प्रजाप्ती  
 कीरहिततेनेनो प्रजाप्तीकहिये तथा अयोनीकेहेतां मनुपत्री  
 जचनी आबलीपत्र तथा काचवादि आकारेयोनी तथा देव  
 तानारकीनी उतपातयोनी समुर्धमनी अनेकजातनीयोनी  
 तेयोनी माजेने प्राप्तनथीथावु तेने अयोनीकहिये तथा  
 ससारीकेहेता संसारजे देवता मनुप त्रीजचनारकी एच  
 रगती संसारथकीरहित तेने अससारीकहिये तथा अप  
 केहेता मसारस्वरूपथकीनोखा तथा अपरंपारकेहेता जेने  
 पारनपामीये अव्यापीकेहेता ससारादिकने विषेव्या  
 नहि अकपकेहेता जेवायु प्रमुखेकपेनहि अविरोधीकेहे  
 कोडजिवसाये विरोधछेनहि अनाश्रवकहेता जेशुभाशु  
 पुन्यपापछेनहि अहिशा प्रमुखपण आश्रवछेनहि तथा  
 ढारेपापस्यानथकीरहीतयथाछे तैयी अनाश्रवकहिये अ  
 गीकहेता कांडपुद्गलादिकनोसगछेनहि अनाकारकहे

परीममलप्रमुखस्वस्थानएकेउनेहि इत्यादिकअनंतगुणे  
 करीविराजमानएवेलक्षणेसहित तेनेसिद्धपरमात्माकहि  
 येहवेअहिंथकीसिद्धजेथाय तेकेवीरीतेथाय जेचौदमागुण  
 ठाणाभेअंतेउठिन्नक्रियाप्रतिपातोध्यानकरतोसइलेसीक  
 रणकरीनेसिद्धेएटलेपुर्वेआठगुणआत्माना तेआठकर्म  
 दावेलाछे तेथकीछुटेतेनुंनाममुक्ति कहिये तेआठगुणना  
 नामकहियेछिये ज्ञानगुणतेज्ञानावर्णिकर्मदाव्योछे १ द  
 र्शनगुणतेदर्शनावर्णिकर्मदाव्योछे २ अव्यावाधगुणतेवे  
 दनीकर्मदाव्योछे ३ जावचारीत्रक्षायकभावनुंतेगुणमोह  
 नीकर्मदाव्योछे ४ अवनाशीगुणतेआयुकर्मदाव्योछे ५  
 अरुपीगुणतेनामकर्मदाव्योछे ६ अगुरुलघुगुणतेगोत्र  
 कर्मदाव्योछे ७ विर्यादिकगुणतेअंतरायकर्मदाव्योछे ८  
 तेआठकर्मआठगुणदाव्याछे तेआठकर्मनेद्रव्यकर्मकहि  
 येतथारागद्वेषतेजावकर्मकहिये तेकर्मथकीछुटेतेनेमुक्ति  
 कहिये तेजिवकर्मथकीमुक्ताइनेसिद्धक्षेत्रमांसिद्धोवरे.

शिष्यवाक्य--केस्वामी एजिवकर्मथकीमुकाणोत्यारेके  
 नाजोरथकीनिहसुधीजाय केमकेअहियातोजिवनेगती  
 आदिकनेविपे आनपुरवीछे तेखेंचीजायछे अनेअहिया  
 तोकोइप्रेरकठेनहि नेप्रेरकविनासातराजउचोकेमकरीने  
 चडे तेनोउत्तर केपुर्वप्रयोगकहेता जेअनादीकालनो  
 एजप्रयोगजवाआववानोछे तेथकीकरीनेजाय तथा बी

जे प्रकारे गती प्रणमन कहेता जे ते गती माजवुठे जथाकुला  
 लचक्रधत एटले कुभारनोचाकरो प्रथम फेरवीने पठे दंड प  
 डतो मुके तोय पण ते चाकरो तेनी मेले फरयाज करे तेमजिव  
 ससार गती आदिक थकी छुटोछे तोय पण गती प्रणमन नेली  
 धे चाल योजाय तथा त्रिजे प्रकारे बधन ठेदक हेता जे बधन थ  
 की छे दाणो जेम एरडानुची ज एरडानु फल फाटे के एरडानु  
 बिज उंचु चाले तेम अहिया कर्म बंध थकी छुट्यो एवो आत्मा  
 उंचो चाल योजाय तथा चौथे प्रकारे असग क्रिया कहेता जे  
 म अग्नि नोधुमानोछे ते धायुरहित सखा बध उंचो चाल योज  
 जाय तेमजिव ने अनादिकालनी असग क्रिया ये उर्ध्व गती  
 जवळ नठे तेथी उंचो चाल योजाय एरी ते सिद्ध गती मां जाय  
 शिष्य वाक्य--स्वामी चौदमुगुण ठाणु अक्रिय छे तो चौद  
 मे गुण ठाणी एवो क्रिया के मकरे के मातरा ज उंचो जाय ते  
 नो उत्तर जे सिद्ध तो अक्रिय जठे परंतु पूर्ण प्रेरणा ये जाय ते जे  
 मतुबडुठे तेनी उपर बहू ध्यतिका प्रमुखनो लेप देइ ने दहाने  
 तली ये नाखिये तो एलेप बोवाइ जाय त्यारे तुंबडु पाणीनी उ  
 पर ज आवे एतुबडानो स्वभाव ठे तेम आत्मा कर्मना लेप थ

नगयो तेनोत्तर जेअलोकनेविपे धर्मास्तीकायतेनहि  
 त्यारेत्यांचालताने साहाजकोणआपे माटेप्रेरककोइनहि  
 तेथीनगयो अथवाकोइकहेशेके त्यारेनिचोकेमनपड्यो  
 तेनोत्तर जेनारेहोयतेनिचुंआवे नेएतोआत्माकर्मरुप  
 नारथीरहितथयो एटलेहलकोथयो तेनिचोशाथकीआ  
 वे अथवाकोइकहेशेके त्याडाजोमणोत्रीछो आघोपा  
 छोकेमनजाय तेनोत्तर जेएतोचेतनअकपछे तेकांडवा  
 युयकीहालेचालेनहि अथवाकोइप्रेरणाकरतापणनेनहि  
 जोकर्महोततोप्रेरणाकरत अथवाअचलछे एटलेपोताना  
 आकाशप्रदेशजेफरसेलाठे त्याथकीचालीनेआघोपाछो  
 जायनहि आमाटेकेसिद्धभगवानअक्रियछे माटेक्रियाव  
 नाएबधुकारणवनेनहि नेअहियातोक्रियानोनाशकरीने  
 सिद्धीवरचाछे माटेएकामनवने अथवाकोइकहेशेकेसिद्ध  
 नेकर्मकेमनलागे तेनोत्तर जेकर्मतोअज्ञानजोगथी  
 लागेवे अनोसिद्धभगवानेतोअज्ञानजोगनाक्षयकर्योवे ते  
 थीकरीनेकर्मकोइलागेनहि एटलेएवुंजेसिद्धक्षेत्रतेनेविपे  
 आत्मासिद्धपदनेपामे अनेएवाजसिद्धपरमात्मानागुणक  
 ह्यातेवाजसर्वनाआत्मानाछे तेआत्मीकगुणनुंस्मर्णध्यान  
 जेकरेतेपोतेसिद्धपरमात्माथायएवातमासदेहराखवोनही  
 ॥ दुहा ॥ सुक्ष्मबोधविणजिवने नहिआत्मअनुभव॥ ते  
 कारणएवरणव्यो सुणीलेजोतमेभव्या॥१॥ आत्मचिंताव

रणवी वरणव्योसुक्ष्मबोध॥ हेज्ञेनेउपादेय एत्रणेनोक  
 रीशोध॥२॥ शुभाशुभदशावरणवीत्यागविकहिनिरधार॥  
 शुद्धभावतेश्चादरो निजस्वरूपसुखकार॥३॥ जेदज्ञानअ  
 हिनावरणव्यो जडचेतनविभाग॥ गुणपर्यायतेमजाणि  
 ये द्रव्यसघातेजाग॥ ४ ॥ नयोसातेवरणवी बहूग्रथअनु  
 सार॥ दोषप्रकारएहमाकह्या समजोचतुरविचार॥ ५ ॥

वधरे तेविसकारतगमास ॥ शुक्लत्रयोदशीजाणिये जोम  
 वारसुखवास॥१६॥एहग्रंथपुरणहूवो संघनेअतिआनंद॥  
 मुजमनपणआणंदघणो प्रगट्योसुखनोकंद॥१७॥मोदी  
 कपुरमोटकु बहुआवकनोवास॥ तेहतणेआग्रहेकरीकिधु  
 अहियाचोमास॥१८॥श्रोताव्यक्ताबहुवसे आवकमुन्यप  
 वित॥तेहतणेआग्रहेकरी किधोग्रथएनित॥ १९ ॥हूकम  
 माथेचनावियो जिनवरकेरोसार॥तेहनांवचनअनुसारथी  
 नारुनोएहविचार॥२०॥हूकममुनीनोमानशे आदरशेए  
 ग्रथ ॥ सुखशाश्वतापामशे होशेशिववधुकंथ॥ २१ ॥

॥ इति श्रीआत्मचिंतामणीसपुर्ण॥





## श्री चिदानंद बत्रीशी.

नाथकेसेपरघररमणसोहायो एअचरिजमोयेआयो  
 ॥नाथ० १॥ मिथ्याअव्रतकपायेकरीने जोगअशुद्धमि  
 लायो॥बंधउदेउदिरणाकरीने श्रद्धाशुद्धनपायो॥ना० १॥  
 अवलीप्रणतीरागद्वेपनि वलीअचरणमनलायो ॥ तेथी  
 परघररमणकरीने निजस्वरुपनपायो ॥ना० २॥ बहूवि  
 धमरणअनंतकरीने त्रसथावरभसायो ॥ अवश्रद्धाआग  
 मसुलहीने हूकमनिजघरआयो ॥ना० ३॥ पदपेहेलुसंपू  
 र्ण ॥१॥ नाथकेसेनिजघररमणसोहायो एअचरीज  
 मनभायो॥नाथ०॥सदबुधमीत्रमलयोजवआई तेहनेस्वरु  
 पसूणायो ॥ तववृतंतमूलथीतेजाणी चीतचमत्कारपायो  
 ॥ना० १॥ निद्रापरमाददुरकरीने आपसुआपजगायो ॥  
 निजज्ञानदशालीधीसंभारी तवमिथ्यातदुरेजायो ॥ना०  
 २॥ ओलीप्रणतिसोसवथईप्रणमी श्रद्धासेहेजसोहायो॥  
 तमहूकमशुशीवसूखलहिये सेहेजेनिजघरपायो ॥नाथ०  
 ३॥पद२ संपूर्ण॥ तुहीहेतुहमारोअनूजव ॥चाल॥ अवधू  
 एहीज्ञानहमारो जासुअनुभवहेप्यारो ॥अवधु०॥ वस्तु  
 गतेरह्योजेधर्म सोहीधर्महमारो ॥ ओरकाजगोडीकरीरे  
 उनमेखेलेप्यारो ॥अ० १॥ वहिरअंतरनेवलीपर्म आत्म  
 परनितीतीन ॥ देहादीककोभरमरह्योजीहां सोवहीरा

तमदीनरे ॥ अ० २ ॥ अतरआत्मखेलेन्यारी ज्युजलक  
मलद्रष्टाते ॥ मुनीहूकमकहेनहीकर्मवधन सोपरमात्म  
वृत्तंतरे ॥ अ० ३ ॥ सपूर्ण ३ ॥ राग आशावरी ॥ में  
तोमेरीरेभोजाईकुसमरुं ओरसूनहीमोयेकाज ॥ ओरसू  
कछूगरजसरेनहीरे घरकेसाथेलाज ॥ अवधूओरकुकुणस  
झारे १ ॥ मेरीभोजाईमेरीपासे सोतोरहीवेमुन ॥ अहो  
निदास्मरणकरतीमोरी वाकुछोमेकुण ॥ अव० २ ॥ नी  
जजाजीकेरेपासेरेहेषु करशुंआत्मकाज ॥ मुनीहूकम  
कहेसानलोरे जेशुशीवपुरराजरे ॥ पद ४ सपूर्ण ॥

॥ पद ५ रागकल्याण ॥ चेतनक्युखेलेतुपरमे जोखेले  
तोखेलघरमे ॥ चेतन० ॥ तुंजाणेपरबुजवुरे सोनहीतुज  
गुणजाग ॥ परउपदेशपरजोगथीरे परग्रहणेतुलागरे  
॥ चेतन० १ ॥ सकलमनोरथपूरचेरे चीदानंदमहाराज ॥  
जेथीभवभ्रमणमटेरे आपेशीवपूरराज ॥ चेतन० २ ॥ ते  
माटेचेतनभजोरे काढीओरवलाय ॥ हूकमकहेतुमेखेलो  
सहीरे निजघरसेहेजसमायरे ॥ चेतन० ३ ॥ पद ५ सपूर्ण ॥

॥ पद ६ रागप्रजाती ॥ अहीनेदुधपावेजेमाणस दु  
णुविखवधारैरे ॥ तेनेतेखावेसहीरे उलटोगुणतेजारैरे १  
चेतनक्यातुपरसमजावे निजघरनहीतुपावेरे ॥ चेतन० १ ॥  
परसमजावतआपकुखोवत निजचेतनआपसभारैरे ॥  
५५५ पत ॥ वेव ॥ जेहसुहोवेसुखकाररे ॥ चेतन०

२ ॥ परमापेसतसूखनहीपावत जेहथीबहुजजाल ॥ आ  
 पसंभालतदीसेवीरला मुनीहूकमकहेतेधार ॥ चेतन० ३  
 संपूर्ण ॥ ॥ पद ७ रागवेलावल ॥ क्यासुवेतुजागवाव  
 रा जमताक्युंकहावेरे ॥ चेतनकहावतधरतउमेद तोसर  
 दाशुद्धसोहावेरे ॥ क्या० १ ॥ पंचज्ञानखटद्रव्यकुजाणे गु  
 णपर्यायेमनआणेरे ॥ स्यादवादद्रष्टिसुदेखत नयनिक्षेप  
 प्रमाणेरे ॥ क्या० २ ॥ पक्षप्रमाणखटकारकउनमा एमअ  
 नैकजंगतुरंगरे ॥ मुनीहूकमकहेजेएजाणत सोहीसरदा  
 सुरंगरे ॥ क्या० ३ ॥ पद ७ संपूर्ण ॥

॥ पद ८ ॥ रागविलास ॥ आजगइतिसमोवसरणमां  
 ॥ राग ॥ चेतनक्यातुपरसंचारे निजद्रव्यकुंसजालोरे ॥ आं  
 कणी ॥ निजघरवहेसोसजातिजाणो अनंतगुणेतेचरीयो  
 रे ॥ स्यादवादद्रष्टितेजोता संभुरमणतेदरीयोरे ॥ चेतन  
 क्या० २ ॥ द्रव्यजावनिश्चैव्यवहारो एमअनेकभेदज्यां  
 हुतरे ॥ मुनिहूकमकहेजोएजाणत तेजहेपरमपदसतरे ॥  
 चेतन० ३ ॥ पद ८ संपूर्ण ॥ ॥ पद ९ ॥ रागनेरव ॥ आ  
 जतोवधाइ ॥ एचाल ॥ चेतनक्यातुकरेपरआशा गोडीदे  
 एहवीपासारे ॥ चे० ॥ परआशासेपुद्गलपेसत देखतलो  
 कतमासा ॥ निजधणीकानामनजाणत एहीवडाउदासा  
 ॥ चे० १ ॥ विजातितुंक्यारेविचारत एहीपुद्गलपासा ॥  
 निजस्वरुपरमताचेतनमां सेहेजेहोतखुलासा ॥ चे० २ ॥

निजधणीकेपासेरहीके उरसुकहाकरनावाता ॥ मनउ  
 लासप्रगट्योजेअनुभव सोतो नहिरहेछाता ॥ चेतन०३  
 चिदानंदकीमोजमर्चाजव उरकीकुनकरेआशा ॥ मुनिहू  
 कमकहेनिजघर आपहिचिदानंदकरतुहेवासा ॥ चे० ४ ॥  
 पद ९ सपूर्ण ॥ ॥ पद १० मु ॥ रागप्रजाति ॥ चेतनक्या  
 तुंपरमेपेसे अल्पकालजाणतहेआपको ॥ उरसुखकुणले  
 शे ॥ चे० १ ॥ जोचेतेतोकरलेसजाइ प्राश्रितआलोयण  
 पेली ॥ पर्छासझायध्यानतेकरिये काउसगरसेसेहेली  
 ॥ चे० २ ॥ जोचेतेतोएणीविधकरले उरसेनहिहेतुजका  
 ज ॥ मुनिहूकमकहेतेजनपामत सेहेजेशिवसुखराजरे ॥  
 चे० ३ ॥ पद १० सपूर्ण ॥ पद ११ मु ॥ दूहो ॥ एहीगुरुएहीबेला  
 एहीदेवनकादेव ॥ उरकाजगेमीकरी कीजेउनकीसेवा ॥ १  
 ॥ रागआशावरी ॥ अबधुक्यातुंअनुभवपुछे निजचिदा  
 नंदनहिवुजे ॥ अ० ॥ चिदानंदकीवातनजाणत उरकीक  
 रतहेआशा ॥ उरतेरेकुंक्याबतलावुं एहीबडाहेपासा ॥  
 अ० १ ॥ निजघटमेचिदानंदकीसे सर्वगुणेतेंजरीयो ॥  
 भेदज्ञानकीकरेविविक्षा सेहेजेनवजलतररीयो ॥ अ० २ ॥  
 क्षयउपसमवडानहिजेहकु पणजोएहनेजजशे ॥ मुनिहू  
 कमकहेतेहनेरे सेहेजेनवजलतरशे ॥ अ० ३ ॥ पद ११ सपूर्ण  
 ॥ पद १२ मु ॥ वादलसेसुरजकुढंकत ॥ राग ॥ हरेइहा  
 ॥ १० ॥ सोजवपारनपावे ॥ ह० ॥ सबहिआ

हारकिशातापुच्छे मोहेवसमनजेहनुं॥निजचिदानंदंअंतर  
 खेले तिहांआहारनचिनुं ॥ह० १॥ बाहाजआहारतेपुद्गल  
 लेवे सोतोपुद्गलउपासी ॥ अंतरआहारचेतनलेवे सजा  
 यध्यानमनवाशी ॥अ० २॥ याविधआहारविवीक्षाकरे  
 जेलेशेएआहार ॥ मुनिहूकमकहेतेहनेरे सेजेनवजलपा  
 रा॥अ० ३॥पद १२संपूर्ण॥ पद १३ मुं ॥ वाढलसेंसुरजकुं  
 ढकत ज्युकर्मचेतनकुरे ॥ तेमतरियाजोगकुंखमत्त उरलो  
 केध्यानमनकुरे॥१॥ उरलोकनसेध्याननहोवे ध्यानएकांति  
 कहियुरे ॥ ध्यानतणिजोकरेरेविवीक्षा तोभेगीमतकरस  
 इयुरे ॥ वा० २ ॥ कविपणएकातरहिने करेकवितारुडी  
 रे ॥ मुनिहूकमकहेसुणोभाइसंतो एमतनहिछेकुडीरे ॥  
 वा० ३॥पद १३संपूर्ण॥ ॥ पद १४मुं ॥ रागगोडी॥चेत  
 नक्यातुंमनदोडावे एसुदुरगतिपावे ॥चे०॥ एमनछेपु  
 द्गलकाधरको सोहिविजातीजाणो॥विजातीकोसंगकरण  
 सु कालअनादिगमाणो ॥चे० १ ॥ तोपणतेरेकुलाजन  
 आवत हजिमननसमारो ॥ अवसुचुफ्योफेरहिचेतन ज  
 इसंसारभमारो ॥ चे० २ ॥ तेमाटेमनवशकरराखो ज्युं  
 शीवसुखफलचाखो ॥ मुनिहूकमकहेसुणोभाइसंतो ए  
 उपदेशमेदाखो॥चे० ३॥पद १४संपूर्ण॥ ॥ पद १५मुं ॥  
 ॥ रागगोडी॥चेतनक्यातुंमनदोडावे जेहसुंअप्पानपावे॥  
 ॥चे०॥ द्रव्यगुणपर्यायकुजाणत भेदाभेदसवध ॥ नयन

खेपप्रमाणतुजाणत बलिस्यादवादसबंध ॥ चे०  
 पक्षखटकारकादिकसोजाणे निजबुद्धिनेअनुसारे ॥  
 पणध्यानकरिसकेनहिरे तोमनकेमनवारे ॥ चे० २ ॥  
 शयीचिदानंदप्रगटे निजघटमेहोयदिवो ॥ मुनिहूक  
 सुणोजाईसतो एहिअमृतकरीपीवो ॥ चे० ३ ॥ १५ सं  
 ॥ पद १६ मु ॥ रागकेरवो ॥ पीयाविनकेसेरहूमें  
 लाएकंलडीनार ॥ पियातुमजिसादिनगयाविदेसे  
 वरनहिपाये ॥ पी० १ ॥ जुरतजुरतबहुकालवितो  
 नहिरतकोइ ॥ पी० २ ॥ सखिहमारीहांसिकरति  
 तुमकेमनकेलाय ॥ पी० ३ ॥ अबतुमनामसमर  
 मोये ठुतियाफीटफीटजाय ॥ पी० ४ ॥ सासरी  
 साजनकिधि पिउपणमनसुभुलाये ॥ पी० ५ ॥  
 कमकहेधीरजराखे अबतेरेकुबोलाये ॥ पी० ६ ॥  
 ॥ पद १७ मु ॥ पीउसेमेकेसेकरुरे उरघरमेजेज  
 एकलमीमेघरमेरहेति तरुणअवस्थापाय ॥ पी०  
 रीरेटेखीठीदरदेखे ॥ रखेकुलमेकलकलगाय ॥ पी०  
 मोयेकद्रपकामेपीमी ॥ विनअग्निनतनमेंदाह्य ॥ प  
 रुपरगचतुराइतेखोइ ॥ उरसुवातकेमथाय ॥ पी०  
 सुणोसखीएअरजहमारी ॥ जइमोयेपीउकुजनाय ॥  
 मुनिहूकमसुजाइकहूरे ॥ चेतनघरअणाय ॥ पी० ६ ॥  
 ॥ पद १८ मु ॥ जोवनमातीरागजेजेवती सुणए

## अथसिद्धनीडालो

॥ पंटरनेदेसिद्धथयातेनी ॥ ढालपहेली ॥ पाडवपां  
चमोक्षेगया ॥ एदेशी ॥ विरजिनेश्वरउपदेशे सांनलजो  
चितलाइरे ॥ समज्यार्थीसुखउपजे पन्नवणासुत्रसांहीरे  
॥ १॥ विरजिनेश्वरउपदेशे ॥ एत्रांकणी ॥ जिवसंसारी  
सिद्धिया टालीरागनेद्वेपरे ॥ आश्रवआदिकारणतजी  
पामीगुरुउपदेशरे ॥ वि० २ ॥ मोहमच्छरदूरेकरी चा  
रित्रपाचमुपामेरे ॥ केवलपामीअजोगीथया सिलेसीक  
रणतेठामेरे ॥ वि० ३ ॥ ध्यानशुकलचउनेदथी पूर्णहो  
यतेठामेरे ॥ एकसमेस्थितितेगया पूर्णसिद्धतेपामेरे ॥ वि०  
४ ॥ तेसिद्धबहूविधजाणीये पणपचदशनेदभाखुरे ॥ स्व  
रुपतेनुंदाखशु नामकहिनेदाखुरे ॥ वि० ५ ॥ तिर्थअतिर्थ  
तिर्थकरु अतिर्थकरस्वयंअगबोधभाख्यारे ॥ प्रत्येकबो  
धबुद्धबोहिकह्या त्रणलिंगेसिद्धदाख्यारे ॥ वि० ६ ॥ स्व  
लिंगअणलिंगग्रहिलिंगे एकअनेकतेजाणोरे ॥ एपदरे  
भेदजाखीया सिद्धतणाचित्तआणोरे ॥ वि० ७ ॥ तेनुंस्व  
रुपआगेभाखशुं श्रोतासुणजोदइकानरे ॥ मुनिदूकमस्व  
रुपसिद्धनुं जाणताहोयबहूमानरे ॥ वि० ८ ॥ ढालपहेली  
संपूर्ण ॥ ढालबीजी ॥ आजतोवधाइराजानाभीकेदरवा  
ररे ॥ एदेशी ॥ तिर्थसिद्धनेपूजियेरे भावधरीनेसाचोरे



कखाईसुदरजाणो गेरीगजिरधार ॥ सेनपरायुंओलंगे  
 नहि एसोगुणउदार॥३॥ शानिरजेपदएमतेपामि रम  
 तोसमतासंग ॥ मुनिहूकमकहेचीदानंदमय दिनदिनअ  
 धिकसोरग॥४॥ पद१लु सपूर्ण ॥ पद २॥ रागसोरठ ॥  
 समजावमंदिरमावेठो स्वभावमडपसार ॥ अनुजवमित्र  
 तिहामल्योछे सुधानदविचार ॥स०१॥ अशुद्धप्रणतिदु  
 रनिवारी नहिसकलेष्टलगार ॥ अध्याविसायशुद्धदिसे ए  
 सेनतणोपरिवार ॥स०२॥ रीपुसेनतिहांनविपेसे एअनुं  
 भवनोपसाय ॥ मुनिहूकमसमताशुरमतां टालिपरउपा  
 य ॥स०३॥पद२जु सपूर्ण॥पद३॥ रागकानडो ॥ समता  
 सगेरमणकरता नाखीकुमतातोडो ॥ सुमतिसाथेसगा  
 ईकीधी मोहरायेमदमोडि ॥ स० १ ॥ ज्ञानानदश्रामं  
 तकीनो अनुभवसेनापतिसार ॥ दरगणादिकसरदारते  
 मोटा फोजतणोनहिपार॥स०२॥हूदूरेरह्योमोहथरथरक  
 पे रागद्वेपपरिवार ॥ अहियांजोरचालेनहिवाकौ करेश्र  
 नेकउपचार ॥स०३॥ आमंतसेनापतिएकामिजलस स्वा  
 मिनुंराजसमालु ॥ हुंपणदोयनेवशथईवेठो ध्यानवाप्ती  
 मांमालु ॥स०४॥ अवजयनंहिमुजकिचितमात्र सुधानद  
 रुपपायो ॥ मुनिहूकमसुमताघेरआयो जोतनगारोवजा  
 यो ॥स०५॥ पद३जु सपूर्ण॥

## अथसिद्धनीटालो

॥ पंदरजेदेसिद्धथयातेनी ॥ ढालपहेली ॥ पांडवपां  
चमोक्षेगया ॥ एदेशी ॥ विरजिनेश्वरउपदेशे सांजलजो  
चितलाइरे ॥ समज्याथीसुखउपजे पन्नवणासुत्रसांहीरे  
॥ १ ॥ विरजिनेश्वरउपदेशे ॥ एत्रांकणी ॥ जिवसंसारी  
सिद्धिया टालीरागनेद्वेपरे ॥ आश्रवआदिकारणंतजी  
पामीगुरुउपदेशरे ॥ वि० २ ॥ मोहमच्छरदूरेकरी चा  
रित्रपाचमुंपामेरे ॥ केवलपामीअजोगीथया सिलेसीक  
रणतेठामेरे ॥ वि० ३ ॥ ध्यानशुकलचउजेदथी पूर्णहो  
यतेठामेरे ॥ एकसमेस्थितितेगया पूर्णसिद्धतेपामेरे ॥ वि०  
४ ॥ तेसिद्धवहूविधजाणीये पणपंचदशनेदभाखुरे ॥ म्व  
रुपतेनुंदाखशु नामकहिनेदाखुरे ॥ वि० ५ ॥ तिर्थअतिर्य  
तिर्थकरु अतिर्थकरस्वयंत्रंगबोधभाख्यारे ॥ प्रत्येकबो  
धबुद्धबोहिकह्या त्रणलिंगेसिद्धदाख्यारे ॥ वि० ६ ॥ स्व  
लिंगअणलिंगग्रहिलिंगे एकअनेकतेजाणोरे ॥ एपंदरे  
भेदजाखीया सिद्धतणाचित्तआणोरे ॥ वि० ७ ॥ नेनुंत्त  
रुपआगेभाखशु श्रोतासुणजोडडकानरे ॥ मुनिदृकमन्त्र  
रुपसिद्धनुं जाणताहोयवहूमानरे ॥ वि० ८ ॥ ढालपहेली  
संपूर्ण ॥ ढालबीजी ॥ आजतोवधाडगजानामांकेदरे  
ररे ॥ एदेशी ॥ तिर्थसिद्धनेपूजियेरे भावयरीने

॥ तोसिद्धिपदपामीये जाणीहीरोजाचोरे ॥ तिर्थ० १ ॥ ए  
 आकणी ॥ तिर्थचतुरविधसंगकह्योए थापनाकीधीसार  
 रे ॥ तिर्थकरेउपदेशीनेए तेतिर्थसुखकाररे ॥ ति० २ ॥  
 ससारसागरअनित्यजाणी नित्यचेतनाधारोरे ॥ एति.  
 र्थजेनरसेवे तेषामेजवपारोरे ॥ ति० ३ ॥ जीवाजीवपदा  
 र्थजाणी शुद्धपरुपकदेखीरे ॥ परमगुरुनीसेवाकीजे त्या  
 सिद्धपदलेखीरे ॥ ति० ४ ॥ वचनतेनुनिराधारछे अवर  
 आशरोनलेवेरे ॥ ज्ञानदर्शनचरणकेरो एरुआशरोहोर्ध  
 रे ॥ ति० ५ ॥ स्वस्वजावेतेनररमता तजीपरभावनेंदुर  
 रे ॥ निजसत्ताएरिद्विडेखी पाम्याआणदपुररे ॥ ति० ६  
 ॥ तेतिर्थसिद्धकोणछे गणवरप्रमुखजाणोरे ॥ साधुसाध  
 वीश्रावकआवीका जेसिद्धातेचित्तआणोरे ॥ ति० ७ ॥  
 तिर्थप्रवर्ततापहेला जेकोइमोक्षेजायरे ॥ त्याकोइतिर्थ  
 करणे वारेनकहेवायरे ॥ ति० ८ ॥ मरुदेवाप्रमुखजेसि  
 द्धा तेअतिर्थसिद्धकहियेरे ॥ अश्रवासुवधीप्रमुखवारे ति  
 र्थविछेदतेसहीयेरे ॥ ति० ९ ॥ आगलतिर्थप्रवर्तनपेला जे  
 सिध्यातेजाणोरे ॥ जातिस्मरणादिकरणपामी जेसिध्याते  
 चीतआणोरे ॥ ति० १० ॥ तेसर्वेनेअतिर्थकहिये सिध्या  
 तेथीसिद्धरे ॥ मुनीहूकमतेंपदनेनमता पामीयेअनुभवरि  
 द्दरे ॥ ति० ११ ॥ ढालवीजिसपूर्ण ॥

॥ ढालवीजी ॥

रुडुनेरलीआमणसुरतगामजो ॥

ज्यादीठीरेमेमुरतसंजवतणीरे ॥ एदेशी ॥ तिर्यंकर  
हवेसिद्धनाखुविचारजो जेतिर्यंकरथइनेमोक्षेगया॥ त्रण  
वानसयुक्तगर्जआवेजो पूर्वगतीप्रमाणेज्ञानीकह्या ॥१॥  
जन्मसमेहरीप्रमुखउठवकर्ताजो तेमदिक्षासमेपणतेजा  
णीये ॥ विणनमस्कारेलहेचारीत्रसारजो मनपरजवना  
णतेचीतआणीये ॥२॥ लइदिक्षाप्रभुशिक्षानवीआपेजो  
केवलज्ञानउपन्यापाखीजाणीये ॥ केवलनाएप्रगटेप्रभु  
नज्यारेजो दृशणएणकेवलतारेचितआणीये ॥३॥ आवे  
इंद्रचोसठमीलेत्यारेजो तेमअसंख्यकोडदेवनीकही॥ समो  
सरणीरचनानीआवखाणजो परखदावारेमीलेतेवेगेस  
ही ॥४॥ जन्मअतिसेचारप्रभुनेहूताजो तेमअगीआरेहवे  
प्रभुनेथया ॥ कर्मनाशथीएजाणोविचारजो तेमउगणीसे  
देवकरतकह्या ॥५॥ एचोत्रीसेअतिसेवतजगवंतजो तरप  
दीआपीनेशघतेथापीयो ॥ द्रव्यखटमेत्रीपदीकहेवायजो  
उत्पातवयनेध्रुवभाखीआपीया ॥६॥ नीत्यअनीत्यैनेएकअ  
नेकतेजाणजो सतअसतनेवकावक्ततेकहो ॥ जेदअजेदने  
जव्यअजव्यतेजोयजो आस्तीनास्तीप्रमुखशतजगीलइ  
॥७॥ नयानिक्षेपनेपरमाणवलिदोयजो ॥ खटकारकजाख्या  
रेप्रभुमुखथी ॥ चउभंगी ॥ त्रिजंगीसप्तजगीजाणोजो एम  
बहुसभंगीसमजोतमेसुखथी ॥८॥ प्रतेकेप्रतेकेद्रव्यपरते  
तेहोवेजो स्यावादमतेजाख्योतेश्रीजिनवरो ॥ इत्यादिकव

हुनेदतणोविचारजो गरुगमथीतेकारजसरे ॥९॥ पद  
 व्यनेटालीशेवोअरुजो जेआत्मगुणज्ञानेजरो ॥ अविन  
 शीअकलरुजेहनुरुपजो एमअनेकथलथीसतावरां१  
 इत्यादिकथमंधापीपातासिद्धजो तेतिर्थकरसिद्धरीतज  
 णीथे। मुनिदूकमकंडपुजेतेनापायजो गुणअनंताएमतेचि  
 तमाआणीये॥११॥इतीढालत्रीजिसंपूर्ण॥

॥ ढाल ४ थी ॥ ढालोतेमुखनोमारु ॥ एढेगी ॥ अति  
 र्थकरसिद्धजेह केवलीअवरछेतेहरे ॥ अरोहंतसुखकारां  
 आत्मघातीजेह कर्मचारहएवातेतेहरे॥अरी०१॥ज्ञानगुण  
 नेहणता ज्ञानावरणीनेगणतारे ॥अरी०॥ दर्शनगुणजे  
 दावे दर्शनकरवानेश्रावेरे ॥अरी०२॥ तेदर्शनावरणीह  
 णीयो गुणबीजोत्याजणीयोरे॥अरी०॥स्थीरतागुणतेजा  
 णो ॥ समकीतादिकतेचीतआणोरे ॥अरी०३॥ तेहनेजे  
 कोइरोके मांहमायामलधोकेरे ॥अरी०॥ तेहनेजेणेहणी  
 यो जथाखापकचारीत्रजणीयोरे ॥अरी०४॥ विर  
 सार दानादिकलवधीधाररे ॥अरी०॥ अ  
 काढु गुणचोयोतेगुणबाधुरे ॥अरी० ५॥ आर  
 तेआप पुरणथयोहवेजापरे॥अरी०॥ वस्तुत्व  
 णअनतातेशीरनाम्यारे ॥अरी० ६॥ अ  
 नी दइरागद्वेपनेसोटानीरे ॥अरी०॥ पाम  
 य पछेअजोगीपदपायरे॥अरी०७॥ प्र

प्रकृतितेरजणीने ॥अरी०॥ सलेशीकरणतेकरता प्रकृतितेरहणतारे ॥ अरी०८ ॥ भागदोयतेमंडी पोलारनो नागएकछंडीरे ॥अरी०॥ घनलेइसिद्धपोंता तेअक्षयपद्धी होतारे ॥अरी०९॥ अतिथीकरसिद्धएह भेदचोथोजाणो तेहरे ॥अरी०॥ मुनिहूकमनीतपुजे ज्ञावअंतरमाहिवुजेरे अरीहंतसुखकारी ॥ १० ॥ इतिढालचोथीसंपुर्ण ॥

॥ ढाल ५ मी देशीधनराधोलानी ॥ स्वयवुधमुनीविणवुरे जेपाम्याआपेबोधअनुभवतेरसिया बोधलेइमुगते गयारे करीआत्मनोशोधअनुभवतेरसिया ॥१॥ श्रीओप्रगट्याजेहमुनीगुण पम्याअनुभवतेह ॥ मु० ॥ सेजस्वनावसुखकार ॥ अनुभव० ॥ तेस्वयवुधमुनीवरुरे, त्रिणकारणतेपाम्या ॥ अनुभव० ॥ कारणदीठावीणतेसेजे सेजस्वरुपतेनाम्या ॥ अ०२ ॥ जातीसमरणादिकपामी बोधबीजतेलेइ ॥ अ० ॥ तेस्वयबोधदोयभेदवेरे बीवरीनेतेकहिये ॥ अ०३ ॥ तीर्थकरजेजेहूआ तेस्वयंगवुधजाणो ॥ अ० ॥ पूर्वअभ्यासेबोधलेइने शीवपोताचीतआणो ॥ अ०४ ॥ अवरस्वयवुधबीजेनेदे विणतीर्थकरकहिये ॥ अ० ॥ जेप्रतीबोधसेजथीपामी चारित्रगुणग्रहिये ॥ अ०५ ॥ नहिउपदेशकोइगुरुकेरो तेमनहिकारणकोय ॥ अ० ॥ आपआपणसेजस्वभावे बोधबीजतेहोय ॥ अ०६ ॥ तेस्वयंबोधदोयप्रकारे जाखुतासविचार ॥ अ० ॥ जेनेश्रुतपूर्वअभ्या

सीत जोइआखेउपसमधारा॥अ०७॥ तेमहानीपुणमहावु  
 द्विवंतो पुर्वजवअभ्यासी॥अ०८॥ तेश्रुतनेपरभावे चारित्र  
 मुणआहीवासी॥अ०९॥ तेहनेलिगदेवताआपे बोलता  
 एअमदीसे॥अ०१०॥ अथवासुगुरुपासजइने वेपलेइमन  
 हीसे॥अ०११॥ तेस्वयबुद्धस्वइच्छाये एकाकीविचरता  
 ॥अ०१२॥ जोसामर्थिहोयपोतानी तोगुणअनुजववरता  
 ॥अ०१३॥ जोसामर्थिनहोयएकाकी विचरवासमरथ  
 ॥अ०१४॥ तोकोइगुरुपासेगच्छमाही लहेसुत्रनेअथा॥अ०१५॥  
 जोइसुगुरुतेगच्छमेरहेवे जेपूर्वसुतनाअभ्यासी॥अ०१६॥ मुनि  
 हूकमएनिश्चेजाणो आगेजेदप्रकाशी अनुजवतेरसीया  
 ॥१७॥ इतिढालपाचमीसंपूर्ण॥

॥ढाल ६ ठी॥ देशीएकविसानी॥ तेस्वयंबोधरे पूर्व  
 सुतअभ्यासीजे॥ तेगच्छमाहेरेनहिकोइकालेरहेवाशीजे  
 गुरुपासेरेसुत्रअर्थधारेनहि॥ स्ववीरजेरेपोतेविहारकरे  
 सही॥ टुटक॥ स्ववीरजेपोतेविहारकरता आत्मजावेजे  
 रहे॥ रागद्वेषमोहत्यागी निजस्वजावतेएमग्रहे॥१॥ ते  
 स्वयंबोधनारेचिन्हचारजाखुहवे॥ तमेशुणजोरेभावधरीने  
 चीतसवे बोध॥१॥ उपधीरे॥२॥ सुतने॥३॥ बलीलिंगये॥४॥  
 एधारेनेरेअर्थजथारथकहूये॥ टुटक॥ कहूविचारतेचउकेरो  
 बोधस्वभावेलेहे कारणनेउपदेशपाखे स्वयंबोधतेएमग्रहे  
 ॥ सुतपुर्वजवनुरे पुर्वधरतेहनेकह्या॥ तिर्थकरनेरे

अथवाअवरनेतेवह्या॥जघन्यथीअंगेरे ॥ अगीआरतेजा  
णीये॥उतकृष्टेरे॥चउदपुर्वचीतआणीये॥टुटक॥ चउदपुर्वते  
जीतआणी सुतअभ्यासतेकह्यो ॥ हवेउपधीविचारकहीशुं  
पन्नवणावरतीयेलह्यो ॥३॥ उपगरणवाररे स्वयंबोधेभा  
खीआ पात्रानारेसातकहिनेदाखीया॥कलपकनारे त्रण  
उपगरणतेजाणीये उगोमोपतीरे एवारेवखाणीये॥टुटक॥  
एवारेउपगरणभाख्या स्वयंबोधनेजाणजो॥हवेलिगपर  
माणजाखु पुर्वेकह्युंतेचीतआणजो ॥४॥ एवरतीरेअनुसा  
रेजोताथकाजातीसमर्णरेगुणथकीएकहीशक्या॥तेविनारे  
स्वयंबोधहोवेनहि उत्तराधेनेरे अध्यनआठमेसही॥टुटक॥  
अध्ययनआठमे कपीलकेवली॥विणजातीसमर्णलही बो  
धविजतेसुखपाम्याचारित्ररगेग्रहि॥५॥अध्ययनविसमेरे  
उत्तराधेनमांकह्युं मुनीअनार्थीरे जातीस्मर्णविणलह्युंका  
रणजेरे निजवेदनावपुतणी॥ तेथीपाम्यारेबोधविजएची  
तजणी॥टुटक॥बोधविजतेएमपाम्या कपीललाजथकीव  
ली कारणनेजातीस्मर्ण दोयजिन्नतेएममली॥६॥ तेमठा  
णगेरे स्वयंबोधभाख्यासही॥नहिजातीस्मर्णरे एमअ  
नेकशास्त्रवही ॥ एस्वयंबोधनारे भेदघणाशास्त्रेलह्या॥ते  
आराधिरे जिवअनतेसिद्धलह्या॥टुटक॥जिवअनंतासिद्ध  
पोतातेहनाचरणकमलनमु ॥ मुनीहूकमएकाग्रहचीते  
स्वयंबोधजावेरमु ॥७॥ ॥ इतिढालढ्ठीसंपुर्ण ॥ ढाल



७ मी ॥ हजियांमुनीतोविभाडगीरीजइवंदीये ॥ एदेशी ॥  
 नवियांप्रत्येकबोधमुनीवदियेजेसिध्याआगेअनेक ॥ ज्ञानी  
 मोराए नवीयाप्रत्येकबोधमुनिवदिये ॥ एआंकणी ॥  
 प्रत्येकबोधमुनीतेकह्या जेपामीकारणनेक ॥ ज्ञानीमोराए  
 ॥ नवी० १ ॥ भवीयास्वयबोधप्रत्येकबोधमा फरकछेभा  
 खुतेह ॥ ज्ञा० नवीया चारेप्रकारेतेकह्यो बोधउपधी  
 सुतएह ॥ ज्ञानीमोराए न० २ ॥ नवी० लिंगप्रवरतनचोथो  
 कह्यो एचारेप्रकारेभिन्न ॥ ज्ञानीमोराए ॥ जेजेविशेषदो  
 यमाहीते ॥ भाख्युडेवचनतेभिन्न ॥ ज्ञानीमोराए० ३ ॥  
 नवीयांवाह्यकारणकोइपामीने लहेप्रतीबोधसार ॥ ज्ञानी  
 मोराए ॥ रिपभजराकुलदेखीने करकडुपाम्योउदार  
 ॥ ज्ञानी० ४ ॥ चुडीथकीनमीराजियो इत्यादिकएचार  
 ॥ ज्ञानी० ॥ आचोवीसीमाभाखिया जातीरुमर्णविचार  
 ॥ ज्ञानी० ५ ॥ तेएकाकीयेविचरे निश्चैवनतेसार ॥ ज्ञानी० ॥  
 बोधहोवेहवेतेहने जघन्यथीअगअगियार ॥ ज्ञानी० ६ ॥  
 उतकृष्टेनेजाणिये दसपुर्वतेधारज्ञानी ॥ पुर्वसुतनजनाक  
 हि एभाख्योसुतविचार ॥ ज्ञानी० ७ ॥ उपधीविचारहवेजा  
 खशु तेसुणोधरीकान ॥ ज्ञानी० ॥ सातपात्रानाकह्या यो  
 गीमोपतिभान ॥ ज्ञानी० ८ ॥ एनवउपगरणजाणिये हवे  
 कहुँलिंगविचार ॥ ज्ञानी० ॥ लिंगआपेदेवते अथवालिंग  
 ॥ १ ॥ ॥ ज्ञानी० ९ ॥ स्वयंबोधप्रत्येकबोधमा ए

नाख्योचिन्नविचार ॥ ज्ञानी० ॥ प्रत्येकबोधमुनिराजने  
 एचारप्रकारेधार ॥ज्ञानी०१०॥ वनविपेएकमदिरा ना  
 भिसुतनुंजाण ॥ज्ञानी०॥ चउमुखचउपरमेसरु चारदू  
 वारवखाण ॥ज्ञानी०११॥ चउमुखथीचउआविया प्रत्ये  
 कबोधमुनीराज ॥ज्ञानी० ॥ देखीकचनखरपाप्रति कार  
 णलेइयेसाज ॥ज्ञानी०१२॥ एकत्वनावचारेथया स्वस्व  
 रुपसुखकार ॥ज्ञानी०॥ घातिकर्मनेतेहणी केवलनाणउ  
 दार ॥ ज्ञानी०१३॥ लडअजोगसिद्धिवरघा तेचारेमुनी  
 राज ॥ ज्ञानी० ॥ मुनीदूकचरणतेहना शेवताआत्मकाज  
 ज्ञानीमोराए न० ॥ १४॥ इतिढालसातमीसंपूर्ण॥

॥ ढाल ८ मी ॥ आवीरुडीभगतिमेपहेलांनजाणी  
 ॥ एदेगी ॥ सुगुरुचरणशेवनथकीए बोधविजपामी॥बुध  
 बोहितेहनेकह्या थयाशिवगामी॥सु०१॥ एआकणी ॥  
 गुरुउपदेशवदूविधकह्याने मुख्यपणेतेदोय॥वेरागसंसार  
 नोकह्याए विजोअध्यात्मजोय ॥सु०२॥ ससारवेरागथी  
 सुणीने मोहस्वरुपजाणो॥कालअनादिसंसारमाए जन्म  
 मरणठाणो ॥सु०३॥ रागद्वेपएमोहछेने शुचांशुचकहिये  
 तेसर्वनेदूरकरीने॥चारीत्रलेइये ॥सु०४॥ पंचमहाव्रतसु  
 धांपाले निग्रथपढकहिये ॥ पछेअध्यात्मसाजलीने आ  
 त्मगुणवहिये ॥सु०५॥ तेहनापणदोयनेदछे नाखुतेसु  
 णो द्रव्याणुजोगप्रथमकह्याए पछेअध्यात्मजणो॥सु०६॥

खटद्रव्यनेजाणवाए गुणपर्यायसंजुक्त ॥ नयनिक्षेपप्रमा  
 णग्रहिने स्यादवादसयुक्त ॥ सु० ७ ॥ पठेपंचद्रव्यनेतुमे पर  
 जाणीछमो ॥ एकद्रव्यतमे आदरोवली आत्मसुरढमडो ॥ सु० ८ ॥  
 तेविनाअध्यात्मकरतो स्वरूपनवीवधे ॥ तेकारणभव्यप्रा  
 णियाते प्रथमद्रव्यसधे ॥ सु० ९ ॥ पछेअध्यात्मध्याइयेरे  
 एकत्वनावआवे ॥ केवललेइमुगतेगयाकाइ निजस्वरूपजो  
 वे ॥ सु० १० ॥ गुरुतणाउपदेशथकीजे बोधाविजपाम्या ॥ तेथी  
 आत्मकारजकरीने शिषपुरजइठाम्या ॥ सु० ११ ॥ एभेटसात  
 मोकह्यो सिद्धकेरोजाणो ॥ मुनीहूकमतगेवताये अनंतसि  
 द्दनाणो ॥ सु० १२ ॥ इतिढालआठमासिपुर्ण ॥

॥ ढाल ९ मी ॥ मारुमनमोह्युरेश्रीसिद्धाचलेरे एदेशी  
 नेदहवेआठमारेकहूकइसिद्धनारे स्त्रीलींगरेजेह ॥ अने  
 कतेसिद्धिरे बोधपामीकरारे ॥ पोतोशिवपुरगेह नेदहवे  
 आठमारेकहूकइसिद्धनारे ॥ १ ॥ आकणो ॥ तेस्त्रीनारेनेद  
 त्रणकह्यारे तेसुणजांअधिकार ॥ वेदप्रथमरेशरीराका  
 दुजोकह्यारे पथतिजोतेधार ॥ भे० २ ॥ वेदतेक  
 णोरे लिंगतेगरीरनीआकार ॥ ४ ॥ ते  
 शछेरे एकह्यात्रणप्रकार ॥ भे० ३ ॥ वे  
 रीतणोरे तेतोह ॥ ५ ॥ ते  
 एगुदचीतआण ॥ ने० ४ ॥ १ ॥  
 रे डिगवरमतीजेह ॥ ६ ॥ रेकहो

मुक्तीनतेह ॥भे० ५॥ ज्ञानदर्शनगुणचारीत्रनारे एहनेशु  
 द्वनहोय ॥ तेहथीमुक्तीएपामेनहीरे पामेशुद्धतेजोयं ॥जे०  
 ६॥ हवेगुरुउत्तरतेहनोनाखेसहीरे स्त्रीमुगतेरेजाय ॥ लो  
 गप्रयोजनअर्हीकइछेनहीरे तेतोस्वजावेरेथाय ॥जे०  
 ७॥ ज्ञानदर्शनचरणगुणतेहनोरे तेमवलीपुरुपनोजोय ॥  
 तेहमांफरककाइहोवेनहीरे तेतोस्वजावीकसोय ॥भे० ८॥  
 समकीतशुद्धतेपामेसहीरे पछेसीदांतअनेक ॥ ब्रह्मचर्य  
 तपालेरेआकरुरे तेमवलीतपविधनेक ॥जे० ९॥ संज  
 मपालेसस्त्रप्रकारथीरे एमनिश्चैनेव्यवहार ॥ तोमुक्तिके  
 मस्त्रीजायेनहीरे करोतमोमनशुविचार ॥भे० १०॥ तवडि  
 गवरमतवादीकहेरे स्त्रिनेजेठेफेर ॥ ज्ञानदर्शनशुद्धहोवे  
 सहीरे पणशुद्धचारीत्रनमेल ॥भे० ११॥ स्त्रिवस्त्रप्रमुखरा  
 खतीरे तेतोपरिग्रहकहेवाय ॥ निग्रथविनातोमुक्तिहोय  
 नहीरे एतोअनिग्रंथथाय ॥भे० १२॥ वस्त्रविनास्त्रिशोभेन  
 हिरे होवेविक्रताचार ॥ पुरुपवस्त्रविनातेशोभतोरे उपस  
 र्गनवीहोवेधार ॥जे० १३॥ ज्यापरीग्रहत्यांचारीत्रनहीरे  
 इत्यादिकबोलोतेह ॥ मुनीहूकमउत्तरहवेआगलेरे साभ  
 लजोगुणगेह ॥जे० १४॥ ढाल९मीसपुर्ण॥

॥ ढाल १० मी ॥ चोमासीपारणुआवे ॥एदेशी॥ हवे  
 उत्तरतेहनेदिजे न्यायजुगतीथीलीजे ॥ सुत्रशास्त्रथीकीजे  
 तेहजहृदयवरीजेरे ॥ जेदआठमोमोक्षेकीजे हवेउत्तरतेह

नेदिजेरे॥आकणी॥ १ ॥जेवस्यपरीग्रहमानीजे मुक्तितनो  
 न्यायजणीजे ॥ एवीदेशनाकेमसुणीजे एतोधर्मपोतानो  
 खणीजेरे॥ हवेउत्तर २ ॥ जगवतिसारग्रयनाखु तुमचा  
 धरमाहितेदाखु ॥ चस्त्रराखवानीसाखु तेमाटेपरीग्रहन  
 आखुरे॥हवेउत्तर ३ ॥ परीग्रहतेमुरछाकहिये साधसाध  
 विनेतेनलहिये ॥ समजावसद्रातेवहिये शुद्धस्वजावमा  
 रहियेरे ॥ भे० ४ ॥ वस्त्रादिकउपग्रहणजेह तेतोधर्मना  
 भारुयाएह ॥ तहितोचमरीआदिकतेह परीग्रहथावे  
 सुणएहरे ॥भे०५॥ तवमिगवरमतिबोले रुदियेपोताने  
 खोले॥कर्मआकरुतेनतोले स्त्रिसातमीएनजोवेरे॥भे०६॥  
 जोसातमीनर्कनजावे तोमोक्षक्याथीथावे ॥ विर्यशक्ति  
 कहोकेमआवे चक्रवर्तितेनहिथावेरे॥जे०७॥ वासुदेवव  
 लदेवनथावे विद्याचारणपद्मिनावे ॥ ज्ञयाचारणशक्ति  
 नआवे तोमोक्षेकेमजावे ॥भे०८॥ हवेउत्तरएहनोदिजे  
 आगलढालमार्कीजे ॥ रागद्वेपत्यानवीलिजे सजावरहि  
 समजिजेरे ॥जे०९॥ मुनीहूकमउपगारबुद्धि भवीजिव  
 नेकाजेशुद्धी ॥ परुपेविभावनेरुची पामेतेपदशुद्धीरे  
 ॥भे०१०॥ इतिढालदशमीसपुर्ण॥

॥ ढाल११मी ॥आदितवारेटेवदर्शणकरियेरे॥एदेशी॥  
 सुपुंधारोएमजवीतमेदिलमारे कहामीमिथ्यातदूर॥चित  
 नहिमलमेरे॥ग०१आकणी॥ सातमियेनवीजावे तेथीमु

कितवारोरे ॥ तोसुमीनमुगतेजाय गतिसातमीएधारे  
 ॥ सु०२ ॥ एवोनदिसेनेम सातमीजावेरे ॥ तेहिजमुग  
 जाय एमनिश्चेनथावेरे ॥ सु०३ ॥ नहिसंग्रामादिकते  
 पातिकमोटुरे ॥ तेमांकृपीकर्मदेख इत्यादिकनहिखोटुं  
 ॥ सु०४ ॥ तेथीनकेंनजाय स्त्रितेजाणोरे ॥ पणतेमोक्षेजा  
 चितमांआणारे ॥ सु०५ ॥ जोगतिथीलेइयेपरीमाण तो  
 मेसुणजोरे ॥ भुजपरीदुजीएजोय त्रिजियेपखीनणजो  
 ॥ सु०६ ॥ चतु पदचोथियेजाय उरपरीजाणोरे ॥ पांचम  
 नकेंतेह एमचितआणोरे ॥ सु०७ ॥ एमअधोगतिनुंमा  
 भिन्नभिन्नकहियेरे ॥ उर्धगतियेअंक आठमेसर्गलइये  
 ॥ सु०८ ॥ अधोगतिनोनेम उर्धनलाधेरे ॥ ज्ञानादिकम  
 एजेह मुक्तितेसाधेरे ॥ सु०९ ॥ चर्काअरीबलजेह स्त्रिनमि  
 थावेरे ॥ तेसुणजोअधिकार आगलकेहेवेरे ॥ सु०१० ॥  
 मुनीहूकमभाखेएम दिलमाधरजोरे ॥ स्त्रिमुक्तेजाय इ  
 कामतकरज्योरे ॥ सु०११ ॥ इतिढाल ११ मीसपूर्ण ॥  
 ॥ ढाल १२ मी ॥ अजितजिनेश्वरचरणनिशेवा ॥ एदेशी  
 सुधीरेसरधाभवीतमेकरजो टालीमतपक्षदुर ॥ मुक्ति  
 एकारणजाखु ज्ञानगुणतेभुर ॥ चवितमेसमजोरे ए  
 वचनछेसाचु ॥ १ ॥ एआकणी ॥ पद्विपामेतेत्यांइजमुक्ति  
 एवचनछेअप्रमाण ॥ तोवासुदेवनेमहानकें चक्रिपणव  
 खाण ॥ अ०२ ॥ बलदेवतोनेकेंनजावे दोंयगतीतसजाखी

नेदिजेरे॥आकणी॥ १ ॥जेवखपरीग्रहमार्नाजे मुक्तितनो  
 न्यायजणीजे ॥ एवीदेशनाकेमसुणीजे एतोधर्मपोतानो  
 खणीजेरे॥ हवेउत्तर २ ॥ जगवतिसारग्रथजाखु तुमच  
 घरमाहितेदाखु ॥ वखराखवानीसाखु तेमाटेपरीग्रहना  
 आखुरे॥हवेउत्तर ३ ॥ परीग्रहतेमुरछाकहिये साधसाध  
 विनेतेनलहिये ॥ समजावसदातेवहिये शुद्धरवजावमा  
 रहियेरे ॥ भे० ४ ॥ वस्त्रादिकउपग्रहणजेह तेतोधर्मना  
 भारपाएह ॥ तहितोचमरीआदिकतेह परीग्रहथाव  
 सुणएहरे ॥भे०५॥ तवमिगवरमतिबोले रुदियेपोताने  
 खोले॥कर्मआकरुतेनतोले स्त्रिसातमीएनजोवेरे॥भे०६  
 जोसातमीनर्कनजावे तोमोक्षकयांयीथावे ॥ विर्यशक्ति  
 कहोकेमआवे चक्रवर्तितेनहिथावेरे॥ने०७॥ वास्ते  
 लदेवनथावे विद्याचारणपद्मिनपावे ॥ ज्ञयाचारण  
 नआवे तोमोक्षेकेमजावे ॥भे०८॥ हवेउत्तरएह  
 आगलढालमाकीजे ॥ रागद्वेषत्यानवीलिजे सर  
 समजिजेरे ॥ने०९॥ मुनीहूकमउपगारबुद्धि  
 नेकाजेशुद्धी ॥ परुपेविभावनेरुयी पामेते  
 ॥भे०१०॥ इतिढालदशमीसपूर्ण॥

श्री ॥ न० ३ ॥ नथकी शुद्धतलखीजी चेटकी धादोय ॥ परवस्तुजेजे  
 तिकारणतोसिजी टालणप्रगटचोरेसोय ॥ न० ४ ॥ ध्यानअग्नीलंगावी  
 थवागोमतस करीपरनोनाश ॥ स्वगुणस्वसत्ताग्रहिजी पोताशी  
 तीतोकेमजुवरवास ॥ न० ५ ॥ नपुशकवेदेसाहिजी सिध्याछेजेजीव  
 याश्रीजिनवातीनपुशकनवीलहेजी लहेकृत्रिमशीव ॥ न० ६ ॥ एव  
 ॥ न० ६ ॥ तेमेमेविसनोजी एहनोजारुयोनेम ॥ एनपुशकजाणिते  
 स्त्रिमुक्तेजसिध्यातेथीप्रेम ॥ न० ७ ॥ स्वलिगेजेसिधियाजी न  
 मानवीलगावुतासविचार ॥ जिनशासनअनुसारनोजी पामिलिग  
 ये तेथीमुसिदार ॥ न० ८ ॥ उधोमोपतितेग्रहेजी चरणराखणएधा  
 नेननडेलिगोचमुडशीरकरेजी एजिनलिगविचार ॥ न० ९ ॥ एलि  
 न० ९ ॥ गहेसिधियाजि तेस्वलिगकहाय ॥ तेथीविपरीतजेरह  
 ॥ मुनीहूकमजि तेअन्यलिगथाय ॥ न० १० ॥ अवरदर्शणमांसहिजि  
 इतिढालीनोगीसन्यासीआद ॥ सर्वेदर्शणमांसिथीजि सर्वेजेखया  
 ॥ न० ११ ॥ तेतेभेखेसिधियाजी तेअन्यलिगकहेवाय  
 ॥ एदेशीधारमोभेदएसिद्धनोजी मुनीहूकमजेथाय ॥ न० १२ ॥ इति  
 तेपुरुषाकढाल १३ मी संपूर्ण ॥  
 एसिद्धनोजी ॥ ढाल १४ मी ॥ पंचमीनपविधिसांचलो ॥ एदेशी  
 जाणियेजंनपुशकलिगेसिधिया गगीलमुनीधाररे ॥ इत्यादिकव  
 तीप्रगटजाणिये नपुशकसिद्धविचाररे सिद्धपदनमोभावथी ॥ १५  
 नावमाज ॥ एआकणी ॥ अन्यलिगेसिद्धतेकहा वक्रचुरीप्रमुख  
 ॥ न० ३ ॥ आरजअनारजमाहिथी पाम्याअनंतासुखरे ॥ सि



॥२॥ हवेग्रस्थिलिगेकहू ॥ द्रव्यचार,  
 वेपजेखनवीआदरे ॥ नहिसाधुपटनाम्बर ॥  
 गृहवासवस्तेथके केवललेइजेसिद्धरे ॥ ते  
 द्वन्नाखिया रीद्वन्नतीलीधरे ॥ सि० ५  
 वाप्रमुखजाणिये ग्रहस्थिलिगेसिद्धरे ॥ स्वस्व  
 रन्या तेपाम्यान्नतीरिद्धरे ॥ सि० ५ ॥  
 कला मुक्तिमुखनेवरियारे ॥  
 कसिद्धतेठरियारे ॥ सि० ६ ॥  
 जोतासविचाररे ॥ एकसमयदोयतिनचार  
 धाररे ॥ सि० ७ ॥ किंचितविवरोतसकहू  
 रे ॥ प्रथमममेतेजघन्यथी एकथीवात्रिसधाररे  
 एउत्कृष्टेपदेकहो एमविजेसमेविचाररे ॥  
 तिरस जघन्यउत्कृष्टधाररे ॥ सि० ९ ॥  
 सिद्धेसिद्धरे तोब्रह्मकालआवेसहि ॥  
 रे ॥ सि० १० ॥ एमसिद्धअनेकपेरे  
 णारे ॥ मुनिहूकमसिद्धभा भेदघणावखाणारे  
 नमोभावथी ॥ ११ ॥ इतिदाल १४ मी संपूर्ण ॥  
 ॥ दाल १५ मी ॥ रागधनाश्री  
 जने जेसर्वकर्मनिवाररे ॥ आत्मसत्ताप्रगटी  
 गुणधाररे ॥ धनधनसिद्धमहाराजने ॥ एआंकणी  
 प्रथमसमयेकजे सिध्याजघन्यथीजाणारे ॥ ते

रीतिस्वेयं उत्कृष्टेऽमृतालीसमानोरे ॥ ध० २ ॥ एमाद्वितीयं  
 ॥ तिस्रसमे जावतसातमेकहियेरे ॥ एसंख्यायेजेसिध्वरे  
 ग्रहंरहेकाललहियेरे ॥ ध० ३ ॥ अथवातंगणपचासजे  
 ॥ यथीसमयेमिध्वरे ॥ उत्कृष्टेसायथजे एमखटसमय  
 नदो ॥ ध० ४ ॥ सिध्वतेउपरब्रहेकालजे निश्चेथीतेहोयरे  
 साएकसतजघन्यथी उत्कृष्टेबोतेरजोयरे ॥ ध० ५ ॥  
 हनेलगेजाणिये पछेविरहकालजाणोरे ॥ जघन्यथी  
 रएकसमे उत्कृष्टेचोरासीवखाणोरे ॥ ध० ६ ॥ चारसमे  
 तजेसिध्वशे अथवापंच्याशीजाणोरे ॥ उत्कृष्टेछनुकह्या  
 चसमयेलगीवखाणोरे ॥ ध० ७ ॥ अथवासताणुसिद्धे  
 न्यथीएपदकहियेरे ॥ एकसतदोयउत्कृष्टथी एमदोय  
 लगेलहियेरे ॥ ध० ८ ॥ एपदसर्वेजाखिया जघन्यउत्कृ  
 णनरे ॥ विरहकालतेपछेखरो एसिद्धतणीसानरे ॥ ध० ९ ॥  
 न्यथीएकसोत्रणथी उत्कृष्टेएकसोआठरे ॥ तेतोएकज  
 नसिध्वया जेहनांकर्मसवीनाठरे ॥ ध० १० ॥ व्याव्रहे  
 लजाणिये खटमासनोधारोरे ॥ एअनेकसिध्ववगणव्या  
 सेपेएहविचारोरे ॥ ध० ११ ॥ सिध्वस्वरुपभोखीयु तमे  
 जोचितमाप्राणीरे ॥ जेध्यावेतेहिजलहे एविजिननी  
 णीरे ॥ ध० १२ ॥ तेसिध्वमहेजस्वजावमां निश्चेथीजेद  
 रे ॥ व्यवहारथीपटरकह्या अथवाजेदअनेकरो ॥ ध० १३ ॥  
 गुरुमुखथीधारजो जेज्ञानगुणजरियारे ॥ मुनीहूकम

अनुजयी जेमहेजमुखनादरियारे ॥ ध०१

१५ मी सपूर्ण ॥

॥ कलश ॥ एमसिध्दगुणजाया महेज

जेदएभाखिया संक्षेपतमवरणवकीधो सि

खिया ॥ ग०१॥ व्यवहारनयथीएभेदछे . य

निश्चयेयीसहेजस्वभावग्मता आत्मा ॥ हे

आत्मस्वरूपमेलिगादिकजे के जेद देसेन

दशामाविररहे सलेकिंकरणसिध्दकहि ॥ ग

ध्वनुस्वरूपध्यावे परभावथोअलगोरहि ॥

जेह पामेसुखअनंतवही ॥ ग०२॥ संवतउगि

अपाडकणपक्षसहि ॥ वास जेनएकोय

वहि ॥ ग०३॥ सद्यमुदरसुरतगेहेरनो त ॥ अ

रहि ॥ एहस्वरूपरचनाकिधो संघनेअति-

॥ ग०४॥ गुधसमकिततेहपामे जेसरयाकरे

हूकमगुधचिदानंदमय सिध्दपक्षीतेहनी ॥ ग०५

॥ एसिध्दनाफंरजेदनी ॥

॥ ढालोसपूर्ण ॥

૧ અમરસ્તેજમુનિનીસજ્ઞાય.

ર્મની વિચિત્રરાત્રીવતાવીછે ... ૩૨

૧૦, તત્વસારોદ્ધાર.

તત્વનાપાંચભેદ

તત્વવતાવ્યોછે તેમાંઅજિવનાન્નેદવિગરે

વ્યાપ્ત છે ... ૩૮૮

આશ્રવતત્વવતાવ્યોછે તેમાંમિથ્યાત્વ, અવ્ર

ગરેન્નેદવતાવ્યાછે ... ૩૯૪

પુન્યતથાપાપવેતત્વભેગાવતાવ્યાછે ... ૪૦૮

વધતત્વવતાવ્યોછે ... ૪૧૭

તત્વનાચારભેદ

તત્વતેમાંજિવનાઅનેકન્નેદતથાતેને ઉપજવા

કાણાંતથાઆવસ્થુવિગરેઘણીવાવતોન્નતાવીછે ૪૨૨

તત્વતેમાંતેનાજુદાજુદાબોલવિગતસાથેવતા

હેસંજમનાન્નેદતથાવારભાવનાઝંઘણીવિગત

દર્શાવીછે ... ૪૪૬

રાતત્વતેમાંબાહ્યતથાઅભ્યંતરતપવિગતવાર

વ્યાપ્તેતથાઘણાપ્રકારનાતપનીરીતીવતાવીછે ૪૪૩

તત્વ ... ૪૮૭

૧૧ શ્રીઅનુભવપ્રકાશ.

સ્વભાવવતાવ્યોછે ... ૪૯૯

૧૨૦ શ્રીઆત્મચિંતામણી

૧૨૦ ગુદ્ધતથાઅગુદ્ધસ્વરૂપની ઝેલખાણકરારવીનેશુદ્ધસ્વ  
રૂપગ્રહણકરચુછેતથાનયનાવાવનજેદકહ્યાછે . ૬૧૭

૧૩ શ્રીચિદાનંદવગ્રીસી,

રિગનાપદમાંછે

૬૧૭

૧૪ શ્રીસિદ્ધનાપદરંભેદનીઢાલો

તેમાસિદ્ધનાપદરંજેદ વિગતસાથેવતાવી સ્ત્રિમોક્ષે  
જવાવિગરેચરચાવતાવીછે . ૭૦૯



૧૫ મા પાનાની ૧૦મી લીટીમા 'ફઠ'ને ઠેકાંણે 'ફુલ' વાચવું

૧૬ મા પાનાની ૧૫મી લીટીમા 'અજીવ'ને વદલે 'અજિવ' વાચવું

